॥ श्रीः ॥

श्रीविद्या-रत्नाकरः

श्रीमहागणपति-श्रीसुन्दरी-श्यामा-वार्ताली-परा-सपर्या-मन्त्रभाष्य-
वाञ्छाकल्पलता-लक्षार्चन-पूर्णाभिषेक-महायागक्रमादि-
विविधविधिविलसितः

निगमागमादिसमस्तशास्त्रपारावारपारीणै
श्रीपरमहंसपरिव्राजकाचार्यैः
अनन्तश्रीविभूषितैः

स्वामिश्रीहरिहरानन्दसरस्वती (श्रीकरपात्रस्वामि) महाराजैः
विरचितः ।

सम्पादकः
श्रीसीताराम कविराज, "श्रीविद्याभास्करः"
दीक्षानाम—दत्तात्रेयानन्दनाथ

प्रकाशकम् :

श्रीविद्या-साधनापीठम्
वाराणसी

प्रकाशकः :

श्रीविद्या साधना पीठम्,

वाराणसी



पुस्तकप्राप्तिस्थानम्

(१) डा० सत्यव्रत शर्मा

पी १/२ रवीन्द्रपुरी, वाराणसी—५

फो० नं० ५२३६९

(२) बाबूलाल गनेड़ीवाल,

१४५ काटन स्ट्रीट,

कलकत्ता—७

(३) स्वामी श्रीसदानन्द सरस्वती, (वेदान्ती स्वामी)

यग्पात्री धाम केदारघाट, वाराणसी

(४) राधेश्याम पेपर स्टोर

कर्णघण्टा गली (वाराणसी)



द्वितीय संस्करणम् २२००,

श्रीपञ्चमी, वि० सं० २०४३

मूल्यं ६० रूप्यकाणि



मुद्रक :

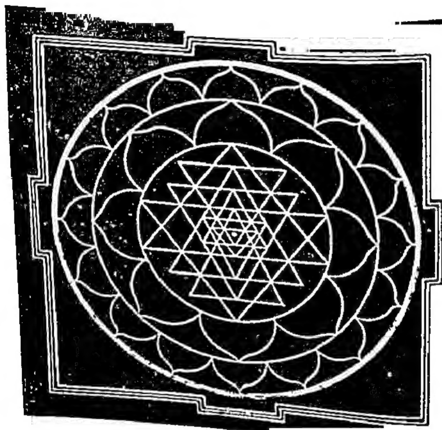
तारा प्रिंटिंग वर्क्स,

वाराणसी

श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी



अरुणां करुणातरङ्गिताक्षीं धृतपाशाङ्कुशपुष्पबाणचापाम् ।
अणिमादिभिरावृतां मयूखैरहमित्येव विभावये भवानीम् ॥



श्रीयन्त्रम्

SHREEVIDYA-RATNAKARAH

WITH

SHRI MAHAGANAPATI SHRI SUNDARI-SYAMA-VARTALIPARA SAPARYA-MANTRABHASHYA-WANCHHAKALPALATA LAKSHARCHANA AND ALLIED SUBJECTS

BY

SWAMI SHRIHARIHARANAND SARASWATI
(SHRIKARAPATRASWAMI) MAHARAJ

EDITOR

SHRISITARAM KAVIRAJ "SHRIVIDYABHASKAR"
(DATTATREYANANDNATH)

SHRI VIDYA SADHANA PITHAM
VARANASI

॥ श्रीः ॥

नम्र निवेदन

इस संसार मे समस्त जनमानस मे सुख प्राप्त करने की एकमात्र इच्छा रहती है। वह सुख दो प्रकार है, एक कृत्रिम और दूसरा अकृत्रिम, कृत्रिम-सुख कामभोग के द्वारा प्राप्त होता है। अकृत्रिम सुख मोक्ष प्राप्ति है। इन दोनों के साधन के लिये धर्म आवश्यक है, और धर्म साधन के लिये अर्थ की अपेक्षा होती है, अतः धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष यह चतुर्विध पुरुषार्थ कहे जाते है। परशुराम कल्पसूत्र मे कहा है कि—

"स्वविमर्शः पुरुषार्थः" अपने स्वरूप का ज्ञान ही परम पुरुषार्थ है वही परमपुरुषार्थ मोक्ष पदवाच्य अकृत्रिम सुख है।"

'इस सुख को प्राप्त करने के लिये हमारे पूर्वज ऋषि, महर्षि, महा-मनीषीयों ने अपने तप.पूत अन्तःकरण से समाधिजन्य अतीन्द्रिय ज्ञान द्वारा साधना सम्बन्धी वाङ्मय कोष को परिपूर्ण एवं सुसमृद्ध किया। उन विभिन्न साधन पद्धतियों मे चित्तशुद्धि के तारतम्य से (अधिकारी भेद से) तत्तद् साधन पद्धतियों का विनियोग परिलक्षित होता है। परम कारुणिक भूत-भावन भगवान् विश्वनाथ ने साधारण जन के उद्धार के लिये परम पुरुषार्थ रूप अकृत्रिम सुख की प्राप्ति के लिये श्रीविद्या साधना पद्धति का प्राकट्य किया। स्वर्लोक निवासी देवता एव ब्रह्मर्षि, राजर्षि, महर्षियो ने उस पद्धति का समाश्रयण कर अनुमोदन किया।

यही नही अपितु दत्तात्रेय, परशुराम, हयग्रीव-शङ्कराचार्य आदि भगवान् के अनेक अवतारो ने उसे सर्वजन सुलभ बनाने के लिये उत्त-रोत्तर सरलतम विधान किया। तदनन्तर महामनीषी साधकों ने अधीति, बोध, आचरण एव प्रचार के द्वारा इस श्रीविद्या पद्धति की गरिमा और महिमा का संस्तुत्य प्रख्यापन किया।

भगवान् आद्यशङ्कराचार्य ने तो कालक्रम से विलुप्त इस साधना पद्धति का पुनरुद्धार करके जनकल्याण का परम महत्त्वपूर्ण कार्य किया। और इस साधना को सम्पूर्ण भारत वर्ष मे प्रचारित और प्रसारित कर सम्प्र-दाय (गुरु परम्परा) के आचार्य रूप मे सम्मानित हुए।' इसलिये कहा जाता है कि "सम्प्रदायो हि नान्योऽस्ति लोके श्रीशङ्कराद्बहिः" भगवान्

शङ्कराचार्य के द्वारा प्रवर्तित सम्प्रदाय के अतिरिक्त इस लोक मे आज श्रीविद्या का दूसरा कोई सम्प्रदाय ही नही है।

इसी प्रकार अनेक साहित्य स्रष्टा, लोकद्रष्टा साधक शिरोमणि महात्माओं ने इस श्रीविद्या साधना का समाश्रयण करके सर्वजनहिताय, सर्वजनसुखाय इसके साहित्य निधि को सुसमृद्ध किया। इन्ही मे लोक कल्याणकारी भावनाओ से ओत-प्रोत अन्तःकरण से अपने जीवन के प्रति क्षण को लोक-कल्याण के लिये समर्पित करने वाले प्रातः स्मरणीय श्री गुरुचरण स्वामी करपात्रीजी महाराज ने भी इस दिशा को अपनी लोकोत्तर प्रतिमा के दिव्य आलोक से आलोकित करके श्रीविद्या साधना सम्प्रदाय को दिव्यज्योत्स्ना मण्डित किया।

श्रीस्वामीजी महाराज ने वेदान्त, भक्ति, योग आदि साधन पद्धतियों से उस परमतत्व का साक्षात्कार प्राप्त कर लेने पर भी केवल लोक-कल्याण की भावना से श्रीविद्या साधना पद्धति का अवलम्बन किया, एवं पूर्णविधि विधान से श्रीयन्त्राधिष्ठात्री भगवती राजराजेश्वरी श्रीललिता महात्रिपुरसुन्दरी का उन्नतम उपासना क्रम अनुष्ठित करके उत्तर भारत मे विलुप्तप्राय श्रीविद्या सम्प्रदाय को प्रचार के द्वारा प्रतिष्ठापित किया, एवं श्रीविद्या साहित्य भण्डार को भी "श्रीविद्या रत्नाकर" "श्रीविद्या वरिवस्या" जैसे दिव्य रत्न प्रदान कर अभिवृद्ध एव विभूषित किया। उनके द्वारा लिखित श्रीविद्यामन्त्रभाष्य पर दृष्टिपात करने पर तो उनका तन्त्र शास्त्र का गहन अध्ययन, प्रौढ़ पाण्डित्य, तत्त्वज्ञता, रहस्यज्ञता सुस्पष्ट परिलक्षित होती है।

इस श्रीविद्या रत्नाकर के प्रथम प्रकाशन को श्रीविद्या साधको ने परमस्नेह से संगृहीत किया जिससे यह अतिशीघ्र ही शेष हो गया, तदनन्तर इसकी प्राप्ति के लिये कई वर्षो से साधको के सोत्कण्ठ पत्र निरन्तर प्राप्त होते रहे किन्तु इसके पुनर्मुद्रण मे विलम्ब ही होता गया। इसी बीच मे श्रीगुरुचरणों की आज्ञा से 'श्रीविद्या वरिवस्या' प्रकाशित की गई। यद्यपि यह भी श्रीक्रम के लिये पर्याप्त है तथापि श्रीविद्या रत्नाकर की पूर्ति मे तो कथमपि सक्षम नही हो सकती है। अतः श्रीविद्या रत्नाकर की माँग उत्तरोत्तर बढ़ती ही गयी, विलम्ब होने के कारण रोष और आग्रहपूर्ण पत्र निरन्तर आते रहे, हम विलम्ब के लिये साधक वर्ग से क्षमा प्रार्थी हैं। पराम्बा की अनुकम्पा से यह द्वितीय मुद्रण साधको की

सेवा मे प्रस्तुत है। इसमे जहाँ तक हो सका संशोधन के लिये पूर्ण प्रयास किया गया है, एवं साधको के सौकर्य के लिये महागणपति, श्यामला, वार्ताली के यन्त्र एव ध्यान चित्र भी दिये गये है, इस प्रकाशन मे संपूर्णानन्द संस्कृत विश्वविद्यालय के आधुनिक भाषा एवं भाषाविज्ञान विभाग के अध्यक्ष डा० सत्यव्रत शर्मा का पूर्ण योगदान रहा, उनके पुत्र संजीव शर्मा ने ही इसके यन्त्र, चित्रादि बनाने का कार्य सम्पादन किया एवं अन्य पारिवारिक सदस्यों का प्रूफ एव संशोधन आदि कार्यों मे पूर्ण सहयोग रहा, यह पूरा परिवार ही श्रीविद्या का उपासक है। अतः श्रीपराम्बा से पूरे परिवार की कल्याण कामना करते है। आचार्य प० शिवदत्त मिश्र शास्त्रीजी के प्रति भी हम आभार प्रकट करते है जिन्होंने प्रारम्भिक मुद्रण की व्यवस्था एवं समय-समय पर यथोचित मुद्रण सम्बन्धी ज्ञान के द्वारा उपकृत किया। श्रीपुरुषोत्तमलाल धानुका एवं उनके पुत्र ओमप्रकाश धानुका को आर्थिक योगदान देने के लिये हम हृदय से साधुवाद देते हैं, ये श्रीकरपात्रीजी महाराज के श्रद्धालु भक्त एवं कृपापात्र रहे है। तारा प्रेस के संचालक श्री रमाशंकर पण्ड्या भी भूरि-भूरि प्रशंसा के पात्र हैं जिनके शील एवं सौजन्य से सुचारु रूप से मुद्रण कार्य सम्पादन हुआ।

इस द्वितीय प्रकाशन में मनुष्य स्वभाव सुलभ प्रमादादि दोषों से रही—

न्यूनता एवं अशुद्धियो के लिये श्रीविद्या साधकों से मैं क्षमा प्रार्थना करता हुआ विनम्र निवेदन करता हू कि अग्रिम प्रकाशन के लिये आपके सुझाव एवं विचारों से अनुगृहीत करें जिससे इसका करिष्यमाण प्रकाशन विशुद्ध एवं साङ्गोपाङ्ग हो।

शेष मे इष्टदेव स्वरूप श्रीगुरुचरणों को प्रणतितति संवेदन करता हुआ उनके द्वारा प्रदत्त शक्ति से ही इस कार्यभार को वहन करने मे समर्थ हुआ इसके लिये श्रीमद्भागवत के शब्दो मे करबद्ध श्रद्धाञ्जलि ही उनके तोष के लिये समर्पित करता हूँ।

तुष्यत्वदभ्रकरुणाः स्वकृतेन नित्यं
को नाम तत्प्रतिकरोति विनोदपात्रम्।

श्रीगुरुचरणसरोजरेणु
श्रीसीताराम कविराज
(दीक्षानाम) दत्तात्रेयानन्दनाथ
वाराणसी

प्रथमप्रकाशनस्य

सम्पादकीयम्

श्रीविद्यारत्नाकरग्रन्थमिमं सम्पाद्य श्रीसुन्दरीसेवनतत्पराणां श्रीपराम्बापादारविन्दमकरन्दजुषां श्रीविद्योपासकानां सेवासु समुपाहरन्नमन्दमानन्दसन्दोहं विन्दे। यद्यपि सन्त्यनेका श्रीविद्योपासकधौरेयैः सुधीभिः सम्पादिताः सपर्यापद्धतयः, सकला अपि ताः साङ्गोपाङ्गसाधनायै सापेक्षतामावहन्ति। यथा हि अर्चनायैकमन्यामायान्यत् स्तवनायापरं जपायेतरद्, एवमङ्गोपाङ्गदेवतानामुपासनायै तासां जपपूजातर्पणहोमपुरश्चरणादीनां कृते बहूनि पुस्तकानि समपेक्षितानि भवन्ति श्रीविद्योपासकानाम्। परञ्च श्रीविद्यारत्नाकरोऽयं आदीक्षाविधानमाच पूर्णाभिषेकं साधनकालात्सिद्धिपर्यन्तं यद्यदपेक्षितं विधानादिकं तत्तत्सकलमपि रत्नाकरवत्प्रपूरयति।

श्रीगुरुचरणैः कुलार्णव, तन्त्रराज, कल्पसून-श्रीविद्यार्णव-त्रिपुरारहस्य-नित्योत्सवादिकान् विविधतन्त्रग्रन्थान् समालोड्य ग्रन्थरत्नमिदं निरमायि।

तपसा ग्रन्थित्रयभेदेन ज्ञानशक्तिप्रादुर्भावाद् वेदवेदाङ्गेषु निखिलदर्शनेतिहासपुराणधर्मशास्त्रादिसमस्तशास्त्रेष्वेवं योगतन्त्रभक्तिज्ञानादिसमस्तमार्गेषु च येषां सर्वज्ञता सम्पन्ना तैः प्रातःस्मरणीयगुरुचरणैः प्राणिमात्रकल्याणतत्परैः करुणापूरपूरितमानसैर्महदुपकृतं श्रीविद्योपासकानां ग्रन्थमिमं निर्माय।

सर्वतन्त्रविद्यातो ज्यैष्ठ्यं श्रैष्ठ्यञ्चास्याः श्रीविद्यायाः। श्रीपरमशिवप्रतुपष्टितन्त्रैः सकलैहिकसिद्धिसन्दोहं सम्पाद्य श्रीपराम्बायाः निर्बन्धेनेदं निखिलपुरुषार्थघटनं श्रीतन्त्रं समाविष्कृतवान्। सौन्दर्यलहर्यां भगवत्पादैरिदमेव प्रतिपादितम्।

चतुःषष्ट्या तन्त्रैः सकलमतिसन्धाय भुवनं,
स्थितस्तत्तत्सिद्धिप्रसवपरतन्त्रैः पशुपतिः।
पुनस्त्वन्निर्बन्धादखिलपुरुषार्थैकघटना,
स्वतन्त्रं ते तन्त्रं क्षितितलमवातीतरदिदम्॥

अस्य साधनफलं तस्यां स्तुतावेव च समुद्घोषितम् :—

सरस्वत्या लक्ष्म्या विधिहरिसपत्नो विहरते,
रतेः पातिव्रत्यं शिथिलयति रम्येण वपुषा।
चिरञ्जीवन्नेव क्षपितपशुपाशव्यतिकरः,
परानन्दाभिख्यं रसयति रसं त्वद्भजनवान्॥

अन्यान्यदेवतार्चनासुः "विद्यार्थी लभते विद्या धनार्थी लभते धन" मित्यादिकं फलं प्रदर्शितं परं श्रीविद्योपासकस्तु विद्यापतित्वेन ब्रह्मणो लक्ष्मीपतित्वेन विष्णोश्चासूया जनयन्नतिसुन्दरेण शरीरेण रते. पातिव्रत्यं शिथिलयन्, तत्तत्सिद्धिभिर्जनान् विस्मापयन्, जीवभावं विहाय शिवभावं भावयन् चिरंजीवन् ब्रह्मानन्दरस रसयति । अत.पर किमपि नावशिष्यते प्राप्तव्यम्। जन्मजन्मान्तरीयपुण्यपुञ्जोदयेन कदाचित् केनचित् कथञ्चित् समधिगता सम्यक्तया यद्यस्या साधनसरणिस्तदा सुसम्पन्नं तस्य सर्वं, कृतकृत्यं तस्य जीवितं, नान्यत्किञ्चिदपेक्षितं स्यादस्या. प्राप्त्यनन्तर, तस्य चिन्तितकार्याण्ययत्नेन सिद्ध्यन्ति, स शिवयोगीति गीयते ।

स्वस्मिन्पूर्णता चानुभूयते । अन्यैः साधनमार्गैः—

"अनेक जन्मससिद्धस्ततो याति परा गतिम्"

"बहूना जन्मनामन्ते ज्ञानवान्मा प्रपद्यते" (श्रीमद्भगवद्गीता)

परमेतस्मिन्नेव जन्मनि श्रीविद्योपासकस्तु पराङ्गतिं याति । यथा—

"चरमे जन्मनि यथा श्रीविद्योपासको भवेत्" ।

"यस्य नो पश्चिम जन्म यदि वा शङ्करः स्वयम् ।
तेनैव लभ्यते विद्या श्रीमत्पञ्चदशाक्षरी ॥"

इति बहुभिः प्रमाणकदम्बकै सुसम्पन्नमिद यच्चरमे जन्मन्येव श्रीविद्या प्राप्यते । तेन जीवो जीवभाव विहाय ब्रह्मत्वमुपैति । यतो हि सृष्टिकालादारभ्याऽऽनन्दरूपिण परब्रह्मण पृथग्भूय विविध विचष्टते जीवः । तमेव परमप्रेमास्पद वस्तु प्राप्तु जगति रूपरसादिषु तामानन्दकणिका बहु मन्यमान. तत्सग्रहार्थं यतते, प्राप्नोति चाऽधिकाधिक प्राप्यमाणोऽपि रिक्तरिक्तमिव प्रतीयते । यत उक्तम् :—

"यत् पृथिव्या व्रीहियव हिरण्य पशवः स्त्रिय. ।
न दुह्यन्ति मनः प्रीतिं पुंस कामहृतस्य ते ॥"

अत आनन्दसिन्धो लहरीभूतो जीवस्तत् कणिकाभि. कथ तृप्येत् । तमेवाऽऽनन्दसिन्धु प्राप्यैव तृप्तो भवति । यथा कश्चिच्चक्रवर्ती ग्रामटिका विजित्य किं मोदेत ? वेदान्तमार्गेण "अह ब्रह्माऽस्मि" "तत्त्वमसि" "अयमात्मा ब्रह्म" इत्यादिकाना महावाक्याना श्रवण-मनननिदिध्यासनादिभिः शनैः शनैर्ब्रह्मभावमाप्नोति, तदा पूर्णता भजते । परं "क्लेशोऽधिकतरस्तेषाम-

व्यक्तासक्तचेतसाम्" इति भाव्यता भगवता भूतनाथेन परमकारुणिकेन "श्रीविद्यातन्त्र" निरमायि ।

सैवेयं ब्रह्मविद्या श्रीविद्या सच्चिदानन्दस्वरूपिणी यस्या समाराधनेन जीव सुखेन स्वरूपता याति । अस्या मन्त्रात्मक यन्त्रात्मक विग्रहात्मकञ्च त्रिरूपं साधकैं समाराध्यते ।

मन्त्रात्मक रूप पञ्चदशी षोडशी महाषोडशी च'

श्रीविद्यामन्त्रभाष्यं विवृण्वन् श्रीगुरुचरणैर्व्याख्यातम् । तद्विज्ञाने जाते सर्वं विज्ञात भवति । तस्मिन्दृष्टे सर्वं बाधित भवति । तस्य नैसर्गिकी स्फुरत्ता विमर्शरूपा शक्तिस्तद्योगादेव विश्वोत्पत्तिस्थितिलयलोलात्व शिवस्य ।

तदुक्त वरिवस्यारहस्ये "स जयति महान् प्रकाशो यस्मिन्दृष्टे न दृश्यते किमपि । कथमिव तस्मिन् ज्ञाते सर्वं विज्ञातमुच्यते वेदे । नैसर्गिकी स्फुरत्ता विमर्शरूपाऽस्य वर्तते शक्ति" । तद्विज्ञानार्थमेव चतुर्दशविद्यास्थानानि तेष्वपि सारभूता वेदा । तेष्वपि गायत्री, तस्या रूपं द्वितयम् । तत्रैक स्पष्ट द्वितीयं पर गोपनीयं श्रीविद्यारूपम् । तदेव "कामो योनि कमलावज्रपाणिरित्येव" साङ्केतिकै शब्दैर्वेदोऽपि व्यवहरति ।

तत्र महाषोडशीमहिमा —

"वाक्यकोटिसहस्रैस्तु जिह्वाकोटिशतैरपि ।
वर्णितु नैव शक्योऽहं श्रीविद्या षोडशाक्षरीम् ॥
एकोच्चारेण देवेशि ! वाजपेयस्य कोटय ।
अश्वमेधसहस्राणि प्रादक्षिण्य भुवस्तथा ॥
काश्यादितीर्थयात्रा स्यु साधकोटियान्विता ।
तुला नार्हन्ति देवेशि ! नाऽत्र कार्या विचारणा ।
क्षयि प्रियतमं देयं सुतदारधनादिकम् ।
राज्य देयं शिरो देय न देया षोडशाक्षरी ॥

भगवत्या यन्त्रात्मक रूपं "श्रीचक्रम् तदाराधनेन सर्वसिद्धीश्वरो सञ्जायते, तन्त्रशास्त्रेषु तस्य महता समारोहेण महिमा वर्णित ।

'सम्यक् शतं क्रतून् कृत्वा यत्फलं समवाप्नुयात् ।
तत्फलं समवाप्नोति कृत्वा श्रीचक्रदर्शनम् ॥"

"तीर्थस्नानसहस्रकोटिफलद श्रीचक्रपादोदकम्' इत्यादिभि प्रमाणनिकुरम्बैरप्रतिमं महत्त्वमावहति ।

विग्रहात्मकं रूपन्तु राजराजेश्वरी श्रीललिता महात्रिपुरसुन्दरी पराभट्टारिका तस्याः स्वरूपं स्तुवद्भिर्भवत्पादैरुक्तम् ।

"शरीरी शृङ्गारो रस इव दृशां दोग्धि कुतुकम्"

श्रीललिता पूजनफलन्तु पाद्मवचनैः प्राप्यते—यथा;

अश्वमेधसहस्राणि वाजपेयशतानि च ।
ललितापूजनस्यैते लक्षांशेनाऽपि नो समाः ॥
स दाता स मुनिर्यष्टा स तपस्वी स तीर्थग. ।
गन्धानुलेपनं कृत्वा ज्योतिष्टोमफलं लभेत् ॥
चन्दनागरुकर्पूरैः सूक्ष्मपिष्टैः सकुङ्कुमैः ।
आलिप्य ललितां लोके कल्पकोटीर्वसेन्नरः ॥
"गिरामाहुर्देवीं द्रुहिणगृहिणीमागमविदः ।
हरेः पत्नीं पद्मां, हरसहचरीमद्रितनयाम् ।
तुरीया काऽपि त्वं दुरधिगमनिस्सीममहिमा ।
महामाया विश्वं भ्रमयसि परब्रह्ममहिषि ॥"

एकामेव भगवतीं नानानामरूपैर्गृणन्त्यागमविदः परब्रह्ममहिषी, महाविद्या महामाया महात्रिपुरसुन्दरी ललितेति । एकैव सा कार्यकारणरूपा विश्वस्य, स्वात्मानं विश्ववपुषा परिणमयितु चिदानन्दाकारं विभर्ति । वस्तुतस्तु "सर्वं शाक्तमजीजनत्" इति सिद्धान्तेन दृश्यमानं सकलं जगत् देवीमयमेव ।

"एवं युवतयः सद्यः पुरुषत्वं प्रपेदिरे ।
चक्षुष्मन्तो नु पश्यन्ति नेतरेऽतद्विदो जनाः ।"

अतएव— "पुरुषं वा स्मरेद्देवीं स्त्रीरूपं वा विचिन्तयेत् ।
अथवा निष्कलं ध्यायेत्सच्चिदानन्दलक्षणम् ॥"

इति प्रमाणकदम्बकानि तत्तदिच्छानुरोधेन पुरुषतया, स्त्रीरूपतया, निर्गुणरूपतया वा परदेवतायाः ध्येयत्वं प्रतिपादयन्ति । तच्च पुरुषरूपं कीदृग्विधमिति जिज्ञासायां—

"ममैव पौरुषं रूपं गोपिकाजनमोहनम्" ब्रह्मवैवर्तपु०
कदाचिल्ललिता देवी धृतश्रीकृष्णविग्रहा ।
वेणुनादविनोदेन मोहयत्यखिलं जगत् ॥"

पद्मपुराणे वृन्दावनमाहात्म्य वर्णयता नारद प्रति श्रीविष्णुना स्वमुखेनेदमुक्तम्-

"अहं च वासुदेवाख्यो नित्य कामकलात्मकः।
अहञ्च ललितादेवी पुरूपा कृष्णविग्रहा।
आवयोरन्तर नास्ति सत्यं सत्य हि नारद।
इदं वृन्दावनं नाम रहस्य मम वै गृहम्॥

कूर्मपुराणे च—

सहस्रमूर्धानमनमनन्तशक्ति सहस्रबाहु पुरुष पुराणम्।
शयानमब्धौ ललिते तवैव,नारायणाख्यं प्रणतोऽस्मि रूपम्।

इत्यादिभिः प्रमाणैः पराम्बायाः पूरुषं प्रतिपादितम्।

स्त्रीरूपन्तु स्पष्टमेव :—

"न मातुः परमस्ति दैवतम्"
"अपराधपरम्परावृतं न हि माता समुपेक्षते सुतम्

"आपदि किं करणीय स्मरणीय चरणयुगलमम्बायाः।" इत्यादिभिर्हृद्यैः पद्यैर्मातृरूपेणैव ध्येयत्व निश्चीयते।

त्रिविधदावदग्धान् भववनपतितान् स्वसेवकान् पीयूषवर्षैः परित्रातु बद्धपरिकरायाः मातुश्चरणयोः शरणागतिः सर्वार्थसिद्धिदा। उक्तञ्च—

निष्कामो देवता नित्य योऽर्चयेद्भक्तिनिर्भरः।
तामेव चिन्तयन्नास्ते यथाशक्ति मनुं जपन्॥
सैव तस्यैहिक भारं वहेन्मुक्तिञ्च साधयेत्।
सदा सन्निहिता यस्य सर्वञ्च कथयेत सा
वात्सल्यसहिता धेनुर्यथा वत्समनुव्रजेत्।
तथाऽनुगच्छेत्सा देवी स्वं भक्त शरणागतम्॥"

एवमशरणशरण्यायाः करुणावरुणालयायाः भक्तजनस्य वाञ्छासमधिकफलं दातु भयात्त्रातुञ्च नित्यनिर्भरायाः पराम्बाया पादारविन्दार्चनं सकलैहिकामुष्मिकं वाञ्छितार्थं प्रपूरयति।

उपासनविधावपि श्रीविद्यायास्त्रयो भेदा सन्ति।

स्थूलोपास्तिः, सूक्ष्मोपास्तिः परोपास्तिरिति कायिकी वाचिकी मानसीचेत्यपरनामधेयाः कायिकी स्थूलोपास्ति श्रीचक्रार्चनम्, वाचिकी सूक्ष्मोपास्तिर्जपः मानसी परोपास्तिर्भावनोपनिषद्भावना।

श्रीसाधकाना कृते साङ्गा त्रिविधामपि सपर्यामिकेनैव ग्रन्थरत्नेन सम्यक्प्रकारेण कार्यसम्पादनायालमिति यतमानानामस्माकं मनोरथाः साम्प्रतं पूर्णताङ्गताः।

इतो दशवर्षेभ्यः पूर्वं श्रीगुरुचरणैर्विरचित श्रीपट्टाभिरामशास्त्रिचरणै. सम्पादितं "त्रिपुरसुन्दरिवरिवस्या" नामकं पुस्तक प्रकाशितमासीत् तामेव पद्धतिं श्रीचरणैर्नूतनैः कतिपयै. पूर्णाभिषेकादिविधिभिरलङ्कृत्य प्रकाशनार्थं समादिष्टोऽहम् । मया च साधकाना सौकर्यार्थं तत्तत्सपर्यापुस्तकान्यवलोक्य विषया विशदीकृताः ।

इदानी "श्रीविद्यारत्नाकर" नामा ग्रन्थोऽय श्रीमता पुरस्ताद् वर्तते । ग्रन्थेऽस्मिन् गणपतिश्रीश्यामावार्तालीपरादेवताना साङ्गोपाङ्गसपर्याविधि-र्वर्णितः । श्रीक्रमे सुदुर्लभं त्रिवृत्तार्चन श्रीचक्रस्वरूपं तस्य महिमा च महता समारोहेण प्रमाणपुर सर वर्णितः श्रीचरणै. ।

परिशिष्टे च श्रीविद्यामन्त्रभाष्यम्, वाञ्छाकल्पलता विद्या, पूर्णाभिषेक-विधि , लक्षार्चनम्, महायागक्रम , एवञ्चोद्धृतानि मानसपूजादीनि सुललि-तानि स्तोत्राणि साधकाना मनासि समाह्लादयन्ति ।

ग्रन्थस्यास्य सम्पादने मुद्रणे च श्रीगुरुचरणाना कृपालेश एव परमो हेतु., येन ग्रन्थोऽय प्रकाशतामनीत । अतस्तेषा चरणेषु सहस्रश. प्रणामा. विलसन्तु । मुद्रितपुस्तकसशोधनेनात्यन्तं साहाय्यमाचरितवता पुरीपीठा-धीश्वराणा जगद्गुरुश्रीशङ्कराचार्याणामनन्तश्रीविभूषिताना स्वामिश्रीनिर-ञ्जनदेवतीर्थचरणाना पादरज. शिरसाऽऽवहामि ।

वित्तसम्बन्धि सर्वविधसाहाय्य कृतवता श्रीहनुमानप्रसादधानुकाना, श्रीबाबूलाल गनेडीवालानामेवं मुद्रणपत्रशोधनाय साहाय्यमनुष्ठितवता त्रिवेदु-पाधिश्रीब्रह्मदत्तशास्त्रिणा कृतेऽनन्तान् धन्यवादान् समर्पयामि ।

अत्र सीसकाक्षरयोजनवैकल्येन काश्चनाशुद्धयो मुद्रणपथमधिरुढा.; अस्मदीयबुद्धिदोषात् दृष्टिदोषाद्वा या अशुद्धयो दृष्टिगोचरा उपासकाना भवेयु. तास्सकलीकृत्य बोधयन्तु येन तत्स्थल सशोध्य साधकेभ्यो वितरामः ।

पराम्बापादारविन्दमकरन्दजुषा साधकपुङ्गवाना अत्यन्तोपकारकमिद-मपूर्वपुस्तकं परिगृह्य साधकजनता श्रीमातु. परमनुग्रहभाजनं भूयादिति साञ्जलिबन्धं सप्रणामं सादरं सामोद चाशासानः—

श्रीगुरुचरणसरोजरेणुः
श्रीसीताराम कविराज.
"श्रीविद्याभास्कर."
दीक्षानाम—दत्तात्रेयानन्दनाथ.

—.०:—

॥ श्रीः ॥

श्रीविद्यारत्नाकरस्यविषयानुक्रमणिका

इतिविषयानुक्रमण समाप्तम् ।

शिवत्वङ्गताः श्रीकरपात्रस्वामिचरणाः



शिवत्वङ्गता—समस्तशास्त्रपारावारपारदृश्वानः अनन्तश्रीविभूषिताः
श्रीहरिहरानन्दसरस्वतिस्वामिनः (दीक्षानाम—श्रीषोडशानन्दनाथः)

चित्र एवं यन्त्र सूची

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीः ॥

॥ श्रीगुरुभ्यो नमः श्रीमहागणपतये नमः ॥

॥ श्रीसच्चिदानन्दस्वरूपिण्यै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः ॥

श्रीकरपात्रस्वामिविरचितः

श्रीविद्या-रत्नाकरः

•

आब्रह्माण्डपिपीलिकान्ततनुभृत्सूज्जृम्भमाणा स्फुटम्,
जाग्रत्-स्वप्न-सुषुप्तिभासकतया सर्वत्र या दीव्यति ।
सा देवी जगदम्बिका भगवती श्रीराजराजेश्वरी,
श्रीविद्या करुणानिधिः शुभकरी भूयात् सदा श्रेयसे ॥

अथ परशुराम-कल्पसूत्र-श्रीविद्यार्णव-नित्योत्सवादिरीत्या गणपति-श्री-श्यामा-वार्ताली-परावरिवस्याः क्रमशो निरूप्यन्ते ।

दीक्षा-क्रमः

तत्र श्रीविद्यार्णवोक्तमन्त्रेषु विशेषः । देवताप्रसादात् श्रीविद्यार्णवो विशेषतोऽनुगृहीतः । तथाहि, श्रीविद्यार्णवारम्भे :—

'श्रीविष्णुशर्मणः शिष्यः प्रगल्भाचार्यपण्डितः ।
तच्छिष्येण मया प्रोक्ते ग्रन्थेऽस्मिन् पूर्णतां गते ॥

आविरासीज्जगद्धात्री महामाया ममाग्रत ।
इति प्रोवाच भो वत्स वृणीष्व वरमीप्सितम् ॥
तदोक्तवानहं मातर्मत्कृतं ग्रन्थमुत्तमम् ।
दृष्ट्वा गुरुक्रम मन्त्रान् गुरुत्वेन विभाव्य माम् ॥
दीक्षा विनाऽपि भक्त्या तु ये जपन्ति च साधका ।
तेषामतितरां सिद्धिर्भवत्विति ममेप्सितम् ॥
सुप्रसन्ना सदा देवी तत्तथैव भवत्विति ।'

मन्त्राणामतितरामैहिकामुष्मिकाभीष्टफलदातृत्वं जोघुष्यते सर्वमन्त्र-राद्धान्तेषु । पारम्पर्यवैधुर्यादेव तेषामनुष्ठानेऽपि निष्फलत्वमनुभूयते । अनिष्ट-प्रदत्वञ्चाऽपि तन्त्रेषु स्मर्यते । तदुक्त तत्रैव —

गुरुक्रममविज्ञाय पूजयेद् य परा शिवाम् ।
सा पूजा निष्फला ज्ञेया भस्मन्यर्पितहव्यवत् ॥
ज्ञात्वा गुरुमुखान्नित्य सम्प्रदायमतन्द्रित ।
प्रत्यहं स्मरणं कुर्यान्मन्त्रवीर्यस्य सिद्धये ॥
विंशति पुरुषा वापि नव सप्त नवोऽपि वा ।
न ज्ञाता गुरुवंशाना शिष्यश्चेन्नष्टसन्तति ॥
स्ववंशादधिको ज्ञेयो गुरुवंशो महाशुभ ।
जनकादधिको ज्ञेयो मन्त्रदस्तु महेश्वर ॥

गुरुलक्षणम्

परशुरामकल्पसूत्रभाष्ये गुरुलक्षणानि कुलार्णवे १३ समुल्लासे—

श्रीगुरु परमेशानि शुद्धवेशो मनोहर ।
सर्वलक्षणसम्पन्न सर्वावयवशोभित ॥
सर्वागमार्थतत्त्वज्ञ सर्वतन्त्रविधानवित् ।
लोकसम्मोहनाकारो देववत् प्रियदर्शन ॥
सुमुख सुलभ स्वच्छो भ्रमसंशयनाशक ।
इङ्गिताकारवित् प्राज्ञ ऊहापोहविचक्षण ॥

अन्तर्लक्ष्यबहिर्दृष्टिः सर्वज्ञो देशकालवित् ।
आज्ञासिद्धस्त्रिकालज्ञो निग्रहानुग्रहक्षमः ॥
वेधको बोधकः शान्तः सर्व-जीव-दयाकरः ।
स्वाधीनेन्द्रियसञ्चारः षड्वर्गविजयप्रदः ॥
अग्रगण्योऽतिगम्भीरः पात्रापात्रविशेषवित् ।
शिवविष्णुसमः साधुर्मनुभूषणभूषितः ॥
निर्ममो नित्यसन्तुष्टः स्वतन्त्रोऽनन्तशक्तिमान् ।
सद्भक्तवत्सलो धीरः कृपालुः स्मितपूर्ववाक् ।
भक्तप्रियः समो देवि ! गम्भीरः शिष्टसाधकः ॥

....

नरवद् दृश्यते लोके श्रीगुरुः पापकर्मणा ।
शिववद् दृश्यते लोके भवानि ! पुण्यकर्मणा ॥
दृश्यं विना स्थिरा दृष्टिर्मनश्चाऽऽलम्बनं विना ।
विनाऽऽयासं स्थिरो वायुर्यस्य स्यात् स गुरुः प्रिये ॥
यो वेत्ता सच्चिदानन्दं हरेदिन्द्रियजं सुखम् ।
धन्यं तदुक्तमखिलं स गुरुः परमो मतः ।
विद्धस्तु वेधयेद्देवि ! नाविद्धो वेधको भवेत् ॥
मुक्तस्तु मोचयेदूर्ध्वं न मुक्तो मोचकः कथम् ।
शिलां सन्तारयेन्नौर्हि न शिला तारयेच्छिलाम् ॥
अभिज्ञश्चोद्धरेन्मूर्खं न मूर्खो मूर्खमुद्धरेत् ॥
प्रेरकः सूचकश्चैव वाचको दर्शकस्तथा ।
शिक्षको बोधकश्चैव षडेते गुरवः स्मृताः ॥
पञ्चैते कार्यभूताःस्युः कारणं बोधको भवेत् ।
पूर्णाभिषेककर्त्ता यो गुरुस्तस्यैव पादुका ॥
पूजनीया महेशानि ! बहुत्वेऽपि न संशयः ।
श्रीगुरुं लक्षणोपेतं संशयच्छेदकारकम् ॥

लब्ध्वा ज्ञानप्रद देवि । न गुर्वन्तरमाश्रयेत् ।
अनभिज्ञ गुरु प्राप्य सशयोच्छेदकारकम् ॥
गुर्वन्तरं तु गत्वा स नैतद्दोषेण लिप्यते ।
मधुलुब्धो यथा भृङ्ग पुष्पात् पुष्पान्तर व्रजेत् ॥
ज्ञानलुब्धस्तथा शिष्यो गुरोर्गुर्वन्तरं व्रजेत् ।
नातिबालो न वृद्धश्च न खञ्जो न कृशस्तथा ॥
नाधिकाङ्गो न हीनाङ्गो न खल्वाटो न दन्तुर ।
कुमारीहिमवन्मध्ये स्वत कृष्णमृगान्विते ।
देश जातस्तु यो विद्वान् आचार्यत्वमथार्हति ।
सर्वत्र व्यतिरिक्त तु आत्मान वेत्ति यो द्विज ।
सवलक्षणहीनोऽपि स गुरुर्नाऽत्र सशय ॥
(हयशीर्षपञ्चरात्रे)

अजीतागमे विशेष. :—

जटी मुण्डी शिखी वाऽपि शस्तदेशसमुद्भव ।
शिवशास्त्रार्थतत्त्वज्ञ श्रुतवृत्तान्वितो द्विज ॥
शिवमेवाश्रितो नित्य वाड्मन कायकर्मभि ।
आचाय स सदोद्दिष्ट शिवदीक्षादिकर्मसु ॥

मोहशूरोत्तरे . —

चीर्णाचारव्रतो मन्त्री ज्ञानवान् सुसमाहित ।
नित्यनिष्ठो यति ख्यातो गुरु स्याद् भौतिकोऽपि च ॥

गुरुगौरवे —

विद्ययाऽभयदातार लौल्यचापल्यवर्जितम् ।
एव विधं गुरु प्राप्य को न मुच्येत बन्धनात् ॥

पौष्करे तु —

सर्वलक्षणहीनोऽपि ज्ञानवान् गुरुरुच्यते ।
ज्ञानञ्च तत्वविज्ञानं षडध्वज्ञानसश्रयम् ॥

मालिनीतन्त्रेऽपि—

स गुरुर्मत्सम प्रोक्तो मन्त्रवीर्यप्रकाशक ।
आदिमान्त्यविहीनास्तु मन्त्रा स्यु शरदभ्रवत् ॥
'गुरोर्लक्षणमेतावदादिमान्त्यं निवेदयेत्'—इति ।

गुरवो बहव सन्ति शिष्यवित्तापहारका ।
दुर्लभोऽयं गुरुर्देवि शिष्यसन्तापहारक ॥
स्वच्छ स्वच्छन्दचरितोऽतुच्छधीस्त्यक्तहृच्छय ।
देशकालादिविद्देशे देशे दैशिक उच्यते ॥
इष्टदो नित्यसहर्त्ता दृष्टादृष्टसुखावह ।
रतोऽविरतमर्चासु पर पुरमुरद्विषो ॥
दाता दान्त शान्तमना नितान्तं कान्तविग्रह ।
स्वदु खकारणेनाऽपि परं परसुखोद्यत ॥
ऊहापोहविदध्यात्मव्याकुलो मोहवर्जित ।
अज्ञानुकम्पी विज्ञातज्ञानो ज्ञातपरेङ्गित ॥

शिष्य लक्षणम्—

आस्तिको दृढभक्तिश्च गुरौ मन्त्रे च दैवते ।
एवम्विधो भवेच्छिष्य इतरो दु खकृद्गुरो ॥

वशिष्ठागस्त्ययाज्ञवल्क्यादिवद् ब्रह्मनिष्ठ स्वस्थमानसो गृहस्थो गुरु स्वयमेव सर्वमाचार्यकृत्यं कुर्यात् । त्यक्ताग्नयोऽन्याश्रमिणस्तु ब्रह्मादिकार्याणि ऋत्विग्भिरेव कारयेयु । योगध्यानादिसाध्यान्यावरणार्चनादीनि च स्वयमेव विदधीरन् ।

नित्योत्सवे दीक्षाकालः १ —

वैशाखे सिद्धिदा दीक्षा श्रावणे वृद्धिदा नृणाम् ।
आश्विने सर्वसिद्धि स्यात् कार्तिके ज्ञानवृद्धिदा ॥
शुभदा मार्गशीर्षे च माघे स्वर्गफलप्रदा ।
फाल्गुने सर्वसिद्धि स्यादन्येऽनिष्टफलप्रदा ॥
मलमासं क्षयमासमस्वाध्यायं विवर्जयेत् ।
रवि-सोम-बुध-गुरु-शुक्रेषु वारेषु द्वितीया-तृतीया-
पञ्चमी-सप्तमी-दशम्येकादशी द्वादशी-पूर्णिमा तिथिषु
दीक्षा शुभदा ।

अश्विनी रोहिणी - पुनर्वसु-पुष्य - मघा-पूर्वफाल्गुनी-हस्त चित्रा-स्वाती अनुराधा - पूर्वोत्तराषाढा शतभिषा - पूर्वभाद्रपदा - उत्तरभाद्रपदा रेवती-

नक्षत्रेष्वायुष्मत्प्रीति-सौभाग्य-शुभ - सुकर्म-धृति - वृद्धि - ध्रुव-सिद्धि-हर्षाख्य-वरीयः शिव-सिद्ध-ब्रह्मेन्द्रयोगेषु च दीक्षा शुभावहा ।

मेष-कर्कट-कन्या-तुला-वृश्चिक-मकर-कुम्भराशिषु-शुक्लपक्षे
शुभा दीक्षा, कृष्णेऽप्यापञ्चमीदिनात् ।
भूतिकामैः सितेपक्षे मुक्तिकामैः सितेतरे ॥'
विषुवेऽप्ययनद्वन्द्वे संक्रान्त्या दमनोत्सवे ।
दीक्षा कार्या त्वकालेऽपि पवित्रे गुरु पर्वणि ॥

विषुवे (मेष-तुला-सङ्क्रमणयोः) अयन-द्वन्द्वे (कर्कटमकरसंक्रान्त्योः) संक्रान्त्या, दमनोत्सवे ।

षष्ठी भाद्रपदे मासि कृष्णाश्विनचतुर्दशी ।
कार्तिके नवमी शुक्ला मार्गे कृष्णा च पञ्चमी ।
पौषे च पूर्णिमा देवि माघे चैव चतुर्थिका ।
फाल्गुनैकादशी कृष्णा चैत्रे मासि त्रयोदशी ।
वैशाखेऽक्षय्यतृतीया ज्येष्ठे दशहरा स्मृता ॥
आषाढे द्वादशी कृष्णा ह्यमावस्या च श्रावणी ।
इष्टानि देवीपर्वाणि कोटियज्ञफलानि वै ॥
सत्तीर्थोदके विधुग्रासे पुण्यारण्ये वनेषु च ।
मन्त्रदीक्षा प्रकुर्वाणो मासर्क्षादीन्न शोधयेत् ॥

इह सकलानर्थनिवर्हणपरमानन्दावाप्तिमूलप्रत्यक्चैतन्याभिन्नपरात्पर-ब्रह्मात्मिकायाः पराम्बायास्सच्चित्सुखरूपाया. साक्षात्कृतावुपास्तौ च दीक्षाऽपेक्षिता—

'दीयते ज्ञानमत्यन्तं क्षीयते पापसञ्चयः ।
यया दीक्षेति सम्प्रोक्ता परलोकप्रदायिनी' ॥

इति दीक्षानिर्वचनात्; 'मतिमान् दीक्षेत' इति परशुरामसूत्रात्, "आचार्यवान् पुरुषो वेद" इति श्रुतेश्च । दीक्षामन्तरा पुस्तकस्थान् मन्त्रान् दृष्ट्वा यो जपति, स प्रत्यवैति ।

'पुस्तके लिखितान् मन्त्रान् दृष्ट्वा जपति यो नरः ।
स जीवन्नेव चाण्डालो मृतः श्वा चाऽभिजायते' ॥
(इति नित्योत्सवे) ।

दीक्षापद्धतिः

श्रीविद्यार्णवादिप्रोक्तशुभपुण्यतिथौ सद्गुरुं वृणुयात् ।

तत्र निर्वर्तितनित्यस्नानविधिस्साधको वाद्यघोषपुरस्सरं ब्राह्मणैः स्वस्ति वाचयित्वा, आचम्य, प्राणानायम्य, देशकालौ संकीर्त्य, श्रेयस्कामोऽहम् अमुकविद्याग्रहणार्थम्, अमुकगुरोर्दीक्षां ग्रहीष्य इति सङ्कल्प्य समित्पाणिः सोपहारो गुरुमुपगच्छेत् । पुनश्च गुरोराज्ञया देशकालगोत्रनक्षत्रराश्याद्युच्चारणपूर्वकं भगवन्तं भवन्तं गुरुत्वेन वृण इति शिष्योक्तौ, गुरुर्वृतोऽस्मीत्युक्त्वा, सशिष्यः सामयिकैस्सह गोमयेनोपलिप्तं पुष्पमालावितानाद्यलङ्कृतं मण्डपमासाद्य हस्तपादौ प्रक्षाल्याचम्य मण्डपान्तः प्रविश्य वक्ष्यमाणविधिना आसन उपविश्य भूशुद्धिभूतशुद्धि-प्राणप्रतिष्ठाः कृत्वा गणपतिललिताश्यामावार्तालीपराणां सपर्यां विधाय शिष्यमाहूय नूतनेन वाससा तस्य मुखं बद्ध्वा गणपत्यादिमूलमन्त्रानुच्चारयन् सामान्यार्घोदकबिन्दुभिस्तमभिवीक्ष्य त्रैपुरसिद्धान्तं श्रावयेत् ।

भूतानि, तन्मात्राणि, ज्ञानकर्मेन्द्रियाणि, अहङ्कारबुद्धिमनांसि, गुणसाम्यरूपा प्रकृतिः, शरीरकञ्चुकितशिवो जीवः, (परमशिवगता स्वतन्त्रता-नित्यता नित्यतृप्तता-सर्वकर्तृकता-सर्वज्ञता धर्मा एव संकुचितास्सन्तो जीवे) नियति- काल- राग - कलाविद्या - शब्दवाच्या भवन्ति । माया (जगत्परमशिवयोर्भेदबुद्धिः) शुद्धविद्या (तयोरभेदबुद्धिः) जगदिदन्तया पश्यन् परमशिवः ईश्वरः, तदहन्तया पश्यन् सदाशिवः, शक्तिः परमशिवस्य जगत्सिसृक्षा, तद्वान् शिवः षट्त्रिंशत्तत्त्वानि, स्वविमर्शः पुरुषार्थः, वर्णसमुदायरूपा मन्त्राः नित्याः, (मूलाविद्यासमसत्ताका व्यावहारिकनित्याः) मन्त्राणामचिन्त्यशक्तित्वेन स्वगुरुपरम्परोपदर्शरगम्यधमर्पण सम्प्रदायेन गुरुशास्त्रदेवतासु विश्वासेन सर्वार्थसिद्धयः, आचार्योक्तरीत्या गुरुमन्त्रदेवतात्मनामैक्यं विभावयन्,

मनःपवनयोरैक्यत्लनिरोद्धव्यत्वज्ञानाच्च प्रत्यगात्मवेदनम्, भावनादार्ढ्यान्निग्रहानुग्रहसिद्धिः। दर्शनान्तरानिन्दनेन स्वोपास्यनिष्ठया मन्त्रार्थानुसन्धानेन कामक्रोधनिन्दापरिवर्जनेन च सिद्धयो भवन्ति।

वृत्तिभिर्वेद्यं सर्वं हविः, इन्द्रियाणि स्रुचः, सर्वोचेन स्वात्मस्थितास्सर्वज्ञत्वसर्वकर्तृत्वादयः परमशिवशक्त्य एव ज्वाला, स्वात्मशिव एव पावकः, स्वयमेव होता, निर्गुणब्रह्मापरोक्ष्यं फलम्, स्वपारमार्थिकस्वरूपलाभान्न परमिति सारः।

शाम्भवी दीक्षा

गुरुः शिष्यस्य शिरसि रक्तशुक्लचरणं कामेश्वरीकामेश्वरयोर्भावयित्वा तदमृतक्षालितं सर्वशरीरमलं दूरीकुर्यात्। एषा चरणविन्यासरूपादीक्षा।

शाक्तो दीक्षा

ततस्तस्यामूलमाब्रह्मबिलं प्रज्वलन्ती बिसतन्तुतनीयसी विद्युत्पुञ्जपिञ्जरा विवस्वदयुतभास्वत्प्रकाशा चन्द्रकोटिसुशीतला ज्वलदनलनिभा परा संविदं ध्यात्वा तद्रश्मिभिः पापान् दहेत्। इयं शक्तिपातरूपा दीक्षा।

त्रिकटु त्रिफला-चतुर्जात-कंकोल- मदयन्ती -सहदेवी-दूर्वा भस्म मृत्तिका-चन्दन कुङ्कुम - रोचना - कर्पूरवासितजलपूर्णवस्त्रयुगलवेष्टितं नूतनकलशं बालापञ्चाङ्गेनाभ्यर्च्य श्रीश्यामावार्तालीचक्राणि त्रि क्षिप्य तिसृणामावरणमन्त्रैरभ्यर्च्य सरक्षास्त्रेण प्रदर्श्य धेनुयोनी।

ततः सक्षीरेण सिन्दूरकुङ्कुमादिना चन्दनपीठे मातृकायन्त्रं विलिख्य, तत्र शिष्यं निवेश्य तेन कुम्भाम्भसा ललितादिमूलविद्याभिः स्नपयेत्। मातृकायन्त्रप्रकारश्चेत्थम्—चतुरस्रालङ्कृतं सकेसरमष्टदलकमलं विलिख्य तत्कर्णिकायां हकारसकारौकारविसर्गात्मकं बीजं तत्केसरेषु प्राच्यादितोऽकारादिस्वरद्वन्द्वं दलोदरेषु क-च-ट-त-प य-श लाख्यवर्गाष्टकं चतुरस्रस्य बाह्यतः प्रागादिदिक्षु वकारम् आग्नेयादिविदिक्षु ठवर्णञ्च लिखेत्। सर्वेषामक्षराणां सबिन्दुकत्वं सम्प्रदायात्।

ततः परिहितदुकूलं सुरभिलचन्दनानुलिप्ताङ्गं मल्लिकादिमाल्यधारिणम्, सुप्रसन्नं शिष्यं पार्श्वे निवेश्य तदङ्गे मातृकान्यासं विधाय विमुक्तमुखबन्धवाससस्तस्य हस्ते क्रमात् त्रीन् चन्दनोक्षितान् पुष्पखण्डान् विनिक्षिप्य तत्त्वमन्त्रैर्ग्रासयित्वा गुरुर्दक्षिणकर्णे श्रीविद्यागुरुपादुकामन्त्रमुपदिश्य बालामुपदिशेत् ।

ततस्तस्य शिरसि स्वचरणं निःक्षिप्य सर्वान् मन्त्रान् सकृद्वा क्रमेण वा यथाधिकारमुपदिश्य स्वाङ्गेषु किमप्यङ्गं शिष्यं स्पर्शयित्वा तदङ्गमातृकावर्णादिद्व्यक्षरं त्र्यक्षरं चतुरक्षरं वा आनन्दनाथशब्दान्तं तस्य नाम निर्दिशेत् । ततस्समयाचारानुशासनम् ।

श्लेष्मातक-करञ्ज अक्ष-निम्ब-अश्वत्थ-कदम्ब-बिल्व-वटोदुम्बरतिन्तिणीकुलवृक्षच्छेदनवर्जनम्, स्त्रीवृन्द-क्षीरकलशसिद्धलिङ्गविविधक्रीडाकुलकुमारी-कुल-सहकाराशोकतरु-पितृवनमत्तवाराङ्गना-रक्तांशुकामत्तेभान् दृष्ट्वा वन्देत् । कृष्णाष्टमी कृष्णचतुर्दशी दर्श-पूर्णमास-संक्रमणपर्वसु नैमित्तिकी वरिवस्या कर्तव्या । गुरुपरमगुर्वादीन् आदरेण पश्येत्, शरीरस्यार्थस्यासूनाञ्च गुर्वर्थे धारणम्, तद्वचसि युक्तायुक्तविचारम्, सर्वत्र शास्त्रव्यवस्थापालनम्, परनिन्दात्मस्तुत्योश्च वर्जनम्, सर्वप्रयत्नेन परदेवताराधनद्वारा ब्रह्ममायाभिलाषः; इत्थं विदित्वाऽनुतिष्ठन् कृतकृत्यो जीवन्मुक्तो भवेत् ।

ततो गुरुर्देहेन्द्रियादिविलक्षणामवस्थात्रयसाक्षिसच्चिदात्मकप्रत्यगभिन्नं ब्रह्मैव त्वमसि इति शिष्याय परमात्मतत्त्वमुपदिश्य ललिताश्यामावार्तालीविद्याभिः तदङ्गं त्रिः परिमृज्य परिरभ्य तं मूर्ध्न्युपाघ्राय स्वमिव शिष्यमपि परशिवरूपं कुर्यात् । शिष्योऽपि तथैव स्वात्मानं भावयित्वा कृतार्थम्मन्यः यथाविभवं श्रीगुरुमाराध्य तस्माद्विदितवेदितव्योऽशेषमन्त्राधिकारी भवेत् ।

अनेनैवैकस्मिन्नेव काले समुचितेनान्यतमेन क्रमेणैव दीक्षाविधिना गणपति-श्री-श्यामा-परा-वार्तालीनां मन्त्रानुष्ठानं न तु पृथक् पृथक् दीक्षणम् ।

दीक्षायाः लघुविधिः

गणपतेर्ललितायाश्च उभयोरेव कर्म निर्वर्त्य पात्राण्यासाद्य चक्रराजमात्रं कलशे निक्षिप्य श्रीविद्यया केवलं शिष्यं स्नपयित्वा तदङ्गञ्च परिमृज्य शेषमशेषञ्चाऽनुतिष्ठेत् । गणपतिश्यामादीनां स्वातन्त्र्येणैवैकशः तत्तत्कर्म प्रवर्त्य तत्तत्पात्रे आसाद्य तत्तद्यन्त्रं कुम्भे नि क्षिप्य तत्तन्मन्त्रदीक्षां कुर्यात् । दीक्षायां त्रैवर्णिकस्यैवाऽधिकारः । स्त्रीनान्तु-औपनयान्तर्गतगुरुमण्डलान्तर्दर्शनज्ञापकबलादस्त्येवाऽधिकारः ।

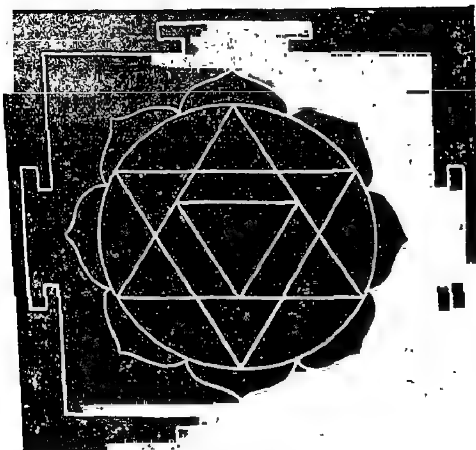
श्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे

॥ दीक्षाक्रमः समाप्तः ॥

श्रीमहागणपतिः



बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजाचक्राब्जपाशोत्पलः ।
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्कराम्भोरुहः ॥
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया ।
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः ॥



श्रीमहागणपति यन्त्रम्

श्रीमहागणपतिक्रमः

इत्थं सद्गुरोराहितदोषः महाविद्याराधन-
प्रत्यूहापोहाय गाणनायकीं पद्धतिमाधरेत् ॥

श्रीमान् साधकः ब्राह्मे मुहूर्ते उत्थाय श्रीगुरुपादुकास्मरणपूर्वकं हृदयकमले उद्यदरुणकिरणपाटलस्य देवस्य करटिवदनस्य ध्यानेन परिप्लुष्टनिःशेषदोषत्वं आत्मनः तत्प्रभारुणतनुत्वञ्च भावयित्वा शय्यां त्यक्त्वा श्रीविद्यासपर्याक्रमोक्तशौचदन्तधावनादीन् कृत्वा, स्नात्वा, धौते वाससी परिधाय सन्ध्यावन्दनं कृत्वा, ॐ गं आत्मतत्त्वाय स्वाहा । ॐ गं विद्यातत्त्वाय स्वाहा । ॐ गं शिवतत्त्वाय स्वाहा । ॐ गं सर्वतत्त्वाय स्वाहा । इति तत्त्वाचमनं कृत्वा मूलेन प्राणानायम्य "ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्" इति गणपतिगायत्र्या, ॐ सूर्यमण्डलस्थाय महागणपतये एषोऽर्घ्यः स्वाहा, इति त्रिः अर्घ्यं दत्वा । ऋष्यादिषडङ्गन्यासपूर्वकं अष्टोत्तरशतवारं वा अष्टाविंशतिवारं मूलमन्त्रं जपित्वा । अनेन कर्मणा भगवान् श्रीमहागणपतिः प्रीयताम् । इति सन्ध्यां गणपतये निवेदयेत् । ततो गुरुपादुकामन्त्रं जपेत् ।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः श्रीगुरुपादुकां पूजयामि ।

॥ अथ चतुरावृत्तितर्पणम् ॥

आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ सङ्कीर्त्य, मम श्रीमहागणपतिप्रसादसिद्धये सर्वविघ्ननिवारणार्थं चतुरावृत्तितर्पणं करिष्ये, इति संकल्प्य नद्यादौ हस्तमात्रं चतुरस्रमण्डलं परिगृह्य—

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे ।
तेन सत्येन मे देव ! तीर्थं देहि दिवाकर ॥

इति मन्त्रेण सूर्यमभ्यर्च्य—

आवाहयामि त्वा देवि ! तर्पणायेह सुन्दरि ।
एहि गङ्गे ! नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥

इति गङ्गां प्रार्थ्य 'ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः' इत्युच्चार्य क्रों इत्यङ्कुशमुद्रया गङ्गाऽऽदितीर्थान्यावाह्य, वं इत्यमृतबीजेन सप्तवारमभिमन्त्र्य, तत्र चतुरस्राष्टदलषट्कोणत्रिकोणात्मकं महागणपतियन्त्रं विचिन्त्य, स्वदेहे ऋष्यादिन्यासान् न्यस्य, तद्यथा

अस्य श्रीमहागणपतिमहामन्त्रस्य गणक ऋषिः, निचृद्गायत्रीच्छन्दः, महागणपतिर्देवता, महागणपतितर्पणे विनियोगः ।

अथ न्यासः—

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गां अङ्गुष्ठाभ्यां—हृदयाय नमः
३ ,, श्रीं गीं तर्जनीभ्यां—शिरसे स्वाहा ।
३ ,, ह्रीं गूं मध्यमाभ्यां—शिखायै वषट् ।
३ ,, क्लीं गैं अनामिकाभ्यां—कवचाय हुं ।
३ ,, ग्लौं गौं कनिष्ठिकाभ्यां—नेत्रत्रयाय वौषट् ।
३ ,, गं गः करतलकरपृष्ठाभ्यां—अस्त्राय फट् ।

अथ ध्यानम्—

'ध्यायेे हृदब्जे शोणाङ्गं वामोत्सङ्गविभूषया ।
सिद्धलक्ष्म्या समाश्लिष्टपार्श्वमर्धेन्दुशेखरम् ॥
वामाधःकरतो दक्षाधःकरान्तेषु पुष्करे ।
परिष्कृतंमातुलुङ्गगदापुण्ड्रेक्षुकार्मुकैः ॥
शूलेन शङ्खचक्राभ्यां पाशोत्पलयुगेन च ।
शालिमञ्जरिकास्वीयदन्ताञ्चलमणीघटैः ॥
स्रवन्मदञ्च सानन्दं श्रीश्रीपत्यादिसम्वृतम् ।
अशेषविघ्नविध्वंसनिघ्नं विघ्नेश्वरं भजे ॥ (इति ध्यात्वा)

(यन्त्रे सावरणदेवमावाह्य) ततस्तद्यन्त्रे मूर्तिं च गंधपुष्पदूर्वाङ्कुरैः पञ्चोपचारैरर्चयेत् । तद्यथा—श्रीं ह्रीं क्लीं महागणपतये लं पृथिव्यात्मकं गन्धं कल्पयामि नमः (त्रिवारम्) ।

श्री ह्रीं क्लीं महागणपतये हं आकाशात्मकं पुष्पं कल्पयामि नमः

(त्रिवारम्)।

३	महागणपतये यं वाय्वात्मकं धूपं कल्पयामि नमः	,,	।
३	महागणपतये रं वह्न्यात्मकं दीपं कल्पयामि नमः	,,	।
३	महागणपतये वं अमृतात्मकं नैवेद्यं कल्पयामि नमः	,,	।
३	महागणपतये सं सर्वात्मकं ताम्बूलं कल्पयामि नमः	,,	।

इति ॥

प्रथमं प्रत्यावृत्तिमूलान्ते महागणपतिं तर्पयामीति द्वादशवारं तर्पयित्वा ततः स्वाहान्तेन मूलस्यैकैकेन वर्णेन चतुश्चतुर्वारं प्रतिवर्णान्तमावृत्तेन मूलेन च प्राग्वत् चतुश्चतुर्वारं देवं त्रयोदशसु मिथुनेषु श्रीश्रीपत्यादिषु एकैकां देवतां द्वितीयान्तेन तत्तन्नाम्ना चतुश्चतुर्वारं प्रतिदेवतामावृत्तेन च मूलेन देवं चतुश्चतुर्वारं तर्पयेत् । यथा—

ॐ श्री ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा महागणपतिं तर्पयामि ।' (द्वादशवारम्)।

श्री ह्रीं क्लीं ॐ स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि ।	(चतुर्वारम्)
मूलमन्त्रेण—	,,	,,	,,
३ श्री स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन—	,,	,,	,,
३ ह्रीं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन—	,,	,,	,,
३ क्लीं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन—	,,	,,	,,
३ ग्लौं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन—	,,	,,	,,

३ गं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि।	(चतुर्वारम्)
मूलेन—	,,	,,	,,
३ गं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन—	,,	,,	,,
३ णं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन—	,,	,,	,,
३ पं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन—	,,	,,	,,
३ तं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन—	,,	,,	,,
३ यें स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन—	,,	,,	,,
३ वं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन—	,,	,,	,,
३ रं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन—	,,	,,	,,
३ वं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन—	,,	,,	,,
३ रं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन—	,,	,,	,,
३ दं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन—	,,	,,	,,
३ गं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन—	,,	,,	,,
३ वं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन—	,,	,,	,,
३ जं स्वाहा	,,	,,	,,
मूलेन—	,,	,,	,,

३ नं स्वाहा	महागणपतिं	तर्पयामि ।	चतुर्वारम् ।
मूलेन—	"	"	"
३ मे स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ वं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ शं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ मां स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ नं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ यं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ स्वां स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ हां स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ श्रियं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ श्रीपतिं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ गिरिजां स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ गिरिजापतिं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ रतिं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ रतिपतिं स्वाहा	"	"	"

मूलेन—	महागणपतिं	तर्पयामि ।	चतुर्वारम् ।
३ महीं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ महीपतिं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ महालक्ष्मी स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ महागणपतिं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ ऋद्धिं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ आमोदं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ समृद्धिं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ प्रमोदं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ कान्तिं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ सुमुखं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ मदनावती स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ दुर्मुखं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ मदद्रवां स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ अविघ्नं स्वाहा	"	"	"

३ द्राविणी स्वाहा	महागणपतिं -	तर्पयामि ।	चतुर्वारम् ।
मूलेन—	"	"	"
३ विघ्नकर्तारं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ वसुधारां स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ शङ्खनिधिं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ वसुमतीं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"
३ पद्मनिधिं स्वाहा	"	"	"
मूलेन—	"	"	"

इत्याहृत्य तर्पणसङ्ख्यापिण्डश्चतुश्चत्वारिंशदुत्तरशती (४४४) भवति ॥

तर्पणान्ते उत्तरन्यासान् विधाय पुनर्मूलेन देवमुक्तरीत्या पञ्चोपचारैः संपूजयेत् ॥

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाण कृततर्पणम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा ॥
आयुरारोग्यमैश्वर्यं बलं पुष्टिर्महद्यशः ।
कवित्वं भुक्तिमुक्ती च चतुरावृत्तितर्पणात् ॥

अनेन कृतेन तर्पणेन भगवान् श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितः श्रीमहागणपतिः प्रीयताम् ॥

॥ इति चतुरावृत्तितर्पणविधिः ॥

अथ गणपति-सपर्यापद्धति

आब्रह्मलोकादाशेषादालोकालोकपर्वतात् ।
ये वसन्ति द्विजा देवास्तेभ्यो नित्य नमाम्यहम् ॥

ॐ नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासप्रदायकर्तृभ्यो, वशर्षिभ्यो नमो गुरुभ्य । सर्वोपप्लवरहितप्रज्ञानघनप्रत्यगर्थो ब्रह्मैवाहमस्मि, सोऽहमस्मि, ब्रह्माहमस्मि ॥

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रय भैरवम् ।
सिद्धौघ वटुकत्रय पदयुग दूतीक्रम मण्डलम् ।
वीरान्द्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवक वीरावलीपञ्चकम् ।
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहित वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥
गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वर ।
गुरु साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नम ॥

यागमन्दिर प्रवेशः

ततो यागगृहमागत्य स्थण्डिल गोमयेनोपलिप्य यागमन्दिरं च रम्भवल्लीपुष्पमालिकावितानादिभिरलङ्कृत्य द्वारस्य दक्षवामभागयो ऊर्ध्वभागे च क्रमेण—

श्री ह्रीं क्लीं भद्रकाल्यै नम ॥ दक्ष शाखायाम् ॥
३ भैरवाय नम ॥ वाम शाखायाम् ॥
३ लम्बोदराय नम ॥ ऊर्ध्व शाखायाम् ॥

(इति द्वारदेवतास्संपूज्य)

तत्त्वाचमनम्

ॐ गं आत्मतत्त्वाय स्वाहा ॥
ॐ गं विद्यातत्त्वाय स्वाहा ॥
ॐ गं शिवतत्त्वाय स्वाहा ॥
ॐ गं सर्वतत्त्वाय स्वाहा (इत्याचम्य)

श्रीगुरुपादुकामन्त्रः ।

श्री ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौं ऐं ग्लौं हस शिवः सोऽहं स्वरूपनिरूपण-हेतवे श्रीगुरवे नम अमुकानन्दनाथश्रीपादुका पूजयामि नम ॥

श्री ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौं ए ग्लौं सोऽहं हस शिव स्वच्छप्रकाशवि-मर्शहेतवे श्रीपरमगुरवे नम अमुकानन्दनाथश्रीपादुका पूजयामि नम ।

श्री ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौं ए ग्लौं हस शिव' सोऽहं हस स्वात्माराम-पञ्जरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठिगुरवे नम अमुकानन्दनाथश्रीपादुका पूज-यामि नम ॥

इति मृगीमुद्रया गुरुपादुकामुच्चार्य सुमुख-सुवृत्त-चतुरस्र-मुद्गरयोन्या-ख्याभि पञ्चभिर्मुद्राभि श्रीगुरुम् वामभुजे प्रणम्य गणपतिमूलेन स्वदक्षभुजे योनिमुद्रया महागणपतिं प्रणमेत् ॥

घंटापूजा

आगमार्थं च देवाना गमनार्थं च रक्षसाम् ।
कुर्याद् घटारवं तत्र देवताह्वानलाञ्छनम् ॥
(इति घटानाद कृत्वा) ॥

॥ सङ्कल्प. ॥

शुक्लाम्बरधरं विष्णु शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥

(मूलेन प्राणानायम्य) । देशकालौ सकीर्त्य, मम श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित-महागणपति प्रीत्यर्थं यथासभवद्रव्यै यथाशक्ति सपर्याक्रमं निर्वर्तयिष्ये, तेन परमेश्वर प्रीणयामि ॥

(आत्मानमलङ्कृत्य ताम्बूलेन सुरभितवदन मन् प्रमुदितचित्त शिवोहं इति भावयेत्) ॥

॥ आसनपूजा ॥

आसनमास्तीर्य दक्षिणहस्ते जलमादाय "गौं" इति द्वादशवारमभिमन्त्र्य तज्जलेन मूलमन्त्रेण-आसनं प्रोक्षयेत् ॥

अस्य श्रीआसनमहामन्त्रस्य-पृथिव्या मेरुपृष्ठऋषिः सुतलं छदः कूर्मो देवता आसने विनियोगः —

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्वं विष्णुना धृता।
त्वं च धारय मां देवि पवित्रं कुरु चासनम्॥

योगासनाय नमः। वीरासनाय नमः। शरासनाय नमः॥ श्रीं ह्रीं क्लीं आधारशक्तिकमलासनाय नमः। (इति पुष्पाक्षतैः आसनसभ्यर्च्य आसने उपविशेत्)

श्रीं ह्रीं क्लीं रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय द्वीपनाथाय नमः॥ (इति भूमौ पुष्पाञ्जलिं विकिरेत्)॥

३ समस्तगुप्तप्रकटसिद्धयोगिनीचक्रश्रीपादुकाभ्यो नमः॥ (इति मूर्ध्नि बद्धाञ्जलिः)

३ ऐं ह्रः अस्त्राय फट्—इति अस्त्रमन्त्रेण मुहुरावृतेन अङ्गुष्ठादिकनिष्ठिकान्तं करतलयोः कूर्परयोः देहे च व्यापकं कुर्यात्॥

॥ दीपपूजा॥

(स्वदक्षभागे गन्धपुष्पाक्षतादीन् निधाय दीपानभितः प्रज्वाल्य)।

घृतदीपो दक्षिणे स्यात् तैलदीपस्तु वामतः।
सितवर्तियुतो दक्षे रक्तवर्तिस्तु वामतः॥
(दक्षवामभागौ देवस्यैव।)

३ दीपदेवि महादेवि शुभं भवतु मे सदा।
यावत् पूजासमाप्तिः स्यात्तावत् प्रज्वल सुस्थिरा॥
(इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्॥)

मूलेन यन्त्रमध्ये पुष्पाञ्जलिं विकीर्य, मूलत्रिखण्डेन स्वाग्रवामदक्षकोणेषु पुष्पाञ्जलिं दद्यात्॥

शिखाबन्धनादि मातृकान्यासान्तम्

श्रीक्रमे वक्ष्यमाणप्रकारेण भूतशुद्धयादिमात्मनः प्राणप्रतिष्ठाञ्च विधाय विंशतिधा षोडशधा दशधा त्रिधा वा मूलेन प्राणानायम्य।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्त्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

(इति मन्त्रमुच्चार्य) युगपद्वामपार्ष्णिभूतलाघातत्रयकरास्फोटनत्रय क्रूर-दृष्ट्यावलोकनपूर्वकतालत्रयेण भौमान्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासकान् विघ्नानुत्सारयेत्, अथ "नमः" (इति अङ्कुशमन्त्रमुच्चरन् अङ्कुशमुद्रया शिखां बध्नीयात्)।

ततः श्रीक्रमे वक्ष्यमाणप्रकारेण मातृकान्यासं श्रीं ह्रीं क्लीं, इति त्रिबीजयोजनपूर्वकं विधाय, मूलमन्त्रस्य ऋषि-देवतादिविनियोगपूर्वकं करषडङ्गन्यासौ विधाय मूलेन त्रिर्व्यापकं कृत्वा ध्यायेत् ।

। अथ पात्रासादनम् ।

वर्धनीकलशस्थापनम्

स्वपुरतः वामभागे त्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मक मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य—मण्डलं मूलेन समभ्यर्च्य कर्पूरादिवासितजलपूरितं कलशं गन्धपुष्पाक्षतैः अलङ्कृत्य मण्डलोपरि स्थापयेत् ॥

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणः स्मृतः ॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ॥
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः ॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः ॥

ॐ आपो वा इदं सर्वं विश्वाभूतान्यापः प्राणा वा आपः पशवः आपोऽन्नमापोऽमृतमापः सम्राडापो विराडापस्स्वराडापश्छन्दांस्यापो ज्योतींष्यापो यजूंष्यापः सर्वाः देवता आपो भूर्भुवस्सुवराप ॐ ॥

गंगे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ।
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु ॥
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि च नदा ह्रदाः ।
आयान्तु देवपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ॥

(मूलेन अष्टवारमभिमन्त्र्य धेनुमुद्रां प्रदर्श्य तज्जलेन पूजोपकरणानि-आत्मानञ्च प्रोक्षयेत्) ॥

सामान्यार्घ्यविधिः ॥

वर्धनीपात्रस्य दक्षिणतः वर्धनीपात्रगतेन जलेन बिन्दु-त्रिकोण षट्कोण-वृत्त-चतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया निर्माय ॥

चतुरस्रे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च गणपतिषडङ्गं सम्पूजयेत् । यथा—

श्री ह्रीं क्लीं ॐ गां हृदयाय नमः । हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥
३ श्री गीं शिरसे स्वाहा । शिरः शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥
३ ह्रीं गूं शिखायै वषट् । शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥
३ क्लीं गैं कवचाय हुं । कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥
३ ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥
३ गं गः अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

षट्कोणे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन—

श्री ह्रीं क्लीं ॐ गां हृदयायः नमः । हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥
३ श्री गीं शिरसे स्वाहा । शिरः शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥
३ ह्रीं गूं शिखायै वषट् । शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥
३ क्लीं गैं कवचाय हुं । कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥
३ ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥
३ गं गः अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

त्रिकोणे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन –

३ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं गं नमः ॥
३ गणपतये वरवरद नमः ॥
३ सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा नमः ॥
३ मूलं नमः (बिन्दौ)

ततः, अस्त्राय फट् इति सामान्यर्घ्यपात्रस्य आधारं प्रक्षाल्य,

३ अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रदद्दशकलात्मने श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित श्रीमहागणपतेः सामान्यार्घ्यपात्राधाराय नमः ॥ इति मण्डलोपरि संस्थाप्य ॥

३ अग्नि दूतं वृणीमहे होतार विश्ववेदसं। अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम्। रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः। (इति अग्निमण्डलं विभाव्य)। दशवह्निकलाः संपूजयेत्। तद्यथा—

श्रीं ह्रीं क्लीं यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः॥	३ पं सुश्री कलायै नमः॥
३ रं ऊष्माकलायै नमः॥	३ सं सुरूपा कलायै नमः॥
३ लं ज्वलिनी कलायै नमः॥	३ हं कपिला कलायै नमः॥
३ वं ज्वालिनीकलायै नमः॥	३ ळं हव्यवाहिनी कलायै नमः॥
३ शं विस्फुलिङ्गिनीकलायै नमः॥	३ क्षं कव्यवाहिनी कलायै नमः॥

३ अस्त्राय फट् (इति क्षालितं शङ्खं गृहीत्वा)—

श्रीं ह्रीं क्लीं उं सूर्यमण्डलायार्घ्यप्रदद्वादशकलात्मने श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित श्रीमहागणपतेः, सामान्यार्घ्यपात्राय नमः—इति संस्थाप्य।

श्रीं ह्रीं क्लीं आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्। हां हीं हूं हैं हौं हः—हमलवरयूम् सूर्यमण्डलाय नमः (इति सूर्यमण्डलं विभाव्य द्वादश सूर्यकलाः संपूजयेत्)। तद्यथा—

३ कं भं तपिनी कलायै नमः॥	३ घं प मरीचि कलायै नमः॥
३ खं बं तापिनी कलायै नमः॥	३ ङं नं ज्वालिनी कलायै नमः॥
३ गं फं धूम्रा कलायै नमः॥	३ चं धं रुचि कलायै नमः॥
३ छं दं सुषुम्ना कलायै नमः॥	३ अं ण बोधिनी कलायै नमः॥
३ जं थं भोगदा कलायै नमः॥	३ टं ढ धारिणी कलायै नमः॥
३ झं तं विश्वा कलायै नमः॥	३ ठं ड क्षमा कलायै नमः॥

श्रीह्रींक्लीं मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितमहागणपतेः सामान्यार्घ्यामृताय नमः (इति वर्धनीसलिलमापूर्य क्षीरबिन्दु दत्वा)।

श्री ह्रीं क्लीं आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं । भवावाजस्य सङ्गथे । सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः । (इति सोम-मण्डलं विभाव्य षोडश सोमकलाः सम्पूजयेत्) । तद्यथा—

श्रीह्रींक्लीं अं अमृताकलायै नमः ॥	३	ऌं चन्द्रिकाकलायै	नमः ॥
३ आं मानदाकलायै नमः ॥	३	ॡं कान्तिकलायै	नमः ॥
३ इं पूषाकलायै नमः ॥	३	एं ज्योत्स्नाकलायै	नमः ॥
३ ईं तुष्टिकलायै नमः ॥	३	ऐं श्रीकलायै	नमः ॥
३ उं पुष्टिकलायै नमः ॥	३	ओं प्रीतिकलायै	नमः ॥
३ ऊं रतिकलायै नमः ॥	३	औं अङ्गदाकलायै	नमः ॥
३ ऋं धृतिकलायै नमः ॥	३	अं पूर्णाकलायै	नमः ॥
३ ॠं शशिनीकलायै नमः ॥	३	अः पूर्णामृताकलायै	नमः ॥

ततस्तस्मिन् शङ्खे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च क्रमेण षडङ्गैः (सम्पूज्य), अस्त्राय फट् (इति संरक्ष्य), कवचाय हुं (इति अवगुण्ठ्य), धेनु-योनिमुद्रे प्रदर्श्य, सप्तवारमभिमन्त्र्य, तत्सलिलपृषतैः पूजोपकरणानि आत्मानं च प्रोक्ष्य, शङ्खजलात् किञ्चित् वर्धन्या क्षिपेत् ॥

विशेषार्घ्यविधिः

सामान्यार्घ्योदकेन तद्दक्षिणतः बिन्दु-त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त-चतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य, बिन्दौ सानुस्वारं तुरीयस्वरं विलिख्य ॥

चतुरस्रे प्राग्वत् षडङ्गं विन्यस्य षट्कोणे स्वाग्रकोणादि प्रादक्षिण्येन षडङ्गैरभ्यर्च्य, त्रिकोणे मूलत्रिखण्डैरभ्यर्च्य, मूलेन बिंदु चार्चयेत् । तद्यथा—

चतुरस्रे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च—

श्री ह्रीं क्लीं ॐ गां हृदयाय नमः । हृदयशक्ति श्रीपादुकापूजयामि नमः ॥
३ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा । शिरःशक्ति श्रीपादुका ,, ,, ॥
३ ह्रीं गूं शिखायै वषट् । शिखाशक्ति श्रीपादुका ,, ,, ॥
३ क्लीं गैं कवचाय हुं । कवचशक्ति श्रीपादुका ,, ,, ॥

३ ग्लौ गौं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः

३ गं गः अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां „ „ ॥

ततः षट्कोणे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन—

श्री ह्रीं क्लीं ॐ गां हृदयाय नमः । हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

३ श्रीं गीं शिरसे स्वाहा । शिरःशक्ति श्रीपादुकां „ „ ॥

३ ह्रीं गूं शिखायै वषट् । शिखाशक्ति श्रीपादुकां „ „ ॥

३ क्लीं गैं कवचाय हुं । कवचशक्ति श्रीपादुकां „ „ ॥

३ ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्ति श्रीपादुकां „ „ ॥

३ गं गः अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां „ „ ॥

ततस्त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन—

श्री ह्रीं क्लीं ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं नमः ॥

श्री ह्रीं क्लीं गणपतये वरवरद नमः ॥

श्रीं ह्रीं क्लीं सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा नमः ॥

३ मूलं नमः (बिन्दौ)

अथ—३ अस्त्राय फट् (इति आधारं प्रक्षाल्य) ।

श्री ह्रीं क्लीं मं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीसिद्धलक्ष्मी-सहितश्रीमहागणपतेः विशेषार्घ्यपात्राधाराय नमः (इति आधारं संस्थाप्य)

श्री ह्रीं क्लीं अग्निदूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं । यस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् । रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः—इति अग्निमण्डलं विभाव्य दशवह्निकलाः पूजयेत् । यथा—

श्री ह्रीं क्लीं यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः ॥

३ रं ऊष्माकलायै नमः ॥

३ लं ज्वलिनीकलायै नमः ॥

३ वं ज्वालिनीकलायै नमः ॥

३ शं विस्फुलिङ्गिनी कलायै नमः ॥

३ षं सुश्रीकलायै नमः ॥

३ स सुरूपाकलायै नमः ॥

३ ह कपिलाकलायै नमः ॥

३ ळं हव्यवाहिनीकलायै नमः ॥

३ क्षं कव्यवाहिनीकलायै नमः ॥

ततः—श्री ह्रीं क्लीं अस्त्राय फट् (इति मन्त्रेण विशेषार्घ्यपात्रं प्रक्षाल्य)

श्री ह्रीं क्लीं ॐ सूर्यमण्डलाय अर्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतेः विशेषार्घ्यपात्राय नमः (इति आधारोपरि संस्थाप्य)।

श्री ह्रीं क्लीं ऐं श्रीमहालक्ष्मीश्वरि परमस्वामिनी ऊर्ध्वशून्यप्रवाहिनि सोमसूर्याग्निभक्षिणि परमाकाशभासुरे आगच्छागच्छ विश विश पात्रं प्रतिगृह्ण प्रतिगृह्ण हुं फट् स्वाहा, (इति पुष्पाञ्जलिं विकीर्य) ॥

श्री ह्रीं क्लीं आ सत्येन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च। हिरण्ययेन सविता रथेनाऽऽदेवो याति भुवनानि पश्यन्। ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हमलवरयूं सूर्यमण्डलाय नमः (इति सूर्यमण्डलं विभाव्य द्वादश सूर्यकलाः पूजयेत्)। यथा—

श्रीह्रींक्लीं कं भं तपिनीकलायै	नमः ॥	३ छं दं सुषुम्नाकलायै	नमः ॥
३ खं यं तापिनीकलायै	नमः ॥	३ जं थं भोगदाकलायै	नमः ॥
३ गं फं धूम्राकलायै	नमः ॥	३ झं तं विश्वाकलायैः	नमः ॥
३ घं पं मरीचिकलायै	नमः ॥	३ ञं णं बोधिनीकलायै	नमः ॥
३ ङं नं ज्वालिनीकलायै	नमः ॥	३ टं ढं धारिणीकलायै	नमः ॥
३ चं धं रुचिकलायै	नमः ॥	३ ठं डं क्षमाकलायै	नमः ॥

श्री ह्रीं क्लीं म सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतेः विशेषार्घ्यामृताय नमः—इति तत्त्वमुद्रया अकारादि क्षकारान्त क्षकाराद्यकारान्तं मातृकया अर्पितेन-अमृतेन-आपूर्य अष्टगंधलोलितं पुष्पं निधाय नागरखण्डं निक्षिप्य ॥

श्री ह्रीं क्लीं आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियम् । भवा-वाजस्य सङ्गथे ॥ सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः—
इति सोममण्डलं विभाव्य षोडशसोमकलाः पूजयेत् । यथा—

श्रीह्रींक्लीं अं अमृताकलायै	नमः ॥	३	ऌं चन्द्रिकाकलायै	नमः ॥
३ आं मानदाकलायै	नमः ॥	३	ॡं कान्तिकलायै	नमः ॥
३ इं पूषाकलायै	नमः ॥	३	एं ज्योत्स्नाकलायै	नमः ॥
३ ईं तुष्टिकलायै	नमः ॥	३	ऐं श्रीकलायै	नमः ॥
३ उं पुष्टिकलायै	नमः ॥	३	ओं प्रीतिकलायै	नमः ॥
३ ऊं रतिकलायै	नमः ॥	३	औं अङ्गदाकलायै	नमः ॥
३ ऋं धृतिकलायै	नमः ॥	३	अं पूर्णाकलायै	नमः ॥
३ ॠं शशिनीकलायै	नमः ॥	३	अः पूर्णामृताकलायै	नमः ॥

ततः, श्री ह्रीं क्लीं ॐ जुं सः स्वाहा । (इति अष्टवारमभिमन्त्र्य) ॥

तत्रार्घ्यामृते स्वाग्राद्यप्रादक्षिण्येन अकथादिषोडशवर्णात्मकरेखात्रयं त्रिकोण विलिख्य, तदन्तः स्वाग्रादि कोणेषु अप्रादक्षिण्येन हलक्षान् बहिः-प्रादक्षिण्येन महागणपतिमूलखण्डत्रयं बिन्दौ सबिन्दुतुरीयस्वरम्, तद्वाम-दक्षयोः क्रमेण हंसः इति विलिख्य—

श्री ह्रीं क्लीं हंसः नमः (इति आराध्य) त्रिकोणस्य परित. वृत्तं तद्व-हिश्च षट्कोणं निर्माय स्वाग्रकोणादि प्रादक्षिण्येन षडङ्गमन्त्रैः षट्कोण-मभ्यर्च्य ।

श्री ह्रीं क्लीं मूलं तां चिन्मयीं आनन्दलक्षणां अमृतकलशपिशित-हस्तद्वयां प्रसन्नां देवीं पूजयामि नमः स्वाहा (इति सुधादेवीं समभ्यर्च्य) तदर्घ्यात् किञ्चित् पात्रान्तरेण,

श्री ह्रीं क्लीं वषट् । इति उद्धृत्य

३ स्वाहा । इति तत्रैव निक्षिप्य

३ हुं । इति अवगुण्ठ्य

३ वौषट् । इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य

३ फट् । इति संरक्ष्य

३ नमः । इति पुष्पं दत्वा

३ मूलेन गालिन्या निरीक्ष्य

३ ऐं इति योनिमुद्रया नत्वा

श्री ह्रीं क्लीं मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य सुधादेवीं षोडशोपचारैः सम्पूज्य । तद्बिन्दुभिः सपर्यासाधनानि प्रोक्ष्य । सर्वं महागणपतिमयं विभावयेत् ॥

ततः विशेषार्घ्यपात्रं करेण संस्पृश्य वक्ष्यमाणगणपतिगायत्र्या ऋचा च अभिमन्त्रयेत्—

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि । तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥
गणानां त्वा गणपतिं हवामहे कविं कवीनामुपश्रवस्तमम् ।
ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आ नः शृण्वन्नूतिभिः सीद सादनम् ॥
(श्रीक्रमोक्तचतुर्नवतिमन्त्राद्यभिमन्त्रणमत्र नास्ति) ॥

विशेषार्घ्यपात्रस्याधः त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्रात्मकं मण्डलत्रयं विलिख्य, प्रथममण्डले—

श्री ह्रीं क्लीं हसः शिवः सोहं सोहं हसश्शिवः, हंसश्शिवस्सोहं नमः । इत्यभ्यर्च्य, गुरुपात्रं निधाय । द्वितीयमण्डले—

श्री ह्रीं क्लीं हंसः नमः । इत्यभ्यर्च्य आत्मपात्रं निधाय । ततः विशेषार्घ्यामृतात् किंचित् गुरुपात्रे उद्धृत्य गुरुत्रयं यजेत् । पुनः आत्मपात्रे तं विशेषार्घ्यामृतमुद्धृत्य, मूलधारे वालाग्रमात्रं अनादिवासनारूपेन्धनप्रज्वलितं कुण्डलिन्यधिष्ठितचिदग्निमण्डलं ध्यात्वा,

श्री ह्रीं क्लीं कुण्डलिन्यधिष्ठितचिदग्निमण्डलाय नमः ।

(इति मनसा संपूज्य),

श्री ह्रीं क्लीं मूल पुण्यं जुहोमि स्वाहा

,, पापं जुहोमि स्वाहा	३ विकल्पं जुहोमि स्वाहा	
,, कृत्यं जुहोमि स्वाहा	३ धर्मं जुहोमि स्वाहा	
,, अकृत्यं जुहोमि स्वाहा	३ अधर्मं जुहोमि स्वाहा	
,, सङ्कल्पं जुहोमि स्वाहा	३ अधर्मं जुहोमि वौषट्	

श्री ह्रीं क्लीं इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतः जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा—इति पूर्णाहुतिं विभाव्य—

श्री ह्रीं क्लीं आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि।
ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि।
योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि।
अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि।
अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा॥

(इति आत्मनः कुण्डलिनीरूपे चिदग्नौ होमबुद्ध्या जुहुयात्) विशेषार्घ्यपात्रात् किञ्चित् क्षीरं कारणकलशे निक्षिपेत्॥

पीठे प्राणप्रतिष्ठा

पुरतो रक्तचन्दनादिभिः निर्मिते पीठे कलधौतादिविरचितां महागणपतिप्रतिमां वा ध्यानोक्तरूपां चतुरस्राष्टदलषडस्रत्रिकोणात्मकं सिन्दूरादिना लिखितं लेखितं वा यन्त्रं धातुमयं वा निवेश्य—

श्रीगणेशयन्त्रस्य प्राणाः इह प्राणाः, श्रीगणेशयन्त्रस्य जीव इह स्थितः, श्रीगणेशयन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि श्रीगणेशयन्त्रस्य वाङ्मनः प्राणाः इह आयान्तु स्वाहा॥ (इति मन्त्रेण प्राणप्रतिष्ठां विदध्यात्)॥

पीठशक्तिपूजा

यन्त्रस्य त्रिकोणे स्वाग्रादि प्रादक्षिण्येन परितो मध्ये च क्रमेण—

श्री ह्रीं क्लीं तीव्रायै	नमः॥	श्री ह्रीं क्लीं उग्रायै	नमः॥
३ ज्वालिन्यै	नमः॥	३ तेजोवत्यै	नमः॥
३ नन्दायै	नमः॥	३ सत्यायै	नमः॥
३ भोगदायै	नमः॥	३ विघ्ननाशिन्यै	नमः॥
३ कामरूपिण्यै	नमः॥	३ सर्वशक्तिकमलासनायै	नमः॥

(इति नवगणेशपीठशक्तिरभ्यर्च्य)॥

धर्माद्यष्टकपूजा

तत्रैव आग्नेयादि विदिक्षु प्रागादि दिक्षु च क्रमेण

श्री ह्रीं क्लीं	ॠ धर्माय नमः ॥	श्री ह्रीं क्लीं	ॠं अधर्माय नमः ॥
३	ॠ ज्ञानाय नमः ॥	३	ॠं अज्ञानाय नमः ॥
३	ऌं वैराग्याय नमः ॥	३	ऌ अवैराग्याय नमः ॥
३	ॡं ऐश्वर्याय नमः ॥	३	ॡं अनैश्वर्याय नमः ॥

(इति-अर्चयेत्)

अन्तर्यागः

द्वादशान्ते सहस्रदलकमलकर्णिकामध्ये निविष्टगुरुचरणयुगलविगलदमृतरसविसरपरिप्लुताखिलाङ्गो हृदयकमलमध्ये ज्वलन्तमुद्यदरुणकोटिपाटलमशेषदोषनिर्वेषभूतमनेकपाननं पुर्यष्टकाकारं साङ्गं सावरणम् भक्तानुग्रहार्थं तेजोरूपेण परिणतं प्राप्य ब्रह्मरन्ध्रं वहन्नासापुटेन निर्गमय्य त्रिखण्डामुद्रामण्डितशिखण्डे कुसुमाञ्जलौ हस्ते समानीय—

ऐक्षवे जलधौ द्वीपे नवरत्नमये शुभे ।
तत्तरङ्गोल्लसत्तोये धौते शीततलेऽमले ॥ १ ॥
तत्तोयकणसम्पृक्तगन्धवाहनिषेविते ।
कल्पपादपसंशोभिभूभागसमलङ्कृते ॥ २ ॥
नानाकुसुमसंकीर्णे नानापक्षिविराजिते ।
अनेकफलसंकीर्णे भाविते चाप्सरोगणैः ॥ ३ ॥
उद्यद्बालातपोद्योतितचन्द्रज्योत्स्नासमाकुले ।
विलसत्पद्मरागौघकुट्टिमारुणभूतले ॥ ४ ॥
कल्पपादपपुष्पस्थषट्पदस्वनमञ्जुले ।
पारिजातं कल्पतरुं तस्य मध्ये विचिन्तयेत् ॥ ५ ॥
युगपद् ऋतुषट्केन सेवितं पुष्पशोभितम् ।
नवरत्नमयं तस्याऽधस्तात् सिंहासनं स्मरेत् ॥ ६ ॥
तन्मध्ये लिपिपद्मं च षडस्रं तस्य मध्यतः ।
कर्णिकायां त्रिकोणं च तत्संस्थं च महाग्रणम् ॥ ७ ॥

नानारत्नविभूषाढ्यं एकदन्तं गजाननम् ।
बीजापूरगदाचापशूलचक्राम्बुजान्यपि ॥ ८ ॥
पाशोत्पले च व्रीह्यग्रं स्वदन्तं रत्नपात्रकम् ।
धारयन्तं दशभुजं भक्ताभीष्टप्रदायकम् ॥ ९ ॥
सर्वाङ्गभूषोज्वलया पद्मसशोभिहस्तया ।
आश्लिष्टवामपार्श्वं च देव्या वल्लभया सदा ॥ १० ॥
विघ्नेशं विघ्नहर्तारं फुल्लपद्माभविग्रहम् ।
पुष्करोद्धृतरत्नौघमयकुम्भमुखस्नुतात् ॥ ११ ॥
मणिमुक्ताप्रवालादीन् वर्षन्तं धारया मुहुः ।
सर्वतः साधकस्याग्रे स्वदानजललोलुपान् ॥ १२ ॥
षट्पदालीन् कर्णतालैः वारयन्तं मुहुर्मुहुः ।
अमरासुरसंसेव्यं सद्रत्नमुकुटोज्ज्वलं ॥ १३ ॥
उरूदरं गजमुखं नानाभरणभूषितम् ।
इति ध्यात्वा गणपतिं यजेत् सर्वोपचारकैः ॥ १४ ॥
बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजा चक्राब्जपाशोत्पल-
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्कराम्भोरुहः ।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरयाश्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः ॥१५॥ (इति ध्यात्वा)

गणानान्त्वेति मन्त्रेण मूलमन्त्रेण च अस्मिन् यन्त्रे (बिम्बे वा)

श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतिं साङ्गम् सपरिवारम् सावरणम् *आवाहयामि नमः ॥*

श्रीं ह्रीं क्लीं मूलं आवाहितो भव ॥ ३ मूलं सम्मुखो भव ॥
३ मूलं सम्स्थापितो भव ॥ ३ मूलं अवगुण्ठितो भव ॥
३ मूलं सन्निधापितो भव ॥ ३ मूलं सुप्रसन्नो भव ॥
३ मूलं सन्निरुद्धो भव ॥ ३ मूलं वरदो भव ॥

स्वामिन् सर्वजगन्नाथ यावत्पूजावसानकम् ।
तावत्त्वं प्रीति भावेन यन्त्रेऽस्मिन् सन्निधिं कुरु (बिम्बेऽस्मिन्) ॥

इति मन्त्रैरावाहनादि षट्मुद्राः प्रदर्श्य, वन्दनधेनुयोनिमुद्राश्च प्रदर्शयेत् । अथ हृदयादि षडङ्गमुद्राश्चः प्रदर्शयेत् ॥

महागणपतिप्रियपाशादि सप्तमुद्राः प्रदर्शयेत् ॥

अथ षोडशोपचारपूजा

(श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतिदेवतायाः षोडशोपचारानाचरेत्) ।

श्री ह्रीं क्लीं श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितश्रीमहागणपतये पाद्यं कल्पयामि नमः ॥

३	„	„	अर्घ्यं	„	„	॥
३	„	„	आचमनीयं	„	„	॥
३	„	„	स्नानं*	„	„	॥
३	„	„	वस्त्रोत्तरीयं	„	„	॥
३	„	„	भूषणम्	„	„	॥
३	„	„	गन्धम्	„	„	॥
३	„	„	पुष्पम्	„	„	॥
३	„	„	धूपम्	„	„	॥
३	„	„	दीपम्	„	„	॥
३	„	„	नैवेद्य	„	„	॥
३	„	„	ताम्बूलम्	„	„	॥
३	„	„	नीराजनम्	„	„	॥
३	„	„	प्रदक्षिणाः	„	„	॥
३	„	„	नमस्कारान्	„	„	॥

श्री ह्रीं क्लीं दन्त-पाश-अङ्कुश-विघ्न-परशु-लड्डुक बीजापूराह्वयाः सप्तमुद्राः गणेशस्य प्रिया मता ॥

इति सप्तमुद्राः प्रदर्शयेत् ॥

* स्नानसमये दुग्ध-पञ्चामृत-मधु फलरसादिना अभिषिञ्चेत्, पुरुष-सूक्त-गणपत्यु-पनिषद् गणपतिगायत्र्यादि वेदमन्त्रान् उच्चरेत् ।

चतुरायतनपूजा

विष्णुशिवसूर्यदेव्याह्वयाः चतुरायतनदेवताः ।
आग्नेय-ईशान-नैर्ऋत-वायव्येषु तत्तन्मूलमन्त्रेण यजेत् ॥

श्रीमहागणपतितर्पणम् ।

(ततो मूलान्ते, श्रीमहागणपति श्रीपादुका पूजयामि, इति देव दशवारं पूजयेत्)
यथा—
श्री ह्री क्ली 'मूल' श्रीसिद्धलक्ष्मीसहितमहागणपति श्रीपादुका पूजयामि नमः
(इति दशवारं सन्तर्पयेत्)

षडङ्गपूजा

ततो देवस्याङ्गे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मौली दिक्षु च—

श्री ह्रीक्लीॐगा हृदयाय नमः ।	हृदयशक्तिश्रीपादुका पूजयामि			नमः ॥
३ श्री गी शिरसे स्वाहा ।	शिरः शक्तिश्रीपादुका	पू०		नमः ॥
३ ह्री गू शिखायै वषट् ।	शिखाशक्ति	,,	,,	,, ॥
३ क्ली गैं कवचाय हुं ।	कवचशक्ति	,,	,,	,, ॥
३ ग्लौं गौं नेत्रत्रयाय वौषट् ।	नेत्रशक्ति	,,	,,	,, ॥
३ गं ग अस्त्राय फट् ।	अस्त्रशक्ति	,,	,,	,, ॥

गुरुमण्डलार्चनम् ।

देवस्य पश्चात् प्रागपवर्गरेखात्रये दक्षिणसंस्था क्रमेण गुर्वौघत्रयं यजेत् ॥
यथा—

दिव्यौघः

श्री ह्री क्ली	विनायकसिद्धाचार्य	श्रीपादुका	पूजयामि	नमः ॥
३	कवीश्वरसिद्धाचार्य	,,	,,	,, ॥
३	विरूपाक्षसिद्धाचार्य	,,	,,	,, ॥
३	विश्वसिद्धाचार्य	,,	,,	,, ॥
३	ब्रह्मण्यसिद्धाचार्य	,,	,,	,, ॥
३	निधीशसिद्धाचार्य	,,	,,	,, ॥

सिद्धौघः

श्री ह्रीं क्लीं राजाधिराजसिद्धाचार्य श्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥
" वरप्रदसिद्धाचार्य " " "

मानवौघः

३	विजयसिद्धाचार्य	श्रीपादुकां	पू०	नमः	॥
३	दुर्जयसिद्धाचार्य	"	"	"	॥
३	जयसिद्धाचार्य	"	"	"	॥
३	दुःखारिसिद्धाचार्य	"	"	"	॥
३	सुखावहसिद्धाचार्य	"	"	"	॥
३	परमात्मसिद्धाचार्य	"	"	"	॥
३	सर्वभूतात्मसिद्धाचार्य	"	"	"	॥
३	महानन्दसिद्धाचार्य	"	"	"	॥
३	कालनन्दसिद्धाचार्य	"	"	"	॥
३	सद्योजातसिद्धाचार्य	"	"	"	॥
३	बुद्धसिद्धाचार्य	"	"	"	॥
३	नरसिद्धाचार्य	"	"	"	॥

ततः परमेष्ठिगुरुमन्त्रेण परमेष्ठिगुरुं, परमगुरुमन्त्रेण परमगुरुं, स्वगुरुमन्त्रेण स्वगुरुं च यजेत् ॥

॥ आवरणदेवता ध्यानम् ॥

त्रिकोणबाह्ये पूर्वादिचतुर्दिक्षु समर्चयेत् ।
अश्वत्थबिल्ववृक्षाधः श्रियं श्रीपतिमर्चयेत् ॥
पद्मायुधधरा पद्मा शङ्खचक्रधरो हरिः ।
दक्षिणे वटवृक्षाधः गौरीं गौरीपतिं यजेत् ॥
पाशाङ्कुशधरा गौरी टङ्कशूलधरो हरः ।
पश्चिमे पिप्पलस्याधो रतिं रतिपतिं यजेत् ॥

रतिरुत्पलहस्ताढ्या कोदण्डाग्रधर स्मर ।
सौम्ये प्रियङ्गुवृक्षाध महापोत्रिणमर्चयेत् ॥
शूकव्रीह्यग्रहस्ताभूर्गदाचक्रधर पति ।
षट्कोणेषु च सम्पूज्या आमोदाद्या प्रियान्विता ॥
आमोद सिद्धिसहितमग्रकोणे प्रपूज्येत् ।
समृद्धया युक्तमभ्यर्च्य प्रमोद वह्निकोणके ॥
सुमुख कान्तिसयुक्तमीशकोणे समर्चयेत् ।
दुर्मुख मदनावत्या यजेद्रक्षणकोणके ॥
विघ्न मदद्रवायुक्त कोणे नैशाचरे यजेत् ।
वायव्ये विघ्नकर्तार द्राविण्या सह सयजेत् ॥
पाशाङ्कुशाभयाऽभीष्टधारिणोऽरुणविग्रहा ।
गण्डभित्तिगलद्दानपूरधौतमुखाम्बुजा ॥
विघ्नस्तत्प्रमदास्सर्वा मदाघूर्णितलोचना ।
एकहस्तधृताम्भोजा इतरालिङ्गितप्रिया ॥
षट्कोणपार्श्वयो पूज्यौ शङ्खपद्मनिधी क्रमात् ।
निजप्रियाभ्या सहितौ सर्वाभरणभूषितौ ॥
केशरेष्वङ्गपूजा स्यात् ब्राह्म्याद्या पत्रमध्यगा ।
वहिर्लोकेश्वरा पूज्या वज्रादीनि यथाक्रमम् ॥

प्रथमावरणम्

त्र्यस्रषडस्रोरन्तराले प्रागादिदिक्षु क्रमेण—

श्री ह्रीं क्लीं श्रीश्रीपति श्रीपादुका पूजयामि नम ॥
३ गिरिजागिरिजापति ,, ,, ॥
३ रतिरतिपति , , ॥
३ महीमहीपति ,, ,, ॥

एता प्रथमावरणदेवता साङ्गा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सर्वोपचारै सम्पूजिता सन्तर्पिता सतुष्टा सन्तु नम । (इति पुष्पं दत्वा) । मूलेन देव त्रि सन्तर्प्य, पञ्चोपचार कृत्वा ।

श्री ह्रीं क्लीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

(इति सामान्यार्घ्योदकेन देवताहस्ते पूजां समर्प्य)

अनेन प्रथमावरणार्चनेन भगवान् श्रीमहागणपतिः प्रीयताम् ।

(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)

द्वितीयावरणम्

(षडस्रे देवाग्रकोणमारभ्य प्रादक्षिण्येन तद्दक्षवामपार्श्वयोश्च क्रमेण यजेत्)

श्री ह्रीं क्लीं ऋद्धयामोद श्रीपादुकां पू० नमः ॥

३	समृद्धिप्रमोद	,,	,,	,,	॥
३	कान्तिसुमुख	,,	,,	,,	॥
३	मदनावतीदुर्मुख	,,	,,	,,	॥
३	मदद्रवा-अविघ्न	,,	,,	,,	॥
३	द्राविणीविघ्नकर्तृ	,	,,	,,	॥
३	वसुधाराशङ्खनिधि	,,	,,	,,	॥
३	वसुमतीपद्मनिधि	,,	,	,,	॥

एताः द्वितीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः । इति पुष्पं दत्वा । मूलेन देवं त्रिः सन्तर्प्य, पञ्चोपचारं कृत्वा ।

श्री ह्रीं क्लीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥

(इति सामान्यार्घ्योदकेन देवताहस्ते पूजां समर्प्य)

अनेन द्वितीयावरणार्चनेन भगवान् श्रीमहागणपतिः प्रीयताम् ।

(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)

तृतीयावरणम्

षडस्रसन्धिषट्के प्राग्वत् षडङ्गदेवतार्चनम् ।—

श्रीह्रींक्लीं	ॐ गां	हृदयशक्ति	श्रीपादुकां	पू०	नमः	॥
३	श्रीं गीं	शिरःशक्ति	,,	,,	,,	॥
३	ह्रीं गूं	शिखाशक्ति	,,	,,	,,	॥
३	क्लीं गैं	कवचशक्ति	,,	,,	,,	॥
३	ग्लौं गौं	नेत्रशक्ति	,,	,,	,,	॥
३	गं गः	अस्त्रशक्ति	,,	,,	,,	॥

एताः तृतीयावरणदेवताः साङ्गाः सपरिवाराः सायुधाः सशक्तिकाः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टा सन्तु नमः ॥ इति पुष्पं दत्वा । मूलेन देवं त्रिः सन्तर्प्य । पञ्चोपचारं कृत्वा ।

श्री ह्रीं क्लीं अभीष्टसिद्धिं .... तृतीयावरणार्चनम् ॥

इति सामान्यार्घ्योदकेन देवताहस्ते पूजां समर्प्य—

अनेन तृतीयावरणार्चनेन भगवान् श्रीमहागणपतिः प्रीयताम् ।

(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्)

तुरीयावरणम्

अष्टदले पश्चिमादि दिक्षु वायव्यादि विदिक्षु च प्रादक्षिण्यक्रमेण—

श्री ह्रीं क्लीं	आं	ब्राह्मी	श्रीपादुकां	पू०	नमः	॥
३	ईं	माहेश्वरी	,,	,,	,,	॥
३	ऊं	कौमारी	,,	,,	,,	॥
३	ॠं	वैष्णवी	,,	,,	,,	॥
३	ॡं	वाराही	,,	,,	,,	॥
३	ऐं	माहेन्द्री	,,	,,	,,	॥
३	औं	चामुण्डा	,,	,,	,,	॥
३	अः	महालक्ष्मी	,,	,,	,,	॥

एता तुरीयावरणदेवता साङ्गा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सर्वोपचारै सम्पूजिता सन्तर्पिता सतुष्टा सन्तु नम ॥ इति पुष्पं दत्वा ॥ मूलेन देव त्रि सन्तर्प्य । पञ्चोपचार कृत्वा ।

श्री ह्री क्ली अभीष्ट तुरीयावरणार्चनम् । (इति सामान्यार्घ्योदकेन देवताहस्ते पूजा समर्प्य)—

अनेन तुरीयावरणार्चनेन भगवान् श्रीमहागणपति प्रीयताम् ।

(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्) ॥

पञ्चमावरणम् ।

अथ चतुरस्रस्य रेखाया प्रागाद्यासु अष्टसु दिक्षु क्रमेण—

श्री ह्री क्ली ला इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतये ऐरावतवाहनाय सपरिवाराय नम , इन्द्रश्रीपादुका पूजयामि नम ॥

३ रा अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतये अजवाहनाय सपरिवाराय नम , अग्निश्रीपादुका पू० नम ॥

३ टा यमाय दण्डहस्ताय प्रताधिपतये महिषवाहनाय सपरिवाराय नम , यमश्रीपादुका पू० नम ॥

३ क्षा निऋतये खड्गहस्ताय रक्षोऽधिपतये नरवाहनाय सपरिवाराय नम , निऋतिश्रीपादुका पू० नम ॥

३ वा वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय सपरिवाराय नम , वरुणश्रीपादुका पू० नम ॥

३ या वायवे ध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये रुरुवाहनाय सपरिवाराय नम , वायुश्रीपादुका पू० नम ॥

३ सा सोमाय शङ्खहस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्ववाहनाय सपरिवाराय नम , सोमश्रीपादुका पू० नम ॥

३ हा ईशानाय त्रिशूलहस्ताय विद्याऽधिपतये वृषभवाहनाय सपरिवाराय नम , ईशानश्रीपादुका पू० नम ॥

एताः पञ्चमावरणदेवता साङ्गा सपरिवारा सायुधा सशक्तिका सर्वोपचारैः सम्पूजिता सन्तर्पिता सन्तुष्टा सन्तु नमः ।। इति पुष्पं दत्वा । मूलेन देवं त्रिः सन्तर्प्य । पञ्चोपचारं कृत्वा ।

श्री ह्रीं क्लीं अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सल ।

भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम् ।।

(इति सामान्यार्घ्योदकेन देवताहस्ते पूजां समर्प्य)—

अनेन पञ्चमावरणार्चनेन भगवान् श्रीमहागणपतिः प्रीयताम् ।

(इति योनिमुद्रया प्रणमेत्) ।।

पुनः मूलेन दशवारं सन्तर्पयेत्

श्री ह्रीं क्लीं 'मूलं' श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित श्रीमहागणपति श्रीपादुकां पू० नमः ।।

(इति दशवारं सन्तर्पयेत्) ।।

षोडशनामार्चनम्

श्री ह्रीं क्लीं	सुमुखाय	नमः ।।	३	धूम्रकेतवे	नमः ।।
३	एकदन्ताय	नमः ।।	३	गणाध्यक्षाय	नमः ।।
३	कपिलाय	नमः ।।	३	फालचन्द्राय	नमः ।।
३	गजकर्णकाय	नमः ।।	३	गजाननाय	नमः ।।
३	लम्बोदराय	नमः ।।	३	वक्रतुण्डाय	नमः ।।
३	विकटाय	नमः ।।	३	शूर्पकर्णाय	नमः ।।
३	विघ्नराजाय	नमः ।।	३	हेरम्बाय	नमः ।।
३	गणाधिपाय	नमः ।।	३	स्कन्दपूर्वजाय	नमः ।।

पुनः पूर्वोक्तषोडशभिरुपचारैः पूजयेत् ।

श्री ह्रीं क्लीं श्रीमहागणपतये नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणिदूर्वादीनि समर्पयामि ।। अथ यथावकाशं सहस्रनामादिना—अर्चनं कुर्यात् ।।

धूपः

श्री ह्रीं क्लीं धूरसि धूर्व धूर्वन्तं धूर्वतं योऽस्मान् धूर्वति तं धूर्वयं वयं धूर्वामस्त्वं देवानामसि सस्नितमं पप्रितमं जुष्टतमं वह्नितमं देवहूतमहृतु

तससि हविर्धानं दृंहस्व माह्वार्मित्रस्यत्वाचक्षुपा प्रेक्षे माभेर्मा संविक्था माल्वा हिंसिषम् ॥

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित श्रीमहागणपतये नमः धूपमाघ्रापयामि। धूपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ॥

॥ दीपः ॥

श्री ह्रीं क्लीं उद्दीप्यस्व जातवेदोपघ्नन्निर्ऋतिं मम। पशूँश्च मह्यमावह जीवनं च दिशो दिश। मानो हिंसीर्जातवेदो गामश्वं पुरुषं जगत्। अविभ्रदग्न आगहि श्रिया मा परिपातय ॥

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित श्रीमहागणपतये नमः, दीपं दर्शयामि। दीपानन्तरं आचमनीयं समर्पयामि ॥

ततः—दन्त-पाश-अङ्कुश-विघ्न-परशु लड्डुक बीजापूराख्याः सप्तमुद्राः प्रदर्शयेत् ॥

॥ नैवेद्यम् ॥

श्रीदेवाग्रे, चतुरस्रमण्डलं, सामान्यार्घ्योदकेन विधाय, तत्र आधारोपरि स्थापितं, सौवर्ण - रौप्य - कांस्यादि - स्थाली - चषकभरित भक्ष्य-भोज्य-चोष्यलेह्यपेयात्मकं रसवद्व्यञ्जनमञ्जुलं प्राज्यकपिलाज्यं दधिदुग्धमधु यथासम्भवं वा नैवेद्यं निधाय मूलेन निरीक्ष्य—

श्री ह्रीं क्लीं ऐं हः—इति अस्त्रेण प्रोक्ष्य—

३　ॐ जुं सः वौषट्-इति सप्तवारमभिमन्त्रितजलेन प्रोक्ष्य—

३　चक्रमुद्रां प्रदर्श्य—

३　यं-इति वायुबीजेनाधोमुखवामकरेण सप्तवारम् जपन् तद्गतदोषान् संशोष्य—

३　रं-इति वह्निबीजेन अधोमुखदक्षकरेण सन्दह्य—

३　वं-इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य—

३　मूलेन विशेषार्घ्यबिन्दुभिः प्रोक्ष्य—

३ मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य—

३ ॐ क्लीं कामदुघे अमोघे वरदे विच्चे स्फुरस्फुर श्रीं परश्रीं, इति कामधेनुविद्यया धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्य, देवस्य पाद्यं अर्घ्यं आचमनीयं च दत्वा—

३ मूलेन देवं त्रिः सन्तर्प्य—

पात्रान्तरे विशेषार्घ्यं किञ्चित् गृहीत्वा वामाङ्गुष्ठेन नैवेद्यपात्रं स्पृशन्—

३ 'मूल' साङ्गाय सपरिवाराय सशक्तये श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित—श्रीमहागणपतये नैवेद्यं कल्पयामि नमः—इति नैवेद्यपरिसरे संस्थाप्य। कृताञ्जलिः—

३ हेमपात्रगतं दिव्य परमान्नं सुसंस्कृतम्।
पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परमेश्वर॥
शर्करापायसापूपघृतव्यञ्जनसंयुतम् ।
विचित्ररुचि नैवेद्यं हृद्यमावेदयाम्यहम्॥ इति निवेद्य—

ॐ भूर्भुवस्वः+परिषिञ्चामि। अमृतोपस्तरणमसि—इति देवतायै आपोशानं दत्वा—वामकरेण ग्रासमुद्रा प्रदर्श्य, दक्षकरेण प्राणादिपञ्चमुद्रा-प्रदर्शनपूर्वकं पञ्चप्राणाहुतीः कल्पयेत्। यथा—

श्रीं ह्रीं क्लीं प्राणाय स्वाहा॥ श्रीं ह्रीं क्लीं उदानाय स्वाहा॥
३ अपानाय स्वाहा॥ ३ समानाय स्वाहा॥
३ व्यानाय स्वाहा॥ ३ ब्रह्मणे स्वाहा॥

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गं आत्मतत्त्वव्यापक- श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित—

श्रीमहागणपतिस्तृप्यतु

३ ॐ गं विद्यातत्त्वव्यापकः " "
३ ॐ गं शिवतत्त्वव्यापकः " "
३ ॐ गं सर्वतत्त्वव्यापकः " "

(इति किञ्चित्किञ्चित् सामान्यार्घ्योदकं दद्यात्)।

श्री ह्रीं क्लीं चित्पात्रे षड्विस्सौख्यं विविधानेकभक्षणम् ।
निवेदयामि ते देव सानुगस्त्वं जुषाण तत् ॥

श्री ह्रीं क्लीं मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः । माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः । मधुनक्तमुतोषसि मधुमत्पार्थिवं रजः । मधुद्यौरस्तु नः पिता । मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमाँ अस्तु सूर्यः । माध्वीर्गावो भवन्तु नः ।

(इति पुष्पाञ्जलिं विन्यस्य नैवेद्यजातं तादात्म्येन समर्पयेत्)

श्री ह्रीं क्लीं नमस्ते देवदेवेश सर्वतृप्तिकरं परम् ।
अन्यानिवेदितं शुद्धं प्रकृतिस्थं सुशीतलम् ॥
अमृतानन्दसम्पूर्णं गृहाण जलमुत्तमम् ॥

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित - श्रीमहागणपतये अमृतपानीयं समर्पयामि ॥

(देवं भुक्तवन्तं सुतृप्तं ध्यात्वा)

ॐ अमृतापिधानमसि । इत्युत्तरापोशनं दत्वा—

श्री ह्रीं क्लीं हस्तप्रक्षालनं, गण्डूषं, पादप्रक्षालनं, आचमनीयं कल्पयामि नमः ।

(ताम्रवलिपात्रे निवेदन-सामग्रीः किंचित्किंचिदादाय निवेदनपात्राणि निर्गमय्य तत्स्थलं अस्त्रेण शोधयेत्)

ताम्बूलम्

श्री ह्रीं क्लीं वनस्पतिदेवत्याय ताम्बूलाय नमः । इति सामान्यार्घ्योदकेन प्रोक्ष्य—

श्री ह्रीं क्लीं तमालदलकर्पूरपूगभागसमन्वितम् ।
एलापत्रसुसंयुक्तं ताम्बूलं प्रतिगृह्यताम् ॥

३ श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित-श्रीमहागणपतये ताम्बूलं कल्पयामि नमः ॥

। कुलदीपः ।

३ 'मूलं'—अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम् ।
त्रिधा दीपं परिभ्राम्य कुलदीपं निवेदये ॥

कर्पूरनीराजनम्

श्री ह्रीं क्लीं सोमो वा एतस्य राज्यमादत्ते । यो राजा सन्राज्यो वा सोमेन यजते । देवसुवामेतानि हवींषि भवन्ति । एतावन्तो वै देवानां सवाः । त एवास्मै सवान् प्रयच्छन्ति । त एन पुनः सुवन्ते राज्याय । देवसू राजा भवति ॥

श्री ह्रीं क्लीं ॐ स्वस्ति साम्राज्यं भोज्य स्वाराज्यं वैराज्य पारमेष्ठिकं राज्यं महाराज्यमाधिपत्यम् । न तत्र सूर्यो भाति न चन्द्रतारकं नेमा विद्युतो भान्ति कुतोऽयमग्निः । तमेव भान्तमनुभाति सर्वं तस्य भासा सर्वमिदं विभाति ।

राजाधिराजाय प्रसह्य साहिने नमो वय वैश्रवणाय कुर्महे । स मे कामान् कामकामाय मह्यम् । कामेश्वरो वैश्रवणो ददातु । कुबेराय वैश्रवणाय–महाराजाय नमः ॥ महागणपतये नमः कर्पूरनीराजनं दर्शयामि !

मन्त्रपुष्पम्

योऽपा पुष्पं वेद । पुष्पवान् प्रजावान् पशुमान् भवति ।

चन्द्रमा वा अपा पुष्पम् । पुष्पवान् पशुमान् भवति ।

श्री ह्रीं क्लीं ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धिमही ।

तन्नो दन्तिः प्रचोदयात् ॥

श्री ह्रीं क्लीं नमो नरगजाकृते नलिनवर्णदेहाकृते

नरासुरेडित-श्रुतिशिरोद्यदङ्घ्रिद्वय ।

नगेश्वरवरात्मजानयनपद्मभानो नम

नतार्तिहरणाङ्घ्रियुक् कलित एष पुष्पाञ्जलिः ॥

श्री ह्रीं क्लीं श्रीसिद्धलक्ष्मीसहित–श्रीमहागणपतये नम पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ॥

तान्त्रिकनित्यहोमविधि

साधकः स्वस्तिभद्रं विरच्य तस्मिन् गणेशं साङ्गं सावरण षोडषोपचारैः सम्पूज्य तदुत्तरत. लौकिकाग्निम् प्रतिष्ठाप्य । तस्मिन्नग्नौ साङ्गं सावरण

गणपतिं सम्पूज्य अष्टद्रव्यैः मध्वाज्यमिश्रितैः ग्रासमितैः त्रिसंख्यं पञ्चसंख्यं वा हुनेत् । संभृताष्टद्रव्यं त्रिधा कृत्वा एकमशं निवेदयेत्—द्वावंशौ जुहुयात् । ततः जपं कृत्वा गणपत्युपनिषदादिभिः स्तुवीत । पुनः पञ्चोपचारान् उपचर्य, नीराजनं प्रदक्षिणनमस्कारादि कृत्वा । अग्नेः स्वस्तिपद्मादपि गणपतिं उद्वासयेत् । अष्टद्रव्यालाभे तु नारिकेलेन मध्वाज्यगुडमिश्रितेन यथासम्भवद्रव्येण जुहुयात् । इति नित्यहोमविधिः ।

विस्तरे तु गुरुपदिष्टमार्गेण चतुष्पात्रप्रयोगेणापि होमः कर्तव्यः । तस्मिन् प्रयोगे अग्निमुखानन्तरं, अग्नौ गणपतिमावाह्य पञ्चोपचारं कृत्वा गणपतिमूलमन्त्रेण प्रधानाहुतिं दत्वा दशवारं मूलमन्त्रेण-अङ्गावरणदेवतानां एकैकामाज्याहुतिं जुहुयात् । ततो होमशेषः ॥ स्वस्वशाखोक्तविधिना अग्निप्रतिष्ठापनं कुर्यात् ॥

बलिदानम्

देवतादक्षभागे सामान्यार्घ्योदकेन वृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं परिकल्प्य श्री ह्री क्ली ऐं व्यापकमण्डलाय नमः । इति गन्धाक्षतैरभ्यर्च्य अर्धभक्तपूरितोदकं सक्षीरादित्रयं बलिपात्रं तत्र विन्यस्य—

श्री ह्री क्ली ॐ गां गीं गूं गैं गौं गः महागणपतये वरवरद सर्वजनं मे वशमानय सर्वोपचारसहितं इमं बलिं गृह्ण गृह्ण स्वाहा । इत्युच्चरन् । बलिपात्रे सामान्यार्घ्योदकं विसृजेत् । ततः पादौ प्रक्षाल्य आचम्य त्रिः प्रदक्षिणनमस्कारान् कृत्वा यथाशक्ति मूलमन्त्रजपमाचरेत् । उत्तराङ्गं विधाय—

गुह्यातिगुह्यगोप्ता त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देव त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा ॥

(इति देवस्य हस्ते जपं समर्पयेत्) ॥

गणेशाष्टकम्

विनायकैकभावनासमर्चनासमर्पितं,
प्रमोदकैः प्रमोदकैः प्रमोदमोदमोदकम् ।
यदर्पितं समर्पितं नवन्यधान्यनिर्मितं,
न कण्डितं न खण्डितं न [illegible] कृतम् ॥१॥

सजातिकृद्विजातिकृत्स्वनिष्ठभेदवर्जित
निरञ्जन च निर्गुण निराकृति च निष्क्रियम् ।
सदात्मक चिदात्मकं सुखात्मक पर पद
भजामि त गजानन स्वमाययाऽऽत्तविग्रहम् ॥२॥
गणाधिप त्वमष्टमूर्तिरीशसूनुरीश्वर
त्वमम्बर च शम्बर धनञ्जय प्रभञ्जन ।
त्वमेव दीक्षित क्षितिर्निशाकर प्रभाकर
चराचरप्रचारहेतुरन्तरायशान्तिकृत् ॥३॥
अनेकद तमालनीलमेकदन्तसुन्दर
गजानन नुमो गजाननामृताब्धिमन्दिरम् ।
समस्तवेदवादसत्कलाकलापमन्दिर
महान्तरायदुस्तमस्त्वमार्कमाश्रितोदरम् ॥४॥
सरत्नहेमघण्टिकानिनादनूपुरस्वनै
मृदङ्गतालनादभेदसाधनानुरूपत ।
धिमिद्धिमित्ततोऽङ्गतोङ्ग थेयिथेयिशब्दतो
विनायकस्शशाङ्कशेखराग्रत प्रनृत्यति ॥५॥
नमामि नाकनायकैकनायक विनायक
कलाकलापकल्पनानिदानमादिपूरुषम् ।
गणेश्वर गुणेश्वरं महेश्वरात्मसम्भव
स्वपादमूलसेविनामपारवैभवप्रदम् ॥६॥
भजे प्रचण्डतुन्दिल सदन्तशूकभूषण
सनन्दनादिवन्दितं समस्तसिद्धसेवितम् ।
सुरासुरौघयोस्सदा जयप्रदं भयप्रदं
समस्तविघ्नघातिनं स्वभक्तपक्षपातिनम् ॥७॥

कराम्बुजात्तकङ्कणःपदाब्जकिङ्किणिगणो-
गणेश्वरो गुणार्णवः फणीश्वराङ्गभूषणः ।
जगत्त्रयान्तरायशान्तिकारकोऽस्तु तारको-
भवार्णवादनेकदुर्गृहाञ्चिदेकविग्रहः ॥८॥

यो भक्तिप्रवणः परावरगुरोस्स्तोत्रं गणेशाष्टकं
शुद्धस्संयतचेतसा यदि पठेन्नित्यं त्रिसन्ध्यं पुमान् ।
तस्य श्रीरतुला स्वसिद्धिसहिता श्रीशारदा सारदा
स्याता तत्परिचारिके किल तदा काः कामनानां कथाः ॥

सुवासिनीपूजा

श्री ह्रीं क्लीं प्राङ्निमन्त्रितां सुवासिनीमाहूय तां देवीरूपां विभाव्य ३ ऐं क्लीं सौः सुवासिन्यै-अर्घ्यं कल्पयामि नमः । इत्यादिरीत्या अर्घ्य-आचमन-स्नान-गन्ध-हरिद्राकुङ्कुम-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-ताम्बूलानि दद्यात् । (सति विभवे वसनादीनि च) ॥

बटुकपूजा

श्री ह्रीं क्लीं प्राङ्निमन्त्रितबटुकममाहूय तं गणपतिरूपं विभाव्य, ३ वं वटुकाय अर्घ्यं कल्पयामि नमः । इत्यादिरीत्या, अर्घ्य-आचमन-स्नान वस्त्र-यज्ञोपवीत-गन्ध-पुष्प-धूप-दीप-नैवेद्य-ताम्बूलानि दद्यात् ॥

सामयिकपूजा

ततः संनिहिते गुरौ गुरुं नत्वा गन्धकुङ्कुमादिभिरुपचर्य, गुरुपादुकामन्त्रेण अभिपूज्य पात्राणि समर्पयेत् । असंनिहिते गुरौ स्वशिरसि गुरुत्रयं यजेत् । ततः सन्निहितान् सामयिकानाहूय गन्धकुङ्कुमादिभिरुपचर्य पात्राणि दद्यात् । पश्चात् तत्त्वशोधनं कुर्यात् । सामयिकाश्च पात्रमादाय समस्तप्रकटेत्यादि-

समष्टिमन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं दत्वा स्वशिरसि गुरुत्रयं, हृदये आत्मचतुष्टयं च इष्ट्वा देवं सन्तर्प्य तत्वशोधनं यथोपदिष्टं कुर्युः ॥

तत्त्वशोधनं

श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ गं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा ॥

३ „ „ विद्यातत्त्वं „ „ ॥

३ „ „ शिवतत्त्वं „ „ ॥

३ „ „ सर्वतत्त्वं „ „ ॥

पूजासमर्पण-देवतोद्वासने

श्रीं ह्रीं क्लीं साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया ।
तत्सर्वं कृपया देव गृहाणाराधन मम ॥

३ देवनाथगुरोस्वामिन् देदिक स्वात्मनायक ।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पूजां पूर्णतरां कुरु ॥

इति देवतादक्षिणहस्ते पूजां समर्प्य शङ्खमुद्धृत्य देवतोपरि त्रिः परिभ्राम्य, तज्जलं हस्ते समादाय मामयिकानात्मानं च मूलेन प्रोक्ष्य शङ्खं प्रक्षाल्य निदध्यात् । ततो मूलेन तीर्थनिर्माल्ये स्वीकृत्य,

श्रीं ह्रीं क्लीं ज्ञानतोऽज्ञानतो वापि यन्मयाचरितं विभो ।
तवकृत्यमिति ज्ञात्वा क्षमस्व परमेश्वर ॥

इति क्षमाप्य, सर्वासामावरणदेवतानां देवताङ्गे विलयं विभाव्य खेचरीं बद्ध्वा—

श्रीं ह्रीं क्लीं हृत्पद्मकर्णिकामध्ये शक्त्या सह गजानन ॥
प्रविश त्वं गणेशान सर्वैरावरणैः सह ॥

इति तेजोरूपेण परिणतं देवं पूर्ववत् हृदयं नित्वा, तत्र च मूनि यथोपचारैः सम्पूज्य पुनः आत्माभिन्नसंविद्रूपेण भावयेत् ॥

शान्तिस्तवः

सम्पूजकानां परिपालकानां यतेन्द्रियाणां च तपोधनानाम् ।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां करोतु शान्तिं भगवान् कुलेशः ॥
नन्दन्तु साधककुलान्यणिमाऽऽदिसिद्धाः
शापाः पतन्तु समयद्विषि योगिनीनाम् ।
सा शाम्भवी स्फुरतु काऽपि ममाऽप्यवस्था
यस्याः गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम् ॥
शिवाद्यवनिपर्यन्तं ब्रह्मादिस्तम्बसंयुतम् ।
कालाग्न्यादिशिवान्तं च जगद्यज्ञेन तृप्यतु ॥

इत्यादिशान्तिश्लोकान् पठित्वा—

विशेषार्घ्योद्वासनम्

मूलेन विशेषार्घ्यपात्रं आमस्तकमुद्धृत्य तत्क्षीरं पात्रान्तरेण-आदाय आर्द्रं ज्वलति इति मन्त्रेण आत्मनः कुण्डलिन्यग्नौ हुत्वा ब्राह्मणान् सुवासिनीश्च भोजयित्वा स्वयमपि भुक्त्वा यथासुखं विहरेत् ॥

॥ इति शिवम् ॥

श्रीगणेशपञ्चरत्नस्तोत्रम्

मुदाकरात्तमोदकं सदाविमुक्तिसाधकम् ॥
कलाधरावतंसकं विलासिलोकरक्षकम् ॥
अनायकैकनायकं विनाशितेभदैत्यकम् ॥
नताशुभाशुनाशकं नमामि तं विनायकम् ॥ १
नतेतरातिभीकरं नवोदितार्कभास्वरम् ॥
नमत्सुरारिनिर्जरं नताधिकापदुद्धरम् ॥
सुरेश्वरं निधीश्वरं गजेश्वरं गणेश्वरं ॥
महेश्वरं तमाश्रये परात्परं निरन्तरम् ॥ २

समस्तलोकशङ्कर निरस्तदैत्यकुञ्जरम् ॥
दरेतरोदर वर वरेभवक्त्रमक्षरम् ॥
कृपाकर क्षमाकर मुदाकर यशस्करम् ॥
मनस्कर नमस्कृता नमस्करोमि भास्वरम् ॥ ३
अकिञ्चनार्तिमार्जनं चिरन्तनोक्तिभाजनम् ॥
पुरारिपूर्वनन्दन सुरारिगर्वचर्वणम् ॥
प्रपञ्चनाशभीषण धनञ्जयादिभूषणम् ॥
कपोलदानवारिण भजे पुराणवारणम् ॥ ४
अचिन्त्यरूपमन्तहीनमन्तरायकृन्तनं ॥
नितान्तकान्तिदन्तकान्तमन्तकान्तकात्मजम् ॥
हृदन्तरे निरन्तर वसन्तमेव योगिना ॥
तमेकदन्तमेव सविचिन्तयामि सन्ततम् ॥ ५
महागणेशपञ्चरत्नमादरेण योऽन्वहम् ॥
प्रजल्पति प्रदोषके हृदि स्मरन् गणेश्वरम् ॥
अरोगतामदोषता सुसाहिती सुपुत्रताम् ॥
समाहितायुरष्टभूतिमभ्युपैति सोऽचिरात् ॥ ६

अथ गणपत्यथर्वशीर्षम्

श्रीगणेशाय नम ॥ ॐ भद्र कर्णेभि शृणुयाम देवा ॥ भद्र पश्येमाक्षभिर्यजत्रा ॥ स्थिरैरङ्गैस्तुष्टुवा ᳲ सस्तनूभि यशम हि देवहितं यदायु ॥ स्वस्ति न इन्द्रो वृद्धश्रवा स्वस्ति न पूषा विश्ववेदा ॥ स्वस्ति नस्तार्क्ष्यो अरिष्टनेमि ॥ स्वस्तिनो बृहस्पतिर्दधातु ॥ ॐ शान्ति शान्ति शान्ति ॥ अथ गणेशाथर्वशीर्षव्याख्यास्याम ॥

ॐ नमस्तेगणपतये ॥ त्वमेवप्रत्यक्ष तत्वमसि ॥ त्वमेवकेवल कर्तासि ॥ त्वमेवकेवल धर्तासि ॥ त्वमेवकेवलं हर्तासि ॥ त्वमेवसर्वं खल्विदब्रह्मासि ॥ त्वंसाक्षादात्मासि नित्य ॥ ऋतवच्मि ॥ सत्यंवच्मि ॥ अवत्वंमा ॥ अववक्तार॥ अवश्रोतार॥ अवदातारं॥ अवधातार॥ अवानूचानमवशिष्य॥ अवपश्चात्तात् ॥ अवपुरस्तात् ॥ अवोत्तरातात् ॥ अवदक्षिणातात् ॥ अवचोर्ध्वातात् ॥ अवाधरातात् ॥ सर्वतोमापाहिपाहिसमंतात् ॥ त्वयाङ्मयस्त्वंचिन्मय ॥ त्वमानन्दमयस्त्व ब्रह्ममय ॥ त्वंसच्चिदानन्दाद्वितीयोसि॥ त्वप्रत्यक्षब्रह्मासि ॥ त्वंज्ञानमयोविज्ञानमयोसि ॥ सर्वंजगदिदत्वत्तोजायते ॥ सर्वंजगदिदत्वत्तस्तिष्ठति ॥ सर्वंजगदिदत्वयिलयमेष्यति ॥ सर्वंजगदिदत्वयिप्रत्येति ॥ त्वभूमिरापोऽनिलोऽनलोनभ ॥ त्वंचत्वारिवाक्पदानि ॥ त्वगुणत्रयातीत ॥ त्वंकालत्रयातीत ॥ त्वदेहत्रयातीत ॥ त्वमूलाधारस्थितोऽसिनित्यं ॥ त्वशक्तित्रयात्मक ॥ त्वायोगिनोध्यायन्तिनित्य ॥ त्वब्रह्मात्वंविष्णुस्त्वंरुद्रस्त्वमिन्द्रस्त्वमग्निस्त्ववायुस्त्वसूर्यस्त्वचन्द्रमास्त्व ब्रह्मभूर्भुव स्वरोम् ॥ गणादीन् ॥ पूर्वमुच्चाय वर्णादीस्तदनन्तर ॥ अनुस्वार परतर ॥ अर्धेन्दुलसित ॥ तारेणरुद्ध ॥ एतत्तवमनुस्वरूप ॥ गकार पूर्वरूप ॥ अकारोमध्यमरूप ॥ अनुस्वारश्चान्त्यरूप बिंदुरुत्तररूप ॥ नाद सन्धान ॥ सहितासन्धि ॥ सैषागणेशविद्या ॥ गणकऋषि ॥ निचृद्गायत्रीछन्द ॥ गणपतिर्देवता ॥ ॐ ग गणपतये नम ॥

ॐ एकदन्तायविद्महे वक्रतुण्डायधीमहि ॥ तन्नो दन्ति प्रचोदयात् ॥ एकदन्तश्चतुर्हस्तपाशमङ्कुशधारिणम् ॥ रदचवरदहस्तैर्बिभ्राण मूषकध्वजम् ॥ रक्तलंबोदरशूपकर्णकंरक्तवासस ॥ रक्तगधानुलिप्ताङ्गरक्तपुष्पै सुपूजितम् ॥ भक्तानुकंपिनदेवजगत्कारणमच्युतं ॥ आविर्भूतञ्चसृष्ट्यादौप्रकृते पुरुषात्पर ॥ एवं ध्यायति यो नित्य स योगीयोगिनाम्वर ॥ नमो व्रातपतये नमो गणपतये नम प्रमथपतये नमस्ते अस्तु लम्बोदरायैकदन्तायविघ्नाशिनेशिवसुतायश्री वरदमूर्तयेनम ॥ एतदथर्वशीर्षयोऽधीते ॥ सब्रह्मभूयायकल्पते ॥ ससर्वत सुखमेधते ॥ ससर्वविघ्नैर्नबाध्यते ॥ सपञ्चमहापापात्प्रमुच्यते ॥ सायमधी

यानोदिवसकृतपापनाशयति ॥ प्रातरधीयानोरात्रिकृतंपापनाशयति ॥ सायंप्रातः प्रयुञ्जानोऽपापोभवति ॥

सर्वत्राधीयानोऽपविघ्नोभवति ॥ धर्मार्थकाममोक्षंचविंदति ॥ इदमथर्वशीर्षमशिष्यायनदेयं ॥ योयदिमोहाद्दास्यति ॥ सपापीयान् भवति ॥ सहस्रावर्तनात् यंयंकाममधीते ॥ तं तमनेनसाधयेत् ॥ अनेनगणपतिमभिषिञ्चति ॥ सवाग्मीभवति ॥ चतुर्थ्यामनश्नन् जपति ॥ सविद्यावान् भवति ॥ इत्यथर्वणवाक्यं ॥ ब्रह्माद्याचरणंविद्यान् ॥ नबिभेतिकदाचनेति ॥ योदूर्वांकुरैर्यजति ॥ सवैश्रवणोपमोभवति ॥ योलाजैर्यजति ॥ सयशोवान्भवति ॥ समेधावान्भवति ॥ योमोदकसहस्रेणयजति ॥ सवाञ्छितफलमवाप्नोति ॥ यः साज्यसमिद्भिर्यजति ॥ ससर्वंलभते ससर्वंलभते ॥ अष्टौब्राह्मणान् सम्यग्ग्राहयित्वा ॥ सूर्यवर्चस्वीभवति ॥ सूर्यग्रहेमहानद्यांप्रतिमासंनिधौवाजप्त्वा ॥ सिद्धमन्त्रो भवति ॥ महाविघ्नात्प्रमुच्यते ॥ महादोषात्प्रमुच्यते ॥ महापापात्प्रमुच्यते ॥ ससर्वविद्भवतिससर्वविद्भवति ॥ यएववेद ॥ इत्युपनिषत् ॥ ॐ भद्रकर्णेभि० ॥ १ ॥ स्वस्तिनइन्द्रो० ॥ १ ॥

॥ इति गणपत्यथर्वशीर्षं समाप्तम् ॥

पुरश्चरणविधिः

एवं नित्यक्रमं प्रवर्तयन् श्यामाक्रमे वक्ष्यमाणेन विधिना अष्टाविंशतिसहस्रसंख्यं पुरश्चरणजपं । प्रकृते कलियुगत्वाच्चतुर्गुणितम् । प्रथमेऽह्नि सहस्रम् । ततः प्रत्यहं सहस्रसंख्यञ्च कृत्वा जपदशांशेन होमः । तद्दशांशेन तर्पणम्, तद्दशांशेन ब्राह्मणभोजनानि च विदध्यात् ।

होमे द्रव्याणि

मोदकैः पृथुकैर्लाजैः सक्तुभिश्चेक्षुपर्वभिः ।
नारिकेलैस्तिलैःशुद्धैस्सुपक्कैः कदलीफलैः ॥

इत्युक्तान्यष्टौ, एतेषां प्रमाणन्तु—

मोदकाः अखण्डिताः ग्रासमिताः, पृथुकलाजसक्तवो मुष्टिपरिमिताः। इक्षुप्रमाणं श्लोक एवोक्तम्। नारिकेलम् अष्टधा खण्डितम्। तिला चुलुकप्रमाणा शतसङ्ख्याका वा। कदलीफलमल्पम् यद्यखण्डितम् पृथु चेद्यथारुचि खण्डितम्। अमीषां द्रव्याणां मधुक्षीरघृतसिक्तानां पृथक् पृथगाहुतयो होमसङ्ख्या पिण्डाष्टमभागमिता ३५० श्लोकपाठक्रमेण भवन्ति। अष्टद्रव्यहोमात् प्रागावरणदेवतानामेकैकाहुतिः प्रधानदेवतायैश्च दशाहुतयः ता आज्येनैव भवन्ति। तर्पणपूर्वाङ्गन्तु चतुरावृत्तितर्पणवदेव। इत्थं पुरश्चरणेन सिद्धमनुः, स्वातन्त्र्येणोपास्तौ च श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण नैमित्तिकार्चनपरः काम्यापेक्षी चेत् श्यामाक्रमे वक्ष्यमाणेन तत्तत्कामानुगुणेन द्रव्येणेष्ट्वा सिद्धसङ्कल्पः सुखी विहरेत्, इति शिवम्।

अस्य श्रीमहागणपति-सहस्रनाम-स्तोत्रमन्त्रस्य महागणपतये ऋषये नमः शिरसि अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे श्रीमहागणपति-देवतायै नमः हृदये गं बीजाय नमः गुह्ये, हुं शक्तये नमः पादयोः, स्वाहा कीलकाय नमः नाभौ, महागणपतिप्रसाद सिद्धये जपे विनियोगाय नमः करसम्पुटे।

ॐ गां	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः,	हृदयाय नमः
ॐ गीं	तर्जनीभ्यां नमः,	शिरसे स्वाहा
ॐ गूं	मध्यमाभ्यां नमः,	शिखायै वषट्
ॐ गैं	अनामिकाभ्यां नमः,	कवचाय हुम्
ॐ गौं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः,	नेत्रत्रयाय वौषट्
ॐ गः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः,	अस्त्राय फट्

बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजा चक्राब्जपाशोत्पल।
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलश — प्रोद्यत्कराम्भोरुहः॥
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया।
विश्वोत्पत्ति विपत्ति संस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः॥

॥ श्री ॥

श्रीमहागणपतिसहस्रनामावलिः

ग गणेश्वराय नम
गणक्रीडाय
गणनाथाय
गणाधिपाय
एकदंष्ट्राय
वक्रतुण्डाय
गजवक्त्राय
महोदराय
लम्बोदराय
धूम्रवर्णाय १०
विकटाय
विघ्ननायकाय
सुमुखाय
दुर्मुखाय
बुद्धाय
विघ्नराजाय
गजाननाय
भीमाय
प्रमोदाय
आमोदाय २०
सुरानन्दाय
मदोत्कटाय
हेरम्बाय
शम्बराय

ग शम्भवे नम
लम्बकर्णाय
महाबलाय
नन्दनाय
अलम्पटाय
अभीरवे ३०
मेघनादाय
गणञ्जयाय
विनायकाय
विरूपाक्षाय
धीरशूराय
वरप्रदाय
महागणपतये
बुद्धिप्रियाय
क्षिप्रप्रसादनाय
रुद्रप्रियाय ४०
गणाध्यक्षाय
उमापुत्राय
अघनाशनाय
कुमारगुरवे
ईशानपुत्राय
मूषकवाहनाय
सिद्धिप्रियाय
सिद्धिपतये

गं सिद्धाय नमः
सिद्धिविनायकाय ५०
अविघ्नाय
तुम्पुरवे
सिंहवाहनाय
मोहिनीप्रियाय
कटङ्कटाय
राजपुत्राय
शालकाय
सम्मिताय
अमिताय
कूश्माण्डसामसम्भूतये ६०
दुर्जयाय
धूर्जयाय
जयाय
भूपतये
भुवनपतये
भूताना-पतये
अव्ययाय
विश्वकर्त्रे
विश्वमुखाय
विश्वरूपाय ७०
निधये
घृणये
कवये
कवीनामृषभाय

गं ब्रह्मण्याय नमः
ब्रह्मणस्पतये
ज्येष्ठराजाय
निधिपतये
निधिप्रियपतिप्रियाय
हिरण्मयपुरान्त.स्थाय ८०
सूर्यमण्डलमध्यगाय
कराहतिध्वस्तसिन्धुसलिलाय
पूषदन्तभिदे
उमाङ्ककेलिकुतुकिने
मुक्तिदाय
कुलपालनाय
किरीटिने
कुण्डलिने
हारिणे
वनमालिने ९०
मनोमयाय
वैमुख्यहतदैत्यश्रिये
पादाहतिजितक्षितये
सद्योजातस्वर्णमुञ्जमेखलिने
दुर्निमित्तहृते
दुस्स्वप्नहृते
प्रसहनाय
गुणिने
नादप्रतिष्ठिताय
सुरूपाय १००

ॐ सर्वनेत्राधिवासाय नमः
वीरासनाश्रयाय
पीताम्बराय
खण्डरदाय
खण्डेन्दुकृतशेखराय
चित्राङ्कश्यामदशनाय
भालचन्द्राय
चतुर्भुजाय
योगाधिपाय
तारकस्थाय ११०
पुरुषाय
गजकर्णकाय
गणाधिराजाय
विजयस्थिराय
गजपतिध्वजिने
देवदेवाय
स्मरप्राणदीपकाय
वायुकीलकाय
विपश्चिद्वरदाय
नादोन्नादभिन्नवलाह-
काय १२०
वराहरदनाय
मृत्युञ्जयाय
व्याघ्राजिनाम्बराय
इच्छाशक्तिधराय
देवत्रात्रे

ॐ दैत्यविमर्दनाय नमः
शम्भुवक्त्रोद्भवाय
शम्भुकोपघ्ने
शम्भुहास्यभुवे
शम्भुतेजसे १३०
शिवाशोकहारिणे
गौरीसुखावहाय
उमाङ्गमलजाय
गौरीतेजोभुवे
स्वर्धुनीभवाय
यज्ञकायाय
महानादाय
गिरिवर्ष्मणे
शुभाननाय
सर्वात्मने १४०
सर्वदेवात्मने
ब्रह्ममूर्ध्ने
ककुप्श्रुतये
ब्रह्माण्डकुम्भाय
चिद्व्योमभालाय
सत्यशिरोरुहाय
जगज्जन्मलयोन्मेषनिमेषाय
अग्न्यर्कसोमदृशे
गिरीन्द्रैकरदाय
धर्माधर्मोष्ठाय १५०
सामबृंहिताय

ग ग्रहर्क्षदशनाय नम
वाणीजिह्वाय
वासवनासिकाय
कुलाचलांसाय
सोमार्कघण्टाय
रुद्रशिरोधराय
नदीनदभुजाय
सर्पाङ्गुलीकाय
तारकानखाय १६०
भ्रूमध्यसंस्थितकराय
ब्रह्मविद्यामदोत्कटाय
व्योमनाभये
श्रीहृदयाय
मेरुपृष्ठाय
अर्णवोदराय
कुक्षिस्थयक्षगन्धर्वरक्ष-
किन्नरमानुषाय
पृथ्वीकटये
सृष्टिलिङ्गाय
शैलोरवे १७०
दस्रजानवे
पातालजङ्घाय
मुनिपदे
कालाङ्गुष्ठाय
त्रयीतनवे
ज्योतिर्मण्डललाङ्गूलाय

ग हृदयालाननिश्चलाय नम
हृत्पद्मकर्णिकाशालि-
वियत्केलिसरोवराय
सद्भक्तध्याननिगडाय
पूजावारीनिवारिताय १८०
प्रतापिने
कश्यपसुताय
गणपाय
विष्टपिने
बलिने
यशस्विने
धार्मिकाय
स्वोजसे
प्रथमाय
प्रथमेश्वराय १९०
चिन्तामणिद्वीपपतये
कल्पद्रुमवनालयाय
रत्नमण्डपमध्यस्थाय
रत्नसिंहासनाश्रयाय
तीव्राशिरोधृतपदाय
ज्वालिनीमौलिलालिताय
नन्दानन्दितपीठश्रिये
भोगदाभूषितासनाय
सकामदायिनीपीठाय
स्फुरदुग्रासनाश्रयाय २००
तेजोवतीशिरोरत्नाय

ग सत्यानित्यावतंसिताय नमः
सविघ्ननाशिनीपीठाय
सर्वशक्त्यम्बुजाश्रयाय
लिपिपद्मासनाधाराय
वह्निधामत्रयाश्रयाय
उन्नतप्रपदाय
गूढगुल्फाय
संवृत्तपार्ष्णिकाय
पीनजङ्घाय २१०
श्लिष्टजानवे
स्थूलोरवे
प्रोन्नमत्कट्ये
निम्ननाभये
स्थूलकुक्षये
पीनवक्षसे
बृहद्भुजाय
पीनस्कन्धाय
कम्बुकण्ठाय
लम्बोष्ठाय २२०
लम्बनासिकाय
भग्नवामरदाय
तुङ्गाय सव्यदन्ताय
महाहनवे
ह्रस्वनेत्रत्रयाय
शूर्पकर्णाय
निबिडमस्तकाय

ग स्तबकाकारकुम्भाग्राय नमः
रत्नमौलये
निरङ्कुशाय २३०
सर्पहारकटीसूत्राय
सर्पयज्ञोपवीतवते
सर्पकोटीरकटकाय
सर्पग्रैवेयकाङ्गदाय
सर्पकक्ष्योदराबन्धाय
सर्पराजोत्तरीयकाय
रक्ताय
रक्ताम्बरधराय
रक्तमाल्यविभूषणाय
रक्तेक्षणाय २४०
रक्तकराय
रक्तताल्वोष्ठपल्लवाय
श्वेताय
श्वेताम्बरधराय
श्वेतमाल्यविभूषणाय
श्वेतातपत्ररुचिराय
श्वेतचामरवीजिताय
सर्वावयवसम्पूर्णसर्वलक्षण-
लक्षिताय
सर्वाभरणशोभाढ्याय
सर्वशोभासमन्विताय २५०
सर्वमङ्गलमाङ्गल्याय
सर्वकारणकारणाय

गं सर्वदैककराय नमः
शार्ङ्गिणे
बीजापूरिणे
गदाधराय
इक्षुचापधराय
शूलिने
चक्रपाणये
सरोजभृते २६०
पाशिने
धृतोत्पलाय
शालीमञ्जरीभृते
स्वदन्तभृते
कल्पवल्लीधराय
विश्वाभयदैककराय
वशिने
अक्षमालाधराय
ज्ञानमुद्रावते
मुद्गरायुधाय २७०
पूर्णपात्रिणे
कम्बुधराय
विधृतालिसमुद्गकाय
मातुलिङ्गधराय
चूतकलिकाभृते
कुठारवते
पुष्करस्थस्वर्णघटीपूर्णरत्नाभिवर्षकाय

गं भारतीसुन्दरीनाथाय नमः
विनायकरतिप्रियाय
महालक्ष्मीप्रियतमाय २८०
सिद्धलक्ष्मीमनोरमाय
रमारमेशपूर्वाङ्गाय
दक्षिणोमामहेश्वराय
महीवराहवामाङ्गाय
रतिकन्दर्पपश्चिमाय
आमोदमोदजननाय
सप्रमोदप्रमोदनाय
समेधितसमृद्धश्रिये
ऋद्धिसिद्धिप्रवर्तकाय
दत्तसौमुख्यसुमुखाय २९०
कान्तिकन्दलिताश्रयाय
मदनावत्याश्रिताङ्घ्रये
कृत्तदौर्मुख्यदुर्मुखाय
विघ्नसम्पल्लवोपघ्नसेवाय
उन्निद्रमदद्रवाय
विघ्नकृन्निघ्नचरणाय
द्राविणीशक्तिसत्कृताय
तीव्राप्रसन्ननयनाय
ज्वालिनीपालितैकदृशे
मोहिनीमोहनाय ३००
भोगदायिनीकान्तिमण्डिताय
कामिनीकान्तवक्त्रश्रिये
अधिष्ठितवसुन्धराय

गं वसुन्धरामदोन्नद्धमहाशङ्ख-
निधिप्रभवे नमः
नमद्वसुमतीमौलिमहापद्म-
निधिप्रभवे
सर्वसद्गुरुसंसेव्याय
शोचिष्केशहृदाश्रयाय
ईशानमूर्ध्ने
देवेन्द्रशिखाय
पवननन्दनाय ३१०
अग्रप्रत्यग्रनयनाय
दिव्यास्त्राणां प्रयोगविदे
ऐरावतादिसर्वाशावारणाव-
रणप्रियाय
वज्राद्यस्त्रपरीवाराय
गणचण्डसमाश्रयाय
जयाजयपरीवाराय
विजयाविजयावहाय
अजितार्चितपादाब्जाय
नित्यानित्यावतंसिताय
विलासिनीकृतोल्लासाय ३२०
शौंडीसौन्दर्यमण्डिताय
अनन्तानन्तसुखदाय
सुमङ्गलसुमङ्गलाय
इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रिया-
शक्तिनिषेविताय
सुभगासंश्रितपदाय

गं ललिताललिताश्रयाय नमः
कामिनीकामनाय
काममालिनीकेलिलालिताय
सरस्वत्याश्रयाय
गौरीनन्दनाय ३३०
श्रीनिकेतनाय
गुरुगुप्तपदाय
वाचासिद्धाय
वागीश्वरीपतये
नलिनीकामुकाय
वामारामाय
ज्येष्ठामनोरमाय
रौद्रीमुद्रितपादाब्जाय
हुंबीजाय
तुङ्गशक्तिकाय ३४०
विश्वादिजननत्राणाय
स्वाहाशक्तये
सकीलकाय
अमृताब्धिकृतावासाय
मदघूर्णितलोचनाय
उच्छिष्टगणाय
उच्छिष्टगणेशाय
गणनायकाय
सार्वकालिकसंसिद्धये
नित्यशैवाय ३५०
दिगम्बराय

गं अनपायाय नमः
अनन्तदृष्टये
अप्रमेयाय
अजरामराय
अनाविलाय
अप्रतिरथाय
अच्युताय
अमृताय
अक्षराय ३६०
अप्रतर्क्याय
अक्षयाय
अजय्याय
अनाधाराय
अनामयाय
अमलाय
अमोघसिद्धये
अद्वैताय
अघोराय
अप्रतिमाननाय ३७०
अनाकाराय
अब्धिभूम्यग्निवलघ्नाय
अव्यक्तलक्षणाय
आधारपीठाय
आधाराय
आधाराधेयवर्जिताय
आखुकेतनाय

गं आशापूरकाय नमः
आखुमहारथाय
इक्षुसागरमध्यस्थाय ३८०
इक्षुभक्षणलालसाय
इक्षुचापातिरेकश्रिये
इक्षुचापनिषेवित्ताय
इन्द्रगोपसमानश्रिये
इन्द्रनीलसमद्युतये
इन्दीवरदलश्यामाय
इन्दुमण्डलनिर्मलाय
इध्मप्रियाय
इडाभागाय
इडाधाम्ने ३९०
इन्दिराप्रियाय
इक्ष्वाकुविघ्नविध्वंसिने
इतिकर्तव्यतेप्सिताय
ईशानमौलये
ईशानाय
ईशानसुताय
ईतिघ्ने
ईषणात्रयकल्पान्ताय
ईहामात्रविवर्जिताय
उपेन्द्राय ४००
उडुभृन्मौलये
उण्डेरकबलिप्रियाय
उन्नताननाय

ॐ उत्तुङ्गाय नमः
उदारत्रिदशाग्रण्ये
ऊर्जस्वते
ऊष्मलमदाय
ऊहापोहदुरासदाय
ऋग्यजुस्सामसम्भूतये
ऋद्धिसिद्धिप्रवर्तकाय ४१०
ऋजुचित्तैकसुलभाय
ऋणत्रयविमोचकाय
स्वभक्तानां लुप्तविघ्नाय
सुरद्विषां लुप्तशक्तये
विमुखार्चानां लुप्तश्रिये
लूताविस्फोटनाशनाय
एकारपीठमध्यस्थाय
एकपादकृतासनाय
एजिताखिलदैत्यश्रिये
एधिताखिलसंश्रयाय ४२०
ऐश्वर्यनिधये
ऐश्वर्याय
ऐहिकामुष्मिकप्रदाय
ऐरम्मदसमोन्मेषाय
ऐरावतनिभाननाय
ओङ्कारवाच्याय
ओङ्काराय
ओजस्वते
ओषधीपतये

ॐ औदार्यनिधये नमः ४३०
औद्धत्यधुर्याय
औन्नत्यनिस्वनाय
सुरनागानामङ्कुशाय
सुरविद्विषामङ्कुशाय
अः समस्तविसर्गान्तपदेषु-
परिकीर्तिताय
कमण्डलुधराय
कल्पाय
कपर्दिने
कलभाननाय
कर्मसाक्षिणे ४४०
कर्मकर्त्रे
कर्माकर्मफलप्रदाय
कदम्बगोलकाकाराय
कूष्माण्डगणनायकाय
कारुण्यदेहाय
कपिलाय
कथकाय
कटिसूत्रभृते
खर्वाय
खड्गप्रियाय ४५०
खड्गखातान्तस्थाय
खनिर्मलाय
खल्वाटशृङ्गनिलयाय
खट्वाङ्गिने

गं गदुरासदाय नमः
गुणाढ्याय
गह्नाय
गम्याय
गद्यपद्यसुधार्णवाय
गद्यगानप्रियाय ४६०
गर्जाय
गीतगीर्वाणपूर्वजाय
गुह्याचाररताय
गुह्याय
गुह्यागमनिरूपिताय
गुहाशयाय
गुहाब्धिस्थाय
गुरुगम्याय
गुरोर्गुरवे
घण्टाघर्घरिकामालिने ४७०
घटकुम्भाय
घटोदराय
चण्डाय
चण्डेश्वरसुहृदे
चण्डीशाय
चण्डविक्रमाय
चराचरपतये
चिन्तामणिचर्वणलालसाय
छन्दसे
छन्दोवपुषे ४८०

गं छन्दोदुर्लक्ष्याय नमः
छन्दविग्रहाय
जगद्योनये
जगत्साक्षिणे
जगदीशाय
जगन्मयाय
जपाय
जपपराय
जप्याय
जिह्वासिंहासनप्रभवे ४९०
झलज्झलोल्लसद्दान-
झङ्कारिभ्रमराकुलाय
टङ्कारस्फारसरावाय
टङ्कारिमणिनूपुराय
ठद्वयीपल्लवान्तस्थसर्व-
मन्त्रैकसिद्धिदाय
डिण्डिमुण्डाय
डाकिनीशाय
डामराय
डिण्डिमप्रियाय
ढक्कानिनादमुदिताय
ढौकाय ५००
ढुण्ढिविनाकाय
तत्वानां परमाय तत्त्वाय
तत्त्वम्पदनिरूपिताय
तारकान्तरसंस्थानाय

गं तारकाय नमः
तारकान्तकाय
स्थाणवे
स्थाणुप्रियाय
स्थात्रे
स्थावराय जङ्गमाय जगते ५१०
दक्षयज्ञप्रमथनाय
दात्रे
दानवमोहनाय
दयावते
दिव्यविभवाय
दण्डभृते
दण्डनायकाय
दन्तप्रभिन्नाभ्रमालाय
दैत्यवारणदारणाय
दंष्ट्रालग्नद्विपघटाय ५२०
देवार्थनृगजाकृतये
धन्यधान्यपतये
धन्याय
धनदाय
धरणीधराय
ध्यानैकप्रकटाय
ध्येयाय
ध्यानाय
ध्यानपरायणाय
नन्दाय ५३०

गं नन्दिप्रियाय नमः
नादाय
नादमध्यप्रतिष्ठिताय
निष्कलाय
निर्मलाय
नित्याय
नित्यानित्याय
निरामयाय
परंव्योम्ने
परंधाम्ने ५४०
परमात्मने
परम्पदाय
परात्पराय
पशुपतये
पशुपाशविमोचकाय
पूर्णानन्दाय
परानन्दाय
पुराणपुरुषोत्तमाय
पद्मप्रसन्ननयनाय
प्रणताज्ञानमोचनाय ५५०
प्रमाणप्रत्ययातीताय
प्रणतार्तिनिवारणाय
फलहस्ताय
फणिपतये
फेत्काराय
फाणितप्रियाय

ग बाणार्चिताङ्घ्रियुगलाय नमः
बालकेलिकुतूहलिने
ब्रह्मणे
ब्रह्मार्चितपदाय ५६०
ब्रह्मचारिणे
बृहस्पतये
बृहत्तमाय
ब्रह्मपराय
ब्रह्मण्याय
ब्रह्मवित्प्रियाय
बृहन्नादाग्र्यचीत्काराय
ब्रह्माण्डावलिमेखलाय
भ्रूक्षेपदत्तलक्ष्मीकाय
भर्गाय ५७०
भद्राय
भयापहाय
भगवते
भक्तिसुलभाय
भूतिदाय
भूतिभूषणाय
भव्याय
भूतालयाय
भोगदात्रे
भ्रूमध्यगोचराय ५८०
मन्त्राय
मन्त्रपतये

ग मन्त्रिणे नमः
मदमत्तमनोरमाय
मेखलावते
मन्दगतये
मतिमत्कमलेक्षणाय
महाबलाय
महावीर्याय
महाप्राणाय ५९०
महामनसे
यज्ञाय
यज्ञपतये
यज्ञगोप्त्रे
यज्ञफलप्रदाय
यशस्कराय
योगगम्याय
याज्ञिकाय
याजकप्रियाय
रसाय ६००
रसप्रियाय
रस्याय
रञ्जकाय
रावणार्चिताय
रक्षोरक्षाकराय
रत्नगर्भाय
राज्यसुखप्रदाय
लक्ष्याय

गं लक्ष्यप्रदाय नमः
लक्ष्याय ६१०
लयस्थाय
लड्डुकप्रियाय
लानप्रियाय
लास्यपराय
लाभकृते
लोकविश्रुताय
वरेण्याय
वह्निवदनाय
वन्द्याय
वेदान्तगोचराय ६२०
विकर्त्रे
विश्वतश्चक्षुषे
विधात्रे
विश्वतोमुखाय
वामदेवाय
विश्वनेत्रे
वज्रिवज्रनिवारणाय
विश्वबन्धनविष्कम्भाधाराय
विश्वेश्वरप्रभवे
शब्दब्रह्मणे ६३०
शमप्राप्याय
शम्भुशक्तिगणेश्वराय
शास्त्रे
शिखाग्रनिलयाय

गं शरण्याय नमः
शिखरीश्वराय
षड्ऋतुकुसुमस्रग्विणे
षडाधाराय
षडक्षराय
संसारवैद्याय ६४०
सर्वज्ञाय
सर्वभेषजभेषजाय
सृष्टिस्थितिलयक्रीडाय
सुरकुञ्जरभेदनाय
सिन्दूरितमहाकुम्भाय
सदसद्व्यक्तिदायकाय
साक्षिणे
समुद्रमथनाय
स्वसंवेद्याय
स्वदक्षिणाय ६५०
स्वतन्त्राय
सत्यसङ्कल्पाय
सामगानरताय
सुखिने
हंसाय
हस्तिपिशाचीशाय
हवनाय
हव्यकव्यभुजे
हव्याय
हुतप्रियाय ६६०

गं हर्षाय नमः
हृल्लेखामन्त्रमध्यगाय
क्षेत्राधिपाय
क्षमाभर्त्रे
क्षमापरपरायणाय
क्षिप्रक्षेमकराय
क्षेमानन्दाय
क्षोणीसुरद्रुमाय
धर्मप्रदाय
अर्थदाय ६७०
कामदात्रे
सौभाग्यवर्धनाय
विद्याप्रदाय
विभवदाय
भुक्तिमुक्तिफलप्रदाय
आभिरूप्यकराय
वीरश्रीप्रदाय
विजयप्रदाय
सर्ववश्यकराय
गर्भदोषघ्ने ६८०
पुत्रपौत्रदाय
मेधादाय
कीर्तिदाय
शोकहारिणे
दौर्भाग्यनाशनाय
प्रतिवादिमुखस्तम्भाय

गं रुष्टचित्तप्रसादनाय नमः
पराभिचारशमनाय
दुःखभञ्जनकारकाय
लवाय ६९०
त्रुटये
कलायै
काष्ठायै
निमेषाय
तत्पराय
क्षणाय
घटयै
मुहूर्ताय
प्रहराय
दिवानक्ताय ७००
अहर्निशाय
पक्षाय
मासाय
अयनाय
वर्षाय
युगाय
कल्पाय
महाल्याय
राशये
तारायै ७१०
तिथये
योगाय

गं वाराय नमः
करणाय
अंशकाय
लग्नाय
होरायै
कालचक्राय
मेरवे
सप्तर्षिभ्यो ७२०
ध्रुवाय
राहवे
मन्दाय
कवये
जीवाय
बुधाय
भौमाय
शशिने
रवये
कालाय ७३०
सृष्टये
स्थितये
विश्वस्मै स्थावराय जङ्गमाय
यस्मै
भुवे
अद्भ्यो
अग्नये
मरुते

गं व्योम्ने नमः
अहङ्कृतये
प्रकृतये ७४०
पुंसे
ब्रह्मणे
विष्णवे
शिवाय
रुद्राय
ईशाय
शक्त्यै
सदाशिवाय
त्रिदशेभ्यो
पितृभ्यो ७५०
सिद्धेभ्यो
यक्षेभ्यो
रक्षोभ्यो
किन्नरेभ्यो
साध्येभ्यो
विद्याधरेभ्यो
भूतेभ्यो
मनुष्येभ्यो
पशुभ्यो
खगेभ्यो ७६०
समुद्रेभ्यो
सरिद्भ्यो
शैलेभ्यो

गं भूताय नमः
भव्याय
भवोद्भवाय
साङ्ख्याय
पातञ्जलाय
योगाय
पुराणेभ्यो ७७०
श्रुत्यै
स्मृत्यै
वेदाङ्गेभ्यो
सदाचाराय
मीमांसायै
न्यायविस्तराय
आयुर्वेदाय
धनुर्वेदाय
गान्धर्वाय
काव्यनाटकाय ७८०
वैखानसाय
भागवताय
सात्वताय
पाञ्चरात्रकाय
शैवाय
पाशुपताय
कालामुखाय
भैरवशासनाय
शाक्ताय

गं वैनायकाय नमः ७९०
सौराय
जैनाय
आर्हतसंहितायै
सते
असते
व्यक्ताय
अव्यक्ताय
सचेतनाय
अचेतनाय
बन्धाय ८००
मोक्षाय
सुखाय
भोगाय
अयोगाय
सत्याय
अणवे
महते
स्वस्ति
हु नमः
फट् नमः ८१०
स्वधा नमः
स्वाहा नमः
श्रौषड् नमः
वौषड् नमः
वषण्णमः

गं नमो नमः
ज्ञानाय
विज्ञानाय
आनन्दाय
बोधाय ८२०
संविदे
शमाय
यमाय
एकस्मै
एकाक्षराधाराय
एकाक्षरपरायणाय
एकाग्रधिये
एकवीराय
एकानेकस्वरूपधृते
द्विरूपाय ८३०
द्विभुजाय
द्व्यक्षाय
द्विरदाय
द्वीपरक्षकाय
द्वैमातुराय
द्विवदनाय
द्वन्द्वातीताय
द्वयादिगाय
त्रिधाम्ने
त्रिकराय ८४०
त्रेताये

गं त्रिवर्गफलदायकाय नमः
त्रिगुणात्मने
त्रिलोकादये
त्रिशक्तीशाय
त्रिलोचनाय
चतुर्बाहवे
चतुर्दन्ताय
चतुरात्मने
चतुर्मुखाय
चतुर्विधोपायमयाय ८५०
चतुर्वर्णाश्रमाश्रयाय
चतुर्विधवचोवृत्तिपरि-
वृत्तिप्रवर्तकाय
चतुर्थीपूजनप्रीताय
चतुर्थीतिथिसम्भवाय
पञ्चाक्षरात्मने
पञ्चात्मने
पञ्चास्याय
पञ्चकृत्यकृते
पञ्चाधाराय
पञ्चवर्णाय ८६०
पञ्चाक्षरपरायणाय
पञ्चतालाय
पञ्चकराय
पञ्चप्रणवभाविताय
पञ्चब्रह्ममयस्फूर्तये

गं पञ्चावरणवारिताय नमः
पञ्चभक्ष्यप्रियाय
पञ्चबाणाय
पञ्चशिवात्मकाय
षट्कोणपीठाय ८७०
षट्चक्रधाम्ने
षड्ग्रन्थिभेदकाय
षडध्वध्वान्तविध्वंसिने
षडङ्गुलमहाह्रदाय
षण्मुखाय
षण्मुखभ्रात्रे
षट्शक्तिपरिवारिताय
षड्वैरिवर्गविध्वंसिने
षडूर्मिभयभञ्जनाय
षट्तर्कदूराय ८८०
षट्कर्मनिरताय
षड्रसाश्रयाय
सप्तपातालचरणाय
सप्तद्वीपोरुमण्डलाय
सप्तस्वर्लोकमुकुटाय
सप्तसप्तिवरप्रदाय
सप्ताङ्गराज्यसुखदाय
सप्तर्षिगणमण्डिताय
सप्तछन्दोनिधये
सप्तहोत्रे ८९०
सप्तस्वराश्रयाय

गं सप्ताब्धिकेलिकासाराय
सप्तमातृनिषेविताय
सप्तच्छन्दोमोदमदाय
सप्तच्छन्दोमखप्रभवे
अष्टमूर्तिध्येयमूर्तये
अष्टप्रकृतिकारणाय
अष्टाङ्गयोगफलभुवे
अष्टपत्राम्बुजासनाय
अष्टशक्तिसमृद्धश्रिये ९००
अष्टैश्वर्यप्रदायकाय
अष्टपीठोपपीठश्रिये
अष्टमातृसमावृताय
अष्टभैरवसेव्याय
अष्टवसुवन्द्याय
अष्टमूर्तिभृते
अष्टचक्रस्फुरन्मूर्तये
अष्टद्रव्यहवि प्रियाय
नवनागासनाध्यासिने
नवनिध्यनुशासित्रे ९१०
नवद्वारपुराधाराय
नवाधारनिकेतनाय
नवनारायणस्तुत्याय
नवदुर्गानिषेविताय
नवनाथमहानाथाय
नवनागविभूषणाय
नवरत्नविचित्राङ्गाय

गं नवशक्तिशिरोधृताय नमः
दशात्मकाय
दशभुजाय ९२०
दशदिक्पतिवन्दिताय
दशाध्यायाय
दशप्राणाय
दशेन्द्रियनियामकाय
दशाक्षरमहामन्त्राय
दशाशाव्यापिविग्रहाय
एकादशादिभिरुद्रैः स्तुताय
एकादशाक्षराय
द्वादशोद्दण्डदोर्दण्डाय
द्वादशान्तनिकेतनाय ९३०
त्रयोदशाभिधाभिन्नविश्वेदेवा-
धिदैवताय
चतुर्दशेन्द्रवरदाय
चतुर्दशमनुप्रभवे
चतुर्दशादिविद्याढ्याय
चतुर्दशजगत्प्रभवे
सामपञ्चदशाय
पञ्चदशीशीतांशुनिर्मलाय
षोडशाधारनिलयाय
षोडशस्वरमातृकाय
षोडशान्तपदावासाय ९४०
षोडशेन्दुकलात्मकाय
कलासप्तदश्यै

गं सप्तदशाय नमः
सप्तदशाक्षराय
अष्टादशद्वीपपतये
अष्टादशपुराणकृते
अष्टादशौषधीसृष्टये
अष्टादशविधिस्मृताय
अष्टादशलिपिव्यष्टिसमष्टि-
ज्ञानकोविदाय
एकविंशाय पुंसे ९५०
एकविंशत्यङ्गुलिपल्लवाय
चतुर्विंशतितत्त्वात्मने
पञ्चविंशाख्यपुरुषाय
सप्तविंशतितारेशाय
सप्तविंशतियोगकृते
द्वात्रिंशद्भैरवाधीशाय
चतुस्त्रिंशन्महाह्रदाय
षट्त्रिंशत्तत्त्वसम्भूतये
अष्टत्रिंशत्कलातनवे
नमदेकोनपञ्चाशन्मरुद्वर्ग-
निरर्गलाय ९६०
पञ्चाशदक्षरश्रेण्यै
पञ्चाशद्रुद्रविग्रहाय
पञ्चाशद्विष्णुशक्तीशाय
पञ्चाशन्मातृकालयाय
द्विपञ्चाशद्वपुःश्रेण्यै
त्रिषष्ट्यक्षरसंश्रयाय

गं चतुष्पष्ट्यर्णनिर्णेत्रे नमः
चतुष्पष्टिकलानिधये
चतुष्पष्टिमहासिद्धयोगिनी
वृन्दवन्दिताय
अष्टषष्टिमहातीर्थक्षेत्रभैरव-
भावनाय ९७०
चतुर्नवतिमन्त्रात्मने
षण्णवत्यधिकप्रभवे
शतानन्दाय
शतधृतये
शतपत्रायतेक्षणाय
शतानीकाय
शतमखाय
शतधाराकरायुधाय
सहस्रपत्रनिलयाय
सहस्रफणभूषणाय ९८०
सहस्रशीर्ष्णेपुरुषाय
सहस्राक्षाय
सहस्रपदे
सहस्रनामसंस्तुत्याय
सहस्राक्षबलापहाय

गं दशसाहस्रफणभृत्फणिराज-
कृतासनाय नमः
अष्टाशीतिसहस्राद्य-
महर्षिस्तोत्रयन्त्रिताय
लक्षाधीशप्रियाधाराय
लक्षाधारमनोमयाय
चतुर्लक्षजपप्रीताय ९९०
चतुर्लक्षप्रकाशिताय
चतुरशीतिलक्षाणांजीवाना-
देहसंस्थिताय
कोटिसूर्यप्रतीकाशाय
कोटिचन्द्रांशुनिर्मलाय
शिवाभवाध्युष्टकोटिविनायक-
धुरन्धराय
सप्तकोटिमहामन्त्रमन्त्रिताव-
यवद्युतये
त्रयस्त्रिंशत्कोटिसुरश्रेणी-
प्रणतपादुकाय
अनन्तनाम्ने
अनन्तश्रिये
अनन्तानन्तसौख्यदाय नमः
१०००

पुनरपि ऋष्यादि-कराङ्गन्यासौ विदध्यात् ।
श्रीगणपतिसहस्रनामावली समाप्ता ॥

॥ श्रीगणेश्वरैकविंशतिनामानि ॥

गं गणञ्जयाय नमः १
गणपतये नमः २
हेरम्बाय नमः ३
धरणीधराय नमः ४
महागणपतये नमः ५
लक्षप्रदाय नमः ६
क्षिप्रप्रसादनाय नमः ७
अमोघसिद्धये नमः ८
अमिताय नमः ९
मन्त्राय नमः १०
चिन्तामणये नमः ११

ग निधये नमः १२
सुमङ्गलाय नमः १३
बीजाय नमः १४
आशापूरकाय नमः १५
वरदाय नमः १६
शिवाय नमः १७
काश्यपाय नमः १८
नन्दनाय नमः १९
वाचासिद्धाय नमः २०
ढुण्ढिविनायकाय नमः २१

॥ श्रीः ॥

अथ श्री-क्रमः

ब्राह्ममुहूर्तकृत्यम्

(मन्त्रमहार्णवश्रीविद्यार्णवनित्योत्सवादिषु प्रतिपादितम्)

ब्राह्मे मुहूर्ते चोत्थाय निद्रास्थानाद् बहिर्निर्गत्य हस्तौ पादौ मुखञ्च प्रक्षाल्याचम्य रात्रिवस्त्रं परित्यज्य शुद्धवस्त्रं परिधाय शुद्धासन उपविश्याज्ञाचक्रे कोटीन्दुप्रकाशे स्वगुरुं ध्यायेत्—

ॐ आनन्दमानन्दकरं प्रसन्नं, ज्ञानस्वरूपं निजबोधरूपम् ।
योगीन्द्रमीड्यं भवरोगवैद्यं, श्रीमद्गुरुं नित्यमहं भजामि ॥

श्रीगुरुपादुकापञ्चकम्

ब्रह्मरन्ध्रसरसीरुहोदरे नित्यलग्नमवदातमद्भुतम् ।
कुण्डलीविवरकाण्डमण्डितं द्वादशार्णसरसीरुहं भजे ॥ १ ॥
तस्य कन्दलितकर्णिकापुटे क्लृप्तरेखमकथादिरेखया ।
कोणलक्षितहलक्षमण्डली भावलक्ष्यमबलालयं भजे ॥ २ ॥
तत्पुटे पटुतडित्कडारिमस्पर्द्धमानमणिपाटलप्रभम् ।
चिन्तयामि हृदि चिन्मयं वपुर्नादबिन्दुमणिपीठमुज्ज्वलम् ॥ ३ ॥
ऊर्ध्वमस्य हुतभुक्शिखात्रयं तद्विलासपरिबृंहणास्पदम् ।
विश्वघस्मरमहोच्चिदोत्कटं व्यामृशामि युगमादिहंसयोः ॥ ४ ॥
तत्र नाथचरणारविन्दयोः कुङ्कुमासवपरीमरन्दयोः ।
द्वन्द्वबिन्दुमकरन्दशीतलं मानसं स्मरति मङ्गलास्पदम् ॥ ५ ॥

निषक्तमणिपादुका नियमितौघकोलाहलं ।
स्फुरत्किसलयारुण नखसमुल्लसच्चन्द्रकम् ॥
परामृतसरोवरोदितसरोज — सद्रोचिषं ।
भजामि शिरसि स्थितं गुरुपदारविन्दद्वयम् ॥

नमस्ते नाथ भगवन् शिवाय गुरुरूपिणे ।
विद्याऽवतारसंसिद्ध्यै स्वीकृतानेकविग्रह ॥
नवाय नवरूपाय परमार्थस्वरूपिणे ।
सर्वाज्ञानतमोभेदभानवे चिद्घनाय ते ॥
स्वतन्त्राय दयाक्लृप्तविग्रहाय शिवात्मने ।
परतन्त्राय भक्तानां भव्यानां भव्यरूपिणे ॥
विवेकिनां विवेकाय विमर्शाय विमर्शिनाम् ।
प्रकाशानां प्रकाशाय ज्ञानिनां ज्ञानरूपिणे ॥
पुरस्तात् पार्श्वयोः पृष्ठे नमस्कुर्यामुपर्यधः ।
सदा मच्चित्तरूपेण विधेहि भवदासनम् ॥
इत्येवं पञ्चभिः श्लोकैः स्तुवीत यतमानसः ।
प्रातः प्रबोधसमये जपात् सुदिवसं भवेत् ॥
अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया ।
चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

'ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः स्वरूप-निरूपणहेत्वमुकाम्बासहितश्रीगुरुपादुकां पूजयामि'

'स्वच्छप्रकाशविमर्शहेत्वमुकाम्बासहितश्रीपरमगुरुपादुकां पूजयामि'

'स्वात्मारामपञ्जरविलीनचेतस्कामुकाम्बासहित श्रीपरमेष्ठिगुरुपादुकां पूजयामि', इति गुरुपरमगुरुपरमेष्ठिगुरुपादुकाः पूजयेत् ।

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुः, गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुस्साक्षात्परं ब्रह्म, तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

इति प्रणम्य प्राणानायम्य च तच्चरणयुगलविगलदमृतरस-विसरपरि-प्लुताखिलाङ्गमात्मानं भावयेत् ।

ततश्च सर्वचैतन्यात्मिकां जाग्रदाद्यवस्थात्रयावभासिकां सर्वाधिष्ठानरूपां प्रत्यक्चैतन्याभिन्नब्रह्मात्मिकां सर्वचैत्यविवर्जितामखण्डां चितिं भावयेत् ।

आमूलाधारादाब्रह्मबिलं विलसन्तीं तडिल्लतासदृशाकृतिं तरुणारुण-पिञ्जरां तेजसीं ज्वलन्तीं कुण्डलीरूपां सर्वाधिष्ठानभूतां परां संविदं भावयेत् ।

नियमितपवनस्पन्दो मूलाधारे चतुर्दलपद्मे त्रिकोणात्मकं पीठस्थितज्योतिर्लिङ्गमावष्ट्यावस्थिता सार्धत्रिवल्यां ॐ "ह्रूं" बीजोनोत्थिताम् 'ऐं ह्रीं श्रीं' इति मन्त्रं च जपन् कुण्डलिनीं ध्यायेत् ।

कुण्डलिनीमन्त्रः

वाग्भवं भुवनेशी च श्रीबीजन्तु तथैव च ।
त्र्यक्षरो मन्त्र आख्यातः कुण्डलिन्यास्सुसिद्धिदः ॥ १ ॥
ऋषिश्शक्तिस्समाख्यातो गायत्रीच्छन्द ईरितम् ।
चेतना कुण्डली शक्तिर्देवतान समीरिता ॥ २ ॥
वाग्भवं बीजमाम्नातं शक्तिः श्रीबीजमुच्यते ।
हृल्लेखाकीलकं प्रोक्तं कुण्डलिन्यास्तु चिन्तने ॥ ३ ॥
विनियोगस्समाख्यातः सर्वागमविशारदैः ।
बीजत्रयद्विरावृत्त्या षडङ्गन्यास ईरितः ॥ ४ ॥
ध्यानं वक्ष्यामि कुण्डल्यास्सावधानतया शृणु ।
मूलाधारे त्रिकोणे तु सूर्यकोटिसमत्विषि ॥ ५ ॥
प्रसुप्तभुजगाकारां सार्धत्रिवलयस्थिताम् ।
नीवारशूकवत्तन्वीं तडित्कोटिसमप्रभाम् ॥ ६ ॥
सूर्यकोटिप्रभा दीप्ता चन्द्रकोटिसुशीतलाम् ।
दिव्यशक्तिमयी देवी शङ्खावर्तक्रमात्स्थिताम् ॥ ७ ॥
सुषुम्नामध्यमार्गेण यान्ती परशिवावधि ।
ह्रींकारबीजरूपेण चिन्तयेद्योगवर्त्मना ॥ ८ ॥

ध्यानम्

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलि-
स्फुरत्तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम् ।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं
सौम्यां रत्नघटस्थसव्यचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम् ॥

श्रीभुवनेश्वरी



(कुण्डलिनी शक्ति ध्यानम्)

सिन्दूरारुणविग्रहा त्रिनयना माणिक्यमौलीस्फुरत ।
तारानायकशेखरा स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम ॥
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषक रक्तोत्पल बिभ्रती ।
सौम्या रत्नघटस्थरक्तचरणा ध्यायेत्परामम्बिकाम् ॥

कुण्डलिनीस्तुतिः

मूलोन्निद्रभुजङ्गराजसदृशी यान्ती सुषुम्नान्तरं
भित्वाधारसमूहमाशु विलसत्सौदामिनीसन्निभाम् ।
व्योमाम्भोजगतेन्दुमण्डलगलद्दिव्यामृतौघे पतिं
सम्भाव्य स्वगृहागता पुनरिमा सञ्चिन्तयेत् कुण्डलीम् ॥

हंसं नित्यमनन्तमद्वयगुणं स्वाधारतो निर्गता,
शक्ति कुण्डलिनी समस्तजननी हस्ते गृहीत्वा च तम् ।
याता शम्भुनिकेतनं परसुखं तेनानुभूय स्वयं,
यान्ती स्वाश्रममर्ककोटिरुचिरा ध्येया जगन्मोहिनी ॥

अव्यक्तं परबिम्बमप्रितरचिं नीत्वा शिवस्यालयं,
शक्तिः कुण्डलिनी गुणत्रयवपुर्विद्युल्लतासन्निभा ।
आनन्दामृतकन्दरं पुरमिदं चन्द्रार्ककोटिप्रभं
सवीक्ष्य स्वगृहं गता भगवती ध्येयाऽनवद्या गुणैः ॥

मध्ये वर्त्म समीरणद्वयमिथस्सङ्घट्टसक्षोभजं,
शब्दस्तोममतीत्य तेजसि तडित्कोटिप्रभाभास्वराम् ।
उद्यन्ती समुपास्महे नवजपासिन्दूरसान्द्रारुणा,
सान्द्रानन्दसुधामयी परशिवं प्राप्ता परा देवताम् ॥

गमनागमनेषु जाङ्घिकी सा तनुयाद्योगफलानि कुण्डली ।
मुदिता कुलकामधेनुरेषा भजता वाञ्छितकल्पवल्लरी ॥

आधारस्थितशक्तिबिन्दुनिलया नीवारशूकोपमा,
नित्यानन्दमयी गलत्परसुधावर्षैः प्रबोधप्रदे ।
सिक्त्वा षट्सरसीरुहाणि विधिवल्कोदण्डमध्योदिता,
ध्यायेद्भास्वरबन्धुजीवरुचिरा सविन्मयी देवताम् ॥

हृत्पङ्केरुहभानुबिम्बनिलया विद्युल्लतामन्थरा,
बालार्कारुणतेजसा भगवती निर्भर्त्सयन्ती तमः ॥

नादाख्य परमर्धचन्द्रकुटिल सविन्मयी शाश्वती,
यान्तीमक्षररूपिणी विमलधीर्ध्यायेद्विभु तेजसाम् ॥
भाले पूर्णनिशाकरप्रतिभटा नीहारहारत्विषा,
सिञ्चन्तीममृतेन देवममितेनानन्दयन्ती तनुम् ।
वर्णाना जननी तदीयवपुषा सव्याप्य विश्वं स्थिता,
ध्यायेत्सम्यगनाकुलेन मनसा सविन्मयीमम्बिकाम् ॥
मूले भाले हृदि च विलसद्वर्णरूपा सवित्री,
पीनोत्तुङ्गस्तनभरनमन्मध्यदेशा महेशी ।
चक्रे चक्रे गलितसुधया सिक्तगात्री प्रकाम,
दद्यादद्य श्रियमविकला वाङ्मयी देवता न ॥
आधारबन्धप्रमुखक्रियाभि समुत्थिता कुण्डलिनी सुधाभि ।
त्रिधामबीज शिवमर्चयन्ती शिवाङ्गना व शिवमातनोतु ॥
निजभवननिवासादुच्चलन्ती विलासै
पथि पथि कमलाना चारु हास विधाय ।
तरुणतपनकान्ति कुण्डली देवता सा
शिवसदनसुधाभिर्दीपयेदात्मतेज. ॥
सिन्दूरपुञ्जनिभमिन्दुकलावतसमानन्दपूर्णनयनत्रमशोभिवक्त्रम् ।
आपीनतुङ्गकुचनम्रमनङ्गतन्त्र शम्भो कलत्रममिता श्रियमातनोतु ॥
वर्णैरर्णवपद्दिशा रविकलाचक्षुर्विभक्ते क्रमात्,
सान्तैरादिभिरावृतान् क्षहयुतैष्षट्चक्रमध्यानिमान् ।
डाकिन्यादिभिराश्रितान् परिचितान् ब्रह्मादिभिर्दैवतै
र्भिन्दाना परदेवता त्रिजगता चित्तेषु दत्ता मुदम् ॥
आधाराद्गुणवृत्तशोभिततनु निर्गत्वरी सत्वर,
भिन्दन्ती कमलानि चिन्मयघनानन्दप्रबोधोद्धुराम् ।
सक्षुब्ध ध्रुवमण्डलामृतकरप्रस्यन्दमानामृत-
स्रोत कन्दलितामन्दतडिदाकारा शिवा भावये ॥

मूलाधारे त्रिकोणे तरुणतरणिशाभास्वरे विभ्रमन्तं
कामं बालार्ककालानलजरठकुरङ्गाङ्ककोटिप्रभाभम् ।
विद्युन्मालासहस्रद्युतिरुचिरलसद्बन्धुजीवाभिरामं,
त्रैगुण्याक्रान्तबिन्दुं जगदुदयलयैकान्तहेतुं विचिन्त्य ॥

तस्योर्ध्वे विस्फुरन्ती स्फुटकनिरतडित्पुञ्जभाभास्वराङ्गी-
मुद्गच्छन्ती सुषुम्नामनु सरणिशिखामाललाटेन्दुबिम्बम् ।
चिन्मात्रां सूक्ष्मरूपां जगदुदयकरी भावनामात्रगम्यां,
मूलं या सर्वधाम्ना स्फुरति निरुपमा हुंकृतोदग्रितोरः ॥

नीता सा मनकैरधोमुखसहस्रारारुणाब्जोदरे,
. च्योतत्पूर्णशशाङ्कबिम्बमधुनः पीयूषधारासुतिम् ।
रक्तां मन्त्रमयी निपीय च सुधानिःष्यन्दरूपा विशेद्
भूयोऽप्यात्मनिकेतनं पुनरपि प्रोत्थाय पीत्वा विशेत् ॥
योऽभ्यस्यत्यनुदिनमेवमात्मनोऽन्तर्यजांशं दुरितजरापमृत्युरोगान् ।
जित्वाऽसौ स्वयमिव मूर्तिमाननङ्गः सञ्जीवेच्चिरमतिनीलकेशजालः ॥

(इति तद्रश्मिनिकरभस्मितसकलकल्मषजालो "मूलं"—
मनसा दशवारमावर्तयेत्) ।

अजपाजप-विधिः

अथ षट्शताधिकैकविंशतिसाहस्रिकां निःश्वासोच्छ्वासरूपिणीं मूलाधारादिब्रह्मरन्ध्रान्तसप्तचक्रनिवासिनीभ्यो देवताभ्यो निवेदयामि, यथा—

मूलाधारे चतुर्दलपद्मे वं शं षं स चतुरक्षरे चतुष्कोणयन्त्रे ऐरावतवाहने लं बीजे स्थिताय सिद्धिबुद्धिशक्तिसहिताय कुङ्कुमवर्णाय महागणपतये षट्शतमजपागायत्रीजपं निवेदयामि ।

स्वाधिष्ठाने षड्दलपद्मे ब भ म य र ल षडक्षरे अर्धचन्द्रे यन्त्रे मकरवाहने वं बीजे स्थिताय सरस्वतीशक्तिसहिताय सिन्दूरवर्णाय ब्रह्मणे षट्सहस्रमजपाजपं निवेदयामि ।

मणिपूरकचक्रे दशदलपद्मे ड ढ ण त थ द ध न प फ दशाक्षरे त्रिकोणयन्त्रे मेषवाहने र बीजे स्थिताय लक्ष्मीशक्तिसहिताय नीलवर्णाय विष्णवे षट्सहस्रमजपाजप निवेदयामि।

अनाहतचक्रे द्वादशदलपद्मे क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ द्वादशाक्षरे षट्कोणयन्त्रे हरिणवाहने य बीजे स्थिताय पार्वतीशक्तिसहिताय हेमवर्णाय परमशिवाय षट्सहस्रमजपाजप निवेदयामि।

विशुद्धिचक्रे षोडशदलपद्मे अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः षोडशाक्षरे शून्ययन्त्रे हस्तिवाहने ह् बीजे स्थिताय प्राणशक्तिसहिताय शुद्धस्फटिकसङ्काशाय जीवाय सहस्रमेकमजपाजप निवेदयामि, आज्ञाचक्रे द्विदलपद्मे श्वेतवर्णे ह् क्ष द्व्यक्षरे लिङ्गयन्त्रे नरवाहने स्थिताय ज्ञानशक्तिसहिताय विद्युद्वर्णाय गुरवे सहस्रमेकमजपाजप निवेदयामि,

ब्रह्मरन्ध्रे सहस्रदलपद्मे चित्रवर्णे अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः क ख ग घ ङ च छ ज झ ञ ट ठ ड ढ ण त थ द ध न प फ ब भ म य र ल व श ष स ह् ळ क्ष इति विंशतिवारोच्चारिते सहस्राक्षरे विसर्गयन्त्रे बिन्दुवाहने पूर्णचन्द्रमण्डले आनन्दमहासमुद्रमध्ये चिन्मयमणिद्वीपे चित्सारचिन्तामणिमयमन्दिरे कल्पवृक्षाधस्थले-अव्याकृत-ब्रह्ममहासिंहासने स्थिताय नानावर्णाय वर्णातीताय चिच्छक्तिसहिताय परमात्मने सहस्रमेकमजपाजप निवेदयामि (इति निवेदयेत्)।

(अथ कतिचित् क्षणान् हंस सोऽहमिति श्वासोच्छ्वासेषु भावयेत्)

हकारेण बहिर्याति सकारेण विशेत्पुनः।
हंसोऽहमिति परमं मन्त्रं जीवो जपति सर्वदा॥

(इति ध्यात्वा) मानसैरुपचारैस्सर्वान् देवान् पूजयेत्।
लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि (कनिष्ठाङ्गुष्ठाभ्याम्)।
हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि (अङ्गुष्ठतर्जनीभ्याम्)।
यं वाय्वात्मकं धूममाघ्रापयामि (तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्याम्)।
रं वन्ह्यात्मकं दीपं दर्शयामि (अङ्गुष्ठमध्यमाभ्याम्)।

व अमृतात्मकं नैवेद्यं निवेदयामि (अङ्गुष्ठानामिकाभ्याम्)।

स सर्वात्मकं ताम्बूलादिसर्वोपचारान् समर्पयामि। (साङ्गुष्ठाभिस्सर्वाभिः)।

आमूलाधारादाब्रह्मबिलं विलसन्त्या बिसतन्तुतनीयस्या विद्युत्पुञ्जपिञ्जराया विवस्वदयुतप्रकाशाया कुण्डलिन्यामेव निम्नाङ्कितेषु चक्रेषु श्रीचक्रस्थिता देवता भावयन् पूजयेत्।

तद्यथा–मूलाधारादधोगते अकुलसहस्रारे तदुपरि स्थिते विषुवन्नाम्नि रक्तवर्णे षड्दले च देहश्रीचक्रयोरभेदेन भूपुरस्थिता अणिमादिदेवीः पूजयामि।

चतुर्दले मूलाधारे षोडशदलगतकामाकर्षिण्यादिदेवीः पूजयामि।

षड्दले स्वाधिष्ठाने अष्टदलगतानङ्गकुसुमादिदेवीः पूजयामि।

दशदले मणिपूरे चतुर्दशारगतसर्वसंक्षोभिण्यादिदेवीः पूजयामि।

द्वादशदले अनाहते बहिर्दशारगतसर्वसिद्धिप्रदादिदेवीः पूजयामि।

षोडशदले विशुद्धे अन्तर्दशारगतसर्वज्ञादिदेवीः पूजयामि।

लम्बिकाग्रे अष्टारगतवशिन्यादिदेवीः पूजयामि।

आज्ञाचक्रे द्विदले त्रिकोणगतमहाकामेश्वर्यादिदेवीश्च पूजयामि।

सहस्रारे बिन्दुगतश्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीं कामेश्वराङ्कनिलयां देवीं पूजयामि। (इति)

श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सत्कारव्ययभावाप्याकरणानि विलीनानि विभाव्य सहस्रारे स्थितजीवात्मना सहितां देवीं हृदयं नीत्वा स्वाञ्जलिगतकुसुमैस्तां सम्पूज्य ततोऽकुलेन्दुगलितामृतधाराख्पिणीं चन्दनकुसुमधूपदीपनैवेद्यशालिकरकमलाः पीतासितश्यामरक्तशुक्लवर्णाः भूवियदनिलानलजललक्षणाः पञ्चभूतमयीः सर्वावयवसुन्दरीः पञ्च देवताः देव्यग्रे पञ्चोपचारमुद्राश्च प्रदर्शिता भावयेत्।

ततो देव्याः नासायां गन्धदेवता, श्रोत्रे पुष्पदेवता, नाभौ धूपदेवता, नयने दीपदेवता, जिह्वायां नैवेद्यदेवता–इति क्रमेण ताः विलीनाः विभाव्य मूलविद्यामुच्चरन् जीवात्मानं देवीपादमूले लीनं विभाव्य हृदयगतदेवीरूपं मध्यन्यस्तसहितं तथैव केवलं ज्योतिर्मयतामापन्नं ध्यायन् संक्षोभिण्यादिमुद्राः भावयित्वा क्षणं न किञ्चिदपि चिन्तयेत्।

रश्मिमालामन्त्राः

ततो रश्मिमालाप्रवर्तनम्। रश्मिमालामन्त्रेषु वैदिकान्मन्त्रान् सस्वरान् पठेत्।

ॐ भूर्भुवस्स्वः, तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि, धियो यो नः प्रचोदयात् (इति गायत्री मूलाधारे)॥ १॥

सावित्र्या विश्वामित्र ऋषिः नृचिद्गायत्रीच्छन्दः सविता देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

मुक्ताविद्रुमहेमनीलधवल – च्छायैर्मुखैस्त्रीक्षणै-
र्युक्तामिन्दुनिबद्धरत्नमकुटां तत्त्वार्थवर्णात्मिकाम्।
गायत्री वरदाभयाङ्कुशकशाः शुभ्रं कपालं गुणं
शङ्खं चक्रमथारविन्दयुगलं हस्तैर्वहन्ती भजे॥

'यत इन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि।
मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये विद्विषो विमृधो जहि॥
स्वस्तिदा विशस्पतिर्वृत्रहा विमृधो वशी।
वृषेन्द्रः पुर एतु नः स्वस्तिदा अभयङ्करः'॥

(इत्यैन्द्री विद्या सप्तपञ्चाशद्वर्णा सङ्कटे भयनाशिनी, हृदये)॥ २॥

अभयङ्करमन्त्रस्य गृत्समद ऋषिः, त्रिष्टुप् छन्दः, अभयङ्करो देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

आरूढो वारणेन्द्रं दशशतनयनः श्यामलः कोमलाङ्गः
वर्मी वीरः प्रतापी प्रतिभटदहनप्रज्ज्वलद्वज्रपाणिः।

दोर्भिर्दिव्यायुधाढ्यैर्मणिगणखचितैर्देवमन्त्रीसनाथो
दत्वाभीष्टानि शश्वत्परिहृतदुरितः पातु विश्वं महेन्द्रः ॥

'ॐ घृणिस्सूर्य आदित्योम्' (इत्यष्टार्णा सौरी तेजोदा, फाले) ॥ ३ ॥

(सौरमन्त्रस्य देवभाग ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, सूर्यो देवता, तत्प्रसाद-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

धृतपद्मद्वयं भानुं तेजोमण्डलमध्यगम् ।
सर्वाधिव्याधिशमनं छायास्लिष्टतनुं भजे ॥)

'ॐ' (इति प्रणवः केवलो ब्रह्मविद्या मुक्तिप्रदा, ब्रह्मरन्ध्रे) ॥ ४ ॥

प्रणवस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, परमात्मा देवता, तत्प्रसाद-सिद्धयर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

ओंकारवाच्यमुच्चण्डचण्डांशुसदृशप्रभम् ।
वासुदेवाभिधं ब्रह्म विश्वगर्भमुपास्महे ॥

'ॐ परोरजसेऽसावदोम्' (इति नवार्णा तुरीया गायत्री स्वैक्यविमर्शिनी, द्वादशान्ते) ॥ ५ ॥

(तुरीयागायत्रीमन्त्रस्य विश्वामित्र ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, सविता देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

देवीं तुरीयगायत्रीं तुर्यातीतपदाश्रयाम् ।
परोरजःप्रकाशात्मचितिरूपामहं भजे ॥

रश्मिपञ्चकमेतन्मूलाधारहृत्फालविधिबिलद्वादशान्तस्थानबीजतयाविभावनीयम् । (द्वादशान्तस्थानन्तु ललाटस्योत्तरभागः) ।

'ॐ सूर्याक्षितेजसे नमः । खेचराय नमः । असतो मा सद्गमय तमसो मा ज्योतिर्गमय । मृत्योर्माऽमृतं गमय । उष्णो भगवान् शुचिरूपः । हंसो भगवान् शुचिरप्रतिरूपः ।

विश्वरूपं घृणिनं जातवेदसं हिरण्मयं ज्योतिरेकं तपन्तम् ।
सहस्ररश्मिः शतधा वर्तमानः प्राणः प्रजानामुदयत्येष सूर्यः ॥

'ॐ नमो भगवते सूर्यायाहोवाहिनि वाहिन्यहोयाहिनि वाहिनि स्वाहा'।

वयस्सुपर्णा उपसेदुरिन्द्रं प्रियमेधा ऋषयो नाथमानाः।
अपध्वान्तमूर्णुहि पूर्धिचक्षुर्मुमुग्ध्यस्मान्निधयेव बद्धान्॥

'पुण्डरीकाक्षाय नमः। पुष्करेक्षणाय नमः। अमलेक्षणाय नमः। कमलेक्षणाय नमः। विश्वरूपाय नमः। श्रीमहाविष्णवे नमः' (इति षोडश-मन्त्रसमष्टिरूपिणी चक्षुष्मती विद्या दूरदृष्टिसिद्धिप्रदा मूलाधारे)॥ ६॥

(चक्षुष्मतीमन्त्रस्य भार्गवऋषिः, नानाच्छन्दांसि, चक्षुष्मती देवता तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।) ध्यानम् :—

चक्षुस्तेजोमयं पुष्पवन्दुकं बिभ्रती करे।
रौप्यसिंहासनारूढां देवीं चक्षुष्मतीं भजे॥

'ॐ गन्धर्वराज विश्वावसो ममाभिलषितां कन्यां प्रयच्छ स्वाहा' (इत्युत्तमकन्याविवाहदायिनी हृदये)॥ ७॥

(विश्वावसुमन्त्रस्य सम्मोहन ऋषिः। गायत्रीच्छन्दः विश्वावसुर्देवता। तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः।) ध्यानम्—

रक्ताङ्गरागाभरणभूषणाढ्यं वीणाधरं वीटिकयोल्लसन्तम्।
गन्धर्वकन्याजनगीयमान विश्वावसु सद्वृहती नमामि॥

ॐ नमो रुद्राय पथिपदे स्वस्ति मां सम्पारय' (इति मार्गसङ्कट-हारिणी विद्या, फाले)॥ ८॥

पथिपद्रुद्रमन्त्रस्य वामदेवः ऋषि. पंक्तिच्छन्दः, पथिपद्रुद्रो देवता। तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

आत्तसज्जधनुर्बाणकरं वृषभसंस्थितम्।
अन्नपूर्णासमाश्लिष्टं पथिपद्रुद्रमाश्रये॥ ८॥

ॐतारे तुत्तारे तुरे स्वाहा, (इति जलापच्छमनी विद्या, ब्रह्मरन्ध्रे)॥९॥

तारा मन्त्रस्य मत्स्य ऋषिः, ताराम्बा देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

नौगर्भसिंहासनारूढां शाक्यदर्शनदेवताम् ।
जलापच्छमनीं वन्दे तारां वारिदमेचकाम् ॥

'अच्युताय नमः, अनन्ताय नमः, गोविन्दाय नमः, (इति महाव्याधिनाशिनी नामत्रयी विद्या, द्वादशान्ते) ॥ १० ॥

(नामत्रयमन्त्रस्य काश्यपात्रिभरद्वाजा ऋषयः, अनुष्टुप् छन्दः, श्रीमहाविष्णुर्देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः ।

ध्यानम्— समस्तदुस्तरव्याधिसंघध्वंसपटीयसे ।
अच्युतानन्तगोविन्दनाम्ने धाम्ने नमो नमः ॥

(एतद्ब्रह्मिपञ्चकं मूलधारादिपरिकरतया ज्ञेयम्) ।

"ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा" (इति महागणपतिविद्या प्रत्यूहशमनी, मूलाधारे) ॥ ११ ॥

महागणपतिमन्त्रस्य गणक ऋषिः, निचृद्गायत्री छन्दः, श्रीमहागणपतिर्देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजा चक्राब्जपाशोत्पल-
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्कराम्भोरुहः ।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश्वरोऽभीष्टदः ॥

'ॐ नमः शिवायै, ॐ नमः शिवाय' (इति द्वादशार्णा शिवतत्त्वविमर्शिनी विद्या, हृदये) ॥ १२ ॥

(शिवशक्त्यात्मकपञ्चाक्षरमन्त्रस्य वामदेव ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, उमामहेश्वरौ देवता, तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

वामांसन्यस्तवामेतरकरकमलायास्तथा वामहस्त-
न्यस्तारक्तोत्पलाया स्तनभरविलसद्वामहस्तः प्रियायाः ।
सर्वाकल्पाभिरामः श्रितपरशुमृगेष्टः करे काञ्चनाभः
ध्येयः पद्मासनस्थः स्मरललितवपुः सम्पदे पार्वतीशः ॥)

'ॐ जुं सः मां पालय-पालय' (इति दशार्णा मृत्योरपि मृत्युरेषा विद्या, फाले) ॥ १३ ॥

(अमृतमृत्युञ्जयस्य कहोल ऋषिः, विराट्छन्दः अमृतमृत्युञ्जयसदाशिवो देवता । तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

स्फुटितनलिनसंस्थ मौलिबद्धेन्दुरेखा—
स्रवदमृतरसार्द्रं चन्द्रवन्ह्यर्कनेत्रम् ।
स्वकरलसितमुद्रापाशवेदाक्षमालं
स्फटिकरजतमुक्तागौरमीश नमामि ॥)

ॐ नमो ब्रह्मणे धारणं मे अस्तु निराकरणं धारयिता भूयासं कर्णयोः श्रुतं मा च्योढ्वं ममामुष्य ॐ (इति श्रुतधारिणी विद्या ब्रह्मरन्ध्रे) ॥१४॥

(श्रुतधारिणीमन्त्रस्य भार्गव ऋषिः, अनुष्टुप् छन्दः, ब्रह्मा देवता, तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोग. । ध्यानम्—

चतुराननमम्भोजनिषण्ण भारतीसखम् ।
अक्षमालावराभीतिकमण्डलुधरं भजे ॥)

"अं आं······ अः कं खं ··· " ळं क्षं" (इति सबिन्दुरकारादिक्षकारान्तवर्णमालिकामातृका सर्वज्ञताकरी द्वादशान्ते) ॥ १५ ॥

(मातृकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्री छन्दः, मातृकासरस्वती देवता तत्प्रीत्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

पञ्चाशता मातृकया ह्यारब्धाखिलदेहया ।
समस्तविद्यारूपिण्या धन्योऽहं मातृकाम्बया ॥)

(पञ्चेमा. रश्मयो मूलादिरक्षात्मकतया द्रष्टव्याः) ॥

'हसकलह्रीं, हसकहलह्रीं सकलह्रीं' (इति लोपामुद्राविद्या स्वस्वरूपविमर्शिनी, मूलाधारे) ॥ १६ ॥

(श्रीहादिलोपामुद्रामन्त्रस्य दक्षिणामूर्तिः ऋषि., पङ्क्तिश्छन्दः, श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी देवता, ह् ५ बीजम्, ह् ६ शक्ति., स ४ कीलकम्, तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः । बालया षडङ्गम् ।

ध्यानम्—

श्रीदेवीभूषितोत्सङ्गं सान्द्रसिन्दूररोचिषम् ।
हृत्वारादिमनोर्वाच्य वन्दे कामेश्वरं हरम् ॥)

'फ्लों ह्रें ह्सौ स्त्रीः ह्रें फ्लों (इति षट्कूटा सम्पत्करी विद्या- हृदये) ॥ १७ ॥

(सम्पत्करीमन्त्रस्य षण्ड ऋषि, गायत्रीच्छन्द, सम्पत्सरस्वती देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोग । ध्यानम्—

अनेककोटिमातङ्गतुरङ्गरथपत्तिभि ।
सेविताम्णावारा वन्दे सम्पत्सरस्वतीम् ॥

'सं सृष्टिनित्ये स्वाहा, हुं स्थितिपूर्णे नम, रं महासंहारिणि कृशे चण्डकालि फट्, रं ह्स्फ्रें महानाख्ये अनन्तभास्करि महाचण्डकालि फट्, रं महासंहारिणि कृशे चण्डकालि फट्, हुं स्थितिपूर्ण नम, सं सृष्टिनित्ये स्वाहा, ह्स्फ्रें महाचण्डयोगेश्वरि' (इति विद्यापञ्चकरूपिणी कालसङ्कर्षणी परमायुःप्रदा, फाले ॥ १८ ॥

(चण्डयोगेश्वरीमन्त्रस्य ईश्वर ऋषि, नानाच्छन्दांसि, चण्डयोगीश्वरी देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोग । ध्यानम्—

सृष्टिस्थितिभ्या सहृत्यनाख्यया भासया श्रिताम् ।
कूलङ्कपकपालाढ्या चण्डयोगीश्वरी भजे ॥

ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्फ्रें ह्सौः अहमहं अहमहं ह्सौ ह्स्फ्रें श्रीं ह्रीं ऐं' (इति शुद्धज्ञानदा शाम्भवी विद्या । ब्रह्मरन्ध्रे) ॥ १९ ॥

(परशम्भुनाथमन्त्रस्य वामदेव ऋषि, पंक्तिच्छन्द, परशम्भुनाथो देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोग । ध्यानम्—

पूर्णाहन्तास्वरूपाय तस्मै परमशम्भवे ।
आनन्दताण्डवोद्दण्डपण्डिताय नमो नम ॥)

'सौ' (इय परा विद्या द्वादशान्ते) ॥ २० ॥

(परामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि, गायत्रीच्छन्द, परा सरस्वती देवता, तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोग । ध्यानम्—

अकलङ्कशशाङ्काभा त्र्यक्षा चन्द्रकलावती ।
मुद्रापुस्तलसद्बाहा पातु मा परमा कला ॥)

(एता पञ्च रश्मयो मूलाद्यधिष्ठानतया कलनीया) ।

'ऐं क्लीं सौः, सौः क्लीं ऐं, ऐं क्लीं सौः' (इति नवाक्षरी श्रीदेव्यङ्गभूता बाला) ॥ २१ ॥

(बालामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषि, गायत्रीच्छन्द बालात्रिपुर सुन्दरी देवता । तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोग । ध्यानम्—

अरुणकिरणजालैरञ्जिताशावकाशा
विधृतजपवटीका पुस्तकाभीतिहस्ता ।
इतरकरवराढ्या फुल्लकह्लारसंस्था
निवसतु हृदि बाला नित्यकल्याणशीला ॥)

'श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति अन्नपूर्णे ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा' इति श्रीदेव्या उपाङ्गभूता अन्नपूर्णा ॥ २२ ॥

(अन्नपूर्णेश्वरीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि, गायत्रीच्छन्द, अन्नपूर्णेश्वरी देवता । तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोग । ध्यानम्—

आदाय दक्षिणकरेण सुवर्णदर्वीं
दुग्धान्नपूर्णमितरेण च रत्नपात्रम् ।
अन्नप्रदाननिरतां नवहेमवर्णाम्
अम्बां भजे कनकभूषणमाल्यशोभाम् ॥)

'ॐ आं ह्रीं क्रों एहि परमेश्वरि स्वाहा' (इयं श्रीदेवीप्रत्यङ्गभूता अश्वारूढा) ॥ २३ ॥

(अश्वारूढामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषि, गायत्रीच्छन्द, अश्वारूढा देवता । तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोग । ध्यानम्—

वद्ध्वा पाशेनाङ्कुशेन कृष्यमाणा स्वसाध्यकम् ।
घ्नन्ती वेत्रेण फालस्कपाणिमश्वासना भजे ॥)

ध्यानान्तरम्—

अश्वारूढा कराग्रे नवकनमयी वेत्रयष्टिं दधाना
दक्षेऽन्ये धारयन्ती स्फुरति धनुर्लता पाशहस्ता सुसाध्या ॥
देवी नित्यप्रसन्ना शशिशकलल्लसत्केशपाशा त्रिणेत्रा
दद्यादद्यानवद्या श्रियमखिलसुखप्राप्तिहृद्या श्रियै न ॥)

(श्रीविद्यागुरुपादुकामन्त्रस्तु–आन्हिकप्रकरण एवोक्त इह पठितव्य.) ।

तद्यथा—

'ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्ख्फ्रें ह स क्ष म ल व र यूं स ह क्ष म ल व र यीं ह्सौः, स्हौः अमुकानन्दनाथ श्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः ॥ २४ ॥

(श्रीविद्यागुरुपादुकामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषि, पङ्क्तिच्छन्द', श्रीविद्यागुरुपादुका देवता, तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ध्यानम्—

तेजोमयमहाविद्या क्षेत्रराञ्चितमस्तकाम् ।
रक्ता चतुर्भुजा वन्दे श्रीविद्यागुरुपादुकाम् ।।)

(अथ मूलविद्या—सा च गुरुमुखादवगता कादिनाम्नी—

'कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं' ॥ २५ ॥

(बाला अन्नपूर्णा अश्वारूढा श्रीपादुका चेत्येताभिश्चतसृभिर्युक्ता मूलविद्या साम्राज्ञी मूलधारे विलोकनीया) ॥

(ऋषिच्छन्दोदेवतादिकं गुरुपरम्परात- प्राप्तमवगन्तव्यम् ।)

'ऐं नमः उच्छिष्टचण्डालि मातङ्गि सर्ववशङ्करि स्वाहा'

(इति श्यामाङ्गभूता लघुश्यामा) ॥ २६ ॥

(लघुश्यामामन्त्रस्य मतङ्ग ऋषि, विराट्छन्दः, श्रीलघुश्यामाम्बा देवता तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोग । ध्यानम्—

स्मरेत्प्रथमपुष्पिणीं रुधिरबिन्दुशोणाम्बरां
गृहीतमधुपात्रिकां मदविघूर्णनेत्राञ्चलाम् ।
घनस्तनभरालसां गलितचूलिकां श्यामलां
करस्फुरितवल्लकीविमलदाह्लतार्टङ्किनीम् ॥
माणिक्यवीणामुपलालयन्ती
मदालसां मञ्जुलवाग्विलासाम् ।
माहेन्द्रनीलद्युतिकोमलाङ्गी
मातङ्गकन्यां मनसा स्मरामि ॥ (इति वा ॥)

'ऐं क्लीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा' ।
(इयं श्यामाङ्गभूता वाग्वादिनी) ॥ २७ ॥

(वागीश्वरीमन्त्रस्य कण्व ऋषिः, विराट्छन्दः, वागीश्वरी देवता तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—
अमलकमलसंस्था लेखनीपुस्तकोद्यत्
करयुगलसरोजा कुन्दमन्दारगौरा ।
धृतशशधरखण्डोल्लासिकोटीरपीठा
भवतु भवभयानां भङ्गिनी भारती नः ॥)

ॐ ओष्ठविधाना नकुली दन्तैः परिवृता पविः ।
सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत् ॥
(इयं श्यामाप्रत्यङ्गभूता नकुलीविद्या) ॥ २८ ॥

(नकुलीवागीश्वरीमन्त्रस्य कहोल ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, नकुली-वागीश्वरी देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—
नकुली वज्रदन्ताली साध्यजिह्वाहिदर्शिनी ।
भक्तवक्तृत्वजननी भावनीया सरस्वती ॥)

श्रीविद्यागुरुपादुकैव प्रथमबीजत्रयस्थाने बालामहिता श्यामागुरुपादुका भवति । यथा—

'ऐं क्लीं सौः ह्स्क्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः अमुकानन्दनाथश्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः' ॥ २९ ॥

(श्यामागुरुपादुकामन्त्रस्य मतङ्ग ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, श्यामागुरुपादुका देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

वन्दे गुर्वङ्घ्रिमुकुटां श्यामलां शुकपाणिनीम् ।
समस्तसिद्धिजननी श्यामलागुरुपादुकाम् ॥)

'ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति श्रीमातङ्गीश्वरि सर्वजनमनोहारि सर्वमुखरञ्जिनि, क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सर्वदुष्टमृगवशङ्करि सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि (त्रैलोक्यं) अमुकं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं' (इत्यष्टनवतिवर्णा राजश्यामला पूर्वोक्ताभिरङ्गोपाङ्गपादुकेत्येताभिश्च—चतसृभिर्विद्याभिस्सहिता हृच्चक्रे यष्टव्या) ॥ ३० ॥

(ऋष्यादिकं गुरुपरम्परातोऽवगन्तव्यम्)

'लूं वाराहि लूं उन्मत्तभैरवि पादुकाभ्यां नमः'
(इयं वार्ताल्यङ्गभूता लघुवार्ताली) ॥ ३१ ॥

(लघुवाराहीमन्त्रस्य नारद ऋषिः, पंक्तिश्छन्दः, लघुवाराही देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

महार्णवे निपतितामुद्धरन्ती वसुन्धराम् ।
महादंष्ट्रां महाकायां नमाम्युन्मत्तभैरवीम् ॥)

'ॐ ह्रीं नमो वाराहि घोरे स्वप्नं ठः ठः स्वाहा'

(इय स्वप्ने शुभाशुभवक्त्री वार्ताल्या उपाङ्गभूता स्वप्नवाराही) ॥ ३२ ॥

(स्वप्नवाराहीमन्त्रस्य अग्नि ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, स्वप्नवाराही देवता । तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

स्वप्ने शुभाशुभं भावि शासन्ती भक्तकार्ययोः ।
दुःस्वप्नहारिणी वन्दे वाराही स्वप्नायिकाम् ॥)

ॐनमो भगवति तिरस्करिणि महामाये महानिद्रे सकल पशुजनमनश्च-
चक्षुःश्रोत्र तिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा ॥ ३३ ॥

(तिरस्करिणीमन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः, गायत्रीच्छन्दः, तिरस्करिणी देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

मुक्तकेशी विवसना सर्वाभरणभूषिताम् ।
स्वयोनिदर्शनान्मुह्यत्पशुवर्गा नमाम्यहम् ॥

'ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः' । (एषा वार्तालीगुरुपादुका) ॥ ३४ ॥

(वाराहीगुरुपादुकामन्त्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीच्छन्दः, वाराहीगुरुपादुकादेवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः । ध्यानम्—

देशिकाङ्घ्रिप्रलम्नमौलिं खड्गिनीञ्च कपालिनीम् ।
भावयामि घनच्छाया पञ्चमीगुरुपादुकाम् ॥)

'ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि अन्धे अन्धिनि नमः । रुन्धे रुन्धिनि नमः । जम्भे जम्भिनि नमः । मोहे मोहिनि नमः । स्तम्भे स्तम्भिनि नमः । सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं ऐं ग्लौं ठः ठः ठः हुं अस्त्राय फट् । (इति द्वादशोत्तरशताक्षरो महावाराहीमन्त्रः) ॥ ३५ ॥

(पूर्वोक्ताभिश्चतसृभिर्युक्तेयं महावाराही आज्ञाचक्रे परिपूज्या ।)

प्रथमद्वितीयकूटयोः हल्लेखावर्जं पञ्चदश्येव त्रयोदशाक्षरी श्रीपूर्तिविद्या *ब्रह्मरन्ध्रे यष्टव्या ।*

तद्यथा—'क ए ई ल ह स क ह ल स क ल ह्रीं' (इयं कादिपूर्तिविद्या) 'ह स क ल ह स क ह ल स क ल ह्रीं' (इयं हादिपूर्तिविद्या) ॥ ३६ ॥

(श्रीपूर्तिविद्यामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पङ्क्तिश्छन्दः, श्रीपूर्तिविद्या देवता, तत्प्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः ।)

प्रथमत्रिकस्थाने त्रितारी कुमारी वाक् ग्लौं इत्यष्टबीजपूर्वा श्रीगुरुपादुकैव महापादुका सर्वमन्त्रसमष्टिरूपिणी स्वेच्छविमर्शिनी महासिद्धिप्रदायिनी द्वादशान्ते वरिवस्या। यथा—

"ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं ह्स्रफ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः अमुकानन्दनाथश्रीगुरुपादुकां पूजयामि नमः॥ ३७॥

(महापादुकामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषिः, पङ्क्तिश्छन्दः, श्रीमहापादुका देवता, तत्प्रसादसिद्धयर्थे जपे विनियोगः। ध्यानम्—

सर्वविद्यामयीं सर्वशक्तिपीठस्वरूपिणीम्।
कराग्रे हृदये मूले देशिकाङ्घ्रियुगत्रयम्॥
दधती दीप्तभूपाढ्या श्रीमहापादुका नमः।

(इति ऋष्यादिसहितरश्मिमाला)। रश्मिमालामन्त्रा आहत्य सप्तविंशति। एते ब्राह्मे मुहूर्ते सकृदावर्तनीयाः. सर्व एवैते मन्त्राः श्रीगुरुमुखादवगत्यैव पठिताः महते श्रेयसे, नान्यथेति शिवशासनम्।

पुस्तके लिखितान् मन्त्रानवलोक्य जपेत्तु यः।
स जीवन्नेव चाण्डालो मृतः श्वा चाभिजायते॥

इति साल्यायनतन्त्रवचनेन गुरुमुखागम विना जपस्य निषेधात्॥

प्रातःकृत्यम्

भूप्रार्थनादिमुखक्षालनान्तम्

प्रातः प्रभृति सायान्त सायादिप्रातरन्ततः।
यत्करोमि जगद्योने तदस्तु तव पूजनम्॥
मञ्जुसिञ्जितमञ्जीरं वामधर्मं महेशितु।
आश्रयामि जगन्मूलं यन्मूलं सचराचरम्॥

प्रातः स्मरामि ललितावदनारविन्दं
बिम्बाधरं पृथुलमौक्तिकशोभिनासम्।
आकर्णदीर्घनयनं मणिकुण्डलाढ्यं
मन्दस्मितं मृगमदोज्ज्वलभालदेशम्॥१॥

प्रातर्भजामि ललिता भुजकल्पवल्ली
रक्ताङ्गुलीयलसदङ्गुलिपल्लवाढ्याम् ।
माणिक्यहेमवलयाङ्गदशोभमानां
पुण्ड्रेक्षुचापकुसुमेषुसृणीर्दधानाम् ॥२॥

प्रातर्नमामि ललिताचरणारविन्दं
भक्तेष्टदाननिरतं भवसिन्धुपोतम् ।
पद्मासनादिसुरनायकपूजनीयं
पद्माङ्कुशध्वजसुदर्शनलाञ्छनाढ्यम् ॥३॥

प्रातः स्तुवे परशिवां ललितां भवानी
त्रय्यन्तवेद्यविभवां करुणानवद्याम् ।
विश्वस्य सृष्टिविलयस्थितिहेतुभूतां
विद्येश्वरी निगमवाङ्मनसातिदूराम् ॥४॥

प्रातर्वदामि ललिते तव पुण्यनाम
कामेश्वरीति कमलेति महेश्वरीति ।
श्रीशाम्भवीति जगतां जननी परेति
वाग्देवतेति वचसा त्रिपुरेश्वरीति ॥५॥

यः श्लोकपञ्चकमिदं ललिताम्बिकायाः
सौभाग्यदं सुललितं पठति प्रभाते ।
तस्मै ददाति ललिता झटिति प्रसन्ना
विद्यां श्रियं विपुलसौख्यमनन्तकीर्तिम् ॥६॥

भूप्रार्थना

समुद्र वसने देवि पर्वतस्तनमण्डिते ।
विष्णुपत्नि नमस्तुभ्यं पादचारं क्षमस्व मे ॥

इति भूमिं सम्प्रार्थ्य, धरणीतलन्यस्तवहन्नाडीपार्श्वपादमुत्थाय ग्रामाद्बहिः स्मार्तेन विधिना निर्वर्तितशौचक्रमः ।

दन्तधावनम्

आयुर्बलं यशो वर्चः प्रजा पशुवसूनि च ।
ब्रह्मप्रज्ञाञ्च मेधाञ्च त्वं नो देहि वनस्पते ॥

इति मन्त्रेण दन्तधावनकाष्ठमभिमन्त्र्य 'ऐंह्रीश्री, 'क्लीं कामदेवाय-सर्वजनप्रियाय नमः' (इति मन्त्रेण दन्तधावनम्)। ऐंह्रीश्री हृल्लेखया जिह्वोल्लेखनं च विधाय कफविमोचननासाशोधनदूषिकानिरसनपूर्वकं-विहितविंशतिगण्डूषः । ऐंह्रीश्री, 'श्रीं' । ऐं ह्रीं श्रीं 'ॐ ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः । ऐंह्रीश्री 'श्रीं ह्रीं क्लीं' । ऐंह्रीश्री 'श्रीसहकलह्रीं श्रीं' इति मन्त्रचतुष्टयेन मुखं प्रक्षाल्य यथा स्मृत्याचामेत् ।

स्नानविधिः

ततो नद्यादौ वैदिकस्नानोत्तरं श्रीललिताप्रीत्यर्थं तान्त्रिकस्नानं करिष्ये, इति सङ्कल्प्य, जले पुरतो हस्तमात्रं चतुरस्रमण्डलं परिगृह्य तत्र—

ब्रह्माण्डोदरतीर्थानि करैः स्पृष्टानि ते रवे ।
तेन सत्येन मे देव तीर्थं देहि दिवाकर ॥

इति सूर्यमभ्यर्च्य,

आवाहयामि त्वा देवि स्नानार्थमिह सुन्दरि ।
एहि गङ्गे नमस्तुभ्यं सर्वतीर्थसमन्विते ॥

(इति गङ्गामर्थयित्वा) ऐंह्रीश्री ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः क्रों, इत्यङ्कुश-मुद्रया सूर्यमण्डलं भित्त्वा गङ्गादिसर्वतीर्थावाहनोत्तरं "वं" इति सलिल-बीजेन सप्तवारमभिमन्त्र्य मुहुर्मुहुरावर्तयन् मूर्ध्नि त्रीनुदकाञ्जलीन् दत्वा त्रीश्च पीत्वा, मूलपूर्वं श्रीललितां तर्पयामीति निस्तर्पणं मूलेन त्रि-प्रोक्षणश्चात्मनो योनिमुद्रया विदध्यात्) ।

(गृहे तु विना तर्पणम् । अशक्तौ च स्मार्तेन पथा मन्त्रभस्मनोरन्यतर-न्निर्वर्त्य मूलेन त्रिराचमनप्रोक्षणे केवलं कुर्यात्) ।

सन्ध्याविधिः

अथ धौते वाससी परिधाय विधृतपुण्ड्रः वैदिकीं सन्ध्यामभिवन्द्य तान्त्रिकीमाचरेत्। यथा—मूलेन त्रिराचम्य द्विः परिमृज्य सकृदुपस्पृश्य चक्षुषी नासिके श्रोत्रे अंसौ नाभिं हृदयं शिरश्चाभिमृशेत्। एवं त्रिराचम्य पूर्ववत्प्राणानायम्य त्रिरात्मानञ्च प्रोक्ष्य अञ्जलिना सलिलमादाय 'ऐं ह्रीं श्रीं ह्रां ह्रीं ह्रूं सः मार्तण्डभैरवाय प्रकाशशक्तिसहिताय स्वाहा' इति मन्त्रेण उदयते विवस्वते त्रिरर्घ्यं दत्वा तन्मण्डले श्रीचक्रमनुचिन्त्य तत्र ध्यायेत्—

ध्यायेत्कामेश्वराङ्कस्थां कुरुविन्दमणिप्रभाम्।
शोणाम्बरस्रगालेपां सर्वाङ्गीणविभूषणाम्॥
सौन्दर्यशेवधिं सेषुचापपाशाङ्कुशोज्ज्वलाम्।
स्वभाभिरणिमाद्याभिः सेव्यां सर्वनियामिकाम्॥
सच्चिदानन्दवपुषं सदयापाङ्गविभ्रमाम्।
सर्वलोकैकजननीं स्मेरास्यां ललिताम्बिकाम्॥

(अत्रायुधानां क्रम· स्वरूपञ्च सपर्याप्रकरणे वक्ष्यते)

ततः—'ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं त्रिपुरसुन्दरि विद्महे,
ऐं ह्रीं श्रीं ह स क ह ल ह्रीं पीठकामिनि धीमहि,
ऐं ह्रीं श्रीं स क ल ह्रीं तन्न· क्लिन्ने प्रचोदयात्'

(इति मन्त्रेण महेश्यै त्रिरर्घ्यं दत्वा मूलेन त्रिस्सन्तर्प्य, मूलेन पूर्ववदाचम्य जपप्रकरणे वक्ष्यमाणान् ऋष्यादीन् न्यस्य मूलमष्टोत्तरशतवारमावर्तयेत्)। ततः पुनः कराङ्गन्यासादिकं कृत्वा जपं वक्ष्यमाणमन्त्रेण श्रीदेव्यै समर्प्याचम्य मण्डलस्थ तीर्थं विसर्जनमुद्रया सूर्ये विसृजेत्।

अथ सपर्यासाधनानि सम्पाद्य ब्रह्मयज्ञादि निर्वर्तयेद्। इति शिवम्॥

प्रथममाह्निकप्रकरणं समाप्तम्

श्रीविद्यासपर्या-प्रकरणम्

ॐ श्रीगुरुभ्यो नमः ।

ॐ श्रीमहागणपतये नमः ।

ॐ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः ।

ब्रह्मविद्यासम्प्रदायगुरुस्तोत्रम्

आब्रह्मलोकादाशेषादालोकालोकपर्वतात् ।
ये वसन्ति द्विजा देवास्तेभ्यो नित्यं नमाम्यहम् ॥

ॐ नमो ब्रह्मादिभ्यो ब्रह्मविद्यासम्प्रदायकर्तृभ्यो वंशर्षिभ्यो नमो गुरुभ्यः, सर्वोपप्लवरहितप्रज्ञानघनप्रत्यगर्थो ब्रह्माहमस्मि, सोहमस्मि, ब्रह्माहमस्मि ॥

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं
सिद्धौघं बटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम् ।
वीरान्द्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकं,
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥

गुरुर्ब्रह्मा गुरुर्विष्णुर्गुरुर्देवो महेश्वरः ।
गुरुः साक्षात्परं ब्रह्म तस्मै श्रीगुरवे नमः ॥

वन्दे गुरुपदद्वन्द्वमवाङ्मनसगोचरम् ।
रक्तशुक्लप्रभामिश्रमतर्क्यं त्रैपुरं महः ॥

नारायणं पद्मभुवं वसिष्ठं, शक्तिं च तत्पुत्रपराशरञ्च ।
व्यासं शुकं गौडपदं महान्तं, गोविन्दयोगीन्द्रमथास्य शिष्यम् ॥
श्रीशङ्कराचार्यमथास्य पद्मपादं च हस्तामलकञ्च शिष्यम् ।
तं तोटकं वार्तिककारमन्यानस्मद्गुरून् सन्ततमानतोऽस्मि ॥

यागमन्दिर-प्रवेशः

ऐं ह्रीं श्रीं भं भद्रकाल्यै नमः। (द्वारस्य दक्षशाखायां)
३ भं भैरवाय नमः। (,, वामशाखायां)
३ लं लम्बोदराय नमः। (,, ऊर्ध्वशाखायां)

(इति द्वारदेवताः सम्पूज्य)।

तत्त्वाचमनम्

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं कएईलह्रीं आत्मतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।
३ क्लीं हसकहलह्रीं विद्यातत्त्वं शोधयामि स्वाहा।
३ सौः सकलह्रीं शिवतत्त्वं शोधयामि स्वाहा।
३ ऐं कएईलह्रीं क्लीं हसकहलह्रीं सौः सकलह्रीं सर्वतत्त्वं शोधयामि स्वाहा॥

गुरुपादुकामन्त्र

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, हंसः शिवः सोहं, ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हसः शिवः सोहं स्वरूपनिरूपणहेतवे श्रीगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, सोहं हंसः शिवः, ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः सोहं हंसः शिवः स्वच्छप्रकाशविमर्शहेतवे श्रीपरमगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, हंसः शिवः सोहं हंसः, ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः हसः शिवः सोहं हंसः स्वात्मारामपञ्जरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठिगुरवे नमः, अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः॥

इति मृगीमुद्रया गुरुपादुकामुच्चार्य, सुमुख-सुवृत्त-चतुरस्रमुद्गर-योन्याख्याभिः पञ्चमुद्राभिः श्रीगुरून् वामभुजे प्रणम्य, गणपतिमूलेन स्वदक्षभुजे योनिमुद्रया महागणपतिं प्रणमेत्॥

घण्टापूजा

हे घण्टे सुस्वरे पीठे घण्टाध्वनिविभूषिते ।
वादयन्ति परानन्दे घण्टादेवं प्रपूजयेत् ॥
आगमार्थं च देवाना गमनार्थं तु रक्षसाम् ।
कुर्यात् घण्टारव तत्र देवताह्वानलाञ्छनम् ॥
(इति घण्टानाद कृत्वा) ॥

सङ्कल्पः

शुक्लाम्बरधर विष्णु शशिवर्णं चतुर्भुजम् ।
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये ॥
मूलेन प्राणानायम्य । देशकालौ सकीर्त्य—

मम श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीप्रीत्यर्थं यथासम्भवद्रव्यै यथाशक्ति सपर्याक्रम निर्वर्तयिष्ये, तेन परमेश्वर प्रीणयामि ॥

आत्मान-अलङ्कृत्य ताम्बूलेन सुरभिलवदन सन् प्रमुदितचित्त' शिवोऽहं इति भावयेत् ॥

आसनपूजा

(आसनमास्तीर्य दक्षिणहस्ते जलमादाय "सौ" इति द्वादशवारमभिमन्त्र्य तज्जलेन मूलमन्त्रेण आसन प्रोक्षयेत्) ॥

अस्य श्री आसनमहामन्त्रस्य—पृथिव्या' मेरुपृष्ठ ऋषि , सुतल छन्द , कूर्मो देवता, आसने विनियोग ॥

पृथ्वि त्वया धृता लोका देवि त्व विष्णुना धृता ।
त्व च धारय मा देवि पवित्र कुरु चासनम् ॥
योगासनाय नम , वीरासनाय नम , शरासनाय नम ।
ऐं ह्रीं श्री ॐ ह्रीं आधारशक्तिकमलासनाय नम ॥
(इति पुष्पाक्षतै आसनमभ्यर्च्य आसने-उपविशेत्) ॥
ऐं ह्रीं श्री रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय द्वीपनाथाय नम ।
(इति भूमौ पुष्पाञ्जलि विकिरेत्) ॥

देहरक्षा

ऐं ह्रीं श्रीं श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष—
(इति देहे त्रिः व्यापकं कृत्वा।) ॥

गुं गुरुभ्यो नमः । (दक्षबाहौ)
गं गणपतये नमः । (वामबाहौ)
दुं दुर्गायै नमः । (दक्षोरौ)
वं वटुकाय नमः । (वामोरौ)
यां योगिनीभ्यो नमः । (नाभौ)
क्षं क्षेत्रपालाय नमः । (नाभौ)
पं परमात्मने नमः । (हृदये)

३ ॐ नमो भगवति तिरस्करिणि महामाये महानिद्रे सकलपशुजनमनश्चक्षुः श्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा ॥

३ हसन्ति हसितालापे मातङ्गिपरिचारिके मम भयविघ्नापदां नाशं कुरु कुरु ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा ॥

३ ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं रं रं रं रं रं रं रं हुं फट् स्वाहा—(इति परितोवह्निप्राकारं विभाव्य) भूर्भुवस्स्वरों, इति दिग्बन्धः ॥

परमामृतवर्षेण प्लावयन्तं चराचरम् ।
सञ्चिन्त्य परमद्वैतभावनाऽमृतसेवया ॥
मोदमानो विस्मृतान्यविकल्पविभवभ्रमः ।
चिदम्बुधिमहाभङ्गच्छिन्नसङ्कोचसङ्कटः ॥

(इति—कुण्डलिनीमुत्थाप्य—शरीरममृतेनाप्लावितं विभाव्य ।)

३ समस्तप्रकट गुप्त-गुप्ततर-सम्प्रदाय कुलोत्तीर्ण निगर्भ रहस्यातिरहस्यपरापरातिरहस्ययोगिनीदेवताभ्यो नमः ॥ (इति यन्त्रे पुष्पाञ्जलिं दत्वा) ॥

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं ह्रः अस्त्राय फट्—इति अस्त्रमन्त्रेण मुहुरावृत्तेन अङ्गुष्ठादि-
कनिष्ठिकान्तं करतलयोः कूर्परयोः देहे च व्यापकं कुर्यात् ॥

३ श्रीगुरो दक्षिणामूर्ते भक्तानुग्रहकारक ।
अनुज्ञां देहि भगवन् श्रीचक्रयजनाय मे ॥
३ अतिक्रूर महाकाय कल्पान्तदहनोपम ।
भैरवाय नमस्तुभ्यमनुज्ञां दातुमर्हसि ॥

लघुप्राणप्रतिष्ठा

३ आं ह्रीं क्रों यं रं लं वं शं षं सं हं ॐ हंसः सोहं, सोहं हंसः
शिवः, श्रीचक्रस्य प्राणा इह प्राणाः ॥

३ आं ह्रीं क्रों श्रीचक्रस्य जीव इह स्थितः । सर्वेन्द्रियाणि वाङ्मनश्चक्षुः-
श्रोत्रजिह्वाघ्राणा इहैवागत्य अस्मिन् चक्रे सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा ॥

३ ॐ असुनीते पुनरस्मासु चक्षुः पुनः प्राणमिह नो धेहि भोगम् ।
ज्योक्पश्येम सूर्यमुच्चरन्तमनुमते मृडया नस्स्वस्ति ॥

मन्दिरपूजा

ऐं ह्रीं श्रीं अमृताम्भोनिधये नमः
३ रत्नद्वीपाय नमः
३ नानावृक्षमहोद्यानाय नमः
३ कल्पवाटिकायै नमः
३ सन्तानवाटिकायै नमः
३ हरिचन्दनवाटिकायै नमः
३ मन्दारवाटिकायै नमः
३ पारिजातवाटिकायै नमः
३ कदम्बवाटिकायै नमः
३ पुष्परागरत्नप्राकाराय नमः
३ पद्मरागरत्नप्राकाराय नमः
३ गोमेधकरत्नप्राकाराय नमः
३ वज्ररत्नप्राकाराय नमः
३ वैडूर्यरत्नप्राकाराय नमः
३ इन्द्रनीलरत्नप्राकाराय नमः
३ मुक्तारत्नप्राकाराय नमः
३ मरकतरत्नप्राकाराय नमः
३ विद्रुमरत्नप्राकाराय नमः
३ माणिक्यमण्डपाय नमः
३ सहस्रस्तम्भमण्डपाय नमः
३ अमृतवापिकायै नमः
३ आनन्दवापिकायै नमः
३ विमर्शवापिकायै नमः
३ बालातपोद्गाराय नमः

३ चन्द्रिकोद्गाराय नमः
३ महाशृङ्गारपरिघायै नमः
३ महापद्माटव्यै नमः
३ चिन्तामणिमयगृहराजाय नमः
३ पूर्वाम्नायमयपूर्वद्वाराय नमः
३ दक्षिणाम्नायमयदक्षिण-द्वाराय नमः
३ पश्चिमाम्नायमयपश्चिम-द्वाराय नमः
३ उत्तराम्नायमयोत्तरद्वाराय नमः
३ रत्नप्रदीपवलयाय नमः
३ मणिमयमहासिंहासनाय नमः
३ ब्रह्ममयैकमञ्चपादाय नमः
३ विष्णुमयैकमञ्चपादाय नमः
३ रुद्रमयैकमञ्चपादाय नमः
३ ईश्वरमयैकमञ्चपादाय नमः
३ सदाशिवमयैकमञ्चफलकाय नमः
३ हंसतूलिकातल्पाय नमः
३ हंसतूलिकामहोपधानाय नमः
३ कौसुम्भास्तरणाय नमः
३ महावितानकाय नमः
३ महामायायवनिकायै नमः

इति चतुश्चत्वारिंशन्मन्दिरमन्त्रैः तत्तदखिलं भावयन्कुसुमाक्षतैरभ्यर्चयेत् ।

दीपपूजा

स्वदक्षभागे गन्धपुष्पाक्षतादीन्निधाय दीपानभितः प्रज्वाल्य ॥

घृतदीपो दक्षिणे स्यात्तैलदीपस्तु वामतः ।
सितवर्तियुतो दक्षे रक्तवर्तिस्तु वामतः ॥

(दक्षवामभागौ देव्या एव)

ऐं ह्रीं श्रीं दीपदेवि महादेवि शुभं भवतु मे सदा ।
यावत्पूजासमाप्तिः स्यात्तावत्प्रज्वल सुस्थिरा ॥

(इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात्) ॥

(मूलेन चक्रमध्ये पुष्पाञ्जलिं विकीर्य, मूलत्रिखण्डेन स्वाग्रवामदक्षकोणेषु पुष्पाञ्जलीन्दद्यात्) ॥

भूतशुद्धिः

यथा—सुषुम्ना वर्त्मना वायुमाकृष्य 'हुं' बीजेन मूलाधारस्थपद्मस्थित त्रिकोणस्थितज्योतिर्मयलिङ्गं परिवेष्ट्य स्थितां सार्धत्रिवलयां कुण्डलिनीं विद्युत्पुञ्जपिञ्जरां विवस्वदयुतभास्वत्प्रकाशां परंगतसुधामयूखशीतलां तेजस्वरूपामुत्थाप्य 'जीवशिव परमशिवे मयोजयामि स्वाहा' इति मन्त्रेण दीपकलिकाकारं हृदिस्थं जीवं कुण्डलिनीमुखेन ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा परमशिवेनैकीभूतं हंसं सोऽहमिति भावयन् वायुमिडया रेचयेत् ।

ततो वामकुक्षिस्थितं पापपुरुषमङ्गुष्ठपरिमाणकं विप्रहत्याशिरोयुक्तं कनकस्तेयबाहुकं मदिरापानहृदयं गुरुतल्पकटीयुक्तं तत्संयोगिपदद्वन्द्वमुपपातकरोमकं खड्गचर्मधरं दुष्टमधोवक्त्रं विचिन्तयेत् ।

ततो "यं य" इति वायुबीजं स्मरन् वायुं पिङ्गलयापूर्येन शोषयेत् । ततो "रं र" इति वह्निबीजेन पूरकापेक्षया द्विगुणितकालं कुम्भकं विधाय पापपुरुषं 'य' इति वायुबीजं ततोऽप्यधिककालं जपित्वेडया तद्भस्म रेचकेन बहिर्निष्कासयेत् । ब्रह्मरन्ध्रगते चन्द्रमण्डलेऽमृतवर्षिणीं भवानीं भूमिशुद्धयर्थं भावयेत् । ततस्तन्मौलिनि स्यन्दसुधाकल्लोलवृष्टिभिश्चिन्तयेन्मनसाऽऽत्मानम् । इयं भूमिशुद्धिः ।

ततश्च स्वशिरसि कामेश्वरीकामेश्वरयोः रक्तशुक्लचरणन्यासं भावयित्वा तदमृतक्षरणेन सबाह्याभ्यन्तरमात्मानं भावयेदिति भूशुद्धिः ।

अत्र केचिद्वदन्ति—मातृकां प्रणवं भूतानि च ब्रह्मरन्ध्रे प्रविलाप्य सच्चिन्मयो भूत्वा पापपुरुषं चिन्तयेत् । पापपुरुषोत्थं भस्म 'वं' इति सुधाबीजेन सम्प्लावयेत् । लं लं इति भूबीजेन तद्भस्म कनकाण्डवद् घनीभावमापाद्य विशुद्धमुकुराकारं ब्रह्मरन्ध्रगतं तत्स्मरेत् । आकाशादीनि भूतानि पुनरुत्पादयेत् । ततोऽखण्डं ब्रह्म, तस्मात्तत्प्रेरकः पुरुषः, ततः प्रकृतिः, प्रकृतेर्महान्, ततोऽहङ्कारः, ततोऽहं त्रिगुणात्मकः, तत आकाशः, आकाशाद्वायुः, वायोस्तेजः, तेजसो जलम्, जलात्पृथ्वी, पृथ्व्या ओषधयः,

ओषधीभ्योऽन्नम्, अन्नाद्रेत., रेतस. पुरुष , पुरुषोऽन्नरसमय हंस. सोऽहमिति-कुण्डलिनी जीवमादाय परमङ्गलसुधामयी सस्थाप्य हृदयाम्भोजे मूलाधार-गता स्मरेदिति ।

यद्यन्तु पापपुरुषोत्थभस्मनस्सकाशादप्रामाणिकतमोमहदाद्युत्पत्यपेक्षया पापपुरुषदाहोत्थ भस्म पार्थिवप्रपञ्चेन साक पृथिव्या प्रविलीयते, पृथिव्या-दिक क्रमेण ब्रह्मणि प्रविलीयते, ततस्तमोमहदादीनामुत्पत्तिरिति युक्त पश्यामः, अत्र श्रुतिस्मृतिप्रमाणबहुलस्योपलब्धे ।

मन्त्रमहार्णवरीत्या तु—स्वशरीरयुत पाप 'र' इति वह्निबीजेन कुम्भके दहेत्, ततो रेचके स्वशरीरात् पापोत्थ भस्म वह्निर्निष्कासयेत् । ततो देहोत्थ भस्म 'व' इति सुधाबीजेन सम्प्लाव्य 'ल' बीजेन घनीभूतं पिण्ड कृत्वा कन-काण्डवद्भावयेत् । ततो मूर्धादिनखान्ता देहावयवा. मनसा रचनीया इति ।

वस्तुतस्तु देहोत्थभस्मपिण्ड पृथिव्या पृथिव्यादिकं सर्वं जगद् ब्रह्मणि विलाप्य ततो महदादिक्रमेण पञ्च भूतानि समुत्पाद्य ततो दिव्यदेह रचयेदि-त्येव शोभनम् । अत एवेडया ल वं र यं हं इति पञ्च भूतबीजानि स्मरन् हंसः सोऽहमिति च स्मरन् उपसहारक्रमेण मातृका भूतानि प्रणवे ब्रह्मणि विलापयेत् । तद्यथा—सकार हकारे, हकार सकारे, सकार षकारे, षकार शकारे, शकार वकारे, वकारम् अ कारे, अकार अकारे, अकार अकारे अकार ब्रह्मरन्ध्रे प्रणवात्मके ब्रह्मणि प्रविलापयेत् ।

भूतोपसंहारः

पादादिजानुपर्यन्त चतुष्कोण लं बीजाढ्य स्वर्णवर्णं स्मरेदवनिमण्डलम् । जान्वोरुपरि नाभिपर्यन्त चन्द्रार्धनिभ पद्मद्वयाकृति व बीजयुक्त श्वेताभ म सोममण्डल स्मरेत् । नाभेर्हृदयपर्यन्त त्रिकोण स्वस्तिकासन रं बीजेन युतं रक्तं स्मरेत् पावकमण्डलम् । हृदो भ्रूमध्यपर्यन्त वृत्त षट्बिन्दुलाञ्छितं य बीजयुक्त धूम्राभ वायव्य मण्डल स्मरेत् । आब्रह्मरन्ध्र भ्रूमध्याद्वृत्त स्वच्छ मनोहरं ह बीजयुक्तमाकाशमण्डलञ्च विचिन्तयेत् । एवं भूतानि विचिन्त्य

प्रत्येकं स्वकारणे प्रविलापयेत्—भुवं जले, जलं वह्नौ, वह्निं वायौ, वायुं नभसि, अमुम् अहङ्कारे, महत्तत्वेऽप्यहङ्कृतं, महान्तं प्रकृतौ, मायामात्मनि च प्रविलापयेत्।

पुनश्च वमित्यमृतबीजेनेडया वायुमापूर्य तस्मादेव ब्रह्मणस्तमोमहदादिक्रमेण भूतान्युत्पाद्य तैर्दिव्यमुपासनोपयोगि देहमुत्पादयेत्। तथा हि—ब्रह्मणोऽव्यक्तं, ततो महान्, महतोऽहंकारः, तत आकाशः, ततो वायुः, वायोरग्निः, अग्नेरापः, ततो भूः इति दिव्यैः पञ्चभूतैर्दिव्यभावनया दिव्यदेहोत्पत्तिं भावयेत्। ततः कुण्डलिनीं ब्रह्मरन्ध्रादवतार्य हृदयाम्भोजे जीवं निधाय मूलाधारस्थितां कुण्डलिनीं विभावयेदिति भूतशुद्धिः।

आत्मप्राणप्रतिष्ठा

(अथ हृदि हस्तं दत्वा) ॐ आं ह्रीं क्रों मम सर्वेन्द्रियाणि, ॐ आं ह्रीं क्रों मम वाङ्मनस्त्वक्चक्षुःश्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा।

ततो मम गर्भाधानादिपञ्चदशसंस्कारसिद्ध्यर्थं पञ्चदशामुकमन्त्रावृत्तीः करिष्ये (इति सङ्कल्प्य) पञ्चदशवारं प्रणवं स्वेष्टं मन्त्रं वा आवर्तयेत्।

रक्ताम्भोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः
पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमथगुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणान्।
बिभ्राणाऽसृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा नः॥
(इति प्राणप्रतिष्ठा)

(नित्योत्सवरीत्या भूतशुद्धिः) पाञ्चभौतिकं सङ्कोचशरीरमेव यमिति वायुबीजेन शोषितं विभाव्य, रं बीजेन प्लुष्टं भस्मीकृतं विभाव्य, वमित्यमृतबीजेन तद्भस्म सहस्रारेन्दुमण्डलविगलदमृतरसेन सिक्तं विभाव्य लमिति भूबीजेन तद्भस्मना शाम्भवं दिव्यं शरीरमुत्पन्नं विभाव्य हंसः सोऽहम् इति शिवपदाज्जीवमवतार्य मूलाधारे स्थापितं भावयेत्। तस्मिन्नेव आं सोऽहमिति त्रिःपठित्वा प्राणप्रतिष्ठां कुर्यात्।

मूलेन षोडशधा दशधा त्रिधा वा प्राणानायच्छेत्।

६ खं	,,	(दक्षकूर्परे)	६ तं	,,	(वामोरुमूले)
६ गं	,,	(दक्षमणिवन्धे)	६ थं	,,	(वामजानुनि)
६ घं	,,	(दक्षकराङ्गुलिमूले)	६ दं	,,	(वामगुल्फे)
६ ङं	,,	(दक्षकराङ्गुल्यग्रे)	६ धं	,,	(वामपादाङ्गुलिमूले)
६ चं	,,	(वामवाहुमूले)	६ नं	,,	(वामपादाङ्गुल्यग्रे)
६ छं	,,	(वामकूर्परे)	६ पं	,,	(दक्षपार्श्वे)
६ जं	,,	(वाममणिवन्धे)	६ फं	,,	(वामपार्श्वे)
६ झं	,,	(वामकराङ्गुलिमूले)	६ वं	,,	(पृष्ठे)
६ ञं	,,	(वामकराङ्गुल्यग्रे)	६ भं	,,	(नाभौ)
६ टं	,,	(दक्षोरुमूले)	६ मं	,,	(जठरे)
६ ठं	,,	(दक्षजानुनि)	६ यं	,,	(हृदये)
६ डं	,,	(दक्षगुल्फे)	६ रं	,,	(दक्षकक्षे)
६ ढं	,,	(दक्षपादाङ्गुलिमूले)	६ लं	,,	(गलपृष्ठे)
६ णं	,,	(दक्षपादाङ्गुल्यग्रे)	६ वं	,,	(वामकक्षे)

६ शं	नमः	(हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं)
६ षं	,,	(हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं)
६ सं	,,	(हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं)
६ हं	,,	(हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं)
६ ळं	,,	(कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं)
६ क्षं	,,	(कट्यादिब्रह्मरन्ध्रान्तं)

करशुद्धिन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं अं नमः (दक्षकरतले)	३ आ नमः (तत्पृष्ठे)
३ आं नमः (तत्पृष्ठे)	३ सौः नमः (तत्पार्श्वयोः)
३ सौः नमः (तत्पार्श्वयोः)	३ अं नमः (मध्यमयोः)
३ अं नमः (वामकरतले)	३ आ नमः (अनामिकयोः)

३ सौ नम (कनिष्ठिकयो) ३ आ नम (तर्जन्यो)
३ अं नम (अङ्गुष्ठयो) ३ सौ नम॰ (करतलकरपृष्ठयो)

आत्मरक्षान्यासः

३ ऐं क्लीं सौ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि आत्मान रक्ष रक्ष (इत्यञ्जलिं हृदये दद्यात्)॥

बालाषडङ्गन्यासः

३ ऐं हृदयाय नम ३ ऐं कवचाय हु
३ क्लीं शिरसे स्वाहा ३ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्
३ सौ शिखायै वषट् ३ सौ अस्त्राय फट्

चतुरासनन्यासः

३ ह्रीं क्लीं सौ देव्यात्मासनाय नम (पादयो)
३ हैं हृक्लीं हृसौ॰ श्रीचक्रासनाय नम (जान्वो)
३ हृसैं हृस्क्लीं हृस्सौ सर्वमन्त्रासनाय नम॰ (ऊरुमूले)
३ ह्रीं क्लीं ब्लें साध्यसिद्धासनाय नम (मूलाधारे)

वाग्देवतान्यासः

३ अ आ + + अ र्ब्लूं वशिनीवाग्देवतायै नम (शिरसि)
३ कं ख गं घं ङ क्ल्ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नम (ललाटे)
३ च छं ज झ ञ न्व्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नम (भ्रूमध्ये)
३ टं ठं डं ढ ण य्लूं विमलावाग्देवतायै नम (कण्ठे)
३ त थ द ध न ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नम (हृदये)
३ प फं ब भ म हस्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै नम (नाभौ)
३ य रं ल व झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नम (गुह्ये)
३ श ष स ह ळ क्ष क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै नम (मूलाधारे)

बहिश्चक्रन्यासः

३ अ आ सौ चतुरस्रत्रयात्मकत्रैलोक्यमोहनचक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टाविंशतिशक्तिसहितप्रकटयोगिनीरूपायै त्रिपुरादेव्यै नम (पादयो)

'ऐं ह्रीं श्रीं' अपसर्पन्तु ते भूताः ये भूताः भुवि संस्थिताः ।
ये भूताः विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

इत्युच्चार्य युगपद्वामपार्ष्णिभूतलाघातत्रय-करास्फोटनत्रय-क्रूरदृष्ट्यवलोकन-तालत्रयेण भौमान्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासकान् विघ्नानुत्सारयेत् । अथ 'नमः' इत्यङ्गुष्ठमन्त्रमुच्चारयन् अङ्कुशेन शिखां बद्ध्वा श्रीदेवीरूपं भावयन्नात्मानं स्वदेहे न्यासजालात्मकं वज्रकवचं विदधीत ।

मातृकान्यासः

अस्य श्रीमातृकासरस्वतीन्यासमहामन्त्रस्य ब्रह्मणे ऋषये नमः शिरसि, गायत्री छन्दसे नमः मुखे, श्रीमातृकासरस्वती देवतायैः नमः हृदि, हल्भ्यो बीजेभ्यो नमः गुह्ये, स्वरेभ्यः शक्तिभ्यो नमः पादयोः, बिन्दुभ्यः कीलकेभ्यो नमः नाभौ, मम श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगाय नमः करसम्पुटे ॥

सर्वमातृकया सर्वाङ्गे अञ्जलिना त्रिर्व्यापकं कुर्यात् ॥

६	अं कं खं गं घं ङं आं	अङ्गुष्ठाभ्यां नमः
६	इं चं छं जं झं ञं ईं	तर्जनीभ्यां नमः
६	उं टं ठं डं ढं णं ऊं	मध्यमाभ्यां नमः
६	एं तं थं दं धं नं ऐं	अनामिकाभ्यां नमः
६	ओं पं फं बं भं मं औं	कनिष्ठिकाभ्यां नमः
६	अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः	करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः

एवं हृदयादिन्यासः । भूर्भुवस्स्वरोम् इति दिग्बन्धः ॥

ध्यानम्

पञ्चाशद्वर्णभेदैर्विहितवदनदोःपादयुक्कुक्षिवक्षो-
देशां भास्वत्कपर्दाकलितशशिकलामिन्दुकुन्दावदाताम् ।
अक्षस्रक्कुम्भचिन्तालिखितवरकरां त्रीक्षणामब्जसंस्था-
मच्छाकल्पामतुच्छस्तनजघनभरां भारती तां नमामि ॥

लमित्यादि पञ्चपूजां कृत्वा ।

मातृका त्रितारीबालापूर्विका स्वाङ्गेषु न्यसेत् ।

अन्तर्मातृका

६ अं नमः, आं नमः ++ अः नमः ॥
षष्ठे विशुद्धिचक्रे षोडशदलकमले ॥
६ कं नमः, खं नमः ++ ठं नमः ॥
हृदये अनाहते द्वादशदलकमले ॥
६ डं नमः, ढं नमः ++ फं नमः ॥
नाभौ मणिपूरे दशदलकमले ॥
६ बं नमः, भं नमः ++ लं नमः ॥
लिङ्गमूले स्वाधिष्ठाने षड्दलकमले ॥
६ वं नमः, शं नमः षं नमः सं नमः ॥
गुदोपरि मूलाधारे चतुर्दलकमले ॥
६ हं नमः, क्षं नमः ॥ भ्रुवोर्मध्ये आज्ञाचक्रे द्विदले ॥
६ अं नमः, आं नमः ++ क्षं नमः ॥
(५० वर्णाः) मूर्ध्नि सहस्रारे ॥

बहिर्मातृका

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः
अं नमः (शिरसि)
६ आं ,, (मुखवृत्ते)
६ इं ,, (दक्षनेत्रे)
६ ईं ,, (वामनेत्रे)
६ उं ,, (दक्षकर्णे)
६ ऊं ,, (वामकर्णे)
६ ऋं ,, (दक्षनासापुटे)
६ ॠं ,, (वामनासापुटे)
६ ऌं ,, (दक्षकपोले)
६ ॡं ,, (वामकपोले)
६ एं ,, (ऊर्ध्वोष्ठे)
६ ऐं ,, (अधरोष्ठे)
६ ओं ,, (ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ)
६ औं ,, (अधोदन्तपङ्क्तौ)
६ अं ,, (जिह्वाग्रे)
६ अः ,, (कण्ठे)
६ कं ,, (दक्षबाहुमूले)

६ खं ,, (दक्षकूर्परे) ६ तं ,, (वामोरुमूले)
६ गं ,, (दक्षमणिबन्धे) ६ थं ,, (वामजानुनि)
६ घं ,, (दक्षकराङ्गुलिमूले) ६ दं ,, (वामगुल्फे)
६ ङं ,, (दक्षकराङ्गुल्यग्रे) ६ धं ,, (वामपादाङ्गुलिमूले)
६ चं ,, (वामबाहुमूले) ६ नं ,, (वामपादाङ्गुल्यग्रे)
६ छं ,, (वामकूर्परे) ६ पं ,, (दक्षपार्श्वे)
६ जं ,, (वाममणिबन्धे) ६ फं ,, (वामपार्श्वे)
६ झं ,, (वामकराङ्गुलिमूले) ६ बं ,, (पृष्ठे)
६ ञं ,, (वामकराङ्गुल्यग्रे) ६ भं ,, (नाभौ)
६ टं ,, (दक्षोरुमूले) ६ मं ,, (जठरे)
६ ठं ,, (दक्षजानुनि) ६ यं ,, (हृदये)
६ डं ,, (दक्षगुल्फे) ६ रं ,, (दक्षकक्षे)
६ ढं ,, (दक्षपादाङ्गुलिमूले) ६ लं ,, (गलपृष्ठे)
६ णं ,, (दक्षपादाङ्गुल्यग्रे) ६ वं ,, (वामकक्षे)

६ शं नमः (हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तं)
६ षं ,, (हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तं)
६ सं ,, (हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तं)
६ हं ,, (हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तं)
६ ळं ,, (कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं)
६ क्षं ,, (कट्यादिब्रह्मरन्ध्रान्तं)

करशुद्धिन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं अं नमः (दक्षकरतले) ३ आं नमः (तत्पृष्ठे)
३ आं नमः (तत्पृष्ठे) ३ सौः नमः (तत्पार्श्वयोः)
३ सौः नमः (तत्पार्श्वयोः) ३ अं नमः (मध्यमयोः)
३ अं नमः (वामकरतले) ३ आ नमः (अनामिकयोः)

३ सौः नमः (कनिष्ठिकयोः) ३ आं नमः (तर्जन्योः)
३ अं नमः (अङ्गुष्ठयोः) ३ सौः नमः (करतलकरपृष्ठयोः)

आत्मरक्षान्यासः

३ ऐं क्लीं सौः श्रीमहात्रिपुरसुन्दरि आत्मानं रक्ष रक्ष (इत्यञ्जलिं हृदये दद्यात्)।।

बालाषडङ्गन्यासः

३ ऐं हृदयाय नमः ३ ऐं कवचाय हुं
३ क्लीं शिरसे स्वाहा ३ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट्
३ सौः शिखायै वषट् ३ सौः अस्त्राय फट्

चतुरासनन्यासः

३ ह्रीं क्लीं सौः देव्यात्मासनाय नमः (पादयोः)
३ हैं हृक्लीं हसौः श्रीचक्रासनाय नमः (जान्वोः)
३ हसैं हस्क्लीं हस्सौः सर्वमन्त्रासनाय नमः (ऊरुमूले)
३ ह्रीं क्लीं ब्लें साध्यसिद्धासनाय नमः (मूलाधारे)

वाग्देवतान्यासः

३ अं आ + + अः र्ब्लूं वशिनीवाग्देवतायै नमः (शिरसि)
३ कं खं गं घं ङं क्ल्ह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः (ललाटे)
३ चं छं जं झं ञं न्व्लीं मोदिनीवाग्देवतायै नमः (भ्रूमध्ये)
३ टं ठं डं ढं णं ब्लूं विमलावाग्देवतायै नमः (कण्ठे)
३ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमः (हृदये)
३ पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै नमः (नाभौ)
३ यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः (गुह्ये)
३ शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः (मूलाधारे)

बहिश्चक्रन्यासः

३, अं आ सौः चतुरस्रत्रयात्मकत्रैलोक्यमोहनचक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टाविंशतिशक्तिसहितप्रकटयोगिनीरूपायै त्रिपुरादेव्यै नमः (पादयोः)

३ ऐं क्लीं सौः षोडशदलपद्मात्मकसर्वाशापरिपूरकचक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षिण्यादिषोडशशक्तिसहित-गुप्तयोगिनीरूपायै त्रिपुरेश्वरीदेव्यै नमः (जान्वोः)

३ ह्रीं क्लीं सौः अष्टदलपद्मात्मकसर्वसंक्षोभणचक्राधिष्ठात्र्यै अनङ्गकुसुमाद्यष्टशक्तिसहित–गुप्ततरयोगिनीरूपायै त्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः (ऊरुमूलयोः)

३ हैं ह्क्लीं ह्सौः चतुर्दशारात्मकसर्वसौभाग्यदायकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशशक्तिसहितसम्प्रदाययोगिनीरूपायै त्रिपुरवासिनीदेव्यै नमः (नाभौ)

३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः बहिर्दशारात्मकसर्वार्थसाधकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धिप्रदादिदशशक्तिसहितकुलोत्तीर्णयोगिनीरूपायै त्रिपुराश्रीदेव्यै नमः (हृदये)

३ ह्रीं क्लीं ब्लें अन्तर्दशारात्मकसर्वरक्षाकरचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वज्ञादिदशशक्तिसहित—निगर्भयोगिनीरूपायै त्रिपुरमालिनीदेव्यै नमः (कण्ठे)

३ ह्रीं श्रीं सौः अष्टारात्मकसर्वरोगहरचक्राधिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्टशक्तिसहित—रहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरासिद्धादेव्यै नमः (मुखे)

३ ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः त्रिकोणात्मकसर्वसिद्धिप्रदचक्राधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादित्रिशक्तिसहितातिरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुराम्बादेव्यै नमः (नेत्रयोः)

३ पञ्चदशी बिन्द्वात्मकसर्वानन्दमयचक्राधिष्ठात्र्यै षडङ्गायुधदशशक्तिसहित–परापरातिरहस्ययोगिनीरूपायै महात्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः (मूर्ध्नि) ॥

अन्तश्चक्रन्यासः

३ अं आं सौः चतुरस्रत्रयात्मकत्रैलोक्यमोहनचक्राधिष्ठात्र्यै अणिमाद्यष्टाविंशतिशक्तिसहितप्रकटयोगिनीरूपायै त्रिपुरादेव्यै नमः (अधःसहस्रारे)

३ ऐं क्लीं सौः षोडशदलपद्मात्मकसर्वाशापरिपूरकचक्राधिष्ठात्र्यै कामाकर्षिण्यादिषोडशशक्तिसहितगुप्तयोगिनीरूपायै त्रिपुरेश्वरीदेव्यै नमः (मूलाधारे)

३ ह्रीं क्लीं सौः अष्टदलपद्मात्मकसर्वसंक्षोभणचक्राधिष्ठात्र्यै अनङ्गकुसुमाद्यष्टशक्तिसहित–गुप्ततरयोगिनीरूपायै त्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः (स्वाधिष्ठाने)

३ हैं ह्क्ली ह्सौः चतुर्दशारात्मकसर्वसौभाग्यदायकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशशक्तिसहितसम्प्रदाययोगिनीरूपायै त्रिपुरवासिनीदेव्यै नमः (मणिपुरे)

३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः बहिर्दशारात्मकसर्वार्थसाधकचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वसिद्धिप्रदादिदशशक्तिसहितकुलोत्तीर्णयोगिनीरूपायै त्रिपुराश्रीदेव्यै नमः (अनाहते)

३ ह्रीं क्लीं ब्लें अन्तर्दशारात्मकसर्वरक्षाकरचक्राधिष्ठात्र्यै सर्वज्ञादिदशशक्तिसहित-निगर्भयोगिनीरूपायै त्रिपुरमालिनीदेव्यै नमः (विशुद्धौ)

३ ह्रीं श्रीं सौः अष्टारात्मकसर्वरोगहरचक्राधिष्ठात्र्यै वशिन्याद्यष्टशक्ति सहित—रहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुरासिद्धादेव्यै नमः (लम्बिकाग्रे)

३ ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः त्रिकोणात्मकसर्वसिद्धिप्रदचक्राधिष्ठात्र्यै कामेश्वर्यादित्रिशक्तिसहितातिरहस्ययोगिनीरूपायै त्रिपुराम्बादेव्यै नमः (आज्ञाचक्रे)

३ पञ्चदशी विन्द्वात्मकसर्वानन्दमयचक्राधिष्ठात्र्यै षडङ्गायुधदशशक्तिसहित-परापरातिरहस्ययोगिनीरूपायै महात्रिपुरसुन्दरीदेव्यै नमः (सहस्रारे)

पुनः आज्ञाचक्रस्य एकैकाङ्गुलोपरि देशे

अ आं सौः नमः (बिन्दौ)
ऐं क्लीं सौः नमः (अर्धचन्द्रे)
ह्रीं क्लीं सौः नमः (रोधिन्या)
हैं ह्क्लीं ह्सौः नमः (नादे)
ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः नमः (नादान्ते)
ह्रीं क्लीं ब्लें नमः (शक्तौ)
ह्रीं श्रीं सौः नमः (व्यापिकायां)
ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः नमः (समनायां)
पञ्चदशी नमः (उन्मनायां)
षोडशी नमः (ब्रह्मरन्ध्रे महाबिन्दौ)

कामेश्वर्यादिन्यासः

३ ए कएईलह्री अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथ-नव-योनिचक्रात्मक-आत्मतत्त्व सृष्टिकृत्य-जाग्रद्दशाधिष्ठायके-च्छाशक्ति-वाग्भवात्मक-वागीश्वरीस्वरुप-ब्रह्मात्मशक्तिश्रीपादुका पूजयामि नम । (मूलाधारे)

३ क्लीं हसकहलह्री सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीशनाथ दशारद्वय चतुर्दशारचक्रात्मक विद्यातत्त्व स्थितिकृत्य-स्वप्नदशाधिष्ठायक ज्ञानशक्ति-कामराजात्मक-कामकलास्वरूप - महावज्रेश्वरी - विष्ण्वात्मशक्तिश्रीपादुका पूजयामि नम । (अनाहते)

३ सौ सकलह्री सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथ-अष्टदल षोडशदल-चतुरस्रचक्रात्मक शिवतत्व-सहारकृत्य सुषुप्ति-दशाधिष्ठायक क्रियाशक्ति शक्तिबीजात्मक-परापरशक्ति-स्वरूप-महाभगमालिनी रुद्रात्मशक्तिश्री-पादुका पूजयामि नम । (आज्ञाया)

३ ऐं कएईलह्री क्लीं हसकहलह्री सौ सकलह्री परब्रह्मचक्रे महोड्याण पीठे चर्यानन्दनाथ समस्तचक्रात्मक-सपरिवार-परमतत्व-सृष्टिस्थिति-सहारकृत्य-तुरीयदशाधिष्ठायकेच्छा ज्ञानक्रियाशान्ताशक्ति वाग्भवकाम-राजशक्तिबीजात्मक-परमशक्तिस्वरूप-श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी-परब्रह्मात्म शक्ति-श्रीपादुका पूजयामि नम । (ब्रह्मरन्ध्रे)

मूलविद्यान्यासः

३ क॑ नम (शिरसि)
३ ए॑ नम (मूलाधारे)
३ ई॑ नम (हृदि)
३ ल नम (दक्षनेत्रे)
३ ह्री नम (वामनेत्रे)
३ ह नम (भ्रूमध्ये)
३ स॑ नम (दक्षश्रोत्रे)
३ क॑ नम (वामश्रोत्रे)
३ ह॑ नम (मुखे)
३ ल नम (दक्षभुजे)
३ ह्री नम (वामभुजे)
३ स नम (पृष्ठे)
३ क नम (दक्षजानुनि)
३ ल नम (वामजानुनि)
३ ह्री नम (नाभौ)

अथ ऋष्यादिषडङ्गन्यास यथोपदेश कुर्यात् ॥

षोडश्युपासकानां विशेषन्यासाः

श्रीषोडशाक्षरीन्यासः

३ 'मूल' नमः । दक्षमध्यमानामिकाभ्यां शिरसि न्यसेत् ।
तत्र तां दीपाभां स्ववल्लुवारसां महासौभाग्यदां ध्यात्वा—

३ 'मूल' नमः महासौभाग्यं मे देहि परसौभाग्यं दण्डयामि । (सौभाग्य दण्डिन्या मुद्रया वामवर्णवेष्टनपूर्वं आमस्तकचरणं वामाङ्गे न्यसेत्) ॥

३ 'मूल' नमः मम शत्रून्निगृह्णामि । (रिपुजिह्वाग्रया मुद्रया वामपादाधो न्यसेत्) ॥

३ 'मूल' नमः त्रैलोक्यस्याहं कर्ता । (त्रिखण्डया मुद्रया फाले न्यसेत्) ॥

३ 'मूल' नमः । (त्रिखण्डया मुद्रया मुखवेष्टनत्वेन न्यसेत्) ॥

३ 'मूल' नमः । (त्रिखण्डया मुद्रया दक्षकर्णादिवामकर्णान्तं मुखवेष्टनत्वेन न्यसेत्) ॥

३ 'ॐ मूल' नमः । (त्रिखण्डया गलोर्ध्वमामस्तकं न्यसेत्) ॥

३ 'ॐ मूल' ॐ नमः । (त्रिखण्ड्या मुद्रया मस्तकात् पादपर्यन्तं पादादा मस्तकञ्च न्यसेत्) ॥

३ 'मूल' नमः । (योनिमुद्रया मुखे न्यसेत्) ॥

३ 'मूल' नमः । (योनिमुद्रया ललाटे न्यसेत्) ॥

सम्मोहनन्यासः

३ 'मूल' । मूलविद्यां स्मृत्वा तत्प्रभया जगदरुणं विभावयन् अनामिकां मूर्ध्नि त्रिः परिभ्राम्य—

३ 'मूल' । (ब्रह्मरन्ध्रे अङ्गुष्ठानामिके न्यसेत्) ॥

३ 'मूल' । (मणिबन्धद्वये) „

३ 'मूल' । (फाले) „

३ 'मूल' । (रक्ततिलकं धारयेत्) ॥

श्रीमहाषोडशी-अक्षरन्यासः—

संहारन्यासः

अथ त्रितारीनमस्सम्पुटितान् मूलविद्याषोडशार्णान् क्रमेण पादयोः जङ्घयोः जान्वोः कटिभागद्वये पृष्ठे लिङ्गे नाभौ पार्श्वयोः स्तनयोरंसयोः कर्णयोः मूर्ध्नि मुखे नेत्रयोः कर्णयुगलसन्निधौ कर्णवेष्टनयोश्च न्यसेत्। (अत्र कूटत्रयस्य वर्णत्रयत्वेन षोडशार्णत्वव्यपदेशः)। पादादिषु प्रथमं दक्षः ततो वाम इति बोध्यम्। यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, श्रीं नमः पादयोः, ह्रीं नमः जङ्घयोः, क्लीं नमः जान्वोः, ऐं नमः कटिभागद्वये, सौः नमः पृष्ठे, ॐ नमः लिङ्गे, ह्रीं नमः नाभौ, श्रीं नमः पार्श्वयोः, क ए ई ल ह्रीं नमः स्तनयोः, हसकहलह्रीं नमः अंसयोः, सकलह्रीं नमः कर्णयोः, सौः नमः मूर्ध्नि, ऐं नमः मुखे, क्लीं नमः नेत्रयोः, ह्रीं नमः कर्णयुगसन्निधौ, श्रीं नमः कर्णवेष्टनयोः।

सृष्टिन्यासः

पुनस्तथैव मूलविद्यार्णान् क्रमेण ब्रह्मरन्ध्रे भाले दृशोः कर्णयोः घ्राणपुटयोः गण्डयोः दन्तपङ्क्त्योः ऊर्ध्वाधरोष्ठयोः जिह्वाया चोरकूपे पृष्ठे सर्वाङ्गे हृदि स्तनयोरुदरे लिङ्गे च न्यस्य मूलेन व्यापकं कुर्यात्। यथा—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, श्रीं नमः ब्रह्मरन्ध्रे, ह्रीं नमः फाले, क्लीं नमः नेत्रयोः ऐं नमः कर्णयोः, सौः नमः नासापुटयोः, ॐ नमः गण्डयोः, ह्रीं नमः दन्तपङ्क्तौ, श्रीं नमः ओष्ठयोः, क ए ई ल ह्रीं नमः जिह्वायाम्, ह स क ह ल ह्रीं नमः कण्ठे, सकलह्रीं नमः पृष्ठे, सौः नमः सर्वांगे, ऐं नमः हृदि, क्लीं नमः स्तनयोः, ह्रीं नमः उदरे, श्रीं नमः लिङ्गे। व्यापकम्।

स्थितिन्यासः

अथ पूर्वक्रमणेवाङ्गुष्ठादिकनिष्ठिकान्तकराङ्गुलिषु मूर्ध्नि मुखे हृदि आनाभेः पादद्वयावधि, कण्ठादानाभि मूर्ध्नि आकण्ठं पूर्ववत्पादाङ्गुलिषु च न्यसेत्। (अत्र दक्षवामकरचरणाङ्गुलिषु द्वयोर्द्वयोरेकैकमक्षरम्)। तथाहि—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, श्रीं नमः अङ्गुष्ठयोः, ह्रीं नमः तर्जन्योः, क्लीं नमः मध्यमयोः, ऐं नमः अनामिकयोः, सौः नमः कनिष्ठिकयोः ॐ नमः मूर्ध्नि,

ह्रीं नमः मुखे, श्री नमः हृदि, क ए ई ल ह्रीं नमः नाभौ, ह स क ह ल ह्रीं नमः कण्ठादिनाभ्यन्तम्, सकलह्रीं नमः मूर्धादिकण्ठान्तम्, सौः नमः पादाङ्गुष्ठयोः, ऐं नमः पादतर्जन्योः, क्लीं नमः पादमध्यमयोः ह्रीं नमः पादानामिकयोः, श्री नमः पादकनिष्ठिकयोः।

एते पञ्चैव ज्ञानार्णवमते। तन्त्रान्तरेषु तु अन्येऽपि पञ्चोपलभ्यन्ते।

एते पूर्वोक्तन्यासाः कर्तव्या एव, अन्येषामकरणे न प्रत्यवायः-करणे त्वभ्युदय एव।

लघुषोढान्यासः

अस्य श्रीलघुषोढान्यासस्य दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः, (शिरसि) गायत्र्यै छन्दसे नमः, (मुखे) गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिपीठरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः (हृदये) श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोगाय नमः (करसम्पुटे)।

ऐं ह्रीं श्रीं, अ कं खं गं घं ङं आं ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः

" " " ई चं छं जं झं ञं ई क्लीं तर्जनीभ्यां नमः

" " " उ टं ठं डं ढं णं ऊं सौः मध्यमाभ्यां नमः

" " " ए तं थं दं धं नं ऐं ऐं अनामिकाभ्यां नमः

" " " ओ पं फं बं भं मं औं क्लीं कनिष्ठिकाभ्यां नमः

" " " अं यं रं लं वं शं षं सं हं ळं क्षं अः सौः करतलकरपृष्ठाभ्यां नमः।

एवमेव हृदयादिन्यासः। ध्यानम्—

उद्यत्सूर्यसहस्राभां पीनोन्नतपयोधराम्।
रक्तमाल्याम्बरालेपां रक्तभूषणभूषिताम्॥
पाशाङ्कुशधनुर्बाणभास्वत्पाणिचतुष्टयाम्।
त्रिनेत्रत्रयां स्वर्णमुकुटोद्भासिमस्तकाम्॥
गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिरूपिणीम्।
देवीं पीठमयीं ध्यायेन्मातृकां सुन्दरीं पराम्॥

आयुधक्रमस्तु सपर्याप्रकरण एवोक्त इहानुसन्धेयः। इति श्रीदेवीं समष्टिरूपेण ध्यात्वा गणेशादिव्यष्टिरूपेण च ध्यायेत्।

गणेशन्यासः

तरुणादित्यसङ्काशान् गजवक्त्रांस्त्रिलोचनान् ।
पाशाङ्कुशवराभीतिकरान् शक्तिसमन्वितान् ॥
ते तु सिन्दूरवर्णाभा सर्वालङ्कारभूषिता ।
एकहस्तधृताम्भोजा इतरालिङ्गितप्रियाः ॥

वामोर्ध्वकरमारभ्य वामाध करपर्यन्तं गणेशाना पाशादिध्यानम् । शक्तीनान्तु वामकरे कमलं दक्षिणे च प्रियाश्लेष इति ध्यात्वा, मातृकास्थानेषु त्रितारीमातृकापूर्वकं गणेशान् न्यसेत् । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं, अं श्रीयुक्ताय विघ्नेशाय नमः शिरसि,
३ आं ह्रीयुक्ताय विघ्नराजाय नमः मुखवृत्ते,
३ इं तुष्टियुक्ताय विनायकाय नमः दक्षनेत्रे,
३ ईं शान्तियुक्ताय शिवोत्तमाय नमः वामनेत्रे,
३ उं पुष्टियुक्ताय विघ्नहृते नमः दक्षकर्णे,
३ ऊं सरस्वतीयुक्ताय विघ्नकर्त्रे नमः वामकर्णे,
३ ऋं रतियुक्ताय विघ्नराजे नमः दक्षनासापुटे,
३ ॠं मेधायुक्ताय गणनायकाय नमः वामनासापुटे,
३ लृं कान्तियुक्ताय एकदन्ताय नमः दक्षगण्डे,
३ ॡं कामिनीयुक्ताय द्विदन्ताय नमः वामगण्डे,
३ एं मोहिनीयुक्ताय गजवक्त्राय नमः ऊर्ध्वोष्ठे,
३ ऐं जटायुक्ताय निरञ्जनाय नमः अधरोष्ठे,
३ ओं तीव्रायुक्ताय कपर्दभृते नमः ऊर्ध्वदन्तपङ्क्तौ,
३ औं ज्वालिनीयुक्ताय दीर्घमुखाय नमः अधोदन्तपङ्क्तौ,
३ अं नन्दायुक्ताय शङ्कुकर्णाय नमः जिह्वाग्रे,
३ अः सुरसायुक्ताय वृषध्वजाय नमः कण्ठे,
३ कं कामरूपिणीयुक्ताय गणनाथाय नमः दक्षबाहुमूले,
३ खं सुभ्रूयुक्ताय गजेन्द्राय नमः दक्षकूर्परे,

३ ग जयिनीयुक्ताय शूर्पकर्णाय नमः दक्षमणिबन्धे,
३ घं सत्यायुक्ताय त्रिलोचनाय नमः दक्षकराङ्गुलिमूले,
३ ङ विघ्नेशीयुक्ताय लम्बोदराय नमः दक्षकराङ्गुल्यग्रे,
३ चं सुरूपायुक्ताय महानादाय नमः वामबाहुमूले,
३ छ कामदायुक्ताय चतुर्मूर्तये नमः वामकूर्परे,
३ ज मदविह्वलायुक्ताय सदाशिवाय नमः वाममणिबन्धे,
३ झ विकटायुक्ताय आमोदाय नमः वामकराङ्गुलिमूले,
३ ञं पूर्णायुक्ताय दुर्मुखाय नमः वामकराङ्गुल्यग्रे,
३ ट भूतिदायुक्ताय सुमुखाय नमः दक्षोरुमूले,
३ ठं भूमियुक्ताय प्रमोदाय नमः दक्षजानुनि,
३ डं शक्तियुक्ताय एकपादाय नमः दक्षगुल्फे,
३ ढ रमायुक्ताय द्विजिह्वाय नमः दक्षपादाङ्गुलिमूले,
३ ण मानुषीयुक्ताय शूराय नमः दक्षपादाङ्गुल्यग्रे,
३ त मकरध्वजायुक्ताय वीराय नमः वामोरुमूले,
३ थं वीरिणीयुक्ताय षण्मुखाय नमः वामजानुनि,
३ द भ्रुकुटीयुक्ताय वरदाय नमः वामगुल्फे,
३ ध लज्जायुक्ताय वामदेवाय नमः वामपादाङ्गुलिमूले,
३ नं दीर्घघोणायुक्ताय वक्रतुण्डाय नमः वामपादाङ्गुल्यग्रे,
३ प धनुर्धरायुक्ताय द्विरण्डकाय नमः दक्षपार्श्वे,

(नित्याषोडशिकार्णवे द्वितुण्डाय नमः)

३ फं यामिनीयुक्ताय सेनान्ये नमः वामपार्श्वे,
३ ब रात्रियुक्ताय ग्रामण्ये नमः पृष्ठे,
३ भ चन्द्रिकायुक्ताय मत्ताय नमः नाभौ
३ मं शशिप्रभायुक्ताय विमत्ताय नमः जठरे,
३ यं लोलायुक्ताय मत्तवाहनाय नमः हृदये,
३ र चपलायुक्ताय जटिने नमः दक्षस्कन्धे,

३ लं ऋद्धियुक्ताय मुण्डिने नमः गलपृष्ठे (ककुदि),
३ वं दुर्भगायुक्ताय खड्गिने नमः वामस्कन्धे,
३ शं सुभगायुक्ताय वरेण्याय नमः हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तम्,
३ षं शिवायुक्ताय वृषकेतनाय नमः हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तम्,
३ सं दुर्गायुक्ताय भक्ष्यप्रियाय नमः हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तम्,
३ हं कालीयुक्ताय गणेशाय नमः हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तम्,
३ ळं कालकुब्जिकायुक्ताय मेघनादाय नमः हृदयादिगुह्यान्तम्,
३ क्षं विघ्नहारिणीयुक्ताय गणेश्वराय नमः हृदयादिमूर्धान्तम् ।

ग्रहन्यासः

रक्तं श्वेतं तथा रक्तं श्यामं पीतञ्च पाण्डुरम् ।
कृष्णं धूम्रं धूम्रधूम्रं भावयेद्रविपूर्वकान् ॥
कामरूपधरान्देवान् दिव्याभरणभूषितान् ।
वामोरुन्यस्तहस्तांश्च दक्षहस्तवरप्रदान् ॥
शक्तयोऽपि तथा ध्येया वराभयकराम्बुजाः ।
स्वस्वप्रियाङ्कनिलयाः सर्वाभरणभूषिताः ॥ इति ध्यात्वा

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः रेणुकायुक्ताय सूर्याय नमः (हृदयाधः हृज्जठरसन्धौ) ।

३ यं रं लं वं अमृतायुक्ताय चन्द्राय नमः (भ्रूमध्ये,)
३ कं खं गं घं ङं धर्मायुक्ताय भौमाय नमः (नेत्रयोः,)
३ चं छं जं झं ञं यशस्विनीयुक्ताय बुधाय नमः (श्रोत्रकूपाधः,)
३ टं ठं डं ढं णं शाङ्करीयुक्ताय बृहस्पतये नमः (कण्ठे,)
३ तं थं दं धं नं ज्ञानरूपायुक्ताय शुक्राय नमः (हृदि,)
३ पं फं बं भं मं शक्तियुक्ताय शनैश्चराय नमः (नाभौ,)
३ शं षं सं हं कृष्णायुक्ताय राहवे नमः (मूले,)
३ ळं क्षं धूम्रायुक्ताय केतवे नमः (गुदे) ॥

नक्षत्रन्यासः

ज्वलत्कालानलप्रख्या वरदाभयपाणय ।
नतिपाण्योऽश्विनीपूर्वा सर्वाभरणभूषिता ॥ इति ध्यात्वा,

ऐं ह्रीं श्रीं, अ आ अश्विन्यै नम , ललाटे
३ इ भरण्यै नम , दक्षनेत्रे
३ ई उ ऊ कृत्तिकायै नम , वामनेत्रे
३ ऋ ॠ ऌ ॡ रोहिण्यै नम , दक्षकर्णे
३ ए मृगशिरसे नम वामकर्णे
३ ए आर्द्रायै नम , दक्षनासापुटे
३ ओ औं पुनर्वसवे नम , वामनासापुटे
३ क पुष्याय नम , दक्षस्कन्धे
३ ख ग आश्लेषायै नम , कण्ठे
३ घ ङ मघायै नम , वामस्कन्धे
३ च पूर्वफाल्गुन्यै नम पृष्ठे
३ छ ज उत्तरफाल्गुन्यै नम , दक्षकूर्परे
३ झ ञ हस्ताय नम वामकूर्परे
३ ट ठ चित्रायै नम दक्षमणिबन्ध
३ ड स्वात्यै नम , वाममणिबन्धे
३ ढ ण विशाखायै नम , दक्षहस्ते
३ त थ द अनुराधायै नम , वामहस्ते
३ ध ज्येष्ठायै नम , नाभौ
३ न प फ मूलाय नम , कटिबन्धे
३ बं पूर्वाषाढायै नम , दक्षोरौ
३ भं उत्तराषाढायै नम , वामोरौ
३ म श्रवणाय नम, दक्षजानुनि
३ यं रं धनिष्ठायै नम , वामजानुनि

३ लं शततारकायै नमः, दक्षजङ्घायाम्

३ वं शं पूर्वभाद्रपदायै नमः, वामजङ्घायाम्

३ षं सं हं उत्तरभाद्रपदायै नमः, दक्षपादे

३ ळं क्षं अं अः रेवत्यै नमः, वामपादे।

योगिनीन्यासः

कण्ठस्थाने विशुद्धौ नृपदलकमले श्वेतवर्णां त्रिणेत्रां
हस्तैः खट्वाङ्गखड्गौ त्रिशिखमपि महाचर्म सन्धारयन्तीम्।
वक्त्रेणैकेन युक्तां पशुजनभयदां पायसान्नैकसक्तां
त्वक्स्थां वन्देऽमृताद्यैः परिवृतवपुषं डाकिनीं वीरवन्द्याम्॥ इति ध्यात्वा,

'ऐं ह्रीं श्रीं, डां डीं ड म ल व र यूं डाकिन्यै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं उं ऊं ऋं ॠं ऌं ॡं एं ऐं ओं औं अं अः मां रक्ष रक्ष त्वगात्मानं नमः' इति मन्त्रेण कण्ठस्थषोडशदलविशुद्धिकमलकर्णिकायां डाकिनीं न्यस्य तद्दलेषु पुरोभागादि प्रादक्षिण्येन तदावरणशक्तीः न्यसेत्। यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं, अं अमृतायै नमः, आं आकर्षिण्यै नमः, इं इन्द्राण्यै नमः, ईं ईशान्यै नमः, उं उमायै नमः, ऊं ऊर्ध्वकेश्यै नमः, ऋं ऋद्धिदायै नमः ॠं ॠकारायै नमः, ऌं ऌकारायै नमः, ॡं ॡकारायै नमः, एं एकपदायै नमः, ऐं ऐश्वर्यात्मिकायै नमः, ओं ओङ्कारायै नमः, औं औषध्यै नमः, अं अम्बिकायै नमः, अः अक्षरायै नमः, इति।

ततो ध्यानम्—

हृत्पद्मे भानुपत्रद्विवदनलसिता दंष्ट्रिणी श्यामवर्णाम्
अक्षं शूलं कपालं डमरुमपि भुजैर्धारयन्ती त्रिणेत्राम्।
रक्तस्था कालरात्रिप्रभृतिपरिवृता स्निग्धभक्तैकसक्ता
श्रीमद्वीरेन्द्रवन्द्यामभिमतफलदा राकिणी भावयामः॥ इति ध्यात्वा,

'ऐं ह्रीं श्रीं, रां रीं र म ल व र यूं राकिण्यै नमः, ऐं ह्रीं श्रीं, कं खं गं घं ङं चं छं जं झं ञं टं ठं मां रक्ष रक्ष असृगात्मानं नमः' इति हृदयस्थितद्वादशदलानाहतनलिनकर्णिकायां राकिणीं न्यस्य तद्दलेषु प्राग्वत् तदावृतिशक्तीर्न्यसेत्। यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं, कं कालरात्र्यै नमः, खं खण्डितायै नमः, गं गायत्र्यै नमः, घं घण्टाकर्षिण्यै नमः, ङं ङार्णायै नमः, चं चण्डायै नमः, छं छायायै नमः, जं जयायै नमः, झं झङ्कारिण्यै नमः, ञं ज्ञानरूपायै नमः, टं टङ्कहस्तायै नमः, ठं ठङ्कारिण्यै नमः। इति।

दिक्पत्रे नाभिपद्मे त्रिवदनलसिता दंष्ट्रिणी रक्तवर्णा
शक्तिं दम्भोलिदण्डावभयमपि भुजैर्धारयन्ती महोग्राम्।
डामर्याद्यैः परीतां पशुजनभयदां मांसधात्वेकनिष्ठा
गौडान्नासक्तचित्ता सकलसुखकरी लाकिनी भावयामः॥ इति ध्यात्वा,

'ऐं ह्रीं श्रीं, ला ली ल म ल व र यूं लाकिन्यै नमः। ऐं ह्रीं श्रीं, डं ढं णं तं थं दं धं नं पं फं मा रक्ष रक्ष मांसात्मानं नम.' इति नाभिगत-दशदलमणिपूरकसरोजकर्णिकायां लाकिनीं न्यस्य तद्दलेषु पूर्ववत्तत्परिवार-शक्तीर्न्यसेत्। यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं डं डामर्यै नमः, ढं ढङ्कारिण्यै नमः, णं णार्णायै नमः, तं तामस्यै नमः, थं स्थाण्व्यै नमः, दं दाक्षायण्यै नमः, धं धात्र्यै नमः, नं नार्यै नमः, पं पार्वत्यै नम॰, फं फट्कारिण्यै नमः। तदनु—

स्वाधिष्ठानाख्यपद्मे रसदललसिते वेदवक्त्रां त्रिणेत्रा
हस्ताब्जैर्धारयन्ती त्रिशिखगुणकपालाङ्कुशानात्तगर्वाम्।
मेदोधातुप्रतिष्ठामलिमदमुदितां बन्धिनीमुख्ययुक्ता
पीतां दध्योदनेष्टामभिमतफलदां काकिनीं भावयामः॥ इति ध्यात्वा,

'ऐं ह्रीं श्रीं का की क म ल व र यूं काकिन्यै नमः, ऐं ह्रीं श्रीं बं भं मं यं रं लं मा रक्ष रक्ष मेद आत्मानं नमः' इति गुह्यस्थानगतषड्दलस्वा-धिष्ठानसरसिजकर्णिकायां काकिनीं न्यस्य तद्दलेषु तदावरणशक्तीः प्राग्वन्न्यसेत्। यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं बं बन्धिन्यै नम., भं भद्रकाल्यै नमः, मं महामायायै नमः, यं यशस्विन्यै नमः, रं रक्तायै नमः, लं लम्बोष्ठ्यै नमः। ततः—

मूलाधारस्य पत्रे श्रुतिदललसिते पञ्चवक्त्रां त्रिणेत्रां
धूम्राभामस्थिसस्थां सृणिमपि कमलं पुस्तकं ज्ञानमुद्राम् ।
बिभ्राणां बाहुदण्डैः सुललितवरदापूर्वशक्त्यावृतां तां
मुद्‌गान्नासक्तचित्तां मधुमदमुदितां साकिनी भावयामः ॥ इति ध्यात्वा,

ऐं ह्रीं श्रीं, सां सीं स म ल व र यूं साकिन्यै नमः ।

ऐं ह्रीं श्रीं, वं शं षं सं मां रक्ष रक्ष अस्थ्यात्मानं नमः' इति पायूपस्थ-मध्यगतचतुर्दलमूलाधारकमलकर्णिकायां साकिनीं न्यस्य तद्दलेषु पूर्ववत्तदावृतिशक्तीर्न्यसेत् । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं वं वरदायै नमः, शं श्रियै नमः, षं षण्डायै नमः, सं सरस्वत्यै नमः । अथ—

भ्रूमध्ये बिन्दुपद्मे दलयुगकलिते शुक्लवर्णां कराब्जै-
र्बिभ्राणा ज्ञानमुद्रां डमरुकममलामक्षमालां कपालम् ।
षड्वक्त्रां मज्जसंस्था त्रिणयनलसिता हंसवत्यादियुक्तां
हारिद्रान्नैकसक्तां सकलसुखकरी हाकिनी भावयामः ॥ इति ध्यात्वा॥

ऐं ह्रीं श्रीं हां हीं हं म ल व र यूं हाकिन्यै नमः, ऐं ह्रीं श्रीं हं क्षं मां रक्ष- रक्ष मज्जात्मानं नमः' इति भ्रूमध्यगतद्विदलाज्ञाकमलकर्णिकायां हाकिनीं न्यस्य तद्दक्षवामदलयोः क्रमेण—

'ऐं ह्रीं श्रीं, हं हंसवत्यै नमः, क्षं क्षमावत्यै नमः, इति तच्छक्तिद्वयं न्यसेत् । तदनु—

मुण्डव्योमस्थपद्मे दशशतदलके कर्णिकाचन्द्रसंस्था
रेतोनिष्ठां समस्तायुधकलितकरां सर्वतो वक्त्रपद्माम् ।
आदिक्षान्तार्णशक्तिप्रकरपरिवृता सर्ववर्णां भवानी
सर्वान्नासक्तचित्तां परशिवरसिकां याकिनी भावयामः ॥ इति ध्यात्वा,

'ऐं ह्रीं श्रीं, यां यीं य म ल व र यूं याकिन्यै नमः । ऐं ह्रीं श्रीं अं आं...... ...क्षं (५१) मां रक्ष-रक्ष शुक्रात्मानं नमः' इति ब्रह्मरन्ध्रगत-सहस्रदलसरसिजकर्णिकायां याकिनीं न्यस्य तद्दलेषु प्रतिविंशतिदलं तदावरणशक्तीः अमृताद्याः क्षमावत्यन्ताः पूर्वोक्ताः प्राग्वन्न्यसेत् ।

राशिन्यासः

रक्तश्वेतहरित्पाण्डुचित्रकृष्णपिशङ्गकान् ।
कपिशबभ्रुकिर्मीरकृष्णधूम्रान् क्रमात्स्मरेत् ॥
राशीनिति शेषः । इति ध्यात्वा,

ऐं ह्रीं श्रीं अं आं इं ईं मेषाय नमः, दक्षिणपादे
३ उं ऊं वृषाय नमः, लिङ्गदक्षभागे
३ ऋं ॠं लृं लॄं मिथुनाय नमः, दक्षकुक्षौ
३ एं ऐं कर्काय नमः, हृदयदक्षभागे
३ ओं औं सिंहाय नमः, दक्षबाहुमूले
३ अं अः शं षं सं हं ळं कन्यायै नमः दक्षशिरोभागे
३ कं खं गं घं ङं तुलायै नमः, वामशिरोभागे
३ चं छं जं झं ञं वृश्चिकाय नमः, वामबाहुमूले
३ टं ठं डं ढं णं धनुषे नमः, हृदयवामभागे
३ तं थं दं धं नं मकराय नमः, वामकुक्षौ
३ पं फं बं भं मं कुम्भाय नमः, लिङ्गवामभागे
३ यं रं लं वं क्षं मीनाय नमः, वामपादे ।

पीठन्यासः

सितासितारुणश्यामहरित्पीतान्यनुक्रमात् ।
पुनः क्रमेण देवेशि पञ्चाशत्पीठसञ्चयः ॥

इति भावयित्वा मातृकाभिस्सम पूर्वोक्तेषु तासां स्थानेषु पीठानि क्रमेण विन्यसेत् । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं, अं कामरूपाय नमः, शिरसि
३ आं वाराणस्यै नमः, मुखवृत्ते
३ इं नेपालाय नमः, दक्षनेत्रे
३ ईं पौण्ड्रवर्धनाय नमः, वामनेत्रे
३ उं पुरस्थितकाश्मीराय नमः, दक्षकर्णे

३ ऊं कान्यकुब्जाय नमः, वामकर्णे
३ ऋं पूर्णशैलाय नमः, दक्षनासापुटे
३ ॠं अर्बुदाचलाय नमः, वामनासापुटे
३ लृं आम्रातकेश्वराय नमः, दक्षगण्डे
३ ॡं एकाम्राय नमः, वामगण्डे
३ एं त्रिस्रोतसे नमः, ऊर्ध्वोष्ठे
३ ऐं कामकोटये नमः, अधरोष्ठे
३ ओं कैलासाय नमः, ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ
३ औं भृगुनगराय नमः, अधोदन्तपङ्क्तौ
३ अं केदाराय नमः, जिह्वाग्रे
३ अः चन्द्रपुष्करिण्यै नमः, कण्ठे
३ कं श्रीपुराय नमः, दक्षबाहुमूले
३ खं ओङ्काराय नमः, दक्षकूर्परे
३ गं जालन्धराय नमः, दक्षमणिबन्धे
३ घं मालवाय नमः, दक्षकराङ्गुलिमूले
३ ङं कुलान्तकाय नमः, दक्षकराङ्गुल्यग्रे
३ चं देवीकोटाय नमः, वामबाहुमूले
३ छं गोकर्णाय नमः, वामकूर्परे
३ जं मारुतेश्वराय नमः, वाममणिबन्धे
३ झं अट्टहासाय नमः, वामकराङ्गुलिमूले
३ ञं वैराजायै नमः, वामकराङ्गुल्यग्रे.
३ टं राजगेहाय नमः, दक्षोरुमूले
३ ठं महापथाय नमः, दक्षजानुनि
३ डं कोलापुराय नमः, दक्षगुल्फे
३ ढं एलापुराय नमः, दक्षपादाङ्गुलिमूले
३ णं कालेश्वराय नमः, दक्षपादङ्गुल्यग्रे
३ तं जयन्तिकायै नमः, वामोरुमूले

ऐं ह्रीं श्रीं थं उज्जयिन्यै नमः वामजानुनि

३ दं चित्रायै नमः, वामगुल्फे

३ धं क्षीरिकायै नमः, वामपादाङ्गुलिमूले

३ नं हस्तिनापुराय नमः, वामपादाङ्गुल्यग्रे

३ पं उड्डीशाय नमः, दक्षपार्श्वे

३ फं प्रयागाय नमः, वामपार्श्वे

३ बं षष्ठीशाय नमः, पृष्ठे

३ भं मायापुर्यै नमः, नाभौ

३ मं ज शाय नमः, जठरे

३ यं मलयाय नमः, हृदये

३ रं श्रीशैलाय नमः, दक्षस्कन्धे

३ लं मेरवे नमः, गलपृष्ठे

३ वं गिरिवराय नमः, वामस्कन्धे

३ शं महेन्द्राय नमः, हृदयादिदक्षकराङ्गुल्यन्तम्

३ षं वामनाय नमः, हृदयादिवामकराङ्गुल्यन्तम्

३ सं हिरण्यपुराय नमः, हृदयादिदक्षपादाङ्गुल्यन्तम्

३ हं महालक्ष्मीपुराय नमः, हृदयादिवामपादाङ्गुल्यन्तम्

३ ळं औड्याणाय नमः, हृदयादिगुह्यान्तम्

३ क्षं छायाच्छनाय नमः, हृदयादिमूर्धान्तम्

(इति षडक्षयनकः षोढान्याससमाप्तः)

अथ श्रीचक्रन्यासः

अस्य श्री श्रीचक्रन्यासस्येत्यनन्तरं जपप्रकरणे वक्ष्यमाणान् ऋष्यादीन्न्यस्याह्निकप्रकरणोक्तवद् ध्यात्वा श्रीदेव्या उपचारमन्त्रेण पुष्पाञ्जलिं दत्वा,

शरीरं चिन्तयेदादौ निजं श्रीचक्ररूपकम् ।
त्वगाद्याकारनिर्मुक्तं ज्वलत्कालाग्निसन्निभम् ॥ इति ध्यात्वा—

ऐं ह्रीं श्रीं समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलोत्तीर्णनिगर्भरहस्यातिरहस्यपरापररहस्ययोगिनीचक्रदेवताभ्यो नमः इति सर्वाङ्गे व्यापकं न्यस्य,

ऐं ह्रीं श्रीं, गं गणपतये नमः, दक्षोरौ
३ क्षं क्षेत्रपालाय नमः, दक्षांसे
३ यां योगिनीभ्यो नमः, वामांसे
३ वं वटुकाय नमः, वामोरौ
३ लं इन्द्राय नमः, पादाङ्गुष्ठद्वयाग्रे
३ रं अग्नये नमः दक्षजानुनि
३ टं यमाय नमः, दक्षपार्श्वे
३ क्षं निर्ऋतये नमः, दक्षांसे
३ वं वरुणाय नमः, मूर्ध्नि
३ यं वायवे नमः, वामांसे
३ सं सोमाय नमः, वामपार्श्वे
३ हं ईशानाय नमः, वामजानुनि
३ हृसः ब्रह्मणे नमः, मूर्ध्नि
३ अं अनन्ताय नमः, मूलाधारे।

त्रैलोक्यमोहनचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं, अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्राय नमः,—इति व्यापकं न्यस्य ततः ऐं ह्रीं श्रीं आद्यचतुरस्ररेखायै नमः,—इति दक्षांसपृष्ठादिवक्ष्यमाणेषु स्थानेष्वञ्जलिना व्यापकं न्यस्य,

ऐं ह्रीं श्रीं अणिमासिद्ध्यै नमः, दक्षांसपृष्ठे
३ लघिमासिद्ध्यै नमः, दक्षपाण्यङ्गुल्यग्रेषु
३ महिमासिद्ध्यै नमः दक्षोरसन्धौ
३ ईशित्वसिद्ध्यै नमः, दक्षपादाङ्गुल्यग्रेषु
३ वशित्वसिद्ध्यै नमः, वामपादाङ्गुल्यग्रेषु
३ प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः, वामोरसन्धौ

ऐं ह्रीं श्रीं भुक्तिसिद्धयै नमः, वामपाण्यङ्गुल्यग्रेषु

३ इच्छासिद्धयै नमः, वामांसपृष्ठे

३ प्राप्तिसिद्धयै नमः, शिखामूले

३ सर्वकामसिद्धयै नमः, शिरःपृष्ठे।

ऐं ह्रीं श्रीं, चतुरस्रमध्यरेखायै नमः—इति वक्ष्यमाणाङ्गेषु व्यापकं न्यस्य,

ऐं ह्रीं श्रीं ब्राह्म्यै नमः, पादाङ्गुष्ठद्वये

३ माहेश्वर्यै नमः, दक्षपार्श्वे

३ कौमार्यै नमः, मूर्ध्नि

३ वैष्णव्यै नमः, वामपार्श्वे

३ वाराह्यै नमः, वामजानुनि

३ इन्द्राण्यै नमः, दक्षजानुनि

३ चामुण्डायै नमः, दक्षांसे

३ महालक्ष्म्यै नमः, वामांसे

ऐं ह्रीं श्रीं चतुरस्रान्त्यरेखायै नमः इति वक्ष्यमाणाङ्गेषु व्यापकं न्यस्य,

ऐं ह्रीं श्रीं सर्वसंक्षोभिण्यै नमः, पादाङ्गुष्ठद्वये

३ सर्वविद्राविण्यै नमः, दक्षपार्श्वे

३ सर्वाकर्षिण्यै नम, मूर्ध्नि

३ सर्ववशङ्कर्यै नमः, वामपार्श्वे

३ सर्वोन्मादिन्यै नमः, वामजानुनि

३ सर्वमहाङ्कुशायै नमः, दक्षजानुनि

३ सर्वखेचर्यै नमः, दक्षांसे

३ सर्वबीजायै नमः, वामांसे

३ सर्वयोनये नमः, द्वादशान्ते

३ सर्वत्रिखण्डायै नमः, पादाङ्गुष्ठद्वये

ऐं ह्रीं श्रीं, अं आं सौः त्रैलोक्यमोहनचक्रेश्वर्यै त्रिपुरायै नमः हृदये।

एताः प्रकटयोगिन्यः त्रैलोक्यमोहने चक्रे समुद्राः ससिद्धयस्सायुधाः सशक्त्यः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वाः न्यस्तास्सन्त्विति हृदि चक्रसमर्पणं न्यस्य,

सर्वाशापरिपूरकचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्राय नमः—इति व्यापकं न्यस्य,

३ कामाकर्षिण्यै नित्याकलायै नमः, दक्षकर्णपृष्ठे

३ बुद्ध्याकर्षिण्यै नमः, दक्षांसे

३ अहङ्काराकर्षिण्यै नमः, दक्षकूर्परे

३ शब्दाकर्षिण्यै नमः, दक्षकरपृष्ठे, हस्ततलपृष्ठयोः

३ स्पर्शाकर्षिण्यै नमः, दक्षोरौ, दक्षस्फिजि,

३ रूपाकर्षिण्यै नमः, दक्षजानुनि,

३ रसाकर्षिण्यै नमः, दक्षगुल्फे,

३ गन्धाकर्षिण्यै नमः, दक्षपादतले, दक्षप्रपदे,

३ चित्ताकर्षिण्यै नमः, वामपादतले, वामप्रपदे,

३ धैर्याकर्षिण्यै नमः, वामगुल्फे,

३ स्मृत्याकर्षिण्यै नमः, वामजानुनि,

३ नामाकर्षिण्यै नमः, वामोरौ, वामस्फिजि,

३ बीजाकर्षिण्यै नमः, वामकरतलपृष्ठयोः

३ आत्माकर्षिण्यै नमः, वामकूर्परे,

३ अमृताकर्षिण्यै नमः, वामांसे,

३ शरीराकर्षिण्यै नमः, वामकर्णपृष्ठे,

३ ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्रेश्वर्यै नमः, हृदये

एताः गुप्तयोगिन्यस्सर्वाशापरिपूरके चक्रे समुद्रा इत्यादि प्राग्वत् ।

सर्वसंक्षोभणचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं, ह्रीं क्लीं सौः, सर्वसंक्षोभणचक्राय नमः—इति व्यापकं न्यस्य,

ऐं ह्रीं श्रीं अनङ्गकुसुमायै नमः, दक्षांसे, (ललाटास्थि)

३ अनङ्गमेखलायै नमः, दक्षजत्रुणि, (बाहुमूलसन्धिः)

३ अनङ्गमदनायै नमः, दक्षोरौ,

ए ह्रीं श्रीं, अनङ्गमदनातुरायै नमः दक्षगुल्फे,
३ अनङ्गरेखायै नमः वामगुल्फे,
३ अनङ्गवेगिन्यै नमः वामोरौ,
३ अनङ्गाङ्कुशायै नमः वामजानुनि,
३ अनङ्गमालिन्यै नमः वामशङ्खे,
३ ह्रीं क्लीं सौं सर्वसंक्षोभणचक्रेश्वर्यै नमः, हृदये।

एता गुप्ततरयोगिन्यः सर्वसंक्षोभणचक्रे समुद्राः—इत्यादि प्राग्वत्।

सर्वसौभाग्यदायकचक्रन्यासः

ऐंह्रींश्रीं, हैं ह्क्लीं ह्सौं सर्वसौभाग्यदायकचक्राय नमः—इति व्यापकं न्यस्य,
३ सर्वसंक्षोभिण्यै नमः ललाटमध्ये,
३ सर्वविद्राविण्यै नमः ललाटदक्षभागे,
३ सर्वाकर्षिण्यै नमः दक्षगण्डे,
३ सर्वाह्लादिन्यै नमः दक्षांसे,
३ सर्वसम्मोहिन्यै नमः दक्षपार्श्वे,
३ सर्वस्तम्भिन्यै नमः दक्षोरौ,
३ सर्वजृम्भिण्यै नमः दक्षजङ्घायाम्,
३ सर्ववशङ्कर्यै नमः वामजङ्घायाम्,
३ सर्वरञ्जिन्यै नमः वामोरौ,
३ सर्वोन्मादिन्यै नमः, वामपार्श्वे
३ सर्वार्थसाधिन्यै नमः, वामांसे
३ सर्वसम्पत्तिपूरिण्यै नमः, वामगण्डे
३ सर्वमन्त्रमय्यै नमः, ललाटवामभागे
३ सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै नमः, शिरःपृष्ठे
३ हैं ह्क्लीं ह्सौं सर्वसौभाग्यदायकचक्रेश्वर्यै त्रिपुरवासिन्यै नमः, हृदये।

एताः सम्प्रदाययोगिन्यः सर्वसौभाग्यदायके चक्रे समुद्राः—इत्यादि समर्पणं न्यसेत्।

सर्वार्थसाधकचक्रन्यासः

ऐंह्रींश्रीं, ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय नमः–इति व्यापकं न्यस्य

३ सर्वसिद्धिप्रदायै नमः, दक्षनेत्रे, दक्षनासापुटे

३ सर्वसम्पत्प्रदायै नमः नासामूले, दक्षसृक्विणि

३ सर्वप्रियङ्कर्यै नमः वामनेत्रे, दक्षस्तने

३ सर्वमङ्गलकारिण्यै नमः, वामबाहुमूले, दक्षवृषणे

३ सर्वकामप्रदायै नमः वामोरुमूले, सीविन्या दक्षभागे

३ सर्वदुःखविमोचिन्यै नमः, वामजानुनि, सीविन्या दक्षभागे

३ सर्वमृत्युप्रशमन्यै नमः, दक्षजानुनि, वामस्तने

३ सर्वविघ्ननिवारिण्यै नमः, गुदे वामवृषणे

३ सर्वाङ्गसुन्दर्यै नमः, दक्षोरुमूले वामसृक्विणि

३ सर्वसौभाग्यदायिन्यै नमः, दक्षबाहुमूले वामनासापुटे

३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः सर्वार्थसाधकचक्रेश्वर्यै त्रिपुराश्रियै नमः, हृदये।
एताः कुलोत्तीर्णयोगिन्यःसर्वार्थसाधके चक्रे समुद्रा, इत्यादि पूर्ववत्।

सर्वरक्षाकरचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं, ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्राय नमः, इति व्यापकं न्यस्य,

३ सर्वज्ञायै नमः, दक्षनासापुटे

३ सर्वशक्त्यै नमः, दक्षसृक्विणि (ओष्ठप्रान्ते)

३ सर्वैश्वर्यप्रदायिन्यै नमः, दक्षस्तने

३ सर्वज्ञानमय्यै नमः, दक्षमुष्के

३ सर्वव्याधिविनाशिन्यै नमः, सीविन्यां (तस्या दक्षभागे)
(सीविनी-अण्डद्वयमध्यवर्तिनी सिरा)

३ सर्वाधारस्वरूपायै नमः, वाममुष्के (सीविन्या वामभागे)

३ सर्वपापहरायै नमः, वामस्तने

३ सर्वानन्दमय्यै नमः, वामसृक्विणि

३ सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नमः, वामनासापुटे

३ सर्वेप्सितफलप्रदायै नमः, नासाग्रे

ऐं ह्रीं श्रीं, ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्रेश्वर्यै त्रिपुरमालिन्यै नमः, हृदि।
एता निगर्भयोगिन्यः सर्वरक्षाकरे चक्रे समुद्रा इत्यादि प्राग्वत्।

सर्वरोगहरचक्रन्यास

ए ह्रीं श्रीं, ह्रीं श्रीं सौं सर्वरोगहरचक्राय नमः, इति व्यापकं न्यस्य,

३ अं ... अः (१६) ब्लूं वशिनीवाग्देवतायै नमः दक्षचिबुके,

३ क ख ग घ ङ क्लह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः, दक्षकण्ठे

३ च छ ज झ ञं न्व्ली मोदिनीवाग्देवतायै नमः, हृदयदक्षभागे

३ ट ठ ड ढ ण य्लूं विमलावाग्देवतायै नमः, नाभिदक्षभागे,

३ त थ द ध न ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै नमः, नाभिवामभागे,

३ प फ ब भ म हस्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै नमः, हृदयवामभागे,

३ य र ल व झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः, वामकण्ठे,

३ शषसहळक्ष क्ष्म्रीं कौलिनीवाग्देवतायै नमः, वामचिबुके,

३ ह्रीं श्रीं सौं सर्वरोगहरचक्रेश्वर्यै त्रिपुरासिद्धायै नमः, हृदि,
एता रहस्ययोगिन्यः सर्वरोगहरे चक्रे समुद्रा इत्यादि पूर्ववत्।

आयुधन्यास

अथ हृदि त्रिकोणं विभाव्य तत्र प्रागादिदिक्षु क्रमेणायुधानां चतुष्टयं न्यसेत्। यथा—ऐं ह्रीं श्रीं द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वजम्भनेभ्यो बाणेभ्यो नमः, त्रिकोणपृष्ठे,

३ थं सर्वसम्मोहनाय धनुषे नमः त्रिकोणदक्षे, (वामे),

३ ह्रीं सर्ववशीकरणाय पाशाय नमः त्रिकोणाग्रे,

३ क्रों सर्वस्तम्भनाय अङ्कुशाय नमः त्रिकोणवामे, (दक्षभागे)।

सर्वसिद्धिप्रदचक्रन्यास

३ ह्स्रैं ह्स्क्लीं ह्सौः सर्वसिद्धिप्रदचक्राय नमः, इति व्यापकं न्यस्य,

३ मूलप्रथमकूटं कामरूपपीठस्थायै महाकामेश्वर्यै नमः त्रिकोणाग्रकोणे,

३ मूलद्वितीयकूटं पूर्णगिरिपीठस्थायै महावज्रेश्वर्यै नमः तद्दक्षकोणे,

३ मूलतृतीयकूटं जालन्धरपीठस्थायै महाभगमालिन्यै नमः, तद्वामकोणे,

ऐं ह्रीं श्रीं मूलं ओड्याणपीठस्थायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः, तन्मध्ये । अथ तदन्तस्सपर्याप्रकरणोक्तप्रकारेण षोडशस्वरान् विभाव्य षोडशनित्याः न्यसेत् । यथा—कामेश्वरीनित्यामन्त्रमुच्चार्य कामेश्वरीनित्यायै नमः । एवं-प्रकारेणावशिष्टाश्चतुर्दशनित्या विन्यस्य मध्ये मूलमुच्चार्य षोडशीं न्यसेत् ।

३ ह्स्रैं ह्स्क्लीं ह्स्रौः सर्वसिद्धिप्रदचक्रेश्वर्यै त्रिपुराम्बायै नमः, हृदि ।

एता अतिरहस्ययोगिन्यः सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे समुद्रा इत्यादि प्राग्वत्

सर्वानन्दमयचक्रन्यासः

ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सर्वानन्दमयचक्राय नमः, इति व्यापकं न्यस्य,

३ मूलं श्रीललितायै नमः हृदयमध्ये,

एषा परापररहस्ययोगिनी सर्वानन्दमये चक्रे समुद्रा ससिद्धिः सायुधा सशक्तिः सवाहना सपरिवारा न्यस्ताऽस्तु ।

ऐं ह्रीं श्रीं मूलं सर्वानन्दमयचक्रेश्वर्यै श्रीललितायै नमः, इति हृदि न्यस्य योनिमुद्रां प्रदर्श्य मूलं जपित्वा पुनः कराङ्गन्यासं कुर्यात् ।

इति नित्याषोडशिकार्णवोक्तश्रीचक्रन्यासः ।

पूर्वोक्तौ षोढाचक्रन्यासौ श्रीषोडशाक्षर्यां अपि समानौ ।

अथ महाषोढान्यासः

प्रपञ्चो भुवनं मूर्तिर्मन्त्रदैवतमातरः ।
महाषोढाह्वयो न्यासः सर्वन्यासोत्तमोत्तमः ॥

अस्य श्री महाषोढान्यासस्य ब्रह्मा ऋषिः, जगतीच्छन्दः, श्रीमदर्धनारीश्वरो देवता, श्रीविद्याङ्गत्वेन न्यासे विनियोग इति ऋष्यादिकं स्मृत्वा मूर्धादिषु विन्यस्याङ्गन्यासं कुर्यात् ।

अङ्गन्यासस्तु—अङ्गुलीदेहवक्त्रात्मकः । ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (६) इति षडक्षरमन्त्रपूर्वकं सर्वं न्यसेत् ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः हौं ईशानाय नमः अङ्गुष्ठयोः

६ हें तत्पुरुषाय नमः तर्जन्योः

६ हुं अघोराय नमः मध्यमयोः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः हिं वामदेवाय नमः अनामिकयोः
६ हं सद्योजाताय नमः कनिष्ठिकयोः
६ हौं ईशानाय नमः मूर्ध्नि
६ हें तत्पुरुषाय नमः मुखे
६ हुं अघोराय नमः हृदये
६ हिं वामदेवाय नमः गुह्ये
६ हं सद्योजाताय नमः पादयोः
६ हौं ईशानायोर्ध्ववक्त्राय नमः मूर्ध्नि,
६ हें तत्पुरुषाय पूर्ववक्त्राय नमः मुखे
६ हुं अघोराय दक्षिणवक्त्राय नमः दक्षकर्णे,
६ हिं वामदेवायोत्तरवक्त्राय नमः वामकर्णे,
६ हं सद्योजातायपश्चिमवक्त्राय नमः चोरकूपे,

अयं पञ्चवक्त्रन्यासः, क्रमेणाङ्गुष्ठादिपञ्चाङ्गुलीभिरेकैकाङ्गुलिनैकैक-वक्त्रे न्यस्तव्यः। एवमङ्गन्यासं विधाय ततो ह्सां ह्सीं ह्सूं ह्सैं इत्यादिभिः करषडङ्गन्यासं कृत्वा वक्ष्यमाणरूपं देवं हृदये ध्यात्वा न्यसेत्।

ओघप्रकारान्तरेण ध्यानम्—

पञ्चवक्त्रं चतुर्बाहुं सर्वाभरणभूषितम्।
चन्द्रसूर्यसहस्राभं शिवशक्त्यात्मकं भजे॥

प्रपञ्चन्यासः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं प्रपञ्चरूपायै श्रियै नमः (शिरसि)
६ आं द्वीपरूपायै मायायै नमः (मुखवृत्ते)
६ इं जलधिरूपायै कमलायै नमः (दक्षनेत्रे)
६ ईं गिरिरूपायै विष्णवल्लभायै नमः (वामनेत्रे)
६ उं पत्तनरूपायै पद्मधारिण्यै नमः (दक्षकर्णे)
५ ऊं पीठरूपायै समुद्रतनयायै नमः (वामकर्णे)
६ ऋं क्षेत्ररूपायै लोकमात्रे नमः (दक्षनासापुटे)
६ ॠं वनरूपायै कमलवासिन्यै नमः (वामनासापुटे)

६ लं आश्रमरूपायै इन्दिरायै नमः (दक्षगण्डे)
६ लॄं गुहारूपायै मायायै नमः (वामगण्डे)
६ एं नदीरूपायै रमायै नमः (ऊर्ध्वोष्ठे)
६ ऐं चत्वररूपायै पद्मायै नमः (अधरोष्ठे)
६ ओं उद्भिज्जरूपायै नारायणप्रियायै नमः (ऊर्ध्वदन्तपंक्तौ)
६ औं स्वेदजरूपायै सिद्धलक्ष्म्यै नमः (अधोदन्तपंक्तौ)
६ अं अण्डजरूपायै राजलक्ष्म्यै नमः (जिह्वाग्रे)
६ अः जरायुजरूपायै महालक्ष्म्यै नमः (कण्ठे)
६ कं लवरूपायै आर्यायै नमः (दक्षबाहुमूले)
६ खं त्रुटिरूपायै उमायै नमः (दक्षकूर्परे)
६ गं कलारूपायै चण्डिकायै नमः (दक्षमणिबन्धे)
६ घं काष्ठारूपायै दुर्गायै नमः (दक्षकराङ्गुलिमूले)
६ ङं निमेषरूपायै शिवायै नमः (दक्षकराङ्गुल्यग्रे)
६ चं श्वासरूपायै अपर्णायै नमः (वामबाहुमूले)
६ छं घटिकारूपायै अम्बिकायै नमः (वामकूर्परे)
६ जं मुहूर्तरूपायै सत्यै नमः (वाममणिबन्धे)
६ झं प्रहररूपायै ईश्वर्यै नमः (वाम कराङ्गुलिमूले)
६ ञं दिवसरूपायै शाम्भव्यै नमः (वाम कराङ्गुल्यग्रे)
६ टं सन्ध्यारूपायै ईशान्यै नमः (दक्षोरुमूले)
६ ठं रात्रिरूपायै पार्वत्यै नमः (दक्षजानुनि)
६ डं तिथिरूपायै सर्वमङ्गलायै नमः (दक्षगुल्फे)
६ ढं वाररूपायै दाक्षायण्यै नमः (दक्षपादाङ्गुलिमूले)
६ णं नक्षत्ररूपायै हैमवत्यै नमः (दक्षपादाङ्गुल्यग्रे)
६ तं योगरूपायै महामायायै नमः (वामोरुमूले)
६ थं करणरूपायै महेश्वर्यै नमः (वामजानुनि)
६ दं पक्षरूपायै मृडान्यै नमः (वामगुल्फे)
६ धं मासरूपायै रुद्राण्यै नमः (वामपादाङ्गुलिमूले)

६	नं राशिरूपायै शर्वाण्यै नम	(वामपादाङ्गुल्यग्रे)
६	पं ऋतुरूपायै परमेश्वर्यै नमः	(दक्षपार्श्वे)
६	फं अयनरूपायै काल्यै नमः	(वामपार्श्वे)
६	बं वत्सररूपायै कात्यायन्यै नमः	(पृष्ठे)
६	भं युगरूपायै गौर्यै नमः	(नाभौ)
६	मं प्रयलरूपायै भवान्यै नमः	(जठरे)
६	यं पञ्चभूतरूपायै ब्राह्मायै नमः	(हृदये)
६	र पञ्चतन्मात्रारूपायै वागीश्वर्यै नमः	(दक्षकक्षे)
६	ल पञ्चकर्मेन्द्रियरूपायै वाण्यै नमः	(गलपृष्ठे)
६	व पञ्चज्ञानेन्द्रियरूपायै सावित्र्यै नम.	(वामकक्षे)

६ शं पञ्चप्राणरूपायै सरस्वत्यै नमः (हृदयादि दक्षकराङ्गुल्यन्तं)

६ षं गुणत्रयरूपायै गायत्र्यै नम. (हृदयादि वामकराङ्गुल्यन्तं)

६ स अन्त.करणचतुष्टयरूपायै वाक्प्रदायै नमः (हृदयादि दक्षपादाङ्गुल्यन्त)

६ ह अवस्थाचतुष्टयरूपायै शारदायै नमः (हृदयादि वामपादाङ्गुल्यन्तं)

६ ळं सर्वधातुरूपायै भारत्यै नमः (कट्यादिपादाङ्गुल्यन्तं)

६ क्ष दोषत्रयरूपायै विद्यात्मिकायै नमः (कट्यादि ब्रह्मरन्ध्रान्तं)

इत्येकपञ्चाशच्छक्तिमातृकास्थानेषु विन्यस्य, तत ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (अकारादिक्षकारान्ता मातृकामुच्चार्य) सकलप्रपञ्चाधिदेवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौ. स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ इति सर्वाङ्गेव्यापकं कुर्यात् । इति प्रपञ्चन्यासः ।

अथ भुवनन्यासः

तत्र, पादयोः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौ स्हौः अं आ इं अतललोकनिलयशतकोटिगुह्याद्ययोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः॥

गुल्फयोः—६ ईं उ ऊं वितललोकनिलयशतकोटिगुह्यतरानन्तयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः ।

जङ्घयोः—६ ऋं ॠं ऌं सुतललोकनिलयशतकोट्यतिगुह्याचिन्त्ययोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

जान्वोः—६ ॡं एं ऐं महातललोकनिलयशतकोटिमहागुह्यस्वतन्त्रयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

ऊर्वोः—६ ओं औं तलातललोकनिलयशतकोटिपरमगुह्योच्छायोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

स्फिचोः—६ अं अः रसातललोकनिलयशतकोटिरहस्यज्ञानयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

मूलाधारे—६ कं खं गं घं ङं पाताललोकनिलयशतकोटिरहस्यतरक्रियायोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

स्वाधिष्ठाने—६ चं छं जं झं ञं भूर्लोकनिलयशतकोट्यतिरहस्यडाकिनीयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

मणिपूरके—६ टं ठं डं ढं णं भुवर्लोकनिलयशतकोटिमहारहस्यराकिणीयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

अनाहते—६ तं थं दं धं नं स्वर्लोकनिलयशतकोटिपरमरहस्यलाकिनीयोगिनीमूलदेवतायुधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

विशुद्धौ—६ पं फं बं भं मं महर्लोकनिलयशतकोटिगुप्तकाकिनीयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

आज्ञायां—६ यं रं लं वं जनलोकनिलयशतकोटिगुप्ततरसाकिनीयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

ललाटे—६ शं षं सं हं तपोलोकनिलयशतकोट्यतिगुप्तहाकिनीयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः।

ब्रह्मरन्ध्रे—६ ळं क्षं सत्यलोकनिलयशतकोटिमहागुप्तयाकिनीयोगिनीमूलदेवतायुताधारशक्त्यम्बादेव्यै नमः। इति विन्यस्य ६ (समस्तमातृकामुच्चार्य) सकलभुवनाधिपायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ इति व्यापकं कुर्यात्। इति भुवनन्यासः।

अथ मूर्तिन्यासः

शिरसि—ॐ ऐ ह्री श्री ह्सौ स्हौ अ केशवायाक्षरशक्त्यै नम ।
मुखे— ६ आ नारायणायाद्यशक्त्यै नम,
दक्षिणांसे— ६ इं माधवायेष्टदायै नम,
वामांसे— ६ ईं गोविन्दायेशान्यै नम,
दक्षपार्श्वे— ६ उं विष्णवे उग्रायै नम,
वामपार्श्वे— ६ ऊ मधुसूदनायोर्ध्वनयनायै नम,
दक्षकट्या— ६ ऋं त्रिविक्रमाय ऋद्धयै नम,
वामकट्या— ६ ॠ वामनाय रूपिण्यै नम,
दक्षोरौ— ६ ऌ श्रीधराय लुप्तायै नम,
वामोरौ— ६ ॡ हृषीकेशाय लूनदोषायै नम,
दक्षजानुनि— ६ एं पद्मनाभायैकनायिकायै नम,
वामजानुनि— ६ ऐ दामोदरायैककारिण्यै नम,
दक्षजङ्घाया— ६ ओ वासुदेवायौघवत्यै नम,
वामजङ्घाया— ६ औं सङ्कर्षणायौर्वकामायै नम,
दक्षपादे— ६ अं प्रद्युम्नायाञ्जनप्रभायै नम,
वामपादे— ६ अः अनिरुद्धायास्थिमालाधरायै नम,
दक्षपादाग्रादूरुमूलपर्यन्तम्—६ क भ भवाय करभद्रायै नम,
वामपादाग्रादूरुमूलपर्यन्तम्—६ ख बं शर्वाय खगवलायै नम,
दक्षपार्श्वे— ६ ग फ हराय गरिमफलप्रदायै नम,
वामपार्श्वे— ६ घं पं पशुपतये घोरपादायै नम,
दक्षदोर्मूले— ६ ङं न उग्राय पङ्क्तिवासायै नम,
वामदोर्मूले— ६ च धं महादेवाय चन्द्रार्धधारिण्यै नम,
कण्ठे— ६ छ द भीमाय छन्दोमय्यै नम,
वदने— ६ ज थ ईशानाय जगत्स्थानायै नम,
दक्षकर्णे— ६ झ त तत्पुरुषाय झङ्कृत्यै नम,
वामकर्णे— ६ ञं ण अघोराय ज्ञानदायै नम,
भाले— ६ टं ढ सद्योजाताय टङ्कढक्कधरायै नम,
शिरसि— ६ ठं ड वामदेवाय ठङ्कृतिडामर्यै नम,
मूलाधारे— ६ यं ब्रह्मणे यक्षिण्यै नम,
स्वाधिष्ठाने— ६ रं प्रजापतये रञ्जिन्यै नम,

मणिपूरके—६ लं वेधसे लक्ष्म्यै नमः,

अनाहते— ६ वं परमेष्ठिने वज्रिण्यै नमः,

विशुद्धौ— ६ शं पितामहाय शशिधरायै नमः,

आज्ञायां— ६ षं विधात्रे षडाधारालयायै नमः,

अर्धेन्दौ— ६ सं विरिञ्चये सर्वनायिकायै नमः,

रोधिन्या— ६ हं स्रष्ट्रे हसितानानायै नमः,

नादे— ६ ळं चतुराननाय ललितायै नमः,

नादान्ते— ६ क्षं हिरण्यगर्भाय क्षमायै नमः, इति विन्यस्य,

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (सकलमातृकामुच्चार्य) सकलत्रिमूर्त्यात्मिकायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ इति व्यापकं कुर्यात् ।

इति मूर्तिन्यासः

अथ मन्त्रन्यासः

मूलाधारे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अ आ इं एकलक्षकोटिभेदप्रणवाद्येकाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै एककूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः ।

स्वाधिष्ठाने—६ ईं उ ऊं द्विलक्षकोटिभेदहंसादिद्व्यक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै द्विकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः ।

मणिपूरके—६ ऋं ॠं लृ त्रिलक्षकोटिभेदवन्ह्यादित्र्यक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै त्रिकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः ।

अनाहते—६ ॡ ए ऐ चतुर्लक्षकोटिभेदचन्द्रादिचतुरक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै चतुष्कूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः ।

विशुद्धे—६ ओ औ अं अः पञ्चलक्षकोटिभेदसूर्यादिपञ्चाक्षरात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै पञ्चकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः ।

आज्ञाया—६ कं खं गं षड्लक्षकोटिभेदस्कन्दादिषडक्षरात्मकाखिल मन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै षट्कूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः ।

बिन्दौ—६ घं ङ च सप्तलक्षकोटिभेदगणपत्यादिसप्ताक्षरात्मकाखिल मन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै सप्तकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः ।

अर्धेन्दौ—६ छं जं झं अष्टलक्षकोटिभेदवटुकाद्यष्टाक्षरात्मकाखिल-मन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै अष्टकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

रोधिन्यां—६ ञं टं ठं नवलक्षकोटिभेदब्रह्मादिनवाक्षरात्मकाखिल-मन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै नवकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

नादे—६ डं ढं णं दशलक्षकोटिभेदविष्ण्वादिदशाक्षरात्मकाखिल-मन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

नादान्ते—६ तं थं दं एकादशलक्षकोटिभेदरुद्राद्येकादशाक्षरात्मकाखिल-मन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै एकादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

शक्तौ—धं नं पं द्वादशलक्षकोटिभेदवाण्यादिद्वादशाक्षरात्मकाखिल-मन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै द्वादशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

व्यापिकायां—६ फं बं भं त्रयोदशलक्षकोटिभेदलक्ष्म्यादित्रयोदशाक्षरा-त्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै त्रयोदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

समनस्थाने—६ मं यं रं चतुर्दशलक्षकोटिभेदगौर्यादिचतुर्दशाक्षरात्म-काखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै चतुर्दशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

उन्मन्यां—६ लं वं शं पञ्चदशलक्षकोटिभेददुर्गादिपञ्चदशाक्षरात्मका-खिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै पञ्चदशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

भुवमण्डले—६ ष सं ह ळं क्ष षोडशलक्षकोटिभेदत्रिपुरादिषोडशाक्ष-रात्मकाखिलमन्त्राधिदेवतायै सकलफलप्रदायै षोडशकूटेश्वर्यम्बादेव्यै नमः।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (सकलमातृकामुच्चार्य) सकलमन्त्राधिदेवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ इति व्यापकं कुर्यात्।

इति मन्त्रन्यासः

अथ देवतान्यासः

दक्षपादे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः अं आं सहस्रकोटिऋषिकुलसेवितायै निवृत्यम्बादेव्यै नमः।

वामपादे—६ इं ईं सहस्रकोटियोगिनीकुलसेवितायै प्रतिष्ठाम्बादेव्यै नमः।

दक्षगुल्फे—६ उं ऊं सहस्रकोटितपस्विकुलसेवितायै विद्याम्बादेव्यै नमः।

वामगुल्फे—६ ऋं ॠं सहस्रकोटिशान्तकुलसेवितायै शान्ताम्बादेव्यै नमः।

दक्षजङ्घायां—६ ऌं ॡं सहस्रकोटिमुनिकुलसेवितायै शान्त्यतीताम्बादेव्यै नमः ।

वामजङ्घायां—६ एं ऐं सहस्रकोटिदैवतकुलसेवितायै हृल्लेखाम्बादेव्यै नमः ।

दक्षजानुनि—६ ओं औं सहस्रकोटिराक्षसकुलसेवितायै गगनाम्बादेव्यै नमः ।

वामजानुनि—६ अं अः सहस्रकोटिविद्याधरकुलसेवितायै रक्ताम्बादेव्यै नमः ।

दक्षोरौ—६ कं खं सहस्रकोटिसिद्धकुलसेवितायै महोच्छुष्माम्बादेव्यै नमः ।

वामोरौ—६ गं घं सहस्रकोटिसाध्यकुलसेवितायै करालिकाम्बादेव्यै नमः ।

दक्षोरुमूले—६ ङं चं सहस्रकोट्यप्सरःकुलसेवितायै जयाम्बादेव्यै नमः ।

वामोरुमूले—६ छं जं सहस्रकोटिगन्धर्वकुलसेवितायै विजयाम्बादेव्यै नमः ।

दक्षपार्श्वे—६ झं ञं सहस्रकोटिगुह्यककुलसेवितायै अजिताम्बादेव्यै नमः ।

वामपार्श्वे—६ टं ठं सहस्रकोटियक्षकुलसेवितायै अपराजिताम्बादेव्यै नमः ।

दक्षस्तने—६ डं ढं सहस्रकोटिकिन्नरकुलसेवितायै वामाम्बादेव्यै नमः ।

वामस्तने—६ णं तं सहस्रकोटिपन्नगकुलसेवितायै ज्येष्ठाम्बादेव्यै नमः ।

दक्षदोर्मूले—५ थं दं सहस्रकोटिपितृकुलसेवितायै रौद्र्यम्बादेव्यै नमः ।

वामदोर्मूले—६ धं नं सहस्रकोटिगणेश्वरकुलसेवितायै मायाम्बादेव्यै नमः ।

दक्षभुजे—६ पं फं सहस्रकोटिभैरवकुलसेवितायै कुण्डलिन्यम्बादेव्यै नमः ।

वामभुजे—६ बं भं सहस्रकोटिवटुककुलसेवितायै काल्यम्बादेव्यै नमः ।

दक्षांसे—६ मं यं सहस्रकोटिक्षेत्रेशकुलसेवितायै कालरात्र्यम्बादेव्यै नमः ।

वामांसे—६ रं लं सहस्रकोटिप्रमथकुलसेवितायै भगवत्यम्बादेव्यै नमः ।

दक्षकर्णे—६ वं शं सहस्रकोटिब्रह्मकुलसेवितायै सर्वैश्वर्यम्बादेव्यै नमः ।

वामकर्णे—६ षं सं सहस्रकोटिविष्णुकुलसेवितायै सर्वज्ञात्र्यम्बादेव्यै नमः ।

भाले—६ हं ळं सहस्रकोटिरुद्रकुलसेवितायै सर्वकर्त्र्यम्बादेव्यै नमः ।

ब्रह्मरन्ध्रे—६ क्षं सहस्रकोटिचराचरकुलसेवितायै कुलशक्त्यम्बादेव्यै नमः ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (सकलमातृकामुच्चार्य) समस्तदेवताधिपायै श्रीपराम्बादेव्यै नमः ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ इति व्यापकं कुर्यात् ॥

इति देवतान्यासः

अथ मातृकाभैरवन्यासः

मूलाधारे—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः क ख ग घ ङ अनन्तकोटिभूचरीकुलसहितायै आ क्षा मङ्गलाम्बादेव्यै आ क्षा ब्रह्माण्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिभूचरकुलसहिताय अं क्ष मङ्गलनाथाय अ क्ष असिताङ्गभैरवनाथाय नम ।

स्वाधिष्ठाने—६ च छ ज झ ञ अनन्तकोटिखेचरीकुलसहितायै ईं ळा चर्चिकाम्बादेव्यै ईं ळा माहेश्वर्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिवेतालकुलसहिताय इ ळ चर्चिकनाथाय इ ळ रुरुभैरवनाथाय नम ।

मणिपूरके—६ ट ठ ड ढ ण अनन्तकोटिपातालचरीकुलसहितायै ऊ हा योगेश्वर्यम्बादेव्यै ऊ हा कौमार्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिपिशाचकुलसहिताय उ ह योगेश्वरनाथाय उ ह चण्डभैरवनाथाय नम ।

अनाहते—६ त थ द ध न अनन्तकोटिदिक्चरीकुलसहितायै ॠ सा हरसिद्धाम्बादेव्यै ॠ सा वैष्णव्यम्बादेव्यै अनन्तकोट्यपस्मारकुलसहिताय ऋ स हरसिद्धनाथाय ऋ स क्रोधभैरवनाथाय नम ।

विशुद्धौ—६ प फ ब भ म अनन्तकोटिसहचरीकुलसहितायै ॡ षा भट्टिन्यम्बादेव्यै ॡ षा वाराह्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिब्रह्मराक्षसकुलसहिताय ऌ ष भट्टिनाथाय ऌ ष उन्मत्तभैरवनाथाय नम ।

आज्ञाया—६ य र ल व अनन्तकोटिगिरिचरीकुलसहितायै ऐं शा किलिकिलाम्बादेव्यै ऐ शा इन्द्राण्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिचेटककुलसहिताय ए श किलिकिलिनाथाय ए श कपालीभैरवनाथाय नम ।

भाले—६ श ष स ह अनन्तकोटिसहचरीकुलसहितायै औं वा कालरात्र्यम्बादेव्यै औं वा चामुण्डाम्बादेव्यै अनन्तकोटिप्रेतकुलसहिताय ओ व कालरात्रिनाथाय ओ व भीषणभैरवनाथाय नम ।

ब्रह्मरन्ध्रे—६ ळ क्ष अनन्तकोटिजलचरीकुलसहितायै अः ला भीषणाम्बादेव्यै अः ला महालक्ष्म्यम्बादेव्यै अनन्तकोटिकूष्माण्डकुलसहिताय अं ल भीषणनाथाय अ ल संहारभैरवनाथाय नम ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्सौः स्हौः (समस्तमातृकामुच्चाय) समस्तमातृकाभैरवाधिदेवतायै श्रीपराम्बादेव्यै नम ह्सौः स्हौः श्रीं ह्रीं ऐं ॐ इति व्यापकं कुर्यात् । इति मातृकाभैरवन्यासः

अनन्तरं पूर्वोक्तैः ह्रां ह्रीं इत्यादिभिः करषडङ्गन्यासं विधाय देवं ध्यायेत् । यथा—

अमृतार्णवमध्योद्यत्स्वर्णद्वीपे मनोरमे ।
कल्पवृक्षवनान्तःस्थे नवमाणिक्यमण्डपे ॥
नवरत्नमयश्रीमत् सिंहासनगताम्बुजे ।
त्रिकोणान्तस्समासीनं चन्द्रसूर्यायुतप्रभम् ॥
अर्धाम्बिकासमायुक्तं प्रविभक्तविभूषणम् ।
कोटिकन्दर्पलावण्यं सदा षोडशवार्षिकम् ॥
मन्दस्मितमुखाम्भोजं त्रिणेत्रं चन्द्रशेखरम् ।
दिव्याम्बरस्रगालेपं दिव्याभरणभूषितम् ॥
पानपात्रञ्च चिन्मुद्रां त्रिशूलं पुस्तकं करैः ।
विद्यासंसदि बिभ्राणं सदानन्दमुखेक्षणम् ॥
महाषोढोदिताशेषदेवतागणसेवितम् ।
एवं चित्ताम्बुजे ध्यायेदर्धनारीश्वरं शिवम् ॥
पुरुषं वा स्मरेद्देवि स्त्रीरूपं वा विचिन्तयेत् ।
अथवा निष्कलं ध्यायेत्सच्चिदानन्दलक्षणम् ॥
सर्वतेजोमयं ध्यायेत्सचराचरविग्रहम् ।

इति स्वाभेदेन ध्यात्वा, योनि-लिङ्ग-सुरभि-कपाल-ज्ञान-त्रिशूल पुस्तक-वनमाला-नभो-महामुद्रा इति दशमुद्राः प्रदर्श्य शिरसि श्रीगुरुं ध्यायेत् ।

सहस्रदलपङ्कजे सकलशीतरश्मिप्रभं ।
वराभयकराम्बुजं विमलगन्धपुष्पाम्बरम् ।
प्रसन्नवदनेक्षणं सकलदेवतारूपिणं
स्मरेच्छिरसि हंसग तदभिधानपूर्वं गुरुम् ॥

इति श्रीगुरुं ध्यात्वा तद्विद्यया तत्पादुकां शिरसि विन्यस्य प्रणम्य स्वगुरुकृतं स्वनाम स्वमूलाधारे स्मृत्वा शिवरूपं स्वात्मानं ध्यायेत् ॥

इति महाषोढान्यासः

महापोढान्यासफलं कुलार्णवे

एवं न्यासे कृते देवि साक्षात्परशिवो भवेत् ।
मन्त्री चात्र न सन्देहो निग्रहानुग्रहक्षमः ॥

महापोढाह्वयं न्यासं यः करोति दिने दिने ।
देवास्सर्वे नमस्यन्ति तं नमामि न संशयः ॥

महापोढाह्वयं न्यासं यत्र मन्त्री न्यसेत्ततः ।
दिव्यक्षेत्रं समुद्दिष्टं समन्ताद्दशयोजनम् ॥

कृत्वा न्यासमिमं देवि यत्र गच्छति मानवः ।
तत्र श्रीविजयो लाभः स मान्यः पुरुषः प्रिये ॥

महापोढाकृतन्यासः त्वद्दीक्षायाभिवन्दिते ।
स मासान्मृत्युमाप्नोति यदि त्राता शिवः स्वयम् ॥

वज्रपञ्जरनामानमेवं न्यासं करोति यः ।
दिव्यान्तरिक्षभूशैलजलारण्यनिवासिनः ॥

उद्दण्डभूतवेतालदेवरक्षोग्रहादयः ।
भयग्रस्तेन मनसा नेक्षन्ते साधकं प्रिये ॥

महापोढाह्वयं न्यासं ब्रह्मविष्णुशिवादयः ।
देवास्सर्वे प्रकुर्वन्ति ऋषयश्च मुनीश्वराः ॥

बहुनोक्तेन किं देवि सुशिष्याय प्रकाशयेत् ।
भक्त्या लभते सिद्धिं रहसि न्यासमाचरेत् ॥

अस्मात्परतरस्साक्षाद्देवताभावसिद्धिदः ।
लोके नास्ति न सन्देहः सत्यं सत्यं न संशयः ॥

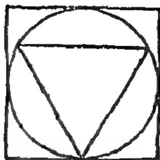
ऊर्ध्वाम्नायप्रवेशश्च पराप्रासादचिन्तनम् ।
महापोढापरिज्ञानं नाल्पस्य तपसः फलम् ॥

इति महापोढान्यासफलम्

अथ पात्रासादनम्

वर्धनीकलशस्थापनम्

स्वपुरतः वामभागे त्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य—



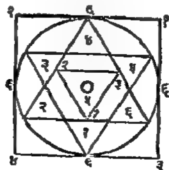
मण्डलं मूलेन समभ्यर्च्य, कर्पूरादिवासितजलपूरितं कलशं गन्धपुष्पाक्षतैः अलङ्कृत्य मण्डलोपरि स्थापयेत् ॥

ॐ कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः ।
मूले तत्र स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा ।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदोऽप्यथर्वणः ॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशाम्बुसमाश्रिताः ।
गङ्गे च यमुने चैव गोदावरि सरस्वति ॥
नर्मदे सिन्धु कावेरि जलेऽस्मिन्सन्निधिं कुरु ।
सर्वे समुद्राः सरितस्तीर्थानि च नदा ह्रदाः ॥
आयान्तु देवीपूजार्थं दुरितक्षयकारकाः ।

मूलेन अष्टवारमभिमन्त्र्य, धेनुमुद्रां प्रदर्श्य, तज्जलेन पूजोपकरणानिआत्मानञ्च प्रोक्षयेत् ॥

सामान्यार्घ्यविधिः

वर्धनीपात्रस्य दक्षिणतः वर्धनीपात्रगतेन जलेन विन्दु-त्रिकोण-षट्कोण-वृत्त-चतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया निर्माय ॥



चतुरस्रे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च बालाषडङ्गैः सम्पूजयेत् । यथा-

३ ऐं हृदयाय नमः । हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

३ क्लीं शिरसे स्वाहा । शिरःशक्तिश्रीपादुकां ,,

३ सौः शिखायै वषट् । शिखाशक्तिश्रीपादुकां ,,

३ ऐं कवचाय हुं । कवचशक्तिश्रीपादुकां ,,

३ क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्तिश्रीपादुकां ,,

३ सौः अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां ,,

षट्कोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन—

३ ऐं क-५ हृदयाय नमः । हृदयशक्तिश्रीपादुकां ,,

३ क्लीं ह-६ शिरसे-स्वाहा । शिरःशक्तिश्रीपादुकां ,,

३ सौः स-४ शिखायै वषट् । शिखाशक्तिश्रीपादुकां ,,

३ ऐं क-५ कवचाय हुं । कवचशक्तिश्रीपादुकां ,,

३ क्लीं ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्तिश्रीपादुकां ,,

३ सौः स-४ अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां ,,

त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन—

३ ऐं क-५ नमः ३ सौः स-४ नमः

३ क्लीं ह-६ नमः ३ मूलं नमः (बिन्दौ)

ततः ३ अस्त्राय फट्—इति सामान्यार्घ्यपात्रस्य आधारं प्रक्षाल्य

३ रं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यपात्राधाराय नमः ॥

(इति मण्डलोपरि संस्थाप्य)

३ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् ।

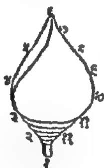
रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः, इति अग्निमण्डलं विभाव्य दशवह्निकलाः पूजयेत् । तद्यथा—

३ य धूम्रार्चिष्कलायै नमः	३ ष सुश्री कलायै नमः
३ र ऊष्मा " "	३ स सुरूपा " "
३ ल ज्वलिनी " "	३ हं कपिला " "
३ व ज्वालिनी " "	३ ळ हव्यवाहिनी "
३ श विस्फुलिङ्गिनी "	३ क्षं कव्यवाहिनी "

३ अस्त्राय फट्—इति क्षालितं शङ्खं गृहीत्वा—

३ उं सूर्यमण्डलायार्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यपात्राय नमः—इति संस्थाप्य

३ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यञ्च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन्। ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हमलवरयूम्। *सूर्यमण्डलाय नमः—इति (सूर्यमण्डलं विभाव्य द्वादशसूर्यकलाः पूजयेत्)* तद्यथा—



३ क भ तपिनी कलायै नमः	३ छ द सुषुम्ना कलायै नमः
३ ख ब तापिनी "	३ ज थ भोगदा "
३ ग फ धूम्रा "	३ झं त विश्वा "
३ घ पं मरीची "	३ ञ ण बोधिनी "
३ ङ न ज्वालिनी "	३ ट ढ धारिणी "
३ चं धं रुचि "	३ ठ डं क्षमा "

३ म सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः सामान्यार्घ्यामृताय नमः—इति वर्धनीसलिलमापूर्य क्षीरबिन्दु दत्वा।

३ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियं भवावाजस्य सङ्गथे। सां सीं सूं सैं सौं सः समलवरयूं सोममण्डलाय नमः—इति सोममण्डलं विभाव्य षोडश सोमकलाः पूजयेत्। तद्यथा—

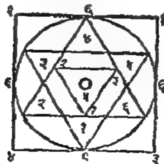
३	अं अमृता कलायै नमः	३	लृं चन्द्रिका कलायै नमः
३	आं मानदा ,,	३	लॄं कान्ति ,,
३	इं पूषा ,,	३	एं ज्योत्स्ना ,,
३	ईं तुष्टि ,,	३	ऐं श्री ,,
३	उं पुष्टि ,,	३	ओं प्रीति ,,
३	ऊं रति ,,	३	औं अङ्गदा ,,
३	ऋं धृति ,,	३	अं पूर्णा ,,
३	ॠं शशिनी ,,	३	अः पूर्णामृता ,,

ततस्तस्मिन्शङ्खे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च क्रमेण षडङ्गैः सम्पूज्य, 'अस्त्राय फट्' इति संरक्ष्य, 'कवचाय हुं' इति अवगुण्ठ्य, धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य, मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य, तत्सलिलपृषतैः पूजोपकरणानि, आत्मानं च प्रोक्ष्य, शङ्खजलं किञ्चित् वर्धन्यां निक्षिपेत्॥

विशेषार्घ्यविधिः

सामान्यार्घ्योदकेन तद्दक्षिणतः बिन्दु-त्रिकोण-षट्कोण वृत्त-चतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य, बिन्दौ सानुस्वारं तुरीयस्वरं विलिख्य,

चतुरस्रे प्राग्वत् षडङ्गं सम्पूज्य, षट्कोणे स्वाग्रकोणादिप्रादक्षिण्येन षडङ्गैरभ्यर्च्य, त्रिकोणे मूलत्रिखण्डैरभ्यर्च्य, मूलेन बिन्दुश्चार्चयेत्। तद्यथा—



चतुरस्रे अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च—

३ ऐं क ५ हृदयाय नमः,	हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः
३ क्लीं ह-६ शिरसे स्वाहा,	शिरःशक्तिश्रीपादुकां ,,
३ सौः स-४ शिखायै वषट्,	शिखाशक्तिश्रीपादुकां ,,
३ ऐं क ५ कवचाय हुं,	कवचशक्तिश्रीपादुकां ,,
३ क्लीं ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट्,	नेत्रशक्तिश्रीपादुकां ,,
३ सौः स-४ अस्त्राय फट्,	अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां ,,

ततः षट्कोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन—

३ ऐं क-५ हृदयाय नमः,	हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि नमः
३ क्लीं ह-६ शिरसे स्वाहा,	शिरःशक्तिश्रीपादुकां ,,
३ सौः स-४ शिखायै वषट्,	शिखाशक्तिश्रीपादुकां ,,
३ ऐं क-५ कवचाय हुं,	कवचशक्तिश्रीपादुकां ,,
३ क्लीं ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट्,	नेत्रशक्तिश्रीपादुकां ,,
३ सौः स-४ अस्त्राय फट्,	अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां ,,

ततस्त्रिकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन—

३ ऐं क-५ नमः	३ सौः स-४ नमः
३ क्लीं ह-६ नमः	३ मूलं नमः (बिन्दौ)

षोडश्युपासकैस्तु षोडशीमन्त्रेणैव सर्वत्र पूजा विधेया ।

अथ ३ अस्त्राय फट् इति आधारं प्रक्षाल्य,

३ ऐं क-५ अं अग्निमण्डलाय धर्मप्रददशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः विशेषार्घ्यपात्राधाराय नमः, इति आधारं संस्थाप्य

३ अग्निं दूतं वृणीमहे होतारं विश्ववेदसं अस्य यज्ञस्य सुक्रतुम् । रां रीं रूं रैं रौं रः रमलवरयूं अग्निमण्डलाय नमः—इति अग्निमण्डलं विभाव्य दशवह्निकलाः पूजयेत् । यथा—

३ यं धूम्रार्चिष्कलायै नमः	३ षं सुश्री कलायै नमः
३ रं ऊष्मा ,,	३ सं सुरूपा ,,
३ लं ज्वलिनी ,,	३ हं कपिला ,,
३ वं ज्वालिनी ,,	३ ळं हव्यवाहिनी ,,
३ शं विस्फुलिङ्गिनी ,,	३ क्षं कव्यवाहिनी ,,

ततः—

३ अस्त्राय फट् इति अस्त्रमन्त्रेण विशेषार्घ्यपात्रं प्रक्षाल्य

३ क्लीं ह-६ उं सूर्यमण्डलाय अर्थप्रदद्वादशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः विशेषार्घ्यपात्राय नमः, इति आधारोपरि संस्थाप्य ॥

३ ह्लीं ऐं महालक्ष्मीश्वरि परमस्वामिनि ऊर्ध्वशून्यप्रवाहिनि सोमसूर्याग्निभक्षिणि परमाकाशभासुरे आगच्छागच्छ विश विश पात्रं प्रतिगृह्ण प्रतिगृह्ण हुं फट् स्वाहा, इति पुष्पाञ्जलिं विकीर्य ॥

३ आ कृष्णेन रजसा वर्तमानो निवेशयन्नमृतं मर्त्यं च हिरण्ययेन सविता रथेना देवो याति भुवनानि पश्यन् । ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः हमलवरयू सूर्यमण्डलाय नमः, इति सूर्यमण्डलं विभाव्य द्वादश सूर्यकलाः पूजयेत् ।

३ कं भं तपिनी कलायै नमः	३ छं दं सुषुम्ना कलायै नमः
३ खं बं तापिनी ,,	३ जं थं भोगदा ,,
३ गं फं धूम्रा ,,	३ झं तं विश्वा ,,
३ घं पं मरीचि ,,	३ ञं णं बोधिनी ,,
३ ङं नं ज्वालिनी ,,	३ टं ढं धारिणी ,,
३ चं धं रुचि ,,	३ ठं डं क्षमा ,,

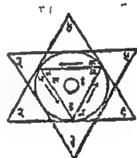
ततो विशेषार्घ्यपात्रे—

२ सौः स-४ मं सोममण्डलाय कामप्रदषोडशकलात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्याः विशेषार्घ्यामृताय नमः—इति अकारादिक्षकारान्तं क्षकाराद्यकारान्तं सबिन्दुमातृकयार्पितं कस्तूरीकाद्यधिवासितं क्षीरं पूरयित्वा अष्टगन्धलोलितं पुष्पं निधाय नागरखण्डं निक्षिप्य ॥

३ आप्यायस्व समेतु ते विश्वतः सोमवृष्णियम् । भवावाजस्य सङ्गथे ॥
सा सी सू सैं सौ सः समलवरयू सोममण्डलाय नमः—इति सोममण्डलं
विभाव्य षोडश सोमकलाः पूजयेत् । यथा—

३ अं अमृता कलायै नमः
३ आं मानदा ,,
३ इं पूषा ,,
३ ईं तुष्टि ,,
३ उं पुष्टि ,,
३ ऊं रति ,,
३ ऋं धृति ,,
३ ॠं शशिनी ,,
३ ऌं चन्द्रिका कलायै नमः
३ ॡं कान्ति ,,
३ एं ज्योत्स्ना ,,
३ ऐं श्री ,,
३ ओं प्रीति ,,
३ औं अङ्गदा ,,
३ अं पूर्णा ,,
३ अः पूर्णामृता ,,

ततः ३ ॐ जुसः स्वाहा, इति अष्टवारमभिमन्त्र्य ।



तत्रार्घ्यामृते स्वाग्राद्यप्रादक्षिण्येन अकथादि-षोडशवर्णात्मक-रेखात्रय त्रिकोण विलिख्य, तदन्त स्वाग्रादिकोणेषु अप्रादक्षिण्येन हळक्षान्, बहि प्रादक्षिण्येन पञ्चदशीमूल-खण्डत्रय, विन्दौ सविन्दुतुरीयस्वरं (ईं) तद्वामदक्षयो क्रमेण ह स. इति च विलिख्य

३ हंसः नमः, इति आराध्य, त्रिकोणस्य परितः वृत्त, तद्बहिश्च षट्कोण निर्माय, स्वाग्रकोणादिप्रादक्षिण्येन षडङ्गमन्त्रै षट्कोणमभ्यर्च्य

३ 'मूलं' ता चिन्मयी आनन्दलक्षणा अमृतकलशपिशितहस्तद्वया प्रसन्ना देवी पूजयामि नम. स्वाहा, इति सुधादेवी समभ्यर्च्य तदर्घ्यात्किञ्चित् पात्रान्तरेण—

३ वषट्, इत्युद्धृत्य, ३ स्वाहा, इति तत्रैव निक्षिप्य,
३ हुं, इति अवगुण्ठ्य, ३ वौषट्, इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य
३ फट्, इति सरक्ष्य, ३ नम., इति पुष्प दत्वा

३ मूलेन गालिन्या निरीक्ष्य ३ ऐं, इति योनिमुद्रया नत्वा

३ मूलेन सप्तवारमभिमन्त्र्य, सुधादेवी षोडशोपचारैः सम्पूज्य, तद्बिन्दुभिः सपर्यासाधनानि प्रोक्ष्य सर्वं विद्यामयं विभावयेत् ॥

शुद्धिसंस्कारः

विशेषार्घ्यपात्रस्य दक्षिणतः सामान्यार्घ्योदकेन त्रिकोण-वृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं मत्स्यमुद्रया विलिख्य*

३ ॐ ह्रीं ह्रौं नमः शिवाय, इति मण्डलमभ्यर्च्य शुद्धिपात्रं संस्थाप्य

३ ॐ श्रीं पशु हुं फट्, इति अष्टवारमभिमन्त्र्य

३ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ।
भवे भवे नाति भवे भवस्व मां भवोद्भवाय नमः ॥

३ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः ॥

३ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥

३ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् ।

३ ईशानस्सर्वविद्यानामीश्वरस्सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम् ॥ इत्यभ्यर्च्य ॥

सदघः, त्रिकोण-वृत्त-चतुरस्रात्मकं मण्डलद्वयं विलिख्य । प्रथममण्डले—

३ हंसश्शिवस्सोहं, सोहं हंसश्शिवः, हंसश्शिवस्सोहं हंसः ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं नमः । इत्यभ्यर्च्य, गुरुपात्रं निधाय । द्वितीयमण्डले—

३ हंस नमः । इत्यभ्यर्च्य, आत्मपात्रं निदध्यात् । ततो विशेषार्घ्यपात्रं करेण सस्पृश्य वक्ष्यमाणचतुर्नवतिमन्त्रैः अभिमन्त्रयेत्—

वह्निकलाः

३	यं धूम्रार्चिषे	नमः	३	षं सुश्रियै	नमः
३	रं ऊष्मायै	„	३	सं सुरूपायै	„
३	लं ज्वलिन्यै	„	३	हं कपिलायै	„
३	वं ज्वालिन्यै	„	३	ळं हव्यवाहिन्यै	„
३	शं विस्फुलिङ्गिन्यै	„	३	क्षं कव्यवाहिन्यै	„

* अस्य चित्रं १४४ पुटे द्रष्टव्यम् ।

सूर्य कलाः

३	कं भं तपिन्यै	नमः		३	छं दं सुषुम्नायै	नमः
३	खं बं तापिन्यै	,,		३	जं थं भोगदायै	,,
३	गं फं धूम्रायै	,,		३	झं तं विश्वायै	,,
३	घं पं मरीच्यै	,,		३	ञं णं बोधिन्यै	,,
३	ङं नं ज्वालिन्यै	,,		३	टं ढं धारिण्यै	,,
३	चं धं रुच्यै	,,		३	ठं डं क्षमायै	,,

सोमकलाः

३	अं अमृतायै	नमः	३	लृं चन्द्रिकायै	नमः
३	आं मानदायै	,,	३	ॡं कान्त्यै	,,
३	इं पूषायै	,,	३	एं ज्योत्स्नायै	,,
३	ईं तुष्ट्यै	,,	३	ऐं श्रियै	,,
३	उं पुष्ट्यै	,,	३	ओं प्रीत्यै	,,
३	ऊं रत्यै	,,	३	औं अङ्गदायै	,,
३	ऋं धृत्यै	,,	३	अं पूर्णायै	,,
३	ॠं शशिन्यै	,,	३	अः पूर्णामृतायै	,,

ब्रह्मकलाः

३	कं सृष्ट्यै	नमः	३	चं लक्ष्म्यै	नमः
३	खं ऋद्ध्यै	,,	३	छं द्युत्यै	,,
३	गं स्मृत्यै	,,	३	जं स्थिरायै	,,
३	घं मेधायै	,,	३	झं स्थित्यै	,,
३	ङं कान्त्यै	,,	३	ञं सिद्ध्यै	,,

३ हंसश्शुचिषद्वसुरन्तरिक्षसद्धोता वेदिषदतिथिर्दुरोणसत् । नृषद्वरसदृतसद्व्योमसदब्जा गोजा ऋतजा अद्रिजा ऋतं बृहत् ॥ नमः॥

विष्णुकलाः

३ टं जरायै नमः	३ तं कामिकायै नमः
३ ठं पालिन्यै ,,	३ थं वरदायै ,,
३ डं शान्त्यै ,,	३ दं ह्लादिन्यै ,,
३ ढं ईश्वर्यै ,,	३ धं प्रीत्यै ,,
३ णं रत्यै ,,	३ नं दीर्घायै ,,

३ प्रतद्विष्णुस्तवते वीर्याय मृगो न भीमः कुचरो गिरिष्ठाः। यस्योरुषु त्रिषु विक्रमणेष्वधिक्षियन्ति भुवनानि विश्वा ॥ नमः ॥

रुद्रकलाः

३ पं तीक्ष्णायै नमः	३ यं क्षुधायै नमः
३ फं रौद्रयै ,,	३ रं क्रोधिन्यै ,,
३ बं भयायै ,,	३ लं क्रियायै ,,
३ भं निद्रायै ,,	३ वं उद्गार्यै ,,
३ मं तन्द्रयै ,,	३ शं मृत्यवे ,,

३ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ॥ नमः ॥

ईश्वरकलाः

३ षं पीतायै नमः	३ हं अरुणायै नमः
३ सं श्वेतायै ,,	३ क्षं असितायै ,,

३ तद्विष्णोः परमं पदं सदा पश्यन्ति सूरयः। दिवीव चक्षुराततम्। तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते विष्णोर्यत्परमं पदम् ॥ नमः ॥

सदाशिवकलाः

३ अं निवृत्यै नमः	३ उं इन्धिकायै नमः।
३ आं प्रतिष्ठायै ,,	३ ऊं दीपिकायै ,,
३ इं विद्यायै ,,	३ ऋं रेचिकायै ,,
३ ईं शान्त्यै ,,	३ ॠं मोचिकायै ,,

३ लं परायै	नमः	३ ओं ज्ञानामृतायै	नमः
३ लृं सूक्ष्मायै	,,	३ औं आप्यायिन्यै	,,
३ एं सूक्ष्मामृतायै	,,	३ अं व्यापिन्यै	,,
३ ऐं ज्ञानायै	,,	३ अः व्योमरूपायै	,,

३ विष्णुर्योनिं कल्पयतु त्वष्टा रूपाणि पिंशतु ।
आसिञ्चतु प्रजापतिर्धाता गर्भं दधातु ते ॥
गर्भं धेहि सिनीवालि गर्भं धेहि सरस्वति ।
गर्भं ते अश्विनौ देवावाधत्तां पुष्करस्रजा ॥ नमः ॥

३ 'मूलं' नमः ॥

३ अखण्डैकरसानन्दकरे परसुधात्मनि ।
स्वच्छन्दस्फुरणामत्र निधेहि कुलनायिके ॥ नमः ॥

३ अकुलस्थामृताकारे शुद्धज्ञानकरे परे ।
अमृतत्वं निधेह्यस्मिन् वस्तुनि क्लिन्नरूपिणि ॥ नमः ॥

३ तद्रूपिण्यैकरस्यत्वं कृत्वा ह्येतत्स्वरूपिणि ।
भूत्वा परामृताकारा मयि चित्स्फुरणं कुरु ॥ नमः ॥

३ ऐं ब्लूं झ्रौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणि अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा ॥ नमः ॥

३ ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह्सौः स्हौः ॥ नमः ॥

एवमभिमन्त्रितविशेषार्घ्यामृतात् किञ्चित् गुरुपात्रे उद्धृत्य गुरुत्रयं यजेत् । गुरुः सन्निहितो यदि तस्मै निवेदयेत् ।

पुनः आत्मपात्रे किञ्चिद्विशेषार्घ्यामृतमुद्धृत्य, मूलाधारे वालाग्रमात्रं अनादिवासनारूपेन्धनप्रज्वलितं कुण्डलिन्यधिष्ठितं चिदग्निमण्डलं ध्यात्वा–

३ कुण्डलिन्यधिष्ठितचिदग्निमण्डलाय नमः, इति मनसा सम्पूज्य

३ मूलं पुण्यं जुहोमि स्वाहा	३ मूलं सङ्कल्पं जुहोमि स्वाहा
३ मूलं पापं ,,	३ मूलं विकल्पं ,,
३ मूलं कृत्यं ,,	३ मूलं धर्मं ,,
३ मूलं अकृत्यं ,,	३ मूलं अधर्मं ,,

३ मूल अधर्मं जुहोमि वौषट्

३ इत पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारत जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्या पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृत यदुक्त यत्कृत तत्सर्वं ब्रह्मार्पण भवतु स्वाहा—इति पूर्णाहुर्ति विभाव्य

३ आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि। योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमेवाह मा जुहोमि स्वाहा।

इति आत्मन कुण्डलिनीरूपे चिदग्नौ होमबुद्ध्या जुहुयात्। विशेषार्घ्य पात्रात्किञ्चित्क्षीर क्षीरवलय निक्षिपेत् ॥

आविसर्जन शङ्ख विशेषार्घ्यपात्रञ्च न चालयत्।

अन्तर्याग.

स च ज्ञानार्णवे दृष्ट, यथा मूलाधारादाब्रह्मबिल विलसन्ती बिसतन्तुतनीयसी विद्युत्पुञ्जपिञ्जरा विवस्वदयुतभास्वत्प्रकाशा परश्शतसुधामयूख शीतलतेजोदण्डरूपा परचिर्ति भावयेत्। ततस्तत्तेजसि—

मूलाधारादधोगते अकु्लसहस्रारे, भूपूरस्थितदेवी,

तदुपरि स्थिते विषुवनाम्नि रक्तवर्णषड्दलपद्म, षोडशदलदेवी

मूलाधारे चतुर्दले अष्टदलदेवी, स्वाधिष्ठाने षड्दले चतुर्दशारदेवी, मणिपूरके दशदले बहिर्दशारदेवी, अनाहते द्वादशदले अन्तर्दशारदेवी, विशुद्धौ षोडशदले अष्टारदेवी, लम्बिकाग्रे आयुधदेवी, त्रिकोणदेवीश्च, आज्ञाया द्विदले बिन्दुगतदेवी च, ध्यात्वा

तत्तदग्रे जीवात्मन पुष्पपूरिताञ्जलिनिविष्ट भावयन् तत्तत्पूजा मन्त्रै तत्तदावरणपूजा, देव्या वामहस्ते पूजासमर्पण च विभाव्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्या सचक्रावयवानि आवरणानि विलीनानि विभाव्य मध्यत्र्यस्राग्रे (देवीपादमूले) स्थितजीवात्मना सहिता श्रीदेवी हृदय नीत्वा स्वाञ्जलिगतकुसुमे तत्र ता सम्पूज्य, तत अकुलेन्दुगलितामृतधारारूपिणी चन्दनकुसुमधूपदीपनैवेद्यशालिकरकमला पीतासितश्यामरक्तशुक्लवर्णा धरणिवियदनिलानलजललक्षणपञ्चभूतमयी सर्वावयवसुन्दरी पञ्चदेवता

देव्यग्रे संस्मृत्य, ताभिः चन्दनाद्युपचारान् श्रीदेव्यै समर्पितान् स्मारं स्मारं पञ्चोपचारमुद्राश्च प्रदर्शिताः भावयेत् ॥

ततो देव्या नासाया गन्धदेवता, श्रोत्रे पुष्पदेवता, नाभौ धूपदेवता, नयने दीपदेवता, जिह्वाया नैवेद्यदेवता, इति क्रमेण विलीनाः विभाव्य, मूलविद्यां उच्चरन्, जीवात्मानं श्रीदेवीपादारविन्दमूले लीनं विभाव्य, हृदयगतदेवीरूपं मध्यत्र्यस्रसहितं तत्रैव केवलं ज्योतिर्मयतामापन्नं ध्यायन् संक्षोभिण्यादिनवमुद्राः भावयित्वा, क्षणं न किञ्चिदपि चिन्तयेत् ।

अथ देव्या प्रेरितमानसः सन् पुनः प्रकृतिमालम्ब्य तेजोरूपेण परिणतां परमशिवज्योतिरभिन्नप्रकाशात्मिका वियदादिविश्वकारणां स्वात्माभिन्नां परचितिं सुषुम्नापथेन उद्गमय्य विनिर्भिन्नविधिबिलविलसदमलदशशत-दलकमलात् वहन्नासापुटेन निर्गतां त्रिखण्डामुद्रामण्डितशिखण्डे कुसुम-गर्भितेऽञ्जलौ समानीय—

३ ह्रीं श्रीं सौः श्रीललितायाः अमृतचैतन्यमूर्तिं कल्पयामि नमः ॥

ध्यानम्

ध्यायेन्निरामयं वस्तु जगत्त्रयविमोहिनीम् । अशेषव्यवहाराणां स्वामिनीं संविदं पराम् ॥
उद्यत्सूर्यसहस्राभां दाडिमीकुसुमप्रभाम् । जपाकुसुमसङ्काशां पद्मरागमणिप्रभाम् ॥
स्फुरत्सम्भनिभां तप्तकाञ्चनाभां सुरेश्वरीम् । रक्तोत्पलदलाकारपादपल्लवराजिताम् ॥
अनर्घरत्नखचितमञ्जीरचरणद्वयाम् । पादाङ्गुलीयकक्षिप्तरत्नतेजोविराजिताम् ॥
कदलीललितस्तम्भसुकुमारोरुकोमलाम् । नितम्बबिम्बविलसद्रक्तवस्त्रपरिष्कृताम् ॥
मेखलाबद्धमाणिक्यकिङ्किणीनादविभ्रमाम् । अलक्ष्यमध्यमां निम्ननाभिं शातोदरीं पराम् ॥
रोमराजिलतोद्भूतमहाकुचफलान्विताम् । सुवृत्तनिबिडोत्तुङ्गकुचमण्डलराजिताम् ॥
अनर्घमौक्तिकस्फारहारभारविराजिताम् । नवरत्नप्रभाराजद्ग्रैवेयकविभूषणाम् ॥
श्रुतिभूषामनोरम्यकपोलस्थलमञ्जुलाम् । उद्यदादित्यसङ्काशताटङ्कमुखप्रभाम् ॥
पूर्णचन्द्रमुखीं पद्मवदनां वरनासिकाम् । स्फुरन्मदनकोदण्डसुभ्रुवं पद्मलोचनाम् ॥
ललाटपट्टसराजद्रत्नाढ्यतिलकाङ्किताम् । मुक्तामाणिक्यघटितमुकुटस्थलकिङ्किणीम् ॥

स्फुरच्चन्द्रकलाराजन्मुकुटाढ्यां त्रिलोचनाम्। प्रवालवल्लीविलसद्बाहुवल्लीचतुष्टयाम् ॥
इक्षुकोदण्डपुष्पेषुपाशाङ्कुशचतुर्भुजाम् । सर्वदेवमयीमम्बां सर्वसौभाग्यसुन्दरीम् ॥
सर्वतीर्थमयीं दिव्यां सर्वकामप्रपूरिणीम् । सर्वमन्त्रमयीं नित्यां सर्वागमविशारदाम् ॥
सर्वक्षेत्रमयीं देवीं सर्वविद्यामयीं शिवाम् । सर्वयागमयीं विद्यां सर्वदेवस्वरूपिणीम् ॥
सर्वशास्त्रमयीं नित्यां सर्वागमनमस्कृताम्। सर्वाम्नायमयीं देवीं सर्वायतनसेविताम् ॥
सर्वानन्दमयीं ज्ञानगह्वरां संविदं पराम्। एवं ध्यायेत्परामम्बां सच्चिदानन्दरूपिणीम्॥

इति (निजलीलाङ्गीकृतललितवपुषं विचिन्त्य)

३ ह्सैं ह्स्क्लरीं ह्सौः

महापद्मवनान्तस्थे कारणानन्दविग्रहे।
सर्वभूतहिते मातः एह्येहि परमेश्वरि॥

श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकामावाहयामि नमः॥

नित्यादिकमणिमान्तं श्रीकामेश्वराङ्कोपवेशनं विना श्रीदेवीसमानाकृतिवेषभूषणायुधशक्तिचक्रं ओघत्रयगुरुमण्डलं च वक्ष्यमाणेषु आवरणेषु निजस्वामिन्यभिमुखोपविष्टमवमृश्य

३	मूलं आवाहिता	भव॥	३	मूलं सन्निरुद्धा	भव॥
३	,, संस्थापिता	भव॥	३	,, सन्मुखी	भव॥
३	,, सन्निधापिता	भव॥	३	,, अवगुण्ठिता	भव॥

इति मन्त्रैरावाहनादिषण्मुद्राः प्रदर्श्य, वन्दनधेनुयोनिमुद्राश्च प्रदर्शयेत्। अथ हृदयादिषडङ्गमुद्राः बाणाद्यायुधमुद्राश्च तत्तन्मन्त्रपूर्वकं प्रदर्शयेत्॥

चतुःषष्ट्युपचारपूजाः

अथ श्रीपरदेवतायाः चतुष्षष्ट्युपचारानाचरेत्। तेष्वशक्तानां भावनया पुष्पाक्षतानर्पयेत्॥

३ श्रीललितायै पाद्यं कल्पयामि नमः

,, आभरणावरोपणं	,, श्रीललितायै मज्जनशालामणि-
,, सुगन्धितैलाभ्यङ्गं ,,	पीठोपवेशनं क० नमः
,, मज्जनशालाप्रवेशनं ,,	,, दिव्यस्नानीयोद्वर्तनं ,,

३ श्रीललितायै उष्णोदकस्नानं क० नमः,
,, *कनककलशच्युत-
सकलतीर्थाभिषेकं ,,
,, धौतवस्त्रपरिमार्जनं ,,
,, अरुणदुकूलपरिधानं ,,
,, अरुणकुचोत्तरीयं ,,
,, आलेपमण्डपप्रवेशनं ,,
,, आलेपमण्डपमणि-
पीठोपवेशनं ,,
,, दिव्यगन्धसर्वाङ्गीण-
विलेपनं ,,
,, केशभारस्य कालागरुधूप ,,
,, कुसुममालाः ,,
,, भूषणमण्डपप्रवेशनं ,,
,, भूषणमण्डपमणि,
पीठोपवेशनं ,,
,, नवमणिमकुट ,,
,, चन्द्रशकल ,,
,, सीमन्तसिन्दूरं ,,
,, तिलकरत्न ,,
,, कालाञ्जन ,,
,, वालीयुगल ,,
,, मणिकुण्डलयुगल ,,
,, नासाभरण ,,
,, अधरयावकं ,,

श्रीललितायै प्रथमभूषणं
(माङ्गल्यसूत्रं) क० नमः
,, कनकचिन्ताकं ,,
,, पदकं ,,
,, महापदकं ,,
,, मुक्तावलि ,,
,, एकावलि ,,
,, छन्नवीरं ,,
,, केयूरयुगलचतुष्टयं ,,
,, वलयावलि ,,
,, ऊर्मिकावलि ,,
,, काञ्चीदाम ,,
,, कटिसूत्र ,,
,, सौभाग्याभरण ,,
,, पादकटकं ,,
,, रत्ननूपुरं ,,
,, पादाङ्गुलीयक ,,
,, एककरे पाशं ,,
,, अन्यकरेऽङ्कुशं ,,
,, इतरकरे पुण्ड्रेक्षुचापं ,,
,, अपरकरे पुष्पबाणान् ,,
,, श्रीमन्माणिक्यपादुके ,,
,, स्वसमानवेषाभिरावरण-
देवताभिः सह महा-
चक्राधिरोहणं ,,
,, कामेश्वराङ्कपर्यङ्को-
पवेशनं ,,
,, अमृतासवचषक ,,

* इह श्रीसूक्तेनाभिषेको विधेयः ॥

३ श्री ललितायै	आचमनीय	कल्पयामि नम ।	
,,	*कर्पूरवीटिका	,,	,,
,,	आनन्दोल्लासविलासहास	,,	,,

अथ मङ्गलारार्तिकम्—कलधौतादिभाजने कुङ्कुमचन्दनादिलिखित-स्याष्टषट्चतुर्दलाद्यन्यतमस्य कमलस्य चन्द्राकारवर्तुलगोलकवत्या चणक-मुद्गजूर्ष वा कणिकाया दलेषु च पय शर्करापिण्डीकृतयवगोधूमादिपिष्टो-पादानकानि त्रिकोणशिरस्कडमर्वाकृतीनि चतुरङ्गुलोत्सेधानि घृत पाचितानि नवसप्तपञ्चान्यतमसख्यानि दीपपात्राणि निधाय तेषु गोघृतं कर्षप्रमित आपूर्य कर्पूरगर्भिता वर्तिका हृल्लेखया प्रज्वाल्य—

३ श्री ह्रौ ग्लू स्लू म्लू प्लू न्लू ह्रौ श्री—इति नवाक्षर्या रत्नेश्वरी-विद्यया अभिमन्त्र्य चक्रमुद्रा प्रदर्श्य मूलेनाभ्यर्च्य—

३ जगद्ध्वनिमन्त्रमात स्वाहा—इति मन्त्रपूर्वक गन्धाक्षतादिना घण्टा सम्पूज्य ता वादयन् जानुचुम्बितभूतल तत्पात्र आमस्तकमुद्धृत्य—

३ श्रीललितायै मङ्गलारार्तिक कल्पयामि नम ।

समस्तचक्रचक्रेशीयुते देवि नवात्मिके ।

आरार्तिकमिद तुभ्य गृहाण मम सिद्धये ॥

इति नववारं श्रीदेव्या आचूडं आचरणाब्जं परिभ्राम्य दक्षभागे स्थापयेत् ।

३ श्रीललितायै छत्र	कल्प० नम		३ श्रीललितायै गन्ध	कल्प० नम
,,	चामरयुगल ,,		,, पुष्प	,,
,,	दर्पण ,,		,, धूप	,,
,,	तालवृन्त ,,		,, दीप	,,

अथ नैवेद्यम्—देव्या पुरत स्वदक्षिण चतुरस्रमण्डल निमाय तत्र आधारोपरि नैवेद्य निधाय मूलेन प्रोक्ष्य वं इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य मूलेन त्रिवार अभिमन्त्र्य आपोशन दत्वा—

३ श्रीललितायै नैवेद्य कल्पयामि नम ॥

अथ श्रीललितायै पानीय उत्तरापोशन हस्तप्रक्षालन गण्डूष आचमनीय ताम्बूलञ्च कल्पयेत् ।

---

* एलालवङ्गकर्पूरकस्तूरीकेसरादिभि , जातीफलदलैं पूगैं लाङ्गल्यूषणनागरैं चूर्णखदिरसारैश्च युक्ता कर्पूरवीटिका ।

३ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः क्रों ह्स्ख्फ्रें ह्सौः ऐं—इति सर्वसंक्षोभिण्यादिनव-मुद्राः प्रदर्शयेत् ।

षोडश्युपासकास्तु ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः इति त्रिखण्डामपि प्रदर्शयेयुः ॥

चतुरायतनपूजा

नित्योत्सवे तु, तत्तद्देवतामन्त्रैः तर्पणमात्रमेव । विस्तरेणापि लिख्यते यथेच्छ विधेयम् ।

नैर्ऋते च गणेशानं सूर्यं वायव्य एव च ।
ईशाने विष्णुमाग्नेये शिवं चैव प्रपूजयेद् ॥

गणपतिपूजा

बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरुजाचक्राब्जपाशोत्पल
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्करम्भोरुहः ।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया श्लिष्टोज्ज्वलद्भूषया
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः ॥

श्रीमहागणपतिं ध्यायामि आवाहयामि महागणपतये नमः आसनं समर्पयामि पाद्यं समर्पयामि अर्घ्यं समर्पयामि आचमनीयं समर्पयामि मधुपर्कं समर्पयामि स्नानं समर्पयामि वस्त्रालङ्कारान् समर्पयामि । यज्ञोपवीतं समर्पयामि गन्धान् धारयामि ।

ॐ सुमुखाय नमः	ॐ धूमकेतवे नमः
एकदन्ताय ,,	गणाध्यक्षाय ,,
कपिलाय ,,	फालचन्द्राय ,,
गजकर्णकाय ,,	गजाननाय ,,
लम्बोदराय ,,	वक्रतुण्डाय ,,
विकटाय ,,	शूर्पकर्णाय ,,
विघ्नराजाय ,,	हेरम्बाय ,,
विनायकाय ,,	स्कन्दपूर्वजाय ,,

श्रीमहागणपतये नमः नानाविधपरिमलपुष्पाणि समर्पयामि ॥

३ 'गणपतिमूलं' महागणपति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिः सन्तर्पयेत् ॥

महागणपतये नमः, धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। नैवेद्यं समर्पयामि। मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं आचमनीयं, ताम्बूलं समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे वक्रतुण्डाय धीमहि। तन्नो दन्तिः प्रचोदयात्। महागणपतये नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि। अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः श्रीमहागणपतिः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥

सूर्यपूजा

मध्यारूढं रथेन्द्रे वसुदलसहिते वृत्तषट्कोणमध्ये
भास्वन्तं भास्करन्तं शुभदमसिगदाशङ्खचक्राब्जयुग्मम्।
वेदाकारं त्रिमूर्ति त्रिविधनयगुणं विश्वरूपं पुराणं
ह्रांह्रींह्रूङ्कारंरूपं सुरनुतमनिशं भावयेद्धृत्सरोजे॥

आदित्यं ध्यायामि। आवाहयामि। आदित्याय नमः, आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। मधुपर्कं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रालङ्कारान् समर्पयामि। यज्ञोपवीतं समर्पयामि गन्धान् धारयामि।

ॐ मित्राय	नमः	हिरण्यगर्भाय	नमः
रवये	,,	मरीचये	,,
ॐ सूर्याय	,,	आदित्याय	,,
भानवे	,,	सवित्रे	,,
खगाय	,,	अर्काय	,,
पूष्णे	,,	भास्कराय	,,

आदित्याय नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

३ *'आदित्यमूलं' आदित्यश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति त्रिः सन्तर्पयेत्॥*

आदित्याय नमः, धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। नैवेद्यं समर्पयामि। मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं आचमनीयं, ताम्बूलञ्च समर्पयामि। कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

ॐ भास्कराय विद्महे महाद्युतिकराय धीमहि। तन्नो आदित्यः प्रचोदयात्। आदित्याय नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि। समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि। अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः आदित्यः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु॥

विष्णुपूजा

शान्ताकारं भुजगशयनं पद्मनाभं सुरेशं
विश्वाकारं गगनसदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्।
लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानिगम्यं
वन्दे विष्णुं भवभयहरं सर्वलोकैकनाथम्॥

श्रीमहाविष्णुं ध्यायामि। आवाहयामि। महाविष्णवे नमः, आसनं समर्पयामि। पाद्यं समर्पयामि। अर्घ्यं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। मधुपर्कं समर्पयामि। स्नानं समर्पयामि। आचमनीयं समर्पयामि। वस्त्रालङ्कारान् समर्पयामि। यज्ञोपवीतं समर्पयामि गन्धान् धारयामि।

ॐ केशवाय	नमः	ॐ त्रिविक्रमाय	नमः
नारायणाय	,,	वामनाय	,,
माधवाय	,,	श्रीधराय	,,
गोविन्दाय	,,	हृषीकेशाय	,,
विष्णवे	,,	पद्मनाभाय	,,
मधुसूदनाय	,,	दामोदराय	,,

महाविष्णवे नमः नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि॥

३ 'अष्टाक्षरी' महाविष्णुश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः। इति त्रिः सन्तर्पयेत्।

महाविष्णवे नमः। धूपमाघ्रापयामि। दीपं दर्शयामि। नैवेद्यं समर्पयामि। मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालनं, आचमनीयं, ताम्बूलं समर्पयामि कर्पूरनीराजनं दर्शयामि।

ॐ नारायणाय विद्महे वासुदेवाय धीमहि। तन्नो विष्णुः प्रचोदयात्। महाविष्णवे नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि। प्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि।

समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि । अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः श्रीमहाविष्णुः सुप्रसन्नो वरदो भवतु ॥

शिवपूजा

मूले कल्पद्रुमस्य द्रुतकनकनिभं चारुपद्मासनस्थं
वामाङ्कारूढगौरीनिबिडकुचभराभोगगाढोपगूढम् ।
सर्वालङ्कारकान्तं वरपरशुमृगाभीतिहस्तं त्रिणेत्र
वन्दे बालेन्दुमौलिं गजवदनगुहाश्लिष्टपार्श्वं महेशम् ॥

साम्बपरमेश्वरं ध्यायामि । आवाहयामि । परमेश्वराय नमः, आसनं समर्पयामि । पाद्यं समर्पयामि । अर्घ्यं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि । मधुपर्कं समर्पयामि । स्नानं समर्पयामि । आचमनीयं समर्पयामि । वस्त्रालङ्कारान् समर्पयामि । यज्ञोपवीतं समर्पयामि । गन्धान् धारयामि ।

ॐ भवाय	देवाय नमः	ॐ रुद्राय	देवाय नमः
शर्वाय	,,	उग्राय	,,
ईशानाय	,,	भीमाय	,,
पशुपतये	,,	महते	,,

परमेश्वराय नमः । नानाविधपरिमलपत्रपुष्पाणि समर्पयामि ।

३ 'पञ्चाक्षरी' सम्बपरमेश्वरश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः । इति त्रिः सन्तर्पयेत् ॥

परमेश्वराय नमः । धूममाघ्रापयामि । दीपं दर्शयामि । नैवेद्यं समर्पयामि । मध्ये मध्ये पानीयं, उत्तरापोशनं, हस्तप्रक्षालनं, पादप्रक्षालन आचमनीयं, ताम्बूलञ्च समर्पयामि । कर्पूरनीराजनं दर्शयामि ॥

ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि । तन्नो रुद्रः प्रचोदयात् । परमेश्वराय नमः मन्त्रपुष्पं समर्पयामि । प्रदक्षिणनमस्कारान् समर्पयामि । समस्तराजोपचारदेवोपचारान् समर्पयामि । अनया पूजया भगवान्सर्वदेवात्मकः साम्बपरमेश्वरः सुप्रीतः सुप्रसन्नो वरदो भवतु ॥

अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं चतुरायतनार्चनम् ॥
इति सामान्यार्घ्योदकेन देव्या वामहस्ते पूजा समर्पयेत् ॥

लयाङ्गपूजा

३ 'मूल' श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी (पराभट्टारिका) श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति बिन्दौ देवीं त्रिः सन्तर्पयेत् ।

षडङ्गार्चनम्

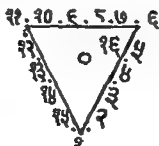
देव्यङ्गे (बिन्दौ) अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च—

३ ऐं क ५ हृदयाय नमः । हृदयशक्तिश्रीपादुकां पू० त० नमः ।
३ क्लीं ह ६ शिरसे स्वाहा । शिरःशक्तिश्रीपादुकां ,,
३ सौः स ४ शिखायै वषट् । शिखाशक्तिश्रीपादुकां ,,
३ ऐं क ५ कवचाय हुं । कवचशक्तिश्रीपादुकां ,,
३ क्लीं ह ६ नेत्रत्रयाय वौषट् । नेत्रशक्तिश्रीपादुकां ,,
३ सौः स ४ अस्त्राय फट् । अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां ,,

षोडशमुपासकानान्तु षोडशीषट्कूटेन षडङ्गपूजा ।

नित्यादेवीयजनम्

३ अ पञ्चदशी ॥ श्रीललितामहानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।
इति बिन्दौ महानित्यां त्रिर्यजेत् ॥
अथ तत्तत्तिथिनित्यामन्त्रेण तत्तत्तिथिनित्यां बिन्दौ त्रिर्यजेत् ।
ततः पूर्ववत् महानित्यां त्रिर्यजेत् ॥



ततो मध्यत्रिकोणस्य दक्षिणरेखायां वारुण्याद्याग्नेयान्तं क्रमेण अं आं इं ईं उं इति, पूर्वरेखायां आग्नेयादीशानान्तं ऊं ऋं ॠं लृं ॡं इति,

उत्तररेखाथ ईशानादिवारुण्यन्त ए ऐं ओ औं अं इति, पञ्चपञ्चस्वरान् विभाव्य तेषु वामावर्त्तेन कामेश्वर्यादिनित्या यजेत्। बिन्दौ षोडश स्वरं (अ॰) विचिन्त्य महानित्या यजेत्। यथा—

३ अ ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अं कामेश्वरीनित्याश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ आ ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्वान् भगेश्वरि ए ब्लूं जं ब्लूं भें ब्लूं मो ब्लूं हे ब्लूं हे क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्री हर ब्लें ह्रीं, आ भगमालिनीनित्याश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ इं ॐ ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा, इं नित्यक्लिन्नानित्या श्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं श्रौं छ्रौं ज्रौं स्वाहा ईं भेरुण्डानित्याश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ उ ओं ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः उं वह्निवासिनीनित्याश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं ऊ महावज्रेश्वरीनित्या श्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः

३ ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः ऋ शिवदूतीनित्याश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ ॠं ॐ ह्रीं हु खे च छे क्ष स्त्रीं हु क्षे ह्रीं फट् ॠं त्वरितानित्याश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ ऌ ऐं क्लीं सौः ऌ कुलसुन्दरीनित्याश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ ॡ ह्स्क्लरडैं ह्स्क्लरडीं ह्स्क्लरडौं ॡ नित्यानित्याश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ ऐं ह्रीं फ्रें स्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं ऐं नीलपताका नित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ ऐं म्म्र्यूं ऐं विजया नित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ ओं स्वौं ओ सर्वमङ्गलानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वलज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं हूं र र र र र र र हुं फट् स्वाहा औं ज्वालामालिनीनित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

३ अं च्क्रौं अं चित्रानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

३ अः पञ्चदशी अः ललितामहानित्याश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

एवं शुक्लपक्षे । कृष्णपक्षे तु चित्राद्याः कामेश्वर्यन्ताः तिथिनित्याः स्वस्वमन्त्रेण तथैव सम्पूज्य बिन्दौ महानित्यां यजेत् ॥

गुरुमण्डलार्चनम्

३ परौघेभ्यो नमः । इति बिन्दुत्रिकोणयोः पुष्पाञ्जलिं दत्त्वा बिन्दौ महापादुकां यजेत् ॥ यथा—

३ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं ह्स्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं ह्सौः सहक्षमलवरयीं स्हौः श्रीविद्यानन्दनाथात्मकचर्यानन्दनाथश्रीमहापादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ॥

त्रिकोणे वामकोणादारभ्य पूर्वरेखायां—

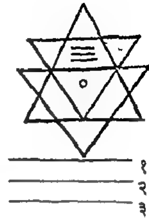
३ उड्डीशानन्दनाथ श्रीपादुकां पू० त० नमः
३ प्रकाशानन्दनाथ ,,
३ विमर्शानन्दनाथ ,,
३ आनन्दानन्दनाथ ,,

दक्षकोणादारभ्य दक्षरेखायां—

३ षष्ठीशानन्दनाथ ,,
३ ज्ञानानन्दनाथ ,,
३ सत्यानन्दनाथ श्रीपादुकां पू० त० नमः
३ पूर्णानन्दनाथ ,,

स्वाग्रकोणादारभ्य वामरेखायां-

३ मित्रेशानन्दनाथ ,,
३ स्वभावानन्दनाथ ,,
३ प्रतिभानन्दनाथ ,,
३ सुभगानन्दनाथ ,,



ततो देव्याः पश्चात् मूलत्रिकोणपूर्वरेखायाः तदव्यवहितप्रागग्रत्रिकोणपश्चिमरेखायाश्चान्तरे विमलाजयिन्योर्मध्ये अरुणावाग्देवतासन्निधौ दक्षिणोत्तरायतं रेखात्रयं विभाव्य दक्षिणसंस्थाक्रमेण दिव्यसिद्धमानवाख्यमोघत्रयं मुनिवेदवसुसङ्ख्यं समर्चयेत् ।

यथा—

३ दिव्यौघसिद्धौघमानवौघेभ्यो नमः—इति पुष्पाञ्जलिः ।

दिव्यौघः । प्रथमरेखायां—

३ परप्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पू० त० नमः
३ परशिवानन्दनाथ ,,
३ पराशक्त्यम्बा ,,
३ कौलेश्वरनन्दनाथ ,,
३ शुक्लदेव्यम्बा ,,
३ कुलेश्वरानन्दनाथ ,,
३ कामेश्वर्यम्बा ,,

सिद्धौघः । द्वितीयरेखायां—

३ भोगानन्दनाथ ,,
३ क्लिन्नानन्दनाथ ,,
३ समयानन्दनाथ ,,
३ सहजानन्दनाथ ,,

मानवौघः । तृतीयरेखायां—

३ गगनानन्दनाथ श्रीपादुकां पू० त० नमः
३ विश्वानन्दनाथ ,,
३ विमलानन्दनाथ ,,
३ मदनानन्दनाथ ,,
३ भुवनानन्दनाथ ,,
३ लीलाम्बा ,,
३ स्वात्मानन्दनाथ ,,
३ प्रियानन्दनाथ ,,

ततः प्रथमरेखायां परमेष्ठिगुरुमन्त्रेण परमेष्ठिगुरुं, द्वितीयरेखायां परमगुरुमन्त्रेण परमगुरुं, तृतीयरेखाया स्वगुरुमन्त्रेण स्वगुरुञ्च यजेत् ॥

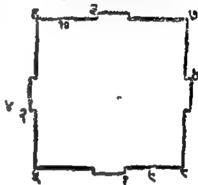
आवरणपूजा

३ संविन्मये परे देवि परामृतरुचि प्रिये।
अनुज्ञां त्रिपुरे देहि परिवारार्चनाय मे ॥

प्रथमावरणम्

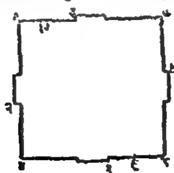
३ अ आ सौ त्रैलोक्यमोहनचक्राय नमः । इति पुष्पाञ्जलिं दद्यात् ॥

क्रमेण शुक्लारुणपीतवर्णरेखात्रयस्य लकारप्रकृतिकपृथिव्यात्मकस्य चतुरस्रस्य प्रवेशरीत्या प्रथमरेखाया पश्चिमादिद्वारचतुष्टयदक्षिणभागेषु वाय्वादिकोणेषु च पश्चिमनैर्ऋतयोः पूर्वेशानयोश्च मध्ये क्रमेण—



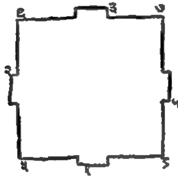
३ अं अणिमासिद्धि श्रीपादुकां पू० त० नमः	३ पं प्राकाम्यसिद्धि श्रीपादुकां पू० त० नमः
३ लं लघिमासिद्धि ,,	३ भुं भुक्तिसिद्धि ,,
३ मं महिमासिद्धि ,,	३ इं इच्छासिद्धि ,,
३ ईं ईशित्वसिद्धि ,,	३ पं प्राप्तिसिद्धि ,,
३ वं वशित्वसिद्धि ,,	३ सं सर्वकामसिद्धि ,,

इति स्वस्य तत्तदाभिमुख्यं भावयन् पूजयेत् । एवमुत्तरत्रापि ॥
अथ चतुरस्रमध्यरेखायां प्रागुक्तद्वारवामभागेषु च क्रमेण—



३ आं ब्राह्मीमातृ श्रीपादुकां पू० त० नमः		३ लूं वाराहीमातृ श्रीपादुकां पू० त० नमः	
३ ईं माहेश्वरीमातृ	"	३ ऐं माहेन्द्रीमातृ	"
३ ऊं कौमारीमातृ	"	३ औं चामुण्डामातृ	"
३ ॠं वैष्णवीमातृ	"	३ अः महालक्ष्मीमातृ	"

ततः चतुरस्रान्त्यरेखायां प्रथमरेखोक्तक्रमेण—



३ द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्ति श्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः।
३ द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्ति "
३ क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्ति "
३ ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राशक्ति "
३ सः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्ति "
३ क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्ति "
३ ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्ति "
३ ह्सौः सर्वबीजामुद्राशक्ति "
३ ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्ति "
३ ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्ति श्रीपादुका पू० त० नमः।
३ एताः प्रकटयोगिन्यः त्रैलोक्यमोहने चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

अणिमासिद्धेः पुरतः—

३ अं आं सौः त्रिपुराचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पू० त० नमः

३ अं *अणिमासिद्धिः ,,

३ द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्ति ,,

३ द्रां इति सर्वसंक्षोभिणीमुद्रां प्रदर्श्य—

३ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं प्रथमावरणार्चनम् ॥

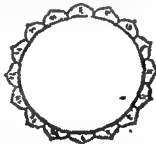
इति सामान्यार्घ्योदकेन देव्या वामहस्ते पूजां समर्प्य—

३ प्रकटयोगिनीमयूखायै प्रथमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः । इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥

द्वितीयावरणम्

३ ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्राय नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

श्वेतवर्णे सकारप्रकृतिके षोडशकलात्मके चन्द्रस्वरूपे स्रवदमृतरसे षोडशदलकमले देव्यग्रदलमारभ्य वामावर्तेन—



३ अं कामाकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुका पू० त० नमः

३ आं बुद्ध्याकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,

३ इं अहङ्काराकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,

३ ईं शब्दाकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,

३ उं स्पर्शाकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,

३ ऊं रूपाकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,

३ ऋं रसाकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,

* पत्रे स्वर्णा दक्षे सिद्धिः, वामे मुद्रा । एवमुत्तरत्रापि ।

३ ॠं गन्धाकर्षिणी नित्याकलादेवी श्रीपादुकां पू०त० नमः
३ ऌं चित्ताकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
३ ॡं धैर्याकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
३ एं स्मृत्याकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
३ ऐं नामाकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
३ ओं बीजाकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
३ औं आत्माकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
३ अं अमृताकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,
३ अः शरीराकर्षिणी नित्याकलादेवी ,,

३ एताः गुप्तयोगिन्यः सर्वाशापरिपूरके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

कामाकर्षिण्याः पुरतः—

३ ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेशी चक्रेश्वरी श्रीपादुकां पू० त० नमः
३ लं लघिमासिद्धि ,,
३ द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्राशक्ति ,,

३ द्रीं—इति सर्वविद्राविणीमुद्रां प्रदर्श्य—

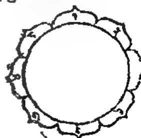
३ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥ इति पूजां समर्प्य—

३ गुप्तयोगिनीमयूखायै द्वितीयावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः । इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

तृतीयावरणम्

३ ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्राय नमः । (पुष्पाञ्जलिः)

हकारप्रकृतिक—अष्टमूर्त्यात्मक-शिवाभिन्ने जपाकुसुमनिभे अष्टपत्रे श्रीदेव्याः पृष्ठदलमारभ्य पूर्वादिदिक्षु आग्नेयादिविदिक्षु च क्रमेण—



३ कं खं गं घं ङं अनङ्गकुसुमादेवी श्रीपादुकां पू० त० नमः
३ चं छं जं झं ञं अनङ्गमेखलादेवी "
३ टं ठं डं ढं णं अनङ्गमदनादेवी "
३ तं थं दं धं नं अनङ्गमदनातुरादेवी "
३ पं फं बं भं मं अनङ्गरेखादेवी "
३ यं रं लं वं अनङ्गवेगिनीदेवी "
३ शं षं सं हं अनङ्गाङ्कुशादेवी "
३ ळं क्षं अनङ्गमालिनीदेवी "
३ एताः गुप्ततरयोगिन्यः सर्वसंक्षोभणे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

अनङ्गकुसुमायाः पुरतः—

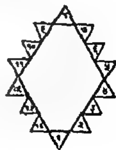
३ ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पू० त० नमः
३ मं महिमासिद्धि "
३ क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्ति "
३ क्लीं—इति सर्वाकर्षिणीमुद्रां प्रदर्श्य—
३ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तृतीयावरणार्चनम्॥ इति पूजां समर्प्य—
३ गुप्ततरयोगिनीमयूखायै तृतीयावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः।

इति योनिमुद्रया प्रणमेत्॥

तुरीयावरणम्

३ हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

ईकारप्रकृतिकचतुर्दशभुवनात्मक-महामायारूपे दाडिमीप्रसूनसहोदरे चतुर्दशारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन—



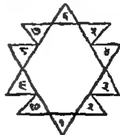
३ कं सर्वसंक्षोभिणीशक्ति श्रीपादुकां पू० त० नमः
३ खं सर्वविद्राविणीशक्ति ,,
३ गं सर्वाकर्षिणीशक्ति ,,
३ घं सर्वाह्लादिनीशक्ति ,,
३ ङं सर्वसम्मोहिनीशक्ति ,,
३ चं सर्वस्तम्भिनीशक्ति ,,
३ छं सर्वजृम्भिणीशक्ति ,,
३ जं सर्ववशङ्करीशक्ति श्रीपादुकां पू० त० नमः
३ झं सर्वरञ्जिनीशक्ति ,,
३ ञं सर्वोन्मादिनीशक्ति ,,
३ टं सर्वार्थसाधिनीशक्ति ,,
३ ठं सर्वसम्पत्तिपूरणीशक्ति ,,
३ डं सर्वमन्त्रमयीशक्ति ,,
३ ढं सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करीशक्ति ,,

३ एताः सम्प्रदाययोगिन्यः सर्वसौभाग्यदायके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः (पुष्पाञ्जलिः) । सर्वसंक्षोभिण्याः पुरतः—

३ ह्रैं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुरवासिनीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पू० त० नमः
३ ईं ईशित्वसिद्धि ,,
३ ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राशक्ति ,,
३ ब्लूं इति सर्ववशङ्करीमुद्रां प्रदर्श्य—
३ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं तुरीयावरणार्चनम् ॥ इति पूजा समर्प्य—
३ सम्प्रदाययोगिनीमयूखायै तुरीयावरणदेवतासहितायै
श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः ।
इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

पञ्चमावरणम्

३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय नमः । (पुष्पाञ्जलिः)



एकारप्रकृतिकदशावतारात्मक-विष्णुस्वरूपे प्रभापराभूतसिन्दूरे बहिर्दशारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन—

३ णं सर्वसिद्धिप्रदादेवी श्रीपादुकां पू० त० नमः	३ नं सर्वदुःखविमोचिनीदेवी श्रीपादुकां पू० त० नमः
३ तं सर्वसम्पत्प्रदादेवी ,,	३ पं सर्वमृत्युप्रशमनीदेवी ,,
३ थं सर्वप्रियङ्करीदेवी ,,	३ फं सर्वविघ्ननिवारिणीदेवी ,,
३ दं सर्वमङ्गलकारिणीदेवी ,,	३ बं सर्वाङ्गसुन्दरीदेवी ,,
३ धं सर्वकामप्रदादेवी ,,	३ भं सर्वसौभाग्यदायिनीदेवी ,,

३ एताः कुलोत्तीर्णयोगिन्यः सर्वार्थसाधके चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः) सर्वसिद्धिप्रदायाः पुरतः—

३ हसैं हस्क्लीं हस्सौः त्रिपुराश्रीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पू० त० नमः

३ वं वशित्वसिद्धि ,,

३ साः सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्ति ,,

३ साः—इति सर्वोन्मादिनीमुद्रां प्रदर्श्य—

३ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चमावरणार्चनम्॥ इति पूजां समर्प्य—

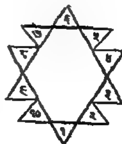
३ कुलोत्तीर्णयोगिनीमयूखायै पञ्चमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः।

इति योनिमुद्रया प्रणमेत्॥

षष्ठावरणम्

३ ह्रीं क्लीं ब्लैं सर्वरक्षाचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः)

रेफप्रकृतिक—दशकलात्मक-वैश्वानराभिन्ने जपासुमनसहचरे अन्तर्दशारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन :—



३ म सर्वज्ञादेवी श्रीपादुका पू० त० नम.	३ श सर्वाधारस्वरूपादेवी श्रीपादुका पू० त० नम
३ य सर्वशक्तिदेवी ,,	३ पं सर्वपापहरादेवी ,,
३ रं सर्वैश्वर्यप्रदादेवी ,,	३ स सर्वानन्दमयीदेवी ,,
३ ल सर्वज्ञानमयीदेवी ,,	३ हं सर्वरक्षास्वरूपिणीदेवी ,,
३ व सर्वव्याधिविनाशिनीदेवी ,,	३ क्षं सर्वेप्सितफलप्रदादेवी ,,

३ एता निगर्भयोगिन्य सर्वरक्षाकरे चक्रे समुद्रा ससिद्धय सायुधा सशक्तय सवाहना सपरिवारा सर्वोपचारै सम्पूजिता सन्तर्पिता सन्तुष्टा सन्तु नम । (पुष्पाञ्जलि)

सर्वज्ञाया पुरत—

३ ह्री क्ली ब्लें त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वरी श्रीपादुका पू० त० नम

३ प प्राकाम्यसिद्धि ,,

३ क्रो सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्ति ,,

३ क्रो—इति सर्वमहाङ्कुशामुद्रा पदर्श्य—

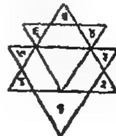
३ अभीष्टसिद्धि मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं पञ्चाम्यावरणार्चनम् ॥ इति पूजा समर्प्य—

३ निगर्भयोगिनीमयूखायै पञ्चावरणदेवतासहितायै श्रीश्रीललितामहात्रिपुर-सुन्दरीपराभट्टारिकायै नम । इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥

सप्तमावरणम्

३ ह्री श्री सौ सर्वरोगहरचक्राय नम (पुष्पाञ्जलि)

ककारप्रकृतिक-अष्टमूर्त्यात्मक-कामेश्वरस्वरूपे पद्मरागरुचिरे अष्टारे देव्यग्रकोणमारभ्य वामावर्तेन—



३ अ आ इ ई उ ऊ ऋ ॠ ऌ ॡ ए ऐ ओ औ अं अः ब्लूं वशिनी वाग्देवता श्रीपादुका पू० त० नम

३ कं खं गं घं ङं क्ल्ह्रीं कामेश्वरी वाग्देवता श्रीपादुकां पू० त० नमः
३ चं छं जं झं ञं न्व्लीं मोदिनी वाग्देवता „
३ टं ठं डं ढं णं य्लूं विमला वाग्देवता „
३ तं थं दं धं नं ज्म्रीं अरुणा वाग्देवता „
३ पं फं बं भं मं ह्स्ल्व्यूं जयिनी वाग्देवता „
३ यं रं लं वं झ्म्र्यूं सर्वेश्वरी वाग्देवता „
३ शं षं सं हं ळं क्षं क्ष्म्रीं कौलिनी वाग्देवता „

३ एताः रहस्ययोगिन्यः सर्वरोगहरे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः । (पुष्पाञ्जलिः) वशिन्याः पुरतः—
३ ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पू० त० नमः
३ भुं भुक्तिसिद्धि „
३ ह्स्ल्क्रौं सर्वखेचरीमुद्राशक्ति „
३ ह्स्ल्क्रौं—इति सर्वखेचरीमुद्रां प्रदर्श्य—
३ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं सप्तमावरणार्चनम् ॥ इति पूजां समर्प्य—
३ रहस्ययोगिनीमयूखायै सप्तमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः । इति योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥

अष्टमावरणम्

मध्यत्र्यस्रस्य बहिः पश्चिमादिदिक्षु प्रादक्षिण्येन—

३ या रा ला वा सा द्रा द्री क्लीं ब्लू स सर्वजम्भनेभ्य कामेश्वरीकामेश्वरबाणेभ्यो नम । बाणशक्तिश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नम ।

३ थं धं सर्वसम्मोहनाभ्या कामेश्वरीकामेश्वरधनुर्भ्या नम । धनु शक्तिश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नम ।

३ ह्रीं आ सर्ववशीकरणाभ्या कामेश्वरीकामेश्वरपाशाभ्या नम पाशशक्तिश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नम ।

३ क्रो क्रो सर्वस्तम्भनाभ्या कामेश्वरीकामेश्वराङ्कुशाभ्या नम । अङ्कुशशक्तिश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नम ।
इत्यायुधार्चनं विदध्यात् । तत —

३ ह्सैं ह्स्क्लरी ह्स्रौ सर्वसिद्धिप्रदचक्राय नम । (पुष्पाञ्जलि)

नादप्रकृतिगुणत्रयप्रधानत्रिशक्तिरूपरेखात्रयात्मके बन्धूकपुष्पवर्णकिरणे त्रिकोणे, अग्रदक्षवामकोणेषु बिन्दौ च क्रमेण—

३ ऐं क ५ अग्निचक्रे कामगिरिपीठे मित्रेशनाथ-नवयोनिचक्रात्मक-आत्मतत्व - सृष्टिकृत्य—जाग्रद्दशाधिष्ठायक—इच्छाशक्ति वाग्भवात्मक - वागीश्वरीस्वरूप रुद्रात्मशक्ति महाकामेश्वरी श्रीपादुका पू० त० नम ।

३ क्लीं ह ६ सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठीशनाथ-दशारद्वयचतुर्दशारचक्रात्मक विद्यातत्व-स्थितिकृत्य—स्वप्नदशाधिष्ठायक—ज्ञानशक्ति-कामराजात्मक—कामकलास्वरूप - विष्ण्वात्मशक्ति- महावज्रेश्वरीश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नम ।

३ सौ स ४ सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथ-अष्टदलषोडशदलचतुरस्रचक्रात्मक - शिवतत्व - संहारकृत्य - सुषुप्तिदशाधिष्ठायक क्रियाशक्ति—शक्तिबीजात्मक परापरशक्तिस्वरूप - ब्रह्मात्मशक्ति - महाभगमालिनी श्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नम ।

३ ऐं क ५ क्लीं ह ६ सौ स ४ परब्रह्मचक्रे महोड्याणपीठे चर्यानन्दनाथ समस्तचक्रात्मक - सपरिवारपरमतत्व सृष्टिस्थितिसंहारकृत्य तुरीय दशाधिष्ठायक - इच्छाज्ञानक्रियाशान्ताशक्ति - वाग्भवकामराजशक्तिबीजात्मक —परमशक्तिस्वरूप —परब्रह्मात्मशक्ति—श्रीमहात्रिपुरसुन्दरी श्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नम ।

३ एताः अतिरहस्ययोगिन्यः सर्वसिद्धिप्रदे चक्रे समुद्राः ससिद्धयः सायुधाः सशक्तयः सवाहनाः सपरिवाराः सर्वोपचारैः सम्पूजिताः सन्तर्पिताः सन्तुष्टाः सन्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः) महाकामेश्वर्याः पुरतः—

३ ह्स्रैं ह्स्क्ल्रीं ह्स्रौः त्रिपुराम्बाचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ इं इच्छासिद्धि ,,

३ ह्सौः—सर्वबीजमुद्राशक्ति ,,

३ ह्सौः—इति सर्वबीजमुद्रां प्रदर्श्य—

३ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्यमष्टमावरणार्चनम् ॥ इति पूजां समर्प्य—

३ अतिरहस्ययोगिनीमयूखायै अष्टमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः। योनिमुद्रया प्रणमेत् ॥

नवमावरणम्।

३ क-१५ सर्वानन्दमयचक्राय नमः। (पुष्पाञ्जलिः)
बिन्द्वभिन्नपरब्रह्मात्मके बिन्दुचक्रे—

३ 'मूलं' श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति त्रिः सन्तर्प्य।

३ एषा परापरातिरहस्ययोगिनी सर्वानन्दमये चक्रे समुद्रा ससिद्धिः सायुधा सशक्तिः सवाहना सपरिवारा सर्वोपचारैः सम्पूजिता सन्तर्पिता सन्तुष्टास्तु नमः। (पुष्पाञ्जलिः) महात्रिपुरसुन्दर्याः पुरतः—

३ 'पञ्चदशी' श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वरी श्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ पं प्राप्तिसिद्धि ,,

३ ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्ति ,,

३ ऐं—इति सर्वयोनिमुद्रां प्रदर्श्य*

३ अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले।
भक्त्या समर्पये तुभ्य नवमावरणार्चनम् ॥ इति पूजां समर्प्य—

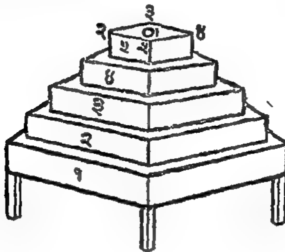
---

* षोडश्युपासकानामेव—
३ ह्सकह्ल ह्सकह्ल सकलह्रीं तुरीयाम्बा श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति त्रिः संतर्प्य—

३ परापरातिरहस्ययोगिनीमयूखायै नवमावरणदेवतासहितायै श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै नमः । योनिमुद्रया प्रणमेत् ।

पञ्चपञ्चिकापूजा ।

बिन्दुचक्रोपरि सिंहासनाकारेण पीठभावनां कृत्वा मध्ये वायवीशानाग्नि-निर्ऋतिकोणेषु च क्रमेण यजेत् ॥



१ पञ्च लक्ष्म्य. ।

३ मूलं । श्रीविद्यालक्ष्म्यम्बाश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नम. । (मध्ये)
३ श्री । लक्ष्मीलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः । (वायव्ये)

---

३ सर्वानन्दमये चक्रे महोड्याणपीठे चर्यानन्दनाथात्मकतुरीयातीतदशाधिष्ठायक-शान्त्यतीतकलात्मक-प्रकाशविमर्शसामरस्यात्मक परब्रह्मस्वरूपिणी परामृतशक्तिः सर्वमन्त्रेश्वरी सर्वपीठेश्वरी सर्वयोगेश्वरी सर्ववागीश्वरी सर्वसिद्धेश्वरी सर्ववीरेश्वरी सर्वजगदुत्पत्तिमातृका सचक्रा सदेवता सासना सायुधा सशक्ति सवाहना सपरिवारा सचक्रेशिका परया अपरया परापरया सपर्यया सर्वोपचारै सम्पूजिता सन्तर्पिता सन्तुष्टास्तु नमः । इति समष्ट्यञ्जलिं विधाय ।

३ सं सर्वकामसिद्धि श्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नम ।
३ ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्तिश्रीपादुकां पू० त० नमः ।
३ ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौ. सर्वत्रिखण्डामुद्रा प्रदर्श्य ।

३ ॐ श्रीं ह्रीं श्रीं कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद श्रीं ह्रीं श्रीं ॐ महालक्ष्म्यै नमः। महालक्ष्मीलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (ईशाने)
३ श्रीं ह्रीं क्लीं। त्रिशक्तिलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (आग्नेये)
३ श्रीं सहकलह्रीं श्रीं। सर्वसाम्राज्यलक्ष्म्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (नैर्ऋते)

२ पञ्च कोशाम्बाः

३ मूलं। श्रीविद्याकोशाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (मध्ये)
३ ॐ ह्रीं हंसस्सोहं स्वाहा। परंज्योतिः–कोशाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (वायव्ये)
३ ॐ हंसः। परानिष्कलाकोशाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (ईशाने)
३ हंसः। अजपाकोशाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (आग्नेये)
३ अं आं+ळं क्षं। मातृकाकोशाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (नैर्ऋते)

३ पञ्च कल्पलताः

३ मूलं। श्रीविद्याकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (मध्ये)
३ ह्रीं क्लीं ऐं ब्लूं स्त्रीं। (पञ्चकामेश्वरी) त्वरिताकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (वायव्ये)
३ ॐ ह्रीं ह्रां हसकलह्रीं ॐ सरस्वत्यै नमः हस्रैं। पारिजातेश्वरीकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। (ईशाने)
३ श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं क्लीं सौः। (कुमारी) त्रिपुटाकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (आग्नेये)
३ द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः। पञ्चबाणेश्वरीकल्पलताम्बाश्रीपादुकां पू०त० नमः। (नैर्ऋते)

४ पञ्च कामदुघाः

३ मूलं। श्रीविद्याकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (मध्ये)
३ ॐ ह्रीं हंसः जुं सञ्जीवनि जीवं प्राणग्रन्थिस्थं कुरु कुरु स्वाहा। अमृतपीठेश्वरीकामदुघाम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः। (वायव्ये)

३ ऐं वद वद वाग्वादिनि ह्स्लैं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि महाक्षोभं कुरु कुरु हस्क्लरीं सौः ॐ मोक्षं कुरु कुरु ह्स्रौः, सुधाकामदुघाम्बाश्रीपादुका, पू० त० नमः । (ईशाने)

३ ऐं ब्लूं झ्रौं जुं सः अमृते अमृतोद्भवे अमृतेश्वरि अमृतवर्षिणी अमृतं स्रावय स्रावय स्वाहा । अमृतेश्वरीकामदुघाम्बाश्रीपादुका पू० त० नमः । (आग्नेये)

३ ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति माहेश्वरि अन्नपूर्णे ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा । अन्नपूर्णाकामदुघाम्बाश्रीपादुका पू० त० नमः । (नैर्ऋते)

५ पञ्च रत्नाम्बाः

३ मूल । श्रीविद्यारत्नाम्बा श्रीपादुका पू० त० नमः । (मध्ये)

३ ज्स्रौं महाचण्डे तेजःसङ्कर्षिणी कालमन्थाने हुः । सिद्धलक्ष्मीरत्नाम्बा-श्रीपादुका पू० त० नमः । (वायव्ये)

३ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति श्रीमातङ्गीश्वरि सर्वजनमनोहरि सर्वसुखरञ्जनि क्लींह्रींश्रींसर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सर्वदुष्टमृगवशङ्करि सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि त्रैलोक्यं मे वशमानय स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं । राजमातङ्गीश्वरीरत्नाम्बा-श्रीपादुका पू० त० नमः । (ईशाने)

३ श्रीं ह्रीं श्रीं । भुवनेश्वरीरत्नाम्बाश्रीपादुका पू० त० नम. । (आग्नेये)

३ ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि अन्धे अन्धिनि नमः रुन्धे रुन्धिनि नमः जम्भे जम्भिनि नमः मोहे मोहिनि नमः स्तम्भे स्तम्भिनि नमः सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं ऐं ग्लौं ऐं ठः ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा । वाराहीरत्नाम्बाश्रीपादुका पू० त० नम । (नैर्ऋते)

षड्दर्शनविद्या

३ तारे तुत्तारे तुरे स्वाहा । तारादेवताधिष्ठितबौद्धदर्शनश्रीपादुका पू० त० नमः ।

३ 'गायत्री' परोरजसे सावदो। ब्रह्मदेवताधिष्ठितवैदिकदर्शनपादुकां पू० त० नमः।

३ ॐ ह्रीं नमश्शिवाय। रुद्रदेवताधिष्ठितशैवदर्शनश्रीपादुकां पू० त० नमः

३ ॐ ह्रीं घृणिस्सूर्य आदित्यों। सूर्यदेवताधिष्ठितसौरदर्शनश्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ ॐ नमो नारायणाय। विष्णुदेवताधिष्ठितवैष्णवदर्शनश्रीपादुकां पू०त० नमः।

३ ॐश्रींह्रींश्रीं। भुवनेश्वरीदेवताधिष्ठितशाक्तदर्शनश्रीपादुकां पू०त० नमः

षडाधारपूजा

३ सां हंसः मूलाधाराधिष्ठानदेवतायै साकिनीसहितगणनाथस्वरूपिण्यै नमः गणनाथस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ कां सोहं स्वाधिष्ठानाधिष्ठानदेवतायै काकिनीसहितब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः ब्रह्मस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ लां हंसस्सोहं मणिपूरकाधिष्ठानदेवतायै लाकिनीसहितविष्णुस्वरूपिण्यै नमः। विष्णुस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुका पू० त० नमः।

३ रां हंसश्शिवस्सोहं अनाहताधिष्ठानदेवतायै राकिणीसहितसदाशिव-स्वरूपिण्यै नमः। सदाशिवस्वरूपिण्यम्बाश्रीदुकां पू० त० नमः।

३ डा सोहं हसश्शिवः विशुद्ध्यधिष्ठानदेवतायै डाकिनीसहितजीवेश्वर-स्वरूपिण्यै नमः। जीवेश्वरस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ हां हसश्शिवस्सोहं सोहं हंसश्शिवः आज्ञाधिष्ठानदेवतायै डाकिनी-सहितपरमात्मस्वरूपिण्यै नमः। परमात्मस्वरूपिण्यम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः।

आम्नायसमष्टिपूजा

३ ह्सैं ह्स्क्लरीं ह्सौं। पूर्वाम्नायसमयविद्येश्वर्युन्मोदिनीदेव्यम्बा श्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ ॐ ह्रीं ऐं क्लिन्ने क्लिन्नमदद्रवे कुले ह्सौः। दक्षिणाम्नायसमयविद्ये-श्वरीभोगिनीदेव्याम्बाश्रीपादुकां पू० त० नमः।

३ हसैं ह्स्त्री ह्स्रौ हस्ख्फ्रे भगवत्यम्बे हसक्षमलवरयूं ह्स्ख्फ्रें अघोरमुखि छ्रां छ्रीं किणि किणि विच्चे ह्स्रौ हस्ख्फ्रें ह्सौं. । पश्चिमाम्नायसमय-विद्येश्वरीकुब्जिकादेव्यम्बाश्रीपादुका पू० त० नम. ।

३ ह्स्ख्फ्रें महाचण्डयोगीश्वरि कालिके फट् । उत्तराम्नायसमयविद्येश्वरी-कालिकादेव्यम्बाश्रीपादुका पू० त० नम. ।*

दण्डनायानामानि

ॐ पञ्चम्यै	नम.	ॐ पोत्रिण्यै	नम.
दण्डनाथायै	,,	शिवायै	,,
सङ्केतायै	,,	वार्ताल्यै	,,
समयेश्वर्यै	,,	महासेनायै	,,
समयसङ्केतायै	,,	आज्ञाचक्रेश्वर्यै	,,
वाराह्यै	,,	अरिघ्न्यै	,,

मन्त्रिणीनामानि

ॐ सगीतयोगिन्यै	नम.	ॐ वीणावत्यै	नमः
श्यामायै	,,	वैणिक्यै	,,
श्यामलायै	,,	मुद्रिण्यै	,,
मन्त्रनायिकायै	,,	प्रियकप्रियायै	,,
मन्त्रिण्यै	,,	नीपप्रियायै	,,
सचिवेशान्यै	,,	कदम्बेश्यै	,,
प्रधानेश्यै	,,	कदम्बवनवासिन्यै	,,
शुकप्रियायै	,,	सदामदायै	,,

* षोडश्युपासकानाम् ।

३ मखफरयघच् महिचनडयड् गशफर् ऊर्ध्वाम्नायसमयविद्येश्वर्यम्बा-श्रीपादुका पू० त० नम ।

३ भगवति विच्चे महामाये मातङ्गिनि ब्लूं अनुत्तरवाग्वादिनि ह्स्ख्फ्रें ह्स्ख्फ्रें ह्स्रौः । अनुत्तराम्नायम्बाश्रीपादुका पू० त० नम. ।

ललितानामानि

ॐ सिंहासनेश्यै	नमः	ॐ कामेश्यै	नमः
ललितायै	,,	परमेश्वर्यै	,,
महाराज्यै	,,	कामराजप्रियायै	,,
वराङ्कुशायै	,,	कामकोटिकायै	,,
चापिन्यै	,,	चक्रवर्तिन्यै	,,
त्रिपुरायै	,,	महाविद्यायै	,,
महात्रिपुरसुन्दर्यै	,,	शिवायै	,,
सुन्दरिचक्रनाथायै	,,	अनङ्गवल्लभायै	,,
सम्राज्ञ्यै	,,	सर्वपाटलायै	,,
चक्रिण्यै	,,	कुलनाथायै	,,
चक्रेश्वर्यै	,,	आम्नायनाथायै	,,
महादेव्यै	,,	सर्वाम्नायनिवासिन्यै	,,

ॐ शृङ्गारनायिकायै नमः

(अथ यथावकाशं सहस्रनामावल्यादिना अर्चनं कुर्यात् ।)

अथ पुनरपि श्रीदेव्यै पूर्ववत् धूपदीपौ कल्पयित्वा सर्वसंक्षोभिण्यादि मुद्राः सबीजाः प्रदर्श्य, मूलेन त्रिवारं सन्तर्प्य महानैवेद्यं समर्पयेत् । यथा–श्रीदेव्यग्रे चतुरस्रमण्डलं सामान्योदकेन विधाय तत्र आधारोपरि स्थापितं सौवर्णरौप्य-कांस्यादिस्थालीचषकभरितं भक्ष्यभोज्यचोष्यलेह्यपेयात्मकं सद्रव्यशुध्यादि-रसवद्व्यञ्जनमञ्जुलं प्राज्यकपिलाज्यं दधिदुग्धमुग्धं यथासम्भवं वा नैवेद्यं विधाय ।

"स्विन्नं वामे आमं दक्षिणे निदध्यात्" इति श्यामारहस्ये दृष्टम् । सुन्दरीमहोदये तु—"देव्या वामे दीपो दक्षिणे नैवेद्यम्" इत्युक्तम् ।

'ऐं ह्रीं श्रीं मूलेन त्रिः प्रोक्ष्य, वं इति धेनुमुद्रया अमृतीकृत्य, सप्तवारं मूलेनाभिमन्त्र्य, पूर्ववत् आपोशनं कल्पयित्वा ।

हैमपात्रगतं देवि परमान्नं सुसंस्कृतम् ।
पञ्चधा षड्रसोपेतं गृहाण परेश्वरि ॥

इति प्रार्थ्य, पूर्वोक्तनैवेद्योपचारमन्त्रेण निवेद्य, तत्तन्मुद्राविधानपूर्वकं पञ्चप्राणाहुतीः कल्पयेत् । यथा—

ऐं ह्रीं श्री, ऐं प्राणाय स्वाहा, ३ क्लीं अपानाय स्वाहा, ३ सौः व्यानाय स्वाहा, ३ ऐंक्लीं उदानाय स्वाहा, ३ ऐं क्लीं सौः समानाय स्वाहा । ब्रह्मणे स्वाहा । ततः—

३ क ए ई ल ह्रीं नमः आत्मतत्त्वव्यापिनी श्रीललिता तृप्यतु ।

३ ह स क ह ल ह्रीं नमः विद्यातत्त्वव्यापिनी श्रीललिता तृप्यतु ।

३ क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं नमः सर्वतत्त्वव्यापिनी श्रीललिता तृप्यतु ।

इति किञ्चित्, किञ्चित् सामान्यार्घ्योदकं समर्पयेत् ।

पुनः निमीलितनयनः क्षणमवस्थाय, श्रीदेवीं भुक्तवतीं विभाव्य, पूर्ववद् उपचारमन्त्रैः पानीयोत्तरापोशानकरप्रक्षालनगण्डूषपाद्यादीन् कल्पयित्वा, भोजनपात्रं नैऋत्यां निरस्य, अस्त्रेण स्थलं सशोध्य, ततः पुनः प्राग्वदाचमनीयकर्पूरवीटिकादक्षिणाकर्पूरनीराजनानि दत्वा, सुवर्णादिभाजनलिखितं कुङ्कुमपङ्करेखात्मकम् अष्टदलकमलकर्णिकास्थापितमणिमयचषकपूरितं प्रथमं प्रज्वाल्य पुष्पाक्षतैरभ्यर्च्य, उपचारमन्त्रपूर्वकम्—

अन्तस्तेजो बहिस्तेज एकीकृत्यामितप्रभम् ।
त्रिधा दीपं परिभ्राम्य कुलदीपं निवेदये ॥

इति चतुर्दशधा नवधा त्रिधा वा परिभ्राम्य दक्षभागे स्थापयेत् ।

अथाञ्जलौ पुष्पाण्यादाय मन्त्रपुष्पम् । यथा—

मन्त्रपुष्पम्

शिवे शिवसुधोतलामृततरङ्गगन्धोलस-
न्नवावरणदेवते नवनवामृतस्यन्दिनि ।
गुरुक्रमपुरस्कृते गुणशरीरनित्योज्ज्वले
षडङ्गपरिवारिते कलित एष पुष्पाञ्जलिः ॥

इति उक्त्वा पुष्पाञ्जलिं समर्पयेत् ।

इत्येते कतिचिच्चतुष्षष्ट्युपचारातिरिक्ता उपचारास्तु पूर्ववत् धूपदीपेतिसूत्रगतेनादिपदेन गृह्यन्ते।

कामकलाध्यानम्

अथ बिन्दुना मुखं बिन्दुद्वयेन स्तनौ सपरार्धेन योनिरिति सानुस्वारे तुरीयस्वरे कामकलात्मिकां ध्यात्वा, सौः इति देवीशक्तिबीजं श्रीदेव्या हृदयत्वेन भावयेत्।

होमस्य कृताकृतत्वम्

अथ होमः। स च "यद्यग्निकार्यसम्पत्तिः" इति सूत्रगतेन यदिशब्देन कृताकृतः सूचितः। तस्य च करणपक्षे तदितिकर्तव्यता होमप्रकरणाद् ज्ञातव्या। तत्र महाव्याहृतिहोमादर्वागेव बलिदानम्। होमाकरणपक्षे तु बलिदानमात्रम्।

बलिदानविधिः

यथा—देव्या दक्षभागे सामान्योदकेन त्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मकं मण्डलं परिकल्प्य, ३ ऐं व्यापकमण्डलाय नमः इति गन्धाक्षतैरभ्यर्च्य, अर्धभक्तपूरितोदकं सक्षीरादित्रयं पात्रं तत्र विन्यस्य।

३ ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहा, इति मन्त्रं त्रिः पठित्वा दक्षकरार्पितं वामकरतत्त्वमुद्रास्पृष्टं सलिलं बल्युपरि दत्वा वामपार्ष्णिघातकरास्फोटौ समुदञ्चितवक्त्रो बाणमुद्रया बलिं भूतैः ग्रासितं विभाव्य, प्रणमेत्।

इति बलिदानविधिः।

प्रदक्षिणा

अजेशशक्तिगणपभास्कराणां क्रमादिमाः।
वेदार्यचन्द्रवह्न्यद्रिसंख्याः स्युः सर्वसिद्धये॥

प्रदक्षिणनमस्कारानन्तरं जपप्रकरणोक्तविधिना जपं निर्वर्त्य स्तुवीत—

पुष्पाञ्जलि स्तोत्रम्

शिवे शिवसुशीतलामृततरङ्गगन्धोल्लस-
न्नवावरणदेवते नवनवामृतस्यन्दिनि ।
गुरुक्रमपुरस्कृते गुणशरीरनित्योज्ज्वले
षडङ्गपरिवारिते कलित एष पुष्पाञ्जलिः ॥

समस्तमुनियक्षकिम्पुरुषसिद्धविद्याधर-
ग्रहासुरसुराप्सरोगणमुखैर्गणैः सेविते ।
निवृत्तितिलकाम्बरप्रकृतिशान्तिविद्याकला-
कलापमधुराकृते कलित एष पुष्पाञ्जलिः ॥

त्रिवेदकृतविग्रहे त्रिविधकृत्यसन्धायिनि
त्रिरूपसमवायिनि त्रिपुरमार्गसञ्चारिणि ।
त्रिलोचनकुटुम्बिनि त्रिगुणसंविदुद्यत्पदे
अयि त्रिपुरसुन्दरि त्रिजगदीशि पुष्पाञ्जलिः ॥

पुरन्दरजलाधिपान्तककुबेररक्षोहर-
प्रभञ्जनधनञ्जयप्रभृतिवन्दनानन्दिते ।
प्रवालपदपीठिकानिकटनित्यवर्तिस्वभू-
विरिञ्चिविहितस्तुते विहित एष पुष्पाञ्जलिः ॥

यदानतिबलादलङ्कृतिरुदेति विद्यावय-
स्तपोद्रविणसौरभाकृतिकवित्वसंविन्मयी ।
जरामरणजन्मजं भयमपैति तस्यै समा-
हिताखिलसमीहितप्रसवभूमि तुभ्यं नमः ॥

निरावरणसंविदुद्भ्रमपरास्तभेदोल्लस-
त्पदास्पदचिदेकतावरशरीरिणि स्वैरिणि ।
रसायनतरङ्गिणीरुचितरङ्गसञ्चारिणि
प्रकामपरिपूरणि प्रसृत एष पुष्पाञ्जलिः ॥

तरङ्गयति सम्पदं तदनु संहरत्यापदं
सुखं वितरति श्रियं परिचिनोति हन्ति द्विषः ।
क्षिणोति दुरितानि यत्प्रणतिरम्ब तस्यै सदा
शिवङ्करि शिवे परे शिवपुरन्ध्रि तुभ्यं नमः ॥

त्वमेव जननी पिता त्वमथ बान्धवस्त्वं सखा
त्वमायुरपरं त्वमाभरणमात्मनस्त्वं कला ।
त्वमेव वपुषःस्थितिस्त्वमखिलायतिस्त्वं गुरुः
प्रसीद परमेश्वरि प्रणतिपात्रि तुभ्यं नमः ॥

कञ्जासनादिसुरवृन्दलसत्किरीट
कोटिप्रघर्षणसमुज्ज्वलदङ्घ्रिपीठे ।
त्वामेव यामि शरणं विगतान्यभावं
दीनं विलोकय दयार्द्रविलोचनेन ॥

महामन्त्रराजान्तबीजं पराख्यं स्वतो न्यस्तबिन्दु स्वयं न्यस्तहार्दम् ।
भवद्वक्त्रवक्षोजगुह्याभिधानं स्वरूपं सकृद्भावयेत् स त्वमेव ॥
तथान्ये विकल्पेषु निर्विण्णचित्तास्तदेकं समाधाय बिन्दुत्रयन्ते ।
परानन्दसन्धानसिन्धौ निमग्नाः पुनर्गर्भरन्ध्रं न पश्यन्ति धीराः ॥
श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः पुष्पाञ्जलिं समर्पयामि ।

कल्याणवृष्टिस्तोत्रम्

कल्याणवृष्टिभिरिवामृतपूरिताभि-
र्लक्ष्मी स्वयम्वरणमङ्गलदीपिकाभिः ।
सेवाभिरम्ब तव पादसरोजमूले
नाकारि किं मनसि भक्तिमतां जनानाम् ॥१॥

एतावदेव जननि स्पृहणीयमास्ते
त्वद्वन्दनेषु सलिलस्थगिते च नेत्रे ।
सान्निध्यमुद्यदरुणायतसोदरस्य
त्वद्विग्रहस्य सुधया परयाऽऽप्लुतस्य ॥२॥

ईशित्वभावकलुषाः कतिनाम सन्ति
ब्रह्मादयः प्रतियुगं प्रलयाभिभूताः ।
एकः स एव जननि स्थिरसिद्धिरास्ते
यः पादयोस्तव सकृत् प्रणतिं करोति ॥३॥

लब्ध्वा सकृत् त्रिपुरसुन्दरि तावकीनं
कारुण्यकन्दलितकान्तिभरं कटाक्षम् ।
कन्दर्पभावसुभगास्त्वयि भक्तिभाजः
सम्मोहयन्ति तरुणीर्भुवनत्रयेषु ॥४॥

ह्रीङ्कारमेव तव नाम गृणन्ति वेदाः
मातस्त्रिकोणनिलये त्रिपुरे त्रिनेत्रे ।
यत्संस्मृतौ यमभटादिभयं विहाय
दीव्यन्ति नन्दनवने सह लोकपालैः ॥५॥

हन्तुः पुरामधिगलं परिपूर्यमाणः
क्रूरः कथन्नु भविता गरलस्य वेगः ।
आश्वासनाय किल मातरिदं तवार्धं
देहस्य शश्वदमृताप्लुतशीतलस्य ॥६॥

सर्वज्ञतां सदसि वाक्पटुतां प्रसूते
देवि त्वदङ्घ्रिसरसीरुहयोः प्रणामः।
किञ्च स्फुरन्मुकुटमुज्ज्वलमातपत्रं
द्वे चामरे च वसुधां महतीं ददाति ॥७॥

कल्पद्रुमैरभिमतप्रतिपादनेषु
कारुण्यवारिधिभिरम्ब भवत्कटाक्षैः।
आलोकय त्रिपुरसुन्दरि मामनाथं
त्वय्येव भक्तिभरितं त्वयि दत्तदृष्टिम् ॥८॥

हन्तेतरेष्वपि मनांसि निधाय चान्ये
भक्तिं वहन्ति किल पामरदैवतेषु।
त्वामेव देवि मनसा वचसा स्मरामि
त्वामेव नौमि शरणं जगति त्वमेव ॥९॥

लक्ष्येषु सत्स्वपि तवाक्षिविलोकनाना-
मालोकय त्रिपुरसुन्दरि मां कथञ्चित्।
नूनं मयापि सदृशं करुणैकपात्रं
जातो जनिष्यति जनो न च जायते च ॥१०॥

ह्रीं ह्रीमिति प्रतिदिनं जपतां जनानां
किं नाम दुर्लभमिह त्रिपुराधिवासे।
मालाकिरीटमदवारणमाननीयां-
स्तान् सेवते वसुमती स्वयमेव लक्ष्मीः ॥११॥

सम्पत्कराणि सकलेन्द्रियनन्दनानि
साम्राज्यदानकुशलानि सरोरुहाक्षि।
त्वद्वन्दनानि दुरितौघहरोद्यतानि
मामेव मातरनिशं कलयन्तु नान्यम् ॥१२॥

कल्पोपसंहरणकल्पिततताण्डवस्य
देवस्य खण्डपरशोः परमेश्वरस्य ।
पाशाङ्कुशैक्षवशरासनपुष्पबाणा
सा साक्षिणी विजयते तव मूर्तिरेका ॥१३॥

लग्नं सदा भवतु मातरिदं तवार्धं
तेजः परं बहुलकुङ्कुमपङ्कशोणम् ।
भास्वत्किरीटममृतांशुकलावतंसं
मध्ये त्रिकोणमुदितं परमामृतार्द्रम् ॥१४॥

ह्रींकारमेव तव धाम तदेव रूपं
त्वन्नाम सुन्दरि सरोजनिवासमूले ।
त्वत्तेजसा परिणतं जगदादिमूलं
सङ्गं तनोतु सरसीरुहसङ्गमस्य ॥१५॥

ह्रींकारत्रयसम्पुटेन महता मन्त्रेण सन्दीपितं
स्तोत्रं यः प्रतिवासरं तव पुरो मातर्जपेन्मन्त्रवित् ।
तस्य क्षोणिभुजो भवन्ति वशगाः लक्ष्मीश्चिरस्थायिनी
वाणीनिर्मलसूक्तिभारभरिता जागर्ति दीर्घं वयः ॥१६॥

सर्वसिद्धिकृत् स्तोत्रम्

ॐ गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिरूपिणीम् ।
देवीं मन्त्रमयीं नौमि मातृकां पीठरूपिणीम् ॥१॥

प्रणमामि महादेवीं मातृकां परमेश्वरीम् ।
कालहृल्लोहल्लोल्लोलकलनाशमकारिणीम् ॥२॥

यदक्षरैकमात्रेऽपि संसिद्धे स्पर्धते नरः ।
रवितार्क्ष्येन्दुकन्दर्पशङ्करानलविष्णुभिः ॥३॥

यदक्षरशशिज्योत्स्नामण्डितं भुवनत्रयम् ।
वन्दे सर्वेश्वरीं देवीं महाश्रीसिद्धमातृकाम् ॥४॥

यदक्षरमहासूत्रप्रोतमेतज्जगत्त्रयम् ।
ब्रह्माण्डादिकटाहान्तं तां वन्दे सिद्धमातृकाम् ॥५॥
यदेकादशमाधारं बीजं कोणत्रयोद्भवम् ।
ब्रह्माण्डादिकटाहान्तं जगदद्यापि दृश्यते ॥६॥
अकचादिटतोन्नद्धपयशाक्षरवर्गिणीम् ।
ज्येष्ठाङ्गबाहुहृत्पृष्ठकटिपादनिवासिनीम् ॥७॥
तामीकाराक्षरोद्धारां सारात् सारां परात् पराम् ।
प्रणमामि महादेवीं परमानन्दरूपिणीम् ॥८॥
अद्यापि यस्या जानन्ति न मनागपि देवताः ।
केयं कस्मात् क्व केनेति सरूपारूपभावनाम् ॥९॥
वन्दे तामहमक्षय्यां क्षकाराक्षररूपिणीम् ।
देवीं कुलकलोल्लासप्रोल्लसन्तीं परां शिवाम् ॥१०॥
वर्गानुक्रमयोगेन यस्यां मात्रष्टकं स्थितम् ।
वन्दे तामष्टवर्गोत्थमहासिद्धचष्टकेश्वरीम् ॥११॥
कामपूर्णजकाराख्यश्रीपीठान्तर्निवासिनीम् ।
चतुराज्ञाकोशमूलां नौमि श्रीत्रिपुरामहम् ॥१२॥
इति द्वादशभिः श्लोकैः स्तवनं सर्वसिद्धिकृत् ।
देव्यास्त्वखण्डरूपायाः स्तवनं तव तथ्यतः ॥
भूमौ स्खलितपादानां भूमिरेवावलम्बनम् ।
त्वयि जातापराधानां त्वमेव शरणं शिवे ॥
जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना
गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः ।
प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा
सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम् ॥

पिता माता भ्राता गुरुरथ सुहृद्वान्धवजनः
प्रभुस्तीर्थं कर्मावितकमिह चामुत्र च हितम् ।
विशुद्धा विद्या वा पदमपि च तत्प्राप्यमसि मे
त्वमेव श्रीमातः स्वपिमि गतशङ्कः सुखतमः ॥
दृशा द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा
दवीयांसं दीनं स्नपय कृपया मामपि शिवे ।
अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता
वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः ॥
हे सद्रूपिणि हे चिदेकहृदये हे कामराजप्रिये
हे भण्डासुरहन्त्रि हेऽद्भुतनिधे हेऽनङ्गसञ्जीविनि ।
हे विश्वप्रसवित्रि हे सकरुणे हे दीनरक्षामणे
हे श्रीमल्ललिताम्ब हे परशिवे मां पाहि डिम्भं निजम् ॥
नमो हेमाद्रिस्थे शिवसति नमः श्रीपुरगते
नमः पद्माटव्यां कुहुकिनि नमो रत्नगृहगे ।
नमः श्रीचक्रस्थेऽखिलमयि नमो बिन्दुनिलये
नमः कामेशाङ्कस्थितिमति नमस्तेऽम्ब ललिते ॥
जय जय जगदम्ब भक्तवश्ये
जय जय सान्द्रकृपावशान्तरङ्गे ।
जय जय निखिलार्थदानशौण्डे
जय जय हे ललिताम्बचित्सुधाब्धे ॥
षडङ्गदेवतां नित्यां दिव्यौघपुरोगुरून् ।
नमाम्यायुधदेवीश्च शक्तीश्चावरणस्थिताः ॥
अमुकानन्दनाथाय मम श्रीगुरवे नमः ॥
अमुकानन्दनाथाय गुरवे परमाय मे ॥
अमुकानन्दनाथाय गुरवे परमेष्ठिने ॥
यदिदं श्रीगुरुस्तोत्रं स्वस्वरूपोपलक्षणम् ॥

बालभावानुसारेण ममेदं हि विचेष्टितम् ॥

मातृवात्सल्यसदृशं त्वया देवि विधीयताम् ॥

एवामादिभिरन्याभिश्च यथाऽवकाशं स्तुतिभिरखिललोकमातरमभिष्टुत्य शक्तिं पूजयेत् ।

सुवासिनीपूजनम्

यथा प्राङ्निमन्त्रितां गौरीरूपिणी दीक्षितां सुवासिनी प्रक्षालितपादामासन उपवेशयेत् । सा चेददीक्षिता तदा ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः त्रिपुरायै नमः इमां शक्तिं पवित्रीकुरु मम शक्तिं कुरु स्वाहा, इत्यभिषेकमन्त्रपूर्वकं सामान्यसलिलेन त्रिः शक्तिं सम्प्रोक्ष्य ३ ॐ शान्तिरस्तु शिवञ्चास्तु प्रणश्यत्वशुभञ्च यत् यत एवागतं पापं तत्रैव प्रतिगच्छतु, इत्युच्चार्य तस्याः कर्णे हृल्लेखां जपेत् । अथ तां देवतारूपां विभाव्य ३ ऐं क्लीं सौः शक्त्यै अमुकं समर्पयामि इति मन्त्रेण हरिद्राकुङ्कुमचन्दनपट्टवासः पुष्पधूपदीपनैवेद्यताम्बूलानि वसनाभरणानि च दद्यात् । समस्तप्रकटयोगिनीत्यादिसमष्टिमन्त्रेण श्रीदेव्यै आवरणदेवताभ्यश्च दत्तपुष्पाञ्जल्याः तस्याः करे विशेषार्घ्यादमृतं पात्रान्तरे कृत्वा समर्पयेत् । साप्युत्थाय तदादाय शिरसि गुरुपादुकामन्त्रेण गुरुं त्रिरिष्ट्वा हृदि देवीञ्च सन्तर्प्य मूलेन, गुर्वाज्ञां गृहीत्वा मूलान्ते सर्वतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा, इति मन्त्रेण सर्वतत्त्वं संशोधयेत् । ततश्च तत्स्वीकुर्य्यात् । पश्चात्तां भोजयित्वा ताम्बूलदक्षिणादिभिः सन्तर्प्य विसृजेत् ।

तत्त्वशोधनम्

३ क-५ प्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनस्श्रोत्रत्वक्चक्षुः जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुवह्निसलिलभूम्यात्मना अ····अः ३ क-५ आत्मतत्त्वेन आणवमलशोधनार्थं स्थूलदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा । आत्मा मे शुध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा ।

३ ह-६ मायाकलाऽविद्यारागकालनियतिपुरुषात्मना क····म ३ ह-६ विद्यातत्त्वेन मायिकमलशोधनार्थं सूक्ष्मदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा । अन्तरात्मा मे शुध्यतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा ।

३ स-४ शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यात्मना यं""क्षं शिवतत्त्वेन कार्मिकमलशोधनार्थं कारणदेहं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। परमात्मा मे शुद्धयतां ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।

३ 'मूलं' प्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनस्श्रोत्रत्वक्चक्षुः जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपाद-पायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुवन्हिसलिलभूमिमायाकलाऽविद्यारा-गकालनियतिपुरुषशिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यात्मना अं आं""ळं क्षं 'मूलं' सर्वतत्वेन सर्वदेहं सर्वदेहाभिमानिन जीवात्मानं परिशोधयामि जुहोमि स्वाहा। ज्ञानात्मा मे शुद्धयता ज्योतिरहं विरजा विपाप्मा भूयासं स्वाहा।*

३ आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि। ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्माहमस्मि। योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि। अहमेवाहं मां जुहोमि स्वाहा।

इति (गुरौ सन्निहिते होष्यामि इति सम्प्रार्थ्य गुरोरनुज्ञां लब्ध्वा)चिदग्नौ होमबुद्धया जुहुयात्। ततः पात्रं प्रक्षाल्य तत्र सुवर्णपुष्पाक्षतान्निक्षिप्य।

३ देवनाथ गुरो स्वामिन् देशिक स्वात्मनायक।
त्राहि त्राहि कृपासिन्धो पात्रं पूर्णतरं कुरु॥

इति गुरवे समर्पयेत्। असन्निहिते गुरौ स्वशिरसि पात्रं निधाय आत्मपात्रमण्डले निक्षिपेत्।

देवतोद्वासनम्

ततः सामान्यार्घ्योदकात् किञ्चिदादाय—

साधु वाऽसाधु वा कर्म यद्यदाचरितं मया।
तत् सर्वं कृपया देवि गृहाणाराधनं मम॥

इति देव्या वामहस्ते पूजा समर्प्य शङ्खमुद्धृत्य देव्युपरि नि परिभ्राम्य तज्जलं हस्ते समादाय सामयिकानात्मानञ्च 'मूलेन' प्रोक्ष्य शङ्खं प्रक्षाल्य निदध्यात्। ततो मूलेन तीर्थनिर्माल्ये स्वीकृत्य,

---

* षोडश्युपासकानां पञ्चमपात्रेण—

३ 'मूलं' पूर्णमदः पूर्णमिदं पूर्णात्पूर्णमुदच्यते।
पूर्णस्य पूर्णमादाय पूर्णमेवावशिष्यते॥

ज्ञानतोऽज्ञानतो वाऽपि यन्मयाऽऽचरितं शिवे ।
तव कृत्यमिति ज्ञात्वा क्षमस्व परमेश्वरि ॥

इति क्षमाप्य सर्वासामावरणदेवतानां श्रीदेव्यङ्गे विलयं विभाव्य, खेचरी बद्ध्वोद्वास्य तेजोरूपेण परिणता श्रीदेवी पूर्ववत् हृदयं नीत्वा तत्र च मूर्ति पञ्चधोपचर्य पुनरात्माभिन्नसंविद्रूपेण विभावयेदिति विसर्जनम् । ततः शान्तिस्तवः ॥

सम्पूजकानां परिपालकानां यतेन्द्रियाणाञ्च तपोधनानाम् ।
देशस्य राष्ट्रस्य कुलस्य राज्ञां करोतु शान्ति भगवान् कुलेशः ॥

नन्दन्तु साधककुलान्यणिमादिसिद्धाः
शापाः पतन्तु समयद्विषि योगिनीनाम् ।
सा शाम्भवी स्फुरतु काऽपि ममाऽप्यवस्था
यस्यां गुरोश्चरणपङ्कजमेव लभ्यम् ॥
शिवाद्यवनिपर्यन्तं ब्रह्मादिस्तम्बसंयुतम् ।
कालाग्न्यादिशिवान्तं च जगद्यज्ञेन तृप्यतु ॥

इत्यादि शान्तिश्लोकान् पठित्वा, विशेषार्घ्यविसर्जनं कुर्यात् ।

विशेषार्घ्यपात्रं मूलेनामस्तकमुद्धृत्य तत् क्षीरं पात्रान्तरेणादाय "आर्द्रं ज्वलति ज्योतिरहमस्मि । ज्योतिर्ज्वलति ब्रह्मास्मि । योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि । अहमेवाहं मा जुहोमि स्वाहा" इति मन्त्रेण आत्मनः कुण्डलिन्यग्नौ हुत्वा शेषं प्रियशिष्याय दत्वा तत्पात्रमन्यानि च हविश्शेषप्रतिपत्तिपात्राणि प्रक्षाल्याग्नौ प्रताप्यावस्थापयेत् ।

अथ यथाशक्ति ब्राह्मणान् सुवासिनीश्च भोजयित्वा, स्वयमपि भुञ्जीत । इति नित्यकर्मविधिः ॥

श्रीचक्रे त्रिवृत्तार्चनम्

सम्प्रदायविशेषज्ञाना रीत्या हयग्रीवसम्प्रदाये श्रीचक्रे वृत्तत्रयं नोल्लिख्यते । आनन्दभैरवसम्प्रदाये वृत्तत्रये लिखितेऽपि तत्रार्चनं न भवति । श्रीदक्षिणामूर्तिसम्प्रदाये वृत्तत्रयमुल्लिख्यते पूज्यते च ।

तद्यथा

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिवर्गसाधकचक्राय नमः। संहारक्रमेण शुक्लारुण-कृष्णवर्णरेखात्रयस्य मायाबीजप्रकृतिकस्य गुणप्रकृतिपरादिवागात्मकस्य प्रथमवृत्तरेखायां देव्यग्रमारभ्याप्रादक्षिण्येन।

(१)	ॐ ऐं	ह्रीं श्रीं	कं कालरात्रि	श्रीपादुकां	पूजयामि		।
(२)	,,	,,	खं खण्डिता	,,	,,	,,	।
(३)	,,	,,	गं गायत्री	,,	,,	,,	।
(४)	,,	,,	घं घण्टाकर्षिणी	,,	,,	,,	।
(५)	,,	,,	ङं ङार्णा	,,	,,	,,	।
(६)	,,	,,	चं चण्डा	,,	,,	,,	।
(७)	,,	,,	छं छाया	,,	,,	,,	।
(८)	,,	,,	जं जया	,,	,,	,,	।
(९)	,,	,,	झं झङ्कारिणी	,	,,	,,	।
(१०)	,,	,,	ञं ज्ञानरूपा	,,	,,	,,	।
(११)	,,	,,	टं टङ्कहस्ता	,,	,,	,,	।
(१२)	,,	,,	ठं ठङ्कारिणी	,,	,,	,,	।
(१३)	,,	,,	डं डामरी	,,	,,	,,	।
(१४)	,,	,,	ढं ढङ्कारिणी	,,	,,	,,	।
(१५)	,,	,,	णं णार्णा	,,	,,	,,	।
(१६)	,,	,,	तं तामसी	,,	,,	,,	।
(१७)	,,	,,	थं स्थाण्वी	,,	,,	,,	।
(१८)	,,	,,	दं दाक्षायणी	,,	,,	,,	।
(१९)	,,	,,	धं धात्री	,,	,,	,,	।
(२०)	,,	,,	नं नारी	,,	,,	,,	।
(२१)	,,	,,	पं पार्वती	,,	,,	,,	।
(२२)	,,	,,	फं फट्कारिणी	,,	,,	,,	।

(२३)	ॐ ऐं ह्रीं श्रीं		वं बन्धिनी	श्रीपादुकां	पूजयामि	।
(२४)	,,	,,	भं भद्रकाली	,,	,,	,, ।
(२५)	,,	,,	मं महामाया	,,	,,	,, ।
(२६)	,,	,,	यं यशस्विनी	,,	,,	,, ।
(२७)	,,	,,	रं रक्ता	,,	,,	,, ।
(२८)	,,	,,	लं लम्बोष्ठी	,,	,,	,, ।
(२९)	,,	,,	व वरदा	,,	,,	,, ।
(३०)	,,	,,	शं श्री	,,	,,	,, ।
(३१)	,,	,,	षं षण्ढा	,,	,,	,, ।
(३२)	,,	,,	स सरस्वती	,,	,,	,, ।
(३३)	,,	,,	हं हंसवती	,,	,,	,, ।
(३४)	,,	,,	क्षं क्षमावती	,,	,,	,, ।

द्वितीयवृत्तरेखायाम् अप्रादक्षिण्यक्रमेण—

(१)	ॐ ऐं ह्रीं श्रीं		अ अमृता	श्रीपादुका	पूजयामि	।
(२)	,,	,,	आ आकर्पिणी	,,	,,	,, ।
(३)	,,	,,	इं इन्द्राणी	,,	,,	,, ।
(४)	,,	,,	ईं ईशानी	,,	,,	,, ।
(५)	,,	,,	उं उमा	,,	,,	,, ।
(६)	,,	,,	ऊं ऊर्ध्वकेशी	,,	,,	,, ।
(७)	,,	,,	ऋं ऋद्धिदा	,,	,,	,, ।
(८)	,,	,,	ॠं ॠकारा	,,	,,	,, ।
(९)	,,	,,	लृं लृकारा	,,	,,	,, ।
(१०)	,,	,,	लॄं लॄकारा	,,	,,	,, ।
(११)	,,	,,	ए एकपदा	,,	,,	,, ।
(१२)	,,	,,	ऐं ऐश्वर्यात्मिका	,,	,,	,, ।
(१३)	,,	,,	ओ ओङ्कारा	,,	,,	,, ।

'अभीष्टसिद्धिं मे देहि शरणागतवत्सले ।
भक्त्या समर्पये तुभ्यं द्वितीयावरणार्चनम् ॥'

एतद्रीत्या सर्वाशापरिपूरकचक्रे तृतीयावरणम् । तथा च दशाव सम्पद्यन्ते ।

अन्तश्चक्रन्यासेऽपि—

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं त्रिवर्गसाधकचक्राधिष्ठात्र्यै कालरात्र्यादिसहितम् योगिनीरूपायै त्रिपुरेशिनीदेव्यै नमः ।

इति त्रिवृत्तार्चनम् ।

श्रीचक्रस्वरूपम्

अधः सहस्रारोपरिभागे—

सृष्टिस्थितिसंहारक्रमेण श्रीचक्रार्चनमधिकारभेदेन भवति ।

यथोक्तम्—

'स्थितिक्रमो गृहस्थस्य संहारो वनिनो यते. ।
ब्रह्मचारिण उत्पत्तिः स्त्रियः शूद्रस्य चेष्टतः ॥'

दक्षिणामूर्तिसम्प्रदाये बिन्दुमारभ्यभूपुरपर्यन्त सृष्टिक्रमेणार्चनम् भूपुरमारभ्याष्टारपर्यन्तं पुनश्च बिन्दुमारभ्य चतुर्दशार यावत् पूज स्थितिक्रमे । भूपुरमारभ्यबिन्दुपर्यन्तमर्चनं संहारक्रमे ।

हयग्रीवानन्दभैरवसम्प्रदाययोश्च स्थितिक्रमे पूर्वं बिन्दुत्रिकोणकामे श्वर्यादिनित्या-गुरुपंक्ति पूजनम्, तदनु भूपुरमारभ्य क्रमेणाष्टारत्रिकोणपूजनम् अन्यत् समानम् ।

बिन्दुमारभ्य अष्टदलपर्यंतं सृष्टिचक्र, चतुर्दशारमाभ्यान्तर्दशारं यावत् स्थितिचक्र, अष्टारमारभ्य बिन्दु यावत् संहारचक्रम्, तादृक् चक्रत्रयस्य त्रिपुरस्वरूपत्वम्, तत्प्रधाननायिकात्वेन ललिता पराम्बा त्रिपुरसुन्दरी प्रोच्यते ।

भूपुर-वृत्त-त्रिकोणादपरे गुणत्रयकालत्रया-वस्थात्रय-लोकत्रयादि बोधकाः। बिन्दुस्तुरीयरूपस्तुरीयातीतरूपो वा । पिण्डब्रह्माण्डयोरैक्यात् श्रीचक्रस्य

ब्रह्माण्डरूपत्वं पिण्डरूपत्वञ्च। प्रणवस्वरूपशब्दब्रह्मणोऽपि प्रतीकस्वरूपम् श्रीचक्रम्। तद्रीत्या (अ, उ, म्) इति नादबिन्दुत्रयस्य प्रणवस्य जाग्रदाद्याश्चतस्रोऽवस्था वैखरीमध्यमा पश्यन्ती-परारूपाणि श्रीचक्रस्य सृष्टिस्थिति-संहारानाख्याचक्रेष्वन्तर्भवन्ति। पञ्चमं कार्यकारणातीतं भासा चक्रात्मकं भवति।

शरीरस्य मूलाधार-स्वाधिष्ठान मणिपूरानाहत विशुद्धयाज्ञारूपाणां चक्राणामपि श्रीचक्रावयवेष्वन्तर्भावः। भूपुर त्रिवृत्त-षोडश दलाष्टदलानां समुदायः सृष्टिचक्रं चतुर्दशारबहिर्दशारान्तर्दशाराणां समूहः स्थितिचक्रं अष्टार त्रिकोणबिन्दूनां समवायः संहारचक्रम्। तेषां समष्टौ द्वितीयबिन्दुः यावदनाख्या चक्रम्, तृतीयबिन्दुः यावत् भासाचक्रम्। श्रीकल्पे पञ्चानामेषां क्रमेण स्वाधिष्ठान-मणिपूर-अनाहत विशुद्धि-आज्ञा-चक्रेष्वन्तर्भावः।

कालीक्रमे सृष्टिचक्रं मूलाधारे भवति।

तत्रापि—'चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरपि'। 'चतुर्भिः शिवचक्रैश्च शक्तिचक्रैश्च पञ्चभिः। नवचक्रैश्च संसिद्धं श्रीचक्रं शिवयोर्वपुः॥' इत्यादिरीत्या त्रिकोणाष्टकोण-दशारद्वय चतुर्दशारञ्च शक्तिचक्राणि। बिन्द्वष्टदलकमल-षोडशदलकमल-चतुरस्रत्रयाणि चत्वारि शिवचक्राणि। त्रिकोणेनाष्टदलम् अष्टारेण षोडशदलम् अन्तर्दशार बहिर्दशाराभ्यां भूपुर चतुर्दशारेण संश्लिष्टम्। तत एवैषामविनाभावसम्बन्धः।

'त्रिकोणमष्टकोणञ्चदशकोणद्वयं तथा।
चतुर्दशारं चैतानि शक्तिचक्राणि पञ्च च॥
बिन्दुश्चाष्टदलं पद्मं पद्मं षोडशपत्रकम्।
चतुरस्रञ्च चत्वारि शिवचक्राण्यनुक्रमात्॥
त्रिकोणे बैन्दवं श्लिष्टमष्टारेऽष्टदलाम्बुजम्।
दशारयोः षोडशारं भूगृहं भुवनाश्रके॥'

एवमेव श्रीविद्यापञ्चदश्यामपि ककारत्रयं हकारद्वयञ्च शैवो भागः। ह्रीङ्कारश्चोभयात्मकः। शेषाणि शक्त्यक्षराणि।

'कत्रयं हृदयश्चैव शैवो भागः प्रकीर्तितः ।
शेषाणि शक्त्यक्षराणि ह्रीङ्कार उभयात्मकः ॥'

बिन्दुचक्रे सत्यलोकः, त्रिकोणे तपोलोकः, अष्टकोणे जनलोकः, अन्तर्दशारे महर्लोकः, बहिर्दशारे स्वर्लोकः, चतुर्दशारे भुवर्लोकः, प्रथमवृत्ते भूलोकः ।

अष्टदलेऽतलम्, अष्टदलबहिर्वृत्ते वितलं, षोडशदलकमले सुतलम् वृत्तत्रये तलातलम्, भूपुरप्रथमरेखायां महातलम्, द्वितीयरेखायां रसातलम्, तृतीयरेखायां पातालम् ।

श्रीचक्रमहिमा

ब्रह्मेन्द्रादि देवाः, सूर्यचन्द्रादि ग्रहाः, अश्विन्यादि-नक्षत्राणि, मेषादि-राशयः, वस्वादयो नागाः, वरुणवैनतेयादयो मन्दारादयो वृक्षाः, रम्भाद्यप्स-रसः, कपिलादयः सिद्धाः, वसिष्ठाद्याः मुनीश्वराः, कुबेरप्रमुखा यक्षाः, राक्षसाः गन्धर्वाः, किन्नराः विश्वावस्वाद योगायकाः, ऐरावताद्या गजेन्द्राः, उच्चैःश्रव-आद्याश्वाः, हिमाल्याद्याः पर्वताः, गङ्गाद्याः पुण्यनद्यः, सर्वे समुद्राः, सर्वाणि नगरराष्ट्राणि सर्वाण्येतानि श्रीचक्रोत्पन्नानि ।

विन्दु ब्रह्मरन्ध्रे, त्रिकोण मस्तके, ललाटे-अष्टकोण, भ्रूमध्ये अन्तर्दशारम्, कण्ठे-बहिर्दशारं, हृदये-अन्तर्दशारं, कुक्षौ-वृत्त, नाभौ अष्टदल, कट्याम्-अष्टदलबहिर्वृत्तम्, स्वाधिष्ठाने षोडशदलं, मूलाधारे बहिस्त्रिवृत्तं, जान्वोः-भूपुरस्य प्रथमरेखा, जङ्घाया द्वितीयरेखा, पादयोः भूपुरस्य तृतीयरेखा ।

'त्रिपुरेशीमहायन्त्रं पिण्डात्मकमीश्वरि ।
यो जानाति स योगीन्द्रः स शम्भुः स हरिर्विधिः ॥
पिण्डब्रह्माण्डयोर्ज्ञानं श्रीचक्रस्य विशेषतः ।
ज्ञात्वाशम्भुफलावाप्तिः नाल्पस्य तपसः फलम् ॥'
(इति योगिनीहृदये) ।

तथैव मन्त्रयन्त्रयोरप्यैक्यम् । लकारेण भूपुरं सकारेण षोडशदलम्, हकारेणाष्टमूर्त्यात्मकमष्टदलम्, भुवनेश्वरीरूपेणेकारेण चतुर्दशारम्, एका-

रेण दशावतारात्मक बहिर्दशारम्, हृल्लेखागतेन रेफेणान्तर्दशारम्, ककारेणाष्टारम्, अर्धचन्द्रेण त्रिकोणम्, तदन्तर्गता देव्यस्तत्त्वानि च तन्मयान्येव।

नादरूपाया अर्धमात्राया सकाशात् त्रिकोणा योनिरुत्पद्यते। बिन्दोर्बिन्दुचक्रम्। बिन्दुचक्रं च कामेश्वरस्वरूपम्, तदेव च विश्वाधारस्वरूपम्।

श्रीविद्यान्तर्गतलबीजरूपाल्लकारात्पृथिवी – तदन्तर्वर्तिवृक्षपर्वतादय उत्पद्यन्ते। तत एव एकपञ्चाशत्पीठानि सर्वतीर्थानि गङ्गाद्यानद्यः पुण्यक्षेत्राणि चोत्पद्यन्ते। मन्त्रस्थितसकारात् चन्द्र-नक्षत्र-ग्रह-राश्यादय उत्पद्यन्ते।

'गणेशग्रहनक्षत्र—योगिनीराशि—रूपिणीम्।
देवीं मन्त्रमयीं नौमि मातृका पीठरूपिणीम्॥'
इति नित्याषोडशिकार्णवतन्त्रात्।

हं बीजरूपादाकाशस्य, भुवनेश्वरी बीजरूपादीकाराच्चतुर्दशभुवनानामुत्पत्तिः। दशावतारविष्णुस्वरूप एकार वैष्णवीशक्तिरूप। र बीजरूपो रेफ परमज्योतिर्मयीपराशक्ति। ककारात्सर्वकामपूरणी कामदा शक्तिर्गृह्यते। अर्धचन्द्रात् (ँ) विश्वयोनिर्गृह्यते। बिन्दो (ं) महाकामेश्वरी व्यज्यते। बिन्दुरेव सर्वानन्दमयचक्रं तच्चब्रह्माभिन्नम्। तत्रैव महाकामेश्वरी महाकामेश्वरयोर्वास। तत्पदार्थभूत निर्गुणब्रह्म महाकामेश्वर, त्वं पदार्थभूत सचिद्रूप कूटस्थ साक्षी महाकामेश्वरीरूप तयोरभेद एव सामरस्यम्। तत एव ज्ञातृज्ञेययोरहन्तेदन्तयो प्रकाशविमर्शयोरचैक्यम्। भूमि बिन्दुचक्रम् तत्रत्या परापरातिरहस्ययोगिनी भवति। तत्रैव तुरीयाम्नायजनम्। सर्वानन्दमयचक्रमेवोड्याणपीठोऽप्युच्यत। तत एवोड्याणपीठनिलयैव बिन्दुमण्डलवासिनी भवति।

अथ जपविधि.

अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपञ्चदशाक्षरीमहामन्त्रस्य ३ आनन्दभैरवाय ऋषये नम—शिरसि। ३ पङ्क्त्यै छन्दसे नम—मुखे। ३ श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नम—हृदि। ३ ऐं बीजाय नम—गुह्ये। ३—सौः शक्त्य

'कन्यर्य हृदयश्चैव शैवो भागः प्रकीर्तितः।
शेषाणिशवत्यक्षराणि ह्रीङ्कार उभयात्मकः॥'

बिन्दुचक्रे सत्यलोकः, त्रिकोणे तपोलोकः, अष्टकोणे जनलोकः, अन्तर्दशारे महर्लोकः, बहिर्दशारे स्वर्लोकः, चतुर्दशारे भुवर्लोकः, प्रथमवृत्ते भूलोकः।

अष्टदलेऽतलम्, अष्टदलबहिर्वृत्ते वितल, षोडशदलकमले सुतलम् वृत्तत्रये तलातलम्, भूपुरप्रथमरेखायां महातलम्, द्वितीयरेखायां रसातलम्, तृतीयरेखाया पातालम्।

श्रीचक्रमहिमा

ब्रह्मेन्द्रादि देवा', सूर्यचन्द्रादि ग्रहाः, अश्विन्यादि-नक्षत्राणि, मेषादि-राशयः, वस्वादयो नागाः, वरुणवैनतेयादयो मन्दारादयो वृक्षाः, रम्भाद्यप्स-रसः, कपिलादयः सिद्धाः, वसिष्ठाद्याः मुनीश्वराः, कुबेरप्रमुखा यक्षाः, राक्षसाः गन्धर्वाः, किन्नराः विश्वावस्वाद योगायकाः, ऐरावताद्या गजेन्द्राः, उच्चैःश्रव-आद्याश्वाः, हिमालयाद्याः पर्वताः, गङ्गाद्याः पुण्यनद्यः, सर्वे समुद्राः, सर्वाणि नगरराष्ट्राणि सर्वाण्येतानि श्रीचक्रोत्पन्नानि।

बिन्दु ब्रह्मरन्ध्रे, त्रिकोण मस्तके, ललाटे-अष्टकोण, भ्रूमध्ये अन्तर्दशारम्, कण्ठे-बहिर्दशार, हृदये-अन्तर्दशारं, कुक्षौ-वृत्त, नाभौ अष्टदल, कट्याम्-अष्टदलबहिर्वृत्तम्, स्वाधिष्ठाने षोडशदलं, मूलाधारे बहिस्त्रिवृत्तं, जान्वोः-भूपुरस्य प्रथमरेखा, जङ्घाया द्वितीयरेखा, पादयोः भूपुरस्य तृतीयरेखा।

'त्रिपुरेशीमहायन्त्रं पिण्डात्मकमीश्वरि।
यो जानाति स योगीन्द्रः स शम्भुः स हरिर्विधिः॥
पिण्डब्रह्माण्डयोर्ज्ञानं श्रीचक्रस्य विशेषतः।
ज्ञात्वाशम्भुफलावाप्तिः नाल्पस्य तपसः फलम्॥'

(इति योगिनीहृदये)।

तथैव मन्त्रयन्त्रयोरप्यैक्यम्। लकारेण भूपुरं सकारेण षोडशदलम्, हकारेणाष्टमूर्त्यात्मकमष्टदलम्, भुवनेश्वरीरूपेणेकारेण चतुर्दशारम्, एका-

रेण दशावतारात्मकं बहिर्दशारम्, हकारगतेन रेफेणान्तर्दशारम्, मकारे-
णाष्टारम्, अर्धचन्द्रेण त्रिकोणम्, तदन्तर्गता देव्यस्तत्त्वानि च तन्मयान्येव ।
नादरूपाया अर्धमात्रायाः गगनात् त्रिकोणा योनिरुत्पद्यते । बिन्दो-
र्बिन्दुचक्रम् । बिन्दुचक्रं च कामेश्वराङ्कस्थानम्, तदेव च विद्याधारस्थानम् ।

श्रीविद्यान्तर्गतलंबीजरूपाल्लकारात्पृथिवी — तदन्तर्वर्तिपर्वतादय-
उत्पद्यन्ते । ता एव एकपञ्चाशत्पीठानि सर्वतीर्थानि गङ्गादीनि च पुण्य-
क्षेत्राणि चोत्पद्यन्ते । सकारान्वितमकारात् चन्द्र-नक्षत्र-ग्रह-राश्यादय
उत्पद्यन्ते ।

'गणेशग्रहनक्षत्र—योगिनीराशि—रूपिणीम् ।
देवीं मन्त्रमयीं नौमि मातृकां पीठरूपिणीम् ॥'
इति नित्याषोडशिकार्णवतन्त्रात् ।

ह्रं बीजरूपादाकाशम्, भुवनेश्वरी बीजरूपादीकाराच्चतुर्दशभुवनाना-
मुत्पत्तिः । दशावतारविष्णुस्वरूप एकारः वैष्णवीशक्तिरूप । र बीजरूपो-
रेफः परमज्योतिर्मयीपराशक्ति । ककाराल्लर्यंकामपूरणी कामदा शक्ति-
र्गृह्यते । अर्धचन्द्रात् (˘) विश्वयोनिर्गृह्यते । बिन्दो (˙) महाकामेश्वरी
व्यज्यते । बिन्दुरेव सर्वानन्दमयचक्रं तत्त्वब्रह्माभिन्नम् । तत्रैव महाकामेश्वरी-
महाकामेश्वरयोर्योगः । तत्पदार्थभूत निर्गुणब्रह्म महाकामेश्वर, त्वं पदार्थ-
भूत सच्चिद्रूप कूटस्थ साक्षी महाकामेश्वरीरूप तयोरभेद एव सामरस्यम् ।
तत एव ज्ञातृज्ञेययोरहन्तेदन्तयोः प्रकाशविमर्शयोरैक्यम् । भूमि बिन्दु-
चक्रम् तत्रत्या परापरातिरहस्ययोगिनी भवति । तत्रैव तुरीयाम्नायजमम् ।
सर्वानन्दमयचक्रमेवौड्याणपीठोऽप्युच्यते । तत एवौड्याणपीठनिलयैव बिन्दु-
मण्डलवासिनी भवति ।

अथ जपविधिः

अस्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपञ्चदशाक्षरीमहामन्त्रस्य ३ आनन्दभैरवाय-
ऋषये नम—शिरसि । ३ पङ्क्त्यै छन्दसे नम—मुखे । ३ श्रीमहात्रिपुर-
सुन्दर्यै देवतायै नम—हृदि । ३ ऐं बीजाय नम—गुह्ये । ३—सौः शक्त्यै

नमः—पादयोः। ३ सौः कीलकाय नमः—नाभौ। (उक्तबीजशक्तिकीलकानि नाभिगुह्यपादेषु प्रायशो न्यस्तव्यानीति, मूलविद्याखण्डत्रयेणापि न्यस्तव्यानीति च केषाञ्चिदभिमतम्)। ३ श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरीप्रसादसिद्ध्यर्थे जपे विनियोगः—करसम्पुटे।

ऐं ह्रीं श्रीं मूलविद्यया सर्वाङ्गे त्रिव्यापकम्।

३ क ए ई ल ह्रीं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः।

३ ह स क ह ल ह्रीं तर्जनीभ्यां स्वाहा।

३ स क ल ह्रीं मध्यमाभ्यां वषट्।

३ क ए ई ल ह्रीं अनामिकाभ्यां हुं।

३ ह स क ह ल ह्रीं कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्।

३ स क ल ह्रीं करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्।

एवं हृदयादिन्यासः। यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं हृदयाय नमः।

३ ह स क ह ल ह्रीं शिरसे स्वाहा।

३ स क ल ह्रीं शिखायै वषट्।

३ क ए ई ल ह्रीं कवचाय हुम्।

३ ह स क ह ल ह्रीं नेत्रत्रयाय वौषट्।

३ स क ल ह्रीं अस्त्राय फट्। भूर्भुवस्सुवरों इति दिग्बन्धः।

अथ ध्यानम्। तच्च पूर्वोक्तमेव।

श्रीषोडशाक्षर्यास्तु दक्षिणामूर्ति ऋषिः। करषडङ्गन्यासयोः सत्कूटषट्कमिति विशेषः।

ततः शक्त्युत्थापनमुद्रया स्वदेहे शून्यतां विभाव्य बिन्दुत्रयसपरार्धरूपां कामकलां विचिन्त्य तस्याः स्वात्मतया परिणामं श्रीगुरुमुखावगतं विभाव्य श्रीगुरुदेवतामन्त्रात्मनामैक्यं भावयेत्। अथ मूर्ध्नि शिरोमुद्रां न्यस्य ३ एं क्लीं ह्रीं त्रिपुरे भगवति स्वाहा, इति द्वादशाक्षरी कुल्लुकाविद्या, ततो हृदयमुद्रया (हृदि हस्तं दत्वा) ३ ॐ इत्येकाक्षरं सेतुमः ततः पृष्ठे न्यास-

मुद्रया ३ ह्रीं इत्येकाक्षरं महासेतुम्, तदनु नाभौ पूर्वमुद्रयैव ३ ॐ अं ··· क्षं (५१) ऐं मूलं ऐं अं ···क्षं (५१) ॐ इति एकविंशाधिकैकशताक्षरं निर्वाणमन्त्रञ्च त्रिस्त्रिः जपेत् । ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं, इति कामेश्वरीमन्त्रं स्वाधिष्ठाने त्रिः जपेत् ।

३ ईं इति कामकलामन्त्रं मूलाधारे त्रिः जपेत् ।

३ समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलोत्तीर्णनिगर्भरहस्यातिरहस्यपरापरातिरहस्ययोगिनीभ्यो नमः इति समष्टिमन्त्रं जपेत् ।

३ ईं ए क ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं
इति पञ्चदशाक्षरमुत्कीलनं सप्तवारं जपेत् ।

३ विद्युद्वर्णां परां विद्यां कालिकां देशभाषिणीम् ।
खड्गमुण्डविकाराढ्यां व्याघ्रचर्मविभूषिताम् ॥
रक्तमाल्याम्बरधरां घोररूपां चतुर्भुजाम् ।
खड्गं शूलं कपालञ्च दधतीं तीक्ष्णनासिकाम् ।
सिद्ध्यर्थं चिन्तयेद्देवीं सर्वविद्यासुजीविनीम् ॥

इति सञ्जीविनीं ध्यात्वा पञ्चोपचर्य, ३ श्रीं क्लीं क्लीं हूं हूं क ल ह्रीं सौः स क ल ह्रीं क्लीं क्लीं ह्रीं श्रीं इति सप्तदशाक्षरं सञ्जीविनीमन्त्रं सप्तवारं जपेत् ।

ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं श्रीं ह् सः क ए ई ल ह्रीं, ह स क ह् ल ह्रीं स क ल ह्रीं हं सः ह्रीं श्रीं, इति त्रयोविंशत्यक्षरं प्राणमन्त्रं सप्तवारं जपेत् ।

३ ॐ श्रीं ऐं क्लीं ह्रीं क ए ई ल ह्रीं ॐ ह्रीं श्रीं क्लीं ऐं ह स क ह् ल ह्रीं, ॐ ऐं श्रीं क्लीं ह्रीं ह स क ल ए ह्रीं ह क ह ल ह्रीं ह ए क ल ह्रीं, ॐ ऐं क्लीं श्रीं ह्रीं क ह ल ए ह्रीं क ह ए ल ह्रीं क ह ह ल ह्रीं ह सः, ॐ ह्रीं श्रीं ह् सः सोऽहं स क ल ह्रीं, इति त्रिसप्तत्यक्षरं दीपिनीमन्त्रञ्च प्रत्येकं सप्तवारं जपेत् ।

(इमे मन्त्राः पञ्चदशीषोडशीनां साधारणाः) ।

षोडशाक्षर्या असाधारणाः पञ्चमन्त्राः । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ ह्रीं श्रीं ह स क्ष म ल व र यूं, स ह क्ष म ल व र यीं, य र ल व क्ष म ल वर यूं ॐ ह्रीं श्रीं ॐ सौः क्लीं ऐं इति महाकामेश्वरमन्त्रं दशवारं जपेत् ।

३ (पञ्चदशी) क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं–त्रिवारं जपेत् ॥१॥

३ (षोडशी) श्रीं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं, त्रिवारं जपेत् ॥२॥

३ ऐं क्लीं सौः बालायै नमः त्रिवारं जपेत् ॥३॥

३ ऐं क्लीं उच्छिष्टचाण्डालि सुमुखि देवि महापिशाचिनि ह्रीं ठः ठः ठः स्वाहा—त्रिवारं जपेत् ॥४॥

३ ॐ ह्रीं श्रीं हूं क्रीं श्रीं उग्रतारे सौः क्लीं ह्रीं श्रीं स्वाहा, त्रिवारं जपेत् ॥५॥ एते पञ्च मन्त्राः पञ्चरत्नपदेन उच्यन्ते ।

ततः सूतकनिवारणाय प्रणवसम्पुटितां मूलविद्यां (पञ्चदशी) दशवार- मावर्त्यानन्तरं विघ्नहरान् षण्मन्त्रान् निखिलंजपेत् । यथा—

ऐं ह्रीं श्रीं, इ रि मि लि कि रि कि लि प रि मिरोम् ।

३ ॐ ह्रीं नमो भगवति महात्रिपुरभैरवि मम त्रैपुररक्षां कुरु कुरु ।

३ संहर संहर विघ्नरक्षोविभीषकान् कालय हु फट् स्वाहा ।

३ ब्लूं रक्ताभ्यो योगिनीभ्यो नमः ।

३ सां सारसाय बहाशनाय नमः ।

३ हु मु लु पु मु लु पु ह्रीं चामुण्डायै नमः ।

एते कुल्लूकाद्या विघ्नहरान्ता जपस्य पूर्वाङ्गमन्त्राः ।

(त्रितारीपूर्वकत्वन्तु सर्वेषां सिद्धमेव) ।

३ ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं भगवति त्रिपुरसुन्दरि स्वाहा, कुलुकां शिरसि, ॐ, सेतुं हृदि, ह्रीं महासेतुं कण्ठे, ह्रीं महासेतुं सहस्रारे, ॐ श्रीं अं एं क्लीं सौः अं आ इं ईं उं ऊं ....क्षं इति निर्वाणं नाभौ, क्लीं कामबीजं लिङ्गे, जिह्वायां मूलविद्यां विचिन्त्य जपेत् ।

ततः पेशोच्छन्ना सुवर्णरत्नस्फटिकमणिपुत्रजीवरुद्राक्षाद्यन्यतमनिर्मितां मालां श्यामाक्रमे वक्ष्यमाणेन संस्कारविधिना संस्कृतामादाय, क्वचित्पात्रे वामपाणौ वा निधाय, सामान्यार्घ्योदकेन शुद्धोदकेन वा मूलेनाभ्युक्ष्य,

ॐ मां माले महामाये सर्वशक्तिस्वरूपिणि ।
चतुर्वर्गस्त्वयि न्यस्तस्तस्मान्मे सिद्धिदा भव ॥

इति प्रार्थ्य, ह्रीं सिद्ध्यै नमः, इति मन्त्रेण पुनः पुनः आवृत्तेन गन्धादिभिः पञ्चभिः गन्धपुष्पाभ्यामेव वा सम्पूज्य, ऐं ह्रीं श्रीं गं

अविघ्नं कुरु माले त्वं करे गृह्णामि दक्षिणे ।
जपकाले तु सततं प्रसीद मम सिद्धये ॥

इति दक्षिणहस्तेन मालां गृहीत्वा, मध्यमामध्यपर्वावलम्बिनीं तां तर्जन्या वामहस्तेन चास्पृशन् एकमणिग्रहण अन्यमनुपाददानः क्रमादङ्गुष्ठाग्रेण मणीन् परिवर्तयन् जृम्भाक्षुताद्यकुर्वन् अनिद्राणः, एतेषां सम्भवे-आचम्य देवतात्मत्वं भावयन्, मालामपातयन् प्रमादपतितायामुक्तसंस्कारं कृत्वा खटखटाशब्दमकुर्वाणः अश्लिष्टमनुमुच्चारयन् असम्भाषमाणो मालामप्रदर्शयन् अन्यदप्युक्तमाचरन् श्रीगुरुमुखादवगतं षड्र्थान्यतममर्थं चतुर्विधैक्यशून्यषट्कावस्थापञ्चकविपुवत्सप्तकमन्त्रचैतन्यादिरहस्यजातं चानुसन्दधानो यथाऽधिकारं मनसोपांशुना वा सहस्रं त्रिशतं शतं वा मूलविद्यामारम्भे प्रोक्तसंख्यावधौ च प्रणवपुटिता सकृज्जपित्वा उत्तराङ्गमन्त्रान् जपदर्शांशमावर्तयेत् ।

जपोत्तराङ्गमन्त्राः

ते तु त्रिपुराद्यष्टचक्रेश्वरीमन्त्रा अष्टौ—

ऐं ह्रीं श्रीं, अं आं सौः, ३ ऐं क्लीं सौः, ३ ह्रीं क्लीं सौः, ३ हैं ह्क्लीं ह्सौः, ३ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः, ३ ह्रीं क्लीं ब्लें, ३ ह्रीं श्रीं सौः, ह्स्रैं ह्स्क्लीं ह्स्सौः ।

मूलमेकं—ऐं ह्रीं श्रीं क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं सकल ह्रीं ।

तत्तत्तिथिनित्याविद्या—ताश्च शुक्लपक्षे कामेश्वर्यादिचित्रान्ताः । कृष्णपक्षे तु चित्रादिकामेश्वर्यन्ताः । तिथिवृद्धावेका नित्या दिनद्वये तिथिक्षये एकस्मिन् दिवसे नित्याद्वयम्, इति क्रमेण जप्याः । यथा—

ऐं ह्रीं श्री अं ऐं स क ल ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः।

३ आं ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभ क्षोभय सर्वसत्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जें ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं ह्रब्लें ह्रीं।

३ इं ॐ ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा ः।

३ ईं ॐ क्रों भ्रों क्रौं झ्रौं छ्रौं ज्रौं स्वाहा।

३ उं ॐ ह्रीं वह्निवासिन्यै नमः।

३ ऊं ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं।

३ ऋं ह्रीं शिवदूत्यै नमः।

३ ॠं ॐ ह्रीं हुं खे च छे क्षः स्त्रीं हुं क्षें ह्रीं फट्।

३ ऌं ऐं क्लीं सौः।

३ ॡं ह् स क ल र डैं ह्स क ल र डीं ह् स क ल र डौः।

३ एं ह्रीं फ्रें स्रूं क्रों आं क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हुं फ्रें ह्रीं।

३ ऐं भ्ब्ल्र्यूं।

३ ॐ स्वौं।

३ औं ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनि देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रां ह्रीं ह्रूं र र र र र र र ज्वालामालिनि हुं फट्।

३ अः च्क्रौम्।

अङ्गोपाङ्गप्रत्यङ्गीभूता बाला, अन्नपूर्णा, अश्वारूढा इति त्रयो वक्ष्यमाणाश्चेति मन्त्राः त्रयोदश।

३ ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं ऐं क्लीं सौः, इति श्रियोऽङ्गबाला।

३ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ नमो भगवति अन्नपूर्णेश्वरि ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा, इति श्रिय उपाङ्गमन्नपूर्णा।

३ ॐ आ ह्रीं क्रों एहि परमेश्वरि स्वाहा, इति श्रीप्रत्यङ्गमध्यारूढा।

कालनित्या तु सूनकृता नोपाता।

अथ पुनरपि ऋष्यादि मानसपूजान्तं विधाय, सबीजा सर्वसंक्षोभिण्यादि मुद्रा प्रदर्श्य,

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत् कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा॥

इति देव्याः वामकरे सामान्यर्घ्यप्रक्षेपेण जप निवेद्य,

त्वं माले सर्वदेवाना प्रीतिदा शुभदा मम।
शुभं कुरुष्व मे भद्रे यशो वीर्यं च सर्वदा॥

इति माला सम्प्रार्थ्य, निगूढ निधाय, श्रीगुरुपादुकामन्त्र मुहुर्मुहुरुच्चारयन् गुरुपरमगुरुपरमेष्ठीगुरून् तत्तन्नामपूर्वं प्रणमेत्।

इति जपविधि।

हादि विद्यान्यासध्यानानि

अस्य हादिपञ्चदशी श्रीविद्यामहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्ति ऋषि पङ्क्तिश्छन्द श्रीदेवीभूषितोत्सङ्ग, श्रीकामेश्वरो देवता हसकलह्रीं बीज स क ल ह्रीं शक्ति ह स क ह ल ह्रीं कीलकम् श्रीदेवीभूषितोत्सङ्गश्रीकामेश्वरदेवता प्रीत्यर्थे श्रीगुरोराज्ञया जपे विनियोग।

ह स क ल ह्रीं	सर्वज्ञताशक्ति धाम्ने	अङ्गुष्ठाभ्या नम।
ह स क ह ल ह्रीं	नित्यतृप्तिशक्ति धाम्ने	तर्जनीभ्या नम।
स क ल ह्रीं	अनादिबोधशक्ति धाम्ने	मध्यमाभ्या नम।
ह स क ल ह्रीं	स्वतन्त्रताशक्ति धाम्ने	अनामिकाभ्या नम।
ह स क ह ल ह्रीं	नित्यमलुप्तशक्ति धाम्ने	कनिष्ठिकाभ्या नम।
स क ल ह्रीं	अनन्तशक्ति धाम्ने	करतलकरपृष्ठाभ्या नम।
ह स क ल ह्रीं	सर्वज्ञताशक्ति धाम्ने	हृदयाय नम।
ह स क ह ल ह्रीं	नित्यतृप्तिशक्ति धाम्ने	शिरसे स्वाहा।
स क ल ह्रीं	अनादिबोधशक्ति धाम्ने	शिखायै वषट्।

ह् स क ल ह्रीं	स्वतन्त्रताशक्ति धाम्ने	कवचाय हुम् ।
ह् स क ह् ल ह्रीं	नित्यमलुप्तशक्ति धाम्ने	नेत्रत्रयाय वौषट् ।
स क ल ह्रीं	अनन्तशक्ति धाम्ने	अस्त्राय फट् ।

ध्यानम्

श्रीदेवीभूषितोत्सङ्गं सान्द्रसिन्दूररोचिषम् ।
हकारादिमनोर्वाच्यं वन्दे कामेश्वरं हरम् ॥
उद्यद्दिनकरप्रख्यं जपाकुसुमसन्निभम् ।
नवरत्नसमायुक्तं मुकुटेन विराजितम् ॥
चतुर्बाहुमुदाराङ्गं मोहयन्तं जगत्त्रयम् ।
श्रीदेवीभूषितोत्सङ्गं ध्यायेत्परशिवं प्रभुम् ॥
एवं ध्यायेन्महादेवं भुक्तिमुक्तिफलप्रदम् । इति ।

बालात्रिपुरसुन्दरीमन्त्रस्य न्यासध्यानानि

अस्य श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी महामन्त्रस्य दक्षिणा मूर्ति ऋषिः पङ्क्तिश्छन्दः श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी देवता ऐं बीजं सौः शक्तिः क्लीं कीलकम् श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीदेवताप्रीत्यर्थे श्रीगुरोराज्ञया जपे विनियोगः।

दक्षिणा मूर्तये ऋषये नमः शिरसि । पङ्क्तिश्छन्दसे नमो मुखे ।
श्रीबालात्रिपुरसुन्दरी देवतायै नमो हृदये । ऐं बीजाय नमो गुह्ये ।
सौः शक्तये नमः पादयोः । क्लीं कीलकाय नमः नाभौ ।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

ऐं अङ्गुष्ठाभ्यां नमः । क्लीं तर्जनीभ्यां नमः । सौः मध्यमाभ्यां नमः ।
ऐंअनामिकाभ्यांनमः । क्लींकनिष्ठिकाभ्यांनमः । सौः करतलकरपृष्ठाभ्यांनमः।

ऐं हृदयाय नमः । क्लीं शिरसे स्वाहा । सौः शिखायै वषट् । ऐं कवचाय हुम् । क्लीं नेत्रत्रयाय वौषट् । सौः अस्त्राय फट् ।

अरुणकिरणजालैः रञ्जिता सावकाशा
विधृतजपवटीका पुस्तकाभीतिहस्ता
इतरकरवराढ्या फुल्लकल्हारसंस्था
निवसतु हृदि बाला नित्यकल्याणशीला ।

ऐंकाराङ्कितगर्भितानलशिखां सौः क्लीं कलां बिभ्रतीम्,
सौवर्णाम्बुजधारिणीं वरधरां धाराधराङ्गोज्ज्वलाम्।
वन्दे साङ्कुशपाशपुस्तकधरां स्रग्भासितोद्यत्कराम्,
तां बालां त्रिपुरां पदत्रयतनुं षट्चक्रसञ्चारिणीम्॥

मालासृणी पुस्तक पाश हस्तां
बालाम्बिकां श्रीललितां कुमारीम्।
कुमारकामेश्वरकेलिलोलां
नमामि गौरीं नववर्षवेषाम्॥

श्रीमहाषोडशीमहिमा

समस्तजगतामुत्पत्तिभूताशिवा। सेयं श्रीब्रह्मस्वरूपा सकलगुणमयी निर्गुणा निष्प्रपञ्चा साक्षात्कामदुघा सुरमुनिनिवहैर्वन्दिताऽऽनन्दरूपा।

वाक्यकोटिसहस्रैस्तु जिह्वाकोटिशतैरपि।
वर्णितुं नैव शक्येऽहं श्रीविद्यां षोडशाक्षरीम्॥
वैखरीवाच्यभावत्वादशक्ता गुणवर्णने।
यतो निरक्षरं वस्तु परा तत्रैव कारणम्॥
मूकीभूता हि पश्यन्ती मध्यमा मध्यमा भवेत्।
ब्रह्मविद्यास्वरूपा हि भुक्तिमुक्तिफलप्रदा॥
एकोच्चारेण देवेशि! वाजपेयस्य कोटयः।
अश्वमेधसहस्राणि प्रादक्षिण्यं भुवस्तथा॥
काश्यादितीर्थयात्राः स्युः सार्धकोटित्रयान्विताः।
तुलां नार्हन्ति देवेशि! नात्र कार्या विचारणा॥
एकोच्चारेण गिरिजे किं पुनर्ब्रह्म केवलम्।
षोडशार्णा महाविद्या न प्रकाश्या कदाचन॥
गोपितव्या त्वया भद्रे स्वयोनिरिव पार्वति।
षोडशीयं सुगोप्या हि स्नेहाद्देवि प्रकाशिता॥
अपि प्रियतमं देयं सुतदारधनादिकम्।
राज्यं देयं शिरो देयं न देया षोडशाक्षरी॥

श्रीसुन्दरी भेदाः

रुद्रयामले—ॐ क्लीं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः क ए ई ल ह्रीं हसकलहह्रीं सकलह्रीं स्त्रीं ऐं क्रों क्रौं क्लीं हूं, हसकलह्रीं हसकलहलह्रीं हंसः, सप्तदशी। हसकलहह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं। हसकलह्रीं, सहसकहलह्रीं सकलह्रीं। इति षोडशीद्वयम्।

हसकलहह्रीं। हसकहलह्रीं। सकलहह्रीं, लोपामुद्रा १७।

ऐं हसकलह्रीं क्लीं हसकहलह्रीं सौः सकलह्रीं लोपा० विद्या १८।

ॐ ऐं क्लीं सौं कएलहह्रीं सौः क्लीं ऐं ॐ ऐं क्लीं सौः ह स क ल ह्रीं सौः क्लीं ऐं ॐ ऐं क्लीं सौः स क ह ल ह्रीं सौः क्लीं एं ॐ इति परमा। क ल ईं, ब्रह्मविद्या।

कएईलह्रीं हकहलह्रीं हसकलह्रीं, इयमुन्मनीश्रीविद्या।
कएईलह्रीं हकहलह्रीं सहकलह्रीं, इयं वरुणोपासिता।
कएकलह्रीं हकहह्रीं सहकलह्रीं, धर्मराजोपासिता।
कसकलह्रीं हसलकलह्रीं सकलरलह्रीं, वह्न्युपासिता।
हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलरलह्रीं नागराजोपासिता।
, कएरलरह्रीं हकलरहलह्रीं सरकलरह्रीं, वायूपासिता।
कएईरलह्रीं हकहलरह्रीं सहकलरह्रीं बुधोपासिता।
कहलह्रीं हकलहललरह्रीं सकलह्रीं ईशानोपासिता।
कएईलह्रीं ह०म०, रत्युपासिता।
कादि स०ह० क० विलोमर्मिलिता ३० नारायणोपासिता।
कएईलह्रीं हकहसरह्रीं हसकलह्रीं, ब्रह्मोपासिता।
हसकलह्रीं हकहसरह्रीं हसकलह्रीं, जीवोपासिता।
हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं, लोपामुद्रोपासिता।
सहएईरह्रीं हसएईलह्रीं सकएईलह्रीं, मनूपासिता।

कामराजाख्यविद्यायाः शक्ति तुर्याञ्च सुन्दरि ।
हित्वा मुखे शिवेन्द्राढ्या लोपामुद्रा प्रकाशिता ।
एकारं ईकारं हित्वा हकारं सकारं च दद्याद् अन्यत्समानम् ।
शक्तिमादनमध्यगं शिवं कुर्याद् वाग्भवेतु शिवाद्यं कामराजकं चन्द्राद्यन्तु तृतीयं स्यान्मनूपासिता ।
सहाद्यं वाग्भवं देवि ! चन्द्राद्यं शिवमध्यगम् ।
मादनं कामबीजं तु शक्तिबीजं हसाननम् ॥ चन्द्राराधिता ॥
हसाद्यं वाग्भवं शिवाद्यं सहमध्यगम् ।
मादनं कामबीजं तु तार्तीयं शृणु पार्वति ॥
हसाद्यं शक्तिबीजं तु कुबेरेण प्रपूजिता ।
हसकएईलह्रीं हसकहएईलह्रीं हसकएईलह्रीं, कुबेरोपासिता ।
कामराजाख्यविद्यायास्तृतीयं शृणु पार्वति ॥
शक्तिबीजं सहाद्यं स्याद्विद्याऽगस्त्य प्रपूजिता ॥
क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स ह स क ल ह्रीं, इयमगस्त्योपासिता द्वितीया लोपामुद्रोपासिता च ।
कामराजख्यविद्याया वाग्भवे मादनं त्यज ।
चन्द्रं तत्रैव संयोज्य कामराजे ततः परम् ॥
हित्वाचन्द्रं मुखे कुर्याद्विद्येयं नन्दिपूजिता ।
सएईलह्रीं सहकहलह्रीं सकलह्रीं, नन्दिपूजिता ।
कामराजमिदं भद्रे षड्वर्णं सर्वमोहनम् । (हसकहलह्रीं)
शक्तिबीजं वरारोहे चन्द्राद्यं सर्वसिद्धिदम् ।
कामराजाख्यविद्याया हित्वा भूमिं तृतीयके ।
शक्तिबीजे स्थितां देवि ! चन्द्राधः कुरु तत्र च ।
इन्द्राराधितविद्येयं भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ।
क ए ई ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं सकलह्रीं ।
इन्द्रलोपामुद्राख्यविद्या द्वितीया या महेश्वरी ।
कामराजे भृगुं हित्वा मुखे कुर्यात्तमेव हि ॥

शिवं विना चतुर्थं तु तार्तीये शक्रगः शिवः ।
एषा विद्या वरारोहे त्रिपुरा सूर्यपूजिता ।

सूर्य्येण कएईलह्रीं सहकलह्रीं सहसकल ह्रीं । क ए ई ल ह स क ह ल स ह स क ल ह्रीं शिवोपासिता ।

क ए इ ल ह्रीं ह स क ह ल ह्रीं स क ल ह्रीं ह्रीं भुवनेशानं बिन्दुहीना नादहीना दुर्वाससा पूजिता ।

श्रीबीजं शक्तिबीजञ्च कामबीजञ्च वाग्भवम् ।
बालान्तः संस्थितं बीजं प्रणवञ्च ततः परम् ॥
शक्तिबीजं रमां चैव विद्यां च परमेश्वरि ॥
लोपां वा कामराजं वा त्रिकूटामथवा पराम् ॥
विन्यस्य पुनराद्यानि पञ्चबीजानि सुन्दरि ॥
विपरीतक्रमेणैव विन्यसेत्षोडशीपरा ।

एषा श्रीपरमा परात्परतमा सर्वार्थसिद्धिप्रदा सारात्सारतरा ।

इति सुन्दरीभेदाः ।

अथ होमप्रकरणम्

पूजामण्डपस्य ईशानभागे चतुरस्राकारं हस्तायाममङ्गुष्ठोन्नत स्थण्डिलं परिकल्प्य, 'मूलेन' निरीक्ष्य, फट् इति सामान्यार्घ्योदकेन प्रोक्ष्य कुशेन ताडयित्वा, हुं इत्यवगुण्ठ्य स्थण्डिलोपरि मध्यमदक्षिणोत्तरेषु क्रमेण प्रागग्रास्तिस्रो रेखा विलिख्य तदुपरि मध्यमपश्चिमपूर्वेषु उदगग्रास्तिस्रो रेखा विलिख्य, तासु रेखासु उल्लेखक्रमेण—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ब्रह्मणे नमः। ७ यमाय नमः। ७ सोमाय नमः। ७ रुद्राय नमः। ७ विष्णवे नमः। ७ इन्द्राय नमः। इत्यभ्यर्चयेत् ॥

ततः स्वदेहे षडङ्गन्यासं कुर्यात्। यथा—

७ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः। ७ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा। ७ उत्तिष्ठ-पुरुषाय शिखायै वषट्। ७ धूमव्यापिने कवचाय हुं। ७ सप्तजिह्वाय नेत्र-त्रयाय वौषट्। ७ धनुर्धराय अस्त्राय फट्।

अननैव षडङ्गेन अग्नीशासुरवायुकोणेषु मध्ये दिक्षु च स्थण्डिलमभ्यर्च्य तत्र अष्टकोणषट्कोणत्रिकोणात्मकमग्निचक्रं प्रवेशरीत्या विलिख्य त्रिकोणे दिगष्टकं विभाव्य तत्र स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन दिक्षु मध्ये च क्रमात्—

७ पीतायै नमः। ७ श्वेतायै नमः। ७ अरुणायै नमः। ७ कृष्णायै नमः। ७ धूम्रायै नमः। ७ तीव्रायै नमः। ७ स्फुलिङ्गिन्यै नमः। ७ रुचिरायै नमः। ७ ज्वालिन्यै नमः, इति पीठशक्तीः समर्चयेत् ॥

ततः पीठमध्ये-७ तं तमसे नमः। ७ रं रजसे नमः। ७ सं सत्वाय नमः। ७ आं आत्मने नमः। ७ अं अन्तरात्मने नमः। ७ पं परमात्मने नमः। ७ ह्रीं ज्ञानात्मने नमः। इति पूजयेत् ॥

ततः त्रिकोणे—७ ॐ ह्रीं वागीश्वरीवागीश्वराभ्यां नमः—इति मन्त्रेण जनिष्यमाणस्य वन्हेः पितरौ वागीश्वरीवागीश्वरौ सम्पूज्य तयोर्मिथुनी भावं भावयित्वा, अरणेः सूर्यकान्ताद्वा वन्हिमुत्पाद्य द्विजगृहाद्वा आनीय मृत्पात्रे ताम्रपात्रे वा अग्निं स्थण्डिलाद्बहिः आग्नेय्यां ऐशान्यां नैर्ऋत्यां

वा दिशि 'निधाय, तस्मात्क्रव्यादांशमेकमग्निशकलं फट् इति अस्त्रमन्त्रेण नैर्ऋत्यां निरस्य अग्निं मूलेन निरीक्ष्य प्रोक्ष्य च, अस्त्रेण कुशैस्ताडयित्वा, कवचेनावगुण्ठ्य, धेनुयोनिमुद्रे प्रदर्श्य, ततः ७ ॐ रं वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा, इति मूलाधारोद्गतं सम्विदग्निं ललाटनेत्रद्वारा निर्गमय्य तं वागीश्वरीयोन्यां प्रवेशबुद्धया बाह्याग्नौ संयोजयेत् ॥

ततः कवचाय हुं इति मन्त्रेण इन्धनैराच्छाद्य ७ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेदं हुताशनम् । सुवर्णवर्णममलं समिद्धं विश्वतोमुखम् ॥ इत्युपस्थाय । ७ उत्तिष्ठ पुरुष हरितपिङ्गल लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय मे देहि दापय स्वाहा, इति वह्निमुत्थाप्य ततः ॐ ह्रीं इति स्थण्डिलोपरि अग्निं त्रिवारं भ्रामयित्वा स्थण्डिले स्थापयेत् । ७ चित्पिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा, इति प्रज्वाल्य, ज्वालिनीमुद्रां प्रदर्श्य, (प्राक्तोयं निधाय), वागीश्वरीगर्भे धृतं ध्यात्वा, ७ ऐं नमः अस्य होमाग्नेः गर्भाधानकर्म, पुंसवनकर्म, सीमन्तोन्नयनकर्म, जातकर्म, ललिताग्निरिति नाम्ना नामकरणकर्म कल्पयामि नमः, ७ ऐं नमः अस्य ललिताग्नेः अन्नप्राशनकर्म, चौलकर्म, उपनयनकर्म, गोदानकर्म, विवाहकर्म कल्पयामि नमः—इति तत्तत्कर्मभावनया अक्षतैरभ्यर्चयेत् ॥

ततः सामान्यार्घ्योदकेनाग्निं मूलेन परिषिच्य अग्निमलङ्कृत्य प्रागग्रैरुदगग्रैश्च कुशैः परिस्तीर्य त्रिभिः परिधिभिः प्राग्वर्जं परिधानं कृत्वा ।

त्रिनयनमरुणाब्जबद्धमौलिं सुशुक्लां-
शुकमरुणमनेकाकल्पमम्भोजसंस्थम् ।
अभिमतवरशक्तिं स्वस्तिकाभीतिहस्तं
नमत कनकमालालङ्कृतांसं कृशानुम् ॥

(शारदातिलके—वैश्वनरं स्थितं ध्यायेत् समिद्धोमेषु देशिकः । शयानमाज्यहोमेषु निषण्णं शेषवस्तुषु ॥)

अथ अष्टकोणे स्वाग्रादिप्रादक्षिण्येन—

७ जातवेदसे नमः। ७ सप्तजिह्वाय नमः। ७ हव्यवाहनाय नमः। ७ अश्वोदराय नमः। ७ वैश्वानराय नमः। ७ कौमारतेजसे नमः। ७ विश्वमुखाय नमः। ७ देवमुखाय नमः। इत्यभिपूज्य॥

षट्कोणे षडङ्गं यथा—

७ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः। ७ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा। ७ उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट्।७ धूमव्यापिने कवचाय हुम्। ७ सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट्। ७ धनुर्धराय अस्त्राय फट्। इत्यभ्यर्च्य।

त्रिकोणे—७ ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा, इति मन्त्रेण अग्निं पुष्पाक्षतैरर्चयेत्।

अथ-आज्यं मूलेन सप्तवारमभिमन्त्रणेन संशोध्य पुरतो दर्भेषु निधाय स्रुवञ्च मूलेन प्रक्षाल्य तदुत्तरतो निवेश्य।

अथ अग्नेः सप्तजिह्वासु एकैका आज्याहुतिं कुर्यात्। यथा—

७ हिरण्यायै नमः स्वाहा—		हिरण्याया इदं न मम		(ऐशान्या)
७ कनकायै	"	कनकाया	"	(प्राच्या)
७ रक्तायै	"	रक्ताया	"	(आग्नेय्या)
७ कृष्णायै	"	कृष्णाया	"	(नैर्ऋत्या)
७ सुप्रभायै	"	सुप्रभाया	"	(पश्चिमाया)
७ अतिरक्तायै	"	अतिरक्ताया	"	(वायव्याया)
७ बहुरूपायै	"	बहुरूपाया	"	(मध्ये)

ततस्तिस्र आहुती-र्जुहुयात्। यथा—

७ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा—अग्नय इदम्। ७ उत्तिष्ठपुरुष हरितपिङ्गल लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय मे देहि दापय स्वाहा—अग्नय इदम्। ७ चितिपिङ्गल हन हन दह दह पच पच सर्वज्ञाज्ञापय स्वाहा—अग्नय इदम्। अथ अग्नेर्मध्यभागे स्थिताया दक्षिणोत्तरायतताया बहुरूपाख्यजिह्वाया, ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्रैं ह्स्क्लरीं ह्स्रौः। महापद्मवनान्तस्थे करुणानन्दविग्रहे। सर्वभूतहिते मातरेह्येहि परमेश्वरि॥

इति श्रीदेवीमावाह्य उपचारमन्त्रैः गन्धादीन् पञ्चोपचारानाचर्य पूजाक्रमेण जुहुयात् । यथा—

४ गणपतिमूल महागणपतये स्वाहा (त्रिः) ॥

४ मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा (दशकृत्वः) ॥

क-५ हृदयाय नमः हृदयदेव्यै, ह-६ शिरसे स्वाहा शिरोदेव्यै, स-४ शिखायै वषट् शिखादेव्यै, क-५ कवचाय हु कवचदेव्यै, ह-६ नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रदेव्यै, स-४ अस्त्राय फट् अस्त्रदेव्यै स्वाहा ॥

अः क-१५ अः ललितामहानित्यायै (त्रिः), तत्तिथिनित्यामन्त्रेण तत्तिथिनित्यायै, अः क-१५ अः ललितामहानित्यायै स्वाहा ॥

४ अ ऐं सकलह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे सौः अ कामेश्वरीनित्यायै स्वाहा ॥

४ आ ऐं भगभुगे भगिनि भगोदरि भगमाले भगावहे भगगुह्ये भगयोनि भगनिपातिनि सर्वभगवशङ्करि भगरूपे नित्यक्लिन्ने भगस्वरूपे सर्वाणि भगानि मे ह्यानय वरदे रेते सुरेते भगक्लिन्ने क्लिन्नद्रवे क्लेदय द्रावय अमोघे भगविच्चे क्षुभक्षोभय सर्वसत्वान् भगेश्वरि ऐं ब्लूं जें ब्लूं भें ब्लूं मों ब्लूं हें ब्लूं हें क्लिन्ने सर्वाणि भगानि मे वशमानय स्त्रीं हर ब्लें ह्रीं आ भगमालिनी-नित्यायै स्वाहा ॥

४ इ ॐ ह्रीं नित्यक्लिन्ने मदद्रवे स्वाहा इ नित्यक्लिन्नानित्यायै स्वाहा ॥

४ ई ॐ क्रों भ्रों क्रौं झ्रौं छ्रौं ज्रौं स्वाहा ई भेरुण्डानित्यायै स्वाहा ॥

४ उ ॐ ह्रीं वन्हिवासिन्यै नमः उ वन्हिवासिनीनित्यायै स्वाहा ॥

४ ऊ ह्रीं क्लिन्ने ऐं क्रों नित्यमदद्रवे ह्रीं ऊ महावज्रेश्वरीनित्यायै स्वाहा ॥

४ ऋ ह्रीं शिवदूत्यै नमः ऋ शिवदूतीनित्यायै स्वाहा ।

४ ॠ ॐ ह्रीं हु खे च छे क्षः स्त्रीं हु क्षें ह्रीं फट् ॠ त्वरितानित्यायै स्वाहा ॥

४ ऌ ऐं क्लीं सौः ऌ कुलसुन्दरीनित्यायै स्वाहा ॥

४ ॡ ह्स्क्लर्डें ह्स्क्लर्डीं ह्स्क्लर्डौः ॡ नित्यानित्यायै स्वाहा ॥

४ ए ह्रीं फ्रें स्रूं क्रों आ क्लीं ऐं ब्लूं नित्यमदद्रवे हु फ्रें ह्रीं एं नीलपताका-नित्यायै स्वाहा ॥

४ ऐं म्म्र्यूं ऐ विजयानित्यायै स्वाहा ॥

४ ओ स्वौं ओ सर्वमङ्गलानित्यायै स्वाहा ॥

४ ओ ॐ नमो भगवति ज्वालामालिनी देवदेवि सर्वभूतसंहारकारिके जातवेदसि ज्वलन्ति ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल ह्रा ह्रीं ह्रू र र र र र र र ज्वालामालिनि हु फट् स्वाहा ओंज्वालामालिनीनित्यायै स्वाहा ॥

४ अ च्फ्रों अ चित्रानित्यायै स्वाहा ॥

४ अ. पञ्चदशी अ. ललितामहानित्यायै स्वाहा ॥

४ ऐं ग्लौं ह्स्फ्रे हसक्षमलवरयू ह्म्रौं सहक्षमलवरयी स्हौ. श्रीविद्यानन्दनाथात्मकचर्यानन्दनाथाय स्वाहा, उड्डीशानन्दनाथाय, प्रकाशानन्दनाथाय, विमर्शानन्दनाथाय, आनन्दानन्दनाथाय, षष्ठीशानन्दनाथाय, ज्ञानानन्दनाथाय, सत्यानन्दनाथाय, पूर्णानन्दनाथाय, मित्रेशानन्दनाथाय, स्वभावानन्दनाथाय, प्रतिभानन्दनाथाय, सुभगानन्दनाथाय स्वाहा ॥

४ परप्रकाशानन्दनाथाय, परशिवानन्दनाथाय, पराशक्त्यम्बायै, कौलेश्वरानन्दनाथाय, शुक्लदेव्यम्बायै, कुलेश्वरानन्दनाथाय, कामेश्वर्यम्बायै, भोगानन्दनाथाय, क्लिन्नानन्दनाथाय, समयानन्दनाथाय, सहजानन्दनाथाय, गगनानन्दनाथाय, विश्वानन्दनाथाय, विमलानन्दनाथाय, मदनानन्दनाथाय, भुवनानन्दनाथाय, लीलाम्बायै, स्वात्मानन्दनाथाय, प्रियानन्दनाथाय, (परमेष्ठिगुरु) अमुकानन्दनाथाय, (परमगुरु) अमुकानन्दनाथाय, (स्वगुरु) अमुकानन्दनाथाय स्वाहा ॥

४ अ आ सौः त्रैलोक्यमोहनचक्राय, अ अणिमासिद्ध्यै, लं लघिमासिद्ध्यै, मं महिमासिद्ध्यै, ईं ईशित्वसिद्ध्यै, व वशित्वसिद्ध्यै, प प्राकाम्यसिद्ध्यै, भु भुक्तिसिद्ध्यै, इ इच्छासिद्ध्यै, प प्राप्तिसिद्ध्यै, स सर्वकामसिद्ध्यै, आ ब्राह्मीमात्रे, ईं माहेश्वरीमात्रे, ऊ कौमारीमात्रे, ॠ वैष्णवीमात्रे, ॡ वाराहीमात्रे, ऐं महेन्द्रीमात्रे, ॐ चामुण्डामात्रे, अ महालक्ष्मीमात्रे, द्रा सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्त्यै, द्री सर्वविद्राविणीमुद्राशक्त्यै, क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्त्यै, ब्लू सर्ववशङ्करीमुद्राशक्त्यै, स सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्त्यै, क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्त्यै, ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्त्यै, ह्सौ सर्वबीजमुद्राशक्त्यै, ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्त्यै, ह्सैं ह्स्क्ल्री ह्सौ सर्वत्रिखण्डमुद्राशक्त्यै, प्रकटयोगिनीभ्यः, अ आ सौ त्रिपुराचक्रेश्वर्यै, अ अणिमासिद्ध्यै, द्रा सर्वसंक्षोभिणीमुद्राशक्त्यै, मूल ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ।

४ ऐं क्लीं सौः सर्वाशापरिपूरकचक्राय, अ कामाकर्षिण्यै, आ बुद्ध्याकर्षिण्यै, इ अहङ्काराकर्षिण्यै, ईं शब्दाकर्षिण्यै, उ स्पर्शाकर्षिण्यै, ऊं रूपाकर्षिण्यै, ऋ रसाकर्षिण्यै, ॠ गन्धाकर्षिण्यै, ऌं चित्ताकर्षिण्यै, ॡं धैर्याकर्षिण्यै, ए स्मृत्याकर्षिण्यै, ऐ नामाकर्षिण्यै, ओ बीजाकर्षिण्यै, औ आत्माकर्षिण्यै, अं अमृताकर्षिण्यै, अः शरीराकर्षिण्यै, गुप्तयोगिनीभ्य, ऐं क्लीं सौः त्रिपुरेशीचक्रेश्वर्यै, ल लघिमासिद्धये, द्रां सर्वविद्राविणीमुद्राशक्त्यै, मूल ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

३ ह्रीं क्लीं सौः सर्वसंक्षोभणचक्राय, कं-५ अनङ्गकुसुमायै, च-५ अनङ्गमेखलायै, ट-५ अनङ्गमदनायै, त-५ अनङ्गमदनातुरायै, प ५ अनङ्गरेखायै, य-४ अनङ्गवेगिन्यै, श-४ अनङ्गाङ्कुशायै, ळ क्ष अनङ्गमालिन्यै, गुप्ततरयोगिनीभ्य, ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वर्यै, म महिमासिद्धये, क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्त्यै, मूल ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

४ हैं ह्क्लीं ह्सौः सर्वसौभाग्यदायकचक्राय, कं सर्वसंक्षोभिण्यै, ख सर्वविद्राविण्यै, ग सर्वाकर्षिण्यै, घं सर्वाल्हादिन्यै, ङ सर्वसम्मोहिन्यै, चं सर्वस्तम्भिन्यै, छ सर्वजृम्भिण्यै, ज सर्ववशङ्कर्यै, झ सर्वरञ्जन्यै, ञ सर्वोन्मादिन्यै, ट सर्वार्थसाधिन्यै, ठ सर्वसम्पत्तिपूरण्यै, ड सर्वमन्त्रमय्यै, ढ सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै, सम्प्रदाययोगिनीभ्य, हैं ह्क्लीं ह्सौः त्रिपुरवासिनीचक्रेश्वर्यै, ईं ईशित्वसिद्धये, ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्राशक्त्यै, मूल ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

४ ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः सर्वार्थसाधकचक्राय, ण सर्वसिद्धिप्रदायै, तं सर्वसम्पत्प्रदायै, थं सर्वप्रियङ्कर्यै, द सर्वमङ्गलकारिण्यै, ध सर्वकामप्रदायै, न सर्वदुःखविमोचिन्यै, पं सर्वमृत्युप्रशमन्यै, फ सर्वविघ्ननिवारिण्यै, बं सर्वाङ्गसुन्दर्यै, भ सर्वसौभाग्यदायिन्यै, कुलोत्तीर्णयोगिनीभ्य, ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौः त्रिपुराश्रीचक्रेश्वर्यै, वं वशित्वसिद्धये, स. सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्त्यै, मूल ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा।

४ ह्रीं क्लीं ब्लें सर्वरक्षाकरचक्राय, मं सर्वज्ञायै, यं सर्वशक्त्यै, रं सर्वैश्वर्यप्रदायै, लं सर्वज्ञानमय्यै, व सर्वव्याधिविनाशिन्यै, शं सर्वाधार-

स्वरूपायै, पं सर्वपापहरायै, सं सर्वानन्दमय्यै, हं सर्वरक्षास्वरूपिण्यै, क्षं सर्वेप्सितफलप्रदायै, निगर्भयोगिनीभ्यः, ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनीचक्रेश्वर्यै, पं प्राकाम्यसिद्धयै, क्रों सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्त्यै, मूलं ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ॥

४ ह्रीं श्रीं सौः सर्वरोगहरचक्राय, अं + + अः(१६) ब्लूं वशिनीवाग्देवतायै, कं-५ क्लह्रीं कामेश्वरीवाग्देवतायै, चं-५ न्व्लीं मोदिनीवाग्देवतायै, टं-५ य्लूं विमलावाग्देवतायै, तं-५ ज्म्रीं अरुणावाग्देवतायै, पं-५ ह्स्ल्व्यूं जयिनीवाग्देवतायै, यं-४ झ्म्र्यूं सर्वेश्वरीवाग्देवतायै, शं-६ क्ष्म्रीं कौलिनी वाग्देवतायै, रहस्ययोगिनीभ्यः, ह्रीं श्रीं सौः त्रिपुरासिद्धाचक्रेश्वर्यै, भु भुक्तिसिद्धयै, हस्ख्फ्रें सर्वखेचरीमुद्राशक्त्यै, मूलं ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ॥

४ यां रां लां वां सां द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः सर्वजम्भनेभ्यः कामेश्वरीकामेश्वरबाणेभ्यः स्वाहा ॥

४ थं धं सर्वसंमोहनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरधनुर्भ्यां स्वाहा ।

४ ह्रीं आं सर्ववशीकरणाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वरपाशाभ्यां स्वाहा ।

४ क्रों क्रों सर्वस्तम्भनाभ्यां कामेश्वरीकामेश्वराङ्कुशाभ्यां स्वाहा ।

४ ह्सैं ह्स्क्लरीं ह्सौः सर्वसिद्धिप्रदचक्राय, ऐं क-५ महाकामेश्वर्यै, क्लीं ह-६ महावज्रेश्वर्यै, सौः स-४ महाभगमालिन्यै, ऐं क-५ क्लीं ह-६ सौः स-४ श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै, अतिरहस्ययोगिनीभ्यः, ह्सैं ह्स्क्लरीं ह्सौः त्रिपुराम्बाचक्रेश्वर्यै, इं इच्छासिद्धयै, ह्सौः सर्वबीजमुद्राशक्त्यै, मूलं ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ॥

४ पञ्चदशी सर्वानन्दमयचक्राय, मूलं श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा । इति दशवारं, परापरातिरहस्ययोगिन्यै, मूलं त्रिपुरसुन्दरीचक्रेश्वर्यै, पं प्राप्तिसिद्धयै, ऐं सर्वयोनिमुद्राशक्त्यै, मूलं ललितामहात्रिपुरसुन्दर्यै स्वाहा ॥

४ षोडश्युपासकाना—'तुरीयविद्या' तुरीयाम्बायै, स सर्वकामसिद्धयै, ह्सैं ह्स्क्लरीं ह्सौः सर्वत्रिखण्डामुद्राशक्त्यै, 'महाषोडशी' महात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकायै स्वाहा ॥

पञ्चपञ्चिकादिहोमे तत्तन्मन्त्रेण प्रदर्शितरीत्या होमः कर्तव्यः ॥

ततो होमावशिष्टेन आज्येन स्रुचं पूरयित्वा पुष्पं फलं अग्रे निधाय स्रुवेणाच्छाद्य मूलेन वौषट् इति उत्थितो जुहुयात् ॥ ततो बलिदानम् (पृष्ठ १८६) । ततो महाव्याहृतिहोमः । यथा—

७ भूरग्नये च पृथिव्यै च महते च स्वाहा । अग्नये पृथिव्यै महत इदम् । ७ भुवो वायवे चान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा । वायवे अन्तरिक्षाय महत इदम् । ७ स्वरादित्याय च दिवे च महते च स्वाहा । आदित्याय दिवे महत इदम् । ७ भूर्भुवःस्वश्चन्द्रमसे च नक्षत्रेभ्यश्च दिग्भ्यश्च महते च स्वाहा । चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यो दिग्भ्यो महत इदम् । इति चतस्र आहुतीराज्येन हुत्वा ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत् स्मृतं यदुक्तं यत् कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा । परब्रह्मण इदम् । इति ब्रह्मार्पणाहुतिं विदध्यात् ॥

अस्मिन् ललिताहोमकर्मणि मध्ये सम्भावितसमस्तमन्त्रलोपतन्त्रलोपद्रव्यलोपक्रियालोपाज्यलोपन्यूनातिरेकविस्मृतिविपर्यासप्रायश्चित्तार्थं सर्वप्रायश्चित्तं होष्यामि । ॐ भूर्भुवस्वः स्वाहा । प्रजापतये इदम् । श्रीविष्णवे स्वाहा । विष्णवे परमात्मन इदम् । नमो रुद्राय पशुपतये स्वाहा । रुद्राय पशुपतये इदम् । आप उपस्पृश्य । सप्त ते अग्ने समिधः सप्त जिह्वाः सप्त ऋषयः सप्त धामप्रियाणि । सप्त होत्राः सप्तधा त्वा यजन्ति सप्त योनीरापृणस्व घृतेन स्वाहा । अग्नये सप्तवत इदम् । आज्यपात्रादीनुत्तरतो निधाय प्राणायामं कृत्वा, अग्निं परिषिञ्चति । अदितेऽन्वमंस्थाः । अनुमतेऽन्वमंस्थाः । सरस्वत्यन्वमंस्थाः । देव सवितः प्रासावीः ॥

ऊर्ध्वाया दिशि यज्ञ सम्वत्सरो यज्ञपतिर्माजयन्ताम्—इति प्रतिदिशमुत्सृज्य पुरस्तात् निस्राव्य, तेन—ब्राह्मणेभ्यमृत हित येन देवा पवित्रेणात्मान पुनते सदा तेन सहस्रधारेण पावमान्य पुनन्तु मा—इत्यात्मान प्रोक्ष्य, प्रागादिपरिस्तरणमुत्तरे विसृजेत्। अग्नि प्रज्वलित वन्दे जातवेद हुताशनम्। सुवर्णवर्णममल समिद्ध विश्वतोमुखम्॥ इत्युपस्थाय चिदग्नि, उपावरोह जातवेद पुनस्त्वं देवेभ्यो हव्यं वह न पजानन्। आयु प्रजां रयिमस्मासु घेहि अजस्रो दीदिहि नो दुरोणे॥ ललिताग्निमात्मन्युद्वासयामि नम इत्युद्वास्य हृदये अञ्जलि दद्यात्।

तद्भूतितिलकं—त्र्यायुष जमदग्ने कश्यपस्य त्र्यायुषम् यद्देवेसु त्र्यायुषं तन्नोऽस्तु त्र्यायुषम्। इति त्र्यायुषेण मन्त्रेण धारयेत्।

इति होमप्रकरणम् समाप्तम्॥

जपप्रकरणे सूनृता पुरश्चरणादिर्न न विधित्सितम् काम्यकर्मण्येवतस्यावश्यकत्वात्। युक्त चैतत्—

शुभ वाप्यशुभं वापि काम्यं कर्म करोति य.।
तस्यारित्व व्रजेन्मन्त्रो न तस्मात् तत्परो भवेत्॥
काम्यकर्मप्रसक्ताना तावन्मात्रं फलं भवेत्।
निष्काम भजता देवमखिलाभीष्टसिद्धय॥

देवेत्युपलक्षण देव्या अपि। काम्यकर्मविधिश्च दुःसाध्यश्चेत् कस्यचित् काम्यफललिप्सा, तेन तदा श्यामाक्रमोक्त पुरश्चरणादिक काम्यहोम-द्रव्य चानुसन्धेयम्।

श्यामदीनामुपासनाकाल

ललिता प्राह्णे, अपराह्णे श्यामा, रात्रौ दण्डिनी, ब्राह्मे मुहूर्ते परा, सूर्यपरावृत्तिप्राक्काल प्राह्ण।

श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दर्या प्रधानसचिवपदमलङ्करोति श्यामा तदुपासनद्वारा श्रीविद्या प्रसीदति। यथा राजदर्शनोत्सुका आदौ प्रधान सचिवमुपसेव्य तद्द्वारा राजदर्शन कुर्वन्ति तथैव श्यामाया प्रथममुपासन न्याय्यम्। 'प्रधानद्वारा राजप्रसादन हि न्याय्यम्' इति परशुरामसूत्रात्।

साङ्गां सङ्गीतमातृकां श्यामामिष्ट्वा सिंहासनारूढायाः ललितायाः महाराज्ञ्याः दण्डनायिकास्थानीयां दुष्टनिग्रहशिष्टानुग्रहनिरर्गलाज्ञां चन्द्रां कोलमुखीं वरिवस्येत्। इयञ्च महारात्रे पूज्या। ततश्च श्रीविद्याया महाराज्ञ्या हृदयात्मिकां परां पूजयेत्। तत्प्रीतौ श्रीविद्या प्रीतिः सुतरां सम्पद्यते 'प्रभुहृदयज्ञातुः पदे पदे सुखानि' भवन्तीति परशुरामसूत्रात्।

क्रत्वर्थनियमाः

कृष्णाष्टमीतच्चतुर्दश्यमापूर्णिमासंक्रान्तिसंज्ञेषु पर्वसु पञ्चसु सविशेषैः साधनैः आराधयेत्। तत्प्रकारस्तु नैमित्तिकप्रकरणे वक्ष्यते। नित्यनैमित्तिक-क्रमौ च शिष्यसुतादिभिरपि कारयितुं शक्यते।

श्रीललितोपासको नेक्षुखण्डं भक्षयेत्। न दिवा स्मरेद्वार्तालीम्। न जुगुप्सेत सिद्धद्रव्याणि। न कुर्यात् स्त्रीषु निष्ठुरताम्। वीरस्त्रियं न गच्छेत्। न तां हन्यात्। न तत् द्रव्यमपहरेत्। नात्मेच्छया मपञ्चकमुररीकुर्यात्। कुलभ्रष्टैः सह नासीत। न बहु प्रलपेत्। योषितं सम्भाषमाणामप्रति-सम्भाषमाणो न गच्छेत्। कुलपुस्तकानि गोपायेत्। एते क्रत्वर्थनियमाः अकरणे क्रतुवैगुण्यापादकाः साधकेनावश्यमनुष्ठेयाः। अन्यांश्च दीक्षा-क्रमोक्तान् सामयिकानामाचाराननुतिष्ठेत्। अनिशमात्मनं कामकलात्मकं श्रीदेवीरूपं भावयेत्। एवं वर्तमानस्य कुलनिष्ठस्य सर्वतः कृतकृत्यता। शरीरविमोके च श्वपचगृहकाश्योर्नान्तरम्। स एव जीवन्मुक्तः सुखी विहरेदिति॥

श्रीचक्रप्रतिष्ठापनविधिः

दीक्षाप्रकरणोक्ते शुभे दिवसे कृताह्निकः साधको गणपतिमाराध्य ब्राह्मणैः स्वस्ति वाचयित्वा आचम्य प्राणानायम्य देशकालौ संकीर्त्य अमुकगोत्रोऽमुकशर्मवर्मादिरहं महात्रिपुरसुन्दरीमाराधयिष्यन् श्रीचक्रराज-प्रतिष्ठापनं करिष्ये, इति दुग्धदधिघृतशकृन्मूत्रात्मकं पञ्चगव्यमानीय सम्मिश्य हौं इति मन्त्रेण अष्टोत्तरशतवारानभिमन्त्र्य, तत्र प्रणवेन

यन्त्रं निक्षिप्य तत उद्धृत्य पात्रान्तरे निधाय, मिश्रितेन गोदुग्धदधिघृतमधुशर्करात्मकेन पञ्चामृतेन सस्नाप्य धूपयेत् । अथ प्रत्येकं दुग्धादिभि क्रमेण अन्तरान्तरा धूपनपूर्वकं स्नपयित्वा पुनर्मिश्रितैश्च तै स्नपयेत् । ततोऽष्टासु दिक्षु शालितण्डुलपुञ्जोपरि निहिते नूतनवसनवेष्टिते गन्धपुष्पार्चिते कुङ्कुमरोचनाचन्दनकस्तूरीसुरभिलशीतलसलिलपूर्णे कुशाग्रेण स्पृष्ट्वा मूलेनाष्टोत्तरशतवारानभिमन्त्रिते सौवर्णादिमार्त्तिकान्तान्यतमैरष्टभि कलशैरभिषिञ्चेत् । इह सर्वमपि पञ्चगव्यादिकं स्नानं मूलमन्त्रकरणकमेव । अथ यन्त्रं धौतेन वाससा परिमृज्य पीठे निधाय कुशाग्रैं स्पृशन्—ऐँ ह्रीँ श्रीँ ॐ यन्त्रराजाय विद्महे महायन्त्राय धीमहि । तन्नो यन्त्र प्रचोदयात्, इति यन्त्रगायत्रीम् अष्टोत्तरशतवारानावर्त्यात्मनो भूतशुद्ध्यादिमातृकान्यासान्तं कृत्वा यन्त्रं करेण सस्पृश्य प्राणप्रतिष्ठा कुर्यात् । यथा—

अस्य श्रीयन्त्रराजस्य प्राणप्रतिष्ठामहामन्त्रस्य ब्रह्मविष्णुमहेश्वरा ऋषय, ऋग्यजुस्सामाथर्वाणि छन्दांसि, चैतन्य देवता । आ बीजम्, ह्रीं शक्ति, क्रों कीलकम् मम श्रीचक्रप्राणप्रतिष्ठार्थे जपे विनियोग ।

ऐँ ह्रीँ श्रीँ अं क ख ग घ ङ पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशात्मने आ अङ्गुष्ठाभ्या नम ।

३ इ च छ ज झ ञ शब्दस्पर्शरूपरसगन्धात्मने ईं तर्जनीभ्या नम ।

३ उ ट ठ ड ढ ण श्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणात्मने ऊ मध्यमाभ्या नम ।

३ ए त थ द ध न वाक्पाणिपादपायूपस्थात्मने ऐं अनामिकाभ्या नम ।

३ ओ प फ ब भ म वचनादानविहरणविसर्गानन्दात्मने औं कनिष्ठिकाभ्या नम ।

३ अं य र ल व श ष स ह ळ क्ष मनोबुद्ध्यहङ्कारचित्तान्त करणात्मने अ करतलकरपृष्ठाभ्या नम । एवं हृदयादिन्यास । ध्यानम्—

रक्ताम्बोधिस्थपोतोल्लसदरुणसरोजाधिरूढा कराब्जैः
पाशं कोदण्डमिक्षूद्भवमलिगुणमप्यङ्कुशं पञ्चबाणान् ।
बिभ्राणासृक्कपालं त्रिनयनलसिता पीनवक्षोरुहाढ्या
देवी बालार्कवर्णा भवतु सुखकरी प्राणशक्तिः परा न. ॥

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ आं ह्रीं क्रों य रं ल व श ष स हं स श्रीचक्रस्य प्राणा इह प्राणा, ३ ॐ हंस श्रीचक्रस्य जीव इह स्थित, ३ ॐ हंस श्रीचक्रस्य सर्वेन्द्रियाणि, ३ ॐ हंस श्रीचक्रस्य वाङ्मनश्चक्षु श्रोत्रजिह्वाघ्राणप्राणा इहागत्य सुखं चिरं तिष्ठन्तु स्वाहा, इति।

(यन्त्रान्तरप्राणप्रतिष्ठायां तत्तन्नाम्न ऊह कार्यं)। अथ तत्र श्रीक्रमोक्तेन विधिना देवीमावाह्याभ्यर्च्य यन्त्रं कुशाग्रं स्पृशन् मूलमष्टोत्तरसहस्रं शतं वा वारानावर्त्य होमप्रकरणोक्तेन क्रमेणाष्टोत्तरशतमाज्याहुती मूलेन हुत्वा सम्पाताज्यं मध्ये मध्ये यन्त्रे अवनीय सव्यञ्जनेनान्नेन सर्वभूतबलिं प्रदाय होमशेषं समाप्य गुरवे सुवर्णशृङ्गालङ्कृता गा वसनाभरणानि च प्रदाय देवीमुद्वास्य कुमारी योगिनी ब्राह्मणांश्च भोजयेत्। इमाञ्च यन्त्रप्रतिष्ठां गुर्वादिना वा कारयेदिति वामकेश्वरतन्त्रीयो यन्त्रप्रतिष्ठापनविधि।

इति श्रीचक्रप्रतिष्ठापनविधि समाप्त॥

मुद्राप्रकरणम्

श्रीगुरवन्दनमुद्रा.

विकासितकल्प उत्तानाञ्जलि सुमुखम्। इदमेव मुष्टीकृत सुवृत्तम्। ऊर्ध्वाध स्थितयो दक्षवामकरतलयो अङ्गुलीनां मिथो मणिबन्धसम्बन्धे चतुरस्रम्। अधरोत्तरस्य वामदक्षमुष्टियुगस्य स्वाभिमुख्येन योजने मुद्गर। तिर्यङ्मिलिताग्रयो मध्यमयो पश्चात् ऊर्ध्वाध स्थिते वामदक्षानामिके तिर प्रसारिते तर्जनीभ्यां निपीड्य वामकनिष्ठां दक्षिणया धृत्वा अङ्गुष्ठाग्रयो मध्यमापुरोमध्यपर्वद्वयसम्बन्धे योनि॥

इति श्रीगुरुवन्दनमुद्रा॥

अर्घ्यस्थापनमुद्रा.

अधोमुखप्रसारित वामदक्षकरतलयुगमधरोत्तरं विधायाङ्गुष्ठद्वयचालने मत्स्य। लक्ष्यमभित छोटिका दत्वा दक्षमध्यमातर्जनीभ्यां अधिवाम करतलं त्रिस्ताडने अस्त्रम्। अधोमुखस्य दक्षवाममुष्टिद्वयस्य प्रसारितयो तर्जन्यो स्वस्वभागमारभ्य क्रमेण लक्ष्यं परित प्रादक्षिण्यवामावर्ताभ्यां

परिभ्रमणे अवगुण्ठनम्। अभिमुखमन्योन्यग्रथिताना दक्षवामकराङ्गुलीना क्रमेण कनिष्ठानामे तर्जनीमध्यमे च सयोज्य अधोमुखीकरणे धेनु । योनि-रुक्तैव। उत्तानस्य वामकरस्य विर॰ आकुञ्चिते अनामामध्यमातर्जन्यग्रे. अधोमुखस्य दक्षस्य वक्रीकृतानि तानि सयोज्य कनिष्ठाङ्गुष्ठाग्राणा मिथ सम्बन्धे गालिनी ॥

अर्चने मुद्रा.

विततोत्तान ऊर्ध्वाधो व्यापारितोऽञ्जली आवाहनी । तथाविधो न्युब्जाञ्जलि सस्थापनी। उदङ्गुष्ठयो मुष्ट्योरभिमुखयोगे सन्निधापनी। सैवकनिष्ठामूल अन्त प्रविष्टाङ्गुष्ठमिथ स्पृष्टनखा सन्निरोधिनी। सन्निधा पन्येव तिर प्रयोजिता सम्मुखी करणी। अवगुण्ठनी उक्तैव। उदङ्गु-लिनो करतलयो योजने वन्दन प्रसिद्धम्। धेनुयोनि उक्ते एव। वामा-नामाङ्गुष्ठयोगे तत्वमुद्रा। दक्षाङ्गुष्ठतर्जनीयोगे ज्ञानमुद्रा।

सङ्क्षोभिण्यादिमुद्रा.

उत्तानयो करतलयो प्रसारिततर्जनीकं सहतकनिष्ठानामामध्यमाग्राण्य-न्योन्याभिमुख्ये सयोज्य स्वस्वकनिष्ठोपर्यङ्गुष्ठाग्रसम्बन्धे सर्वसङ्क्षोभिणी। सैव प्रसारितमध्यमाऽपि सर्वविद्राविणी। इयमेव मध्यमा तर्जन्योराकुञ्चने सर्वाकर्षणी। परस्परग्रथिताङ्गुलिस्पृष्टनखाग्राङ्गुष्ठयो मुष्ट्यो योगे सर्ववशङ्करी। अधरोत्तर तिर्यक्प्रसारिते वामदक्षिणकनिष्ठे मध्यमाभ्या धृत्वा तयोरग्रे अङ्गुष्ठाभ्या निपीडय अनामातर्जन्यग्राणा पार्श्वतो मिथ सस्पर्शे सर्वोन्मादिनी। एषैव अनामयोराकुञ्चने तर्जन्यो किञ्चित् भुग्नत्वे च सर्वमहाङ्कुशा। दक्षभुजमध्यसन्धिस्थापितवामकूर्परमामणिवन्धम्पाणी परिवर्त्य स्वाभिमुखमन्योन्य स्पृष्टाग्रयो मध्यमयो पृष्ठतोऽधरोत्तर तिर प्रसारितानि दक्षवामानामा कनिष्ठाग्राणि तर्जनीभ्या धृत्वा पुरोऽङ्गुष्ठयो रन्योन्यसम्बन्धे सर्वखेचरी। ऊर्ध्वाधस्तिर प्रसृते वामदक्षकनिष्ठाग्रे धृत्वा अर्धचन्द्राकृतियोजितेषु तर्जन्यङ्गुष्ठेषु मिथ श्लिष्टाभ्यामृजुभ्या मध्य-माभ्या तर्जन्यो सम्बन्धे सर्वबीजा। योनिरुक्तैव। अस्यामेव ऋजूकृतयो

कनिष्ठयोः मध्यमयोरङ्गुष्ठयोश्च पृथङ्मिथः संस्पर्शे सर्वत्रिखण्डा । उदग्राणां विरलाणां वामकराङ्गुलीनां ईषदाकुञ्चने ग्रासः । मध्यमा तर्जन्यङ्गुष्ठयोगे प्राणमुद्रा मध्यानामाऽङ्गुष्ठमेलने अपानस्य । कनिष्ठाऽनामाऽङ्गुष्ठसम्बधं व्यानस्य । तर्जन्यनामाऽङ्गुष्ठमिश्रणे उदानस्य । सर्वाङ्गुलिसंश्लेषः समानस्य । वाममुष्टेरङ्गुष्ठाग्रचुम्बितमूलपर्वणि तर्जन्यामीषदधोमुखप्रसृतायां नाराचः । व्यत्ययेन वामदक्षकर कनिष्ठाङ्गुष्ठाग्रयोः योगे अन्यासां वैरल्येन प्रसारणे च चक्रम् ।

न्यासे मुद्राः

संहताभिः चतसृभिः अङ्गुलीभिः मुखस्पर्शे मुखम् । सम्पुटीकृतयोः करयोः मिथोऽभिमुखप्रश्लेषे करसम्पुटम् । किञ्चिदाकुञ्चिताङ्गुल्यग्रयोः स्वाभिमुखं करयोरन्योन्यसम्बन्धे अञ्जलिः । तर्जनीमध्यमानामाऽग्रैः हृदयस्पर्शे हृदयम् । मध्यमाऽनामाग्रयोः ब्रह्मरन्ध्रसम्बन्धे शिरः । अङ्गुष्ठाग्र चूलीयोगे शिखा । व्यत्ययहस्तयोरधरोत्तरवामहस्तदक्षकरयोः सर्वाङ्गुलीभिः असंसम्बन्धे कवचम् । तर्जनीमध्यमाऽनामाग्रैः नेत्रयुगमध्यस्पर्शे नेत्रम् । अस्त्रं उक्तचरम् । एताः षडङ्गन्यास एव । अङ्गुष्ठमिलितया अनामिकया तदत्तङ्गस्पर्शे न्यासमुद्रा । वामहस्तमुष्टिं बद्ध्वा सरलया तर्जन्या असकर्णमभितो भ्रामणे सौभाग्यदण्डिनी । सैव गर्भिताङ्गुष्ठ वामपादतलं न्यस्ता रिपुजिह्वाग्रहा । अन्त्यमिदं मुद्रायुगल श्रीषोडशाक्षरीविषयम् ।

जपे मुद्राः

मुख कर सम्पुट षडङ्ग मुद्राः प्रोक्तचर्य एव । परस्परमनभिमुखग्रथिताकुञ्चतानामामध्यमाकनिष्ठं करौ परिवर्त्य प्रसारित तर्जनीयुगाग्रसम्बन्धे शक्त्युत्थापनी । सर्वसङ्क्षोभिण्यादयो दश दर्शितचर्याः । अभिमुखाभ्यां दक्षमध्यमातर्जनीभ्यां पराङ्मुखयो वाममध्यमातर्जन्योः अवपीड्याकर्षणेऽन्यासामङ्गुलीनां आकुञ्चने च पाशः । उदग्रायां दक्षमध्यमायां तन्मध्यपर्वस्पर्शिमध्यपर्वण स्तर्जन्याकुञ्चने अनामाकनिष्ठाग्रयोश्चाङ्गुष्ठाग्र-

निपीडने अंकुश । उत्तानदक्ष मध्यमाग्रेण तादृशतर्जन्यग्रपरिग्रहे चाप । बाणस्तु नाराचपदेनोक्तवर एव ॥ आहत्य अपुनरुक्ता मुद्रा पञ्चाशत् । एतासा प्रकारभेदोऽपि तन्त्रान्तरेषु दृश्यत इति शिवम् ॥

मुद्राप्रकरण समाप्तम् ॥

नैमित्तिकप्रकरणम्

पर्वसु नैमित्तिकार्चनविधिः

उक्तेन क्रमेण नित्यक्रमनिरत साधक प्रतिमासं पञ्चपर्वसु नैमित्तिक मर्चनमाचरेत्—

नित्यार्चनरतैः सिद्धैः कार्यं नैमित्तकार्चनम् ॥

इति तन्त्रराजवचनात् । तच्च नित्यार्चनाधिकसाधनविशेषकरणम् पर्वाणि तु कृष्णाष्टमी कृष्णचतुर्दशी दर्शं पूर्णिमा सङ्क्रान्तिश्चेति कुलार्णवोक्तानि । तत्र कालस्य कर्तव्यतायाश्च निर्णय । सङ्क्रान्तिव्यतिरिक्तपर्वार्चनं सूर्यास्तमयोत्तर दशघटिकाऽऽत्मके रात्रिपूर्वभागे कार्यम् । सङ्क्रमणसपर्या तु तत्तत्सङ्क्रान्तिपुण्यकालोपलक्षितासु घटिकासु । तदुक्तम्–

प्रागूर्ध्वं च दशैव मेषतुलयोः सिंहे वृषे वृश्चिके ।
कुम्भे षोडशपूर्वतोऽथ मिथुने मीने धनु. कन्ययोः ।
ऊर्ध्वाः षोडश कीर्तिताः प्रथमतस्त्रिंशत्तु कर्कटके ।
चत्वारिंशदधो परास्तु मकरे पुण्यप्रदा नाडिकाः ॥ इति ॥

नाडिका. घटिका । अष्टमी चतुर्दशी दर्शपूर्णिमाना स्वस्वदिने पूजाकालव्याप्तौ न विवाद । दिनद्वये एकदेशव्याप्तौ यत्राधिका सा तिथिर्ग्राह्या । समव्याप्तौ परैव । तिथि वृद्धिह्रासवशेन चतुर्दशी दर्शयो एकस्मिन्नेव दिने पूजाकालव्याप्तौ नैमित्तिकद्वयस्य तन्त्रेणानुष्ठानम् । तदा सङ्क्रान्तियोगे तु तत्र तस्यापि दिवा सङ्क्रमणे सति नित्यार्चनस्य प्रासङ्गिकी सिद्धि । यत्र चतुर्णां नैमित्तिकार्चनाना एकस्मिन्नेव काले सन्निपात सम्भाव्यते तत्र तेषामप्येकतन्त्रेणैव । यथा दमन समर्पणस्य मुख्यकाले चैत्रपूर्णिमायामसम्भवे तत्कृष्णचतुर्दशी दर्शादि ज्येष्ठकृष्णचतुर्दशीदर्शान्ते गौणकाले । यथा

च पवित्रारोपणस्य श्रावण्यामलाभे आ मिथुन सङ्क्रमणं आ च तुलासङ्क्रान्ति प्रोक्तासु तिथिसु आश्विनशुक्लाष्टमीनवमीचतुर्दशीपूर्णासु च तत्कृष्ण चतुर्दशीदर्शयोश्च तादृशि विषये पूजाद्वयं त्रयं चतुष्टयं वा करिष्य इति सङ्कल्पयेदिति दिक् ॥

नित्यक्रमात् नैमित्तिके विशेषः

तत्र परिगणितेषु पर्वसु प्रातः नित्यक्रमं निर्वर्त्य रात्रौ अमुकपर्व प्रयुक्तं नैमित्तिकार्चनं करिष्य इति सङ्कल्प्य यथाविभवं समारम्भ विशेषेण क्रमो निर्वर्तनीयः। चैत्राद्यासु पौर्णमासीषु तु वक्ष्यमाणेन विधिना तत्तन्त्रान्तरोक्तेन दमनकादि समर्पणमपि। सति सम्भवे आश्वयुज्यां तत्प्रतिपदादि पर्वान्तप्रयोगोऽप्यनुष्ठेयः, "पञ्चपर्वसु विशेषार्चा" इति सूत्रस्य नानाविधाऽङ्गशाल्यर्चाबोधकत्वात्, विविधाः शेषाः कालद्रव्यक्रियाऽऽदिरूपाण्यङ्गानि यस्यां तादृश्यर्चेति विग्रहात् ॥

निवेदने पक्षभेदाः

तत्र द्रवद्रव्यनिवेदने त्रयः पक्षा भवन्ति। पृथक्-पृथक् पात्रस्थ हिमोदकादिके ऐं ह्रीं श्रीं अमुकदेवतायाः अमुकं कल्पयामि नम इति तत्तन्नामघटितेन उपचारमन्त्रेण प्रधानदेव्यादिभ्यो नवचक्रेश्वर्यन्ताभ्यस्त्रिपञ्चाशदुत्तरशतसंख्याकाभ्यो देवताभ्यः प्रत्येकं निवेदयेत्। इह प्रधानदेव्या सह नित्याः षोडश, महाकामेश्वर्यादयश्चतस्रः, त्रिपुरादयः चक्रेश्वर्यो नव, कामेश्वरायुधदेव्यः चतस्र इति विवेकः। यदि वा प्रधानदेवतानिवेदनोत्तरं ६ अङ्गदेवीभ्यो नित्याभ्यो अमुकौघायौघत्रयाय अणिमाऽऽदिभ्यो मातृभ्यो मुद्रादेवीभ्यो अणिमाऽऽदिभ्यो वा कामेश्वर्यादि नित्याकलाभ्यः अनङ्गकुसुमादिभ्यः सर्वसङ्क्षोभिण्यादिभ्यः सर्वसिद्धिप्रदाभ्यः सर्वज्ञादिभ्यो वशिन्यादिभ्यः आयुधदेवीभ्यो महाकामेश्वर्यादिभ्यः त्रिपुराद्यचक्रेश्वरीभ्योऽमुकं कल्पयामीति तत्समष्ट्यै निवेदयेत्। अथवा प्रधानदेवतायै पृथङ् निवेद्य— ऐं ह्रीं श्रीं हृदयदेव्यादिभ्यो नवचक्रेश्वर्यन्ताभ्योऽमुकं कल्पयामीति सर्वसमष्ट्यै निवेदयेदित्येकः ॥

अनेकपात्रासम्भवे अष्टादश चतुर्दश वा पात्राणि तत्तद्द्रव्यसम्भृतानि उपहृत्य पूर्वोक्तान्यतमेन प्रकारेण निवेदयेदिति द्वितीयः। अत्रौघत्रयसिद्धि-मातृमुद्राणां पार्थक्यतदन्यत्वाभ्यां पात्राणामष्टदशत्वं चतुर्दशत्वञ्च ज्ञेयम् ॥

तत्राप्यसम्भवे प्रथमद्वितीययोः प्रकारयोः महति पात्रे सम्भृतं हिमोद-कादिकम् उपपात्रेण आदायादाय निवेद्य निवेद्य पात्रान्तरे निक्षिपेत्। अन्त्ये तु प्रकारे महापात्रस्थं सर्वाभ्यो देवताभ्यो युगपन्निवेदयेदिति तृतीयः॥

कठिनद्रव्यनिवेदने पक्षद्वयम् ॥ तत्रफलादिकमुक्तदेवतासमसङ्ख्याकमुक्ता-न्यतमेन प्रकारेण तत्तद्देवतायै निवेदयेदित्येकः। तदशक्तौ यथासम्भवमुप-हृत्येतिद्वितीयः॥

पवित्रारोपणे दीपदाने च प्रथमपक्षीयः प्रथमप्रकार एव नान्यो हिमोद-कादौ। सङ्कोचपक्षाश्रयणे बीजमशक्तिरवसराभावो वा तन्त्रान्तरोक्ताना चतुराम्नायपञ्चसिंहासनपञ्चपञ्चिकापङ्क्तिदर्शनाङ्गदेवीभूतशक्तिसमयदेवताना-मप्यर्चने अभ्युदय एवेति दिक् ॥

दमनविधिः

अथादौ दमनार्चनम्। चैत्रशुक्लचतुर्दश्यां सायं स्वयं दमनारामं गत्वा।

ॐ शिवप्रसादसम्भूत अत्र सन्निहितो भवः।
देवीकार्यं समुद्दिश्य नेतव्योऽसि शिवाज्ञया ॥

इति दमनमामन्त्र्य अस्त्रमन्त्रेण समूलं दमनलताः सपर्यापर्याप्ता उत्पाट्य तदलाभे तद्गुच्छान्वा शस्त्रेण छित्वा स्वातन्त्र्याभावे विक्रेतुरनुमत्या क्रय-क्रीता वा आनीयानाय्य वा पवित्रे वंशादिपात्रे निधाय मूलविद्यया शुद्धाभि-रद्भिः अभ्युक्ष्य ऐं ह्रीं श्रीं दमनाय अमुकं कल्पयामि इत्यादिरीत्या उप-चारमन्त्रैः गन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्याख्यान् पञ्चोपचारान् आचर्य, सूक्ष्मनव-वस्त्रेण आच्छाद्य यागमन्दिर एव क्वचन शुचिनि स्थले निधाय जागृयात्। जागरण त्वभ्युदयाय। इत्यधिवासनम्। इद च सद्योऽपि वा कार्यम्। समानमेदुत्तरत्रापि कुसुमानाम्। दुग्धान्नादिनिवेद्यस्य तु सद्य एवोचित-वासनम्। अथ पूर्णिमाया रात्रौ प्रधानदेवीपूजोत्तरं आवरणार्चने—

षोडशार्णे जगन्मातः वाञ्छितार्थफलप्रदे।
हृत्स्थान् पूरय मे कामान् देवि कामेश्वरेश्वरि॥

इति देवी प्रार्थ्य, नित्यार्चनक्रमेणैव श्रीदेव्याद्या देवता' चतुराम्नायादिसमयान्तदेवताश्च दमने समभ्यर्च्य नित्यहोमत्रिगुणित होमं कृत्वा मूलमन्त्र च तथा जपित्वा अङ्गमन्त्राश्च तद्दशांश श्रीगुरुमभिपूज्य शक्तिसामयिकान् सम्भाव्य तैः सह अन्यैश्च ब्राह्मणै भुञ्जीत। एतस्य मुख्यकाले कर्तुमसम्भवे चैत्रवैशाखज्येष्ठाना कृष्णाष्टमी कृष्णचतुर्दश्यो वैशाखज्येष्ठयोश्च वा कुर्यात्। इति दमनविधि ।

चैत्र पूर्णिमाकृत्यम्

अस्यामेव पूर्णिमाया वसन्तोत्सवोऽपि विहित । तत्र दमनार्पण-वसन्तोत्सवौ तन्त्रेण करिष्ये इति सङ्कल्प्य तत्कालसम्भवानि सकलहाराणि कर्पूरचन्दनोक्षितानि कुसुमानि पूर्ववत् अधिवास्य तैर्दमनकैश्च युगपदर्चयेत्॥ इति चैत्रपूर्णिमाकृत्यम्॥

वैशाखकृत्यम्

अथ वैशाख्या पूर्णिमाया नैवेद्यावसरे प्रागवदधिवासित हेमन्तकाले सङ्गृहीत तुषारोदक तदलाभे कर्पूरमृगनाभिसुरभिल शीतल सलिल वा पूर्वोक्तान्यतमेन पक्षेण सावरणायै देवतायै निवेदयेत्। अवशिष्टं प्राग्वत्॥ इति वैशाखकृत्यम्॥

ज्येष्ठकृत्यम्

अथ ज्येष्ठाया प्राग्वदधिवासितानि कदलीपनसाम्रादीनिफलानि उक्त्या रीत्या कयाचित् उक्तमन्त्रै प्रदानदेवतादिभ्यो निवेदयेत्। तै अर्चयेदिति केचित्। अन्यत् समानम्॥ इति ज्येष्ठकृत्यम्॥

आषाढकृत्यम्

अथाषाढ्या प्राग्दधिवासनपूर्वक श्रीदेव्यै कुङ्कुममिश्र चन्दन समर्प्य जातीकुसुमै सावरणामभ्यर्च्य ताम्बूलावसरे लवङ्गैलाकङ्कोलानि उचेन प्रकारेण केनापि निवेदयेत्। शेषं पूर्ववत्॥ इत्याषाढकृत्यम्॥

पवित्रारोपणविधिः

तदनुश्रावण्या पूर्णिमायां पवित्रारोपणम्। तानि च सुवर्णरौप्यताम्रान्यतमन्तुसूत्रसरीपदर्भमुञ्जशाणवल्कलकार्पासान्यमसूत्रविनिर्मितानि। कार्पाससूत्रं तु सुवासिनीकर्तृकम् उक्तान्यतमेन नवगुणितेन सूत्रेण निर्मितं षोडशाङ्गुलायामं तावत्सङ्ख्याकं सरं सम्पन्नं वेति द्वितीयः। तत्तदावरणगतशक्तिसमसङ्ख्याकाङ्गुलायामसरग्रन्थिकम् वेति तृतीयः॥ आदिमपक्षद्वये पवित्राणि सर्वेषां साधारणानि। अन्तिमे तु पक्षे मूलदेव्याः षोडशनवान्यतराङ्गुलायामसरग्रन्थिकम्, महाकामेश्वर्यादीनां तिसृणां त्र्यङ्गुलायामादिकम्, अङ्गदेवीनां षण्णां तत्सङ्ख्याकाङ्गुलायामादिकम्। नित्यानां पञ्चदशाङ्गुलायामादिकम्, गुरुपङ्क्तित्रयस्य तत्तदोघसमसङ्ख्याङ्गुलायामादिकम्, आयुधदेवीनां चतुरङ्गुलायामादिकमिति विशेषः। पक्षत्रयेऽपि व्यापकस्य श्रीगुरोः प्रधानदेवीवत्। जीवतस्तस्य स्वस्य च क्रमागमज्ञशिष्यशक्तिसमयिकानाञ्च कण्ठादिनाभ्यन्तायाममङ्गीकृतपक्षान्यतमसङ्ख्यसरग्रन्थिकं एकग्रथिकम् वा। क्रमः कालनित्याक्षरक्रमः। आगमः कादिकालीमतादिः। अन्येषां शक्तिसामयिकानां कण्ठादिनाभ्यन्तमानं नवसरमेकग्रन्थिकञ्च। वितानाद्दृवताविष्टरायाममष्टोत्तरशतग्रन्थिवं शक्त्यवतारकं नाम। मण्डपस्य तत्परिधिसमप्रमाणमेकसरग्रन्थिकम्। होमाग्नेः षोडशनवान्यतराङ्गुलायाममेकसरमेकग्रन्थिकमञ्च पवित्रं कुर्यात्। ग्रन्थिः सूत्रवेष्टनरूपः। वेष्टनसङ्ख्या तु उत्तमादिभेदेन षट्त्रिंशच्चतुर्विंशद्द्वादशात्मिका ऐच्छिकी वा। तन्मन्त्रस्तु बाला वा कवचं वा उक्तपक्षत्रये एकतमस्यैवाश्रयणीयत्वं मानसाङ्कर्यं अनिष्टापादकं सर्वथा नाचरेदिति स्थितिः। इत्थमुपकल्पितानि गोरोचनकुङ्कुमरक्तचन्दनमृगमदकालिमानि लाक्षागैरिकान्यतररञ्जितग्रन्थिकानि पवित्राणि प्राग्वदधिवास्य श्रावण्यां रात्रौ शक्त्यवतारकं पवित्रं वितानाल्लम्बयित्वा मण्डपं तत्सूत्रेण वेष्ट्य प्रधानदेवीपूजान्ते ज्ञानमुद्रोपान्ते सम श्रीदेव्याद्यावरणान्तदेवताभ्यः तत्तत्पादुकया पृथक् पृथक् समर्प्य अग्नये च पुरो निधाय श्रीगुरुशक्ति-

सामयिकेभ्यः प्रदाय स्वयं धृत्वा शिष्येभ्यो दद्यात् । एतावत्कर्तुमसम्भवे षण्णवति-अङ्गुलायामसरग्रन्थिकानि त्रीणि पवित्राणि कृत्वा श्रीदेव्यै समर्पयेत् । शेषं पूर्ववत् । एतन्मुख्यकालातिक्रमे मिथुनादितुलान्तसंक्रान्तिगतासु कृष्णाष्टमीकृष्णचतुर्दशीपूर्णिमासु वा कार्यम् ॥

इति पवित्रारोपणविधिः ॥

भाद्रपदकृत्यम्

ततो भाद्रपद्यां पूर्ववदधिवासितेनैकेन केतकीपुष्पेण अलाभे पत्रेण वा ज्ञानमुद्रया सर्वाः देवता अर्चयेत् । पुष्पं तु निष्कासितकेसरमिति श्रीगुरुमुखागमः । शेषं समानम् । इति भाद्रपदकृत्यम् ॥

आश्वयुजकृत्यम्

अथाश्वयुज्यां पुष्पविशेषं निवेद्य विशेषकरणकः क्रमः प्रवर्तनीयः ।

अथवा—

आश्वयुज्यां विशेषस्तु दर्शान्तप्रतिपत्तिथिम् ।
आरभ्य पूजयेत् देवीं गन्धपुष्पोपहारकैः ॥

इति तन्त्रराजवचनात् तच्छुक्लप्रतिपदादि पूर्णावधिकः प्रयोगोऽनुष्ठेयः । तत्र प्रतिपद्रात्रौ विशेषतः पुष्पनैवेद्याद्युपचारैः क्रमं प्रवर्त्य प्रधानदेवतायै शतमाज्याहुतीः आवरणदेवताभ्यः तद्दशांशं हुत्वा जपं होमसमसंख्याकं विधाय अविवाहिताक्षता प्राङ्निमन्त्रितां कन्यामेकां अभ्यक्तस्नाता आसने उपवेश्य तस्या देवीं आवाह्य बालया पञ्चधा उपचर्य यथाविभव वसनाभरणादि दद्यात् । एवं द्वितीयादि चतुर्दश्यन्ते द्विशतादिहोमजप कन्याद्वयादि पूजनानि कृत्वा पूर्णिमायां वृद्धया शतेन सह षोडशशतहोमजपषोडशकन्यापूजनानि कुर्यादिति एक पक्षः । प्रतिपदि प्रकृतिहोमः शतमाहुतयो वृद्धिहोमश्च शतं एवं जपः कन्यके द्वे । द्वितीयादिषु त्रिशतादिहोमजपौ त्रयादि कन्यका इत्यपरः । एतयोरेकमाश्रयेत् । तिथिवृद्धौ प्रतिपदादिक्रमेण शतादिहोमादिकम् । तिथिह्रासे तु तस्मिन्नेव दिने तद्द्वितयकृत्यं, एकस्मिन्नेव काले होमादिकं च कुर्यात् । अवशिष्टमविशिष्टम् । एवं

कृते विद्या सिद्धा भवति। राजा च साधकस्य अर्चको भवति। अथवा—कुलार्णवोक्त नवरात्रपक्षोऽपि एकोत्तरवृद्धया वा तदसम्भवे यथोक्तक्रमेणैव वा कर्तव्यः। अयं स्वतन्त्रः न तु पूर्णिमाङ्गम्। तत्पक्षे पूर्णिमापूजाऽपि प्रत्येकमुक्तरीत्या कर्तव्येति दिक्॥ इत्याश्वयुजकृत्यम्।

कार्तिककृत्यम्

अथ कार्तिक्यां प्राग्वदधिवासित कुङ्कुम सावरणायै देव्यै समर्प्य गोधूमादि पिष्टप्रकृतिकैः घृतपूरितैः प्रज्वालितकर्पूरवर्तिभिः प्रदीपैः नित्यहोमक्रमेण तत्तद्देवताभ्यो हुत्वा देव्याः पुरः शुचिनि भूतले षोडशदीपान् दत्त्वा अङ्ग-देवीभ्यो नित्याभ्यः ओघत्रयगुरुभ्यः तत्तत्स्थाने निवेश्य तदभितस्त्रिकोणादि-चतुरस्रान्ताकृत्या च निधाय प्रतिदेवतमेकैकं दीपं निवेदयेत्। एतावद-सम्भवे एकस्मिन्नेव भाजने मध्ये एकं तदभितो नव वा नवयोनिचक्राष्टदल-कमलान्यतमालङ्कृते वा तत्र मध्ये एकं कोणेषु दलेषु वाऽष्टौ दीपान् प्रज्वाल्य देव्यै मूलेन सप्रसूनं निवेदयेत्। शेषमभिहितवत्॥ इति कार्तिककृत्यम्॥

मार्गशीर्षकृत्यम्

अथ मार्गशीर्षपूर्णिमायां सावरणां श्रीदेवीं सुगन्धिभिः कुसुमैरभ्यर्च्य माषपिष्टापूपान् कर्पूरसुरभिलं नारिकेलोदकं च प्रागुक्तान्यतमया भङ्ग्या सर्वाभ्यो देवताभ्यो निवेदयेत्। अन्यदविशेषम्॥ इतिमार्गशीर्षकृत्यम्॥

पौषकृत्यम्

ततः पौष्यां प्राग्वदधिवासपूर्वकं शर्करया गुडेन वा साकं गव्यं दुग्धं उक्तेन केनचित् प्रकारेण निवेदयेत्। अन्यदविशेषम्॥ इति पौषकृत्यम्।

माघकृत्यम्

तदनुमाघ्यां प्राग्वदधिवासितैः शुक्लैस्तिलैः अलाभे रक्तकृष्णैर्वा शुद्धैः-स्सकुसुमैरभ्यर्च्य शर्करादुग्धापूपान् निवेदयेत्। अत्रापूपाः गोधूमादिपिष्ट-प्रकृतिका इति सम्प्रदायः। इतरत् समानम्॥ इति माघकृत्यम्॥

फाल्गुनकृत्यम्

अथ फाल्गुन्यां सौवर्णराजतपुष्पैः पङ्कजैः कल्हारैः आम्रकुसुमैः मधूकैश्च यथासम्भवं मिलितैः प्राग्वदधिवासितैः सावरणां श्रीदेवीं वरिवस्येत्। इति फाल्गुनकृत्यम्॥

अयमेव नैमित्तिकार्चनविधिः गणपतिश्यामावार्तालीना सामान्यक्रमोक्ताना देवतानाम्। सर्वत्रामुक पौर्णिमायां अमुकेन द्रव्य-विशेषेण अमुकदेवतां पूजयिष्ये इति सङ्कल्पः ॥

अत्राधिकमासापाते एकमासकृत्यस्य मासद्वये आवृत्तिः। क्षयमासप्रसक्तौ त्वेकस्मिन् मासे मासद्वयकृत्यमपि कार्यं भवति। नैमित्तिकार्चनमुख्यगौणकालातिक्रमे मूलविद्यासहस्रजपः प्रायश्चित्त आम्नात तन्त्रराजे—

नैमित्तिकातिक्रमणे सहस्रं प्रजपेत्तथेति ॥ इति पञ्चपर्वार्चनविधिः ॥

तन्त्रान्तरोक्तेषु युगमन्वादिषु विशेषदिवसेष्वपि श्रीदेव्यर्चनं अभ्युदयायैव। सूत्रकारेण काम्यहोमस्यैवोक्तत्वात् तत्पूजाऽनुक्तिरिति शिवम् ॥

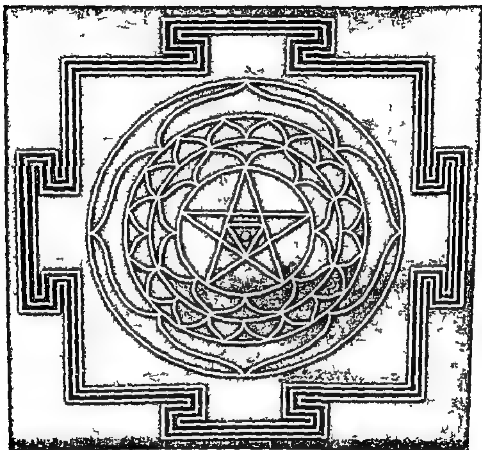
इति नैमित्तिकप्रकरण समाप्तम्।

श्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे श्रीक्रमः समाप्तः।

श्रीश्यामला (मातङ्गी)



माणिक्यवीणामुपलालयन्ती ।
मदालसा मञ्जुलवाग्-विलासा ॥
माहेन्द्रनीलद्युतिकोमलाङ्गी ।
मातङ्गकन्या मनसा स्मरामि ॥



श्रीमातङ्गी यन्त्रम्

श्यामाक्रमः

श्रीललिता महात्रिपुरसुन्दर्याः प्रधानसचिवपदमलङ्करोति श्यामा तदुपासनद्वारा श्रीविद्या शीघ्रं प्रसीदति। यथा राजदर्शनोत्सुका आदौ प्रधानसचिवमुपसेव्य तत्द्वारा राजदर्शनं कुर्वन्ति तथैव श्यामाया प्रथममुपासनं न्याय्यम्। प्रधानद्वारा राजप्रसादनं हि न्याय्यम्। (प० क० सू०)

श्रीमान् साधक श्यामला देवीमाराधयिषु श्रीक्रमोक्तक्रमेण काल्यकृत्याह्निके निर्वर्तयेत्। अत्र विशेष —

श्रीगुरुपादुकायामादौ त्रितारीस्थाने बालायोग। सर्वकारणभूताया सम्विदग्निन्तन मूलाधारादिद्वादशान्तास्यल्लाटोर्ध्वभागावधिक्रमेव। (रश्मि स्मरनानुस्मरणम्) तत्र तत्र यथोचित सम्वृद्धयादीनामूह। आदित्यमण्डले वक्ष्यमाणया भङ्ग्या सङ्गीतयोगिन्या भावनम्। मूलेन अर्घ्यदानम्। वक्ष्यमाणमृष्यादिन्यासत्रयश्चेति। इद चाह्निक स्वतन्त्रोपास्तौ, पुरश्चरणकाले च, न तु श्रीक्रमाङ्गत्वेन सहानुष्ठाने।

यागमन्दिरप्रवेशः

अथापराह्णे यागमन्दिरमागत्य द्वारस्थण्डिल गोमयेनोपलिप्य यागगृहञ्च रङ्गवल्लीपुष्पमालावितानकादिभिश्चालङ्कृत्य द्वारस्य दक्षवामशाखयो उर्ध्वभागे च क्रमेण—

ऐं क्लीं सौः भद्रकाल्यै नमः, ३ भैरवाय नमः, ३ लम्बोदराय नमः, इति तिस्रो द्वारदेवता सम्पूज्य, अन्तः प्रविश्य, ३ रत्नद्वादशशक्तियुताय दीपनाथाय नमः, इति पुष्पाञ्जलिना भूमौ दीपनाथमिष्ट्वा सपर्यासामग्री स्वस्य दक्षभागे निधाय दीपानमित प्रज्वाल्य गन्धमाल्यादिभिरलङ्कृतात्मा ताम्बूलेन जातीपत्रपल्लवङ्गैलाकर्पूराख्यपञ्चतिक्तेन वा सुरभिवदन सुप्रसन्नमना स्वास्तीर्णे शुचिनि ऊर्णामृदुनि बालातृतीयबीजेन द्वादशवारमभिमन्त्रिते मूलमन्त्रोक्षिते आसने ३ आधारशक्तिकमलासनाय नमः, इति

प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा पद्मासनाद्यन्यतमेनासनेनोपविश्य ३ समस्तगुप्त-प्रकटयोगिनीचक्रदेवता श्रीपादुकाभ्यो नमः, इति मूर्ध्नि बद्धाञ्जलिः स्ववामदक्षपार्श्वयोः क्रमेण गुरुपादुकया श्रीगुरुं, महागणपतिमन्त्रेण च गणपतिं प्रणम्य, ऐं ह्लः अस्त्राय फट्, इति मन्त्रेण मुहुरावृत्तेन अङ्गुष्ठादि-करतलान्तकूर्परयोश्च विन्यस्य देहे च व्यापकं कृत्वा स्वस्य देवतैक्यं भावयन्—

ऐं क्लीं सौः अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञया ॥

इति मन्त्रं सकृदुच्चार्य युगपद्वामपार्ष्णिभूतलत्रिराघातकरास्फोटत्रय-क्रूरदृष्ट्यवलोकनपूर्वकं तालत्रयेण भौमान्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासकान् विघ्नानुत्सारयेत् । तालत्रयं नाम, दक्षतर्जनीमध्यमाभ्यामधोमुखाभ्यां वामकरतले सशब्दमुपर्युपरि त्रिरभिघातः ।

प्राणायामः षडङ्गादिन्यासपञ्चकम्

अथ ३ 'नमः' इत्यङ्गुष्ठमन्त्रमुच्चार्य अङ्कुशेन शिखां बद्ध्वा श्रीक्रमोक्त-प्रकारेण भूतशुद्धिम्-आत्मप्राणप्रतिष्ठाञ्च विधाय मूलेन विंशतिधा षोडशधा दशधा सप्तधा त्रिधा वा प्राणानायम्य,

तेजोरूपदेवीमयं भावयन्नात्मानं, निजदेहे न्यासजालात्मकं वज्रकवचं धारयेत् ।

ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः, ऐं, सर्वजनमनोहारि हृदयाय नमः ।
७ सर्वमुखरञ्जिनि शिरसे स्वाहा ।
७ क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि शिखायै वषट् ।
७ सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि कवचाय हुम् ।
७ सर्वदुष्टमृगवशङ्करि नेत्रत्रयाय वौषट् ।

७ सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि अमुकं (त्रैलोक्यं) मे वशमानय स्वाहा अस्त्राय फट् । इति मन्त्रान् हृदयादिषु न्यसेदिति षडङ्गन्यासः ॥१॥

अथ श्रीक्रमोक्तं मातृकान्यासं कुर्यात् ॥२॥

ऐं क्लीं सौः रत्यै नमः, मूलाधारे, ३ प्रीत्यै नमः, हृदये, ३ मनोभवाय नमः, इति मुखे न्यसेत् ॥ इति रत्यादिन्यासः ॥३॥

ऐं क्लीं सौः ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः नमः, ब्रह्मरन्ध्रे,

३ ॐ नमो नमः ललाटे,
३ भगवति नमः भ्रूमध्ये,
३ श्रीमातङ्गीश्वरि नमः दक्षनेत्रे,
३ सर्वजनमनोहारि नमः वामनेत्रे,
३ सर्वमुखरञ्जिनि नमः मुखे,
३ क्लीं नमः दक्षश्रोत्रे,
३ ह्रीं नमः वामश्रोत्रे,
३ श्रीं नमः कण्ठे,
३ सर्वराजवशङ्करि नमः दक्षांसे,
३ सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि नमः वामांसे,
३ सर्वदुष्टमृगवशङ्करि नमः हृदये,
३ सर्वसत्त्ववशङ्करि नमः दक्षस्तने,
३ सर्वलोकवशङ्करि नमः वामस्तने,
३ अमुक मे वशमानय नमः नाभौ,
३ स्वाहा नमः स्वाधिष्ठाने,

३ सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं नमः मूलाधारे (न्यसेत्,)

इति मूलखण्डसप्तदशकन्यासः ॥४॥

एतानेव प्रतिलोममूलमन्त्रखण्डान् मूलाधारस्वाधिष्ठाननाभिवामस्तनदक्षस्तनहृदयवामदक्षांसकण्ठवामदक्षश्रोत्रमुखवामदक्षनेत्रभ्रूमध्यललाट - ब्रह्मरन्ध्रेषु क्रमात् न्यसेत् । यथा—

ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं नमः मूलाधारे,

३ स्वाहा नमः स्वाधिष्ठाने,
३ अमुक मे वशमानय नमः नाभौ,
३ सर्वलोकवशङ्करि नमः वामस्तने,
३ सर्वसत्त्ववशङ्करि नमः दक्षस्तने,
३ सर्वदुष्टमृगवशङ्करि नमः हृदये,
३ सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि नमः वामांसे,
३ सर्वराजवशङ्करि नमः दक्षांसे,
३ श्रीं नमः कण्ठे,
३ ह्रीं नमः वामश्रोत्रे,
३ क्लीं नमः दक्षश्रोत्रे,
३ सर्वमुखरञ्जिनि नमः मुखे,
३ सर्वजनमनोहारि नमः वामनेत्रे,
३ मातङ्गीश्वरि नमः दक्षनेत्रे,
३ भगवति नमः भ्रूमध्ये,
३ ॐ नमो नमः ललाटे,

३ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः नमः ब्रह्मरन्ध्रे । इति प्रतिलोममूलमन्त्रखण्डन्यासः ॥५॥

मन्दिरार्चनम्

अथामृताम्भोनिधिमध्यस्थमणिद्वीपमध्यगते कदम्बोद्याने मुक्ताकुसुममालिकाहरितपट्टवितानास्तरणवन्दनमालिकाद्यलङ्कृत धूपधूपितं प्रज्वलत्प्रदीपपरम्पर चतुर्द्वार मरकतमण्डप विचिन्त्य, तस्य प्रागादिषु द्वारेषु—

ऐं क्ली सौ सा सरस्वत्यै नम , ला लक्ष्म्यै नम , शा शङ्खनिधये नम , प पद्मनिधये नम , इति सम्पूज्य—

ऐं क्ली सौ , ला इन्द्राय वज्रहस्ताय सुराधिपतये ऐरावतवाहनाय सपरिवाराय नम , पूर्वे,

३ रा अग्नये शक्तिहस्ताय तेजोऽधिपतये अजवाहनाय सपरिवाराय नम , आग्नेये,

३ टा यमाय दण्डहस्ताय प्रेताधिपतये महिषवाहनाय सपरिवाया नम दक्षिणे

३ क्षा निर्ऋतये खड्गहस्ताय रक्षोऽधिपतये नरवाहनाय सपरिवाराय नम, नैर्ऋते,

३ वा वरुणाय पाशहस्ताय जलाधिपतये मकरवाहनाय सपरिवाराय नम, पश्चिमे

३ या वायवे ध्वजहस्ताय प्राणाधिपतये रुरुवाहनाय सपरिवाराय नम , वायव्ये

३ सा सोमाय शङ्खहस्ताय नक्षत्राधिपतये अश्ववाहनाय सपरिवाराय नम , उत्तरे,

३ हा ईशानाय त्रिशूलहस्ताय विद्याधिपतये वृषभवाहनाय सपरिवाराय नम , ऐशान्ये, इति प्रागाद्यष्टासु दिक्षु शक्रादीनभ्यर्च्य,

ऐं क्ली सौ ॐ ब्रह्मणे पद्महस्ताय लोकाधिपतये हंसवाहनाय सपरिवाराय नम इति इन्द्रेशानयो मध्ये,

३ श्री विष्णवे चक्रहस्ताय नागाधिपतये गरुडवाहनाय सपरिवाराय नम , इति निर्ऋतवरुणयो दिगन्तरे,

३ ॐ वास्तुपतये ब्रह्मणे नम , इति वास्तुनि चार्चयेत् ।

यन्त्रोद्धारः

अथ चन्दनपङ्कप्रकृतिके मण्डले क्षीरमिश्रितेन सिन्दूरादिना बिन्दु-त्रिकोणपञ्चकोणाष्टदलषोडशदलाष्टपत्रचतुष्पत्रचतुरस्रात्मकं चक्रं विलिख्य विलेख्य वा सुवर्णरजतताम्रस्फटिकमरकतरत्नाद्युत्कीर्णं वा तत्समास्तीर्ण-पट्टवसने श्रीखण्डरक्तचन्दनादिनिर्मिते पीठे निवेश्य यन्त्रप्राणप्रतिष्ठा कुर्यात् ।

यथा—ऐं क्लीं सौः श्यामयन्त्रस्य प्राणा इह प्राणाः, ३ श्यामा-यन्त्रस्य जीवः इह स्थितः, ३ श्यामायन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि, ३ श्यामा-यन्त्रस्य वाङ्मनःप्राणाः इहायान्तु स्वाहा ।

इति मन्त्रेण लिखितयन्त्रे प्राणप्रतिष्ठां विदध्यात् । सुवर्णादि कृतस्य यन्त्रस्य तु प्राणप्रतिष्ठा श्रीक्रमोक्ताप्यनुसन्धेया । अत्र देवतानामाद्यूह-स्त्वावश्यक एव । एवं देवतान्तरक्रमेष्वपि । ततो मूलेन चक्रे पुष्पाञ्जलिं विकीर्य, श्रीक्रमोक्तक्रमेण सामान्यविशेषार्घ्ये आसादयेत् । अत्र चोभयोरप्य-र्घ्ययोः प्रवेशरीत्या अन्तरन्तश्चतुरस्रादिबिन्द्वन्तमण्डलकरणम् ।

ऐं क्लीं सौः अं आत्मतत्त्वाय आधारशक्तये वौषट्, इत्याधारस्थापनम् ।

३ उं विद्यातत्त्वाय पद्मासनाय वौषट्, इति पात्रनिधानम् ।

३ मं शिवतत्त्वाय सोममण्डलाय नमः, इति शुद्धजलापूरणम् ।

(अत्र वह्नि सूर्य सोमकला पूजनम्)

ब्रह्माण्डखण्डसम्भूतमशेषरससम्भृतम् ।
आपूरितं महापात्रं पीयूषरसमावह ॥

इति क्षीरपूरणम् । युक्तं षडङ्गार्चनं, मूलेन दशधा अभिमन्त्रणम् । चतुर्णवतिमन्त्राभिमन्त्रणाभावश्च विशेषः । ततो विशेषार्घ्यबिन्दुभिः वरि-वस्यावस्तूनि सम्प्रोक्ष्य ।

चक्रदेवीपूजा

ऐं क्लीं सौः आधारशक्तिपद्मासनाय नमः, इति पीठं पुष्पैरभ्यर्च्य, बिन्दुमध्ये ३ श्रीमातङ्गीश्वरीमूर्तये नमः, इति देव्याः मूर्तिं भावयित्वा, हृदि वक्ष्यमाणरूपां देवीं सञ्चिन्त्य, ३ श्रीमातङ्गीश्वर्यै लं पृथिव्यात्मकं गन्धं

कल्पयामि नमः इत्यादिताम्बूलान्तं मानसोपचारैरभ्यर्च्य, तां तेजोरूपेण परिणतां ब्रह्मरन्ध्रं प्रापय्य वहन्नासापुटद्वारा कृतविनिर्गमां कुसुमगर्भिते अञ्जलौ सन्निहितां देवी ३ श्रीमातङ्गीश्वरि अमृतचैतन्यमावाहयामीति चक्रे भावितायां मूर्त्यामावाह्य मूलान्ते श्रीमातङ्गीश्वरि आवाहिता भव इत्यादि-रीत्या आवाहनसंस्थापन-सन्निरोधन-सम्मुखीकरणावगुण्ठनानि, तत्तन्मुद्रा-प्रदर्शनपूर्वकं विधाय, वन्दनधेनुयोनिमुद्राश्च प्रदर्शयेत्। तत्प्रकारश्च श्रीक्रमतो ज्ञातव्यः। ततः ऐं क्लीं सौः श्रीमातङ्गीश्वर्यै पाद्यं कल्पयामि नमः इत्यादि भङ्ग्या पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानवासोगन्धपुष्पधूपदीपनीराजन-च्छत्रचामरयुगलदर्पणनैवेद्यपानीयताम्बूलान्तान् षोडशोपचारान् परि-कल्पयेत्। नैवेद्याङ्गत्वेन पूर्वोत्तरापोशनकरप्रक्षालनगण्डूषाचमनीयानि, च दत्वा ताम्बूलं समर्पयेत्। नैवेद्ये त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डलकरणं, मूल-मन्त्रेण प्रोक्षणम्, वमित्यमृतबीजेनाभिमन्त्रणपूर्वं धेनुमुद्रया अमृती-करणम्। मूलेन सप्तवारमभिमन्त्रणं प्राणादिमुद्राप्रदर्शनञ्च कार्यम्। अथ मूलमन्त्रान्ते श्रीमातङ्गीश्वरीश्रीपादुकां पूजयामीति वामकरतत्त्वमुद्रासन्दष्ट-द्वितीयशकलगृहीतक्षीरबिन्दुभिस्सह समर्पितैः दक्षकरोपात्तैः कुसुमैः देवीं त्रिस्सन्तर्प्य, देव्या अग्नीशासुर वायव्यभागेषु मौलौ प्रागादिदिक्षु च प्रागुक्तषडङ्गमन्त्रान्ते क्रमेण—

ऐं क्लीं सौः हृदयाय नमः हृदयशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः

३ शिरसे स्वाहा शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ शिखायै वषट् शिखाशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ कवचाय हुँ कवचशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ नेत्रत्रयाय वौषट् नेत्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

३ अस्त्राय फट् अस्त्रशक्ति श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

इति लयाङ्गत्वेनाङ्गदेवता आराध्य, देव्याः पश्चात् प्रागपवर्गरेखात्रये दक्षिणसव्याक्रमेण गुर्वोघत्रयं वरिवस्येत्। यथा—

दिव्यौघः

(अर्चने सर्वत्र श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति योजनम्) ।

ऐं क्लीं सौः परप्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, परमेशानन्द, परशिवानन्द, कामेश्वर्यम्बा, मोक्षानन्द, कामानन्द, अमृतानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति दिव्यौघः ।

ऐं क्लीं सौः ईशानानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, तत्पुरुषानन्द, अघोरानन्द, वामदेवानन्द, सद्योजातानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति सिद्धौघः ।

ऐं क्लीं सौः पञ्चोत्तरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, परमानन्द, सर्वज्ञानन्द, सर्वानन्द, सिद्धानन्द, गोविन्दानन्द, शङ्करानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति मानवौघः ।

आवरणार्चनम्

(अर्चने सर्वत्र नामादौ त्रितारी अन्ते श्रीपादुकां पू० त० नमः) ।

त्र्यस्रे देव्यग्रकोणादिप्रादक्षिण्यक्रमेण—

ऐं क्लीं सौः रतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, प्रीति श्रीपादुकां पू० त० नमः, मनोभव श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति प्रथमावरणम् ।

पञ्चारस्याराणां मूलेष्वग्रेषु च प्राग्वत्—

ऐं क्लीं सौः द्रां द्रावणबाणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, द्रीं शोषणबाण, क्लीं बन्धनबाण, ब्लूं मोहनबाण, सः उन्मादनबाणश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,

ऐं क्लीं सौः ह्रीं कामराजश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, क्लीं मन्मथ, ऐं कन्दर्प, ब्लूं मकरकेतन, स्त्रीं मनोभवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति द्वितीयावरणम् ।

अष्टदलस्य दलानां मूलेष्वग्रेषु च—

ऐं क्लीं सौः आं ब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ई माहेश्वरी, ऊं कौमारी, ॠं वैष्णवी, लृं वाराही, ऐं माहेन्द्री, औं चामुण्डा, अः चण्डिकाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः,

ऐं क्लीं सौः लक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, सरस्वती, रति, प्रीति, कीर्ति, शान्ति, पुष्टि, तुष्टिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति तृतीयावरणम् ।

षोडशदले प्राग्वत्—

ऐं क्लीं सौः वामाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ज्येष्ठा, रौद्री, शान्ति, श्रद्धा, सरस्वती, क्रियाशक्ति, लक्ष्मी, सृष्टि, मोहिनी, प्रमथिनी, आश्वासिनी, वीचि, विद्युन्मालिनी, सुरानन्दा, नागबुद्धिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति चतुर्थावरणम् ।

द्वितीयाष्टदले प्राग्वत्—

ऐं क्लीं सौः अं असिताङ्ग भैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इं रुरु, उं चण्ड, ऋं क्रोध, ऌं उन्मत्त, एं कपालि, ओं भीषण, अं संहार-भैरवश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति पञ्चमावरणम् ।

चतुर्दले प्राग्वत्—

ऐं क्लीं सौः मातङ्गीश्वरीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, सिद्धलक्ष्मी, महामातङ्गी, महासिद्धलक्ष्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति षष्ठावरणम् ।

चतुरस्रस्यान्तराग्नेयादिकोणेषु क्रमेण—

ऐं क्लीं सौः गं गणपतिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, दुं दुर्गा, वं वटुक, क्षं क्षेत्रपालश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

देव्यग्रादिद्वारेषु प्रागाद्यास्वेकादशसु दिक्षु च—

ऐं क्लीं सौः सां सरस्वत्यै नमः इत्यादि ऐं वास्तुपतये ब्रह्मणे नमः इत्यन्तैः मन्त्रैः प्रागुक्तं वास्तुपतिपर्यन्तदेवताः समभ्यर्च्य, पूर्वरेखायां च—

ऐं क्लीं सौः हंसमूर्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, परप्रकाश, पूर्ण, नित्य, करुण श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति सम्प्रदायगुरूंश्च पूजयेत् । इति सप्तमावरणम् ।

(सर्वा अप्यावरणदेवता. देव्या अभिमुखासीनाः स्वयं तत्तदभिमुखः पूजयामीति भावयेत्) ।

गुरुपादुकापूजा

अथ स्वशिरसि ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं हस्ख्फ्रें ह स क्ष म ल व र यूं, स ह क्ष म ल व र यीं, ह्सौः स्हौः श्रीशिवादिगुरुश्रीपादुकां पूजयामीति समान्यपादुकया शिवादिगुरून्, ऐं क्लीं सौः हस्ख्फ्रें ह स क्ष म ल व र यूं सं ह क्ष मं ल व र यीं ह्सौः स्हौः अमुकाम्बासहितामुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामीति च स्वगुरुमभ्यर्च्य,

पुनर्देवीं त्रिः सन्तर्प्य प्राग्वत् वाल्या षोडशधा चोपचरेत् ।

बलिदानम्

ततः श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण होमं कृत्वा कारयित्वा वा (अकृत्वा वा इति पाठान्तरम्) शुद्धजलेन त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डलत्रयं विधाय ऐं व्यापकमण्डलाय नमः, इति पुष्पैः समभ्यर्च्य अर्धान्नसलिलपूर्णसक्षीरोपादिमध्यमं सगन्धकुसुमं साधारं पात्रं निधाय ऐं क्लीं सौः श्रीमातङ्गीश्वरि इमं बलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् स्वाहा, ऐं क्लीं सौः श्रीमातङ्गीश्वरि शरणागतं मां त्राहि त्राहि हुं फट् स्वाहा, ऐं क्लीं सौः क्षेत्रपालनाथ इमं बलिं गृह्ण गृह्ण हुं फट् स्वाहा, इति मन्त्रान् क्रमेण पठन् देव्याः दक्षिणभागे बलित्रयं प्रदाय तत्त्वमुद्रास्पृष्टं क्षीरं बल्युपरि निषिच्य, वामपार्ष्णिघातकरास्फोटान् कुर्वाणः समुदञ्चितवक्त्रो नाराचमुद्रया बलिं भूतैः ग्राहयित्वा पाणी प्रक्षाल्य देव्यै प्रदक्षिणनतीर्विधाय पुष्पाञ्जलिं समर्प्य जपेत् ।

श्रीमातङ्गीश्वरीमन्त्रजपः ।

अस्य श्रीमातङ्गीश्वरीमहामन्त्रस्य दक्षिणामूर्त्यृषये नमः—शिरसि, गायत्रीच्छन्दसे नमः—मुखे, श्रीमातङ्गीश्वरीदेवतायै नमः—हृदये । ऐं बीजाय नमः—गुह्ये, सौः शक्तये नमः—पादयोः, क्लीं कीलकाय नमः—नाभौ; ममाभीष्टसिद्धये विनियोगाय नमः—इति करसम्पुटे, न्यस्य मूलेन त्रिर्व्यापकं कृत्वा न्यासोक्तैरङ्गमन्त्रैः कराङ्गन्यासौ कृत्वा ध्यानम्—

मातङ्गीं भूषिताङ्गीं मधुमदमुदितां नीपमालाढ्यवेणीं
सद्वीणां शोणचेलां मृगमदतिलकामिन्दुरेखावतंसाम् ।

कर्णोद्यच्छङ्खपात्रां स्मितमधुरदृशा साधकस्येष्टदात्रीं
ध्यायेद्देवीं शुकाभां शुकमखिलकलारूपमस्याश्च पार्श्वे ॥

इति ध्यात्वा मनसा पञ्चधोपचर्य पुरश्चरणे वक्ष्यमाण पूर्वोत्तराङ्गमन्त्र-सहितं मूलं श्रीक्रमोक्तेन विधिना यथाशक्ति जपित्वा पुनः न्यासादि विधाय,

गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम् ।
सिद्धिर्भवतु मे देवि त्वत्प्रसादान्मयि स्थिरा ॥

इति देव्या वामहस्ते सामान्यार्घ्यसलिलेन जपं समर्प्य, स्तुवीत—

मातङ्गीस्तुतिः

मातङ्गी मातरीशे मधुमदमथनाराधिते महामाये ।
मोहिनी मोहप्रमथिनि मन्मथमथनप्रिये नमस्तेऽस्तु ॥
स्तुतिषु तव देवि विधिरपि विहितमतिर्भवति विहितमतिः ।
तदपि तु भक्तिर्मामपि भवतीं स्तोतु विलोभयति ॥
यतिजनहृदयनिवासे वासववरदे वराङ्गि मातङ्गि ।
वीणावादविनोदिनी नारदगीते नमो देवी ॥
देवि प्रसीद सुन्दरि पीनस्तनि कम्बुकण्ठि घनकेशि ।
मातङ्गि विद्रुमौष्ठिस्मितमुग्धास्यम्व मौक्तिकाभरणे ॥
भरणे त्रिविष्टपस्य प्रभवसि तत एव भैरवी त्वमसि ।
त्वद्भक्तिलब्धविभवो भवति क्षुद्रोऽपि भुवनपतिः ॥
पतितः कृपणो मूकोऽप्यम्ब भवत्याः प्रसादलेशेन ।
पूज्यः सुभगो भवति जडश्चापि सर्वज्ञः ॥
ज्ञानात्मिके जगन्मयि निरञ्जने नित्यशुद्धपदे ।
निर्वाणरूपिणी शिवे त्रिपुरे शरणं प्रपन्नस्त्वाम् ॥
त्वां मनसि क्षणमपि यो ध्यायति मुक्तामणीवृतां श्यामाम् ।
तस्य जगत्त्रितयेऽस्मिन् कास्ताः ननु याः श्रियोऽसाध्याः ॥
साध्याक्षरेण गर्भितपञ्चनवत्यक्षराञ्चिते मातः ।
भगवति मातङ्गीश्वरि नमोऽस्तु तुभ्यं महादेवि ॥

विद्याधरसुरकिन्नरगुह्यकगन्धर्वयक्षसिद्धवरैः ।
आराधिते नमस्ते प्रसीद कृपयैव मातङ्गि ॥

वीणावादनवेलानर्तदलाबुस्थगितवामकुचम् ।
श्यामलकोमलगात्रं पाटलनयनं स्मरामि त्वाम् ॥

अवटुतटघटितचूलीताडितताडीपलाशताटङ्काम् ।
वीणावादनवेलाकम्पितशिरसं नमामि मातङ्गीम् ॥

मातामरकतश्यामा मातङ्गी मदशालिनी ।
कटाक्षयतु कल्याणी कदम्बवनवासिनी ।

वामे विस्तृतिशालिनी स्तनतटे विन्यस्तवीणामुखं
तन्त्रीं तारविराविणीमसकलैरास्फालयन्ती नखैः ।
अर्धोन्मीलदपाङ्गमंसवलितग्रीवं मुखं बिभ्रती
माया काचन मोहिनी विजयते मातङ्गकन्यामयी ॥

वीणावाद्यविनोदगीतनिरतां लीलाशुकोल्लासिनीं
बिम्बोष्ठीं नवयावकार्द्रचरणामाकीर्णकेशालिकाम् ।
हृद्याङ्गीं सितशङ्खकुण्डलधरां शृङ्गारवेषोज्ज्वलां
मातङ्गीं प्रणतोऽस्मि सुस्मितमुखीं देवीं शुकश्यामलाम् ॥

स्रस्तं केसरदामभिः वलयितं धम्मिल्लमाबिभ्रती
तालीपत्रपुटान्तरेषु घटितैस्ताटङ्किनी मौक्तिकैः ।
मूले कल्पतरोर्महामणिमये सिंहासने मोहिनी
काचिद्गायनदेवता विजयते वीणावती वासना ॥

वेणीमूलविराजितेन्दुशकलां वीणानिनादप्रियां
क्षोणीपालसुरेन्द्रपन्नगवरैराराधिताङ्घ्रिद्वयाम् ॥
एणीचञ्चललोचनां सुवसनां वाणीं पुराणोज्ज्वलां
श्रोणीभारमरालसामनिमिषः पश्यामि विश्वेश्वरीम् ॥

मातङ्गीस्तुतिरियमन्वहं प्रजप्ता
जन्तूनां वितरति कौशलं क्रियासु ।
वाग्मित्वं श्रियमधिकाञ्च गानशक्ति
सौभाग्यं नृपतिभिरर्चनीयताञ्च ॥

श्रीश्यामला-दण्डकम्

माणिक्यवीणामुपलालयन्तीं मदालसां मञ्जुलवाग्विलासाम् ।
माहेन्द्रनीलद्युति कोमलाङ्गीं मातङ्गकन्यां मनसा स्मरामि ॥१॥

चतुर्भुजे चन्द्रकलावतंसे कुचोन्नते कुङ्कुमरागशोणे ।
पुण्ड्रेक्षुपाशाङ्कुशपुष्पबाणहस्ते नमस्ते जगदेकमातः ॥२॥

माता मरकतश्यामा मातङ्गी मदशालिनी ।
कटाक्षयतु कल्याणी कदम्बवनवासिनी ॥३॥

जय मातङ्गतनये जय नीलोत्पलद्युते ।
जय सङ्गीतरसिके जय लीलाशुकप्रिये ॥

जय जननि सुधासमुद्रान्त-हृद्यन्मणिद्वीपसंरूढबिल्वाटवीमध्यकल्पद्रुमाकल्पकादम्बकान्तारवासप्रिये, कृत्तिवासप्रिये सर्वलोकप्रिये । सादरारब्धसङ्गीतसम्भावनासम्भ्रमालोलनीपस्रगाबद्धचूलीसनाथत्रिके सानुमत्पुत्रिके । शेखरीभूतशीतांशुरेखामयूखावलीबद्धसुस्निग्धनीलालकश्रेणि - शृङ्गारिते लोकसम्भाविते । कामलीलाधनुस्सन्निभभ्रूलतापुष्पसन्देहसन्दोहकृल्लोचने, वाक्सुधासेचने, चारुगोरोचनापङ्ककेलीललामाभिरामे सुरामे रमे, प्रोल्लसद्वालिकामौक्तिकश्रेणिकाचन्द्रिकामण्डलोद्भासिलावण्यगण्डस्थलन्यस्तकस्तूरिकापत्ररेखासमुद्भूतसौरभ्यसम्भ्रान्त - भृङ्गाङ्गनागीतसान्द्रीभवन्मन्द - तन्त्रीस्वरे सुस्वरे भास्वरे, वल्लकीवादनप्रक्रियालोलतालीदलाबद्धताटङ्कभूषाविशेषान्विते सिद्धसम्मानिते, दिव्यहालामदोद्वेलहेलालसच्चक्षुरान्दोलनश्रीसमाक्षिप्तकर्णैकनीलोत्पले पूरिताशेषलोकाभिवाञ्छाफले श्रीफले, स्वेदबिन्दूल्लसत्फाललावण्यनिस्यन्दसन्दोहसन्देहकृन्नासिकामौक्तिके सर्वविश्वात्मिके कालिके, मुग्धमन्दस्मितोदारवक्त्रस्फुरत्पूगताम्बूलकर्पूरखण्डोत्करे ज्ञानमुद्राकरे सर्वसम्पत्करे पद्मभास्वत्करे, कुन्दपुष्पद्युतिस्निग्धदन्तावली निर्मलालोलकल्लोलसम्मेलनस्मेरशोणाधरे चारुवीणाधरे पक्वबिम्बाधरे ॥१॥

सुललितनवयौवनारम्भचन्द्रोदयोद्वेललावण्यदुग्धार्णवाविर्भवत्कम्बुबिम्बोकभृत्कन्धरे सत्कलामन्दिरे मन्थरे, दिव्यरत्नप्रभाबन्धुरच्छन्नहारादिभूषा-

समुद्द्योतमानानवद्यांशुशोभे शुभे, रत्नकेयूररश्मिच्छटापल्लवप्रोल्लसद्दोर्लताराजिते योगिभिः पूजिते, विश्वदिङ्मण्डलव्यापिमाणिक्यतेजः स्फुरत्कङ्कणालङ्कृते विभ्रमालङ्कृते साधकैः सत्कृते, वासरारम्भवेलासमुज्जृम्भमाणारविन्दप्रतिद्वन्द्विपाणिद्वये सन्ततोद्यद्दये अद्वये, दिव्यरत्नोर्मिकादीधितिस्तोमसन्ध्यायमानाङ्गुलीपल्लवोद्यन्नखेन्दुप्रभामण्डले सन्नताखण्डले चित्प्रभामण्डले प्रोल्लसत्कुण्डले, तारकाराजिनीकाशहारावलिस्मेरचारुस्तनाभोगभारानमन्मध्यवल्लीवलिच्छेदवीचीसमुल्लाससन्दर्शिताकारसौन्दर्यरत्नाकरे वल्लकीभृत्करे किङ्करश्रीकरे, हेमकुम्भोपमोत्तुङ्गवक्षोजभारावनम्रे त्रिलोकावनम्रे, लसद्वृत्तगम्भीरनाभीसरस्तीरशैवालशङ्काकरश्यामरोमावलीभूषणे मञ्जुसम्भाषणे, चारुशिञ्जत्कटीसूत्रनिर्भर्त्सितानङ्गलीलाधनुःशिञ्जिनीडम्बरे दिव्यरत्नाम्बरे, पद्मरागोल्लसन्मेखलाभास्वरश्रोणिशोभाजितस्वर्णभूभृत्तले चन्द्रिकाशीतले ॥२॥

विकसितनवकिंशुकाताम्रदिव्यांशुकच्छन्नचारूरुशोभापराभूतसिन्दूरशोणायमानेन्द्रमातङ्गहस्तार्गले वैभवानर्गले श्यामले, कोमलस्निग्धनीलोत्पलोत्पादितानङ्गतूणीरशङ्काकरोदारजङ्घालते चारुलीलागते, नम्रदिक्पालसीमन्तिनीकुन्तलस्निग्धनीलप्रभापुञ्जसञ्जातदूर्वाङ्कुराशङ्कसारङ्गसंयोगरिङ्खन्नखेन्दूज्ज्वले प्रोज्ज्वले निर्मले, प्रह्वदेवेशलक्ष्मीशभूतेशतोयेशवाणीशकीनाशदैत्येशयक्षेशवाय्वग्निकोटीरमाणिक्यसंघृष्टबालातपोद्दामलाक्षारसारुण्यतारुण्यलक्ष्मीगृहीताङ्घ्रिपद्मे सुपद्मे उमे ! ॥३॥

सुरुचिरनवरत्नपीठस्थिते सुस्थिते रत्नपद्मासने रत्नसिंहासने शङ्खपद्मद्वयोपाश्रिते, तत्र विघ्नेशदुर्गावटुक्षेत्रपालैर्युते मत्तमातङ्गकन्यासमूहान्विते मञ्जुलामेनकाद्यङ्गनामानिते भैरवैरष्टभिर्वेष्टिते, देवि वामादिभिः शक्तिभिः सेविते धात्रिलक्ष्म्यादिशक्त्यष्टकैः संयुते मातृकामण्डलैर्मण्डिते यक्षगन्धर्वसिद्धाङ्गनामण्डलैरर्चिते पञ्चबाणात्मिके पञ्चबाणेन रत्या च सम्भाविते, प्रीतिभाजा वसन्तेन चानन्दिते भक्तिभाजां परं श्रेयसे कल्पसे योगिनां मानसे द्योतसे छन्दसामोजसा भ्राजसे, गीतविद्याविनोदातितृष्णेन कृष्णेन सम्पूज्यसे, भक्तिमच्चेतसा वेधसा स्तूयसे विश्वहृद्येन वाद्येन विद्याधरैर्गीयसे ॥४॥

श्रवणहरणदक्षिणक्वाणया वीणया किन्नरैर्गीयसे यक्षगन्धर्वसिद्धाङ्गनामण्डलैरर्च्यसे, सर्वसौभाग्यवाञ्छावतीभिर्वधूभिः सुराणां समाराध्यसे सर्वविद्याविशेषात्मकं चाटुगाथासमुच्चारणं कण्ठमूलोल्लसद्वर्णराजित्रयं कोमलं श्यामलोदारपक्षद्वयं तुण्डशोभातिदूरीभवत्किंशुकं तं शुकं लालयन्ती परिक्रीडसे, पाणिपद्मद्वयेनाक्षमालामपि स्फाटिकीं ज्ञानसारात्मकं पुस्तकं चाङ्कुशं पाशमाबिभ्रती येन सञ्चिन्त्यसे तस्य वक्त्रान्तराद् गद्यपद्यात्मिका भारती निःसरेत् येन वा यावका भाकृतिर्भाव्यसे तस्य वश्या भवन्ति स्त्रियः पुरुषाः येन वा शातकुम्भद्युतिर्भाव्यसे सोऽपि लक्ष्मीसहस्रैः परिक्रीडते, किं न सिद्ध्येद् वपुः श्यामलं कोमलं चन्द्रचूडान्वितं तावकं ध्यायतः, तस्य लीलासरो वारिधिस्तस्य केलीवनं नन्दनं तस्यगीर्देवता किङ्करी तस्य चाज्ञाकरी श्रीः स्वयम्, सर्वतीर्थात्मिके सर्वमन्त्रात्मिके सर्वतन्त्रात्मिके सर्वयन्त्रात्मिके सर्वपीठात्मिके सर्वतत्त्वात्मिके सर्वशक्त्यात्मिके सर्वविद्यात्मिके सर्वयोगात्मिके सर्वनादात्मिके सर्वशिष्या(शस्या)त्मिके सर्वविश्वात्मिके सर्वदीक्षात्मिके सर्वसर्वात्मिके सर्वगे पाहि मा पाहि मा पाहि मा देवि ! तुभ्यं नमो देवि तुभ्यं नमः ॥५॥

इति श्यामलादण्डक सम्पूर्णम्

श्यामे सङ्गीतमातः परशिवनिलये मुख्यसाविध्यभारो-
द्राहे वक्षे दयापूरितनिजहृदये मामकीं वैन्यवृत्तिम् ।
श्रीमत्सिंहासनेश्यां भववनपतितान्धावदग्धात्रमस्ते
त्रातुं पीयूषवर्षैः कथय परिकरं बद्धवत्यां विविक्ते ॥

इति मातङ्गिस्तुति सम्पूर्णा ॥

सुवासिनी पूजाविशेषकृत्यम्

अथ श्यामलां शक्तिमाहूय श्रीक्रमोत्तक्रमेण सामुपचर्य तच्छेपमुररीकृत्य हविःप्रतिपत्त्यादिक्रमशेषं समापयेत् । हविः प्रतिपत्तौ मूलेन सर्वेण तत्त्वत्रयशोधनं विशेष. ।

श्यामोपासकनियमाः

एतदुपासकस्यावश्यमनुष्ठेयाः नियमाः—

कदम्बतरुं न छिन्द्यात्, वाचा कान्नीति पदं नोच्चारयेत् । वीणावेणुवादननर्तनगाथागोष्ठीषु प्रवर्तमानासु पराङ्मुखो न भवेत् गायकान् न निन्द्यात्, इति ।

पुरश्चरण-विधानम्

एवं नित्यसपर्यां निर्वर्तयन् पुरश्चरणं कुर्यात् । तच्च जपः होमः तर्पणं ब्राह्मणभोजनञ्चेति चतुर्भिरङ्गैरुपेतम् । दीक्षाप्रकरणोक्तकाले श्रीगुर्वनुज्ञातो ब्राह्मणैः स्वस्ति वाचयित्वा, आचम्य, प्राणानायम्य, अमुकशर्मवर्मादिरहं श्यामामन्त्रसिद्धिकामो लक्ष्यचतुष्टयं जपं तद्दशांशहवनम्, तद्दशांशतर्पणम्, तद्दशांशब्राह्मणभोजनञ्चेति पूर्णाङ्गं पुरश्चरणं करिष्य इति सङ्कल्प्य जपेत् ।

अथ सति सम्भवे तन्त्रान्तरदृष्टेन विधिना ग्रामात् बहिः क्रोशे नगराच्च क्रोशद्वये क्षेत्रं परिगृह्णीयात् । अथवा समुद्रमहानदीतीरयोः पश्चिमाभिमुखवृषशून्यशिवायतनयोः विष्णुगृहपुण्यक्षेत्रतीर्थारण्यपर्वतशिखराश्वत्थबिल्वमूलविविक्तनिजगृहगोष्ठानां श्रीगुरुस्वेष्टदेवतासन्निध्योश्चान्यतमं देशमासाद्य दीपस्थानविन्यस्ते व्याघ्रचर्ममृगाजिनचित्रकम्बलकुशकटरक्तपटपट्टवसनोर्णावस्त्राद्यन्यतमे आसने उपविश्य, विघ्नानुत्सार्य, प्राणानायम्य, सङ्कल्प्य वक्ष्यमाणलक्षणया अक्षमालया वक्ष्यमाणसंस्कारया रुद्राक्षाद्यन्यतमया वा मालया पूर्वाङ्गमन्त्रपूर्वकं प्रत्यहं सहस्रसंख्याकं मूलमन्त्रं तद्दशांशान् उत्तराङ्गमन्त्रांश्च जपित्वा पुनर्न्यासादिकं कुर्यात् । पूर्वाङ्गमन्त्रो यथा—

हसन्ति हसिताला‌पे मातङ्गिपरिचारिके । मम भयविघ्नापदां नाशं कुरु कुरु ठः ठः ठः हुं फट् स्वाहा । इति ।

मूलमन्त्रश्च—न्यासोक्तसप्तदशखण्डसमष्टिरूपः ।

उत्तराङ्गमन्त्रास्तु—ऐं नमः उच्छिष्टचाण्डालि मातङ्गि सर्वशङ्करि, स्वाहा, इति श्यामाङ्गं लघुश्यामा ।

ऐं क्लीं सौः वद वद वाग्वादिनि स्वाहा, इति तदुपाङ्गं वाग्वादिनी ।

ॐ ओष्ठापिधाना नकुली दन्तैः परिवृता पविः।

सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्। इति तत्प्रत्यङ्गं नकुली।

जपकालः

अयञ्च जपो अपराह्णे कर्तव्यः, अपराह्णे श्यामेति सूत्रेण अपराह्णस्य पूजाकालत्वविधानात्। अन्ये त्वामध्यन्दिनमेव। देशोपप्लवादिसम्भावनायामासायाह्नमपीति स्थितिः।

पुरश्चरणाङ्गहोमः

एवं जपोत्तरं तस्मिन्नेवाहनि श्रीक्रमोक्तेन विधिना कुण्डस्थण्डिलान्यतरप्रतिष्ठापितेऽग्नौ देव्या उपचारान्ते सर्वासामावरणदेवानां एकैकाहुतिं तत्तन्मन्त्रैः प्रधानदेवतायाः दशाहुतीश्च स्वाहाऽन्तमूलेन उद्देशत्यागपूर्वकं एकैकेन निमध्यकेन पलाशकुसुमेन हुत्वा, अथ जपदशांशञ्च हुत्वा होमशेषं समापयेत्।

मन्त्रान्ते या वह्निजाया सा तु मन्त्रस्वरूपिणी।
तदन्तेऽन्यां प्रयुञ्जीत सा होमाङ्गतया मता॥

इति शक्तिसङ्गमतन्त्रवचनात् स्वाहाऽन्तमन्त्रेष्वपि पुनः स्वाहाप्रयोगः कार्यः।

इदं च द्रव्यं इह इन्द्रियकामाग्निहोत्राङ्गदधिवन्नित्यं काम्यं च, संयोगपृथक्त्वात्। तिलैः शान्त्या इत्यादिविधीनामन्यतः सिद्धहोमाश्रयेण, गोदोहनस्य तादृशप्रणयनाश्रयेणेव फलाय गुणविधिरूपत्वात्, सत्यां कामनायां अयमेव होमो द्रव्यान्तरैरपि वक्ष्यमाणैः कार्यः, काम्यस्य नित्य-बाधकत्वात्।

पुरश्चरणाङ्गं तर्पणम्

ततो नद्यादौ चतुरस्रमण्डलं विधाय तत्र चिन्तिते श्यामायन्त्रे देवीमावाह्य पञ्चधा उपचर्य सुरभिलेन सुवर्णरजतताम्रादिपात्रगृहीतेन सलिलेन मूलान्ते श्रीमातङ्गीश्वरीं तर्पयामीति होमदशांशं तर्पयेत्। सत्यानुकूल्ये जपस्थान एव वा पूजाचक्रे तर्पयेत्। "तर्पणेऽपि तथैव स्यात्तस्मसोऽन्ते पुनर्नमः" इति सङ्गमतन्त्रोक्तेः नमोन्तेष्वपि मन्त्रेषु पुनः नमस्तर्पयामीति। प्रयोगः। तन्त्रान्तरानुसारिणे मार्जनपक्षेऽपि नमो योजनं तत्रैवोक्तम्॥

पुरश्चरणाङ्गं भोजनम्

ततः तर्पणदशांशसंख्याकानेतद्विद्यादीक्षितानलाभे यथासम्भवं तत्तन्मन्त्रदीक्षितान्वा सदाचारान् प्रातः निमन्त्रिताभ्यञ्जितान् ब्राह्मणान् सुवासिनीः कुमारीश्च यथाविभवं वस्त्रगन्धादिभिः देवताधियाऽभ्यर्च्यमृष्टान्नेन भोजितान् ताम्बूलदक्षिणापरितोषितान् प्रदक्षिणीकृतनमस्कृतानाशिषो गृहीत्वा विसृजेत्

तर्पणदशांशब्राह्मणभोजनाशक्तौ तु तर्पणोक्तवज्जले देवतामावाह्य उपचर्य च मूलान्ते आत्मानमभिषिञ्चामि नमः, इति कुम्भमुद्रया तर्पणदशांशवारं मूर्धन्यभिषेकं वा कुर्यां मार्जनं वा विधाय तद्दशांशं ब्राह्मणान् भोजयेत् ॥ इत्येकः पक्षः ।

प्रतिलक्षान्ते सर्वान्ते वा होमादि कुर्यादित्यपरौ ।

होमप्रत्याम्नायो जपः

होमाशक्तौ ब्राह्मणानां पुरश्चरणजपसंख्याद्विगुणो जप इति मुख्य पक्षः । होमसंख्या द्विगुणो जप इति गौणः । क्षत्रियादीना त्रयाणां त्रिगुणादिर्जपः । एवं तर्पणेऽपि । द्विजभक्तस्य शूद्रस्य द्विजस्त्रीणामपि होमप्रतिनिधिः जप एव । तेषां होमे तु नाधिकारः । ब्राह्मणभोजनस्य तु न क्वापि प्रतिनिधिः ॥

आरब्धस्य पुरश्चरणादेः आशौचेऽपि कार्यत्वम् ।

इदं च पुरश्चरणमारब्धं सत् आशौच प्राप्तावपि कार्यम् नित्यार्चनादि च ।

तदुक्तम्—

जपो देवार्चनविधिः कार्यो दीक्षान्वितैर्नरैः ।
नास्ति पापं यतस्तेषां सूतकं वा यतात्मनाम् ॥
इति देवीयामले ।

सूतके मृतके चैव नित्यं विष्णुमयस्य च ।
सानुष्ठानस्य विप्रेन्द्र सद्यः शुद्धि प्रजायते ॥
इति नारदपाञ्चरात्रे ।

शिव विष्ण्वर्चने दीक्षा यस्य चाग्निपरिग्रहः ।
इति तस्येति शेषः ।

ब्रह्मचारियतीनाञ्च शरीरे नास्ति सूतकम् ॥
इति विष्णुयामले ।

ब्राह्मणस्यैव पूज्योऽहं शुचेरप्यशुचेरपि ।
पूजां गृह्णामि शूद्राणां स्वाचारनिरतात्मनाम् ॥
यज्ञव्रतविवाहेषु श्राद्धे होमार्चने जपे ।
आरब्धे सूतकं न स्यादनारम्भे च सूतकम् ॥
आरम्भो वरणं यज्ञे संकल्पो व्रतजापयोः ।
नान्दीमुखं विवाहादौ श्राद्धे पाकपरिक्रिया ॥

इति विष्णुवचनम् । ब्राह्मणस्य इत्युपलक्षणं क्षत्रियवैश्ययोः ।

न चैवापूज्य भुञ्जीत शिवलिङ्गं महेश्वरि ।
सूतके मृतके चापि न त्याज्यं शिवपूजनम् ॥

इति लिंगपुराणे । पराशरोऽपि—

उपासने तु विप्राणां अङ्गशुद्धिः प्रजायते ॥

इति च । एव अन्यान्यपि वचनानि तन्त्रान्तरेषु बहुल उपलभ्यमानानि विस्तरभयान्नेह लिखितानि । सूतकादौ नैमित्तिककाम्ययोः अनधिकार एव, साधकस्य प्रतिबन्धकबाहुल्यात् ॥

सिद्धिपर्यन्तं पुरश्चरणस्य अभ्यासः

एकेन पुरश्चरणेन यदि न मन्त्रः सिध्यति तदा तस्य द्वयं त्रयं वा कुर्यात् । तथाऽपि तदसिद्धौ सिद्धिकारका प्रयोगा ग्रन्थान्तरोक्ता ग्राह्याः । मनोरथानामक्लेशः सिद्धेरुत्तमलक्षणम्, इत्यादि सिद्धिसूचकानि चान्यतो ज्ञेयानि, इह तु विस्तरभयान्न लिखितानि ।

सम्यक् सिद्धैकमन्त्रस्य पञ्चाङ्गोपासनेन हि ।
सर्वे मन्त्राश्च सिध्यन्ति तत्प्रभावात् कुलेश्वरि ॥
सम्यक् सिद्धैकमन्त्रस्य नासाध्यं विद्यते क्वचित् ।
बहुमन्त्रवतः पुंसः का कथा शिव एव सः ॥

अतः पुरश्चरणमावश्यकमिति ।

पुरश्चरणप्रत्याम्नायः

अतः पुरश्चरणप्रत्याम्नाया: कतिचित् लिख्यन्ते । शशिसूर्योपरागे त्रिरात्रमेकरात्रं वा पूर्वमुपोष्य एकभुक्तं वा विधाय ग्रहणारम्भघटिकार्धात्

प्रागेव स्नातः समुद्रगाया नद्यास्तटादेर्वा नाभिमात्रजले तिष्ठन्, अशक्तौ तु तट एवोपविष्टः, आचम्य, प्राणानायम्य, देशकालौ संकीर्त्य ॐ अमुकराशिगते सवितरि सोमस्य सूर्यस्य वा ग्रहणे अमुकगोत्रोऽमुक शर्मवर्मादिरहं अमुकविद्यासिद्धिकामः स्पर्शमारभ्य विमुक्तिपर्यन्तं जपं करिष्य इति सङ्कल्प्य जपेत् । ततोऽपरेद्युः ग्रहणकालीनस्य जपस्य समसंख्याकं तद्दशांशं वा होमं, तर्पणं तत्समसंख्याकं वा ब्राह्मणभोजनञ्च सम्पादयेत् । यद्वा—ग्रहणपुण्यकाल एव मन्त्रानुसारेण जपस्य तत्समांशस्य तद्दशांशस्य वा होमस्य तदनुगुणस्य तर्पणस्य च कालं विभज्य जपाद्याचरेत् । परेद्युः तर्पणसमसंख्याकं तद्दशांशं वा ब्राह्मणभोजनं कारयेदित्येकः प्रकारः ॥

कृष्णाष्टम्यां प्रातः कृतनित्यक्रियः पूर्ववत् सङ्कल्प्य अयुतचतुष्टयं जपं सप्तधा विभज्य प्रत्यह चतुर्दशोत्तरसप्तशताधिकसहस्रपञ्चकसंख्यया (५७१४) तत्कृष्णत्रयोदशी पर्यन्तं (६ ५७१४ × ३४२८४) जपित्वा चतुर्दश्यां षोडशोत्तर–सप्तशताधिक–सहस्रपञ्चकं (५७१६; व ५७१६ + ३४२८४ = ४००००) जपेत् । सङ्कल्पे चात्र कृष्णाष्टमीमारभ्य एतच्चतुर्दशीपर्यन्तमिति विशेषः । होमादि विधिस्तु तद्दशांश एवेत्यन्यः ॥

प्रातः नित्यक्रियोत्तरं प्राग्वत् सङ्कल्प्य अकारादि क्षकारान्तान् आनुलोम्येनोच्चार्य मूलञ्च सकृदुच्चार्य पुनर्मातृकावर्णान् विलोमानुच्चारयेत् । इत्येवं रीत्या प्रत्यह अष्टोत्तरशतसंख्यया मासमात्रं जपित्वा होमादि-कुर्यात् । सङ्कल्पस्तु एतदनुगुण एवोह्य , इत्यपरः ॥

यथासम्भव अनयो प्रत्याम्नाययो जपस्य चतुर्गुणितत्व तर्पणादेश्च तद्दशांशत्वं बोध्यम् । प्रत्यहं रात्रौ त्रिकाले सर्वोपचारैरिष्टदेवता साङ्गा सावरणामर्चयेत् । एवं षण्मासान् मासमात्रं वा पूजयितः पुरश्चरणमन्तरेणापि विद्यासिद्धिर्भवति । संकल्पश्चैतदनुरूप एवोह्यः, इति चापरः ॥

सूर्योदयं समारभ्य यावत्सूर्योदयावधि ।
तावज्जप्त्वा निरातङ्कः सर्वसिद्धीश्वरो भवेत् ॥
सहस्रारे गुरो पादपद्मं ध्यात्वा प्रपूज्य च ।
केवलं देवभावेन जप्त्वा सिद्धीश्वरो भवेत् ॥ इति चान्यः

प्रकारान्तराणि च ग्रन्थान्तरेषु द्रष्टव्यानीति दिक् ॥

कूर्मचक्रलक्षणम्

गमीकृते भूतले प्राक् प्रत्यगायताः दक्षिणोत्तरायता चतस्रश्चतस्रो रेखा विलिख्य नव कोष्ठानि विधाय तत्र पूर्वादिप्रादक्षिण्यक्रमेण अष्टसु कोष्ठेषु क च ट त प य श ल, आग्यान् अष्टवर्गान् अकारादिस्वरद्वयं च विलिख्य मध्यकोष्ठे श्रीकारं विलिखेत्। इदं च कूर्मचक्रं क्षेत्रग्रामगृहभेदात् त्रिविधम्। तत्र क्षेत्रग्रामयोः तत्तद्ग्रामाद्यक्षरयुक्तं कोष्ठं मुखम्। तत्पार्श्व-द्वयकोष्ठद्वयं हस्तौ। चरणमध्यगतं कोष्ठं च पुच्छमिति विवेकः। एवमुक्त-प्रकारस्य तदधः स्थितं कुक्षिः। तदधः स्थितौ चरणौ। कुक्षिमध्यगतं कोष्ठं पृष्टम्। क्षेत्रादौ विभावितस्य कूर्मस्य मुखे पृष्ठे वा जपे होमे च सर्वार्थ-सिद्धिः। करयोः तनौ कोष्ठान्तराणि अनुपयुक्तानीति। कूर्मचक्रानावश्यक-तोक्ता कतिपयेषु स्थलेषु। यथा—

> कुरुक्षेत्रे प्रयागे च गंगासागरसंगमे।
> महाकाले च काश्यां च पीठस्थानं न चिन्तयेत्॥

इति। दीपस्थानोपलक्षितत्वात् कूर्मचक्रमपि दीपस्थानमित्युक्तम्। इह चक्रे चोक्तेषु कोष्ठेषु रिपुस्थानं विचिन्त्य तत्त्यागपूर्वकमवशिष्टं मित्रस्थानमुपा-देयम्। अरिमित्रविचारो यथा—

> अद्वयस्य ठकारेण ठकारस्यापि तेन च।
> लद्वयस्य पकारेण पकारस्यापि तेन च॥
> ओद्वयस्य यकारेण यकारस्यौयुगेन च।
> जकारस्य हकारेण झकारस्य खकारतः॥
> ढकारस्य लकारेण फकारस्य धकारतः॥
> भकारस्य तु रेफेण यकारस्य सकारतः॥
> अरित्वमेषां वर्णानां अन्येषां मित्रभावना॥

मालासंस्कारः

ताश्च अकारादिक्षकारान्तमातृकावर्णरुद्राक्षमुक्ताफलमाणिक्यस्फटिक-प्रवालस्वर्णरजतशंखरक्तचन्दनोपादानकमणिपुत्रजीवपद्मबीजकुशग्रन्थ्यादि-मय्यः॥

अक्षमालायाः संस्कारानपेक्षा

अक्षमाला हि ब्रह्मरन्ध्रस्य दक्षभागादिनाभिमभिव्याप्य वामभागपर्यन्तं अवरोहारोहणक्रमेण ब्रह्मनाड्यां अन्योन्याभिमुखत्वेन ग्रथितैः आनुपूर्वेणोच्चारितैः अकारादिभिः ळकारान्तैः पुनः प्रातिलोम्येनोच्चारितैः च ळकारादिभिः अकारान्तैः वर्णैः शतबीजात्मिका भवति। क्षकारस्य मेरुस्थानीयस्य लकारद्वयस्य मध्य उच्चारणमानम्। न तु जपसंख्याऽन्तर्गणना। अत्रानुलोम्येन अवरोहारोहयोः प्रथमं मातृका ततो मन्त्रः। प्रातिलोम्येन अवरोहारोहयोस्तु प्रथमं मन्त्रः ततो मातृकेति तत्त्वम्। शतान्ते अ क च ट त प य श, बास्यवर्गाष्टकादित्वेन जपस्य अष्टोत्तरशतत्वं ज्ञेयम्। एवं सहस्रादौ च। अस्याः मालायाः न संस्कारापेक्षा॥

रुद्राक्षमालासंस्कार

अष्टोत्तरशतं रुद्राक्षान् षड्गुणिते वक्ष्यमाणान्यतमे सूत्रे सप्रणवएकैकमातृकोच्चारणपूर्वकं अन्तरान्तरा सग्रन्थिकं अन्योन्याभिमुखंगोपुच्छाकारेण सर्पाकारेण वा ग्रथयित्वा स्थूलमेकं रुद्राक्षमेकीकृते सूत्राग्रद्वये मेरुत्वेन ग्रथयित्वा नवसंख्याकैः अश्वत्थपत्रैः अष्टदलपद्मं विरच्य तत्र मालां निवेश्य मूलमन्त्रान्ते गोमूत्रगोमयगव्यदुग्धदधिघृताख्येन पञ्चगव्येन, ॐ सद्यो जातं प्रपद्यामि सद्यो जाताय वै नमोनमः। भवे भवे नातिभवे भवस्व मा भवोद्भवाय नमः॥—इति मन्त्रान्ते शुद्धोदकेन च प्रक्षाल्य, ॐ वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठायनमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः—इति मन्त्रान्ते चन्दनागुरुकर्पूरादिभिराघर्षणं विधाय, ॐ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः सर्वेभ्य सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः॥ इति मन्त्रेण धूपयित्वा, ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्—इति मन्त्रेण चन्दनकस्तूरीकुङ्कुमकर्पूरैः लेपयित्वा अक्षमालां वामकरपुटे निधाय, ॐ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधि-

पतिर्ब्रह्मणोऽधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोम्—इति मन्त्रेण अष्टोत्तर-शतवारमभिमन्त्र्य रुद्राक्षमालाया. प्राणा इह प्राणाः । रुद्राक्षमालायाः जीव. इह स्थित । रुद्राक्षमालाया. सर्वेन्द्रियाणि रुद्राक्षमालाया. वाङ्मन. प्राणाः इह आयान्तु स्वाहा ।—इति मन्त्रेण प्राणप्रतिष्ठा कृत्वा उपास्य-देवता तत्रावाह्य, मूलेन पञ्चया उपचर्य, तेन मातृकावर्णैश्च अभिमन्त्र्य होमप्रकरणोक्तरीत्या अग्निमुख विधाय, मूलेन अष्टोत्तरशताज्याहुतीः हुत्वा, सम्पाताज्य मालाया निक्षिपेत् । अशक्तौ तु होमसख्या—द्विगुण मूलमन्त्रा-भिमन्त्रण, इति ॥

मालान्तरसंस्कारः

अथान्यासा मालाना सस्कार—उक्तरीत्या ग्रथिता माला प्रासाद-मन्त्रेण पचगव्ये क्षण निक्षिप्य तस्मादुद्धृत्य कुशोदकेन प्रक्षाल्य चन्दना-दिभिरुपलिप्य पात्रे निधाय पञ्चायतनदेवता तत्तन्मन्त्रेण आवाह्य पञ्चोप-चर्य प्रासादेन शतावाराभिमन्त्र्य सूर्यादीन् ग्रहान् इन्द्रादीन् दिक्पालाश्च तत्तन्मन्त्रेण सम्पूज्य सघृते तिले यथाशक्तिवारं मूलेनाग्नौ जुहुयात् । अशक्तौ अभिमन्त्रयेत् । ततो यथाविभवं काञ्चन गुरवे दक्षिणा दत्वा ब्राह्मणाश्च भोजयेत् ।

सस्कारान्तरं यथा—सूत्रं मणीश्च पचगव्ये दिनत्रय सस्थाप्य चतुर्थदिने उद्धृत्य जलेण प्रक्षाल्य, हृन्मन्त्रेण स्वेष्टमन्त्रेण वा प्रत्येक आवृत्तेन मणी-नन्योन्याभिमुख ग्रथयित्वा स्थण्डिले स्वेष्टदेवतासपर्यामण्डलं विधाय, तत्र ता अभ्यर्च्य, मूल अष्टोत्तरशतसख्य जपित्वा तत्तत्कल्पोक्त-पुरश्चरणहोम-द्रव्येण घृतेन वा यथाशक्ति हुत्वा, मण्डले माला निधाय, तस्यामक्षमन्त्रः मूलमन्त्रषडङ्गमन्त्राश्च विन्यस्य, ता स्वेष्टदेवतारूपा विभाव्य, सम्पूज्य सर्व-भूतबलिं दत्वा आचार्यं दक्षिणादिभि परितोष्य ब्राह्मणान् भोजयेदिति ॥

उक्तसस्कारविधि त्रैवर्णिकविषयः । स्त्रीशूद्राणा तु उपास्य मूलमन्त्रे णैव सर्वं कार्यम् ॥

यन्मन्त्रजपार्थं या माला संस्कृता तया तस्यैव जप कार्यो नान्यस्य ।

अत्र च विशेष —

शिवमन्त्रेण संग्रथ्य शक्तिमन्त्रं जपेदपि।
शक्तिमन्त्रेण संग्रथ्य शिवमन्त्रं जपेच्छिवे॥
ध्रुवेण मातृकाभिर्वा ग्रथ्यन्ते मणयो यदि।
तदा सर्वेऽपि जप्तव्या मनवो मालया तया॥ इति

ध्रुव. प्रणव।

देवताभेदेन सूत्रभेदः

देवताभेदेन सूत्रभेद उक्त। यथा—देव्या रक्तपट्टसूत्रम्। शिवस्योर्णाभवं श्वेत वा वल्कलं वा। सूर्यगणेशयो कार्पासजम्। तच्च सुवासिन्या ब्राह्मण्या कर्तितम्। स्वसमानजातीययोषित् कर्तितं वा। त्रिगुण त्रिगुणीकृतम्। यत्र ब्राह्मणी कर्तित न मिलति तत्र वर्णान्तरीयकेवलसुवासिनी-कर्तित ग्राह्यम्। अन्येषु सूत्रेषु त्वैच्छिकं गुणस्थौल्य मानञ्च॥

मालासंस्कारकाल.

मालासंस्कारकालस्तु—विष्णो द्वादश्यां पूर्वाह्णे। शक्तेः अष्टमी-नवमी चतुर्दशीना रात्रिः। शिवस्य त्रयोदशी दिवा। सूर्यस्य सप्तमी। दिवा इति॥

मालाभेदेन फलभेदः

मालाभेदेन फलभेदो यथा—मातृकाक्षमाला क्षिप्रं मन्त्रसिद्ध्यै। रुद्राक्षमाला मोक्षाय मौक्तिकमाणिक्यमयी साम्राज्याय। स्फाटिकी सर्वेभ्य कामेभ्य। पुत्रजीवमयी सम्पत्सारस्वतावाप्त्यै। पद्मबीजमयी श्रीयशोभ्याम्। रक्तचन्दनमयी वश्यभोगाभ्याम्। इत्यन्यासामपि फलानि ग्रन्थान्तरेषु द्रष्टव्यानि।

सूत्रजीर्णतादौ प्रायश्चित्तम्

सूत्रे जीर्णे नवेन ग्रथयित्वा मूलेनाष्टोत्तरशतवारानभिमन्त्रयेत्। जपसमये प्रमादात् करगलितायां छिन्नायां वा मालायां निषिद्धस्पर्शे वा अष्टोत्तरशतमूलमन्त्रजप प्रायश्चित्तम्॥

जपभेदाः

अथ जपभेदाः ज्ञानार्णवे—

निगदेनोपांशुना वा मानसेनाथवा जपेत् ।
निगदः परमेशानि स्पष्टं वाचा निगद्यते ॥
अव्यक्तश्च स्फुरद्वक्त्र उपांशुः परिकीर्तितः ।
मानसस्तु वरारोहे चिन्तनान्तररूपवान् ।
निगदेन तु यज्जप्तं लक्षमात्रं वरानने ।
उपांशुस्मरणेनैव तुल्यं भवति शैलजे ।
उपांशुलक्षमात्रं तु यज्जप्तं कमलेक्षणे ।
मानसस्मरणेनैव तुल्यमेकेन सुन्दरि ॥

स्वच्छन्दतन्त्रसारेतु—

जपस्तु षड्विधः प्रोक्तस्तत्प्रकारोऽयमुच्यते ।
वाचिकं मानसं चैव योगिकं योगवाचिकम् ॥
योगमानसिकं चैव वाङ्मानसिकयोगिकम् ।
वाचा केवलयोच्चार्य मन्त्रं देवीं विभाव्य च ॥
जपेद् यत् परमेशानि वाचिकं तत्प्रकीर्तितम् ।
देव्या रूपं च संचिन्त्य सावधानेन चेतसा ॥
मन्त्रस्याप्यनुसन्धानं मानसं परिकीर्तितम् ।
त्रिस्थानेन त्रिबीजानि क्रमात् संचिन्त्य मार्गतः ॥
आरोहो योगिकं प्रोक्तमुच्यते योगवाचिकम् ।
लक्ष्ये मनः समायोज्य वाचा मन्त्रं जपेच्छिवे ॥
योगवाचिकमेतत् स्याद्योगमानसिकं शृणु ।
लक्ष्येण मानसं पूर्वं संयोज्य मनसा जपन् ॥
योगमानसिकं विद्यादथान्यदपि चोच्यते ।
मनसाऽपि जपेन्मन्त्रं बीजानारोहणक्रमात् ॥
वाङ्मानसिकयोगाख्यं जपमेतदनुत्तमम् ।
वाचिकेन जपेनैव केवला वाक् प्रवर्तते ॥

त्रीणि त्रीणि च ऋक्षाणि रविभावीनि वापयेत् ।
सूर्यादीनां फलं देवि शृणु वक्ष्ये तथाक्रमम् ॥
आदित्ये तु भवेच्छोको बुधे चैव धनागमः ।
शुक्रे लाभं विजानीयाच्छनौ पीड़ा न संशयः ॥
चन्द्रे लाभो महान् देवि भौमे चैव तु बन्धनम् ।
गुरुणा च धनप्राप्तिः राहौ हानिस्तथैव च ॥
केतुना जायते मृत्यु. फलमेवं महेश्वरि ।
क्रूरहोमस्तथा देवि क्रूरग्रहमुखो भवेत् ॥

सूर्यभं सूर्याक्रान्तं नक्षत्रं, चन्द्रभं तद्दिवसनक्षत्रम् । दापयेत् सूर्यादिभ्यः इति शेषः । सूर्यनक्षत्रादिचन्द्रनक्षत्रपर्यन्तं नक्षत्राणां त्रयं त्रय सूर्यादिस्वामिकमित्यर्थः । क्रूरहोमो मारणोच्चाटनादि फलकः । शेषं सुगमम् । एवं वह्निस्थिति ग्रहाश्च विचार्य सौम्यहोमः सौम्यग्रहेषु क्रूरश्च क्रूरग्रहेषु कार्यः ॥

कुण्डस्थण्डिलयोः परिमाणम्

तत्र एकोनपञ्चाशत् संख्याकाहुतिपर्यन्त स्थण्डिलमेव । तच्च अष्टादशागुलप्रमाण परितः अङ्गुष्ठोन्नतम् । अग्रे कुण्डेन सह विकल्पोऽशक्तिशक्तिभ्यां व्यवस्थितिः । पञ्चाशदादिनवनवति सख्याहुति पर्यन्तं मुष्टिमात्रम् । मुष्टिः अरत्निः । शतादिनवनवत्यधिकनवशत्याहुतिपर्यन्तं अरत्निमितम् । निष्कनिष्ठमुष्टिर्हस्तोऽरत्निः । सहस्रादि होमे हस्तमात्रम् । अयुतादौ द्विहस्तम् । लक्षादौ चतुर्हस्तम् । दशलक्षादौ षड्ढस्तम् । कोटिहोमादौ अष्टहस्तं वा । चतुर्विंशत्यंगुलैः हस्तः । अङ्गुलं तिर्यङ्निहिताष्टयवप्रमाण स्वमध्यमामध्यपर्वमित वा ज्ञेयम् । मुष्ट्या वा चतुरङ्गुलानि । अर्धयवोनचतुस्त्रिंशतांगुलैः द्विहस्तम् । सार्धैकचत्वारिंशता त्रिहस्तम् । अष्टचत्वारिंशता चतुर्हस्तम् । पादोनचतु.पञ्चाशता पञ्चहस्तम् । पादोनैकोनषष्ट्या षड्ढस्तम् । सार्धत्रिषष्ट्या सप्तहस्तम् । अष्टषष्ट्या यवोनया अष्टहस्तम् । द्विसप्तत्या नव हस्तम् । षट्सप्तत्या दश हस्त कुण्डं—स्थण्डिलं वा भवति । कुण्डाङ्गाना व्यासखातनाभिकण्ठमेखलायोनीनां सम्यग्ज्ञान एव कुण्डं युक्तम् ।

अन्यथा अत्यन्तमनिष्टम् । स्थण्डिल चतुरस्त्रमङ्गुलोत्सेधं चतुरङ्गुलोत्सेधं वा । स्थूलद्रव्यहोमे तत्तत्परिमाणस्यापर्याप्तौ स्वोत्तरपरिमाणमपि ग्राह्यम् ॥

होमे इतिकर्त्तव्यता विशेषः

बहुनर्त्विक्कर्तृके होमे यथाकाल प्रत्याहुति उद्देशत्यागयो कर्तुमशक्यत्वात् यजमानो देवता द्रव्यं च मनसा ध्यात्वा अमुकदेवताया इद सर्वं होमद्रव्यजात न ममेति त्यजेत् ॥

ऋत्विजस्त्वाचान्ताः कृतप्राणायामा' प्रत्येकं देशकालौ सकीर्त्य अमुकेन वृतोऽह अमुकसङ्ख्याकहोममध्ये अमुकांशेन यजमानोपकल्पितामुकद्रव्येण होम करिष्य इति सङ्कल्प्य आसनविधि भूतशुद्धयादिकं तत्तदेवता ऋष्यादिन्यासत्रय कृत्वा अग्नौ देवताध्यानमानसपूजान्ते प्राङ्मुखा वोदङ्मुखा' वा जुहुयुः । होममङ्ख्यासमाप्तौ परिधिपरिस्तरणान्त पतित हवि. सर्वमग्नौ प्रक्षिपेत् । तद्बहि पतितं तु न ।

अनेकदिनसाध्ये तु होमे प्रतिदिवस कयाचित् सङ्ख्यया संस्थाप्य वन्हिरक्षणपूर्वकं शुभदिने समाप्ति कुर्यात् । प्रतिदिन होमाद्यन्तयो प्रधानदेवता अङ्गदेवताश्च गन्धपुष्पादिभि अग्निमध्ये पूजयेत् । आरम्भे समाप्तिदिने अग्निमूलमन्त्रेण स्वाहा स्वधा सहित अग्निं पूजयेत् । तत्र गन्धादिक बहिरेव अग्नये दद्यात् ॥

यत्र होम एव प्रयोगविशेषे फलप्रदत्वात् प्रधानं न पुनर्जपाङ्ग तत्र तत्र ब्राह्मणभोजनसङ्ख्यया तन्त्रे विशेषानुक्तौ स्मृत्युक्ता ग्राह्या । तत्र लक्षहोमे षष्ठ्यधिका नवशती मुख्य पक्ष । विंशत्यधिका पञ्चशती मध्यम । दशाधिका त्रिशती अधम ॥

यत्र प्रधानदेवता अङ्गत्वेन स्मृतितन्त्रोक्तयोरविरोधे समुच्चयपक्षमाश्रित्य ग्रहा अपि पूज्यन्ते । तत्र तदङ्गब्राह्मणभोजनमपि कार्यम् । तत्रोत्तमे पक्षे विंशत्यधिका सप्तशती ब्राह्मणाना भोजनीया । मध्यमपक्षे चत्वारिंशदुत्तरं शतत्रयम् । अधमे च दशाधिकं शतमिति ॥

काम्यहोमद्रव्याणां मानं फलं च

तिलैश्चुलुकमितैः शतसंख्याकैर्वा प्रत्याहुतिहोमः शान्त्यै, आज्येन च कर्षप्रमाणेन। ग्रासमितैरन्नैरन्नाय। अमृतासमिद्भिः कनिष्ठास्थूलाभिः चतुरङ्गुलप्रमाणाभिः ज्वरोपशमनाय चूतपल्लवश्च। दूर्वाभिः तिसृभिस्तिसृभिरायुषे। मृतमालकुसुमैः धनाय। उत्पलैः भोगाय। बिल्वदलैः राज्याय। समग्रैः पद्मैः साम्राज्याय। मुष्टिमितैः लाजैः कन्यायै। नन्द्यावर्तैः कवित्वाय। वञ्जुलमल्लिकाजातीपुन्नागैः भाग्याय। बन्धूकजपाकिंशुकमधूकैः ऐश्वर्याय। कदम्बैः वश्याय। लवणैः शुक्तिप्रमाणैः आकर्षणाय। शालितण्डुलैः अर्धमुष्टिमितैः धान्याय। कुङ्कुमगोरोचनादिभिः गुञ्जामितैः सौभाग्याय। पलाशपुष्पैः तेजसे कपिलाघृतेन चोक्तमानेन। धुत्तूरकुसुमैरुन्मादाय। विषवृक्षनिम्बश्लेष्मातकविभीतकसमिद्भिः दशाङ्गुलप्रमाणाभिः शत्रुनाशाय। निम्बतैलाक्तैः लवणैः उक्तमानैः मारणाय। काकोलूकपक्षेणैकेन विद्वेषणाय। तिलतैलाक्तैः मरीचैः विशल्या कासश्वासप्रशमनाय इति। पुष्पेषु स्थूलमेकैकं अल्पानि द्वित्राणि इति वा विवेकः। एतानि द्रव्याणि काम्यजपाङ्गेषु होमेषु तत्तज्जपदशांशसंख्याकानि। प्राधान्येन होमे तु संख्याऽनुक्तौ सहस्रसंख्याकानि। इह च प्रथमं अभीष्टदेवतायै विज्ञाप्य अमुककर्म सिद्ध्यर्थं एतावदाहुतीः करिष्यामीति सङ्कल्पयेत्। कर्षस्तु षड्गुंजामितमाषषोडशकप्रमाणः। शुक्तिः कर्षद्वयम्। मुष्टिस्तु पलम्॥

पुरश्चरणकाले विहितानि

मनःस्थैर्यशौचमौनमन्त्रार्थचिन्तननिर्वेदश्रद्धोत्साहक्रोधाभावसन्तोषेन्द्रियनिग्रहब्रह्मचर्यगुरुप्रणतिसुगन्धामलकस्नानसुवससुनरभिलानुलेपनमध्यपत्रवर्जपलाशपत्रालिमितैकवारभोजनप्रक्षालितदर्भास्तीर्णधौतवस्त्रशयनत्रिषवणस्नानादीनि। अशक्तौ तु प्रात.स्नानमात्रम्।

निषिद्धानि

अप्रियानृतभाषणकरञ्जविभीतकार्कस्नुहिछायाक्रमणप्रतिग्रहादीक्षितस्त्रीशूद्रपतितनास्तिकसम्भाषणबह्वेकमलिनवस्त्रधारणकाम्यकर्माविहितकर्मकांस्यभोजनासत्संगोष्णजलस्नानकञ्चुकोष्णीषधारणप्राणिहिंसापादुकायानशय्यारोहणनग्नत्वकुशरहितकरत्वादीनि अतिभोजनञ्च॥

भोज्यानि

शुक्लकविधान हैमन्तनीवारकगुपष्टिका यवा शूद्रानवहता गुडवर्जितमैक्षव कृष्णतिलमुद्गकलायकन्दविशेषनारिकेलकदलीलवलीपनसाम्रामलकार्द्रकसामुद्रलवणानुद्धृतसारगव्यपिप्पलीजीरकनारगादीनि ॥

अभोज्यानि

गुडकृनिमलवणपर्युषितनिस्स्नेहकीटादिदूषितकाञ्जिकगृञ्जनविल्व करजलशुनमृणालकोद्रवतैलपक्वमापमसूरचणकादिदेवधान्यादीनि ।

भोजनपर्याय.

स्वेष्टदेवतायै निवेदित सव्यंजन अन्न मूलेन प्रोक्ष्य सप्तवार प्रतिद्रव्यमभिमन्त्र्य अश्नीयात् । उदक द्वात्रिंशद्वारमूलाभिमन्त्रितम् पिबेत् ॥

जपादिसमय आवश्यकोपाधौ शुचौ देशे त निवर्त्य स्नात्वा शेप समापयेत् । अशक्तौ तु मन्त्रभस्मान्यतरस्नानवस्त्रपरिवर्तने केवल कुर्यादिति ॥

इत्थ कृतपुरश्चरण सिद्धमनु देवताप्रसादसम्पन्न स्वातन्त्र्येणोपास्तौ श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण नैमित्तिकार्चनपर सति कामे काम्यमनुतिष्ठन् पूर्णमनोरथ सुखी विहरेदिति शिवम् ॥

श्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे श्यामाक्रम समाप्त ॥

श्रीदण्डिनीक्रमः

इत्थं साङ्गां सङ्गीतमातृकामिष्ट्वा सिंहासनाधिरूढायाः ललितायाः महाराज्ञ्या दण्डनायिकास्थानीयां दुष्टनिग्रहशिष्टानुग्रहनिरर्गलाज्ञाचक्रां समयसङ्केतां कोलमुखी विधिवद्वरिवस्येत् ।

साधकस्तावन्निशीथे प्रबुद्धः श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण श्रीगुरुध्यानादिप्राणायामान्तं विधिं विदध्यात् । तत्र च श्रीगुरुपादुकायामादौ त्रितारीस्थाने वाक् ग्लौ इति बीजद्वयं योज्यम् । ततो हृदयपरमाकाशे स्फुरतोऽखण्डानन्ददायिनः परसंवित्परिणतेरनाहतस्य नादास्यऽनुसन्धानेन भस्मितनिखिलकश्मलो मूलं मनसा दशवारमावर्त्य, उत्थाय निर्वर्तितावश्यको गृह एव वारुणमान्त्रभास्मनस्नानेष्वन्यतमं कुर्यात् । वारुणे मूलेन त्रिरदकाञ्जलिदानं शिरसि, त्रिराचमनं, त्रिःप्रोक्षणं च विदध्यात् । मान्त्रभास्मनस्नाने स्मृत्युक्त एव । अथ वाससी धौते परिधाय विधृतपुण्ड्रः मूलेन त्रिराचम्य द्विः परिमृज्य सकृदुपस्पृश्य चक्षुषी नासिके श्रोत्रे असे नाभिं हृदयं शिरश्चावमृशेत् ।

यागमन्दिरप्रवेशः

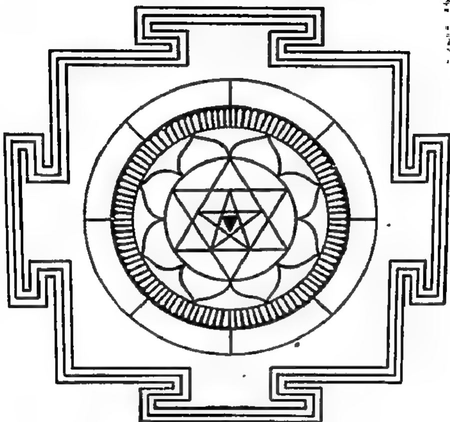
एवं त्रिराचम्य यागमन्दिरमासाद्य गोमयेनोपलिप्तद्वारस्थण्डिल, द्वारस्य दक्षवामोर्ध्वभागेषु क्रमेण—

ऐं ग्लौ भद्रकाल्यै नमः २ भैरवाय नमः, २ लम्बोदराय नमः, इति तिस्रो द्वारदेवताः समर्च्य, अन्तःप्रविष्टो रङ्गवल्लीपुष्पमालावितानकादिभिरलङ्कृत्य यागमन्दिरम्, ऐं ग्लौ रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय दीपनाथाय नमः इति पुष्पाञ्जलिना भूमौ दीपनाथमिष्ट्वा, सपर्यासामग्रीं दक्षभागे निधाय, दीपानभितः प्रज्वाल्य, गन्धमाल्यादिभिरात्मानमलङ्कृत्य, ताम्बूलसुरभिलवदनो जातिपत्रफललवङ्गैलाकर्पूरास्यपञ्चतिक्तामोदितवदनो वा प्रसन्नमनाः स्वास्तीर्णे ऊर्णामृदुनि शुचिनि वालान्त्यबीजेन द्वादशवारमभिमन्त्रिते मूलमन्त्रोक्षिते आसने ऐं ग्लौ आधारशक्तिकमलासनाय नमः इति प्राङ्मुख उदङ्मुखो वा पद्मासनाद्यन्यतमेनासनेनोपविश्य, ऐं ग्लौ शिवादिश्रीगुरुभ्यो नमः, ऐं ग्लौ समस्तगुप्तप्रकटसिद्धयोगिनीचक्रश्रीपादुकाभ्यो नमः इति मूर्धनि बद्धाञ्जलिः

श्रीवार्ताली (वाराही)



पाथोरुहपीठगता पाथोधरमेचका कुटिलदंष्ट्रा ।
कपिलाक्षीत्रिनयना घनकुचकुम्भा प्रणतवाञ्छितवदान्या ॥
दक्षोर्ध्वतोऽरिखड्गौ मुसलमभीतिं तदन्यतस्तद्वत् ।
शङ्खं खेटहलवरान् करैर्दधाना स्मरामि वार्तालीम् ॥



श्रीवार्ताली यन्त्रम्

स्ववामदक्षपार्श्वयोः क्रमेण गुरुपादुकया श्रीगुरु महागणपतिमन्त्रेण च गणपति प्रणम्य, ऐं ग्लौं ऐं ह्रः अस्त्राय फट्, इति मन्त्रेणावृत्तेनाङ्गुष्ठादि करतलान्त कूर्परयोः देहे च क्रमेण न्यासव्यापके कृत्वा स्वस्य दैवतैक्यं भावयन्,

ऐं ग्लौं अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया ॥

इति मन्त्रं सकृदुच्चार्य युगपद्वामपार्ष्णिभूतलत्रिराघातकरास्फोटत्रयक्रूरदृष्ट्यवलोकनपूर्वकं तालत्रयेण भौमान्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासकान् विघ्नानुत्सारयेत् । तालत्रयं पूर्वमुक्तमेव ।

प्राणायामः

अथ नमः इति अङ्गुष्ठमन्त्रमुच्चार्य अङ्कुशेन शिखां बद्ध्वा श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण भूतशुद्धिं आत्मप्राणप्रतिष्ठाश्च विधाय मूलेन प्राग्वत् विंशतिधा षोडशधा दशधा सप्तधा त्रिधा वा प्राणानायम्य ।

द्वितारीन्यासः

तेजोरूपदेवीमयं भावयन्नात्मानं स्वदेहे न्यासजालात्मकं वज्रकवचमामुञ्चत् । तत्रादौ अं ऐं ग्लौं अ नमः शिरसि । आं ऐं ग्लौं आ नमः मुखवृत्ते इत्यादिरीत्या क्षान्तमातृकासम्पुटितमुक्तबीजद्वयं मातृकास्थानेषु न्यसेत्, इति द्वितारीन्यासः ।

करषडङ्गन्यासौ

ऐं ग्लौं अन्धे अन्धिनि नमः अङ्गुष्ठाभ्याम् नमः,
२ रुन्धे रुन्धिनी नमः तर्जनीभ्याम् नमः,
२ जम्भे जम्भिनि नमो मध्यमाभ्या नमः,
२ मोहे मोहिनी नमः अनामिकाभ्या नमः
२ स्तम्भे स्तम्भिनि नमः कनिष्ठिकाभ्या नमः,
इति पञ्चभि मन्त्रैः अङ्गुष्ठादिकनिष्ठान्तं न्यस्य,
ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वर्तालि हृदयाय नमः,
२ वाराहि वाराहि शिरसे स्वाहा,
२ वराहमुखि वराहमुखि शिखायै वषट्,

२ अन्धे अन्धिनि नमः कवचाय हुम्,

२ रुन्धे रुन्धिनी नमः नेत्रत्रयाय वौषट्,

२ जम्भे जम्भिनि नमः अस्त्राय फट्,

इति मन्त्रैः हृदयादिषु न्यसेत्। नेह करन्यासेऽस्त्रमन्त्रः। तेन करतलन्यासो न भवति।

अर्घ्यशोधनम्

ततः श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण सामान्यविशेषार्घ्ये आसादयेत्। अत्र चोभयोरप्यर्घ्ययोः प्रवेशरीत्या अन्तरन्तश्चतुरस्रादिमण्डलकरणम्—

२ अं आत्मतत्त्वाय आधारशक्त्यै वौषट्, इत्याधारस्थापनम्,

२ उं विद्यातत्त्वाय पद्मासनाय वौषट्, इति पात्रनिधानम्,

२ मं शिवतत्त्वाय सोममण्डलाय नमः, इति शुद्धजलापूरणम्,

ऐं ग्लौं ब्रह्माण्डखण्डसम्भूतमशेषरससम्भृतम्।

आपूरितं महापात्रं पीयूषरसमावह॥

इति क्षीरपूरणे मन्त्रान्तरं चोक्तम्, षडङ्गं, (चतुर्नवतिमन्त्राभिमन्त्रणाभावः,) मूलेन दशधा अभिमन्त्रणञ्च विशेषः। अथ विशेषार्घ्यबिन्दुभिः सपर्यासामग्री पावयित्वा।

सप्तार्णमन्त्रपञ्चकन्यासः

अन्धे अन्धिनि नमः इत्यादीन् पञ्च मन्त्रान् उक्तबीजद्वयादिकान् शिरोवदनहृदयगुह्यपादेषु न्यस्य।

अष्टखण्डन्यासः

मूलस्य खण्डैरष्टभिः वक्ष्यमाणेषु स्थानेषु न्यसेत्। यथा—

ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि इति आपादजानु,

२ अन्धे अन्धिनि नमः इत्याजानुकटि,

२ रुन्धे रुन्धिनि नमः इत्याकटिनाभि,

२ जम्भे जम्भिनि नमः इत्यानाभिहृदयम्,

२ मोहे मोहिनी नम इत्याहृदयकण्ठम्,

२ स्तम्भे स्तम्भिनि नम इत्याकण्ठभ्रूमध्यम्,

२ सर्वदुष्टप्रदुष्टाना सर्वेषा सर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं कुरु कुरु शीघ्र वश्यं नम इत्याभ्रूमध्यल्लाटम्,

२ ऐं ग्लौं ठ ठ ठ ठ हु अस्त्राय फट् इत्याल्लाटब्रह्मरन्ध्र, चेति ।

मातृकास्थानेषु मूलपदन्यासः

ततो मूलमन्त्रस्य द्विचत्वारिंशत्पदानि मातृकास्थानेषु न्यसेत् । यथा—

ऐं ग्लौं ऐं नम शिरसि, ग्लौं मुखवृत्ते, ए नेत्रयो, नमो कर्णयो, भगवति नासापुटयो, वार्तालि कपोलयो, वार्तालि ओष्ठयो, वाराहि दन्तपङ्क्त्यो, वाराहि ब्रह्मरन्ध्रे, वाराहमुखि मुखान्त, वाराहमुखि दक्षदोर्मूले, अन्धे तन्मध्यसन्धौ, अन्धिनि तन्मणिबन्धे, नमो तदङ्गुलिमूले, रुन्धे तदङ्गुल्यग्रे, रुन्धिनि वामदोर्मूले, नमो तन्मध्यबन्धौ, जम्भे तन्मणिबन्धे, जम्भिनि तदङ्गुलिमूले, नमो तदङ्गुल्यग्रे, मोहे दक्षोरुमूले, मोहिनि तज्जानुनि, नमो तत्पादसन्धौ, स्तम्भे तदङ्गुलिमूले, स्तम्भिनि तदङ्गुल्यग्रे, नमो वामोरुमूले, सर्वदुष्ट प्रदुष्टाना वामजानुनि, सर्वेषा तत्पादसन्धौ, सर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भन तदङ्गुलिमूले, कुरु तदङ्गुल्यग्रे, कुरु पार्श्वयो, शीघ्र पृष्ठे, वश्य नाभौ, ऐं जठरे, ग्लौं हृदि, ठ दक्षकक्षे, ठ अपरगले, ठ वामकक्षे, ठ हृदादिहस्तयो, हु हृदादिपादयो, अस्त्राय हृदादिपाय्वन्त, ऐ ग्लौं फट् नम हृदादिमूर्धान्तिम्, इति ।

तत्त्वाष्टकन्यास.

तत' ऐं ग्लौ ए नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि इत्यादिरीत्या प्रागुक्तानाम् अष्टाना खण्डाना प्रत्येकमन्त्र क्रमेण ह्ला शर्वाय क्षितितत्त्वाधिपतये नम ह्ली भवाय अम्बुतत्त्वाधिपतये नम, हूलू रुद्राय वह्नितत्त्वाधिपतये नम, ह्लै उग्राय वायुतत्त्वाधिपतये नम', ह्लौं ईशानाय भानुतत्त्वाधिपतये नम, सो महादेवाय सोमतत्त्वाधि-

पतये नम , ह् पशुपतये यजमानतत्त्वाधिपतये नम", भौ भीमाय आकाश-तत्त्वाधिपतये नम , इति उक्तेषु पादादिजान्वित्यादिष्वष्टसु स्थानेषु तत्त्वाष्टक न्यसेत् ।

यन्त्रप्राणप्रतिष्ठा

अथ मूलेन व्यापकत्रय न्यस्य स्वपुरत श्वेतपटपट्टदुकूलान्यतमे लिखिते लेखिते वा सुवर्णरजतताम्रचन्दनपीठादौ लिखिते उत्कीर्णे वा दृष्टिमनोहरे भूपुरत्रयसहस्रपत्रशतपत्राष्टपत्रषडरपञ्चारत्र्यस्रबिन्दुमये चक्रे सुकुमाञ्जलि विकीर्य,

ऐं ग्लौ वार्तालियन्त्रस्य प्राणा इह प्राणा , ऐं ग्लौं वार्तालियन्त्रस्य जीव इह स्थित , ऐं ग्लौं वार्तालियन्त्रस्य सर्वेन्द्रियाणि, ऐं ग्लौ वार्तालियन्त्रस्य वाङ्मन प्राणा इहायान्तु स्वाहा, इति यन्त्रप्राणप्रतिष्ठा विदध्यात् ।

पीठपूजा

'अर्चने 'द्वितारी' 'नम ' इति सर्वत्र योजनम्'

ऐं ग्लौं स्वर्णप्रकाराय नम , सुराब्धये, वराहद्वीपाय, वराहपीठाय, आ आधारशक्तये, कू कूर्माय, क कन्दाय, अ अनन्तनालाय नम , इति पीठस्य मध्ये।

ऐं ग्लौं ऋं धर्माय नम , ऋ ज्ञानाय, लं वैराग्याय, ॡ ऐश्वर्याय नम इति तस्य आग्नेयादिदिक्षु ।

ऐं ग्लौं ऋ अधर्माय नम , ऋ अज्ञानाय, ॡ अवैराग्याय, ऌ अनैश्वर्याय नम , इति प्रागाद्यासु दिक्षु चाभ्यर्च्य,

ऐं ग्लौं त्र्यस्रचारषडरदलाष्टकशतपत्रसहस्रारपद्मासनाय नम , इति चक्रमनुना चक्रमिष्ट्वा,

ऐं ग्लौं वह्निमण्डलाय नम , सूर्यमण्डलाय, सोममण्डलाय, स तत्त्वाय, र रजसे, त तमसे, आ आत्मने, अ अन्तरात्मने, प परमात्मने, ह्रीं ज्ञानात्मने नम इति च तत्रैव विरवस्येत् ।

(स्वर्णप्राकाराय नम इत्याद्या ह्रीं ज्ञानात्मने नम इत्यन्ता एते सप्तविंशति , पीठमनवो ज्ञेया) ।

तत २ह्रीं प्रेतपद्मासनाय सदाशिवाय नम , इति पुष्पं विन्दौ देव्यासनमभिपूज्य।

मूर्तिकल्पनम्

तन २ लृ पा ई वराहमूर्तये ठ ठ ठ ठ हुँ फट् ग्लौ ऐ इति मूर्तिकरिण्या विद्यया चक्रे देव्या मूर्ति सङ्कल्प्य ।

देवीध्यानम्

हृदि देवी ध्यायेत् । यथा—

पायोरुहपीठगता पायोधरमेचका कुटिलदंष्ट्राम् ।
कपिलाक्षित्रितया घनकुचकुम्भा प्रणतवाञ्छितवदान्याम् ॥
दक्षोर्ध्वतोऽरिखड्गौ मुसलमभीतिं तदन्यतस्तद्वत् ।
शङ्ख खेटहलवरान् करैर्दधाना स्मरामि वार्तालीम् ॥

देव्याः षोडशोपचारपूजा

अथ वक्ष्यमाणेन प्रकारेण देव्यै मनसा पञ्चोपचारानर्पयित्वा, भक्तानुग्रहात्तेजोरूपेण परिणता ब्रह्मरन्ध्र प्रापय्य, वहन्नासापुटद्वारा निर्गता कुसुमगर्भिते निजाञ्जलौ सन्निहिता ता मूर्तौ मूलविद्यया आवाह्य, आवाहिता भवेत्यादिरीत्या तत्तन्मुद्राप्रदर्शनपूर्वकम् आवाहन सस्थापन-सन्निधापन-सन्निरोधन-सम्मुखीकरणा-वगुण्ठनादीनि विधाय, वन्दनधेनुयोनिमुद्राश्च प्रदर्शयेत् । तत ए ग्लौं ए नमो भगवति वातालि वार्तालि हृदयाय नम इत्यादिकान् प्रागुक्तान् षडङ्गमन्त्रान् २ अन्धे अन्धिनि नम इत्यादिकान् पञ्चाङ्गमन्त्राश्च न्यासोक्तभङ्ग्या देव्या तत्तदङ्गे कुसुमेन विन्यस्य, ऐं ग्लौ वाराहीं पाद्य कल्पयामि नम इत्यादिरीत्या देव्यै पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानवासोगन्धपुष्पधूपदीपनीराजनच्छत्रचामरयुगलदर्पणनैवेद्यपानीयताम्बूलाख्यान् षोडशोपचारान् कृत्वा, नैवेद्याङ्गत्वेन पूर्वोत्तरापोशनकरप्रक्षालनगण्डूषाचमनीयानि च प्रदद्यात् । नैवेद्यं त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डलकरणम्, मूलेन प्रोक्षणम्, वं इति धेनुमुद्रया चामृतीकरणं मूलेन सप्तवारमभिमन्त्रण, प्राणादिमुद्राप्रदर्शनञ्च विधेयम् ।

देवीतर्पणम्

अथ मूलान्ते वार्तालिश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नम इति वामकरतत्त्वमुद्रासन्दष्टद्वितीयपात्रगृहीतक्षीरबिन्दुभिस्सह दक्षकरोपात्तकुसुमक्षेपे

देवी दशवारं सन्तर्प्य, पूर्वोक्तानां षडङ्गमन्त्रणामन्ते—हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, शिरःशक्ति श्रीपादुकां पूययामि तर्पयामि नमः, शिखाशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, कवचशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, नेत्र शक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, अस्त्रशक्तिश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति क्रमेण देव्यङ्गे अग्निशासुरवायुकोणेषु मौलौ प्रागादिदिक्षु च षडङ्गानि सम्पूज्य ।

ओघत्रययजनम्

पृष्ठतः प्रागपवर्गरेखात्रये दक्षिणसंस्थाक्रमेण गुर्वोघत्रयं यजेत् । यथा—

ऐं ग्लौं परप्रकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, परमेशानन्द, परशिवानन्द, (परसिद्धानन्द इति पाठान्तर) कामेश्वर्यम्बानन्द, मोक्षानन्द, कामानन्द, अमृतानन्दनाथ श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। इति दिव्यौघः ।

ऐं ग्लौं ईशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, तत्पुरुषानन्द, अघोरानन्द, वामदेवानन्द, सद्योजातानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति सिद्धौघः।

ऐं ग्लौ पद्मोत्तरानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, परमानन्द, सर्वज्ञानन्द, सिद्धानन्द, गोविन्दानन्द, शङ्करानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति मानवौघः ।

आवरणार्चनम्

अङ्गयावरणान्तानामर्चनप्रकारस्तु पूर्वोक्त एव ।

त्र्यस्रे देव्यग्रकोणमारेभ्य प्रादक्षिण्यक्रमेण—

ऐं ग्लौं जम्भिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, मोहिनी, स्तम्भिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति प्रथावरणम् ।

पञ्चारे—

ऐं ग्लौं अन्धिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, रुन्धिनि, जम्भिनी, मोहनी, स्तम्भिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति द्वितीयावरणम् ।

षट्कोणस्य कोणमूलेषु—

ऐं ग्लौं आ क्षा ई ब्राह्मीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, ई ला ई माहेश्वरी, ऊ हा ई कौमारी, ऋ सा ई वैष्णवी, ऐ शा ई इन्द्राणी, औ या ई चामुण्डाश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति सम्पूज्य तस्यैव कोणाग्रेषु मध्ये च—

ऐं ग्लौं य म र यू या यी यू यैं यौं य याकिनी जम्भय जम्भय मम सर्वशत्रूणां त्वग्धातुं गृह्ण गृह्ण अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा याकिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

२ र म र यू रा री रू रैं रौं र राकिनी जम्भय जम्भय मम सर्वशत्रूणां रक्तधातुं पिब पिब अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा राकिणी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

२ ल म र यू ला ली लू लैं लौं ल लाकिनी जम्भय जम्भय मम सर्वशत्रूणां मांसधातुं भक्षय भक्षय अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा लाकिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

२ ड म र यू डा डी डू डैं डौं ड डाकिनी जम्भय जम्भय मम सर्वशत्रूणां मेदोधातुं ग्रस ग्रस अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा डाकिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

२ क म र यू का की कू कैं कौं क काकिनी जम्भय जम्भय मम सर्वशत्रूणां अस्थिधातुं भञ्जय भञ्जय अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा काकिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

२ स म र यू सा सी सू सैं सौं स साकिनी जम्भय जम्भय मम सर्वशत्रूणां मज्जाधातुं गृह्ण गृह्ण अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा साकिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः ।

२ ह म र यू हा हीं हु हैं हौं ह हाकिनी जम्भय जम्भय मम सर्वशत्रूणां शुक्रधातुं पिब पिब अणिमादि वशं कुरु कुरु स्वाहा हाकिनी श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति धातुनाथानिष्ट्वा,

पिण्ट चषकं च 'ऐं ग्लौं श्रौं क्रौं चण्डोच्चण्डाय नमः' इति मन्त्रेण तस्मै दद्यात्।

फलत्रयम्—त्रिफला। मुद्गत्रय—हरितं कृष्णं पीतम्।

अथ पाणि प्रक्षाल्य, देव्यै पुष्पाञ्जलित्रयं दत्वा प्रदक्षिणनमस्कारोत्तरं जपेत्।

वाराहीमन्त्रजप

अस्य श्रीवाराहीमहामन्त्रस्य ब्रह्मण ऋषये नमः, इति शिरसि, गायत्र्यै छन्दसे नमः इति मुखे, वाराह्यै देवतायै नमः इति हृदये, ऐं ग्लौं बीजाय नमः इति गुह्ये, फट् शक्तये नमः इति पादयोः, ठ ठ ठ ठ कीलकाय नमः इति नाभौ, मम सर्वाभीष्टसिद्धयर्थे विनियोगाय नमः इति करसम्पुटे च विन्यस्य मूलेन त्रिव्यापकं कृत्वा, अन्धे अन्धिनि नमः इत्यादिभिः पञ्चभिः मन्त्रैः पूर्वोक्तैः अङ्गुष्ठादिकनिष्ठान्तम्, २ ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि हृदयाय नमः इत्यादिभिश्च हृदयादिषु न्यासं विधाय, उक्तप्रकारेण ध्यात्वा, मनसा २ श्रीवाराह्यै लं पृथिव्यात्मकं गन्धं कल्पयामि नमः, २ श्रीवाराह्यै हं आकाशात्मकं पुष्पं कल्पयामि नमः, २ श्रीवाराह्यै यं वाय्वात्मकं धूपं कल्पयामि नमः, २ श्रीवाराह्यै रं अग्न्यात्मकं दीपं कल्पयामि नमः, २ श्रीवाराह्यै वं अमृतात्मकं नैवेद्यं कल्पयामि नमः, नैवेद्याङ्गत्वेन च २ श्रीवाराह्यै सं सर्वात्मकं ताम्बूलं कल्पयामि नमः इति पञ्चोपचारानाचर्य, विघ्नदेव्यङ्गोपाङ्गप्रत्यङ्गसहितं मूलमन्त्रमष्टोत्तरशतवारान् यथाशक्ति वा, श्रीक्रमोक्तेन विधिना जपेत्।

स्तं स्तम्भिन्यै नमः इति वाराह्या विघ्नदेवीमन्त्रः। एतं जपारम्भे त्रिवारं जपेत्। मूलमन्त्रश्च न्यासोक्ताष्टखण्डमष्टित्रूपः। ह्रं वाराही ह्रं उन्मत्तभैरवीपादुकाभ्यां नमः, इति वाराह्यङ्गं लघुवाराही। ॐ ह्रीं नमो वाराहि घोरे स्वप्नं ठः ठः स्वाहा इति तदुपाङ्गं स्वप्नवाराही। ऐं नमो भगवति महामाये पशुजनमनश्चक्षुस्तिरस्करणं कुरु कुरु हुँ फट् स्वाहा, इति तत्प्रत्यङ्गं तिरस्करिणी। एतान् त्रीन् मन्त्रान् मूलजपान्ते तद्दशांशं जपेत्। पुनः न्यासध्यानादि कृत्वा जपं निवेद्य स्तुवीत।

वाराहीस्तोत्रम्

कुवलयनिभा कौशेयार्धोरुका मुकुटोज्ज्वला
हलमुसलिनी सद्भक्तेभ्यो वराभयदायिनी ।
कपिलनयना मध्ये क्षामा कठोरघनस्तनी
जयति जगतां मातः सा ते वराहमुखी तनुः ॥१॥

तरति विपदो घोरा दूरात्परिह्रियते भय-
स्खलितमतिभिर्भूतप्रेतैः स्वयं म्रियते श्रिया ।
क्षपयति रिपूनीष्टे वाचां रणे लभते जयं
वशयति जगत्सर्वं वाराहि यस्त्वयि भक्तिमान् ॥२॥

स्तिमितगतयस्सीदद्वाचः परिच्युतहेतयः
क्षुभितहृदयास्सद्यो नश्यद्दृशो गलितौजसः ।
भयपरवशा भग्नोत्साहाः पराहतपौरुषाः
भगवति पुरस्त्वद्भक्तानां भवन्ति विरोधिनः ॥३॥

किसलयमृदुहस्तः क्लिश्येत कन्दुकलीलया
भगवति महाभारः क्रीडासरोरुहमेव ते ।
तदपि मुसलं धत्से हस्ते हलं समयद्रुहां
हरसि च तदाघातैः प्राणानहो तव साहसम् ॥४॥

जननि नियतस्थाने त्वद्वामदक्षिणपार्श्वयोः
मृदुभुजलतामन्दाक्षेपप्रणर्तितचामरे ।
सततमुदिते गुह्याचारद्रुहां रुधिरासवे
कवलनपरौ ... शत्रून् सर्वानुभे मम देवते ॥५॥

हरतु दुरितं क्षेत्राधीशः स्वशासनविद्विषां
रुधिरमविरामत्तः प्राणोहपारबलिप्रियः ।
अयिरतचटत्कुर्वद्दंष्ट्रास्थिकोटिरटन्मुखो
भगवति स ते चण्डोच्चण्डः सदा पुरतः स्थितः ॥६॥

षडरस्य दक्षवामपार्श्वयोः क्रमेण—

ऐं ग्लौं क्रोधिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

२ स्तम्भिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः। तत्रैव—

२ स्तम्भनमुसलायुधाय नमः। २ आकर्षणहलायुधाय नमः।

षडराद् बहिः देव्याः पुरतः—

ऐं ग्लौं क्षौं क्रौं चण्डोच्चण्डाय नमः, इति तृतीयावरणम्।

अष्टदले—

ऐं ग्लौं वार्तालीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, वाराही, वराहमुखी, अन्धिनी, रुन्धिनी, जम्भिनी, मोहिनी, स्तम्भिनीश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः।

तद्बहिः पुरतो देव्याः—

ऐं ग्लौं महामहिषाय देवीवाहनाय नमः। इति चतुर्थावरणम्।

शतपत्रे देवीपुरतोऽष्टत्रिंशद्दलसन्धिषु—

ऐं ग्लौं जम्भिन्यै नमः, इन्द्राय, अप्सरोभ्यः, सिद्धेभ्यः, द्वादशादित्येभ्यः, अग्नये, साध्येभ्यः, विश्वेभ्यो देवेभ्यः, विश्वकर्मणे, यमाय, मातृभ्यः, रुद्रपरिचारकेभ्यः, रुद्रेभ्यः, मोहिन्यै, निर्ऋतये, राक्षसेभ्यः, मित्रेभ्यः, गन्धर्वेभ्यः, भूतगणेभ्यः, वरुणाय, वसुभ्यः, विद्याधरेभ्यः, किन्नरेभ्यः, वायवे, स्तम्भिन्यै, चित्ररथाय, तुम्बुरवे, नारदाय, यक्षेभ्यः, सोमाय, कुबेराय, देवेभ्यः, विष्णवे, ईशानाय, ब्रह्मणे, अश्विभ्यां, धन्वन्तरये, विनायकेभ्यो नमः। तद्बहिः—

ऐं ग्लौं रौं क्षौं क्षेत्रपाल्य नमः। सिंहवराय देवीवाहनाय नमः।

तद्बहिः—

ऐं ग्लौं महाकृष्णाय मृगराजाय देवीवाहनाय नमः। इति पञ्चमावरणम्।

सहस्रारे अष्टधा विभक्ते प्रतिपञ्चविंशत्युत्तरशतदलं प्राग्वत् क्रमेण—

ऐं ग्लौं ऐरावताय नमः, पुण्डरीकाय, वामनाय, कुमुदाय, अञ्जनाय, पुष्पदन्ताय, सार्वभौमाय, सुप्रतीकाय नमः।

एते दिग्गजा सुराम्भोवंहिर्वा प्रागाद्यासु यष्टव्या । बाह्यप्राकारस्याष्टासु प्रागाद्यासु दिक्षु अध ऊर्ध्वं च क्रमेण प्राग्वत्—

ऐं ग्लौं क्षौं हेतुकभैरवक्षेत्रपालाय नम । हेतुकभैरवश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नम ।

ए ग्लौं त्रिपुरान्तकभैरवक्षेत्रपालाय नम । त्रिपुरान्तकभैरवश्री०

३ अग्निभैरवक्षेत्रपालाय नम । अग्निभैरवश्री०

३ यमजिह्वभैरवक्षेत्रपालाय नम । यमजिह्वभैरवश्री०

३ एकपादभैरवक्षेत्रपालाय नम । एकपादभैरवश्री०

३ कालभैरवक्षेत्रपालाय नम । कालभैरवश्री०

३ करालभैरवक्षेत्रपालाय नम । करालभैरवश्री०

३ भीमरूपभैरवक्षेत्रपालाय नम । भीमरूपभैरवश्री०

३ हाटकेशभैरवक्षेत्रपालाय नम । हाटकेशभैरवश्री०

३ अचलभैरवक्षेत्रपालाय नम । अचलभैरवश्रीपादुका पू० तर्पयामि नम इति षष्ठावरणम् ।

(सर्वा अप्यावरणदेवता देव्यभिमुखासीना, स्वयं च तत्तदभिमुख पूजयामीति भावयेत् ।)

देव्या पुन पूजाबलिदानान्त

इत्थ षडावरणीमभ्यर्च्य पुनर्देवी त्रिवार सन्तर्प्य पुन षोडशभिरु-पचारैरुपचर्य श्रीक्रमोक्तेन विधिना होम तदन्ते बलिदानञ्च कुर्यात् ।

होमाकरणपक्ष—देव्या पुरतो वामभागे हस्तमात्र सामान्योदकेनो पलिप्य त्रिकोणवृत्तचतुरस्रात्मक मण्डल परिकल्प्य रक्तान्नहरिद्रान्नसक्तु शर्कराहेतुफलत्रयमाक्षिकमुद्गत्रयमाषचूर्णदधिक्षीरघृतं शुद्धोदन सम्मर्द्य, कुक्कुटाण्डप्रमाणान् दशपिण्डान् कपित्थफलमानञ्च एक पिण्ड विधाय तत्र निधाय तत्समीप सादिमद्वितीयतृतीय चषकं च निधाय, ऐं ग्लौं क्षौं हेतुक भैरव क्षेत्रपालाय नम इत्यादिभि पूर्वोक्तै दशभि मन्त्रै हेतुकादिभ्यो- चलान्तेभ्यो दशभ्य क्रमेण दश पिण्डान् दश दिक्षु दत्वा मध्ये स्थूलमेकं

पिण्डं चषकं च 'ऐं ग्लौं क्षौं क्रौं चण्डोच्चण्डाय नमः' इति मन्त्रेण तस्मै दद्यात् ।

फलत्रयम्—त्रिफला । मुद्गत्रयं—हरितं कृष्णं पीतम् ।

अथ पाणि प्रक्षाल्य, देव्यै पुष्पाञ्जलित्रयं दत्वा प्रदक्षिणनमस्कारोत्तरं जपेत् ।

वाराहीमन्त्रजपः

अस्य श्रीवाराहीमहामन्त्रस्य ब्रह्मण ऋषये नमः, इति शिरसि, गायत्र्यै छन्दसे नमः इति मुखे, वाराह्यै देवतायै नमः इति हृदये, ऐं ग्लौं बीजाय नमः इति गुह्ये, फट् शक्त्यै नमः इति पादयोः, ठः ठः ठः ठः कीलकाय नमः इति नाभौ, मम सर्वाभीष्टसिद्ध्यर्थे विनियोगाय नमः इति करसम्पुटे च विन्यस्य, मूलेन त्रिव्यापकं कृत्वा, अन्धे अन्धिनि नमः इत्यादिभिः पञ्चभिः मन्त्रैः पूर्वोक्तैः अङ्गुष्ठादिकनिष्ठान्तम्, २ ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि हृदयाय नमः इत्यादिभिश्च हृदयादिषु न्यासं विधाय, उक्तप्रकारेण ध्यात्वा, मनसा २ श्रीवाराह्यै लं पृथिव्यात्मकं गन्धं कल्पयामि नमः, २ श्रीवाराह्यै हं आकाशात्मकं पुष्पं कल्पयामि नमः, २ श्रीवाराह्यै यं वाय्वात्मकं धूपं कल्पयामि नमः, २ श्रीवाराह्यै रं अग्न्यात्मकं दीपं कल्पयामि नमः, २ श्रीवाराह्यै वं अमृतात्मकं नैवेद्यं कल्पयामि नमः, नैवेद्याङ्गत्वेन च २ श्रीवाराह्यै सं सर्वात्मकं ताम्बूलं कल्पयामि नमः इति पञ्चोपचारानाचर्य, विघ्नदेव्यङ्गोपाङ्गप्रत्यङ्गसहितं मूलमन्त्रमष्टोत्तरशतवारान् यथाशक्ति वा, श्रीक्रमोक्तेन विधिना जपेत् ।

स्तं स्तम्भिन्यै नमः इति वाराह्या विघ्नदेवीमन्त्रः । एतं जपारम्भे त्रिवारं जपेत् । मूलमन्त्रश्च न्यासोक्ताष्टखण्डमष्टिरूपः । लं वाराही लं उन्मत्तभैरवीपादुकाभ्यां नमः, इति वाराह्यङ्गं लघुवाराही । ॐ ह्रीं नमो वाराहि घोरे स्वप्नं ठः ठः स्वाहा इति तदुपाङ्गं स्वप्नवाराही । ऐं नमो भगवति महामाये पशुजनमनश्चक्षुस्तिरस्करणं कुरु कुरु हुँ फट् स्वाहा, इति तत्प्रत्यङ्गं तिरस्करिणी । एतान् त्रीन् मन्त्रान् मूलजपान्ते तद्दशांशं जपेत् । पुनः न्यासध्यानादि कृत्वा जपं निवेद्य स्तुवीत ।

वाराहीस्तोत्रम्

कुवलयनिभा कौशेयार्धोरुका मुकुटोज्ज्वला
हलमुसलिनी सद्भक्तेभ्यो वराभयदायिनी ।
कपिलनयना मध्ये क्षामा कठोरघनस्तनी
जयति जगतां मातः सा ते वराहमुखी तनुः ॥१॥

तरति विपदो घोरा दूरात्परिह्रियते भय-
स्खलितमतिभिर्भूतप्रेतैः स्वयं म्रियते श्रिया ।
क्षपयति रिपूनीष्टे वाचां रणे लभते जयं
वशयति जगत्सर्वं वाराहि यस्त्वयि भक्तिमान् ॥२॥

स्तिमितगतयस्सीदद्वाचः परिच्युतहेतयः
क्षुभितहृदयास्सद्यो नश्यद्दृशो गलितौजसः ।
भयपरवशा भग्नोत्साहाः पराहतपौरुषाः
भगवति पुरस्त्वद्भक्तानां भवन्ति विरोधिनः ॥३॥

किसलयमृदुर्हस्तः क्लिश्येत कन्दुकलीलया
भगवति महाभारः क्रीडासरोरुहमेव ते ।
तदपि मुसलं धत्से हस्ते हलं समयद्रुहां
हरसि च तदाघातैः प्राणानहो तव साहसम् ॥४॥

जननि नियतस्थाने त्वद्वामदक्षिणपार्श्वयोः
मृदुभुजलतामन्दाक्षेपप्रणर्तितचामरे ।
सततमुदिते गुह्याचारद्रुहां रुधिरासवे
उपशमयतां शत्रून् सर्वानुभे मम दैवते ॥५॥

हरतु दुरितं क्षेत्राधीशः स्वशासनविद्विषां
रुधिरमदिरामत्तः प्राणोपहारबलिप्रियः ।
अविरतचटत्कुर्वद्दंष्ट्रास्थिकोटिरटन्मुखो
भगवति स ते चण्डोच्चण्डः सदा पुरतः स्थितः ॥६॥

क्षुभितमकरैर्वीचीहस्तोपरुद्धपरस्परै
श्चतुरुदधिभिः क्रान्ता कल्पान्तदुर्ललितोदकैः।
जननि कथमुत्तिष्ठेत् पातालसर्पबिलादिला
तव तु कुटिले दंष्ट्राकोटी न चेदवलम्बनम् ॥७॥

तमसि बहुले शून्याटव्यां पिशाचनिशाचार-
प्रथमकलहे चोरव्याघ्रोरगद्विपसङ्कटे।
क्षुभितमनसः क्षुद्रस्यैकाकिनोऽपि कुतोभय
सकृदपि मुखे मातस्त्वन्नाम सन्निहितं यदि ॥८॥

विदितविभवं हृद्यैः पद्यैर्वराहमुखीस्तवं
सकलफलदं पूर्णं मन्त्राक्षरैरिममेव यः।
पठति स पटुः प्राप्नोत्यायुश्चिरं कवितां प्रियां
सुतसुखधनारोग्यं कीर्ति श्रियं जयमुर्वराम् ॥९॥

इत्यनुग्रहाष्टकम्

देवि क्रोडमुखि त्वदङ्घ्रिकमलद्वन्द्वानुरक्तात्मने
मह्यं द्रुह्यति यो महेशि मनसा कायेन वाचा नरः।
तस्याशु त्वदयोग्रनिष्ठुरहलाघातप्रभूतव्यथा
पर्यस्यन्मनसो भवन्तु वपुषः प्राणाः प्रयाणोन्मुखाः ॥१॥

देवि त्वत्पदपद्मभक्तिविभवप्रक्षीणदुष्कर्मणि
प्रादुर्भूतनृशंसभावमलिनां वृत्तिं विधत्ते मयि।
यो देही भुवने तदीयहृदयान्निर्गतैर्लोहितैः
सद्यः पूरयसे कराब्जचषकं वाञ्छाफलैर्मामपि ॥२॥

चण्डोत्चण्डमखण्डदुष्टहृदयप्रोक्षिप्तरक्तच्छटा—
हालापानमदाट्टहासजनिताटोपप्रतापोत्कटम्।
मातर्मत्परिपन्थिनामपहृतैः प्राणैस्त्वदङ्घ्रिद्वय
ध्यानोद्दामरवैर्भवोदयवशात् सन्तर्पयामि क्षणात् ॥३॥

वाराहि व्यथमानमानसगलत्सत्त्वं त्वदाज्ञाबलात्
सीदद्धैर्यमपाकृताद्यवसितं प्राप्ताखिलार्थाहृतिम् ।
क्रन्दद्बन्धुजनं कलङ्कितकुलं कण्ठे व्रणोद्यत्कृमिं
पश्यामि प्रतिपक्षमाशु सततं श्रान्तं लुठन्तं पुनः ॥४॥

वाराहि त्वमशेषजन्तुषु पुनः प्राणात्मिका स्पन्दसे
शक्तिव्याप्तचराचरामिह खलु त्वामेतदभ्यर्थये ।
त्वत्पादाम्बुजसङ्गिनो मम सकृत् पापं चिकीर्षन्ति ये
तेषां मा कुरु शङ्करप्रियतमे देहान्तरावस्थितिम् ॥५॥

विश्वाधीश्वरवल्लभे विजयसे या त्वं नियत्यात्मिके
भूतानां पुरुषायुषावधिकरी पाकप्रदा कर्मणाम् ।
तां याचे भवतीं किमप्यवितथं योऽस्मद्विरोधी जन-
स्तस्यायुर्मम वाञ्छितावधि भवेन्मातस्तवैवाज्ञया ॥६॥

मातस्सम्यगुपासितुं जडमतिस्त्वां नाद्य शक्नोम्यहं
यद्यप्यर्चितदेशिकाङ्घ्रिकमलानुक्रोशपात्रस्य मे ।
जन्तुः कश्चन चिन्तयत्यकुशलं यस्तस्य तद्वैशसं
भूयाद्देवि विरोधिनो मम च ते श्रेयः पदासङ्गिनः ॥७॥

श्यामां तामरसाननाङ्घ्रिनयनां सोमार्धचूडां जग-
त्त्राणव्यग्रहलामुदग्रमुसलामत्रस्तमुद्रावतीम् ।
ये त्वां रक्तकपालिनीं शिववरारोहे वराहाननां
भावे सन्दधते कथं क्षणमपि प्राणन्ति तेषां द्विषः ॥८॥

इति निग्रहाष्टकम्

वृन्दाराधनं, गुरुसन्तोषणं, शक्तिवटुकपूजा च

अथ योगिनीवीरयुग्मसमुदायात्मकं वृन्दं गन्धादिभिराराध्य, यथाविभवं श्रीगुरुं सन्तोष्य, सर्वलक्षणसम्पन्ना: तिस्रः शक्तीर्वटुकं चाहूयाभ्यज्य, स्नपयित्वा, मध्ये वार्तालीबुद्ध्यैका क्रोधिनीस्तम्भिनीबुद्ध्या च द्वे पार्श्वयोरुपवेश्य, चण्डोच्चण्डधिया वटुकं चाग्रे समुपवेश्य, ह्वितारी नम. सम्पुटितैः

तत्तन्नाममन्त्रैः गन्धादिभिः क्षीरादिभिश्च सर्वैः द्रव्यैः सन्तोष्य, मम श्रीवार्तालीमन्त्रसिद्धिः भूयादिति शक्तीः प्रार्थयेत्। ताश्च प्रसीदन्त्वधिदेवता इति प्रतिब्रूयुः।

हविःप्रतिपत्तिः

अथ श्रीक्रमोक्तक्रमेण हविः प्रतिपत्तिकर्मादिविशेषार्घ्यविसर्जनान्तं शेषं निर्वर्तयेत्। हविः प्रतिपत्तौ मूलेन तत्त्वत्रयशोधनमेवेति विशेषः।

मन्त्रसाधनम्

एवं नित्यक्रममाचरन् श्यामाक्रमोक्तेन पुरश्चरणप्रकारेण प्रत्यहं सहस्रसंख्यया, लक्षसंख्याकं प्रकृते कलियुगत्वाच्चतुर्गुणितं जपं पुरश्चरणम् कृत्वा तद्दशांशं नारिकेलोदकैः सन्तर्प्य, तद्दशांशं तापिच्छकुसुमैः तिलैः चुलुकमितैः शतसंख्याकैर्वा हरिद्राखण्डैर्वा तन्त्रान्तरोक्तैः त्रिमधुरक्तैः हेतुमिश्रैश्च जुहुयात्। इह पञ्चधोपचारात् प्राक् महाव्याहृत्यादिषु च आज्येनैव होमः। इतरेषु तापिच्छादिना। एवं सिद्धमन्त्रः स्वतन्त्रोपास्तौ श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण नैमित्तिकार्चनरतः सत्यां कामनायां पूर्वोक्तेनैव क्रमेण तत्तत्काम्यानुगुण होमं कृत्वा सफलमनोरथ आज्ञासिद्धः सुखी विहरेत्। इति शिवम्॥

श्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे वाराहीक्रमः समाप्तः।

मातर्वाराहि जाते तवचरणसरोजार्चनं वा जपं वा
कर्तुं शक्तो न चाहं तदपि च सदये मय्यतस्त्वां हि याचे।
यस्त्वां दंष्ट्राशिताग्रा त्रिनयनलसितां चारुभूदारवक्त्रां
भूतिं चित्ते विधत्ते तदरिगणविनाशोऽस्तु तस्मिन् क्षणे वै।

परा-क्रमः

कल्यकृत्यमाह्निकञ्च

श्रीमान् साधकः कल्ये प्रवुद्धः शयन एव स्थितः श्रोत्राचमनभस्मधारणे विधाय, श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण श्रीगुरोर्ध्यानं वक्ष्यमाणया मूलपूर्विकया सामान्यपादुकया सुमुखादिमुद्राप्रदर्शनपूर्वकं वन्दनञ्च विधाय, वक्षमाणया रीत्या प्राणानायम्य ब्रह्मरन्ध्रसम्बन्धिनि सहस्रदलकमले सुखासीनायाः वक्ष्यमाणध्यानोक्तमूर्त्याः शक्तिबीजाभिन्नायाः यशोऽम्बायाः चरणयुगलविगलदमृतरसविसरपरिप्लुतमात्मानं ध्यात्वा मूलं मनसा दशवारमावर्त्य, वहन्नाडीपार्श्वपादमुत्थाय, निर्वर्तितावश्यकः उक्तया भङ्ग्या विहितदन्तधावनादिस्नानश्च शुचिवासो वसानः विधृतपुण्ड्रः सर्वेण मूलेन त्रिराचम्य द्विः परिमृज्य सकृदुपस्पृश्य चक्षुषी नासिके श्रोत्रे अंसे नाभिं हृदयं शिरश्चावमृशेत् ।

यागमन्दिरप्रवेशः

एवं त्रिराचम्य, यागमन्दिरमासाद्य, द्वारस्थण्डिलं गोमयेनोपलिप्य, यागगृहञ्च रङ्गवल्लीपुष्पमालिकावितानादिभिश्चालङ्कृत्य द्वारस्य दक्षवामशाखयोः उर्ध्वभागे च क्रमेण—

सौः भद्रकाल्यै नमः, भैरवाय, लम्बोदराय नमः, इति तिस्रो द्वारदेवताः सम्पूज्य, अन्तः प्रविष्टः सौः रक्तद्वादशशक्तियुक्ताय दीपनाथाय नमः, इति पुष्पाञ्जलिना भूमौ दीपनाथमिष्ट्वा, सपर्यासामग्रीं स्वदक्षिणभागे निधाय, प्रज्ज्वालितदीपो गन्धमाल्यादिभिरलङ्कृतात्मा जातपत्रफलैलालवङ्गकर्पूरादिसम्पन्नताम्बूलचर्वणामोदितवदनः प्रसन्नमनाः स्वास्तीर्णे ऊर्णामृदुनि शुचिनि मूलेन द्वादशवारमभिमन्त्रिते सकृत्प्रोक्षिते चासने सौः आधारशक्तिकमलासनाय नमः, इतिप्राङ्मुख उदङ्मुखो वा पद्मस्वस्तिकाद्यन्यतमेनासनेनोपविश्य सौः समस्तगुप्तप्रकटसिद्धयोगिनीचक्रदेवताश्रीपादुकाभ्यो नमः, इति मूर्धनि बद्धाञ्जलिः सौः ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं हस्ख्फ्रें हृ स क्ष म ल व र यू सहृ क्ष म ल व र यीं हृगौः स्हौः अमुकाम्बासहितामुकानन्दनाथश्रीगुरुपादुका

पूजयामीति मन्त्रेण मस्तके निजदेशिकमभिवन्द्य ग गणपतये, नमः इति बद्धाञ्जलिः ।

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भुवि संस्थिताः ।
ये भूता विघ्नकर्तारस्ते गच्छन्तु शिवाज्ञया ॥

इति मन्त्र सकृदुच्चार्य युगपद्वामपार्ष्णिभूतलत्रिराघातकरास्फोटत्रितय-क्रूरदृष्ट्यवलोनपूर्वक तालत्रयेण भौमन्तरिक्षदिव्यान् भेदावभासयान् विघ्नानुत्सारयेत् ।

प्राणायामः

अथ श्रीक्रमोक्तेन विधिना भूतशुद्धिमात्मप्राणप्रतिष्ठाञ्च विधाय सौः वर्णपूर्वकं मातृकावर्णैः श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण बहिर्मातृकान्यासं कृत्वा षोडशवारमावृत्तेन मूलेन पूरकं, चतु षष्टिवारमावृत्तेन कुम्भकं द्वात्रिंशद्वारमावृत्तेन रेचकम्, इति विंशतिधा षोडशधा दशधा सप्तधा त्रिधा वा प्राणानायम्य ।

अङ्गन्यासः

तेजोरूपदेवीमयं भावयन्नात्मन मुहुरावृत्तेन सौ. नम इति नमोऽन्तेन मूलेन शिरोमुखहृन्मूलाधारेषु न्यास विधाय सर्वाङ्गे च व्यापकं कृत्वा, सौ स् हृदयाय नम सौ. औ शिरसे स्वाहा सौ औ शिखायै वषट् सौः स् कवचाय हुम् सौः औ नेत्रत्रयाय वौषट् सौ औ. अस्त्राय फट् इति मूलमन्त्रावयवैर्द्विरावृत्तै. वर्णषडङ्ग सर्वेण मूलेन षड्वारमावृत्तेन मन्त्रषडङ्गञ्च कुर्यात्। इह मूलमन्त्रस्य तृतीयोऽवयव केवलो विसर्गो न त्वकारविशिष्ट च ज्ञेयम् ।

चिदग्नौ सर्वतत्त्वविलापनम्

अथ काकचञ्चूपुटाकृतिना मुखेन बाह्यमनिलमन्तराकृष्य संस्तभ्य मूल सप्तविंशतिवारमावर्त्यं वक्ष्यमाणक्षित्यादिशिवान्तषट्त्रिंशतत्त्वात्कं वेद्य नाभौ मुद्रित विभाव्य पुन प्रोक्तवार मूलं जपित्वा 'नम.' इति शिखाबन्धोत्तर पूर्ववद् अनिलमापूर्य तेन सर्वकारणचिद्रूपमग्निमुद्दीप्य तत्र प्राङ्मुद्रितस्य वेद्यस्य विलयन भावयित्वा ।

अर्घ्यशोधनम्

श्रीक्रमोक्तेन क्रमेण सामान्यविशेषार्घ्ये आसादयेत् । अत्र चोभयोरप्यर्घ्योः प्रवेशरीत्या अन्तरन्तश्चतुरस्रादिबिन्द्वन्तमण्डलकरणम् अं आत्म-

तत्त्वाय आधारशक्त्यै वौषडित्याधारस्थापनम्, उं विद्यातत्त्वाय पद्मासनाय वौषडिति पात्रनिधानम्, म शिवतत्त्वाय सोममण्डलाय नमः इति शुद्धसलिलापूरणम् ।

ब्रह्माण्डखण्डसम्भूतमशेषरससम्भृतम् ।
आपूरितमहापात्र पीयूषरसमावह ॥

इति क्षीरपूरणम् हृदयशक्तिश्रीपादुकां पूजयामीत्याद्यस्त्रान्तं प्रागुक्तषडङ्गन्यासम् मूलेन दशधा अभिमन्त्रणम् चतुर्नवतिमन्त्राभिमन्त्रणाभावश्च विशेषः । ततो विशेषार्घ्यबिन्दुभिः वरिवस्या वस्तूनि सम्प्रोक्ष्य ।

तत्त्वकदम्बस्य हृत्पद्मस्थापनम्

पूर्वं नाभौ मुद्रयित्वा तत्रायोद्रवमिव चिदग्नौ विलापितं षट्त्रिंशत्तत्त्वकदम्बरूपं वेद्यं हृत्सरोजमानीय स्थापयेत् ।

पराचक्रनिर्माणम्

अथ कुसुमक्षेपैः मूलपूर्वैः वक्ष्यमाणैः मन्त्रैः पराम्नायात्मकरूपमासनं निर्मिमीत । यथा—

सौः पृथ्वीयोगपीठाय नमः अप् तेज वायु आकाश गन्ध रस रूप स्पर्श शब्द उपस्थ पायु पाद पाणि वाक् घ्राण जिह्वा चक्षुः त्वक् श्रोत्र अहङ्कार बुद्धि मनः प्रकृति पुरुष नियति काल अविद्या कला राग माया शुद्धविद्या ईश्वर सदाशिव शक्ति शिवयोगपीठाय नमः इत्येवं पराचक्रं निर्माय ।

चक्रे देव्याः पूजा

ब्रह्मरन्ध्रे— अकलङ्कशशाङ्काभा त्र्यक्षा चन्द्रकलावती ।
मुद्रापुस्तलसद्बाहुः पातु मां परमा कला ॥

इति ध्यात्वा शारदचन्द्रसदृशीं श्रीपराम्बां मूलेन हृदयगतं पराचक्रे आवाह्य मूलान्ते श्रीपराम्बा आवाहिता भव इत्यादिरीत्या तत्तन्मुद्राविधानपूर्वकं आवाहनाद्यवगुण्ठनान्तं कृत्वा धेनुयोनिमुद्रां प्रदर्श्य मूलेन पुनः पुनरामृश्य श्रीपरादेव्यै पाद्यं कल्पयामि नमः इत्यादिरीत्या पाद्यार्घ्याचमनीयस्नानवासोऽलङ्कारगन्धपुष्पधूपदीपनैवेद्यनामस्तुतिपूजनैर-

द्यपानीयताम्बूलास्यान् षोडशोपचारान् विधाय नैवद्याङ्गत्वेन पूर्वोत्तरापोशने हस्तप्रक्षालनगण्डूषाचमनीयानि च दद्यात्। नैवेद्याय त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डलकरणम् मूलेन प्रोक्षणम् वं इति धेनुमुद्रया अमृतीकरणम् मूलेन सप्तवाराभिमन्त्रणम् प्राणादिमुद्राप्रदर्शनञ्चानुष्ठेयम्। ततो वामकरतत्त्वमुद्रा सन्दष्टद्वितयशकलगृहीतक्षीरबिन्दुसहपतितैः दक्षकरोपात्तैः कुसुमैः सौः स् प्रकाशरूपिणी पराभट्टारिका श्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः, सौः औ विमर्शरूपिणी पराभट्टारिका श्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः, सौः औः प्रकाश विमर्शरूपिणी पराभट्टारिका श्रीपादुकां पू० त० नमः, सौः प्रकाशविमर्शरूपिणीपराभट्टारिका श्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, इति त्रिभिः मन्त्रैः क्रमेण देव्या मूलाधारहृन्मुखेष्वभ्यर्च्य सौः महाप्रकाशविमर्शरूपिणीपराभट्टारिका श्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः इति मन्त्रेण देवी दशवार सन्तर्प्य।

देव्याम् अखिलतत्त्वहोमभावनम्

तामेव कालाग्निकोटिदीप्तां ध्यात्वा, तस्या सौः पृथ्वी जुहोमि स्वाहा, सौः आपो जुहोमि स्वाहा इत्यादिरीत्या प्राग्वद्विलाप्य हृदये स्थापितं षट्त्रिंशत्तत्त्वकदम्बक पृथक् पृथक् मनसा जुहुयात्।

गुर्वोघत्रययजनम्

ततो मूलपूर्विकयोक्तया श्रीगुरुपादुकया मस्तकस्थं श्रीगुरुं त्रिः सम्पूज्य पुनस्त्रिदग्निमुद्दीप्त विभाव्य देव्याः पश्चात् प्रागपवर्गे रेखात्रये दक्षिणसंस्थाक्रमेण गुर्वोघत्रय यजेत्। यथा—सौः पराभट्टारिकादेव्यम्बाश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः, अघोरानन्दनाथ श्री०, श्रीकण्ठानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः इति दिव्यौघः।

सौः शक्तिधरानन्दनाथश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः, क्रोधानन्दनाथ श्री०, त्र्यम्बकानन्दनाथश्रीपादुका पू० तर्पयामि नमः इति सिद्धौघः।

सौः आनन्दानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि तर्पयामि नमः, प्रतिभादेव्यम्बानन्द, वीरानन्द, संविदानन्द, मधुरादेव्यम्बानन्द, ज्ञानानन्दः, श्रीरामानन्दः, योगानन्दनाथश्रीपादुका पूजयामि तर्पयामि नमः। इति मानवौघः।

बलिदानम्

ततः त्रिकोणवृत्तचतुरस्रमण्डलं कृत्वा ए व्यापकमण्डलाय नमः इति पुष्पेणाभ्यर्च्य, अर्धात सलिलपूर्णं सक्षीरोपादिमध्यमत्र पात्र निधाय, ॐ ह्रीं सर्वविघ्नकृद्भ्यः सर्वभूतेभ्यो हुं फट् स्वाहेति त्रि पठित्वा बलिं दत्वा, तत्त्वमुद्रास्पृष्ट क्षीरं बल्युपरि निषिच्य, वामपार्ष्णिघातकरास्फोटौ कुर्वाण समुदञ्चितवक्त्रो नाराचमुद्रया बलिं भूते ग्राहयित्वा पाणी प्रक्षाल्य, मानसिकी प्रदक्षिणनती विधाय, देव्यै पुष्पाञ्जलिं दद्यात्।

परान्यास

अस्य श्रीपराभट्टारिकामहामन्त्रस्य भैरवाय ऋषये नम, इति शिरसि, गायत्र्यै छन्दसे नम, इति मुखे, परान्वायै देवतायै नम, इति हृदये, सं बीजाय नम, इति गुह्ये, औं शक्तये नम इति पादयो सौ कीलकाय नम इति नाभौ, मम सर्वाभीष्टसिद्धये विनियोगाय नम इति करसम्पुटे च न्यस्य, मूलेन निर्व्यापक कृत्वा।

सां अङ्गुष्ठाभ्यां (हृदयाय) नम, सीं तर्जनीभ्या (शिरसे स्वाहा), सूं मध्यमाभ्यां नम (शिखायैवषट्) सैं अनामिकाभ्यां नम (कवचाय हुं), सौं कनिष्ठिकाभ्यां नम (नेत्रत्रयाय वौषट्), सः करतलकरपृष्ठाभ्यां नम (अस्त्राय फट्) इति मन्त्रैः कराङ्गन्यासौ कृत्वा। अकलङ्केति ध्यात्वा,

षडुपचारैः मनसा अभ्यर्च्य,

मूलं सहस्रं त्रिशत शत वा श्रीक्रमोक्तेन विधिना जपित्वा स्तुवीत।

परास्तुति

यथा—

याऽघोराद्विभिरेतैः पारम्पर्यक्रमागतैर्नाये।
प्रथते ता विश्वमयीं विश्वातीता स्वसंविदं नौमि ॥१॥

आनन्दचरणकमलामकलङ्कशशाङ्कमण्डलच्छायाम्।
तन्मण्डलाधिरूढा तत्कल्पां कल्पितरलां नौमि ॥२॥

इच्छादिशक्तिशूलाम्बुजमूलां मूलकुण्डलीरूपाम्।
नित्यामप्यणुरूपामणोश्च महतो महीयसीं नौमि ॥३॥

मौक्तिकमणिगणरुचिरां शशाङ्कनिर्मोकनिर्मलं क्षौमम् ।
निवसनां परमेशीं नमामि सौवर्णसम्पुटान्तःस्थाम् ॥४॥
भक्तजनभेदभञ्जनचिन्मुद्राकलितदक्षपाणितलाम् ।
पूर्णाहन्ताकारणपुस्तकवर्येण रुचिरवामकराम् ॥५॥
सृष्टिस्थितिलयकर्तृद्धिनयनाम्भोजैश्शशीनदहनाख्यैः ।
मौक्तिकताटङ्काभ्यां मण्डितमुखमण्डलां परां नौमि ॥६॥
षड्गतिषड्र्मिषडरीन् विधकृत्याशु स्वभक्तवर्गस्य ।
कञ्चुकपञ्चकनोदनसञ्चितसम्वित्प्रकाशिनीं नौमि ॥७॥
अध्वातीतं बुद्ध्वा बुधाः प्रबुद्धाः परं पदं यस्याः ।
कैवल्यं यान्ति हठात् कटाक्षपातेन तां परां नौमि ।
यः पठतीदं स्तोत्रं पात्रं स भवेच्च पञ्चवर्गस्य ॥८॥
गुरुचरणकमलभाजा सहजानन्देन योगिनाऽभिहितम् ॥९॥
॥ इति परास्तुतिः ॥

हविः शेषस्वीकरणम्

अथ—

सौः आत्मतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।
सौः विद्यातत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।
सौः शिवतत्त्वं शोधयामि नमः स्वाहा ।

इति मन्त्रैः तत्त्वत्रयशोधनपूर्वकं हविः शेषं स्वीकृत्य मूलेन देवीं विसृज्य, तेनैव ब्रह्मरन्ध्रं नीत्वा विशेषार्घ्यपात्रमामस्तकमुद्धृत्य "आर्द्रं ज्वलति" इति मन्त्रेण तदर्घ्यमात्मनः कुण्डलिन्यग्नौ हुत्वा कामकलात्मकं देवीरूपं भावयन्नात्मानं कृतकृत्यो भवेत् ।

मन्त्रसाधनम्

एवं नित्यकर्म निर्वर्तयन् श्यामाक्रमोक्तक्रमेण लक्षजपं पुरश्चरणम् कलौ तच्चतुर्गुणित प्रत्यहमयुतसङ्ख्यया, ग्रहणादिजपप्रत्याम्नायान्वा कृत्वा, होमतर्पण-ब्राह्मणभोजनानि क्रमेण दशांशतः कुर्यात् । होमद्रव्यस्य तन्त्रा-

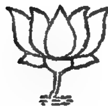
न्तरेष्वदर्शनात्, आज्यमेव। तत्त सिद्धमनु काम्यलिप्सुर्यदि श्यामाकमोक्तै रेव द्रव्यै हुत्वा पूर्णमनोरथ सुखी विहरेत्। एतदेकविश्रान्तिमभिलपतोऽप्ययमेवोपास्तिक्रम इति शिवम् ॥ परापद्धति समाप्ता।

नित्यनैमित्तिककर्मौ शिष्यसुतादिभिरपि कारयितु शक्येते। नित्यकर्मस्य प्रमादादिना अतिक्रमे मूलशतजप प्रायश्चित्तमाम्नातम्।

आपदि तु—अशक्त कारयेत् पूजा दद्याद्वाऽर्चनसाधनम्।
दानाशक्त सपर्यान्त पश्यत्तत्परमानस ॥

श्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे सर्पयापद्धति समाप्ता।

श्रीविद्यारत्नाकरे सपर्याक्रम पूर्णता गतस्तेन श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी-प्रसीदतु।



परिशिष्टम्

श्रीविद्यामन्त्रभाष्यम्

ज्योतिषामपि ज्योतिर्निर्दृश्यदृक्स्वरूपो महान् प्रकाशः शिवः। तद्विज्ञाने जाते सर्वं विज्ञातं भवति। तस्मिन् दृष्टे सर्वं बाधितं भवति। तस्य नैसर्गिकी स्फुरत्ता विमर्शरूपा शक्तिः, तद्योगादेव विश्वोत्पत्तिस्थितिलयलीलत्वं शिवस्य। तदुक्तं वरिवस्यारहस्ये "स जयति महान् प्रकाशो यस्मिन् दृष्टे न दृश्यते किमपि। कथमिव तस्मिन् ज्ञाते सर्वं विज्ञातमुच्यते वेदे। नैसर्गिकी स्फुरत्ता विमर्शरूपाऽस्य वर्तते शक्तिः"। इति। तद्विज्ञानार्थमेव चतुर्दश विद्यास्थानानि। तेष्वपि सारभूता वेदाः। तेष्वपि गायत्री। तस्या रूपद्वितयम्। तत्रैकं स्पष्टम्। द्वितीयं परमगोपनीयं श्रीविद्याख्यम्। तदेव कामो योनिः कमलेत्येवं साङ्केतिकैः शब्दैर्वेदोऽपि व्यवहरति।

तत्र कादिविद्यायाः कादिवर्णास्तु स्पष्टाः। हृल्लेखायान्तु व्योमाग्नि-वामलोचनाबिन्द्वर्धचन्द्ररोधिनीनादनादान्तशक्तिव्यापिकासमनोन्मनीति द्वा-दश संहृतिः। बिन्द्वादिनवाना संहृतिर्नाद उच्यते। तत्र कामकला (ईकारः) त्रिकोणा (एकारः) च मात्राद्वितयोच्चार्या। बिन्दुरहितहृल्लेखा मात्रात्रित-योच्चार्या। अन्ये स्वरा मात्राकालोच्चार्याः। व्यञ्जनानि तु अर्धमात्रो-च्चार्याणि। बिन्दोरपि व्यञ्जनत्वादर्धमात्रैव। "एकमात्रो भवेद्ध्रस्वः द्विमात्रो दीर्घ उच्यते। त्रिमात्रस्तु प्लुतो ज्ञेयो व्यञ्जनन्त्वर्धमात्रकम्"॥ इति वचना-दर्धचन्द्ररोधिन्यादयः पूर्वपूर्वार्धाः। बिन्दोरर्धः कालश्चन्द्ररोधिन्याः तस्यार्धः कालो रोधिन्या इत्येवम्।

कालपरमाणुर्लव उच्यते। तदुक्तम् "नलिनीपत्रसंहत्याः सूक्ष्मसूच्यभि-वेधने। दले दले तु यः कालः स कालो लवसंज्ञितः"॥ इति। तथा षट्-पञ्चाशदुत्तरशतद्वयलवैरेका मात्रा। तथा च बिन्दोरष्टाविंशदुत्तरशतं लवाः।

अर्धचन्द्रस्य चतुःषष्टिः। रोधिन्या द्वात्रिंशत्। नादस्य षोडश। नादान्तस्याष्टौ। शक्तेश्चत्वारः। व्यापिकाया द्वौ। समनाया एको लवः। उन्मनाया नास्त्येव कालः। "अत्र सूक्ष्मतमः कालो नोपलभ्यो भृगूद्वह"।

केषाञ्चिन्मतरीत्या द्वादशोत्तरपञ्चशतलवात्मकत्वमेव मात्राया स्वरूपम्। ततश्च मात्राया द्वादशोत्तरपञ्चशततमो भाग उन्मनाकालः।

प्रथमकूटे अष्टादश वर्णाः, द्वितीये द्वाविंशतिवर्णाः, तृतीयेऽप्यष्टादशैव। तदुक्तं वरिवस्यारहस्ये "प्रथमेऽष्टादश वर्णा द्वाविंशतिरक्षराणि मध्ये स्युः। प्रथमेन तुल्यमन्त्यं सघातेनाप्टपञ्चाशत्"॥ इति। सहस्य लवत्रयन्यूना एकत्रिंशन्मात्रा मन्त्रे सम्पद्यते। तत्र प्रथमकूटं प्रत्याग्निनिभं मूलाधारमारभ्यानाहतं यावत्, द्वितीयं कोटिसूर्याभमनाहतमारभ्याज्ञाचक्रं यावत्, तृतीयं कूटं कोटिचन्द्राभं तदारभ्य ब्रह्मरन्ध्रं यावत्, माला मणिवद्वर्णाः क्रमेणोपर्युपरि भाव्याः आधारोत्थितो नादो गुण इव वर्णमध्ये गतो भाति। इदञ्च स्थानत्रयं बिन्द्वादिरहितकूटत्रयस्यैव। बिन्द्वादिनवकस्य तु स्थितिस्थानरूपाकारानाह वरिवस्यारहस्यकारः "मध्ये फाल बिन्दुर्दीप इवाभाति वर्तुलाकारः"। तदुपरि गतोऽर्धचन्द्रोऽन्वर्थं कान्त्या तथाकृत्या। अथ रोधिनी तदूर्ध्वं त्रिकोणरूपा च चन्द्रिका भाति। नादस्तु पद्मरागवत्, अण्डद्वयवर्तिनीव सिरा॥ नादान्तस्तडिदाभः स व्यवस्थितबिन्दुयुक्तलाङ्गलवत्। तिर्यग्बिन्दुद्वितये वामोद्गच्छत्सिराकृतिः शक्तिः। बिन्दूद्गच्छत् त्र्यस्राकारधरा व्यापिका प्रोक्ता। ऊर्ध्वाधो बिन्दुद्वयमधुतरेखाकृतिः समना। सैवोर्ध्वबिन्दुहीनोन्मना तदूर्ध्वं महाबिन्दुः। शक्त्यादीनान्तु वपुर्द्वादशरविकान्तिपुञ्जाभम्॥" इति।

तथा च—

मूलाधारे क ए, स्वाधिष्ठाने ईल, मणिपूरे ह्र्ई अनाहते हसक, विशुद्धौ हल, आज्ञाया ह्रीं सकल, सहस्रारे ह्रीं, बिन्दुः –ॅ, अर्धचन्द्र ‿, रोधिनी▽ॅ, नाद ०।०, नादान्त ०ᐡॅ, शक्ति ¦ ०, व्यापिका ▽̥ॅ, समना¦̥, उन्मनी ।ॅ, महाबिन्दु ०।

मन्त्रवर्णानां कण्ठताल्वादीन्युत्पत्तिस्थानानि आन्तरान् बाह्यांश्च यत्नान् ज्ञात्वा तेषां स्थितिस्थानानि च ज्ञात्वा वर्णानेवमुच्चारयेद्यथा प्राथमिको नादो द्वितीयकूटेन सार्धमुच्चारितो भवेत् । द्वितीयनादस्तु तृतीयेन कूटेन सार्धमुच्चारितो भवेत् । प्राक्तनयोः बिन्द्वादिनवकयोस्तु सम्मेलनेन तृतीयं यथा तत्संवलितं भवेत्तथोच्चारणीयम् । तृतीयकूटस्थं नादं बिन्द्वादि समनान्तमुच्चारयेत् । एतदुच्चारणमुन्मन्यन्तर्निलीनं विभावयेत् ।

श्रीविद्याया वाग्भवकामराजशक्तिकूटानां व्यष्टिसमष्टिभेदेन चतुर्धा भिन्नानां चत्वारि बीजानि सृष्टिस्थितिसंहारानाख्यारूपाणि भावनीयानि । तान्येव ज्ञातृज्ञानज्ञेयानि तत्सामरस्यञ्च, तान्येवाग्निचक्रसूर्यचक्राणि ब्रह्मचक्रञ्च, मित्रीशनाथषष्ठीशनाथोड्डीशनाथचर्यानन्दनाथश्च, जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तयस्तुरीया च वामाज्येष्ठारौद्र्यः शान्ता च, इच्छाज्ञानक्रिया अम्बिका च कामेश्वरीवज्रेश्वरीभगमालिन्यो महात्रिपुरसुन्दरी च, आत्मान्तरात्मपरमात्मानो ज्ञानात्मा च, आत्मतत्त्वविद्यातत्त्वशिवतत्त्वानि सर्वतत्त्वञ्च, कामरूपपूर्णगिरिजालन्धराण्योड्याणपीठञ्च, प्राग्दक्षिणपश्चिमान्वया उत्तरान्वयश्च, एत एव समयाम्नायपदाभ्याञ्च कथ्यन्ते । स्वयम्भूबाणेतराणि परश्च, पश्यन्तीमध्यमावैखर्यः परा च, एतान्येव पुटधामतत्त्वपीठान्वयलिङ्गमातृकारूपेण चिन्तनीयानीत्यर्थः । तदुक्तंवरिवस्यारहस्ये 'पुटधामतत्त्व-पीठान्वय-लिङ्गक-मातृतत्समीष्टीना रूपान्तराणि बीजान्यमूनि चत्वारि चिन्तनीयानि' इति ।

सृष्टिस्थितिसंहाराख्यानि त्रिविधान्यपि कर्माणि प्रत्येकमपि त्रिविधानि। तद्यथा—सृष्टिसृष्टिः, सृष्टिस्थितिः, सृष्टिसंहृतिः, एवं स्थितिसृष्टिः, स्थितिस्थितिः, स्थितिसंहृतिश्च, संहृतिसृष्टिः, संहृतिस्थितिः, संहृतिसंहृतिः । स्वशक्तिभिः सहिता ब्रह्माद्या एतत्कर्मणामधिपतयः । तत्र प्रथमकूटे ककारो ब्रह्मणो रूपम्, त्रिकोणा भारतीस्वरूपा, तुर्यः स्वरः विष्णुस्वरूपः, लकारः पृथ्वीस्वरूपः, हकारो रुद्ररूपः, रेफो रुद्राणीस्वरूपः, तुर्यस्वरस्तु शान्ताम्बिकात्मकमिथुनस्वरूपः । द्वितीयकूटे मध्यमहकारं परित्यज्यावशिष्टाक्षरे-

ष्वपि पूर्वोक्तैव रीतिः। तृतीयकूटे तु द्वितीयकूटस्थत्यक्तहकारस्य ब्रह्मरूपत्वं, सकारो भारतीरूपः, शेषाः पूर्ववत्। प्रथमकूटे हृल्लेखान्तर्गतकामकलाया। या सपरार्धकला तुरीयबिन्दुरूपा, बिन्दुना मुखं, बिन्दुद्वयेन कुचौ, सपरार्द्धेन योनिः, सैव वन्हिकुण्डलिनी, द्वितीयकूटे सैव सूर्यकुण्डलिनी, सैव तृतीयकूटे सोमकुण्डलिनी। बिन्द्वादि नवकसमष्टिरूपो नादो दीपशिखाप्रवर्त्तिकज्जललेखावत्तत एवोत्पद्यते। अनाहतमारभ्योत्थिते नादे त्रैलोक्यमोहनसर्वाशापूरकसक्षोभणकचक्रत्रयस्य त्रिविधसृष्टिरूपस्य बिन्दुस्थानमारभ्योत्थिते नादे, सर्वरोगहरसर्वसिद्धिप्रदसर्वानन्दमयचक्रत्रयस्य त्रिविधसंहृतिरूपस्य च चिन्तनं कार्यम्।

बाह्येन्द्रियव्यवहाररूपा जागरावस्था, तद्धेतुर्ज्ञानतृतीयकूटस्थहृल्लेखास्थे रेफे भावनीयम्। बाह्येन्द्रियानपेक्षान्तःकरणव्यवहाररूपा स्वप्नावस्था, तज्जनकज्ञानरूपः प्रकाशः हृल्लेखास्थया कामकलया बोध्यः। अथापि स्वप्नावस्था गलस्थे द्वितीयकूटस्थे लकारे चिन्त्या, वृत्तिसामान्या भावरूपा अविद्या वृत्तिरूपा वा सुषुप्तिः ललाटस्थाने तृतीयकूटस्थहृल्लेखास्थे बिन्दौ चिन्त्या, चिदभिव्यञ्जकनादस्य वेदनं तुर्यावस्था, तद्धेतुः प्रकाशः अर्धचन्द्ररोधिनी नादेषु भावनीयः। मनोवचनातीतप्रत्यगानन्दघन एव तुर्यातीतवस्था नादान्तादिपञ्चके भाव्या तार्तीयके रेफस्थाने बिन्दौ रोधिन्या नादान्तव्यापिकयोः चन्द्रकतुल्यानि पञ्चशून्यानि भाव्यानि। नीरूपं षष्ठं महाशून्यम् उन्मन्या चिन्त्यम्।

प्राणात्ममानसानां संयोगः प्राणविषुवसंज्ञकः। प्राथमिककूटनादे व्यष्टिसमष्टिभेदेन बीजचतुष्कस्य स्वस्य चैक्येन नादमयताविभावनं मन्त्रविषुवम्। मूलाधारादिषट्चक्रस्याध ऊर्ध्वं चैकैको ग्रन्थिरिति द्वादश ग्रन्थयः। तद्भेदनमार्गेणैव सुषुम्नानाडी मूलाधाराद्ब्रह्मरन्ध्रं व्याप्नोति। तेनैव मार्गेण नादस्य वर्णपत्तेश्च नाडीसंयुतत्वेन भावनयोच्चारणं नाडीविषुवम्। तृतीयकूटस्थरेफादिषु सप्तसु स्थानेष्वाधारादारभ्यस्य नादस्याभिधानादुत्तरोत्तरक्षणेषु घाण्टताल्ध्वनिवत् सौक्ष्म्यतारतम्यं शक्तौ लयभावनं प्रशान्त

विषुवम् । शक्त्यन्तर्गतनादं समनायां लयचिन्तनं शक्तिविषुवम् । समनोर्ध्वं पुनरुज्जीवनस्य सूक्ष्मतमस्य नादस्योन्मन्यां लयः कालविषुवम् । अकुलहंसस्थारादिकोन्मनान्तप्रदेशसंस्थेषु ककारादिपून्मनान्तेषु श्रीविद्याकूटत्रयेषु अयुतोत्तराष्टशतोत्तरसप्तदशत्रुटिपर्यन्तं विद्यावयवस्थानसंलग्नतापूर्वकं नादोच्चारणे कृते सति तत्त्वस्य संविदभेदस्य बोधो भवति, तदिदं तत्त्वविषुवम् । एवं पूर्वोक्तरीत्या पञ्चावस्था षट्शून्यानि सप्तविषुवानि नव चक्राणि मनोरथांश्च स्मरतो विद्यावर्णोच्चारणं जपः ।

कामयत इति कः परं ब्रह्म, 'कं ब्रह्मेति' श्रुतेः । क्रमेरौणादिको डः । जगत्सिसृक्षावान् परमेश्वरस्तत्पदार्थः काम इत्युच्यते । तदेव गायत्र्यास्तदिति शब्दार्थः । एकारस्य त्रिकोणत्वाद्योनिरित्यर्थः । तदेव प्राणिप्रसवकारणम् । त्रिकोणा शक्तिरेकारेण महाभगेन प्रसूते, तस्मादेकार एव गृह्यते । सवितुरिति तु प्रत्ययान्तप्रथमान्तपदस्य स एवार्थः, षूञ् प्राणिप्रसवे इति धातुस्मरणात् । तच्च सर्वसम्भजनीयत्वात् वरेण्यम् सर्वप्राणिपरप्रेमास्पदम् । अत एव वरेण्यम् इत्यस्यापि स एवार्थः । 'यदेकादशमाधारं बीजं कोणत्रयात्मकम् । ब्रह्माण्डादि कटाहान्तं जगदद्यापि दृश्यते' ॥ इति वामकेश्वरस्मरणात् । ईयते योगिभिः सर्वान्तर्यामितयेति ई । पदानां मध्यवर्तित्वेन तुरीयस्वरेण सर्वान्तर्यामी शिवः । स एव देवस्य भर्ग इत्यनयोरर्थः । सोऽहंस् इति देवस्येति पदमपि प्रथमान्तमेव । भर्गः शिवः । धत्त इति धीः सर्वाधारः शिव इति देवस्य भर्गो धीरिति गायत्र्याः पदत्रयस्यार्थः । स एव तुरीयस्वरस्यार्थः । 'तस्माद्भर्गो देवस्य धीत्येवमीकारः' इति श्रुतेः । ल इति पृथ्वीबीजस्य ससागरं सभूधरं भूमण्डलमर्थः । भूमण्डलमित्यपि पञ्चभूतोपलक्षणम् । तदपि च मृद्घट इतिवत् परमात्मसामानाधिकरण्येन भूमण्डलोपलक्षितपञ्चभूतात्मना परिणत परमात्मतत्त्वमेव ल इत्यस्यार्थः । गायत्र्यां महीति पदस्यापि स एवार्थः । महत्त्वात् काठिन्याच्च मही पृथ्वीति बोध्यते । ह्रीम् इति हकारस्य हृदयमर्थः । तत्र हृदये ई गतौ इट् गतौ इति धातोः ई इत्यस्य वासोऽर्थः । तथा च ह्रीं हृदयागारवासिनी

हृल्लेखा तां माति बोधयतीति ह्रीम् परमात्मतत्त्वावभासिनी गुणत्रयातीता निर्गुणब्रह्मस्वरूपा राजराजेश्वरी। धियो यो नः प्रचोदयात् इति गायत्र्यास्तृतीयपादस्य स एवार्थः। अस्मदादीनां धियो बुद्धीः ध्यानादिरहिते निष्प्रपञ्चे वस्तुनि प्रेरयति-परतत्त्वविषयकज्ञानजननीत्यर्थः। परोरजसेऽसावदोम् इति तुरीयपादस्य गुणत्रयातीतं ब्रह्मैवार्थः। रजसः परं परोरजसे सो. षो इत्यादेशः। रजोऽतीतं निर्मलं निर्गुणमिति यावत्। रजःशब्दस्य गुणत्रयोपलक्षकत्वात्। सावदोम् इत्यस्य सवदोऽवदश्च प्रणवो बोद्धयते। स च वक्तुं शक्यो वक्तुमशक्यश्च। शब्दे. शक्तिमर्यादया न बोध्यः। शक्यतावच्छेदकधर्ममात्रस्य परस्मिन्नभावात्। लक्षणया तु बोध्यते, सत्यज्ञानादिपदवाच्यविशिष्टतादात्म्यवत्त्वात्। 'यतो वाचो निवर्तन्ते' 'सर्वे वेदा यत्पदमामनन्ति' इत्यादिश्रुतिभ्यः। अकारोकारमकारैः प्रणवे ब्रह्मविष्णुरुद्रात्मकं ब्रह्मार्थः। हृल्लेखाया अपि तदर्थः। तथा च सर्वजगत्सिसृक्षावान् कामेश्वरः, जगत्कारणरूपा कामेश्वरी, शिवः सर्वान्तर्यामी सर्वाधारः पञ्चभूताद्यात्मना परिणतः परवस्तुविषयकज्ञानजनको निर्गुणो वेदैर्लक्षणया गम्यः शक्त्या चागम्यः ब्रह्मविष्णुरुद्रात्मक इति प्रथमकूटस्यार्थः। एवं श्रीविद्याया द्वितीयकूटस्थब्रह्मादिवाचिप्रथमहकारस्य गायत्र्यास्तत्पदस्य च शिवोऽर्थः, सकारस्य सवितुरित्यस्य च सवितार्थः, ककारस्य वरेण्यमित्यस्य च सर्वसंभजनीयसर्वप्राणिपरप्रेमास्पदमित्यर्थः। द्वितीयहकारस्य भर्गो देवस्य धी इत्यस्य च सर्वान्तर्यामिसर्वधारकः शिवोऽर्थः। तृतीयकूटे सकेत्याभ्यां तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीत्यन्तगायत्र्या अर्थ उच्यते। सकारेण कामेश्वरः सर्वजगद्योनिः, ककारेण सर्वधारकः सर्वप्राणिप्रेमास्पदं शिवः, द्वितीयतृतीयकूटयोर्लह्रीं इत्येताभ्यां पूर्वोक्तरीत्या पञ्चभूताद्यात्मना परिणतः परमात्मैवार्थो बोध्यते, उभयत्रापि हृल्लेखाभ्यां गायत्र्याश्चतुर्थचरणार्थो बोध्यते। तथा च त्रिरावृत्तायाश्चतुश्चरणाया गायत्र्या अर्थः पञ्चदश्याः कूटत्रयेण बोध्यते। त्रिपुरोपनिषद्यमर्थो निरूपितः। देवीभागवते च 'सर्वचैतन्यरूपां तामाद्यां विद्यां च

धीमहि । बुद्धिं या नः प्रचोदयात्' इति ह्याद्यायाः श्रीविद्याया एव ब्रह्म-रूपत्वं प्रतिपादितम् ।

एवं प्रकाशविमर्शात्मकस्य तत्त्वस्य प्रकाशांशभूता वामाज्येष्ठारौद्रय-स्तिस्रः शक्तयो ब्रह्मविष्णुरुद्राः पुरुषाः, तत्समष्टिः शान्तात्मिका शक्तिः तुरीया विमर्शांशभूता । इच्छाज्ञानक्रियास्तिस्रः शक्तयः तद्भार्यात्वेन भारतीपृथ्वीरुद्राण्यः स्त्रीरूपाः प्रसिद्धाः, तत्समष्ट्यम्बिकाशक्तिस्तुरीया ।

प्रथममिथुनत्रयं ईकारविनिर्मुक्तकूटत्रयस्य क्रमेणार्थः । ईकाराणान्तु तुरीयमिथुनमर्थः । वक्ष्यमाणे शाक्तेऽर्थे त्वेकैकस्मिन्नपि कूटे रेफान्तवर्णषट्कस्यापि मिथुनत्रयमर्थं इति भेदः । वामेच्छे ब्रह्मभारत्यौ ज्येष्ठाज्ञाने हरि-क्षिती । रौद्रीक्रिये शिवापर्णे त्रिभिः कूटैः क्रमान्मिथुनत्रयं वाच्यम्, हृल्लेखा-स्थैरीकारत्रितयैस्तु तत्समष्ट्यात्मकं शान्ताम्बिकात्मकं बोध्यम् । वामे-च्छाद्याः षडीकार इति सप्तभिरक्षरैः त्रिरावृत्तैरियं विद्या सञ्जाता । तेन तन्मयी वामादिसप्तशक्तीनां समष्टिः परदेवता षट्त्रिंशत्तत्त्वरूपादस्मान्मा-त्रयापि भिद्यते । मन्त्रे तृतीयवर्णस्य तुर्यस्वरस्य ज्येष्ठाशक्तिवाचकत्वेन वामादिषट्कान्त.पातित्वेनावशिष्टानां हृल्लेखास्थानामेव कामकलानाम् ईकारपदेन परामर्शान्न त्रिरावृत्तैरिति संख्याविरोधः ।

ककारस्य वामात्रिकोणाया इच्छातुर्यस्वरस्य ज्येष्ठा लकारस्य ज्ञानात् त्रिरावृत्तैर्हृल्लेखास्थैः ईकारे रौद्रीक्रिये सर्वसमष्टिरूपा च ।

नच शाक्तार्थेन पौनरुक्त्यम्, तत्र वामादिषट्कं कामकलाया अभिन्न-मिति वाक्यार्थः । अत्र तु वामादिकामकलान्तसप्तकाभिन्नो मन्त्र षट्-त्रिंशत्तत्त्वाभिन्नमात्रभिन्न इत्यर्थ इति भेदात् । अथवा—

शिवशक्तिसमष्टिजन्यत्वात् मन्त्रराजः स्पन्दश्च तद्व्यष्टिरूपी शिवशक्ति-मयौ । तेन जगन्मन्त्रदेवीनामभेदभावनं भावार्थः : तदुक्तं योगिनीहृदये—

.....'चलत्ता संस्थितस्य तु । धर्माधर्मस्य वाच्यस्य विषामृतमयस्य च । वाचकाक्षरसंयुक्तैः कथिता विश्वरूपिणी ॥ तेषां समष्टिरूपेण-परांशक्ति तु मात्रिकाम् । कूटत्रयात्मिकां देवीं, समष्टिव्यष्टिरूपिणीम् ॥

आद्यां शक्तिं भावयन्तो भावार्थं इति मन्वते।' इति तदर्थो वरिवस्यारहस्ये "पराहन्तेत्यादि भावार्थकत्वतलादिवाच्यत्वाद्धर्मः शक्तिर्निर्धर्मकत्वादधर्म-शिवः शक्तिरहितस्य शिवस्य स्पन्दनाक्षमत्वाद्ध्रुवस्पन्दं प्रति शक्तेः कारणतावच्छेदकत्वात् कारणत्वम्, तेन जननमरणादिक्लेशमसंसारजनकत्वाद्विषं शक्तिस्तद्विनिर्मोकादमृतं शिवस्तदुभयस्य वाच्यस्य वाचके ये अक्षरे हकाराकाररूपे ताभ्यां व्यस्ताभ्यां तदुभयसमावेशरूपकामकलाक्षरेण चास्य वलत्तासंस्थितस्य नस्वरयुक्तस्य जगतो मन्त्रराजस्य च सम्यक् परिणामपरिणामिभावेन युक्तेः सम्बन्धादेषा विद्या विश्वरूपिणी, एकाकारेणोभयोरभेदात् शिवशक्तिसामरस्यरूपस्य पराशक्त्यादिपदवाच्यस्य कारणस्य कार्याभ्या विश्वविद्याभ्याममभेदात्" इति।

ब्रह्मपरिणामभूता सृष्टिर्द्वेधा अर्थमयी शब्दमयी च, चक्रमयी देहमयी चेति। सृष्टिद्वयन्तु बालक्रीडनकार्थे स्थूलगृहसमानाकारत्वेन सूक्ष्मगृहनिर्माणतुल्यमर्थसृष्ट्यन्तर्गतमेव न ततो भिन्नम्। पूर्वोक्ता द्विविधापि सृष्टिः समकालीनोत्पत्तिका समकालीनाभिवृद्धिशालिनी च। यथा बीजाङ्कुरतच्छाये। छायादर्शनेन वृक्षानुमितिदर्शनात् छायाया वृक्षसमानाकारत्वं वृक्षाविनाभावश्च विनाऽनुपपन्नमिति तद्द्वयमपि कल्प्यते। तद्वत् शब्दोऽप्यर्थाविनाभूत अर्थज्ञानजनकज्ञानविषयत्वात् 'वागर्थाविव सम्पृक्तौ' इति महाकविप्रयोगदर्शनाच्च। तथार्थसमानाकारोपि। यावन्तः शब्देऽवयवाः तावन्तोऽर्थे तज्ज्ञाने चाभ्युपेतव्याः यथा चैत्रस्तण्डुलं पचति इत्यत्र चैत्रपदं तु प्रत्ययः, तण्डुलपदं अम् प्रत्ययः, पचिधातुः ति प्रत्ययश्चेति षडवयवात्मकस्य वाक्यस्य चैत्रः कर्तृत्वम्, तण्डुलः कर्मत्वम्, तेजःसंयोगः कृतिश्चेति विकल्पिताः षडर्थाः, तेषां परस्परमभिव्याहारस्य तु परस्परसम्बन्धविशेषो तत्तत्पदार्थविशिष्टा भावनैव वाक्यार्था इति मीमांसकाः, एवं तज्ज्ञानमपि षट्पदार्थास्तत्सम्बन्धादीश्च विषयीकुर्वंतत्समानाकारं भवति, अन्यथा ज्ञानाना परस्परं वैलक्षण्यनुपपत्तेः, अन्तःकरणपरिणामविशेषरूपे ज्ञाने तत्तदाकारत्वेन परिणतत्वकल्पनसम्भवाच्च। अत एव चैत्रस्तण्डुलं पचतीत्याकारं ज्ञानमिति

सकलतान्त्रिकाणां व्यवहारः। अनयोः सृष्ट्योर्ज्ञानजनकन्तु मन एव। तत्र शब्दं श्रोत्रद्वारैव गृह्णाति अर्थन्तु कञ्चन चक्षुरादिद्वारेति विशेषः।

द्वे अपि सृष्टी स्थूलसूक्ष्मसूक्ष्मतरसूक्ष्मतमभेदात् प्रातिस्विकं चतुर्विधे, श्रोतमनसोरप्यर्थान्तःपातित्वात् चातुर्विध्यम्। एवञ्च स्थूलश्रोत्रेण स्थूलशब्दस्य श्रवणात् स्थूलार्थस्य स्थूलमनसा ज्ञानम्, सूक्ष्मश्रोत्रेण सूक्ष्मशब्दश्रवणात् सूक्ष्मार्थस्य सूक्ष्ममनसा ज्ञानम्। श्रोत्रमनसोः सूक्ष्मत्वादिकन्तु शास्त्राभ्यासादिपाटवजन्यम्। 'निर्विचारवैशारद्येऽध्यात्मप्रसादः ऋतम्भरा तत्र प्रज्ञा' इति सूत्रयोरेतत्स्पष्टम्। श्रुतिरपि **"चत्वारि वाक् परमिता पदानि तानि विदुर्ब्राह्मणा ये मनीषिणः। गुहा त्रीणि निहिता नेङ्गयन्ति तुरीयं वाचो मनुष्या वदन्ति।"**

वैखरी मध्यमा पश्यन्ती परा इति चतुर्विधा वाचः, एतदर्था अपि चतुर्विधा विज्ञेयाः। मस्तकाद्यवयवेन्द्रिये प्राणदशब्दशालित्वं स्थूलजगदादिव्यक्तौ सद्योजातशिशौ पिपीलिकादौ चेत्यविवादम्। इयांस्तु भेदः-स्थूले स्थूला अवयवाः सूक्ष्मे तु सूक्ष्माः। तथा च वैखरीरूपघटपदवाच्यापेक्षया मध्यमादिरूपघटपदैर्वाच्या घटाः युक्तिभिः कल्प्याः। ते चार्थाः सङ्कोचं गच्छन्तः केचिदस्पष्टनिखिलावयवकाः, केचित्तु सङ्कुचज्जलूकाकमठादिवत् अस्पष्टकिञ्चिदवयवका अप्यवयवन्यूनाधिकभावेन परिणामभेदेऽपि द्रव्याभेदस्य मीमांसकादिभिरप्यङ्गीकाराद्। यथायथमूहनीयम्।

चतुर्णां वाचकानां चतुर्भ्यो वाच्येभ्यो भेदा अपि चतुर्विधाः। सृष्टिचतुष्टयस्यापि मूलभूतो बिन्दुर्बीजस्थानापन्नः तस्मादपि परतः सूक्ष्मतरापेक्षया सूक्ष्मतममपि विशिष्य तद्वाचकत्वादभिन्नशब्दार्थरूपं शब्दब्रह्मेत्यादिपदनिर्देश्यं परं ब्रह्मैव। तच्च प्रकाशैकाकारस्य अर्थादत्यन्तभिन्नस्य शब्दब्रह्मेत्यादिपदनिर्देशविशेषस्याभावात् अनिर्देश्यम् अग्राह्यम् अशब्दम् अस्पर्शम् इत्यपास्तविशेषम्।

वस्तुतः सृष्टिद्वयमूलभूतसूक्ष्मरूपविशेषात्मकत्वात् अभिन्नशब्दार्थरूपं शब्दब्रह्मेत्यादिपदनिर्देश्यं परं ब्रह्मैव। तच्च प्रकाशकस्वरूपम् 'पटः स्फुरति

घटः स्फुरति' इत्यादिप्रत्ययेन पदार्थमात्रस्फुरणस्य तत्तदभिन्नस्यानुभवसिद्धत्वात् प्रकाशः स्फुरति इति प्रत्ययात् प्रकाशस्यापि स्फुरणमवश्य वाच्यम् । तच्च स्फुरणं शक्तिः प्रकाशस्फुरणात्मकयोः शिवशक्त्योर्मिलितयोरेव जगत्कारणत्वमन्यतरस्य तत्त्वानुपपत्तेः । तथा च शुद्धस्य शिवस्य केवलायाः शक्तेर्जगत्कारणत्वं तत्र तत्रोच्यमान शिवशक्तिरूपस्योभयात्मनएव बोध्यम् ।

अहमित्यत्र प्रकाशस्वरूपः शिवस्त्वकारस्तद्वाच्यश्च स्फुरणरूप शक्तिः हकारस्वरूपा तत्पदवाच्या । तावेतावकारहकारौ परारूपौ सूक्ष्मतमौ । परादिसृष्टिमूलभूतस्य बीजस्थानीयस्य विन्दुविशेषस्य तु व्यक्ताव्यक्तविलक्षणौ वाचकौ, तस्यापि जनकस्य परब्रह्मणस्तु केवलमव्यक्तावेव शून्यस्वरूपौ वाचकौ । तयोः शून्यस्वरूपत्वादेव विसर्गरूपस्य शून्यद्वयस्य सूक्ष्मयोः अकारहकारयोरिवोच्चारणं भवति । तदुक्तं 'अहमित्येकमद्वैतं यत्प्रकाशात्मविभ्रमः । ककारः सर्ववर्णाग्र्यः प्रकाशः परमः शिवः ॥ हकारोऽन्त्यः कलारूपो विमर्शाख्यः प्रकीर्तितः । अनयोः सामरस्यं यत् परस्मिन्नहमि स्फुटम् । शून्याकाराद् विसर्गान्ताद् बिन्दुप्रस्पन्दसंविदः ।'' इति योगिनीहृदये च शून्याकारः शून्यमात्ररूपो यो विसर्गान्तः षोडशस्वरान्त्यः तस्मात् बिन्दुविशेष उत्पन्न इति तदर्थः । विसर्गस्य अव्यक्तहकारतुल्यत्वेनाकारस्यापि तत्र सत्त्वेन षोडशस्वरकीर्तनम् । तेन अकारहकारावेव शून्याकारे कीर्तितौ वेदितव्यौ ।

तथा कश्चित् पुरुषः उत्पत्स्यमानपुत्राद्यदृष्टवशात् उत्पादनेच्छाविशिष्टः स्वीयामुत्पादनशक्ति भार्यामवलोक्य स्वार्धाङ्गिन्या स्वयमन्तः प्रविशति शुक्ररूपेण 'आत्मा वै पुत्र नामासि' इति श्रुतेः प्रवेक्ष्यमानस्य स्वभिन्नत्वात् स्थूलतरभेदाक्रान्तत्वाच्च नाभेदभानम् । ततस्तस्य शुक्रस्यान्तः शोणितबिन्दुरूपेण भार्या प्रविशति । तेन च स बिन्दुरुच्छूनो भवति । स एष वटोदुम्बरादिबीजस्थानीयः । तस्मादङ्कुरविशेषाद्युत्पत्ति क्रमेण कालान्तरे पुत्राद्युत्पत्तिः ।

यथा वा सूर्याभिमुखदर्पणे तदन्तःप्रविष्टकिरणात् उभयकिरणसङ्कुलनरूपस्तेजोबिन्दुविशेषः कुड्यादौ प्रादुर्भवति तथा प्राण्यदृष्टवशात् स्वान्तः-

संहृतविश्वसिसृक्षया प्रकाशरूप ब्रह्म स्वीयां शक्तिमवलोकयितु तदभिमुखीभूय तदन्तस्तेजोरूपेण प्रविश्य शुक्लबिन्दुभावमयते। ततस्तं बिन्दुं रक्तरूपा शक्तिः प्रविशति। तया सम्मिश्र-बिन्दुरुच्छूनो भवति। तत्र च हार्दकलारूप एकः पदार्थविशेषो भवति। स च बिन्दुः समष्टिरूपेणैकः स्फुटशिवशक्तिसामरस्यनामा कामो रविरग्निसोमात्मक इत्यादिशब्दैर्व्यवह्रियते। व्यष्टिरूपेण द्वय तत्र शुक्लइन्दू रक्तोऽग्निरिति बिन्दुद्वयात्मकत्वात् विसर्ग इति च व्यवह्रियते। अत एव च रवे रात्रौ, अग्नौ अमावास्यायाम् चन्द्रे च प्रवेशस्य श्रुतिसिद्धत्वात् समष्टिबिन्दो रवित्वमेवञ्च कामाख्यो बिन्दुर्विसर्गौ हार्दकला चेति त्र्यवयवक एक पदार्थोऽणादिप्रत्याहारवत् कामकलेत्युच्यते। इदमेव समस्तसृष्टिबीजम्। अत एव अकारहकारयोर्मध्ये सर्ववर्णपाठः। लकारस्य ककाररूपत्वात्, क्षकारस्य कृपयो रूपत्वाच्च न तद्बहिर्भावः। एतन्मूलभूतं ब्रह्म तु तुरीयबिन्दुरित्युच्यते। तद्रूपाभ्या शून्यस्वरूपाभ्याम् अकार-हकारभ्या उत्पन्ना कामकला व्यक्ताव्यक्तविलक्षणा अहम्पदवाच्या अकारहकारोभयात्मकत्वं शिवशक्तिद्वयरूपत्वञ्चामम्पदस्य निष्कृष्टोऽर्थः।

तज्जन्याना सूक्ष्मादिस्थूलान्तानाम् अखिलसृष्टीनाम् अहम्पदवाच्यत्वम्। यथा उदुम्बरपदवाच्यबीजाज्जनिताना परस्परविलक्षणानामपि पर्णकाष्ठकुसुमफलक्रमीणाम् सर्वेषामुदुम्बरत्वम् उदुम्बरपर्णमुदुम्बरक्रमिः इत्यादि व्यवहारात्। तथा च "ब्रह्म वा इदमग्र आसीत् तत् आत्मानमेवावेत् अहं ब्रह्मास्मीति।" (बृहदारण्यकोपनिषदि) 'त्वं वा अहम्, अहं वै त्वम्', (ऐतरेयोपनिषद्) अस्मच्छब्दस्य सर्वनामताऽप्यत एव हंसः सोऽहमित्यादिरूपेण पूर्णा अहम्भावनारूपा उपासना प्रसिद्धा। अहमिति समाहारद्वन्द्वसमासः। 'अहमेव इदं सर्वं' इति श्रुतेश्च। विरूपाक्षपञ्चाशिकाया, "स्वपरावभासनक्षम आत्मा विश्वस्य यः प्रकाशोऽसौ। अहमिति स एक उक्तोऽहन्तास्थितिरीदृशी तस्य।" एतादृशस्य अहम्पदार्थस्य यथा अहमिति पदं वाचकं तथा उत्तमपुरुषस्यैकवचनमपि वाचकम्। तस्य च परस्मैपदात्मनेपदभेदेन द्वैविध्येऽपि तिपः इटश्च इकारत्वेन अनुगमात्

इत्वमेव शक्यतावच्छेदकम्। अन्यायश्चानेकशब्दत्वमितिन्यायात् तस्य च धातूत्तरत्वेनोक्तं पुरुषत्वादिना वा उपस्थितिः पदार्थस्मारकत्वे तन्त्रम्। एर्णलादावपि लुप्तस्य स्मरणम् तदभावे शक्तिभ्रमाद्बोधः। तत्र च अकार-हकारयोरदर्शनेऽपि शास्त्रप्रामाण्यात् सूक्ष्मरूपौ तौ स्त इति स्वीकार्यम्। तस्यैव च हार्दकलायोगे दीर्घताऽपि सम्पद्यते इति तुरीयस्वरस्य कामकला-रूपत्वं मन्त्ररहस्यविद्भिः प्रतिपाद्यते। तदुक्तं योगिनीहृदये—"**मध्यबिन्दु-विसर्गान्तः सकारस्यानमये परे। कुटिलारूपके तस्याः प्रतिरूपं वियत्कला॥**" इति। मध्यबिन्दुः कामाख्यः तस्य तुरीयबिन्दुविसर्गमध्य-पातित्वात् समष्टेर्व्यष्टिमध्यएवान्तर्गतत्वाच्च विसर्गो व्यष्टिरूपं बिन्दुद्वयं तयोरन्तर्मध्ये सम्यक् चैतन्यात्मनावस्थानम्। तन्मये तत्प्रधाने परे चरमे अकारहकाररूपे अक्षरे मातृकाणां क्रमेण पाठे चरमत्वात् हकारस्य व्युत्क्रमेण पाठे त्वकारस्य चरमत्वात्। किञ्च इमे अक्षरे कुटिलारूपके कुटिले अकुलकुले कुण्डलिन्यौ तयो रूपान्तरे तस्यास्तयोः कुण्डलिन्योः इत्यर्थः। वियत्पदेन शून्याकारत्वात् कामः प्रतिपाद्यते। कलापदेन हार्दक-लावत्त्वात् विसर्गः, यतः कामविसर्गयोः कुण्डलिनीप्रतिबिम्बरूपत्व, ततः कुण्डलिन्यभिन्नाकारहकाररूपत्वं संभवतीति भावः, इति वरिवस्यारहस्ये तद्-व्याख्या। एवमकारहकारैकाररूपा कामकला। तद्भूते मन्त्रे विजातीयाक्षर-वत्त्वान्यथानुपपत्त्यापि तयोर्गर्भे सूक्ष्मरूपेणान्येषा वर्णानामर्थसृष्टेश्चावस्थानं सिद्ध्यति। यथा वटबीजरूपे सम्पुटे पर्णकाष्ठादेः। यथा च वटबीजाना स्फोटेनैवाङ्कुराद्युत्पत्तिरिति बीजस्य पूर्वोत्तरार्थयोर्वियोगे इत्यविवादम्। तद्यर्थद्वयं महति वृक्षे कस्मिन् भागेऽस्तीति तु दुर्ज्ञेयम्। एव मन्त्राद्योऽपि अकारहकारयोरवस्थितयोः परिज्ञानाय संकेतभाषयोक्त योगिनीहृदय—'**मध्यप्राणप्रयाद्स्पन्दव्योम्निस्थिता पुनः। मध्यमे मन्त्रपिण्डे तु तुरीये पिण्डके पुनः। राहुकूटाद्यस्फूर्जत् इति**"" ॥' तदर्थोऽपि वरिवस्यारहस्ये कलाकामयोर्मध्यस्य विसर्गस्य य. प्राणश्चैतन्यं तस्य प्रथा पृथुत्वेन श्रूय-माणता स्थूलतेति यावत्। तद्रूपं यत् स्पन्दव्योम हकार. स्पन्दते उत्पद्यते

इति स्पन्द स्पन्दो व्योम यस्मादिति व्युत्पत्ते । हकाराद्व्योम सम्भूतम् इत्युक्तेरिति केचित् । मध्यात्मको विसर्गाभिन्नो य प्राणो हकारस्तस्य प्रथारूपो य स्पन्द स्थूलरूपा सृष्टिरित्यर्थ, तद्रूप व्योम हकार इत्यर्थो युक्त । ह शिवो गगन प्राण इति मातृकाकोशात् । मध्यम इत्यस्य द्विरन्वय । तत्रैकपद मन्त्रपिण्डेन सह सामानाधिकरण्येनान्वेति, अपर वैयधिकरण्येन, मध्यमकूटस्य मध्यमव्यञ्जने द्वितीयहकार इत्यर्थं द्वितीयेषु सप्तसु व्यञ्जनेषु तस्य चतुर्थत्वेन मध्यमत्वात् तत्र स्थिता स्त्रीलिङ्गाच्छक्ति-विशेष्या । तृतीयकूटे तु सकारेऽकारो मूलबीजीय इत्याह ।

राहुकूटेऽतिलघुषोढान्यासान्तर्गतग्रहन्यासे राहो शषसहाख्यवर्णचतुष्टय-सहितस्य वक्त्रे न्यास । वक्त्रेशादिचतुर्वर्णै सहित 'राहुमेवं च' इतिवच-नात् । तेन शादिचतुष्क राहुकूटम् । तत्र द्वयभिन्नोऽद्वयस्तृतीय साकारस्त-स्मिन् स्फूर्जत् शोभमान नपुसकलिङ्गबलात् ब्रह्म विशेष्य शिव इत्यर्थ । तथा च अकारहकारौ परस्पराश्लिष्टौ शून्याकारौ प्रकाशस्फुरणात्मक-शिवशक्तिस्वरूपौ वेदान्तवेद्य ब्रह्म । तदेव विश्वसिसृक्षया स्वार्थाशक्ति विलोकयद् बिन्दुर्भवति । तमिन्दुरूप शक्तिस्तु स्वबिन्दुतया प्रविशति । एतत्पिण्डद्वितय विसर्गसञ्ज्ञ हकारचैतन्य मिथस्तु तत्समष्टि । कामाख्यो रविरकार-चैतन्यम् । एषाऽहपदतुर्यस्वरकामकलादिशब्दनिर्देश्या वागर्थ-सृष्टिबीजम् । तेनाहन्तामय विश्व भवति । अन्त्यप्रथमे मध्यचतुर्थे मन्त्रेऽपि तौ व्यक्तौ । तेनाम्बामनुजगतामभेद एवात्र भावार्थ ।

कामकलाविमर्शेऽपि—

अन्तर्लीनविमर्श प्रकाशमात्रतनु पूर्णाहभावभावनागर्भितो महेशो विश्वोत्पत्त्यादिकृत्यपञ्चककारणम् । शक्तिश्च शिवादिषट्त्रिंशतत्त्वमयी सर्वप्रपञ्चात्मिका तदुत्तीर्णा च । शिवस्य जगन्निर्मातृत्व तया शक्त्या विना नोपपद्यते । तत्र प्रकाशस्वभावस्य तु परमशिवरवे किरणसमूह विस्फुरण-शक्तिरूपे विशदे विमर्शदर्पणे प्रतिफलति । यथा लोके सूर्याभिमुखस्थित दर्पणतले सूर्यकिरणप्रतिफलनान्तर निकटगत कुड्ये सूर्यकिरणप्रतिहत-

तेजोबिन्दुः प्रत्यक्षं प्रपद्यते, तथैव प्रकाशस्वरूपपरमेश्वरस्य दर्पणस्वरूपविमर्शसम्बन्धे जाते महाबिन्दुः पूर्णोऽहमित्येवंरूपः परमेश्वरः प्रकाशते। सितशोणबिन्दुयुगलकामेश्वरीरूपं दिव्यमिथुनम्। तदेव वागर्थसृष्टिहेतुः। परमेश्वरः स्वाङ्गभूताखिलप्रपञ्चविलयात्मकविमर्शशक्तिमनुप्रविश्य बिन्दुभावं मन्यते। ततो विमर्शशक्तिरपि स्वान्तर्गतप्रकाशमयं बिन्दुमनुप्रविशति। ततश्च बिन्दुरुत्पन्नो भवति। तस्माद् बिन्दोर्नादात्मिका समस्ततत्त्वगर्भिणी जीवरूपा बालाग्रवत्सूक्ष्मरूपिणी भवति। बिन्दुनादस्वरूपयोस्तयोः प्रकाशविमर्शयोरहमिति शरीरं भवति। विमर्शो रक्तबिन्दुरूपतां प्रकाशः शुक्लबिन्दुरूपतां भजति। उभयोर्मेलने मिश्ररूपं सर्वतेजोमयं परमात्मस्वरूपं भवति। तदेव सितशोणबिन्दुसमरसीभूतो मिश्रबिन्दुरुच्यते। अग्नीषोमरूपिणी विमर्शशक्तिः तदुभयभूतकामेश्वराविनाभूता महात्रिपुरसुन्दरी बिन्दुसमष्टिरूपा कामकला प्रोच्यते। निर्विशेषप्रकाशस्वरूपोरविरस्या मुखं,शशिहुताशनरूपबिन्दुयुगलं तस्याः स्तनद्वयं, तत्समरसीभावो योनिः। तदुक्तम्—

मिहिरबिन्दुमुखीं तदधोलसच्छशिहुताशनबिन्दुयुगस्तनीम्।
हसपरार्धकलारचनास्पदां भजत नित्यमिमां परदेवताम्॥

'इकारोर्ध्वगतो बिन्दुर्मुखं भानुरधो गतौ। स्तनौ वह्नशीतांशु योनिर्हार्धकला भवेत्॥'

वर्णपदमन्त्ररूपा वाक्कला तत्त्वभुवनात्मा अर्थः। तावेतौ वागर्थौ नित्यसंपृक्तौ प्रकाशविमर्शात्मकौ ताभ्यामेव षडध्वात्मकसर्वप्रपञ्चोत्पत्तिश्रवणात्। कामकलारूपायास्त्रिपुरसुन्दर्या एव मातृ-मान-मेयपुट-धाम-पीठ-शक्तिचक्रादिरूपेणाविर्भाव इति कामकलाविलासे विशदम्। अपरिच्छिन्नानन्ततेजोराशिमयी अनन्तकोटियोगिनीवृन्दसमाराधिता नित्यनिरवधिकातिशयानन्दमयात्मसाम्राज्यसम्पदभिमानशालिनी महात्रिपुरसुन्दरी यदा चक्राकारेण परिणमते, तदा तस्यास्तेजःपुञ्जात्मकदेहस्य किरणरूपाणामवयवानां तत्तदावरणदेवतारूपे परिणतिर्भवति। तदेतत्सर्वमुक्तं कामकलाविलासे—'सेयं परा महेशी चक्राकारेण परिणमेत यदा। तद्देहावयवानां परिणति-

रावरणदेवता सर्वा ॥ आसीना बिन्दुमये चक्रे सा त्रिपुरसुन्दरी देवी । कामेश्वराङ्कनिलया कलया चन्द्रस्य कल्पितोत्तंसा ॥ पाशाङ्कुशेक्षुचापप्रसूनशरपञ्चकाञ्चितस्वकरा ॥ बालारुणारुणाङ्गी शशिभानुकृशानुलोचनत्रितया ॥'

सम्प्रदायार्थस्तु—

व्योमवाय्वग्निजलभूमिबीजैः ह, क, र, स, ल वर्णैर्युक्तत्वादियं विद्या पञ्चभूतमयी । तदुक्तम्—"हकाराद्‌व्योम सम्भूतं ककारात्तु प्रभञ्जनः। रेफादग्निः सकाराच्च जलतत्त्वस्य सम्भवः । लकारात्पृथिवी जाता तस्माद्विश्वमयी च सा ।" इति । यद्यपि प्रकाशविमर्शसामरस्यात्मकवस्तुविशेषस्यैव शब्दार्थसृष्टिजनकत्वमविशिष्टं, तथापि प्रकाशांशस्यार्थसृष्टौ विमर्शांशस्य शब्दसृष्टौ जनकत्वं, तयोः परस्परसापेक्षत्वेन स्वस्वकार्यजनकत्वस्य श्रुतिस्मृतिसिद्धत्वात्तथा च विमर्शशक्तेर्हकार उत्पन्नः ततः प्रकाशाद्व्योम ततो विमर्शात्ककारः, ततः प्रकाशाद्वायुः, ततो विमर्शाद्रेफस्ततः प्रकाशादग्निः, ततो विमर्शात्सकारः, ततः प्रकाशाज्जलम्, ततो विमर्शाल्लकारः, ततः प्रकाशात्पृथिवी इत्येवंक्रमेण पञ्चमहाभूतोत्पत्तौ सत्यामपि हकारवद्विमर्शविशिष्टप्रकाशस्यैव व्योम प्रति कारणत्वात्कारणतावच्छेदकस्य हकारे सिद्धे विनिगमनाविरहात्कारणत्वमपि सिद्ध्यति, एवमेव ककारादिष्वपि । नचैव हकारादेर्वाय्वादिकं प्रत्यपि करणत्वापत्तिरिति वाच्यम्, तेषामन्यथासिद्धत्वात्, पारम्पर्येण तत्त्वेऽपि दोषाभावाच्च ।

ननु तर्हि विद्याया पञ्चभूतात्मकं वर्णपञ्चकमेवास्तु किमधिकैर्वर्णैरिति चेन्न, व्योमादीनां पञ्चचतुस्त्रिद्व्येकशब्दादिगुणात्मकत्वेन पञ्चदशार्णानामुपपत्तेः । व्योम्नि पञ्चभूतगाः पञ्चविधाः शब्दाः, वायौ वाय्वादिगतास्चतुर्विधाः स्पर्शाः, तेजसि त्रिविधानि रूपाणि, जले द्विविधोरसः, भूमावेकविधो गन्धः । पञ्चदशभिर्गुणैः पञ्चदशानां वर्णनामभेदः । अथवा विद्याया मायात्रये हकारत्रयं मध्यकूटे च द्वौ हकारौ तैः पञ्चभिः पञ्चशब्दाः बोध्यन्ते । तदुक्तम्—'व्योमबीजैस्तुविद्यास्थैर्लक्षयेच्छब्दपञ्चकम्' इति ।

अत एव भावार्थप्रकरणे हकारस्य शक्तिवाचकत्वेऽप्यत्र शब्दलक्षणकत्वानुपपत्यभाव, गङ्गाया घोषमत्स्यौ इत्यादौ वृत्तिद्वयस्यापीष्टत्वात्। अथवा तत्र शिवशक्त्यात्मकमूलबीजात्मकयोरकारहकारयो सूक्ष्मतम रूपमिह तु वैखर्यात्मकयो स्थूलरूपयोरर्थान्तरपरत्वमुच्यते। तथा च मध्यमहकारे ध्वन्यश परब्रह्मवाचक वर्णांशस्तु शब्दलक्षक,। सर्वेष्वपि वर्णेषु वर्णांशध्वन्यशौ परस्परससृष्टौ कत्वादिवर्णधर्माणा तारत्वमन्द्रत्वपङ्कजत्वादिध्वनिधर्माणाञ्च सर्ववर्णेष्वनुभूयमान्त्वात् ध्वन्यालम्बनत्वेनैव तत्तद्वर्णानामेकैकरूपत्वेऽपि देवदत्तयज्ञदत्ताद्युच्चारितवर्णाना वैलक्षण्यप्रतीत्युपपत्ति।

मायास्थैस्त्रिभिस्तृतीयाक्षररूपेण च चतुर्भिरीकारैश्चतुर्विधा स्पर्शा बोध्या। अत्र पक्षे न ककारे स्पर्शा बोध्या.। तदुक्तम् 'महामाया त्रयेणापि कारणेन च बिन्दुना। वाय्वग्निजलभूमीना स्पर्शनाञ्च चतुष्टयम्। उत्पन्नं भावयेद्देवि स्थूलसूक्ष्मविभेदत॥' इति। बिन्दुनेति कामकलाचतुष्कस्यापि विशेषणम्। त्रिविध रूप मायान्तर्गतैस्त्रिरेफैर्जन्यते। "रूपाणा त्रितयं तद्वत्त्रिभी रेफैर्विभावितम्' इति। सकारद्वयेन रसद्वयम्, 'विद्यास्थैश्चन्द्रबीजैस्तु स्थूल सूक्ष्मो रस स्मृत' इति-वचनात्।

चन्द्रबीजे सकारे स्थूलो व्यापको जलगत, सूक्ष्म व्याप्यो भूगतो रसश्च बोध्यते। चन्द्रबीजैरिति बहुवचनमविवक्षितम्, विद्याया सकारद्वयस्यैव सत्त्वात्। हादिविद्यायान्तु सकारत्रयस्य सत्वेन तत्रामृतगतोऽप्येष रस इति। तेन रसत्रय बोध्यते। लकारस्तु गन्धबोधक' 'वसुन्धरागतोगन्धस्तल्लिपिर्गन्धवाचिका' इतिवचनात्।

न च विद्याया लकारत्रयमित्येवेन गन्धबोधोपपत्तावितरयोर्वैयर्थ्यमिति वाच्यम्, भुवनत्रयेण सह वाच्यवाचकसम्बन्धाल्लकारत्रयस्योपपत्ते। ये यद्यज्जनवास्तेषा तेषा त एवार्था इत्यस्यापवादोऽपि विद्यास्थै वकारैस्त्रिभि अशुद्धमिश्रशुद्धा अधमा मध्यमा उत्तमा साधका प्रोच्यन्ते। तत्र भेदैकदृष्टय शिवाहभावनाहीना कर्मैकरता प्रथमा। सपक्वमलकर्माण सूक्ष्मपुर्यष्टसम्बन्धशालिन कर्मज्ञानमार्गयो साधारणा द्वितीया निरस्तभेदा

सर्वज्ञ-शिवैकदृष्ट्यस्तृतीयाः। तदुक्तम्—'अशुद्धमिश्रशुद्धानां प्रमातॄणां परं वपुः। बोधीगत्रितयेनाऽस्य विद्यास्येन प्रकाश्यते ॥' इति।

द्वितीयतृतीयवर्णौ हृल्लेखात्रयञ्च मुक्त्वाऽवशिष्टेषु दशाक्षरेषु अकारा दश भवन्ति। ते च जीवराशिबोधकाः। एकेनापि बोधसम्भवेऽपि दशभिरभिधानं जीवानामानन्त्यबोधनाय। विद्यायाः प्राणभूत एकादशस्वरः एकारः प्राणवाचकः, तदुक्तम्—'श्रीकण्ठदशकं तद्वदव्यक्तस्य हि वाचकम्। प्राणभूतः स्थितो देवि तद्वदेकः दशः स्वरः। एकः सन्नेव पुरुषो बहुधा जायते हि सः।' इति। इह श्रीकण्ठा अकाराः। अव्यक्तो जीवः। बिन्दुभिः त्रिभिः रुद्रेश्वरसदाशिवा बोद्ध्यन्ते। रुद्रपदेनात्र तेजस्तत्त्वं बोध्यते। ततः पुरुषनियतिकालरागविद्याकलामायानां परिग्रहः। 'पुरुषादिकमायान्तं तेजस्तत्त्वं महेश्वरि' इति स्वच्छन्दसंग्रहोक्तेः॥ शान्तिः प्रकृतिः शुद्धविद्या च नादत्रितयेन बोध्यन्ते अर्धचन्द्राद्युन्मानान्तं वर्णाष्टकं नादपदेनोच्यते। तत्राद्यत्रितयेन शान्तिः प्रकृतिः शुद्धविद्या बोध्यन्ते। एवं व्योमबीजपञ्चकेन चतसृभिः कामकलाभिः द्वाभ्यां चन्द्रबीजाभ्यां त्रिभीरेफैस्त्रिभिर्लकारैः त्रिभिः ककारैः त्रिभिर्बिन्दुभिः त्रिभिर्नादैः श्रीकण्ठदशकेनैकेन एकादशस्वरेण इति संहृत्य सप्तत्रिंशत्पदानि तेषां षट्त्रिंशत्तत्त्वानि तत्त्वातीतमेकं परं ब्रह्म चार्थः। तानि च तत्त्वानि शिवः, शक्तिः, सदाशिवः, ईश्वरः, शुद्धविद्या, माया, कला, अविद्या, रागः, कालः, नियतिः, पुरुषः, प्रकृतिः, अहङ्कारः, बुद्धिः, मनः, श्रोत्रं, त्वक्, चक्षुः जिह्वा, घ्राणम्, वाक्, पाणिः, पादः, उपस्थः, शब्दः, स्पर्शः, रूपं, रसः, गन्धः, आकाशः, वायुः, तेजः, आपः, पृथ्वीत्येतानि। तत्र शिवशक्तिशुद्धविद्या प्रकृतयः बिन्द्वर्थाः। सदाशिवादिपुरुषान्ताः नव नादार्थाः। शब्दादय आकाशादयश्च श्रोत्रादयो वागादयश्च पञ्च पञ्च हकारादेरर्थाः। अहङ्कारादित्रितयं तु ककारत्रयस्यार्थः। एकादशस्वरस्य तत्त्वातीतं ब्रह्मार्थः। यद्यपि हकारादेः शब्दाद्यर्थकत्ववत् इन्द्रियाद्यर्थकत्वं नोक्तम् तथापि स्वरव्यञ्जनभेदेन सप्तत्रिंशत्प्रभेदिनो। 'सप्तत्रिंशत्प्रभेदेन षट्त्रिंशतत्त्वरूपिणी। तत्त्वातीतस्वभावाऽत्र विद्येषा भाव्यते मया।' इति वचनबलात्तथा कल्पनीयम्।

यत्तुसप्तत्रिंशद्वर्णानां सप्तत्रिंशति-तत्त्वेषु क्रमेण छक्तिरस्त्वित्याहुस्तन्न, हकारादौ लक्षशक्तित्यागस्य शक्त्यन्तरस्वीकारस्य चापत्तेः। एकस्याऽने-कार्थत्वं तु न दोषः, एकत्र शक्तिरन्यत्र लक्षणेति सुवचत्वात्। न च युगपद्-वृत्तिद्वयविरोधः, एतद्वचनबलादेव सप्तत्रिंशत्त्वस्य शक्त्यावच्छेकत्वाङ्गी-कारेण पूर्ववत्तस्यादोषत्वात्। प्रमाणप्रमितत्वाविशेषादनेकार्थत्वस्यापि हर्यादिपदवदविरोधाच्च। लक्षशक्तिपरित्यागस्तु सर्वथाऽप्रामाणिकः यद्यपि पूर्वविद्यायामष्टपञ्चाशद्वर्णा उक्ताः, कथमिह सप्तत्रिंशत्त्वेन गण्यन्त इति भवत्यशङ्का, तथापि तथाप्यस्याः संख्यायाः पदगतत्वेनोपपत्तिर्वाच्या।

ननु विभक्त्यन्तस्यैव पदत्वात्कथमिह पदभाक्त्वमितिचेन्न, अर्थवत्त्वेन प्रत्यक्षरं प्रातिपदिकसंज्ञाया सुबुत्पत्तौ सुपां सुलुगिति लोपस्वीकारेण विभ-क्त्यन्तरूपपदसत्त्वात्। न चैवं ककारेषु जस्त्वापत्तिरिति वाच्यम्, किति-मिति इत्यादिज्ञापकैरेकाक्षरपदे तदनित्यताया ज्ञापनात्। एवञ्च सर्वतत्त्व-तत्त्वातीतवस्तुप्रतिपादकत्वात् सर्वस्वरूपेयं विद्या। यतो जन्यजनकयोर्भेदा-भावात् वाच्यस्य वाचकेनापि भेदाभाव इति ब्रह्मणि जगतोऽभेदः। जगति च विद्याभेद इति सम्प्रदायार्थः।

परमशिवस्य निष्कलता तदितरसर्वपदार्थाभावः, तदितरस्य सर्वस्यापि दुःखजनकत्वात्। 'द्वितीयाद्वै भय भवती', ति श्रुतेरिति प्रथमकूटार्थः। तेन सह गुरोरभेदभावनादार्ढ्येन तदभेदः सिद्ध्यतीति द्वितीयकूटार्थः। तत्करु-णातः स्वकृताऽनवरतभक्तिपूर्वकदृढतरसेवासम्पादितप्रसादजन्यगुरुकरु-णाकरम्बितकटाक्षनिरीक्षणबलात् स्वस्मिन्नपि साधके ब्रह्माभेदः सिध्यतीति तृतीयकूटार्थः। स्वस्य गुरुद्वारा शिवगर्भे प्रवेशसम्पादकत्वादेतज्ज्ञानस्य विषयः शिवगुर्वात्मैक्यं निगर्भार्थपदवाच्यम्।

"गणेशग्रहनक्षत्रयोगिनीराशिरूपिणीम्।
देवीं मन्त्रमयीं नौमि मातृकां पीठरूपिणीम्॥"

भगवत्या गणेशादिषट्कात्मत्वमुक्तम्। तत्र निरुपमतेजोमय्याः स्वस्या मरीचिरूपाणामावरणदेवतानामीशत्वात् श्रीराजराजेश्वरी त्रिपुराम्बैव गणे-

शेत्युच्यते। ताश्च देवता एकादशोत्तरशतसंख्याकाः, तन्त्रभेदेनान्या अपि प्रतिपादिताः। इच्छाज्ञानक्रियेति शक्तित्रयसमष्टिरूपत्वात् गुणत्रयाढ्यत्वात् अनिलेन्दुरविनेत्रत्वात्रवभिर्योगात् पराम्बैव ग्रहरूपोच्यते। इन्द्रियदशके नान्तःकरणचतुष्केण शब्दस्पर्शादिवचनादानादिविषयदशकेन गुणत्रयसाम्यावस्थारूपया प्रकृत्या सुखदुःखमोहमूलैः सत्त्वरजस्तमोभिर्गुणैः पुरुषेण च सप्तविंशतिसंख्याकत्वान्नक्षत्ररूपत्वमप्यस्याः। इन्द्रियादिनिरुक्तसप्तविंशतितत्त्वरूपेण पराम्बाया एव प्राकट्यम् इति सप्तविंशतिसंख्यातौल्येन नक्षत्ररूपत्वम्। अमृतादितत्तद्देवतोपलक्षकैः षोडशस्वरैः, कालरात्र्याद्युपलक्षकैः कादिठान्तैर्द्वादशवर्णैः, डामर्याद्युपलक्षकैः डादिफान्तैर्दशवर्णैः, बन्धिन्याद्युपलक्षकैः बादिलान्तैः षड्भिः, वरदाद्युपलक्षकैः वादिशान्तैश्चतुर्भिः, हंसवतीक्षमवत्योरुपलक्षकाभ्यां द्वाभ्यां हक्षाभ्यां वर्णाभ्यां वेष्टिताभिरमृताद्यावृताभिर्डाकिनी-राकिनी-लाकिनी-काकिनी-साकिनी-हाकिनीभिः त्वगसृङ्मांसमेदोऽस्थिमज्जाधिपतिभिर्विशुद्धचनाहतमणिपूरस्वाधिष्ठानमूलाधाराज्ञाचक्राणां तत्तद्देवतावर्णशक्तिसमानसंख्याततत्तदीयदलनिविष्टतावत्तावत्संख्याकदेवीसंवृत्तानां कर्णिकासु निविष्टाभिर्घटितविग्रहा त्रिपुराम्बायोगिनीत्युच्यते।

पञ्चभिर्नाग-कूर्म-कृकर-देवदत्त-धनञ्जयैः, पञ्चभिः प्राणापानव्यानोदानसमानैर्जीवात्मपरमात्मभ्याञ्च द्वादशात्मकत्वाद्राशिरूपिणी पराम्बापीठानां गणेशादिसमानसंख्याकत्वात्तदात्मकत्वोक्त्यैव तदात्मकत्वोक्तिः।

यथा भगवती श्रीगणेशादिरूपिणी तथैव श्रीविद्यापि गणेशादिरूपिणी। अकारादिषोडशस्वरात्मकं शक्तिकूटं, कादितान्ताक्षरात्मकं कामराजकूटम्, थकारादिसान्ताक्षरात्मकं वाग्भवकूटम्। व्यष्टिसमष्टिभेदेन परादिवाक्चतुष्टयञ्चैतत्। तथाच शब्दरूपस्यगणस्येशत्वाद्गणेशरूपिणी श्रीविद्या।

बिन्दुनादविनिर्मुक्तमेकं कूटम्, बिन्दुरूपञ्चैकम्; नादरूपञ्चैकम्। तथैव प्रतिकूटं त्रय त्रयमिति बिन्दुत्रयनादत्रयतदन्यत्रयैः कूटत्रये नवत्वयोगाद्ग्रहत्वं विद्यायाः।

सम्प्रदायार्थप्रकरणे पञ्चदश्या सप्तविंशद्वर्णा उक्ता । तेषु दशाकाराणां स्वव्यञ्जनैरपार्थक्येन गणनात् दशसङ्ख्याया बाधे सप्तविंशतिरवशिष्यन्ते । तेन नक्षत्रात्मकत्वं सिद्धं विद्यायाः । तदुक्तम्—

"हृल्लेखात्रयसंयुक्तैस्तिथिसंख्यैस्तथाऽक्षरैः ।
अन्यैर्द्वादशभिर्वर्णैरेषा नक्षत्ररूपिणी ॥ इति ।

हकाररेफकामकला बिन्दुनादैर्हृल्लेखायाम् एकैकस्याः पञ्चाक्षराणि, तिसृषु पञ्चदशाक्षराणि—'क ए ई ल ह स क ह ल सकल' इति सम्मेलनेन सप्तविंशत्यक्षराणि सम्पद्यन्ते तिसृभिर्हृल्लेखाभिः तद्रहितैः त्रिभिः कूटैश्चेति षड्भिर्योगात् श्रीविद्या योगिनी सम्पद्यते । तिसृणां हृल्लेखानां त्रयाणां कूटानाञ्च योगाच्छ्रीविद्या योगिनीति हृदयम् । तिसृणां हृल्लेखानां पूर्ववर्णैः एकारैरपार्थक्येन गणनात् द्वादश सङ्ख्याकावयवशालित्वाद्राशिरूपाऽप्येषा । पञ्चदश्या लत्रयनिष्कासनेन द्वादशसङ्ख्या एव गणेशादिषट्कत्वस्य विद्याया देव्यभेदसाधकत्वे स्थितेऽपि विद्याया देवीरूपान्तरत्वस्य वचनबलात् सिद्धत्वेन तदभेदाद् गणेशादिरूपता ।

एवं चक्रराजेऽपि गणेशादित्वम् । चतुरस्राभिस्तिसृभिर्वर्तुलाभिस्तिसृभिः रेखाभिश्चतुर्विंशतिदले पञ्चचत्वारिंशत्कोणैर्घटनाच्चक्रे गणेशत्वम् । त्रैलोक्यमोहनाद्यं सर्वानन्दमयान्तैर्नवभिश्चक्रैर्ग्रहत्वं चक्रराजे । वृत्तत्रय-धरणीत्रयमन्वस्राणां विभज्य १४ गणनेन विंशतिः, सप्तभिरितरैस्त्रैलोक्य-मोहनसर्वसौभाग्यदायकातिरिक्तैश्चक्रराजे सप्तविंशतिसङ्ख्यायोगान्नक्षत्ररूपत्वम् । बिन्दुत्रिकोणवसुकोणाः संहृतिचक्रम्, द्वे दशारे चतुर्दशारश्च स्थितिचक्रम्, अवशिष्टं सृष्टिचक्रमित्येतत्त्रिप्रकारत्वं चक्रसङ्केते स्पष्टम् । तथाच—स्थितिसंहृतिचक्रे द्वे द्वे पद्मे वसुषोडशदले वृत्तमेकं, भूगृहञ्चैकमिति षड्भिर्योगाच्छ्रीचक्रं योगिनीरूपम् ।

स्वाभिमुखाग्रत्रिकोणानि शक्तय उच्यन्ते । तानि पञ्च पराङ्मुखाग्रत्रिकोणान्यनला उच्यन्ते । तानि चत्वारि बिन्दु पद्मद्वयगर्भितं वृत्तं भूगृहञ्चेति द्वादशानां घटनाच्चक्रस्य राशिरूपताऽपि । चक्रस्य विद्याधारजन्यत्वात्तदभेदस्य सिद्धत्वात्तेन हेतुनाऽपि चक्रराजस्य गणेशादि रूप-

त्वम्, देव्या रूपान्तरत्वाच्च तद्रूपता सिद्धयति। पीठरूपतापि गणेशादीनां पञ्चानां मेलनेन पञ्चपञ्चाशत् संख्यासम्पत्तेः। यदपि मातृकासंख्यानि पीठानि मातृकाश्चैकपञ्चाशत्संख्याकाः पीठानि कामरूपादिच्छायाच्छत्रान्तान्येक-पञ्चाशत्संख्याकानि, तथापि ओ (ओड्याण) जा (जालन्धर) पू (पूर्णगिरि) का (कामगिरि) नां पीठाना प्राधान्येन पुनर्गणानात् पञ्चाशत्संख्याकानि पीठानि सम्पद्यन्ते। गणेशादीनाञ्च सम्मेलनेन पञ्चपञ्चाशत्संख्या सम्पद्यते। तत्र गणेशः एकः, ग्रहा नव, नक्षत्राणि सप्तविंशतिः, योगिन्यः षट्, राशयो द्वादशेति। वरिवस्यारहस्ये तदुक्तं विस्तरेण—

"यावन्मातृकमुदितान्येकसमेतानि पञ्चाशत्। पीठानि पुनर्गणितान्यो, जा, पू, कानि चत्वारि॥ गणपग्रहभादीनां शशि-निधितारर्तुसंख्यानाम्। मेलनतः पीठानि ज्ञेयान्येतेषु पञ्चपञ्चाशत्।" इति।

चक्रराजस्य विद्याक्षरजन्यत्वं कथमित्युच्यते—ककारत्रयात् ईकाराच्च महाबिन्दुमयं सदाशिवासनं जायते। तदुक्तम्—

"इच्छाज्ञानक्रियारूप,—मादनत्रयसंयुतम्।
सदाशिवासनं देवि महाबिन्दुमयं परम्॥"

तदर्थस्तु—इच्छादयस्तिस्रः शक्तयो रूप्यन्ते यस्मात् स ईकारः माद-नान्तककाराणां त्रयञ्चेत्येताभ्यां संयुतं जनितं महाबिन्दुमयं सदाशिवासनं ब्रह्माविष्णुरुद्रेश्वराः पादाः, फलकं सदाशिवः, तादृशसर्वानन्दमयं चक्रम्। अथवा, इच्छाज्ञानाक्रियारूपाश्च ते मादनाश्च त्रयश्चेति द्वन्द्वः। अत्र त्रयशब्देन बिन्दुत्रयात्मकत्वादीकारो ग्राह्यः। सर्वथाऽपि ककारत्रयात् ईकाराच्च बिन्दूत्पत्तिः सर्वसिद्धिप्रदसर्वरोगहरात्मकचक्रद्वयमपि मिलित्वा नवयोन्या-त्मकं भवति। तच्च तिसृभिर्लज्जाभिर्जातम्। अत्र यद्यपि हकाररेफईकार-बिन्दुनादैश्च ह्ल्लेखात्रयस्य सम्मेलने पञ्चदशाक्षराणि भवन्ति। तथापि बिन्द्वादीनां ईकारैः सह मेलने प्रतिह्ल्लेखं हकारो रेफ ईकारश्चेति त्रय-मेवेति नवाक्षरसमूहेनैव नवयोन्यात्मकस्य चक्रद्वयस्य जनिः सर्वरक्षाकर-

सर्वार्थसाधक—सर्वसौभाग्यदायकाख्य स्थितचक्रत्रित्रय तिसृभि शक्तिभि त्रिभिरनलैर्हकारद्वयेनैकादशस्वरेण च समुत्पन्नम्। तदुक्तम्—

"मण्डलत्रययुक्तन्तु चक्रं शश्यनलात्मकम्।
व्योमबीजत्रयेणैव ॥

अत्र मण्डलत्रयेति दशारद्वय चतुर्दशारञ्चेत्यभिप्रेतम्। व्योमबीजत्रयेण इत्यत्र व्योमबीजे त्रयञ्चेति विग्रह। त्रयपदेन कोणत्रयात्मकत्वात् एकार, बीजपदेन हकारौ ग्राह्यौ। अथवा, व्योमनी च बीजञ्चेति विगृह्य व्योमनीति हकारद्वय, बीजपदेन एकार, तस्य ब्रह्माण्डकटाह प्रति बीजभूतत्वात्। हादिपक्षे तु व्योमबीजत्रयेणेति हकारत्रयमेव ग्राह्यम् इति न व्याख्याक्लेश। सर्वसंक्षोभणसर्वाशापरिपूरके सकाराभ्या जनिते। उक्तञ्च सरोरुहद्वयञ्च लार्कं। शार्कं सकाराभ्यामित्यर्थ। अक्षीणि रतिवत् बहुवचनम् लकारैश्चतुरस्राणि जनितानि इति विद्याक्षरैश्चक्रजनि। देवताविद्याचक्रत्रितयेन गुरोरभेद। तेन गणशादिषड्रूप श्रीगुरु, तत्प्रसादेन स्वय साधकोऽपि षडरूप।

'देव्या देहो यथा प्रोक्तो गुरुदेहस्तथैव च।
तत्प्रसादाच्च शिष्योऽपि तद्रूप सम्प्रकाशते॥'

इत्युक्तत्वात्। अत्र यद्यपि गणपदस्य समुदायार्थस्य समुदायिसापेक्षत्वेन समुदायिना देवणाक्षररेखाणा भेदे तद्भेदस्यावश्यकत्वं नक्षत्रत्वादेरपि सख्यामात्रस्यानुगमकत्वेऽपि सख्यावता विरुद्धधर्माधिकरणत्वेन भेदस्य सख्यावता सम्मतत्वेन भिन्नाभिन्नत्वात्तेन च नैकस्यापि धर्मस्याभेदव्यापकत्वेनेति कथमभेद स्यादितीय शङ्का समुदेति, तथापि वचनबलादेव समुदायिना सङ्ख्यावताञ्चाभेदस्य सिद्धत्वात् समाधानम्। उपक्रमादिनिर्णीततात्पर्यकस्य शब्दस्य प्रत्यक्षादिनिखिलप्रमाणेभ्योऽपि बलवत्तायाश्चन्द्रप्रादेशिकत्वभ्रमादावन्यत्र चौपनिषदैर्बहुतर साधितत्वात्। इत्थं निरुक्ता विद्या चक्रं गुरु स्वयञ्चेति पञ्चानामपि भेदभावो मन्त्रस्य कौलिकोऽर्थ।

सर्वरहस्यार्थ उच्यते—ककारादिभिर्द्वादशभिरानुलोम्येन मकारादिभि प्रातिलोम्येन द्वादशभिश्च युक्ता सूर्यस्य तापिन्याद्यो द्वादश कला, पौन-

शभिः स्वरैर्युक्ताः सोमस्यामृतादयः षोडशकलाः, यकारादिभिर्दशवर्णैर्युक्ता वन्हेर्धूम्राचिरादिकलाः। एवं, रविशशिवह्निकलाभिराकीर्णैः पञ्चाशद्भिर्वर्णै रभिन्नाकुलकुण्डलिनी बिसतन्तुतनीयसी विद्युत्पुञ्जप्रख्या मूलाधारस्थपद्म-कर्णिकास्थशृंगाटरूपा त्रिकोणादुपरि विन्दुरूप ज्योतिर्लिङ्गमावेष्ट्य सार्धत्रिवलयाकारेणाधोमुखी समुपविष्टा योगमर्यादया योगिभिरूर्ध्वमुख-तयोत्थाप्यते। सा चोत्थिता मूलाधारानाहताज्ञाचक्रेषु वह्निसूर्यसोममण्ड-लानि भित्वा व्योम्नि ललाटोर्ध्वप्रदेशे विद्यमानस्य चिच्छशिमण्डलस्याधो-मुखसहस्रारकर्णिकारूपस्य मध्ये स्थितयाऽकुलकुण्डलिन्या सङ्गम्य ततोऽमृत-पूरं स्रावयित्वा डाकिन्यादिमण्डलान्याप्लावयन्ती स्वयमपि तत्पानमत्ता भूत्वा पुनस्तेनैव सुषुम्नामार्गेण परावृत्य स्वस्थाने सुखं स्वपिति। सर्व-मेतद्योगगम्यम्। अन्येषान्तु परोक्षज्ञानगोचर एव ईदृश्याः कुण्डलिन्याः मातुर्विद्यायाः स्वस्य चाभेद इति रहस्यरूपोऽर्थः।

महातत्त्वार्थः प्रोच्यते—जातिगुणक्रियासम्बधादिशून्ये वाचामगोचरे सर्वेन्द्रियागम्ये मनसोऽप्यविषये वेदान्तमहातात्पर्यविषये शिवादिक्षित्यन्त-षट्त्रिंशतत्वातीते महतो महीयसि तथैवाणोरणीयसि निरुक्तलक्षणव्यो-म्नोऽप्युपरि स्थितिमति उपासनार्थकल्पितस्थानविशेषोपलक्षिते विश्वाधि-ष्ठाने स्वप्रकाशे चित्सुखस्वरूपे परे ब्रह्मणि स्वात्मा नियोज्यः, प्रत्यक् चैतन्याभिन्नपरब्रह्मावबोधेन भेदकाज्ञाननिवर्तनद्वारा तदात्मनावस्थिति-र्विधेया, 'ब्रह्म वेद ब्रह्मैव भवति' इति श्रुतेः। सकलतत्वमूलभूतत्वादयं महातत्त्वार्थ उच्यते।

नामार्थशब्दरूपार्थौ चोच्येते—तत्तद्वर्णार्थत्वात्तद्वर्णस्वरूपा च श्रीविद्ये-त्येव नामार्थशब्दरूपार्थौ। विद्यायामष्टपञ्चाशद्वर्णाः सप्तत्रिंशद्वर्णाः पञ्चाशद्वर्णा विभिन्नरीत्या गृह्यन्ते। सर्वेषां ब्रह्मवाचकत्वेन सामानाधिकरण्येनान्वयः, पक्षत्रयेऽपि ककारादीनामन्यतमस्य ब्रह्मवाचकत्वाद् अन्येषां वर्णानां वैयर्थ्य-परिहारस्तु विश्वप्रकाशकोशादिरीत्या तत्तदक्षराणामनेकार्थवाचकत्वेन योग्यतानुसारेणार्थकरणात्कार्यं। भूयोऽपि पथ्यं वक्तव्यम् इति रीत्या

केषुचित्स्यलेषु पौनरुक्त्य न दोष । एवञ्च सर्वेषामक्षराणा तत्तद्वाचकत्वेन रूढ्यैव प्रत्यक्षर सोऽर्थोपस्थापनावश्यकत्वेन प्रातिपदिकमात्रावशेषाद्वोपासकजनेषु प्रसिद्धत्वाद्वा सम्भाव्यत्वाद्वा परिभाषिकार्थरूपत्वाद्वा परिपक्वार्थरूपत्वाद्वा नामार्थ इति सज्ञा ।

ननु ककारादिस्वरूपत्व नामत शब्दाभिन्नत्वम् । तथा च न स ककारस्यार्थं, शब्दस्वरूपे शक्त्यभावात् । नहि घटमानय इत्यादौ घटशब्दस्यानयनक्रियान्वय । अत एव न शब्दार्थयोरभेदपक्षोऽपि युज्यते वह्न्यादिशब्दोच्चारणे मुखदाहाद्यापत्तेश्चेति चेन्न, शब्दस्य स्वरूपेऽपि शक्तेस्तन्त्रवार्त्तिकादावुक्तत्वात् । भर्तृहरिणाप्युक्तम्—

'ग्राह्यत्व ग्राहकत्वञ्च द्वे शक्ती तेजसो यथा । तथैव सर्वशब्दानामेते पृथगवस्थिते ॥' (ब्र० का०) तथा ककारादिवर्णरूपत्वादिमन्त्रार्थं । अत्र शब्दस्वरूपस्यैवार्थत्वेन वर्णनाच्छब्दरूपाथाऽयमिति व्यपदिश्यते' इति ।

नामैकदेशार्थो यथा 'ककाररूपा कल्याणी' इत्यादिना त्रिशत्या पञ्चदशाक्षर्या एकैकनामाक्षरमादित कृत्वा तादृशनामानि प्रत्यक्षर विंशतिरुक्तानि । तान्येव त्रीणि शतानि भवन्ति । तानि च मन्त्राक्षराणामर्थप्रकाशनार्थं प्रवृत्तानि । तथा च ककारस्य 'ककाररूपा कल्याणी कल्याणगुणशीलिनीत्यादयो विंशतिरर्था । तेषु प्रसिद्धकोषव्याकरणादिरीत्या शक्तेरभावादेतद्बलादेव कल्पनस्यार्थापत्तिशरणत्वात् नामैकदेशे नामग्रहणमिति भीमो भीमसेन, सत्या सत्यभामा इत्यादौ प्रसिद्धम् । तत्र च ककारादिनाम्नामानन्त्यात्ककारस्याप्यनन्तार्थत्वे प्राप्तस्य नियम —एत एवार्था नान्य इति । तेषु च प्रत्यक्षरं प्रथमनाम्ना नामार्थशब्दार्थरूपार्थाभ्या पौनरुक्त्यादिहैकोनविंशतिरेवार्था विवक्षिता । तथा च नामैकदेशार्थोऽप्येकोनविंशतिविध सम्पन्न ।

शाक्तार्थो द्विविध —अवयवार्थ शक्तिसमूहार्थश्चेति । तत्रावयवार्थो नाम देव्या अवयवाना वर्णनम् । विद्याया वाक्कूटेन किरीटमारभ्य कण्ठाधःपर्यन्तविग्रह प्रतिपाद्य, कामराजकूटेन कण्ठाध कटिपर्यन्तविग्रह प्रति-

पाद्य', शक्तिकूटेन कट्यध' पादाग्रान्तो देह प्रतिपाद्य । तत एव वाच्य-वाचकयोरभेदविवक्षयोक्त सहस्रनामसु 'श्रीमद्वाग्भवकूटैकस्वरूपमुखपङ्कजा। कण्ठाध. कटिपर्य्यन्तमध्यकूटस्वरूपिणी। शक्तिकूटैकतापन्नकट्यधोभाग-धारिणी। मूलमन्त्रात्मिका मूलकूटत्रयकलेवरा' इति।

शक्तिसमूहार्थ —वेधोभारत्यो, माधवलक्ष्म्यो, रुद्रपार्वत्यो रेफान्तवर्ण पट्कस्यार्था। हृल्लेखाया हकाररेफयोर्विभज्य गणनात् प्रथमकूटे कामकलाया प्राक्पड्वर्णा भवन्ति, ब्रह्माद्या सकला अपि कामकला एव, न तत पृथक्। तत एव ईकारेण सामानाधिकरण्यं, प्रत्यक्षर विद्यमानाना सुपा लोप, वाक्ये संहिताया अविवक्षणात् ईकारेण सह न सन्धि। प्रथमकूटस्य यावा-नार्थ' तावानेव द्वितीय-तृतीयकूटयोरप्यर्थ। पर द्वितीयकूटमध्यस्थो हकार तृतीयकूटस्य प्रथमभागे सकारात्पूर्वं योजनीय। तेन तयोरपि कूटयो प्राति-स्विकं रेफान्ता वर्णा षडेव भवन्ति। ततश्चोक्तरीत्यैवार्थवर्णनम्। अत्र प्रत्यक्षरमेकैकत्र शक्ति तेन शक्तानामक्षराणामर्थ शाक्तार्थ।

कादिविद्याया ककारास्त्रय, हकारौ द्वौ, तेषा शिव एवार्थ, लकारा स्त्रय, सकारौ द्वौ तेषा शक्तिरर्थ। अतएव कामबीजे ककारलकारयो र्योग, पराप्रासादे हकारसकारयोर्योग। शुद्धयोरचो द्वितीय-तृतीययोरपि शक्तिरर्थ। हृल्लेखाया उभयसामरस्यात्मक परब्रह्मार्थ। तत्रत्यव्यो-माग्नितुरीयस्वरबिन्दुभि क्रमेण प्रकाशविमर्शसामरस्यतादात्म्यापन्नब्रह्म वार्थो बोध्य। त्रिशत्या तथैवोक्तम्—

> 'कत्रयं हद्वयञ्चैव शैवो भाग प्रकीर्तित।
> शक्त्यक्षराणि शेषाणि ह्रीङ्कार उभयात्मक॥ इति।

समस्तार्थ —कन्यते प्रकाश्यतेऽनेनेति क प्रकाशकत्व ककारस्यार्थ। औणादिकडप्रत्ययेन निष्पन्नम्। ईयते अधीयतेऽनेनेति ए वृद्धि। इङ् अध्ययने इति धातुरधिपूर्वोऽपि। प्रकृत आर्षत्वाद् तद्विमोक, क्विपि कृते कित्वेऽपि गुण, अध्ययनकरण वृद्धि। कर्मधारयेण प्रकाशमाना वृद्धिरिति तयोरर्थ। ईयते व्याप्नोतीति ई। सर्वत्रासन्धिरार्ष। तस्य लहरी आधि-

मयम्। हकारोत्तरवर्तिनोऽकारस्य लोपे ल्ह्री। माङ्माने इति धातो क्विपि णिचि टिलोपे म् इति रूतम्। तथा च तन्निर्माणम् मकारार्थ। प्रकाशमानसूक्ष्ममतिव्यापनाधिवयनिर्माण प्रथमकूटार्थ। हन्यतेऽनेनेति ह शौर्यम्। सीयते सूयते इति वा स द्रव्यम्, स्यते सुनोतेर्वा। काम्यते इति कम् स्रक्चन्दनवनितादिकम्। हान ह। हसकाना ह ओहाङ्गतौ। तस्य लहर्याधिक्यम्। ईयते इति ई कीर्त्ति। ल्ह्री इत्यनेन प्रश्लिष्ट। तन्निर्मातीति म्। तथा च शौर्यधनस्रक्चन्दनवनितादिप्राप्त्यतिशयस्य कीर्तेश्च निर्माणमिति द्वितीयकूटार्थं। कूटद्वयस्य द्वन्द्व। एते निर्माणे सम्यक् कलयतीति सकला। समिति मकारलोप। हरति निखिल जगदिति ह्र सर्वजगत्संहर्त्री। ई दीप्तौ इति दीप्त्यर्थक ईकारश्च तत्र प्रश्लिष्ट। सृष्टिस्थितिदीप्तिकर्तृत्वं तदर्थं। हकारेकारयो कर्मधारये यणि ह्री उपलक्षणविधया पञ्चकृत्यकर्त्रीत्यर्थं। अथवा हरति सर्व विपयीकरोतीति ह्र। क्विप् आगमस्यानित्वात् न तुक्। तच्च दहराकाशम्। तत्र ईयते प्रकाशते इति ह्री निर्माणार्थक मकार। तेन ह्रीकारपदान्तस्य कर्मधारय। मकारास्यानुस्वारत्वम्। चरमकूटे त्वनुस्वार एव विशेष्य। ततश्च प्रकाशमानसूक्ष्मबुद्धिव्यापनशौर्यधनस्त्रीयशसामाधिक्यकर्तृ, निखिलजगत्सृष्ट्यादिकर्तृ, दहराकाशवर्ति, नादरूपं, चिद्रूप, ब्रह्मेति समस्तमन्त्रार्थ सिद्ध।

स्यतेरन्तकर्मवाचकत्वेऽप्यत्रोपभोगार्थकत्वम्। अध्ययनार्थकस्यङोऽत्राधे विमोक। हरीत्यत्राकारलोप। निमाणार्थकस्य माङ्माने इत्यस्यानुस्वारत्वादिकम्। धातोर्बह्वर्थत्वात् बाहुलकत्वात् पृपोदरादित्वात् आकृतिगणत्वात् उणादिकल्पनात् छान्दसत्वात् सर्वमुपपादनीयम्। तदुक्त वरिवस्यारहस्ये 'धातोर्बह्वर्थत्वाद्बहुलग्रहणात् पृपोदरादित्वात्। आकृतिगणपाठेन स्वेच्छानुगुणादिकल्पनत॥ छन्दसि सर्वविधीना वैकल्पिकत्वावशादमुष्य मनो। सिद्धै न थितेर्ऽस्ति वैयाकरणानुशासनानुमति'॥ इति अयमेवार्थ किञ्चिद्विस्तरेणान्यैराचार्यैरुक्त। तथाहि—

कन्यन्ते प्रकाश्यन्ते शब्दार्थजातानि अनेनेति क। कनयतीति वा क। ईदूदेद्द्विवचनं प्रगृह्यम् इति स्मरणात् आर्षत्वात् प्रगृह्यत्वेन प्रकृतिभाव। ईयते स्मर्यत

अधीयते वा सर्वा वेदशास्त्रादिकला अनेनेति ए। इक् स्मरणे इङ् अध्ययने इत्यस्मादौणादिके विचि वेरपृक्तस्येति वलोपे गुणे निपातत्वात् प्रगृह्यत्वेन प्रकृतिभावः। क च ए च कए। शब्दार्थजालावभासिनी वेदादिशास्त्राध्ययनस्मरणप्रयोजिका बुद्धिः। ईयते व्याप्नोतीति ई। ईङ् गताविति क्विपि नियतत्वात् प्रकृतिभावः। व्यापिनीत्यर्थः। लहरीत्यस्यपरोक्षतया ल ह्रीत्युक्तम्। 'परोक्षप्रिया हि देवाः' इति श्रुतेः। सर्वप्रकाशकबुद्धिव्यापिनी लहरी ल ह्रीत्याधिक्यमर्थः। मीयते इति माङ् माने शब्दे च इत्यस्मात् क्विपि परोक्षश्रुत्या लुप्ताकारत्वेन वा अनुस्वारत्वम्। तस्य निर्माणमर्थः। तथा च क ए ई ल ह्री शब्दार्थान्वद्योतकवेदादिशास्त्राध्ययनस्मरणप्रयोजकबुद्धिव्यापनाधिक्ययुक्ता स्वप्रकाशा संवित्। अनेन धर्मात्मकपुरुषार्थसाधनब्रह्मवर्चसा असमृद्धिनिवृत्तिसम्यग्बुद्धिनिर्मितिरुक्ता। एतेनैव वाक्प्रवृत्तिजालनिमित्तत्वात् वाग्भवकूटत्वं ब्राह्मणवर्णोपास्यगायत्रीसारत्वञ्चोक्तम्। इष्टदेवताप्रकाशनात्मकत्वेन वाग्जालप्रवर्तकत्वादृग्वेदात्मकत्वम्।

हन्यते तापत्रयमनेनेति हः। तथा च शत्रुरोगादिलौकिकस्य दुष्कृतजन्यस्यामुष्मिकस्य च तापस्य निवृत्तिरुक्ता। सीयन्ते उपभुज्यन्ते सर्वधनकनकवाहनभूम्यादिसम्पत्प्रचया अनेनेति सः। स्यतेः सुनोतेर्वा अन्प्रत्यये सकलराजपरिच्छदजालमुच्यते। काम्यन्ते स्रक्चन्दनवनितादिविषयभोगा अनेनेति क ऐहिकामुष्मिकसकलविषयभोग उक्तः। हीयते प्राप्यते इति हः ओहाङ्गताविरयस्य रूपम्। हसाना हः। हसकह. तापनिवृत्त्यर्थकामभोगानां प्राप्तिः। तस्या लहरी आधिक्यम्। ईयते प्रकाश्यते कीर्तिजालं दिगन्तेषु अनेनेति ईः। गुणसन्तति। ई दीप्तावित्यस्यरूपम्। हसकह ल्हीश्च इश्च हसकल्ह्री। ताभ्यां निर्मात्री स्वप्रकाशा संवित्। धातूनामनेकार्थत्वात्। निर्माणार्थकान्मा धातोरनुस्वारस्य निपातिः। अनेनार्थकामपुरुषार्थनिर्मितिरुच्यते। तस्मादेवास्य कामराजकूटत्व क्षत्रियवर्णोपास्यमानत्रिष्टुप्छन्दःसारत्वम्। स्वकीयाभीष्टसाधककर्मजातविधायकत्वाद्यजुर्वेदात्मकत्वम्। सकलह्री सकलाभिरवयवैः शिवादितत्त्वैः चतुःषष्टिकला-

भिर्वा सहिता सकला। सम्यक्कलयतीति वा सकला। हरतीति ह्री संहृतिशक्ति । हृञ् हरणे धातो इ प्रत्यये बाहुल्याद् गुणाभावेन यणादेश । ईयते प्रकाश्यते सर्वं जगत् अनयेति ई सृष्टिशक्ति । इदन्ति सर्वेषां नियन्तृत्वे वर्तते इति इ स्थितिशक्ति । इदि परमैश्वर्ये इत्यस्मात्क्विपि व्यञ्जनलोपे रूपसिद्धि । ह्रीश्च ईश्च इश्च ह्री सवर्णदीर्घ । संहृतिसृष्टिस्थितिशक्ति । अथवा हरति विहरति इति ह्री । धातूनामनेकार्थत्वात् हरतेर्विहरणार्थात् इन् प्रत्यये ह्री । यद्वा ह् इति क्विबन्त लुप्तसकारशब्द प्रपञ्चसंहृतिवाचक । ई प्रकाश आत्मैक्यगमनम् । ह्री सकलप्रपञ्चदेहेन्द्रियादिक द्रवीकृत्य प्रकाशरूपैक्यगमकमित्यर्थ ।

अथवा ई इत्यनेन हृत्पुण्डरीकदहराकाशस्थदीपशिखामध्ये स्थितो बोधात्मकप्रकाशस्वरूपपरमात्मैव विवक्षित । 'तस्या शिखाया मध्ये परमात्मा व्यवस्थित'। सकला च सा ह्री च सकल ह्री। इष्यत अत्यन्ताभीष्टत्वेन विरिञ्च्यादिचेतनवर्गैरिति ई। निरतिशयानन्दरूपाचितिः । व्यञ्जनलोपादिभि सिद्धि । तस्य प्रमितिरनुस्वाररूपेण लुप्ताकारेण मकारेण माधातुनिष्पन्नेन बोध्यते। तथा च स्वप्रकाशनिरतिशयानन्द स्वरूपब्रह्मात्मसाक्षात्कारजननीत्यर्थं । लक्षणया स्वप्रकाशप्रकाशपरमानन्दरूपिणीत्यपि। सकल ह्री शिवादिसर्वतत्त्वात्मिकाभि कलाभि चतुःषष्टिकलाभिश्च सहिता सृष्टिस्थितिसंहृतिकारिणी सर्वनियामिका सर्वेश्वरी निरतिशयानन्दरूपिणी राजराजेश्वरी श्रीमत्सिंहासनेश्वरी त्रिपुराम्बा विवक्षिता। अथवा ह्री च तत् ईंच ह्री। सकलञ्च तत्ह्रीञ्च सकल ह्री। सकलहृदाकाशवर्तिदीपशिखान्तर्गतनिरतिशयानन्दानुभवप्रकाशिका नादात्मिकाचिच्छक्ति। अथवा म् इति नादानुकारि अव्ययम्। अनेन नादात्मकशुद्धचैतन्यरूपता उच्यते। अनेन मोक्षसाधननादलययोगानन्दानुभव उक्त । तस्मादेव शक्तिकूटत्वम्। चित्तनिरोधप्रधानत्वं वेद्योपास्यजगतीच्छन्द सारत्वञ्च। सामवेदस्य। गानप्रधानत्वेन नादविलीनचित्तत्वाद् योगस्य सामवेदात्मकत्वम्।

मन्त्रार्थ —क ए ई ल ह्री ह स क ह ल ह्रीञ्च सम्यक्कलयतीति कएईलह्री हसकहलह्री सकलह्री।

सर्वस्य मन्त्रस्यायमर्थः—शब्दार्थप्रकाशकवेदादिशास्त्राध्ययनस्मरण-प्रयोजकबुद्धिव्यापनलहरीयुक्त्या स्वप्रकाशसंविदा अनिष्टनिवारणभोगभोग्या-दिप्राप्त्याधिक्यकीर्तिजालप्रयोगकगुणसन्ततिरचयित्री सर्वतत्त्वसर्वकला-धिष्ठात्री विश्वोत्पत्तिस्थितिसंहृतिजनकमवैश्वर्योपेतानिरतिशयानन्दानुभव-प्रकाशिका निरतिशयानन्दात्मकदहराकाशस्थपरमात्मस्वरूपिणी स्वप्रकाशा चिच्छक्तिः।

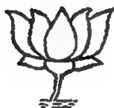
श्रयति-शक्तिरूपेण शिवमिति श्रीः। श्रीयते सर्वैर्गुणैरिति वा। श्रीयते सेव्यते परशिवेनापि या सा श्रीः। तां माति बोधयतीति। ह्रीं इति माया-बीजं हृल्लेखाया बोधकम्। क्लीं इति कामबीजं सर्वार्थप्रापकम्। ऐं इति वाग्भवबीजं सर्वार्थविद्योतकम्। सौरीति ब्रह्मविद्या स्वरूपिण्याः पराया बोधकम्। प्रणवः वाच्यार्थलक्ष्यार्थभेदेन सगुणनिर्गुणवेदान्तवेद्यपरतत्त्व-बोधकम्। पुनश्च ह्रीं इति सर्वशक्तिसर्वाधिष्ठानब्रह्मबोधकम्। श्रीमिति सर्वैश्वर्यसर्वमाधुर्यतदधिष्ठानबोधकम्। प्रतिलोमक्रमेणेमान्येव बीजानि पञ्च-दश्याः परस्तात् सान्तिबीजैः सहित कूटत्रयं षोडशी सम्पद्यते। सगुणार्थश्च कः पजापतिः, एकारो विष्णुः। तदुत्तरवर्तिनमकारं प्रश्लिष्य ईशास्तदर्थो ग्राह्यः। ईड्यते इति इड्। एतस्य ऋग्वेदात्मकत्वात् अज्झयमध्यगतस्य डकारस्य स्थाने लकार आदेशः। 'अग्निमीळे पुरोहितमित्यादि'वत्। द्वयोश्चास्यस्वरयोर्मध्यमेत्य सम्पद्यते स डकारो लकार इति प्रातिशाख्यम्। ततएव द्वितीयतृतीयकूटयोर्यजुःसामात्मकत्वञ्च। यद्यपि कामो योनिः कमला वज्रपाणिरित्यत्र वज्रपाणिशब्देन लकार एवोद्धृतः तथापि डलयोरभेदा-भिप्रायेणादोषः। क्वचिच्चत्रिखण्डीगतास्त्रयोऽपि मोहार्णपदेन-लकारा एवोद्धृताः। ह्रीं इति विशेष्यम्। नपुंसकं नाम ब्रह्मलक्षकम्। तेन विधिहरि-गिरिशैरीड्य ब्रह्मेति प्रथमकूटार्थः। हसः हास्यम् अर्थं आदित्वादचि हसो हास्ययुक्तः को मुखं यस्य, अथवा हासस्यानन्दजन्यत्वात् आनन्दे हसपदस्य लक्षणा। कश्च हश्च कहौ चन्द्रौ सूर्यौ लौ नेत्रे यस्य तत् कहलम्। 'मुखे ऽपि कः स्मृतः' 'ह- कोपे वरुणे चन्द्रे' 'इन्द्रे लोचने लः स्यात्' इत्ये-

पाशार्णनिघण्टुः । हकारलकारयोः समंधारणः । अखण्डानन्दचिद्रूपता । ततो हृदयवदनं खेन्दुनेत्रम् आनन्दचिद्रूपं वा विधिहरिगिरिशोत्पत्ते तेनामिता-नन्दं चिद्ब्रह्मेतिद्वितीयकूटार्थः । अत एव प्रसन्नवदनं खेन्दुनेत्रम् आनन्दचिद्रूपं प्रत्यासौ विरिञ्च्यादिपन्थम् शान्ताभिः सहितं सान्द्रं ह्रीं ब्रह्मेति तृतीयकूटार्थः । गुणत्रयनाद्विधाया सगुणार्थं ।

महावाक्यार्थं—विधिहरिगिरिशबोधका क ए ई (प्रतिलोमाक्षराः) एते वर्णाः सृष्टिस्थितिभङ्गजनकदेवतावाचकत्वात् तल्लक्षणाः । गायत्र्यादिन्यायेन ईश्वर-वाचीकारः सदाशिववाचको हकारः (सकारः) ताभ्यां तिरोधानानुग्रहौ लक्षितौ । एतेन 'यतो वा इमानि भूतानि जायन्ते' इत्यादिश्रुतिपूर्वं ब्रह्मण-स्तटस्थलक्षणमिहोक्तम् । तेन सृष्टिस्थितिलयतिरोधानानुग्रहपञ्चकृत्यकारणं ब्रह्मेति प्रथमकूटार्थः । हस आनन्द शः सत्यं हं अनन्तं ल ज्ञानं 'सत्ता यश्च युधेऽज्ञोन' इति कोशात् । सच्चिदानन्दस्य सकारस्य सन्नित्वमात्सत्वं यथार्थकत्वमिति रीत्या सत्यमर्थः । हकारस्य व्योमबीजत्वात्तस्यानन्तत्वा-दानन्त्यमर्थः । लोचनवाचित्वाल्लकारस्य ज्ञानमर्थः । एतेन स्वरूपलक्षणं ब्रह्मद्वितीयकूटार्थः । एवं ब्रह्म तटस्थस्वरूपलक्षणयुगेन निर्णीय तदभेदो जीवगणे तृतीयकूटेनोच्यते । सकारादि जीवपरम् । शक्तिबीजं ब्रह्मपरम् । सामानाधिकरण्यात् लक्षिताशुद्धयोरभेदो बोध्यते । यथा 'तत्त्वमसीति' महावाक्ये तत्त्वंपदार्थयोरेकविभक्तिकत्वरूपसामानाधिकरण्याद् अभेदो बोध्यते स च वाच्यार्थयोरसम्भवात् भागत्यागलक्षणया लक्ष्यपदार्थयोरभेदो बोध्यते । सर्वथा तत्पदवाच्य सृष्ट्यादिकृत्यपञ्चकजनक स एव यतो वा इमानीति श्रुत्युक्त । लक्ष्यार्थस्तु सर्वकृत्यातीत निर्विशेष ब्रह्म । तदपि 'सत्यं ज्ञानमनन्तं' ब्रह्मेत्यत्रोक्तम् । एवं त्वंपदवाच्यार्थो जाग्रदाद्यवस्था-पञ्चकविशिष्ट । स च तद्यथास्मिन्नाकाशे श्येनो वा सुपर्णो वा विपरिपत्य श्रान्तः संहृत्य पक्षौ संल्यायैव ध्रियत एवमेवायं पुरुष एतस्मा अन्ताय धावति तद्यथा महामत्स्य इत्यादिभिरुक्त । लक्ष्यार्थस्तु अवस्थातीतं ब्रह्म तदपि योऽयं विज्ञानमयः प्राणेषु हृद्यन्तर्ज्योतिः पुरुषः, न दृष्टेर्द्रष्टारं पश्ये

इत्याद्युक्तम् । एवमवान्तरवाक्यैर्वाच्यार्थलक्ष्यार्थयोर्निर्णये सति महावाक्ये लक्ष्यार्थयोरभेदबोधः । प्रकृते तृतीयकूटस्थसकलपदेन कलाभिरवस्थाभिः सहितः इत्यर्थकेन वाच्यार्थस्योक्तावपि लक्ष्यार्थानुक्तेर्न्यूनता भाति तथापि गूढद्वय-वृत्त्या त्वंपदस्य वाच्यार्थलक्ष्यार्थपरत्वेनादोषात् । तृतीयकूटेन सर्वं खल्विदं ब्रह्मेति श्रुत्यर्थो वा बोध्यते । सर्वं जगत् देवीरूपमित्यर्थः । एवं वरिवस्यारहस्ययोगिनीहृदयस्वच्छन्दसंग्रहकामकलाविलासादिरीत्या पञ्चदश्याः षोडश्याश्च संक्षेपेणार्था उक्ता इति तेन ।

श्रीराजराजेश्वरी सुप्रीताऽस्तु श्रीकरपात्रस्वामिविरचिते ।
श्रीविद्यारत्नाकरे श्रीविद्यामन्त्रभाष्यं सम्पूर्णम् ।



अथ वाञ्छाकल्पलता

श्रीगुरुभ्यो नमः। श्रीगणेशाय नमः। श्रीक्षेत्रपालाय नमः। श्रीसरस्वत्यै नमः। श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै नमः। मूलमुच्चार्य। तालत्रयं कृत्वा। मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा।

ॐ अस्य श्रीवाञ्छाकल्पलताविद्यागणेशस्य मनोर्नानामूक्तमसूहस्य, आनन्दभैरवगणकाङ्गिरसकश्यपवशिष्ठविश्वामित्रसंवनना ऋषयः, देवीगायत्रीनिचृद्गायत्रीपङ्क्त्यनुष्टुप्निचृत्त्रिष्टुब्जगत्यश्छन्दांसि, श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीमहागणपतिसम्वादाग्न्यमृतरुद्रा देवताः, श्रीं बीजम्, ह्रीं शक्तिः, क्लीं कीलकम्, मम श्रीमहागणपतिमहात्रिपुरसुन्दरीसम्वादाग्न्यमृतरुद्रप्रसादवाञ्छितार्थफलप्रसिद्धये वाञ्छाकल्पतोपस्थाने विनियोगः। इति सङ्कल्प्य।

आनन्दभैरवगणकाङ्गिरसकश्यपवशिष्ठविश्वामित्रसवननऋषिभ्यो नमः शिरसि, देवीगायत्रीनिचृद्गायत्रीपङ्क्त्यनुष्टुप्निचृत्त्रिष्टुब्जगतीछन्देभ्यो नमः मुखे, महाश्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरी गणपतिसवादाग्न्यमृतरुद्रदेवताभ्यो नमः हृदये, श्रीं बीजाय नमो नाभौ, ह्रीं शक्तये नमो गुह्ये, क्लीं कीलकायनमः आधारे, इति न्यस्य मूलेन व्यापकं चरेत्।

ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं क ए ई ल ह्रीं गणपतये हसकहलह्रीं वरवरद सकलह्रीं सर्वजन मे वशमानय स्वाहा। इति त्रिचत्वारिंशदर्णोमनुः।

ऐं क्लीं सौः श्रीमत्त्रिपुरसुन्दरी ११ ह्रीं सर्वज्ञायै ह्रां गां ब्रह्मात्मने अङ्गुष्ठाभ्यां नमः। ऐं० ११ ह्रीं नित्यतृप्तायै ह्रीं गीं विष्ण्वात्मने तर्जनीभ्यां स्वाहा। ऐं० ११ ह्रीं अनादिबोधितायै ह्रूं गूं रुद्रात्मने मध्यमाभ्यां वषट्। ऐं० ११ ह्रीं स्वतन्त्रायै ह्रैं गैं ईश्वरात्मने अनामिकाभ्यां हुम्। ऐं० ११ ह्रीं नित्यमलुप्तायै ह्रौं गौं सदाशिवात्मने कनिष्ठिकाभ्यां वौषट्। ऐं० ११ ह्रीं अनन्तायै ह्रः गः सर्वात्मने करतलकरपृष्ठाभ्यां फट्। एवं हृदयादिन्यास विधाय पुनर्मूलेन त्रिर्व्याप्य ध्यायेत्। यथा—

हेमाद्रौ हेमपीठस्थितिभमरगणैरीड्यमाना विराजत्—
पुष्पेष्विक्ष्वासिपाशाङ्कुशकरकमला रक्तवेषातिरक्ताम् ।
दिक्षूर्ध्वद्विश्चतुर्भिर्मणिमयकलशैः पञ्चशक्त्यैकविद्याम्,
स्वस्था वल्गुप्ताभिषेवा भजत भगवतीं भूतिदामन्त्ययामे ॥१॥
बीजापूरगदेक्षुकार्मुकरजा चक्राब्जपाशोत्पल—
व्रीह्यग्रस्वविषाणरत्नकलशप्रोद्यत्कराम्भोरुह ।
ध्येयो वल्लभया सपद्मकरया, श्लिष्टो ज्वलद्भूषया,
विश्वोत्पत्तिविपत्तिसंस्थितिकरो विघ्नेश इष्टार्थदः ॥२॥

धवलनलिनराजच्चन्द्रमध्ये निषण्णम्, करधृतवरपाशं साभयं साङ्कुशञ्च ।
अमृतवपुषमिन्दुक्षीरवर्णं त्रिनेत्रम्, प्रणमत सुरवन्द्यं मङ्क्षु सम्वादयन्तम् ॥३॥
स्फुटितनलिनसंस्थं मौलिबद्धेन्दुरेखा गलदमृतरसार्द्रं चन्द्रवह्न्यर्कनेत्रम् ।
स्वकरकलितमुद्रावेदणाशाक्षमालम्, स्फटिकरजतमुक्तागौरमीशं नमामि ॥४॥

(मुद्रा ज्ञानमुद्रेत्यर्थः) ।

इति ध्यात्वा, मुद्रा प्रदर्श्य—

श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरी महागणपतिसम्वादाग्न्यमृतरुद्रेभ्य लं पृथिव्यात्मकं गन्धं समर्पयामि नमः इति अङ्गुष्ठकनिष्ठिकाभ्याम् । श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीमहागणपतिसवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्य हं आकाशात्मकं पुष्पं समर्पयामि नमः इति तर्जन्यङ्गुष्ठाभ्याम् । श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीमहागणपतिसवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्य यं वाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि नमः इति अङ्गुष्ठतर्जनीभ्याम् । श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरी महागणपतिसदाग्न्यमृतरुद्रेभ्य रं वह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि नमः इति अङ्गुष्ठमध्यमाभ्या । श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीमहागणपतिसवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्य वं अमृतात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि नमः अङ्गुष्ठानामिकाभ्याम् । श्रीमन्महात्रिपुरसुन्दरीमहागणपतिसवादाग्न्यमृतरुद्रेभ्य. सं सर्वात्मकं सर्वोपचारं समर्पयामि नमः इति संहताभिः सर्वाङ्गुलीभि दद्यात् । एवं मानसोपचारैः सम्पूज्य, गुरुदेवतात्मनामैक्यं भावयित्वा । रात्रौ अन्त्ययामे सूर्योदयात्पूर्वं शनैः शनैः जपेत् ।

(१) ॐ ऐं ह्रीं श्री "ई"

(२) ॐ ऐं ह्रीं श्री परोरजसे सावदोम्,

(३) ॐ ऐं ह्रीं श्री हसकल हसकहल सकलह्रीं, प्रत्येक दशवार जपित्वा,

ॐ ऐं श्री ह्रीं ऌ क्लीं ग्लौं गं गुगुरी कएईलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं ऐं क्ली सौ २९। यदद्यकच्चवृत्रहन्नुदगा अभिसूर्यं सर्वं तदिन्द्र ते वशे २३। गं क्षिप्रप्रसादनाय गणपतये वर वरद आ ह्रीं क्रों सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा सौ. क्ली ऐं। ३६ ॥१॥

ॐ ऐं सौ २९। तत्सवितुर्वरेण्यम् भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो न प्रचोदयात् २३। ग ऐं ३६ ॥२॥

ॐ ऐ सौ २९। त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव वन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ३२। ग ऐ ३६ ॥३॥

ॐ ऐ सौ २९। जातवेदसे सुनवाम सोममरातीं यतो निदहादि वेद। स न पर्षदति दुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धु दुरितात्यग्नि ४३। ग ऐ ३६ ॥४॥

ॐ ऐं सौ २९। समानो मन्त्र समिति समानी समान मन सह चित्तमेषाम्। समान मन्त्रमभिमन्त्रये व. समानेन वो हविषा जुहोमि ४४। गं ऐं ३६ ॥५॥

ॐ ऐं सौ २९। ॥ समिद्युवसे वृषन्नग्ने विश्वान्यर्यं आ इळस्पदे समिध्यसे स नो वसून्याभर ३०। ग ऐ ३६ ॥३६॥

ॐऐं सौ २९। समानो जुहोमि ४४॥ ग ए ३६ ॥७॥

ॐऐं सौ २९। जात त्यग्नि ४३॥ ग ऐं ३६ ॥८॥

ॐऐं सौ २९। त्र्यम्ब मृतात् ३२॥ ग ऐं ३६ ॥९॥

ॐऐं सौ २२। तत्स यात् २३॥ ग ए ३६ ॥१०॥

ॐए सौ २९। यदद्य वशे २३॥ ग ऐं ३६ ॥११॥

ॐऐं सौ २९। गणाना त्वा गणपतिं हवामहे कविं कविनामुपश्रवस्तमम्। ज्येष्ठराजं ब्रह्मणां ब्रह्मणस्पत आन शृण्वन्नूतिभि सीदसादनम् ४८॥ ग ऐं ३६ ॥१२॥

ॐ भू भद्रं नो अपिवातय मन । ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आ ह्रीं क्रो प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा ॥१३॥

दमयन्तीनलाभ्याञ्च नमस्कार करोम्यहम् ।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिद ॥
ऐकमत्यं भवेदेषा ब्राह्मणानाम् पृथग्वियाम् ।
निर्वैरिता च जायेत संवादाग्ने ! प्रसीद मे ॥

इति प्रथम पर्याय

ॐऐं सौ २९। यदद्य वणे २३॥ ग ऐं ३६ ॥१॥
ॐऐं सौ २९। तत्स यात् २३॥ ग ऐं ३६ ॥२॥
ॐऐं सौ २९। त्र्यम्ब मृतात् ३०॥ ग ऐं ३६ ॥३॥
ॐऐं सौ २९। जात त्यग्नि ४३॥ ग ऐं ३६ ॥४॥
ॐऐं सौ २९। समा होमि ४४॥ ग ऐं ३६ ॥५॥

ॐऐं सौ २९। सगच्छध्व मवदध्वं स वो मनासि जानताम् । देवा भाग यथा पूर्वे सञ्जानाना उपासते ३२॥ ग ऐं ३६ ॥६॥

ॐऐं सौ २९। समा होमि ४४॥ गं ऐं ३६ ॥७॥
ॐऐं सौ २९। जात त्यग्नि ४३॥ ग ऐं ३६ ॥८॥
ॐऐं सौ २९। त्र्यम्ब मृतात् ३०॥ गं ऐं ३६ ॥९॥
ॐऐं सौ २९। तत्स यात् २३॥ गं ऐं ३६ ॥१०॥
ॐऐं सौ २९। यदद्य वणे २३॥ गं ऐं ३६ ॥११॥

ॐऐं सौ २९। अग्गेमन्यु प्रतिनुदन् परेषामदब्धो गोपा परिपाहि नस्त्वम् । प्रत्यञ्चो यन्तु निगुत पुनस्ते मेषा चित्तं प्रबुधा विनेशात् ४३॥ गं ऐं ३६ ॥१२॥

ॐ भुव मरुत्तामोजने स्वाहा ॥ १३ ॥ ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरुद्राय आं ह्रीं क्रो प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा ॥

दमयन्तीनलाभ्या च नमस्कार करोम्यहम् ।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिद ॥
ऐकमत्य भवेदेषा ब्राह्मणाना पृथग्धियाम् ।
निर्वैरिता च जायेत सवादाम्ने ! प्रसीद मे ॥

इति द्वितीय पर्याय

ॐएँ सौ २९ । यदद्य वश २३ ॥ गं एँ ३६ ॥१॥
ॐएँ सौ २९ । तत्स यात् २३ ॥ ग एँ ३६ ॥२॥
ॐएं सौ २९ । त्र्यम्ब मृतात् ३२ ॥ ग एँ ३६ ॥३॥
ॐएँ सौ २९ । जात त्यग्नि ४३ ॥ ग एँ ३६ ॥४॥
ॐएँ सौ २९ । समा होमि ४४ ॥ ग एँ ३६ ॥५॥
ॐएँ सौ २९ । समा होमि ४४ ॥ ग एँ ३६ ॥६॥
ॐएँ सौ २९ । समा होमि ४४ ॥ गं एँ ३६ ॥७॥
ॐएँ सौ २९ । जात त्यग्नि ४३ ॥ गं एँ ३६ ॥८॥
ॐएँ सौ २९ । त्र्यम्ब मृतात् ३२ ॥ ग एँ ३६ ॥९॥
ॐएँ सौ २९ । तत्स यात् २३ ॥ ग एँ ३६ ॥१०॥
ॐएँ सौ २९ । यदद्य वशे २३ ॥ ग एँ ३६ ॥११॥

ॐएँ सौ २९ । यो मामग्ने भागिन सन्तमथाभागं चिकीर्षति । अभा गमग्ने त कुरु मामग्ने भागिनं कुरु स्वाहा ३६ ॥ गं एँ ३६ ॥१२॥
ॐ स्व इन्द्रो विश्वस्य राजति ॥१३॥ ॐ ह्रीं व ■ अमृतरुद्राय आ ह्रीं क्रौं प्रतिकूल मे नश्यत्वनुकूल मे वशमानय वशमानय स्वाहा ।

दमयन्तीनलाभ्यात्र नमस्कार करोम्यहम ।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिद ॥
ऐकमत्य भवेदेषा ब्राह्मणाना पृथग्धियाम् ।
निर्वैरिता च जायेत सवादाम्ने प्रसीद मे ॥

इति तृतीय पर्याय

ॐऐं....सौः २९। यदद्य....वशे २३॥ गं....ऐं ३६ ॥१॥
ॐऐं....सौः २९। तत्स....यात् २३॥ गं....ऐं ३६ ॥२॥
ॐऐं....सौः २९। त्र्यम्ब....मृतात् ३२॥ गं....ऐं ३६ ॥३॥
ॐऐं....सौः २९। जात....त्यग्नि ४३॥ गं....ऐं ३६ ॥४॥
ॐऐं....सौः २९। समा....होमि ४४॥ गं....ऐं ३६ ॥५॥
ॐऐं....सौः २९। समानी व आकूति समाना हृदयानि वः।
समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति ३१॥ गं....ऐं ३६ ॥६॥
ॐऐं....सौः २९। समा....होमि ४४॥ गं....ऐं ३६ ॥७॥
ॐऐं....सौः २९। जात....त्यग्निः ४३॥ गं....ऐं ३६ ॥८॥
ॐऐं....सौः २९। त्र्यम्ब....मृतात् ३२॥ गं....ऐं ३६ ॥९॥
ॐऐं....सौः २९। तत्स....यात् २३॥ गं....ऐं ३६ ॥१०॥
ॐऐं....सौः २९। यदद्य....वशे २३॥ गं....ऐं ३६ ॥११॥

ॐऐं ...सौः २९। अजैष्माद्यासनाम चा भूमा नागसो वयम् जाग्रत्स्वप्नः सङ्कल्पः पापो यं द्विष्मस्तं स ऋच्छतु यो नो द्वेष्टि तमृच्छतु ४०॥ गं....ऐं ३६ ॥१२॥

ॐ भूर्भुवः स्वः शन्नो अस्तु द्विपदे शं चतुष्पदे ॥१३॥ ॐ ह्रीं वं ठं अमृतरूप्राय आं ह्रीं क्रों प्रतिकूलं मे नश्यत्वनुकूलं मे वशमानय वशमानय स्वाहा।

दमयन्तीनलाभ्याञ्च नमस्कारं करोम्यहम्।
अविवादो भवेदत्र कलिदोषप्रशान्तिदः॥
ऐकमत्यं भवेदेषां ब्राह्मणानां पृथग्धियाम्।
निर्वैरिता च जायेत संवादग्ने प्रसीद मे॥

इति चतुर्थः पर्याय-

इति जपित्वा,

गुह्यातिगुह्यगोप्त्रीत्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्।
सिद्धिर्भवतु देवेशि, त्वत्प्रसादान्महेश्वरि॥

इति जपं निवेदयेत्॥

एवं प्रत्यहं निशान्ते चतुर्वारं पठेत् ॥ सर्वैश्वर्यं भवति ॥ सर्ववेदान्तफलमश्नुते । इति शम् ॥

॥ इतिवाञ्छाकल्पलताप्रयोगः समाप्त. ॥

अथ श्रीवाञ्छाकल्पलता—विधानम्

प्रजपेदिष्टसिद्ध्यर्थं विद्याग्रहणसयुतः ।
तद्भवेद् वेदिकामन्त्रः भेदेनेत्यर्थविद्यया ॥
अष्टवारं जपेन्नित्यं सर्वाभीष्टमवाप्नुयात् ।
जपेत् षोडशसाहस्रं तर्पणाहुतियोगतः ॥२॥
श्रीविद्यायास्तु साधर्म्यं साधयेत्साधितो मनुः ।
पुरश्चर्याविधानेन साधकः सर्वदा जपेत् ॥३॥
तत्सर्वं लभते नित्यं वाञ्छाकल्पलतामनोः ।
इत्येतत्कथितं गुह्यं भुक्तिमुक्तिप्रदायकम् ॥४॥
जपेत्षोडशसाहस्रं षट्साहस्रमथापि वा ।
पायसेन हुनेद्देवि नारिकेलफलैस्तिलैः ॥५॥
असाध्य साधयेल्लोके अवश्यं वशमाप्नुयात् ।
किमत्र बहुनोक्तेन सर्वान् कामानवाप्नुयात् ॥६॥

(इतिकुमारसहितायाम्)

(तन्त्रान्तरे)

वाञ्छाकल्पलतायास्तु न होमो न च तर्पणम् ।
स्मरणादेव सिद्धिःस्यात् यदिच्छति हि तद्भवेत् ॥१॥
एकावृत्त्या वशे लक्ष्मीः पञ्चावृत्त्या वशं जगत् ।
दशावृत्त्या तथा विष्णुरुद्राद्यैर्भवेदिह ॥२॥
सार्वभौमः शतावृत्त्या भवत्येव न संशयः ।

(प्रयोगपारिजातात्)

आवर्तनत्रयाल्लक्ष्मीः पञ्चावृत्त्या वशं जगत् ।
दशावृत्त्या शिवादीनाम् देवानां शक्तिभाग्भवेत् ॥१॥
लक्षावृत्त्या सार्वभौमः दरिद्रोऽपि न संशयः ।
नार्थवादोऽथर्वणस्य वसिष्ठवचनं यथा ॥२॥
एतज्जपस्य कालस्तु रात्रौ यामत्रयावधि ।
रात्रेश्चतुर्थप्रहरात् तथा सूर्योदयावधि ॥३॥

दैवात् प्रमादाद्वा एकस्मिन् दिने जपलोपे सति अनशनेन वाञ्छा-कल्पलतामन्त्रस्य अष्टोत्तरशतावृत्तिपाठः कर्त्तव्यः ।

इति शम्

पूर्णाभिषेकविधानम्

अथ श्रीविद्यार्णवादिरीत्या पूर्णाभिषेकः

विरच्य विपुलं चक्रं मण्डपेऽतिमनोरमे।
गारीतोयभृतं कुम्भं स्थापयेच्चक्रमध्यतः॥
अन्येषु कलशानन्यान् रत्नवस्त्रसमन्वितान्।
दलेषु विधिवत्स्थाप्य तत्राऽऽवाह्येष्टदेवताम्॥
सम्यर्च्य मध्ये चान्येषु साङ्गावरणदेवताः।
शिष्यस्य जन्मनक्षत्रे प्राग्वत्तैरभिषेचयेत्॥

तत्राऽष्टगन्धचूर्णं नवरत्ननिरुक्तमृत्तिकागङ्गादिसप्ततीर्थजलमेकपञ्चाशदक्षरौषधक्वाथञ्च निःक्षिपेत् अश्वत्थन्यग्रोधप्लक्षाशोकोदुम्बराम्रपल्लवान् कल्पलतावुद्धया निधाय नारिकेलफलानि चोपरि विन्यसेत् ।

तत्राष्टगन्धवस्तूनि यथा :—

'चन्दनागुरुकर्पूरकाश्मीरै रोचनान्वितैः । ससिह्लकं जटामांसी सटीभिः शक्तिसम्भवम् । गन्धाष्टकं शुभ वश्यं शक्तिमन्त्रेषु योजयेत् ।

काश्मीरं—कुङ्कुमम् । सिह्लकं-शिलारसः । सटी-कचोरः ।

"ह्रीवेरं चन्दनं कुष्ठमगरु कुङ्कुमं मुरम् ।
सेव्यकं च जटामांसी वैष्णवं तदुदीरित्तम् ।"

ह्रीवेरं—वालकम् । सेव्यकमुशीरम् । मुरं-मोहरीति प्रसिद्धम् ।

मुरागन्धवती दैत्या गन्धाढ्या गन्धमादिनी ।
सुरभिर्भूतगन्धा च कुठी गन्धकुठी स्मृता ।
मुरा-एकाङ्गी छर्व्यु इति लोके प्रसिद्धा ।

'जलकाश्मीरकुष्ठैस्तु रक्तचन्दनचन्दनैः ।
तमालागरुकर्पूरैः शाम्भवं चाष्टगन्धकम् ॥'

जल-वालकम् ।

गन्धाष्टकस्य संयोगात्सामर्थ्याद्दैविकस्य च ।
सशक्तिकं जलं कुम्भे भवेदेव न संशयः ॥

(श्रीविद्यार्णवतन्त्र २९६)

मन्त्रवर्णौषधिनिर्मितमन्त्रवर्णसमङ्ख्याकाना गुटिकानां धारण तद्भक्षणं विलेपनम् । ताभिः पूजा । तत्क्वाथजलैः स्नानं तद्भस्मधारणं कुर्यात्तेन मन्त्रसिद्धिः । प्रपञ्चसारे ३५।५२ श्लोकः ।

एकपञ्चाशताक्षरौषधयश्च—

चन्दनं रक्तचन्दनं अगरु-कर्पूर, उशीर-कुष्ठ-वाल कुङ्कुम-केशर-कंकोल जातीफल-जटामासी-मुरा-चोरग्रन्थि गोरोचना-पत्रा-पिप्पल-विल्व-पृदिन-पर्णी-चित्रक-लवङ्ग-कत्तृण-कट्फल वन्द्रि-उदुम्बर-पाषाणभेद-पद्म शंखपुष्पी-

रोहिण-स्योनाक-बृहती-पाटल-मूषकपर्णी-तुलसी-अपामार्ग-इन्द्रवल्ली-भृङ्ग-राज-अपराजिता-तालमूली-कृताञ्जलि-दूर्वा-श्रीदेवी-कुमारी-भारङ्गी-भद्र-मुस्ता, इत्येकपञ्चाशदोषधयः क्रमादकारादि क्षकारैकपञ्चाशदक्षरवर्णानाम् ।

चन्दनकुचन्दनागरुकर्पूरोशीररोगजलघुसृणाः ।
कक्कोलजातिमांसी मुराचोरग्रन्थिरोचनापत्राः ॥
पिप्पलविल्व गुहारुणतृणका लवङ्गाह्वकुम्भिवन्दिनः ।
सोदुम्बर कश्मीरिकास्थिराब्ज दरपुष्पिका मयूरशिखा ॥२॥
प्लाक्षाग्निमन्थसिंही कुशाह्वदर्भाश्च कृष्णदरपुष्पी ।
रोहिण-टुण्डुक-बृहती-पाटल-चित्रा-तुलस्यपामार्गाः ॥३॥
शतमूलिलता द्विरेफा विष्णुक्रान्ता मुपल्यथाञ्जली ।
दूर्वाश्रीदेवीसहे तथैव लक्ष्मी सदाभद्रे ॥४॥
आदीनामितिकथिता वर्णानां क्रमवशादथौपधयः ।
गुटिका कषायभसितप्रभेदतो निखिलसिद्धिविधायिन्यः ।

(श्रीविद्यार्णवे षोडशे श्वासे ४०८)

तत्र देवता आवाह्य वक्ष्यमाणप्रकारेण षोडशोपचारैः साङ्गावरण तत्तत्कल्पोक्तविधिना सम्पूज्य वेधादक्षिणभागे हस्तमात्रायामविस्तारमङ्गुष्ठपर्वमात्रोच्चं वालुकाभिः समचतुरस्रं स्थण्डिलं कृत्वा वक्ष्यमाणनित्यहोमप्रोक्तविधिना वह्नि संस्थाप्य चरुं श्रपयित्वा तत्र देवतामावाह्य सम्पूज्य, नित्यहोमोक्तविधिना साज्येन तेन चरुद्रव्येण हुत्वा पुनर्देवं सम्पूज्य कुम्भस्थमूर्तौ संयोज्य तथैव वह्निं सम्पूज्य विसृज्य वक्ष्यमाणविधिना सर्वभूतबलि तत्तत्कल्पोक्तबलिदानं च विधाय प्राणायामत्रयऋष्यादिकरण-षडङ्गन्यासपूर्वकं मूलमन्त्रमष्टोत्तरसहस्रं जपित्वा देवाय वक्ष्यमाणविधिना जपं समर्प्य, पूर्वमण्डपस्यैशानकोणे स्थापितविकिरपुञ्जोपरि सुवर्णगर्भवस्त्रयुग्मवेष्टितं जलपूरितं करकं विन्यस्य, तत्रास्त्रदेवतां सिंहरूपां दक्षवामकरयोः खड्गखेटकधारिणीं घोररूपां पश्चिमाभिमुखां ध्यात्वा, तिष्ठन् गन्धादिपञ्चोपचारैः

सम्पूज्य, नमस्कृत्य, तं करकं कराभ्यामुद्धृत्य मण्डपाभ्यन्तरे प्रदक्षिण भ्रमन् करकं स्वस्थाने निवेश्योपविश्यास्त्रमन्त्रेण पुनस्तामस्त्रदेवता पञ्चोपचारैः सम्पूज्य, ततः प्राक्कृतेषु कुण्डेषु इन्द्रेशानयोर्मध्यगताचार्यकुण्डे गुरुरग्निस्थापनं कुर्यात् ।

मण्डपनिर्माणं प्राचीसाधनं द्वारशाखानिर्माणं कुण्डनिर्माणञ्च कुण्डसंस्कारं, प्राणानायम्य ऋष्यादिन्यासान् विधाय देवता ध्यात्वा मानसोपचारैरभ्यर्च्य कुण्डं मूलमन्त्रेण वीक्ष्यास्त्रमन्त्रेण प्रोक्ष्यास्त्रेणैव कुशैस्त्रिः सन्ताड्य कवचेनाभ्युक्ष्यास्त्रेण कुण्डमध्ये किञ्चित्खात्वाऽस्त्रमन्त्रेण तां मृदमङ्गुष्ठानामिकाभ्यामुद्धृत्य बहिस्त्यक्त्वा व्याहृतिमन्त्रेण शुद्धमृत्तिकया खातमापूर्य समीकृत्य कवचमन्त्रेण जलैः ससिच्यास्त्रमन्त्रेण काष्ठादिना कुट्टयित्वा दृढीकृत्य, कवचमन्त्रेण कुशैः कुण्डं सम्मार्ज्य कवचेनैव गोमयाद्भिः सल्लिप्य, कवचेनैवाग्निसूर्यसोमानामष्टात्रिंशत्कलारूपं सञ्चिन्त्य, कवचेनैव मेखलात्रयेऽपि त्रिगुणीकृतसूत्रेण प्रतिमेखलं त्रिस्त्रिः समवेष्ट्य, "ॐ अमुककुण्डाय एतदासनं नमः" इत्याद्यासनादिदीपान्तैरुपचारैः प्रथमचतुरस्रादि तत्तत्कुण्डनाम्ना चतुर्थीनमोऽन्तेन सम्पूज्य, तथैव नाभिं च सम्पूज्य मेखलात्रयं तथैव हृन्मन्त्रेण सम्पूज्यास्त्रमन्त्रेण कुण्डं वज्रवद् दृढं सञ्चिन्त्य, हृन्मन्त्रेण कुशैः कुण्डस्य चतुर्दिक्षु वह्निज्वालाविलासाय चतुष्पथं मार्गचतुष्टयं परिकल्प्य, कवचमन्त्रेणाच्छिन्नाग्रैः कुशैरस्त्रमन्त्राभिमन्त्रितैः कुण्डभित्तिगणं सर्वमाच्छादयन् अक्षपाटनं कुर्यात्, इत्यष्टादश संस्काराः । अशक्तौ प्रथमोदितैश्चतुर्भिरेव संस्कारैः कुण्डं संस्कृत्य, तत्रहृन्मन्त्रेणास्त्रमन्त्रेण वा दक्षिणमध्योत्तरेषु प्रागग्राः पश्चिममध्यपूर्वेषूदगग्राः इति तिस्रस्तिस्रोरेखाः कुशमूलेन विलिख्य प्रणवेनाभ्युक्ष्य, प्रागग्रासु रेखासु दक्षिणरेखायां विष्णवे नमः । मध्यरेखायां रुद्राय नमः । उत्तरस्यां इन्द्राय नमः । उदगग्रासु रेखासु पश्चिमस्यां ब्रह्मणे नमः । मध्यमायां सूर्याय नमः । पूर्वरेखायां सोमाय नमः इति सम्पूज्य तत्र वक्ष्यमाणयोगपीठक्रमेण मण्डूकादि परतत्त्वान्तं योगपीठं सम्पूज्य, तत्र पद्मकेसरेषु त्वाग्रादि प्राद-

क्षिप्येन मध्यान्त ॐ जयायै नम.। एव विजयायै नम । अजितायै नम । अपराजितायै नम । नित्यायै नम । विलासिन्यै नम । दोग्ध्र्यै नम । अघोरायै नम । मङ्गलायै नम इति सम्पूज्य "ह्रीं सर्वशक्तिकमलासनाय नम" इति मध्ये पुष्पाञ्जलिं निक्षिप्य, तत्र भुवनेश्वरी तत्तन्मन्त्रेणावाह्या-वहनादिपरमीकरणान्त तत्तन्मुद्रया विधायासनादिषोडशोपचारैराराध्य, तत्र श्रीशिवं ध्यात्वा मूलमन्त्रेण तथैव सम्पूज्य, देवीमृतुस्नाता देवञ्च कामोन्मत्त विचिन्त्य स्वर्णादिपात्रेण मृत्पात्र चेत् नूतनेन सूर्यकान्तादिभव-मरणिभव श्रोत्रियगृहाद्वानीतमग्निमस्त्रमन्त्रेण पात्रे कृत्वा कवचमन्त्रेण सजातीयेन पात्रान्तरेण पिधाय, कन्यया सुवासिन्या वा समानीतं गुरु-रादायास्त्रमन्त्रेणैकमङ्गार तन्मध्यात् क्रव्यादाय नैर्ऋतकोणे परित्यज्य, देवाश मूलेन वीक्ष्यास्त्रेण प्रोक्ष्यास्त्रेण कुण्डे सन्ताड्य कवचेनाभ्युक्ष्य तत्र स्वमूलाधारस्थवह्निमण्डलगतपरमात्मस्वरूपाग्नीसोमात्मकाद्बिन्दो सकाशाद् वह्नि, मणिपूरगतजाठरानलेन सह सुषुम्नामार्गेण वहृनासापुटाध्वना निष्कास्य, रमितिवह्निबीजमुच्चरन् पुरत पात्रस्थिते वह्नौ वह्निचैतन्य संयोज्य औदर्यबैन्दवपार्थिववह्नीनामैक्यं विभावयन्, प्रणवेनाऽभिमन्त्र्य वमिति धेनुमुद्रयाऽमृतीकृत्यास्त्रमन्त्रेण सरक्ष्य सवचेनावगुण्ठ्य "ॐ र वह्नये नम" इति गन्धादिभि. सम्पूज्य जानुभ्यामवनिं गतस्तत्पात्र करोभ्यामादाय कुण्डोपरित्रि प्रदक्षिण परिभ्राम्य, देव्या योनौ शिवबीजमिति ध्यायन् स्वाभिमुख कुण्डमध्ये प्रणवमुच्चरन् तमग्निं निक्षिप्य, मैथुनधिया देव-देव्योराचमन दत्वा "ॐ चित्पिङ्गल हन हन पच पच दह दह सर्वाज्ञानापय स्वाहा" इति मन्त्रमुच्चरन् मुखेन फूत्कृत्य कुशैरग्निं प्रज्वाल्य काष्ठै पटूकृत्य कृताञ्जलि स्तिष्ठन् "ॐ अग्निं प्रज्वलितं वन्दे जातवेद हुताशनम्। सुवर्ण-वर्णममलं समिद्धं सर्वतोमुखम्।" इति ज्वलन्त वह्निमुपस्थाय वक्ष्यमाणवह्नि-मन्त्रेण प्राणायामत्रयं कृत्वा, शिरसि भृगुऋषये नम । मुखे गायत्रीछन्दसे नम.। हृदये अग्नये देवतायै नम । गुह्ये रं बीजाय नम । पादयो स्वाहा शक्तये नम , इति विन्यस्य दीक्षाङ्गहोमे विनियोग इति कृताञ्जलिरिरेत् ।

लिङ्गे सरयूं हिरण्यायै नमः। गुदे परयूं कनकायै नमः। शिरसि शरयूं रक्तायै नमः। मुखे यरयूं कृष्णायै नमः। नासिकायां लरयूं सुप्रभायै नमः। नेत्रयो ररयूं रक्तायै नमः। सर्वाङ्गे यरयं बहुरूपायै नमः। इतिसप्तजिह्वा विन्यस्य, ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः। स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा। उत्तिष्ठपुरुषाय शिखायै वषट्। धूमव्यापिने कवचाय हुं। सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट्। धनुर्धरायास्त्राय फट् ।इतिषडङ्गानि विन्यस्य शिरसि अग्नये जातवेदसे नमः। वामांसे अग्नये सप्तजिह्वाय नमः। वामपार्श्वे अग्नये हव्यवाहनाय नमः। वामकट्यां अग्नये अश्वोदराय नमः। लिङ्गे-अग्नये वैश्वानराय नमः। दक्षकट्यां अग्नये कौमारतेजसे नमः। दक्षपार्श्वे अग्नये विश्वमुखाय नमः। दक्षांसे अग्नये देवमुखाय नमः। इतिमूर्तीर्विन्यस्य-वह्निरूपं स्वात्मानं ध्यात्वा सप्तजिह्वामुद्रां प्रदर्श्य, कुण्डस्योत्तरभागे कुशान्तरे स्रुक्स्रुवौ प्रोक्षणीपात्रे आज्यस्थाली चरुस्थाली, परिधित्रयं समित्पञ्चात्मकमिध्मं लूनमूलसाग्रकुशमुष्टिरितिपात्राण्यधोमुखानि संस्थाप्य, अन्यान्यपि दध्यक्षतादि बलिद्रव्याणि गन्धपुष्पादिपूजाद्रव्याणि च यथायथं संस्थाप्याधोमुखानि स्रुक्स्रुवादीनि सपवित्राधोमुखहस्तसेकरूपावेक्षणपूर्वक-मुत्तानीकृत्य, प्रणीतापात्रं प्रक्षाल्य स्वपुरतः कुशान्तरे निधाय शुद्धजलैरा-पूर्य तत्र गन्धाक्षतान् निक्षिप्य, प्रादेशमात्र साग्रं कुशद्वयं मध्ये ब्रह्मग्रन्थियुतं जलाग्रे उत्तराग्रं पवित्र निधाय करद्वयानामिकाङ्गुष्ठाभ्यां पवित्रं मूलाग्रे विधृत्यास्त्रमन्त्रमुच्चरन् पवित्रमध्येन जलं पात्राद्बहिस्त्रिवारं भूमौ निक्षिपेत् इत्युत्पवनं विधाय तन्मध्ये किञ्चिद्घृतं निक्षिप्य तत्पात्रं कराभ्यामामस्तक-मुद्धृत्य कुण्डस्योत्तरभागे कुशास्तरे निधाय तदुपरि प्रागग्रान् दर्भान् निक्षि-पेत्, इति प्रणीतापात्रं संस्थाप्य, प्रोक्षणीपात्रं प्रक्षाल्य शुद्धजलैरापूर्य तन्मध्ये प्रणीतापात्रजलं पात्रान्तरेणोद्धृत्य किञ्चिद् दत्त्वा, तेन जलेन मूलमन्त्रेण सर्वाणि पात्राणि होमद्रव्याणि पूजाद्रव्याणि च प्रोक्षयेत्, इति द्रव्यासादनं विधाय, प्रोक्षणीजलेनाग्नि परिषिच्य गर्भैश्चतुर्भिर्दर्भैः प्राचीदिशमारभ्य प्राच्यामुत्तराग्रैरीशानाद्याग्नेयान्तं परिस्तीर्य, पुनर्दक्षिणस्यां प्रागग्रैः पूर्व-

परिस्तरणमूलं मूलेनाच्छादयन्, पुनरुत्तरस्या प्रागग्रं पश्चिमपरिस्तरणाग्र पूर्वपरिस्तरणाग्रमग्रेण च परिस्तीर्य, परिधित्रयमादाय सर्वत स्थूल पश्चिम-उत्तराग्र तत कनिष्ठ दक्षिणे पूर्वाग्र, पश्चिमपरिधेर्मूलोपरिमूल यथा भवति तथा, पुनस्ततोऽपि कनिष्ठमुत्तरस्या पूर्वाग्र, पश्चिमपरिधेरग्रोपरिमूलमिति कुण्डस्य मध्यमेखलोपरि परिस्तरणोपरि परिधित्रयं निक्षिपेत्। अत्र पश्चिम-मेखलाया तु परिस्तरणपरिधिस्थापन योनिनालोर्ध्वमेखलयोरन्तरन्तराले कार्यमिति। पश्चिमपरिधौ ॐ ब्रह्मणे नम। दक्षिणपरिधौ ॐ विष्णवे नम। उत्तरपरिधौ ॐ रुद्राय नम। इति सम्पूज्य स्वेष्टदेवतादीक्षित ब्राह्मणमाहूय, कुण्डस्य दक्षिणे भागे कुशासने समुपवेश्य, अमुकगोत्रोऽमुकशर्माऽहममुकगोत्रममुकवेदान्तर्गतामुकशाखाध्यायिनममुकशर्माण ममेष्टदीक्षाङ्गभूत-होमकर्मणि कृताकृतवेक्षणाय ब्रह्मत्वेन त्वा वृणे, इति वस्त्रालङ्कारादिभिर्वृणुयात्। ततस्त गन्धादिभि सम्पूज्य, ब्राह्मणालाभे कुशवटु वा सम्पूज्य वह्नि-मन्त्रेणार्घ्यपाद्याचमनीयमधुपर्कपात्राणि संस्थाप्य, संस्कृत्य, कुण्डमध्ये षट्कोणगर्भितकर्णिक सकेसर चतुर्द्वारयुक्तचतुरस्रत्रयवेष्टितमष्टदलकमल वह्नेः पूजापीठ विभाव्य, तत्र प्रागुक्तविधिना, मण्डूकादिपरतत्त्वान्त योग-पीठ समभ्यर्च्य अष्टदलकेसरेपु स्वागादिप्रादक्षिण्येन पीतायै नम, श्वेतायै नम, अरुणायै नम, कृष्णायै, धूम्रायै, तीव्रायै, विस्फुल्लिङ्गिन्यै, रुचिरायै ज्वालिन्यै नम इति मध्यान्ता नवशक्ती सम्पूज्य, "रं सर्वशक्तिकमला-सनाय नम" इति समस्तं पीठ सम्पूज्य।

"करैर्वरस्वस्तिकशक्त्यभीतिर्दधानमम्भोजगत त्रिनेत्रम्।
सिन्दूरवर्णं तपनीयभूषण वह्नि जटाभूषितमौलिमीडे।"

इति ध्यात्वा सप्तजिह्वामुद्रा प्रदर्श्य "ॐ वैश्वानर जातवेद लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय स्वाहा, अग्नये नम" इत्यग्नि त्रिपुष्पाञ्जलिना सम्पूज्य पुनर्वह्निमन्त्रमुच्चार्याग्नये एतदासन नम, एवमग्ने एव ते अर्घ्यं स्वाहा, एतत्ते पाद्य नम एतत्ते आचमनीय स्वधा, एतत्तेमधुपर्क स्वधा एतत्ते-पुनराचमनीय स्वधा, एतत्ते स्नान नम, इति पुरश्चरणमुग्रमूर्धादिसर्वा-

ङ्गोद्देशेन मेखलाया बहिः पात्रान्तरे अर्घ्यपाद्यादिस्नानान्ता वह्नेस्तत्तदङ्ग-भावना परिकल्प्य पुनराचमनीयं दत्त्वा वह्नावेव वस्त्रं दत्त्वा पुनराचमनीयं दत्त्वा यज्ञोपवीतं निवेद्य वहिःपुनराचमनीयं दत्त्वा गन्धपुष्पे वह्नावेव निवेदयेत् इति वह्निमन्त्रेणाऽऽसनादि पुष्पान्तानुपचारानुपचर्य षट्कोणेषु देवताग्रादिकोणमारभ्य रंरयूं हिरण्यायै नमः। परयूं कनकायै नमः। दारयूं रक्तायै नमः। वरयूं कृष्णायै नमः। लरयूं प्रभायै नमः। ररयूं अतिरक्तायै नमः। यरयूं बहुरूपायै नमः इति सम्पूज्य अष्टदलकेसरेषु अग्नीशासुरवायव्यदेवतादिचतुर्दिक्षु ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय नमः। ॐ स्वस्तिपूर्णाय शिरसे स्वाहा नमः। ॐ उत्तिष्ठ पुरुषाय शिखायै वषट् नमः। ॐ धूमव्यापिने कवचाय हुं नमः। सप्तजिह्वाय नेत्रत्रयाय वौषट् नमः। ॐ धनुर्धरायास्त्राय फट् नमः। इति षडङ्गानि सम्पूज्य, अष्टदलेषु देवग्रादिप्रादक्षिण्येन ॐ अग्नये जातवेदसे नमः। एवं अग्नये सप्तजिह्वाय अग्नये हव्यवाहनाय अग्नयेऽश्वोदराय अग्नये वैश्वानराय अग्नये कौमारतेजसे अग्नये विश्वमुखाय अग्नये देवमुखाय नमः इति प्रादक्षिण्येनाऽष्टमूर्तीः सम्पूज्य तद्वहिश्चतुरस्रे इन्द्रादीन् सायुधान् सम्पूज्य पुनर्वह्निमन्त्रेण वह्निं सम्पूज्य धूपदीपादि दत्त्वा नैवेद्यमुत्सृज्याग्नौ प्रक्षिप्य प्राग्वदाचमनीयं दत्त्वा ततः स्रुक्स्रुवौ। प्राग्वदधोमुखावग्नौ सन्ताप्य तयोरग्रं कुशाग्रैर्मध्यं मध्यैर्मूलं मूलैरिति त्रिः समृज्याऽग्नौ तान् प्रक्षिप्य, स्रुक्स्रुवौ स्वदक्षिणभागे कुशास्तरे निधाय, तदुपर्युत्तराग्रप्रादेशमात्रं मध्ये ब्रह्मग्रन्थियुत कुशद्वयरूपं पवित्रं निधाय, पात्रान्तरस्थं शुद्धं गोघृतं दुर्गन्धादिदूषणरहितं वीक्षणादिचतुःसंस्कारैः संस्कृतं 'वमिति' धेनुमुद्रयामृतीकृतं मूलेनाष्टधाभिमन्त्रितमाज्यस्थाल्यां निक्षिप्य, कुण्डादङ्गारानुद्धृत्यमेखलाया बहिर्भूमौ वायव्यकोणे निक्षिप्य तेष्वाज्यस्थालीं हृन्मन्त्रेण निधाय-कुशद्वयं प्रज्वाल्यहृन्मन्त्रेणाज्ये निक्षिप्य शेषमग्नौ निक्षिप्य पुनर्दर्भद्वयं प्रज्वाल्य कवचमन्त्रेणाज्यस्थालीमभितः परिभ्राम्य दग्धशेषमग्नौ निक्षिप्य पुनः कुशान् प्रज्वाल्य हृन्मन्त्रेणाज्ये प्रदर्श्य दग्धशेषमग्नौ निक्षिप्य, आज्यस्थालीमुद्धृत्य प्रादक्षिण्येन कुण्डं परितो भ्रामयन् आनीय स्वपुरतः कुशा-

स्तरे निधाय वाह्यस्थानङ्गारान् कुण्डमध्ये निक्षिप्य, आप. सस्पृश्याङ्गुष्ठानामिकाभ्या करद्वयेन पवित्र मूलाग्रे धृत्वा मन्त्रमुच्चरन् पवित्रमध्येन स्वाभिमुख घृतं नि संप्लाव्य तत्पवित्रमाज्यस्थाल्या प्रागग्र मध्ये निवेश्य, भागद्वय कृत्वा दक्षिणभागं शुक्लपक्ष वामभाग कृष्णपक्ष परिकल्प्य, पुनस्तयैव वामभागेडा दक्षिणभागे पिङ्गला मध्ये सुषुम्नामिति नाडीत्रयं सञ्चिन्त्य स्रुवेण दक्षिणभागात् हृन्मन्त्रेणाज्यमादाय "अग्नये स्वाहा" इति वह्नेर्दक्षिणनेत्रे हुत्वा अग्नये इद न मम इत्युद्देशत्याग विधाय पुनर्हृन्मन्त्रेण वामभागादाज्य गृहीत्वा "सोमाय स्वाहा" इति वह्नेर्वामनेत्रे हुत्वा सोमाय इद न मम, इत्युद्देशत्याग विधाय पुनर्हृदयमन्त्रेण मध्यादाज्य गृहीत्वा "ॐ अग्निसोमाभ्या स्वाहा" इति वह्नेर्ललाटलोचने हुत्वा इदमग्नीसोमाभ्या न मम इत्युद्देशत्याग कृत्वा पुनर्दक्षिणभागाद्घृताज्य गृहीत्वा "अग्नये स्विष्टकृते स्वाहा" इति वह्नेर्वक्त्रे हुत्वा अग्नये स्विष्टकृते इद न मम इत्युद्देशत्याग विधाय "ॐ भू स्वाहा" अग्नये इद न मम, "ॐ भुव स्वाहा" वायवे इद न मम "ॐ स्व स्वाहा सूर्याय इद न मम" "ॐ भूर्भुव स्व स्वाहा प्रजापतये इद न मम, ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्षसर्वकर्माणि साधय स्वाहा" इति वह्निमन्त्रेण वारत्रय हुत्वा अग्नये इद न मम इत्युद्देशत्याग कृत्वा "ॐ अग्नेगर्भाधान सम्पादयामि स्वाहा" एव पुसवन सीमन्तोन्नयनम् इति प्रतिकर्माज्याहुत्यष्टक हुत्वा वागीश्वराज्जात वह्निं प्रागुक्तरूप ध्यायन् "अग्नेर्जातकर्म सं०" इत्याष्टवाज्याहुतीर्हुत्वा, वह्नेर्नालच्छेद कृत्वा सूतक सशोध्य वह्नेर्नामकरण सम्पादयामि इत्यष्टावाज्याहुतीर्हुत्वा शिवाग्निरिति तस्य नाम कृत्वा।

"ॐ वह्नेरुपनिस्क्रमण सं० अग्नेरन्नप्राशन स०, अग्नेश्चोल सं०, अग्नेरुपनयन स०, अग्नेर्महानाम्न्य स०, अग्नेर्महाव्रतं स०, अग्नेरौपनिषद स०, अग्नेर्गोदान सम्पा०, अग्ने समावर्तनं स०, अग्नेरुद्वाह सम्पादयामि स्वाहा" इति प्रतिकर्माष्टावाज्याहुतीर्हुत्वा वह्नेर्गर्भाधानाद्युद्वाहान्तान् सस्कारान् विधाय वह्ने पितरौ देवदेव्यौ प्राग्वत्सम्पूज्य विसृज्य, मूलाग्रेषु घृतससिक्ता

पञ्चसमिधस्तूष्णीमेकदेवाञ्जलिना वह्नौ समर्प्य ॐ सरयू हिरण्यायै स्वाहा, एवं परयू धनकायै० शरयू रक्तायै० वरयू कृष्णायै० लरयू सुप्रभायै० ररयू अतिरक्तायै० यरयू बहुरूपायै। ॐ सहस्रार्चिषे हृदयाय स्वाहा एवं स्वस्तिपूर्णाय शिरसे० उत्तिष्ठपुरुषायशिखायै० धूमव्यापिने कवचाय० सप्तजिह्वायनेत्रत्रयाय०, धनुर्द्धराय अस्त्राय०। ॐ अग्नये जातवेदसे स्वाहा। एवं अग्नये सप्तजिह्वाय० अग्नये हव्यवाहनाय० अग्नये अश्वोदराय०, अग्नये वैश्वानराय० अग्नये कौमारतेजसे०, अग्नये विश्वमुखाय० अग्नये देवमुखाय० इति जिह्वाङ्गमूर्तिमन्त्रैरेवैकमाहुतिं दत्त्वा ॐ लं इन्द्राय स्वाहा, इन्द्राय नमः एवं अग्नये०, यमाय०, निर्ऋतये० वरुणाय०, वायवे०, कुबेराय०, ईशानाय०, ब्रह्मणे०, अनन्ताय० वज्राय०, शक्तये०, दण्डाय० खड्गाय०, पाशाय०, अङ्कुशाय०, गदायै०, शूलाय०, पद्माय०, चक्राय०। एवं तत्तन्नामभिः एकैकामाहुतिं हुत्वा सर्वत्रतत्तन्नामोद्देशत्यागं कुर्यात्। ततः स्रुवेणाज्यमादाय चतुर्वारं निक्षिप्याधोमुखं स्रुचो मुखे निधायोत्थाय, प्रागुक्तवह्निमन्त्रमुच्चार्य स्वाहास्थाने वौषडित्यग्नौ तिष्ठन् स्रुचा हुत्वोपविश्य ॐ स्वाहा, ॐ श्रीं स्वाहा, ॐ श्रीं ह्रीं स्वाहा, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं स्वाहा, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं स्वाहा, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये स्वाहा, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वरद स्वाहा, ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद स्वाहा ॐ श्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजन मे वशमानय स्वाहा इति दशधाविभक्तेन महागणपतिमन्त्रेण दशाहुतीर्हुत्वा "ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा" इति समस्तव्यस्तमन्त्रेण चतस्र आज्याहुतीर्जुहुयात्। इत्यग्निस्थापनविधिः।

इत्यग्निस्थापनं विधाय नूतनताम्रादिपात्रमस्त्रमन्त्रेण प्रक्षाल्यः, तत्र मूलमन्त्रेणाष्टधाभिमन्त्रितास्तण्डुलान् पञ्चदशप्रसृतिमितान् त्रिः प्रक्षालितानस्त्रमन्त्रं जपन्निक्षिप्य तत्र गोदुग्धं वाप्य यावत्तावत् पक्वं भवति तावन्निक्षिप्य प्रक्षालितेन पात्रेण कवचमन्त्रमुच्चरन् तत्पात्रवदनं पिधाय तदा तद्दुग्धं-

वाग्मवशादुपर्यामाप्ति तदा प्रोक्षणेन प्रदक्षिणमूर्ध्वमवघट्टयन् मूलमन्त्रं स्मरन् प्राङ्मुखो गुरुश्चरुं पचित्वा, शृते तस्मिन् मूलमन्त्रेणाज्यं स्रुवेण निक्षिप्य कवचमन्त्रेण तत्पात्रमवतार्य अस्त्रमन्त्रेणाभिमन्त्रितं कुशास्तरे चरुं निक्षिप्य पिधायविभज्यैकं भागं देवाय कुम्भस्थाय निवेद्य, मण्डपपरितः पूर्वमङ्कुरार्पणकर्मणि कृताङ्कुरमार्जनानि निक्षिप्य, घृतपूर्णान् पिष्टमयदीपांश्च निधाय, कुण्डसमीपं गत्वा स्वासने समुपविश्य, तत्र वक्ष्यमाणविधिना मूलमन्त्रेणार्घ्यदिपात्रस्थापनं विधाय, कुण्डमध्ये वह्नेर्मुखे पूजाचक्रं विभाव्य, तत्र वक्ष्यमाणविधिना साङ्गं सावरणं सर्वोपचारैः पूजयेत्। अत्रार्घ्यादिस्नानान्तमग्निपूजावदेव कुण्डाद्बहिः पात्रान्तरे देवमुद्दिश्य कल्पयेत्। अन्यत्सर्वं कुण्डमध्य एव कल्पयेत्। ततो मूलमन्त्रेण वह्निदेवतयोर्वक्त्रैकीकरणार्थं पञ्चविंशत्याज्याहुतीर्हुत्वा स्वात्माग्नि–देवतानामैक्यं विभावयन् मूलेन नाडीसन्धानार्थमेकादशवारं घृतैर्हुत्वा षडङ्गावरणदेवतानामेकैकामाहुतिं हुत्वा प्रागादिदिक्स्थकुण्डेषु ऋत्विग्भिः प्रागुक्तविधिनाऽष्टादशसंस्कारैः संस्कृतेषु गुरुः स्वकुण्डादग्निमुद्धृत्योद्धृत्य निक्षिपेत्। ऋत्विजश्च स्वस्वकुण्डवह्निं प्रागुक्तविधिना प्रज्वाल्योपस्थाय परिषेचनपरिस्तरणपरिधिप्रक्षेपण पूजादिभिः सम्यक् परितोष्य समिद्धे तस्मिन् स्वेष्टदेवतं नित्यपूजोक्तविधिना देवमावाह्य ताम्बूलान्तैरुपचारैः सम्यक् सम्पूज्य वक्त्रैकीकरणनाडीसन्धानावरणहोमान्ते मूलमन्त्रेण गुरुणा विभज्य दत्तेन घृतमिश्रेण पायसेन पञ्चविंशतिधा स्वस्वकुण्डे जुहुयुः।

अथ गुरुः सर्वतोभद्रमण्डलस्य पूर्वादिवीथिचतुष्टये मेषादिराशिस्थानेषु प्राच्यां मेषवृषौ, आग्नेय्यां मिथुनं, दक्षिणे कर्कटसिंहौ, नैर्ऋते कन्या, पश्चिमे तुलावृश्चिकौ, वायव्ये धनुः, उत्तरे मकरकुम्भौ, ईशाने मीन इति विभक्तेषु राशिस्थानेषु राश्यधिनाथेभ्यो ग्रहेभ्यो नक्षत्रेभ्यः करणेभ्यश्च हुतशेषेण पायसेन बलिं दद्यात्। यथा-मेषवृश्चिकस्थानयो क खं गं घं ङं मेषवृश्चिकराश्यधिपतये मङ्गलाय एष गन्धपुष्पाक्षतयुक्त पायसबलिर्नमः। एवं चं छं ५ वृषतुलाराश्यधिपतये शुक्राय एष गन्धपुष्पाक्षतयुक्तः पायस-

वलिर्नमः । टं ठं डं ढं णं मिथुनकन्याराश्यधिपतये बुधाय एष गन्धपुष्पाक्ष० यं''''क्षं० १० कर्कटराश्यधिपतये सोमाय एष० । अं १६ सिंहराश्यधिपतये सूर्याय एष० । ५ तं धनुर्मीनाधिपतये गुरवे एष० । पं० ५ मकरकुम्भाधिपतये शनैश्चराय एष गन्धपुष्पाक्षतयुक्तः पायसवलिर्नमः । पुनः क्रमेण मेषादिस्थानेषु मेषराश्यंशभूताश्विनीभरणीकृत्तिकापादनक्षत्रदेवताभ्यो दिवानक्तंचरेभ्यः सर्वेभ्यो भूतेभ्यः एष गन्धपुष्पाक्षतयुक्तः पायसबलिर्नम इत्यादिप्राग्वत् । एवं वृषराश्यंशभूत कृत्तिकापादत्रय रोहिणीमृगशिरोऽर्धनक्षत्रदेवताभ्यो० । मिथुनराश्यंशभूतमृगशिर उत्तरार्धार्द्रापुनर्वसुपादत्रयनक्षत्रदेवताभ्यो० । एवमग्रेऽपि मन्त्रा ऊह्याः । ततो मीनमेषयोरन्तराले ववकरणाय एष० इत्यादि एवं वृषमिथुनयोरन्तराले वालवाय एष० । मिथुनकर्कयोर्मध्येकौलवाय० । सिंहकन्ययोर्मध्ये तैतिलाय० कन्यातुलयोर्मध्ये गराय० वृश्चिकधन्वोर्मध्ये वणिजे० । धनुर्मकरयोर्मध्ये विष्टये एष गन्धाक्षतपुष्पयुक्तपायसवलिर्नमः इति बलिं दद्यात् । अत्रराशिद्वयाधिपतिभ्योराशिद्वयस्थानेऽपिबलिर्देयः; इति सम्प्रदायः । ततोगुरुः कुम्भस्थाय देवायोत्तरापोशानादिनीराजनान्तं वक्ष्यमाणविधिना कृत्वा प्रणम्य क्षमापयेत् । ततस्तृतीयभागं शिष्येण सह गुरुर्भुक्त्वा स्वयमाचान्तः स्वाचान्ताय शिष्याय षडङ्गन्यासयोगेन सकलीकृताय प्रादेशमात्रं यथोक्तहृन्मन्त्रेणाष्टधाभिमन्त्रितं दन्तकाष्ठं दद्यात । शिष्योऽपि तेन दन्तधावनं विधाय दन्तकाष्ठं प्रक्षाल्य पुरतः परित्यज्याचम्य गुरोः समीपं गच्छेत । ततो गुरुः शिष्यं शिखाबन्धनेन मूलमन्त्राभिमन्त्रितेन संरक्ष्य, तेन सार्धं वेद्यां कुशास्तरणे तस्यां रात्रौ शयनं कुर्यादित्यधिवासः ।

अत्र प्राक्प्रोक्तविधिनोर्ध्वाम्नायाद्याम्नायदेवतानां दीक्षायां तत्तमन्त्रहोमस्तद्देवतापूजनकम ऋत्विग्भिर्विधेयः । नवग्रहपूजा तु आगमोक्तैर्वैदिक मन्त्रैर्वा विधेया । ईशानकोणवेद्यां पृथगेवेति सम्प्रदाय । "पञ्चषट्कूटविद्याभ्यां शोधितं बहुवासरैः" इतिक्रमे प्रोक्तक्रमेणैव दीक्षाप्रयोगक्रमः साधीयान् तत्राङ्गत्वेनान्यमन्त्राकथनात् । यद्दर्शनाङ्गभूतप्रधानदीक्षाविधौ

तु षड्दर्शनेष्वङ्गत्वेन ये ये मन्त्रा अभिहितास्तद्दूरीकृत्यैव ऋत्विक्सामयिकै-र्होमजपपूजादयो विधेयाः। गुरुणापि तथैव साङ्गोपाङ्गपूर्णरूपेणोपदेश कार्यं। वैदिकदर्शनप्राधान्येन यत्रोपदेशस्तत्र श्रुतिस्मृत्युक्तविधिनैव विशेषो बोधव्य, अन्यत्साम्यम्।

अथ वैदिकदर्शनदीक्षाया आदौ गणाधिपपूजादिमण्डपपूजा प्रयोग। तत्रादौ गणेशपूजा - यजमान आसनोपर्य्युपविश्याऽऽचम्य प्राणायामत्रय कृत्वा, कुशाक्षतान् हस्ते गृहीत्वा सङ्कल्पं कुर्यात्। यद्यथा अद्येत्यादिमास-पक्षाद्युल्लेखानन्तरं करिष्यमाणामुक देवतामन्त्र दीक्षाकर्मणि प्रत्यूहशान्तये गणपतिपूजनमहं करिष्ये, इति सङ्कल्प्यावहनादि षोडशोपचारै "गणाना त्वा" इति मन्त्रेणगणपतिं सम्पूज्य बद्धाञ्जलि प्रार्थयेत्।

वक्रतुण्डमहाकाय सूर्यकोटिसमप्रभ। अविघ्न कुरु मे देव। सर्वकार्येषु सर्वदा ॥१॥ पूजा सम्पूर्णता यातु वाचयित्वा विसर्जयेत्। इति। तत पीठेऽक्षतपुञ्जेषु गौर्यादिषोडशमातृका ब्राह्म्यादि सप्तमातृकाश्च पूजयेत्। तास्तु 'गौरीपद्माशचीमेधा सावित्री विजया जया। देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातर ॥१॥ धृतिस्तुष्टिस्तथापुष्टिरात्मन कुलदेवता।' ब्राह्मी माहेश्वरी चैव कौमारी वैष्णवी तथा। वाराही च तथेन्द्राणी चामुण्डा सप्त-मातर इति। पुजाप्रकारस्तु—पूजोपकरणान्युपकल्प्य प्राङ्मुख उपविश्य कुशयवतिलान्यादाय, अद्येहेत्यादि० करिष्यमाणमन्त्रदीक्षाङ्गभूतया गौर्या-दिषोडशमातृपूजन ब्राह्म्यादिसप्तमातृपूजन च करिष्ये इति सङ्कल्प्य अक्षते "ॐ भूर्भुव स्व गौरीहागच्छ, इह तिष्ठेत्यावाह्य स्वशाखोक्तमन्त्रेण प्रतिष्ठाप्य गौर्यै नम इदमासनमित्यादिरीत्या पदार्थानुसमयेन सर्वा प्रत्येक-मुत्तरस्या पूज्या। एवं ब्राह्म्यादिष्वपि। यदा तु मातृणा गणदेवतात्वं तदा प्रत्येक नाम गृहीत्वा गौर्यादिभ्य इति चोक्त्वा युगपत् पूजयेत् एवं ब्राह्म्याद्या अपि। तत स्वाचारतो "वसो पवित्रमसी"ति कुड्यामगना पञ्चसप्त वा घृतेन धारा कुर्यात्। तत्पूजनमपि केचिदाहु। तत शान्तिपाठ। ततो यथाचार वृद्धिश्राद्ध सङ्कल्पपूर्वकं स्वशाखोक्तं कुर्यात्। तत पुण्याह-

वाचनम् तच्चार्पणकृतजानुमण्डलः इति पुण्याहं भवन्तो ब्रुवन्त्विति त्रीन् ब्राह्मणान् प्रार्थयेत्। ते च पुण्याहमिति त्रिःप्रतिब्रूयुः। ॐ स्वस्ति भवन्तो ब्रुवन्त्विति त्रिः ॐ स्वस्ति इति त्रिः प्रतिवचनम्। ॐ ऋद्धिं भवन्तो ब्रुवन्त्विति त्रिः। ॐ ऋद्ध्यतामिति त्रिः प्रतिवचनम्। ततो मण्डपाद्बहिः पश्चिमदेशे उपलिप्ते यजमानः प्राङ्मुख उपविश्याचम्य प्राणानायम्य अद्येहेत्यादि अमुकदेवतामन्त्रदीक्षाकर्मकर्तुमाचार्यत्विजां वरणमहं करिष्ये इति सङ्कल्प्य आचार्यमुदङ्मुखमुपवेश्य सिताम्बरहेमकुण्डलसूत्रकेयूर-कण्ठाभरणाभिरामं कृत्वा बद्धाञ्जलिः "दीक्षादाने त्वं मे गुरुर्भव" इति प्रार्थ्य "भवानि" इति तेनोक्ते अमुकप्रवरान्वितामुकगोत्रममुकवेदान्तर्गता-मुकशाखाध्यायिनममुकशर्माणममुकप्रवरान्वितामुकगोत्रोऽमुकशर्माहं एभिर्ग-न्धपुष्पाक्षतताम्बूलहेमाभरणाङ्गुलीयकवासोभिरमुकमन्त्रदीक्षाग्रहणे गुरुत्वे-नत्वां वृणे। वृतोऽस्मीति स वदेत्। एवं पूर्वकुण्डे गायत्रीहोमार्थमेवमाग्नेय-दक्षिणनैर्ऋतपश्चिमवायव्यसौम्येशानकुण्डेषु होमार्थं सप्तब्राह्मणान् एवं नव-ब्राह्मणान् वृणुयात्। ततःपूर्वद्वारपालनार्थं द्वावृग्वेदिनौ, दक्षिणद्वारपालनार्थं द्वौ यजुर्वेदिनौ पश्चिमद्वारपालनार्थं द्वौ सामगौ, उत्तरद्वारपालनार्थं द्वावथ-र्वणिकौ एवमष्टौ पृथक् पृथक् वृणुयात्। वरणवाक्य प्राग्वदेव। एवं पुस्तकाचार्यं वृणुयात्। अत्र द्वारपालकास्तु सर्वदर्शनसाधारणाः। ततः शुक्लाम्बरधरः शुक्लमाल्यानुलेपनः सपत्नीकः सशिष्यर्त्विक् आचार्यो मङ्गलघोषे जायमाने सम्पूर्णकलशहस्तो "भद्रं कर्णेभिः" इत्यादिमन्त्रघोषेण मण्डपं प्रदक्षिणीकृत्य पश्चिमद्वारेण प्रविश्य मण्डपान्तः पश्चिमदेशे उप-विश्याचम्य प्राणानायम्य देशकालौ स्मृत्वा करिष्यमाणदीक्षादानाङ्गतया अद्य गणेशपूजामण्डपदेवतास्थापनादि करिष्ये इतिसङ्कल्प्य षोडशोपचारैः गणेशं प्रपूज्य गौरसर्षपान् सर्वतोमण्डपान्ते विकिरेत्। तत्र मन्त्रारक्षोघ्नाः यदत्रसंस्थित भूत स्थानमाश्रित्य सर्वदा। स्थानं त्यक्त्वा तु तत्सर्वं यत्रस्थं तत्र गच्छतु ॥१॥ अपक्रामन्तु भूतानि पिशाचाःसर्वतो दिशम्। सर्वेषाम-विरोधेन ब्रह्मकर्मसमारभे ॥२॥ इति पञ्चगव्येन कुशैः सर्वत्रः सर्वतः प्रोक्ष-

येत्। "शुचिवो हव्ये"ति "आपोहिष्ठे"ति ऋच । ततः कृताञ्जलि 'स्वस्त्ययन' 'तार्क्ष्य'मिति मन्त्रद्वय जपेत्। तत पूर्वस्या दिशि मण्डपद्वाराद्वहिर्हस्तमात्रे वटतोरणमश्वत्थं वा सुदृढनामकं सुशोभननामक वा शङ्खाङ्कित "अग्निमीले पुरोहित" मिति विधाय नाम्ना सम्पूज्य चन्दनादिचर्चित कृत्वा राहु बृहस्पति तत्र न्यसेत्। तत्रैक कलश स्थाप्य । तत्र मन्त्रा-'महीद्यौ रिति-भूमिस्पृशन प्रार्थ्य "ओषधय स मिति यवान् क्षिप्त्वा 'आकलशेष्वि' ति "आजिघ्रकलश" मिति वा कलशं निधाय "इममेगङ्गे" इति जलेनापूर्य "गन्धद्वारा" मिति गंधं "याओषधीरीति सर्वौषधी "ओषधय स'मिति यवान् 'काण्डात्काण्डा' दितिदूर्वा "अश्वत्थेवो" इति पञ्चपल्लवान् "स्योना पृथिवि" इति पञ्चमृद "या फलिनी' रिति फलम् "स हि रत्नानी'ति पञ्चरत्नानि "हिरण्यरूप" मिति हिरण्य क्षिप्त्वा "युवा सुवासा" इति वस्त्रेण रक्तसूत्रेण च मुखे वेष्टयेत्। "पूर्णा दर्वी", त्युपरि धान्यपूर्णशराव निधाय तत्र ध्रुवमावाह्य पूजयेत्। ततो दक्षिणे औदुम्बर वा सुभद्र विकटम्वा चक्राङ्कितं तोरणं "इषेत्वोर्जेत्वा" इति निधाय नाम्ना पूर्ववत् सम्पूज्य चन्दनादिचर्चितं कृत्वा सूर्यमङ्गारक न्यसेत्। तत पूर्ववत् कलश स्थापयित्वा तत्र धरामावाह्य पूजयेत्॥ तत पश्चिमे प्लक्षमौदुम्बरम्वा सुहोत्र सुप्रभ पद्माङ्कितं तोरणं "शन्नोदेवी" इति निधाय नाम्ना पूर्ववत् सम्पूज्य चन्दनादिचर्चितं कृत्वा शुक्रं बुध च तत्र न्यसेत्। पूर्ववत्कलश निधाय वाक्पतिमावाह्य पूजयेत्। तत उत्तरे वाटमाश्वत्थ पालाशम्वा पूर्णसुकर्मंसुभीम वा गदाङ्कितं तोरण "अग्नआयाही' ति निधाय नाम्ना सम्पूज्य चन्दनादिचर्चित कृत्वा "सोमकेतुशनीस्तत्र' न्यसेत्। तत पूर्ववत् कलश निधाय तत्र विघ्नेशमावाह्य पूजयेत्। तत पूर्वद्वारे द्वारशाखाद्वये कलशद्वय दध्यक्षतभूषित पूर्ववन्मन्त्रै स्थापयेत्। प्रतिकलश मन्त्रावृत्ति । ऐरावतकलशद्वय न्यस्य पूजयेत्। तत्र ऋग्वेदिनौ ऋत्विजौ—

ऋग्वेद पद्मपत्राक्षो गायत्र्य सोमदेवता। अत्रिगोत्रस्तु विप्रेन्द्र। शान्तिपाठ मखे कुरु ॥१॥ इति प्रार्थ्य प्रत्येक "मग्निमीले' इति गन्धादिना पूजयेत् तत ।

एह्येहि सर्वामरसिद्धसाध्यैरभिष्टुतो वज्रधरामरेश।
सम्वीज्यमानोऽप्सरसां गणेन रक्षाऽध्वरं नो भगवन्नमस्ते ॥१॥

भो इन्द्रेहागच्छेह तिष्ठेति इन्द्रं साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्तिकं द्वारकलशे आवाह्य तत्र "त्रातारमिन्द्र" मितीन्द्रं सम्पूज्य "आशुःशिशान" इति पीतां पताकां पीतं च ध्वजद्वयमपि पञ्चहस्तदण्डमुच्छ्रयेत। "इन्द्रं वो विश्वतस्परि" इति वा मन्त्रः तत्र सहस्राक्षं मत्तैरावतस्थितं पीतकिरीट-कुण्डलधरं दक्षिणवामकरस्थवज्रोत्पलमिन्द्रं ध्यात्वा, इन्द्रः सुरपतिः श्रेष्ठो वज्रहस्तो महाबलः। शतयज्ञाधिप देवस्तस्मै नित्य नमो नमः ॥१॥

इति नत्वा इन्द्राय साङ्गाय सपरिवाराय सायुधाय सशक्तिकायैतं माष भक्तबलिं समर्पयामीति बलिं दद्यात् ॥ तत आचम्याग्नये गत्वा पूर्ववत् कलशं निधाय पुण्डरीकं पूजयित्वाऽमृतं च प्रपूज्य 'एह्येहि वैश्वानर हव्यवाह! मुनिप्रवीरैरभितोऽभिजुष्ट। तेजोवतालोकगणेन सार्धं ममाध्वरं पाहि कवे नमस्ते ॥१॥ भो अग्ने इहागच्छेहतिष्ठेति साङ्गं सपरिवारं सायुधं सशक्ति-कमग्निं कलशे आवाह्य "त्वं नो अग्ने" इत्यग्निं गन्धादिना प्रपूज्य "अग्नि दूतं" इति रक्तां पताकां रक्तध्वजं पञ्चहस्तदण्डमुच्छ्रयेत्। ततश्छागस्थं रक्तं दक्षिणवामकरधृतरक्तकमण्डलु यज्ञोपवीतिनमग्निं ध्यात्वा, "आग्नेयः पुरुषो रक्तः सर्वदेवमयोऽव्ययः। धूम्रकेतुरजोऽध्यक्षस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥" इति नत्वा साङ्गायेत्यादिकमुक्त्वा अग्नये एतं माषभक्तबलिं समर्पयामीति बलिं दद्यात्।

तत आचम्य दक्षिणे गत्वा प्रतिद्वारशाखं पूर्ववत् कलशद्वयं संस्थाप्य वामनगजं तत्र न्यस्य पूजयेत् ततो यजुर्वेदविदावृत्विजौ—

कातराक्षो यजुर्वेदस्त्रैष्टुभो विष्णुदैवतः। काश्यपेयस्तु विप्रेन्द्र! शान्ति-पाठं मखे कुरु ॥१॥ इति प्रत्येकं प्रार्थ्य गन्धादिना "इषेत्वोर्जेत्वा" इति-पूजयेत्। ततः "एह्येहि वैवस्वत धर्मराज सर्वामरैरर्चित धर्ममूर्ते। शुभा-शुभानन्दशुचामधीश शिवाय नः पाहि मखे नमस्ते ॥१॥

भो यमेहागच्छेह तिष्ठेति साङ्गादिविशिष्टं यममावाह्य "यमाय सोम" मिति गन्धादिभिः पूजयित्वा कृष्णां पताकां कृष्णं च ध्वजं पञ्चहस्तायतं दण्डं "आयं गौ" रिति उच्छ्रयेत्।

ततो महिषारूढं धृतदण्डपाशदक्षिणवामकरद्वय कृष्णाञ्जनचयनिभमग्निसमनयनं यमं ध्यात्वा 'महामहिषमारूढं दण्डहस्तं महाबलम् आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजा मे प्रतिगृह्यताम् ॥१॥

इति नत्वा साङ्गायेत्यादि यमायैतं मापभक्तबलिं समर्पयामीति बलिं दद्यात्।

तत आचम्य नैर्ऋत्यां पूर्ववत्कलशं स्थापयित्वा कुमुदगजं दुर्जयञ्च पूजयित्वा।

"एह्येहि रक्षोगणनायकस्त्वं विशालवेतालपिशाचसङ्घैः। ममाध्वरं पाहि पिशाचनाथ! लोकेश्वरस्त्व भगवन्नमस्ते। भो निर्ऋते! इहागच्छेहतिष्ठेति साङ्गादिविशिष्टमावाह्य "मोषण" इति "असुन्वन्त" मिति वा निर्ऋतिं गन्धादिभिः पूजयित्वा नीला पताकां ध्वजं च पञ्चहस्तदण्ड "मोपुण" इत्युच्छ्रयेत्। ततो नरारूढं खड्गहस्तनीलवर्णं नीलाभरणं निर्ऋतिं ध्यात्वा,

'नरारूढं महाकायं खड्गहस्तं महाबलम्।
नीलं रक्षोगणैर्जुष्टं नीलाभरणभूषितम् ॥१॥
निर्ऋतिं खड्गहस्तं च सर्वलोकैकनायकम्।
आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजा मे प्रतिगृह्यताम् ॥२॥

इति नत्वा साङ्गायेत्यादि निर्ऋतये एतं मापभक्तबलिं समर्पयामीति बलिं दद्यात्।

तत आचम्य पश्चिमद्वारे प्रतिशाखं कलशद्वयं पूर्ववत् स्थापयित्वा अञ्जनं दिग्गजं न्यस्य पूजयेत्। ततः सामवेदविदावृत्विजौ—

'सामवेदस्तु पिङ्गाक्षो जागतः शुक्रदैवतः।
भारद्वाजस्तु विप्रेन्द्र! शान्तिपाठं मखे कुरु' ॥१॥

इति प्रार्थ्य गन्धादिना "अग्न आयाहि" इति पूजयेत् । ततः
"एह्येहि यादोगण वारिधीना गणेन पर्जन्यसहाप्सरोभिः ।
विद्याधरेन्द्रामरगीयमान पाहि त्वमस्मान् भगवन्नमस्ते" ॥१॥

भो वरुणेहागच्छेहतिष्ठेति साङ्गादि विशिष्ट वरुणमावाह्य "तत्वा यामि" इति गन्धादिभिः पूजयित्वा श्वेतां पताका ध्वज च इम मे वरुण" इत्युच्छ्रयेत् । ततो मकरस्थ पाशहस्त शुक्लवर्णं किरीटधारिण वरुणं ध्यात्वा,

'पाशहस्त च वरुणमर्णसा निधिमीश्वरम् ।
आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्वरुणाय नमो नम ॥१॥

इति नत्वासाङ्गायेत्यादि वरुणायैत मापभक्तबलि समर्पयामीति बलि दद्यात् ।

तत आचम्य वायव्या पूर्ववत् कलश निधाय पुष्पादन्तं सिद्धार्थं च सम्पूज्य—

"एह्येहि यज्ञे मम रक्षणाय मृगाधिरूढः सह सिद्धसङ्घैः ।
प्राणाधिपः कालकवेः सहाय ! गृहाण पूजा भगवन्नमस्ते" ॥१॥

भो वायो इहागच्छेहतिष्ठेति साङ्गादिविशिष्ट वायुमावाह्य "तव वायवृतस्पतये" इतिगन्धादिना पूजयित्वा धूम्रा पताका ध्वज च "वायोशत" मित्युच्छ्रयेत् । ततो मृगाधिरूढ चित्राम्बरध्वजधरदक्षवामहस्त वायु ध्यात्वा—

"वायुमावाहाग चैन पवनं वेगवाहनम् । आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन्पूजेय प्रतिगृह्यताम्" ॥१॥

"अनावारो महोजाश्च यद्युदृष्टिगतिर्दिवि । तस्मै पूज्याय जगतो वायवेऽह नमामि च ॥"

इति नत्वा साङ्गायेत्यादिवायवे एतं मापभक्त बलिसमर्पयामि इति बलि दद्यात् ॥

तत आचम्य द्वारे प्रतिद्वारशाखे कलशद्वय प्राग्वत् स्थापयित्वा सार्वभौम दिग्गजं न्यस्य प्रपूज्य, अथर्वविदावृत्विजौ ।

वृहन्नेत्रोऽथर्ववेदोऽनुष्टुभो गुरुदेवतः । वैशम्पायन विप्रेन्द्र ! शान्तिपाठ मतो वृद ॥१॥

इतिप्राप्य "शन्नोदेवी" रिति गन्धादिना प्रपूज्य ततः 'एह्येहि यज्ञेश्वर यक्षरक्षा विधत्स्व नक्षत्रगणेन सार्धम् । सर्वौषधीभिः पितृभिः सहैव गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते' ॥१॥

भो सोमेहागच्छेहतिष्ठेति-साङ्गादिविशिष्टं सोममावाह्य "सोमोधेनु" "वय सोमे" ति वा पूजयित्वा हरिता श्वेता पताका ध्वजं च "आप्यायस्व" इति न्यस्य नरयुतविमानस्थ कुण्डलहारकेयूररुचिरं वरगदाधरदक्षिणवामभुजद्वय मुकुटिन महोदरं महाकार हरितवर्णं कुबेरं ध्यात्वा, 'सर्वनक्षत्रमध्ये तु सोमो राजा व्यवस्थितः । तस्मै सोमाय देवाय नक्षत्रपतये नमः ॥' इति नत्वा साङ्गायेत्यादि सोमायैतं मापभक्तबलिं समर्पयामि इति बलि दद्यात् ॥

तत आचम्य ऐशान्या, पूर्ववत् कलश निधाय, सुप्रतीकं मङ्गल च, तत्र सम्पूज्य, 'एह्येहि विश्वेश्वर नस्त्रिशूलखट्वाङ्गधारिन् स्वगणेन सार्धम् । लोकेशे यज्ञेश्वर यज्ञसिद्धयै गृहाण पूजां भगवन्नमस्ते ॥१॥'

भो इशानेहागच्छेहतिष्ठेति साङ्गादिविशिष्टमीशानमावाह्य "तमीशान" मिति गन्धादिना प्रपूज्य श्वेता सर्ववर्णाम्वा पताका ध्वज च "अभित्वादेवसवितः" इत्युच्छ्रयेत् । ततो वृषारूढ दक्षिणवामहस्तधृतवरत्रिशूलं त्रिनेत्रं शुक्लवर्णमीशानं ध्यात्वा,

'वृषस्कन्धसमारूढ शूलहस्तं त्रिलोचनम् ।
आवाहयामि यज्ञेऽस्मिन् पूजा मे प्रतिगृह्यताम् ॥१॥
सर्वाधिपो महादेव इशानः शुक्ल- ईश्वरः ।
शूलपाणिर्विरूपाक्षस्तस्मै नित्य नमोनमः ॥१॥

इतिनत्वा साङ्गायेत्यादि ईशानायैतं मापभक्तबलिं समर्पयामि इति बलिन्दद्यात्॥

तत आचम्य ईशानपूर्वयोर्मध्येऽध: !

'एह्येहिपातालधरामरेन्द्र ! नागाङ्गनाकिन्नरगीयमान ।
यक्षोरगेन्द्रामरलोकसङ्घैरनन्त रक्षाध्वरमस्मदीयम् ॥१॥

भो अनन्तेहागच्छेहतिष्ठेति साङ्गादि विशिष्टमनन्तमावाह्य "आयगौ" रिति । गन्धादिभिरभ्यर्च्य मेघवर्णा श्वेता पताका ध्वजं च "आयगौ" रित्युच्छ्रयेत् ।

अनन्तशयनासीनं फणासप्तकमण्डितम् । पद्मशंखधरोर्ध्वाधदक्षभागकरद्वयम्
चक्रगदाधरोर्ध्वाधो वामभागकरद्वयम् । इति नीलवर्णमनन्तं ध्यात्वा

याऽसावनन्तरूपेण ब्रह्माण्डं सचराचरम् ।
पुष्पवत्धारयेन्मूर्ध्नि तस्मै नित्यं नमोनमः ॥१॥

इति नत्वा साङ्गायेत्यादि अनन्तायैतं मापभक्तबलिं समर्पयामि इति-बलिं दद्यात् ।

तत आचम्य पश्चिमनैर्ऋतमध्ये ऊर्ध्वम्

एह्येहि सर्वाधिपतये सुरेन्द्र लोकेन सार्धं पितृदेवताभिः ।
सर्वस्य धाताऽस्यमितप्रभावो विशाध्वरं नः सततं शिवाय ॥१॥

भो ब्रह्मन्निहागच्छेह तिष्ठेति साङ्गादिविशिष्टं ब्रह्माणमावाह्य "ब्रह्मजज्ञान" मिति गन्धादिभिरभ्यर्च्य रक्तां पताकां स्रुवकमण्डलुधरोर्ध्वाधोवामकरद्वयं चतुर्मुखं श्मश्रुजटिलं लम्बोदरं रक्तवर्णं ब्रह्माणं ध्यात्वा पद्मयोनिश्चतुर्मूर्तिर्वेदावासः पितामहः । यज्ञाध्यक्षश्चतुर्वक्त्रस्तस्मै नित्यं नमो नमः ॥१॥ इति नत्वा साङ्गायेत्यादि ब्रह्मणे एतं मापभक्तबलिं समर्पयामि इति बलिं दद्यात् ।

तत आचम्य मण्डपमध्ये चामरकिङ्किणीयुतात्युच्चदण्डान् दशषोडशहस्तदण्डे वा दशहस्तदीर्घस्त्रिहस्तविस्तारः पञ्चहस्तदीर्घो हस्तविस्तारो वा महाध्वजो विचित्रवर्णः "इन्द्रस्य वृष्णो" इति संस्थाप्य "ब्रह्मजज्ञान" मिति च तत्रैव ब्रह्मपूजनं कार्यम् । ततो मण्डपषोडशस्तम्भेषु सर्वेभ्यो देवेभ्यो नमः । वंशेषु किन्नरेभ्यो नमः । ततः पूर्वस्यां दिशि किञ्चिद्भूमिमुपलिप्योपविश्य ।

'त्रैलोक्ये यानि भूतानि स्थावराणि चराणि ।
ब्रह्मविष्णुशिवैः सार्धं रक्षां कुर्वन्तु तानि मे ॥१॥
देवदानवगन्धर्वाः यक्षराक्षसपन्नगाः ।
ऋषयोमनवोगावो देवमातर एव च ॥२॥
सर्वे ममाध्वरे रक्षा प्रकुर्वन्तु मदान्विताः ।
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च क्षेत्रपालो गणैःसह ॥३॥

रक्षन्तु मण्डपं सर्वं घ्नन्तु रक्षांसि सर्वतः ।' इति । त्रैलोक्यस्थेभ्यः स्थावरेभ्यो भूतेभ्यो नमः । त्रैलोक्यस्थेभ्यश्चरेभ्यो भूतेभ्यो नमः । ब्रह्मणे नमः । विष्णवे०, शिवाय०, देवेभ्यो०, गन्धर्वेभ्यो०, दानवेभ्यो०, यक्षेभ्यो०, राक्षसेभ्यो०, पन्नगेभ्यो०, ऋषिभ्यो०, मनुष्येभ्यो०, गोभ्यो०, देवमातृभ्यो-नमः । इति प्रत्येकं सम्पूज्य पुष्पादियुतं पूर्ववन्मन्त्रैरेव तस्यां भूमावेवैतेभ्य एव माषभक्तबलिं दद्यात् ॥

ततः आचार्यः सत्विकः प्रक्षालितपादपाणिराचान्तः प्राग्द्वारेण मण्डपं प्रविश्य दक्षिणद्वारपश्चिमदेशे उपविश्याचम्य "भो ब्राह्मणा यथाविहितं कर्म कुरुध्वमिति ब्रूयात्' । ततो गुरुर्महावेद्युपरि पुष्पाणि विकीर्य उपरि च वितानं पञ्चवर्णं फलपुष्पोपशोभितं वेदिमानं बध्नीयात् । ग्रहवेद्याञ्च तन्मानं बध्नीयात् सर्वतोभद्रं च लिखेत् । पूर्णाभिषेकदीक्षायां तु नवहस्त-परिमितवेद्यां श्रीचक्रं तत्तदिष्टदेवताचक्रं वा रचयेत् ।

नवहस्तं त्रिहस्तम्वा श्रीचक्रमभिषेचने ।
स्थण्डिले नित्यपूजायां हस्तमात्रं प्रशस्यते ॥१॥

इति तन्त्रराजवचनात् । तस्मिन्पक्षे ग्रहवेदी सर्वतोभद्रमण्डलवेदी चैशान्यां क्रियेते । गुरुमण्डलवेदी वायव्ये मिथुनपूजावेदी आग्नेये तद्दिन-नित्यापूजावेदी वास्तुमण्डलसमीपे इति सम्प्रदायः । तथाऽऽवसरे आचार्यः स्वगृह्योक्तविधिना स्वकुण्डेऽग्निस्थापनं कुर्यात् । तेनैव क्रमेणान्यकुण्डेष्वपि स्वस्वशाखोक्तविधिना ऋत्विजोऽग्निस्थापनं कुर्युः । गुरुश्च सर्वकर्माध्यक्ष-स्तिष्ठेत् । एवमग्निषु प्रणीतेषु गुरुर्ग्रहवेद्यां सर्वतोभद्रे च अद्येत्यादि दीक्षा-दानाख्यकर्माङ्गतया मण्डपदेवतास्थापनं करिष्ये, इति सङ्कल्प्य ब्रह्मादीन् स्थापयेत् । मध्ये ब्रह्मा "ब्रह्मजज्ञानं" गौतमो वामदेवो ब्रह्मात्रिष्टुप् ब्रह्म-स्थापने पूजने च विनियोगः । एवमुत्तरत्र । "ॐ ब्रह्मजज्ञानं" ॥१॥ उत्तरे सोमः ॥२॥ "ॐ अभित्वादेव सवितः" ॥३॥ पूर्वे इन्द्रः "इन्द्र वो" मधु-च्छन्दा इन्द्रो गायत्री ॥४॥ आग्नेये अग्निः "अग्नि" काण्वो मेधातिथि-रग्निर्गायत्री "अग्निं दूतं वृणीमहे" ॥५॥ दक्षिणे यमः "यमाय सोमं"

वैवस्वतो यमो यमोऽनुष्टुप् ॥६॥ नैर्ऋत्यां निर्ऋतिः "मो षुणो" घोरः कण्वो निर्ऋतिर्गायत्री ॥७॥ पश्चिमे वरुणः "तत्त्वायामि" शुनःशेपो वरुणस्त्रिष्टुप् ॥८॥ वायव्यां वायुः वायोशतं गौतमो वामदेवो वायुरनुष्टुप् ॥९॥ वायुसोममध्येऽष्टौ वसवः "जमया अत्र" मैत्रावरुणो वसिष्ठो वसवस्त्रिष्टुप् ॥१०॥ सोमेशानमध्ये एकादशरुद्राः "आरुद्रासः" श्यावाश्वस्यैकादशरुद्रा जगती "आरुद्रासः" ईशानेन्द्रमध्ये द्वादशादित्याः "त्यान्नु क्षत्रियान" सांमदो (मत्स्यो) ॥११॥ 'मध्ये द्वादशादित्या गायत्री ॥१२॥ इन्द्राग्निमध्ये अश्विनौ "अश्विना" राहूगणो गौतमोऽश्विनौ उष्णिक् ॥१३॥ अग्नियममध्ये विश्वेदेवाः सपितृकाः "ओमासः मधुच्छन्दाविश्वेदेवा गायत्री ॥१४॥ यमनिर्ऋतिमध्ये सप्तयक्षाः "अभित्य" वामदेवः सप्तयक्षाः प्रकृतिः "ॐ अभित्यं देवं सवितारमोण्योकविक्रतुमर्चामि सत्यसवं रत्नधामभिः प्रियं मतिकविं मतिम् । ऊर्ध्वायस्या मतिर्भाअदिद्युतत्सवीमनि हिरण्यपाणिरमिमीतः सुक्रतुः प्रियास्वः ॥१५॥ निर्ऋतिवरुणमध्ये भूतनागाः "आयं" गौ सार्पराज्ञी सार्पा गायत्री "आयंगौः ॥१६॥ वरुणवायुमध्ये गन्धर्वाप्सरसः "अप्सरसा" एतश ऋष्यश्रृङ्गो गन्धर्वाप्सरसोऽनुष्टुप् "ॐ अप्सरसां गन्धर्वाणा" ॥१७॥ ब्रह्मसोममध्ये स्कन्दनन्दीश्वरशूलमहाकालाः "कुमार" कुमारः स्कान्दस्त्रिष्टुप् ऋषभं मा ॥१९॥ ब्रह्मेशानमध्ये दक्षादि सप्तकोणे वा "अदितिः" लोमयो बृहस्पतिर्दक्षोऽनुष्टुप् "ॐ अदितिर्ह्यजनिष्ट" ॥२०॥ ब्रह्मेन्द्रमध्ये दुर्गा विष्णुश्च "तामग्निवर्णां" सोभरिर्दुर्गा त्रिष्टुप् । ॐ तामग्निवर्णां" ॥२१॥ "इदं विष्णुः" काण्वोमेधातिथिर्गायत्री "ॐ इदं विष्णुः ॥२२॥ ब्रह्माग्नेयः मध्ये स्वधा "उदीरता" शंखः स्वधा त्रिष्टुप् "उदीरतामवर" ॥२३॥ ब्रह्मयममध्ये विष्णुमृत्युरोगाः "परंमृत्यो" सङ्कुसुकोमृत्युरोगस्त्रिष्टुप् ॥२४॥ ब्रह्मनिर्ऋतिमध्ये गणपतिः "गणानां त्वा" गृत्समदा गणपतिर्जगती ॥२५॥ ब्रह्मवरुणमध्ये आपः "शन्नो" अम्बरीषः सिन्धुद्वीप आपो गायत्री ॥२६॥ ब्रह्मवायुमध्ये मरुतः "मरुतो यस्य" राहूगणो गौतमामरुता गायत्री ॥२७॥ ब्रह्मणः पादमूले धरणिवाधः पृथ्वी

"स्योना" मेधातिथिर्भूमिर्गायत्री ॥२८॥ तत्रैव गङ्गादिनद्य "इमंमे" सिन्धुक्षित प्रैयमेधो, गङ्गायमुनासरस्वत्यो जगती ॥२९॥ तत्रैव सप्तसागराः "धाम्नो धाम्नो राजन्नितो वरुण नो मुञ्च । यदापो अघ्न्या इत वरुणेति शपामहे ततो वरुणो नो मुञ्च । मयिगयोमोपधीर्हिसरितो विश्वव्यचा-भूस्त्वेतो वरुण नो मुञ्च ॥३०॥ तदुपरि मेरुं नाम्ना पूजयेत् । यात्ह्ये सोमादिसमीपे क्रमेणायुधानि—गदा० त्रिशूलं० वज्रं० शक्ति० खड्गं०, पाशं० अङ्कुशं० । तद्बाह्ये उत्तरादितः गौतमः भरद्वाजः विश्वामित्रः कश्यपः जमदग्निः अरुन्धतीति ॥८॥ तद्बाह्ये पूर्वादित ऐन्द्री कौमारी ब्राह्मी वाराही चामुण्डा वैष्णवी माहेश्वरी वैनायकी इत्यष्टौ शक्तयः एतान् स्वस्वमन्त्रैः प्रतिष्ठाप्य प्रत्येकं सह वा पूजयेत् एवमग्निं प्रणीय देवतास्थापनवेद्यां ग्रहादिपञ्चाशीतिदेवतास्थापनं कुर्यात् ।

तत्राद्यं प्रयोगः अद्येत्यादिदीक्षादानस्यकर्मणि ग्रहादिपीठदेवतास्थापनमहं करिष्ये । प्रणवस्य परब्रह्मऋषिः परमात्मादेवता, देवीगायत्रीछन्दः व्याहृतीनां क्रमेण जमदग्निभरद्वाजभृगवोऋषयः अग्निवायुसूर्यदेवताः देवीगायत्रीदेवीउष्णिक्देवीबृहत्यश्छन्दांसि सूर्याद्यावाहने विनियोगः । तत्राग्रपीठमध्ये वर्तुले द्वादशाङ्गुले मण्डले प्राङ्मुख सूर्यं रक्तपुष्पाक्षतैः आकृष्णेति हिरण्यस्तूपऋषिः सवितादेवता त्रिष्टुप् छन्दः सूर्यावाहने विनियोगः । "आकृष्णेन०" ॐ भूर्भुवः स्वः कलिङ्गदेशोद्भव काश्यपगोत्र सूर्यंहागच्छेत्यावाह्येहतिष्ठेति स्थापयेत् । तत आग्नेये चतुरस्रे चतुर्विंशत्यङ्गुले मण्डले प्राङ्मुखं सोम श्वेतपुष्पाक्षतैः आप्यायस्वेति गौतम होमो गायत्री सोमावाहने विनियोगः "ॐ आप्यायस्व०" ॐ भूर्भुव० स्व० यमुनातीरोद्भव आत्रेयसगोत्र सोमेहागच्छेत्यावाह्येहतिष्ठेति स्थापयेत् ॥२॥ ततो दक्षिणे त्रिकोणे त्र्यङ्गुले मण्डले दक्षिणमुखं भौम रक्तपुष्पाक्षतैः अग्निर्मूर्धेतिविरूपः अङ्गिरसोऽङ्गारको गायत्री अङ्गारकावाहने विनियोग । "ॐ अग्निर्मूर्धा०" ॐ भूर्भुव स्व० सरस्वती समुद्भव भारद्वाजसगोत्र भौमेहागच्छेत्यावाह्येहतिष्ठेति स्थापयेत् ॥३॥ तत ऐशाने बाणाकारे चतुरङ्गुले मण्डले उदङ्मुखं बुधं पीतपुष्पाक्षतैः उद्बुध्यस्वेमिति बुध सौम्यो बुधस्त्रिष्टुप्

बुधावाहने विनियोग । "ॐ उद्बुध्यस्व०" ॐ भूर्भुव स्व मगधदेशोद्भव आत्रेयसगोत्र बुधेहागच्छेत्यावाह्येहतिष्ठेति स्थापयेत् ॥४॥ तत उत्तरतो दीर्घचतुरस्रे षडङ्गुले उदङ्मुख वृहस्पति पीतपुष्पाक्षते वृहस्पतये इति गृत्समदो वृहस्पतिस्त्रिष्टुप् वृहस्पत्यावाहने विनियोग । "वृहस्पतेऽतिय०" ॐ भूर्भुव स्व सिन्धुदेशोद्भवाङ्गिरससगोत्र वृहस्पते इहागच्छेत्यावाह्येहतिष्ठेति स्थापयेत् ॥५॥ तत पूर्वे पञ्चकोणे नवाङ्गुले मण्डले प्राङ्मुख शुक्र शुभ्रपुष्पाक्षते शुक्रइति पाराशर शुक्रो द्विपदाविराट् शुक्रावाहने विनियोग । "ॐ शुक्र शुशुक्वान्" ॐ भूर्भुव स्व भोजराड्देशोद्भवभार्गवसगोत्र शुक्रेहागच्छेत्यावाह्येहतिष्ठेति स्थापयेत् ॥६॥ तत पश्चिमे धनुषि द्व्यङ्गुले प्रत्यङ्मुख शनि कृष्णपुष्पाक्षते शमग्निरिति इरिंबिठि शनैश्चर-उष्णिक् शन्यावाहने विनियोग । "ॐ शमग्नि" ॐ भूर्भुव स्व सौराष्ट्रदेशोद्भव काश्यपसगोत्र शने इहागच्छेत्यावाह्येहतिष्ठेति सस्थापयेत् ॥७॥ तत कृष्णशूर्पमण्डले दक्षिणमुख राहु धूम्रपुष्पाक्षते 'कयान' इति वामदेवो राहुर्गायत्री विनियोग । "ॐ कयान" ॐ भूर्भुव स्व पूर्वदेशोद्भव पाटलिसगोत्र राहो इहागच्छेत्यावाह्येहतिष्ठेति स्थापयेत् ॥८॥ ततो वायव्ये ध्वजाकारे मण्डले दक्षिणमुखान् केतून् कृष्णपुष्पाक्षते' केतु कृण्वन्निति मधुच्छन्दा केवतो गायत्री केत्वावाहने विनियोग । "ॐ केतु कृण्वन्" ॐ भूर्भुव स्व मध्यदेशोद्भवा जैमिनिसगोत्रा केनव इहागच्छतेत्यावाह्येह तिष्ठतेति स्थापयेत् ॥९॥

अथाधिदेवता श्वेतपुष्पाक्षतै क्रमात् सूर्यादीना दक्षिणत स्थाप्या । "त्र्यम्बक" वशिष्ठो रुद्रोऽनुष्टुप् । विनियोग सर्वत्र देय । "त्र्यम्बक" ॐ भूर्भुव स्व ईश्वर ॥१॥ "गौरीर्मिमाय" दीर्घतमा उमा जगतीसोमदक्षिणे ॥२॥ "यदक्रन्दो" दीर्घतमा स्कन्दस्त्रिष्टुप् ॥३॥ "विष्णो दीर्घतमा विष्णुस्त्रिष्टुप् ॥४॥ "ब्रह्मजज्ञान" गौतमो वामदेवोब्रह्मात्रिष्टुप् ॥५॥ "इन्द्र धो" मधुच्छन्दा इन्द्रो गायत्री ॥६॥ "यमायसोम" यमो यमोऽनुष्टुप् ॥७॥ "मोषुणो" घोर कण्वोगायत्री ॥८॥ "उपोवाज' प्रस्कण्वस्त्रिगुप्तो बृहती

॥५॥ "एवमेव" शुक्लपुष्पाक्षतैर्ब्रह्माणं वामे मन्त्रान्ते व्याहृतीरुक्त्वा इहा-गच्छेहतिष्ठेति चोक्त्वा प्रत्यधिदेवताः स्थापयेत् ।

"अग्नि" काण्वो मेधातिथिरग्निर्गायत्री, "अग्निदूतं" ॥ १ ॥ "अप्सुमेधातिथिरापोऽनुष्टुप् ॥२॥ "स्योना" मेधातिथिर्भूमिर्गायत्री ॥३॥ "इन्द्रं विष्णु." मेधातिथिर्विष्णुर्गायत्री ॥४॥ "इन्द्रः श्रेष्ठानि" गृत्समद इन्द्रस्त्रिष्टुप् ॥५॥ "इन्द्राणी" वृषाकपिरिन्द्राणीपङ्क्तिः ॥६॥ "प्रजापते न हि" हिरण्यगर्भप्रजापतिस्त्रिष्टुप् ॥७॥ "अरं गोः" सार्पराज्ञी सार्पागायत्री ॥८॥ "ब्रह्म जज्ञानं" गौतमो वामदेवो ब्रह्मात्रिष्टुप् ॥९॥ ततः शुक्लपुष्पा-क्षतैर्विनायकादीन् पञ्च० । "गणानां त्वा०" गृत्समदो गणपतिर्जगती, राहोः (वामे) विनायकम् ॥१॥ "जातवदसे" काश्यपोदुर्गात्रिष्टुप्, शने-रुत्तरतो दुर्गां० ॥२॥ "तव वायमृतस्पते" आङ्गिरसो वायुर्गायत्री, रवेरुत्त-रतोवायु० । एतान् मन्त्रान्पठन्ति सम्प्रदायिकाः ॥३॥ "आदित्प्रत्नस्य" वत्सआकाशो गायत्री राहोर्दक्षिणेआकाशम् ॥४॥ "एषो उषा" प्रस्कण्वोऽ-श्विनौ गायत्री अश्विनाविहागच्छतमिहतिष्ठतमिति केतोर्दक्षिणेऽश्विनौ ॥५॥

अथ लोकपालाः—"इन्द्रं विश्वाजेता मधुच्छन्दम् इन्द्रोऽनुष्टुप्, इन्द्रेहा-गच्छेहतिष्ठेति पूर्वे इन्द्रं । एवमुत्तरत्र ॥१॥ "अग्नि" मेधातिथिरग्नि-र्गायत्री ॥२॥ "यमाय सोम" यमो यमोऽनुष्टुप् ॥३॥ "मोषुणो" घोरः कण्वोनिर्ऋतिर्गायत्री ॥४॥ "त्वन्नो अग्ने" वामदेवोवरुणस्त्रिष्टुप् ॥५॥ "तववायो" व्यश्वोवायुर्गायत्री ॥६॥ "सोमो धेनुं" गौतमः सोमस्त्रि-ष्टुप् ॥७॥ "तमीशानं" गौतमःसोम ईशानो गायत्री ॥८॥ "सहस्रशीर्ष." नारायणोऽनन्तोऽनुष्टुप्, ईशानपूर्वयोर्मध्येऽनन्त० ॥९॥ "ब्रह्मजज्ञान' गौतमो वामदेवो ब्रह्मात्रिष्टुप् ॥१०॥ नैर्ऋत्यपश्चिमयोर्मध्ये ब्रह्मा-णम्० ॥११॥ ततः उत्तरे "क्षेत्रस्य" वामदेवः क्षेत्रपालोऽनुष्टुप् । "वास्तो-ष्पते" वसिष्ठो वास्तोस्पतिस्त्रिष्टुप् । तत 'सामवनिशशीरस्त्वं गहनं पर-मेष्ठिनः । विपपापहरो नित्यमतशान्तिं प्रयच्छ मे' ॥१॥ इत्यनेन चोत्तरे गरुत्मन्तमावाह्य । रवेः पूर्वे शेषं, सोमस्याग्रे वासुकिं, भौमाग्रे तक्षकं,

बुधोत्तरे कर्कोटक, बृहस्पतेरग्रे पद्मक, शनिपश्चिमे शङ्खपालं, राहोः पुरः कम्बलं, केतोः पुरः कुलिकम्। पीठात् प्राच्यामश्विन्यादि सप्तनक्षत्राणि, विष्कम्भादिसप्तयोगान्, ववबालवकरणे, सप्तद्वीपानि ऋग्वेदं च। दक्षिणे पुष्यादिसप्तनक्षत्राणि, धृत्यादिसप्तयोगान्, कौलवतैतिले करणे, सप्तसागरान्, यजुर्वेदञ्च। पश्चिमे स्वात्यादिसप्तनक्षत्राणि, वज्रादिसप्तयोगान्, गरवणिजे करणे, सप्तपातालानि, सामवेदञ्च। उत्तरेऽभिजिदादिसप्तनक्षत्राणि, साध्यादिषड्योगान्, विष्टिकरणं भूरादिसप्तलोकान् अथर्ववेदञ्च। वायव्ये ध्रुवं सप्तर्षींश्च। अथ यथावकाशं गङ्गादिसप्तसरितः सप्त कुलाचलान्, अष्टौ वसून्, द्वादशादित्यान्, एकादशरुद्रान्, एकोनपञ्चाशन्मरुतः, षोडशमातॄः, षडृतून्, द्वादशमासान्, द्वे अयने पञ्चदशतिथीः, षष्टिसम्वत्सरान्, नागान्सर्पान्, यक्षान्, गन्धर्वान्, विद्याधरान्, अप्सरसः, रक्षांसि भूतानि मनुष्यान् इति। ततो ऐशान्यां कलशं स्थाप्य तत्र वरुणमावाह्य सम्पूज्याभ्यर्च्चयेत्।

यथा कलशाभिमन्त्रणम्।

कलशस्य मुखे विष्णुः कण्ठे रुद्रः समाश्रितः।
मूले तस्य स्थितो ब्रह्मा मध्ये मातृगणाः स्मृताः ॥१॥
कुक्षौ तु सागराः सर्वे सप्तद्वीपा वसुन्धरा।
ऋग्वेदोऽथ यजुर्वेदः सामवेदो ह्यथर्वणः ॥२॥
अङ्गैश्च सहिताः सर्वे कलशन्तु समाश्रिताः।
अत्र गायत्री सावित्री शान्तिः पुष्टिकरी तथा ॥३॥
आयान्तु यजमानस्य दुरितक्षयकारकाः।
देवदानवसम्वादे मथ्यमाने महोदधौ ॥४॥
उत्पन्नोऽसि तदा कुम्भ ! विधृतो विष्णुना स्वयम्।
त्वत्तोये सर्वतीर्थानि, देवाः सर्वे त्वयि स्थिताः ॥५॥
त्वयि तिष्ठन्ति भूतानि त्वयि प्राणाः प्रतिष्ठिताः।
शिवः स्वयं त्वमेवासि विष्णुस्त्वं च प्रजापतिः ॥६॥

आदित्या वसवो रुद्रा विश्वेदेवा सपैतृका ।
त्वयि तिष्ठन्ति सर्वेऽपि यत कामफलप्रदा ॥ ७ ॥
त्वत्प्रसादादिम यज्ञ कर्तुमीहे जलोद्भव ।
सान्निध्य कुरु मे देव प्रसन्नो भव सर्वदा ॥ ८ ॥

इति । तत फलपुष्पमालोल्लसित वितान बृहस्पतिदैवत सूर्यादिभ्य इदं न ममेत्युत्सृज्य ग्रहवेद्युपरि बध्नीयात् । एवं वेदोक्तमण्डपप्रतिष्ठादिक विदध्यादिति । अन्यत्सर्वं प्रागुक्तविधिना विधेयम् । ततो गुरु शूद्रव्यतिरिक्त शिष्यं पञ्चगव्य पाययित्वा पीठन्यासं कारयेत् ।

अथ योगपीठन्यास

। तत्रासद्वयोरुद्वयकल्पितपादचतुष्टय मुखनाभिपार्श्वद्वयमध्योपकल्पितगात्र चतुष्टय योगपीठ निजदेहे ध्यात्वा न्यसेत् । मूलाधारे ४ (ॐ ऐं ह्रीं श्रीं) महाकालाय ४ रक्तवर्णाय मण्डूकाधाराय नम । तदुपरि स्वाधिष्ठानपर्यन्त ४ पञ्चवक्त्राय दशभुजरक्तकृष्णवामदक्षिणपार्श्वाय कालाग्निरुद्राय नम । तदुपरि नाभिपर्यन्त ४ बन्धूकरुचिरायै मूलप्रकृत्यै नम । तदुपरि हृत्पर्यन्त ४ शरच्चन्द्रप्रभायै पङ्कजद्वयधारिण्यै आधारशक्त्यै नम । तदुपरि हृदय एव ४ कूर्माय नम , ४ अनन्ताय नम , ४ वहाराय०, ४ पृथिव्यै०, ४ अमृतार्णवाय०, (४ समस्तमातृकामुद्धार्य) नवखण्डविराजिताय नवरत्नमयद्वीपाय नम । (तत्रैव नवखण्डेषु ईशानादिमध्यान्त), ४ अ १६ पुष्परागरत्नाय नम । ४ क ५ नीलरत्नाय० ४ च ५ वैदूर्यरत्नाय० ४ ट ५ विद्रुमरत्नाय ४ त ५ मौक्तिकरत्नाय० ४ प ५ मरकतरत्नाय० ४ यं ४ वज्ररत्नाय० ४ श ४ गोमेदरत्नाय० ४ ल क्ष पद्मरागरत्नाय नम । तत्रैव स्वर्णपर्वताय नम । तदुपरि ४ नन्दनोद्यानाय नम । तन्मध्ये ४ कल्पकोद्यानाय नम ४वसन्तादिषड्ऋतुभ्यो नम । पश्चिमे ४ इन्द्रियाश्वेभ्य ०, पूर्वे ४ इन्द्रियार्थ गजेभ्यो नम , ४ विचित्ररत्नभूमिकायै नम । तत्र (पश्चिमादिमध्यान्त विलोमेन) ४ कालचक्रेश्वरी श्रीपादुका पूजयामि ४ मुद्राचक्रेश्वरी श्रीपा० ४ मातृकाचक्रेश्वरी श्रीपा० ४ रत्नचक्रेश्वरी श्रीपा० ४ देशचक्रेश्वरी श्री० ४

गुरुचक्रेश्वरी श्री० ४ तत्त्वचक्रेश्वरी श्री ४ ग्रहचक्रेश्वरी श्री० ४ मूर्तिचक्रेश्वरी श्री० ४ कारणतोयपरिधये ४ माणिक्यमण्डपाय०। तस्य (निर्ऋतादिकोणेषु मध्ये च) ४ दर्शरूपिणीशक्ति श्री० ४ कालरूपिणीशक्ति श्री० ४ आकाररूपिणीशक्ति श्री० ४ शब्दरूपिणीशक्ति श्री० ४ मध्ये संगीतयोगिनीरूपिणीशक्ति श्री० ४ तन्मध्ये समस्तगुप्तप्रकटयोगिनी चक्ररूपिणीशक्तिश्री०। (ततस्तन्मध्ये) ४ कल्पतरुभ्यो नमः (तेषामधस्तात्) ४ रत्नवेदिकायै नमः। तदुपरि ४ श्वेतच्छत्राय नमः। तस्याधः ४ रत्नसिंहासनाय नमः। (इत्येतत्सर्वं मानसपङ्कजे विन्यस्य यथायथं तत्तत्स्थानान्यध्यवस्य रत्नसिंहासनत्वेनाऽस्मदेहं ध्यायेत्)। तत्र सिंहासनदेवता न्यसेत्। दक्षांसे ४ रक्तवर्णाय वृषभरूपाय धर्माय नमः। वामांसे ४ श्यामवर्णाय सिंहरूपाय ज्ञानाय०। वामोरौ ४ पीतवर्णाय भूताकराय वैराग्याय०। दक्षोरौ ४ इन्द्रनीलप्रभाय गजरूपाय ऐश्वर्याय० (एते सिंहासनपादरूपिणः)। मुखे ४ अधर्माय०। वामपार्श्वे ४ अज्ञानाय०। नाभौ ४ वैराग्याय०। दक्षपार्श्वे ४ अनैश्वर्याय० (एते सिंहासनगात्ररूपिणः)। मध्ये ४ मायायै० ४ विद्यायै०। तदुपरि आनन्दकन्दाय० ४ संविन्नालाय० ४ प्रकृतिमयपत्रेभ्य.० ४ विकारमयकेसरेभ्यः० ४ पञ्चाशद्वर्णबीजाढ्यमर्वतत्त्वरूपायै कर्णिकायै० तस्यां ४अं सूर्यमण्डलाय० ४उं सोममण्डलाय० ४ मं वह्निमण्डलाय० ४ सं सत्त्वाय० ४ रं रजसे, ४ तं तमसे० ४ आं आत्मने० ४ अ अन्तरात्मने० ४ पं परमात्मने० ४ ह्रीं ज्ञानात्मने०। तदुपरि पूर्वादिचतुर्दिक्षु मध्ये च ४ ज्ञानतत्त्वात्मने नमः, ४ मायातत्त्वात्मने० ४ कलातत्त्वात्मने० ४ विद्यातत्त्वात्मने ४ परतत्त्वात्मने० ४। ततः (केसरेषु पूर्वाद्यष्टदिक्षु मध्ये च श्रीचक्राधारपीठस्य नवशक्तीर्न्यसेत्)। ४ दूतर्यम्बाश्री० ४ सुन्दर्यम्बाश्री० ४ सुमुख्यम्बाश्री० ४ विरूपाम्बाश्री० ४ विमलाम्बाश्री० ४ अन्तर्यम्बाश्री० ४ बदर्यम्बाश्री० ४ पुरन्दर्यम्बाश्री० मध्ये कर्णिकाया ४ पुष्पमर्दन्यम्बाश्री०। (एता वराभयधारिण्यो रक्तवर्णा ध्येया.)। तदुपरि ४ क्लीं सर्वशक्तिकमलासनाय नमः (इति सिंहासनमन्त्र विन्यस्य तदुपरि श्रीचक्रं ध्यात्वा), ४ मूलं समस्तप्रकटगुप्तगुप्ततरसम्प्रदायकुलकौलनिगर्भरहस्यातिरहस्यपरापरातिरहस्ययोगिनी–

श्रीचक्रपादुकाभ्यो नमः इति व्यापकेन विन्यस्य, (हृदि त्रिकोणं विभाव्य तन्मध्ये) ४ मूलं ओं ह्रीं क्लीं भगवति ब्लूं नित्यकामेश्वरि स्त्रीं सर्वसत्त्ववशंकरि सः त्रिपुरभैरवि ऐं क्लीं ह्रीं श्रीश्रीं महात्रिपुरसुन्दर्यम्बाश्रीं० इति विन्यस्य, (प्रणवादिनमोऽन्तां मूलविद्यां विन्यस्य श्रीचक्रं पुरत्रयात्मकं ध्यात्वा), तत्राऽऽरोहक्रमेण ४ वाग्भवमुच्चार्य चतुरस्रषोडशदलाष्टदलात्मने शरीरात्मकाय प्रथमपुराय नमः इति व्यापकं न्यसेत् । ततः ४ कामराजमुच्चार्य चतुर्दशारद्विदशारात्मने बुद्ध्यात्मकाय द्वितीयपुराय नमः इति व्यापकम् । ४ शक्तिकूटमुच्चार्याष्टारत्रिकोणबिन्दुचक्रात्मने प्राणात्मकाय तृतीयपुराय नमः इत्यपि व्यापकं विन्यस्य ४ इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रियाशक्त्यादिसमस्तशक्तिमयात्मने श्रीचक्रस्य पुरत्रयाय नमः इति व्यापकम् । (ततो हृदयत्रिकोणस्याग्रादिकोणत्रयमपि पुरत्रयात्मकं वाग्भवादिपुरत्रयात्मकं च ध्यात्वा, तत्र प्रणवादिनमोऽन्तं वाग्भवादिकूटत्रयं न्यसेत्) । ततो नादबिन्दुकलाज्येष्ठारौद्रीवामाविषघ्नीदूतरीसर्वानन्दाख्य-श्रीचक्रस्थत्रैलोक्यमोहनादिनवचक्रशक्तिभ्यो नमः इत्यनेन व्यापकं कुर्यात् । (ततो हृदयकमलकेसरेषु कामेश्वरीपीठस्य नवशक्तीर्न्यसेत्) । ४ मोहिन्यै नमः ४ क्षोभिण्यै० ४ वशिन्यै ४स्तम्भिन्यै० ४ आकर्षिण्यै० ४ द्राविण्यै० ४ आह्लादिन्यै० ४ क्लिन्नायै० मध्ये ४ क्लेदिन्यै० इति विचिन्त्य, त्रिकोणमध्ये (बालामूलं पञ्चदशी) चोच्चार्य त्रिकोणरक्तवर्णोड्डीयानपीठश्री० त्रिकोणाग्रे ४बालामूलयोर्वाग्भवद्वयमुच्चार्य चतुरस्रपीतवर्णकामरूपपीठश्री० । दक्षिणकोणे ४ कामराजद्वयमर्धचन्द्रनिभश्वेतवर्णजालन्धरपीठश्री० । वामकोणे ४ शक्तिबीजद्वयं षड्बिन्दुलाञ्छितवृत्तधूम्रवर्ण पूर्णगिरिपीठश्री० इति पीठचतुष्टयं विन्यस्य (पुनर्वन्दवे आग्नेयादिकोणेषु ४ लां ह्लां ब्रह्मणे पृथिव्यधिपतये नमो ब्रह्मप्रेतासनश्री० । ४ वां ह्वीं विष्णवेऽपामधिपतये नमो विष्णुप्रेतासनश्री० । ४ रां ह्रूं रुद्राय तेजोधिपतये नमो रुद्रप्रेतासनश्री० । ४ यां ह्रीं ईश्वराय वाय्वधिपतये नमः ईश्वरप्रेतासनश्री० । ४ ह्सौः वियदधिपतये पञ्चवक्त्राय । सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनाय नमः सदाशिवमहाप्रेतपद्मासनश्री० । इति पञ्चप्रेतासनं न्यस्य, (तदुपरि रक्तपद्मकर्णिकाया चतुरस्रगर्भितषट्कोणपीठे पद्मासनानि विन्यसेत्) । ४ अं आं सौः त्रिपुरसुधार्णवासनाय नमः । ४ ऐं क्लीं सौः

त्रिपुरेश्वरी पीताम्बुजासनाय नम.। ४ ह्रीं क्लीं सौः त्रिपुरसुन्दरी देव्यात्मासनाय नम। ४ हैं हक्लीं हसौ त्रिपुरवासिनी सर्वचक्रासनाय नमः। ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौ त्रिपुराश्रीसर्वमन्त्रासनाय नम'। ४ ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनी साध्यसिद्धासनाय नम' (इति विन्यस्य मध्ये चतुरस्रे चतुष्पीठे चतुरासन न्यसेत्)। ऐशाने ४ वाग्भवद्वयमुच्चार्य अग्निचक्रे कामगिर्यालये मित्रेशनाथात्मके जाग्रद्दशाधिष्ठायके इच्छाशक्त्यात्मकरुद्रात्मकशक्तिवामेश्वरीदेवी ह्रीं क्लीं सौ त्रिपुरसुन्दरीदेव्यात्मासनाय नम.। वायव्यकोणे ४ कामराजद्वय, सूर्यचक्रे जालन्धरपीठे षष्ठेशनाथात्मके स्वप्नदशाधिष्ठायके ज्ञानशक्त्यात्मविष्ण्वात्मकशक्तिश्रीवज्रेश्वरीदेवी हैं हक्लीं हसौ' त्रिपुरवासिनी सर्वचक्रासनाय नम। नैर्ऋते ४ शक्तिबीजद्वयमुच्चार्य सोमचक्रे पूर्णगिरिपीठे उड्डीशनाथात्मके सुषुप्तिदशाधिष्ठायके क्रियाशक्त्यात्मकब्रह्मात्मशक्तिश्रीभगमालिनीदेवी ह्सैं ह्स्क्लीं ह्सौ त्रिपुराश्रीसर्वमन्त्रासनाय नम। आग्नेये ४ समस्तद्वयमुच्चार्य, ब्रह्मचक्रे मह्रोड्याणपीठे श्रीचर्यानाथात्मके तुर्यतुर्यातीतदशाधिष्ठायके परब्रह्मशक्त्यात्मकश्रीत्रिपुरसुन्दरीदेवी ह्रीं क्लीं ब्लें त्रिपुरमालिनी साध्यसिद्धासनाय नम। मध्ये ४ ऐं क्लीं सौ प० १५ श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीसर्वमन्त्रासनाय नम इति विन्यस्य, ४ अ ५१ शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यामायाकलाविद्यारागकालनियतिपुरुषप्रकृति-अहङ्कारबुद्धिमनस्त्वक्चक्षुश्रोत्रजिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थशब्दस्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायुवह्निसलिलपृथिव्यात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यां योगपीठासनाय नम इति व्यापकं कुर्यात्। ततो मूलमुच्चार्य श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्री० इति षट्त्रिंशत्तत्वात्मके देहमये महायोगपीठे निजेष्टदेवतां हृदि न्यसेत्। "इति देहमये पीठे चिन्तयेत्परदेवताम्।"

आचार्यः प्राङ्मुखो भूत्वा नव्यं ताम्रादिपात्रमादायास्त्रमन्त्रितजलेन प्रक्षाल्य तस्मिन् पात्रे तण्डुलानुसारेण गोक्षीरं निधाय साधारं तत्पात्रं वह्नौ संस्थाप्य, पञ्चदशप्रसृतिपरिमितान् शालितण्डुलान् मूलमन्त्रेणाभिमन्त्र्य तस्मिन् पात्रे क्षिप्त्वा पिधानपात्रमादायास्त्रमन्त्रितजलेन प्रक्षाल्य—

हुँ इति कवचमन्त्रमुच्चरंस्तेन पात्रेण पाकपात्रमुख पिधाय मूलमन्त्रमुच्चरंश्चरुं पचेत्।

ततः स्रुवेणाज्यमादाय स्विन्नं चरुं मूलमन्त्रमुच्चरन्नभिघारयेत्।

ततः—हुँ इति कवचमन्त्रेण तत्पात्रमवतार्यास्त्रमन्त्राभिमन्त्रितकुशास्तीर्णमण्डले स्थापयेत्।

ततश्चरुं त्रिधा विभज्य भागमेकं पात्रान्तरे निधाय देवतायै समर्पयेत्, द्वितीयभागं वक्ष्यमाणहोमार्थं तृतीयभागं भोजनार्थं स्थापयेत्।

ततो वह्नौ देवताया आधारशक्त्यादिपीठमन्त्रान्तं सम्पूज्य तत्रेष्टदेवतामावाह्योपचारैः सम्पूज्यावरणदेवता अभिपूजयेत्।

ततो देव्या मूलमन्त्रेण स्वाहान्तेन पञ्चविंशत्याज्याहुतीर्वह्निमुखे जुहुयात्। इदमेव वह्नीष्टदेवतयोर्वक्त्रैकीकरणमित्युच्यते। तत आत्माग्निदेवतानामैक्यं विचिन्त्य एकादशाहुतीर्मूलेनैव दद्यात्। इदं च "नाडीसन्धान" मित्युच्यते।

तत आवरणदेवताभ्य एकैकामाहुतिं दत्त्वा ऋत्विग्भिरुक्तप्रकारेण संस्कृतेषु पूर्वादिकुण्डेषु क्रमेणाचार्यो वह्निं विहरेत्।

ततः सर्वे ऋत्विजः स्वस्वकुण्डाग्नौ सावरणामिष्टदेवतामुपचारैः सम्पूज्य मूलमन्त्रेणाज्येन पञ्चविंशत्याहुतीर्हुत्वाऽऽवरणदेवताभ्य एकैकामाहुतिं दद्युः।

ततो गुरुः पूर्वोक्तचरोर्द्वितीयभागं नवधा विभज्य भागमेकं स्वयं गृहीत्वा एकैकं भागं सर्वेभ्य ऋत्विग्भ्यो दद्यात्।

ततस्तस्मिंश्चरौ घृतं निधाय सघृतेन चरुणाऽऽचार्य ऋत्विजश्च स्वे स्वे कुण्डे मूलमन्त्रेण प्रत्येकं पञ्चविंशत्याहुतीर्जुहुयुः।

तत आवरणदेवताभ्य एकैकामाहुतिं दत्त्वा मूलमन्त्रेणाज्येन दश दशाहुतीर्हुत्वा वह्निरूपामिष्टदेवतां प्रणमेयुः।

तत आचार्यश्चरोस्तृतीयभागं द्विधा विभज्य पलाशपत्रे पिप्पलपत्रे वा भागमेकं स्वयं गृहीत्वापरऽभागं शिष्याय दद्यात्। ततो गुरुः शिष्यश्च—

नमः इति हृन्मन्त्रमुच्चरन् ग्रासत्रयं ग्रासाष्टकं वा दन्तस्पर्शं विना भुक्त्वा मन्त्रपूतेन जलेनाऽऽचमनं कुर्यात्।

ततो गुरुः कृताचमनं शिष्यं मूलमन्त्रेण सकलीकृत्य तस्मै पूर्वोक्तलक्षणं हृन्मन्त्रितं दन्तकाष्ठं दद्यात् ।

ततः शिष्यस्तेन दन्तकाष्ठेन दन्तान् विशोध्य जलेन प्रक्षाल्य दन्तकाष्ठं विसृज्याऽऽचमनं कुर्यात् ।

अस्मिन्नेव समये पूर्वोक्तदन्तकाष्ठपरीक्षां केचित् कुर्वन्ति । ततः सायं सन्ध्योपासनं कृत्वा गुरुर्मूलमन्त्रेण स्वकल्पोक्तमन्त्रान्तरेण वा शिष्यस्य शिखां बद्ध्वा मण्डपाद् बहिर्देवताया दक्षिणभागे वेदिकान्तरोपरि कुशशय्यायां पूर्वशिरस्कः शिष्येण सार्धं शयनं कुर्यात् ।

शिष्यश्च शयनसमये स्वप्नमानवमन्त्रेण शुभस्वप्नं प्रार्थयेत् । स्वप्नमाणवमन्त्रो यथाः—

'भगवन् देवदेवेश ! शूलभृद् वृषवाहन ! ।
इष्टानिष्टे समाचक्ष्व मम सुप्तस्य शाश्वतम्' ॥ यद्वा—

'ॐ हिलिहिलिशूलपाणये ठः ठः ।
नमोऽजाय त्रिनेत्राय पिङ्गलाय महात्मने ।
वामाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः ।
स्वप्ने कथय मे तथ्यं सर्वकार्येष्वशेषत. ।
क्रियासिद्धिं विधास्यामि त्वत्प्रसादान्महेश्वर !' ॥

वैष्णवे तु—'ॐ नमः सकललोकाय विष्णवे प्रभविष्णवे ।
विश्वाय विश्वरूपाय स्वप्नाधिपतये नमः' ॥

यद्वाः—'परब्रह्मस्वरूपस्त्वमन्तश्चरसि विश्वधृक् ।
शुभाशुभगतिं देव ! स्वप्ने मे विनिवेदय' ॥

इत्युच्चार्य जानुभ्यामवनीं स्पृष्ट्वा विष्णुं प्रणम्य प्रसन्नो वाग्यतो निजेष्टं विचिन्त्य शयनं कुर्यात् ।

ततः स्वप्नं दृष्ट्वा समुत्थायाचम्य पुष्पं धृत्वा गुरुं प्रणम्य गुरवे स्वप्नं निवेदयेत् ।

ततो गुरुः शुभमशुभं वा स्वप्नं निर्णीय स्वप्नो यदि शुभस्तदा देवता प्रसन्ना जानीयात् । स्वप्नो यद्यशुभस्तदा शान्तिं कुर्यात् ।

दुःस्वप्नशान्तिस्तु—

फट् दुःस्वप्नदोषान् जहि जहि फट् स्वाहा—इति मन्त्रेण ।

ॐ वज्रनखदंष्ट्रायुधाय महासिंहाय हुं फट् नमः स्वाहा—इति सिंहमन्त्रेण वा तद्देवता गायत्र्या वा पलाशसमिच्छतमाज्याहुतिशतं वा जुहुयात् ।

तत्र गुरुर्मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा अद्येहेत्यादि० करिष्यमाण-पूर्णाभिषेकाख्ये कर्मणि षट्त्रिंशदुत्तरसप्तशताधिकविंशतिसहस्रसङ्ख्याककालनित्याविद्याभिः पूर्णकलशाभिमन्त्रणं करिष्ये इति सङ्कल्प्य, मस्तकदक्षबाहुमूलादिषट्त्रिंशत्स्थानेषु प्रतिस्थानं षोडशदलपद्मं विभाव्य, तेष्वकारादिक्षकारान्तान् षट्त्रिंशत्तत्त्ववर्णान् प्रत्येकं षोडशस्वरसमुतान् विभाव्य, मध्ये तत्प्रथमाक्षरं विन्यस्य, पूर्वादिदलेषु तत्तदक्षरविकृतषोडशवर्णांस्तदादिकान् विन्यसेदिति । एवं पूर्णमण्डलवर्णान् विन्यस्य पुनः सहितनित्यविद्यया प्राणायामत्रयं कृत्वा, शिरसि दक्षिणामूर्तये ऋषये नमः । मुखे पङ्क्तिश्छन्दसे नमः । हृदये कालनित्याविद्यारूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः, इति ऋष्यादिकं विन्यस्य, पूर्णकलशाभिमन्त्रणे विनियोगः, इति कृताञ्जलिः कृत्वा, तत्तद्दिननित्याविद्याक्षरैस्त्रिभिर्द्विरावृत्या यथाविधि करषडङ्गन्यासं प्राक्प्रोक्तचतुरासनन्यासं वाग्देवताष्टकन्यासं च विधाय, "रक्ता रक्ताम्बरा रक्तस्रग्विभूषानुलेपनाम् । पाशाङ्कुशेक्षुकोदण्डप्रसूनविशिखा स्मरेत् ।" इति कालनित्या हृदय ध्यात्वा वक्ष्यमाणविधिना हृदये श्रीचक्रं कालचक्रमध्यागतं विभाव्य, तत्र देवीं सावरणां कालनित्याविद्याभिश्च परिवृतां ध्यात्वा मानसैरुपचारैः सम्पूज्य कालनित्याजपमारभेत् । तत्रादावङ्गविद्यास्त्रिपुरार्णवोक्ताः प्रोच्यन्ते ॥ तत्र ॐ मूलं दि० अं ह्सौ हंसः । मू० दि०, आं ह्सौ हंसः । मू० दि० इं ह्सौ हंसः । मू० दि० ईं ह्सौ हंसः । मू० दि० उं ह्सौ हंसः । मू० दि० ऊं ह्सौ हंसः । मू० दि० ऋं ह्सौ हंसः । मू० दि० ॠं ह्सौ हंसः । मू० दि० ऌं ह्सौ हंसः । मू० दि०

ॡ ह्सौः हंसः । मू० दि० ए ह्सौः हंसः । मू० दि० ऐ ह्सौः हंसः । मू० दि० ओ ह्सौः हंसः । मू० दि० औ ह्सौः हंसः । मू० दि० अं ह्सौः हंसः । मू० दि० अः ह्सौः हंसः । एव कादिक्षान्तम् । एवमेकपञ्चाशद्विद्याभिः सह मूलविद्यां जपित्वा केवलमूलविद्यां त्रिर्जपित्वा "ऐं वद वद वाग्वादिनि ऐं क्लीं क्लिन्ने क्लेदिनि क्लेदय क्लेदय महाक्षोभं कुरु कुरु क्लीं सौः मोक्षं कुरु कुरु ह्सौः" स्हौः इति दीपिनीविद्यामेकवारं जपित्वा, प्रागुक्त श्रीगुरुपादुकामेकवारं जपित्वा पुनश्चत्वारिंशद्विद्याभिः सह मूलविद्यां जपेत् । यथा, मूलं आ क्षा ह सा ई ह सः । मूलं ई ला सा ई ह सः । मूलं ऊ हा ह सा ई हं सः । मू० ॠ सा ह ह सा ई हसः । मूलं ॡ षा ह सा ई हं सः । मूलं ऐ शा ह् सा ई हं सः । मूलं औ वा ह सा ई हं सः । मूलं अः ला ह् सा ई हंसः, इत्यष्टधा जपित्वा पुनः मूलं आ क्षा ई हं सः । मूलं अक्षाईहंसः । मूलं ईळाई हं सः । मूलं इ ळाई हं सः । मू० ऊ हा ई हं सः । मूलं उ हा ई हं सः । मूलं ॠ षा ई हं सः । मूलं ऋ षा ई हं सः । मूल ॡ सा ई हं सः । मूलं ऌ षा ई हं सः । मूलं ऐ शा ई हं सः । मूलं ए शा ई हं सः । मूलं औ वा ई हं सः । मूलं ओ वा ई हं सः । मूलं अः ला ई हं सः । मूलं अं ला ई हं सः । इति षोडशधा जपित्वा पुनः मूलं अकाई हं सः एव इचा ई हं सः । उ टा ई हं सः । ऋ ताई हं सः । ऌ पा ई हं सः । ए या ई हंसः । ओ शा ई हं सः । अं ळा ई हं सः' इत्यष्टधा जपित्वा पश्चात् कालनित्याविद्याभिः सह मूलविद्यां जपेत् । अयमङ्गविद्याजपो वर्णद्वयस्यादौ प्रत्यहं कार्यः । अथ श्रीगुरुब्रह्मकूर्चेन कुम्भं संस्पृशाना कालनित्या जपेत् ।

अथ कालनित्याजपः । २ मू० अ आ ई हं सः । २ मू० अ का ई हंसः । २ मू० अ खा ई हं सः । २ मू० अ गा ई हं सः । २ मू० अ घा ई हं सः । २ मू० अ ङा ई हं सः । २ मू० अ चा ई हं सः । २ मू० अ छा ई हं सः । २ मू० अ जा ई ह सः । २ मू० अ झा ई हं सः । २ मू० अ ञा ई हं सः । २ मू० अ टा ई हं सः । २ मू० अ ठा ई हं सः । २ मू० अ डा ई ह सः । २ मू० अ ढा ई हं सः । २ मू० अ णा ई हं सः । २ मू० अ ता ई हं सः ।

२ मू० अ था ईं ह् स । २ मू० अ दा ईं ह् स । २ मू० अ धा ईं ह् स ।
२ मू० अ ना ईं ह् स । २ मू० अ पा ईं ह् स । २ मू० अ फा ईं ह् स ।
२ मू० अ बा ईं ह् स । २ मू० अ भा ईं ह् स । २ मू० अ मा ईं ह् स ।
२ मू० अ या ईं ह् स । २ मू० अ रा ईं ह् स । २ मू० अ ला ईं ह् स ।
२ मू० अ वा ईं ह् स । २ मू० अ शा ईं ह् स । २ मू० अ षा ईं ह् स ।
२ मू० अ सा ईं ह् स । २ मू० अ हा ईं ह् स । २ मू० अ ळा ईं ह् स ।
२ मू० अ क्षा ईं ह् स । इति जपित्वा, पुन २ मूल आ का ईं ह् स ।
एवं बीजद्वयमूलविद्या सर्वत्र योज्या । आ खा ईं । आ गा ईं । आ घा ईं ।
आ ङा ईं । आ चा ईं । आ छा ईं । आ जा ईं । आ झा ईं । आ ञा ईं ।
आ टा ईं । आ ठा ईं । आ डा ईं । आ ढा ईं । आ णा ईं । आ ता ईं ।
आ था ईं । आ दा ईं । आ धा ईं । आ ना ईं । आ पा ईं । आ फा ईं ।
आ बा ईं । आ भा ईं । आ मा ईं । आ या ईं । आ रा ईं । आ ला ईं ।
आ वा ईं । आ शा ईं । आ षा ईं । आ सा ईं । आ हा ईं । आ ळा ईं ।
आ क्षा ईं । इतिजपित्वा पुन० २ मूलम् इ आ ईं । इ का ईं । इ खा ईं ।
इ गा ईं । इ घा ईं । इ ङा ईं । इ चा ईं । इ छा ईं । इ जा ईं ।
इ झा ईं । इ ञा ईं । इ टा ईं । इ ठा ईं । इ डा ईं । इ ढा ईं ।
इ णा ईं । इ ता ईं । इ था ईं । इ दा ईं । इ धा ईं । इ ना इ । इ पा ईं ।
इ फा ईं । इ बा ईं । इ भा ईं । इ मा ईं । इ या ईं । इ रा ईं । इ ला ईं ।
इ वा ईं । इ शा ईं । इ षा ईं । इ सा ईं । इ हा ईं । इ ळा ईं । इ क्षा ईं ।
ह् स इति जपित्वा पुन २ मूलम् । ई आ ईं । ई का ईं । ई खा ईं । ई गा ईं ।
ई घा ईं । ई ङा ईं । ई चा ईं । ई छा ईं । ई जा ईं । ई झा ईं । ई ञा ईं ।
ई टा ईं । ई ठा ईं । ई डा ईं । ई ढा ईं । ई णा ईं । ई ता ईं । ई था ईं ।
ई दा ईं । ई धा ईं । ई ना ईं । ई पा ईं । ई फा ईं । ई बा ईं । ई भा ईं ।
ई मा ईं । ई या ईं । ई रा ईं । ई ला ईं । ई वा ईं । ई शा ईं । ई षा ईं ।
ई सा ईं । ई हा ईं । ई ळा ईं । ई क्षा ईं । हस इति जपित्वा, पुन २ मूलम् ।
उ आ ईं । उ का ईं । उ खा ईं । उ गा ईं । उ घा ईं । उ ङा ईं । उ चा ईं ।
उ छा ईं । उ जा ईं । उ झा ईं । उ ञा ईं । उ टा ईं । उ ठा ईं । उ डा ईं ।

उ ढा ई। उ णा ई। उ ता ई। उ था ई। उ दा ई। उ धा ई। उ ना ई। उ पा ई। उ फा ई। उ बा ई। उ भा ई। उ मा ई। उ या ई। उ रा ई। उ ला ई। उ वा ई। उ शा ई। उ षा ई। उ सा ई। उ हा ई। उ ळा ई। उ क्षा ई। हंस इति जपित्वा पुनः २ मूलम्। ऊ आ ई। ऊ का ई। ऊ खा ई। ऊ गा ई। ऊ घा ई। उ ङा ई। ऊ चा ई। ऊ छा ई। ऊ जा ई। ऊ झा ई। ऊ ञा ई। ऊ टा ई। ऊ ठा ई। ऊ डा ई। ऊ ढा ई। ऊ णा ई। ऊ ता ई। ऊ था ई। ऊ दा ई। ऊ धा ई। ऊ ना ई। ऊ पा ई। ऊ फा ई। ऊ बा ई। ऊ भा ई। ऊ मा ई। ऊ या ई। ऊ रा ई। ऊ ला ई। ऊ वा ई। ऊ शा ई। ऊ षा ई। ऊ सा ई। ऊ हा ई। ऊ ळा ई। ऊ क्षा ई। इति जपित्वा पुनः २ मूलम् ऋ आ ईहसः। ऋ का ई। ऋ खा ई। ऋ गा ई। ऋ घा ई। ऋ ङा ई। ऋ चा ई। ऋ छा ई। ऋ जा ई। ऋ झा ई। ऋ ञा ई। ऋ टा ई। ऋ ठा ई। ऋ डा ई। ऋ ढा ई। ऋ णा ई। ऋ ता ई। ऋ था ई। ऋ दा ई। ऋ धा ई। ऋ ना ई। ऋ पा ई। ऋ फा ई। ऋ बा ई। ऋ भा ई। ऋ मा ई। ऋ या ई। ऋ रा ई। ऋ ला ई। ऋ वा ई। ऋ शा ई। ऋ षा ई। ऋ सा ई। ऋ हा ई ऋ ळा ई। ऋ क्षा ई। इति पठित्वा पुनः। २ मूलम्। ॠ आ ई। ॠ का ई। ॠ खा ई। ॠ गा ई। ॠ घा ई। ॠ ङा ई। ॠ चा ई। ॠ छा ई। ॠ जा ई। ॠ झा ई। ॠ ञा ई। ॠ टा ई। ॠ ठा ई। ॠ डा ई। ॠ ढा ई। ॠ णा ई। ॠ ता ई। ॠ था ई। ॠ दा ई। ॠ धा ई। ॠ ना ई। ॠ पा ई। ॠ फा ई। ॠ बा ई। ॠ भा ई। ॠ मा ई। ॠ या ई। ॠ रा ई। ॠ ला ई। ॠ वा ई। ॠ शा ई। ॠ षा ई। ॠ सा ई। ॠ हा ई। ॠ ळा ई। ॠ क्षा ई। इति जपित्वा, पुनः २ मूलम्। ऌ आ ई। ऌ का ई। ऌ खा ई। ऌ गा ई। ऌ घा ई। ऌ ङा ई। ऌ चा ई। ऌ छा ई। ऌ जा ई। ऌ झा ई। ऌ ञा ई। ऌ टा ई। ऌ ठा ई। ऌ डा ई। ऌ ढा ई। ऌ णा ई। ऌ ता ई। ऌ था ई। ऌ दा ई। ऌ धा ई। ऌ ना ई। ऌ पा ई। ऌ फा ई। ऌ बा ई। ऌ भा ई। ऌ मा ई। ऌ या ई। ऌ रा ई। ऌ ला ई। ऌ वा ई। ऌ शा ई। ऌ षा ई। ऌ सा ई। ऌ हा ई। ऌ ळा ई। ऌ क्षा ई इति पठित्वा, पुनः २

मूलम् । लृ आ ई । लृ का ई । लृ खा ई । लृ गा ई । लृ घा ई । लृ ङा ई । लृ चा ई । लृ छा ई । लृ जा ई । लृ झा ई । लृ ञा ई । लृ टा ई । लृ ठा ई । लृ डा ई । लृ ढा ई । लृ णा ई । लृ ता ई । लृ था ई । लृ दा ई । लृ धा ई । लृ ना ई । लृ पा ई । लृ फा ई । लृ बा ई । लृ भा ई । लृ मा ई । लृ या ई । लृ रा ई । लृ ला ई । लृ वा ई । लृ शा ई । लृ षा ई । लृ सा ई । लृ हा ई । लृ ळा ई । लृ क्षा ई । इति जपित्वा पुनः मूलम् । ए आ ई । ए का ई । ए खा ई । ए गा ई । ए घा ई । ए ङा ई । ए चा ई । ए छा ई । ए जा ई । ए झा ई । ए ञा ई । ए टा ई । ए ठा ई । ए डा ई । ए ढा ई । ए णा ई । ए ता ई । ए था ई । ए दा ई । ए धा ई । ए ना ई । ए पा ई । ए फा ई । ए बा ई । ए भा ई । ए मा ई । ए या ई । ए रा ई । ए ला ई । ए वा ई । ए शा ई । ए षा ई । ए सा ई । ए हा ई । ए ळा ई । ए क्षा ई । इति जपित्वा पुनः मूल २—ऐ आ ई । ऐ का ई । ऐ खा ई । ऐ गा ई । ऐ घा ई । ऐ ङा ई । ऐ चा ई । ऐ छा ई । ऐ जा ई । ऐ झा ई । ऐ ञा ई । ऐ टा ई । ऐ ठा ई । ऐ डा ई । ऐ ढा ई । ऐ णा ई । ऐ ता ई । ऐ था ई । ऐ दा ई । ऐ धा ई । ऐ ना ई । ऐ पा ई । ऐ फा ई । ऐ बा ई । ऐ भा ई । ऐ मा ई । ऐ या ई । ऐ रा ई । ऐ ला ई । ऐ वा ई । ऐ शा ई । ऐ षा ई । ऐ सा ई । ऐ हा ई । ऐ ळा ई । ऐ क्षा ई । इति जपित्वा पुनः मूलम् २ । ओ आ ई । ओ का ई । ओ खा ई । ओ गा ई । ओ घा ई । ओ ङा ई । ओ चा ई । ओ छा ई । ओ जा ई । ओ झा ई । ओ ञा ई । ओ टा ई । ओ ठा ई । ओ डा ई । ओ ढा ई । ओ णा ई । ओ ता ई । ओ था ई । ओ दा ई । ओ धा ई । ओ ना ई । ओ पा ई । ओ फा ई । ओ बा ई । ओ भा ई । ओ मा ई । ओ या ई । ओ रा ई । ओ ला ई । ओ वा ई । ओ शा ई । ओ षा ई । ओ सा ई । ओ हा ई । ओ ळा ई । ओ क्षा ई । इति जपित्वा पुनः मू०२— औ आ ई । औ का ई । औ खा ई । औ गा ई । औ घा ई । औ ङा ई । औ चा ई । औ छा ई । औ जा ई । औ झा ई । औ ञा ई । औ टा ई । औ ठा ई । औ डा ई । औ ढा ई । औ णा ई । औ ता ई । औ था ई ।

औ दा ई। औ धा ई। औ ना ई। औ पा ई। औ फा ई। औ बा ई। औ भा ई। औ मा ई। औ या ई। औ रा ई। औ ला ई। औ वा ई। औ शा ई। औ षा ई। औ सा ई। औ हा ई। औ ळा ई। औ क्षा ई। इति जपित्वा, पुनः २ मूलम्। अं आ ई। अं का ई। अं खा ई। अं गा ई। अं घा ई। अं ङा ई। अं चा ई। अं छा ई। अं जा ई। अं झा ई। अं ञा ई। अं टा ई। अं ठा ई। अं डा ई। अं ढा ई। अं णा ई। अं ता ई। अं था ई। अं दा ई। अं धा ई। अं ना ई। अं पा ई। अं फा ई। अं बा ई। अं भा ई। अं मा ई। अं या ई। अं रा ई। अं ला ई। अं वा ई। अं शा ई। अं षा ई। अं सा ई। अं हा ई। अं ळा ई। अं क्षा ई। इति जपित्वा, पुनः २ मूलम् अः आ ई। अः का ई। अः खा ई। अः गा ई। अः घा ई। अः ङा ई। अः चा ई। अः छा ई। अः जा ई। अः झा ई। अः ञा ई। अः टा ई। अः ठा ई। अः डा ई। अः ढा ई। अः णा ई। अः ता ई। अः था ई। अः दा ई। अः धा ई। अः ना ई। अः पा ई। अः फा ई। अः बा ई। अः भा ई। अः मा ई। अः या ई। अः रा ई। अः ला ई। अः वा ई। अः शा ई। अः षा ई। अः सा ई। अः हा ई। अः ळा ई। अः क्षा ई। हंस इत्यन्तं जपेत्।

श्रीत्रिपुरार्णवोक्तवर्गान्तरस्तोत्रम्

'क्षमाम्ब्वग्नीरणक्षार्केन्दुयष्टप्राययुगस्वरैः। मातृभैरवगा वन्दे देवीं त्रिपुरभैरवीम्॥
कादिवर्गाष्टकाकारसमस्ताष्टकविग्रहाम्। अष्टशक्त्यावृता वन्दे देवीम्०॥
स्वरषोडशकाना तु पट्त्रिंशद्भिः परापरैः। षट्त्रिंशत्तत्त्वगा वन्दे देवी०॥
षट्त्रिंशत्तत्त्ववर्गस्थाय शिवचन्द्रकलास्वपि। क्षादितत्त्वान्तरा वन्दे देवी०॥
आ ई माया द्वयोपाधिविचित्रेन्दुकलावतीम्। शर्वात्मिका परा वन्दे देवी०॥
षडध्वपिण्डयोनिस्था मण्डलत्रयकुण्डलीम्। लिङ्गत्रयातिगा वन्दे देवी०॥
स्वयम्भूहृदया बाणभूग्रामान्त स्थितेतराम्। प्राच्या प्रत्यर्चिति वन्दे देवी॥
अक्षरान्वर्गतारोपनामरूपा क्रियापराम्। शक्तिं विश्वेश्वरी वन्दे देवीं त्रिपुरभैरवीम्॥
वर्गान्ते पठितव्यं स्यात् स्तोत्रमेतत्समाहितं।'

इतिस्तुत्वा; प्राग्वत्प्राणायाममथय कृत्वा "गुह्यातिगुह्यगोप्त्री त्वं गृहाणास्मत्कृतं जपम्। सिद्धिर्भवतु मे देवि! त्वत्प्रसादात् त्वयि स्थिरा" इति देव्यै जपं

समर्प्य, द्वितीयवर्गजपस्यारम्भो विधेयः। यथा मू०दि० क आ ई हंसः। एवं सर्वत्र। क का ई। क खा ई। क गा ई। क घा ई। क ङा ई। क चा ई। क छा ई। क जा ई। क झा ई। क ञा ई। क टा ई। क ठा ई। क डा ई। क ढा ई। क णा ई। क ता ई। क था ई। क दा ई। क धा ई। क ना ई। क पा ई। क फा ई। क बा ई। क भा ई। क मा ई। क या ई। क रा ई। क ला ई। क वा ई। क शा ई। क षा ई। क सा ई। क हा ई। क ळा ई। क क्षा ई। इति जपित्वा, पुन.—का आ ई। हं स इत्यादि का क्षा ई हंसः इत्यन्तं जपित्वा, कि आ ई हं सः इत्यादि कि क्षा ई इत्यन्तं जपित्वा पुनः कू आ ई हं सः। एवं समस्तां मातृकां जपेत्।

तत आचार्य्यः क्रमेण गणपतिललितादयामावातलीपरादेवताः सावरणाः यथाविधि यथाकालं सम्पूज्य तद्यन्त्राणि पूर्वमध्यदक्षिणादिक्रमेण कलशेष्वधिवासयेत्। तत्रैव च षोडशोपचारैः कलशेष्वेव पूजयेत्।

ततः शिष्यमाहूय नूतनेन वाससा तस्य मुखं प्रावृत्यावध्य गणपत्यादिमूलमन्त्रानुच्चरन् सामान्यार्घोदकबिन्दुभिः सम्प्रोक्ष्य "अज्ञानतिमिरान्धस्य ज्ञानाञ्जनशलाकया। चक्षुरुन्मीलितं येन तस्मै श्रीगुरवे नमः।" इति कुम्भे पुष्पाञ्जलिं प्रदाप्य नेत्रमुखबन्धनमुन्मोचयेत्। ततः श्रीक्रमोक्तान् भूतशुद्धिभूतशुद्धिप्राणप्रतिष्ठामातृकादिन्यासान् लघुषोढान्यासान् महाषोढान्यासांश्च शिष्यस्य कारयेत्।

ततः शिष्यं कुण्डसमीपं नीत्वा दिव्यदृष्ट्या विलोक्य तस्य हृदयारविन्दात् जीवात्मानं भूतशुद्धयुक्तप्रक्रियाख्या तद्देहाद् ब्रह्मरन्ध्रमार्गात् निःसार्य स्वात्मनि गुरुक्रयुक्त्या योगबलेन संयोज्य शिष्यषडध्वशोधनं कुर्यात्। तत्र शिष्यस्य पादयोः कुलाध्वनि निवृत्तिप्रतिष्ठा विद्याशान्ति शान्त्यतीताश्चेति पञ्चकलात्मकं सञ्चिन्त्य ततस्तस्य लिङ्गप्रदेशे शिवशक्तिसदाशिवेश्वरशुद्धविद्यामायाकलाविद्या-रागकाल- नियतिपुरुषप्रकृत्यहंकारबुद्धिमन- श्रोत्रत्वक्- चक्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्- पाणिपादपायूपस्थ- शब्द- स्पर्शरूपरसगन्धाकाशवायु- तेजःसलिलपृथिव्यात्मकं षट्त्रिंशत्तत्त्वरूपं शिवतत्त्वाध्वानं ध्यायेत्। इति

शैवदीक्षायाम् ।(वैष्णवदीक्षायां तु) जीवप्राणधियोमन-इन्द्रियदशकं तन्मात्राः भूतानां पञ्चकमपि हृत्पद्मतेजसां त्रितयं तद्वच्च वासुदेवप्रमुखाश्चत्वार उपदिष्टा इति। इन्द्रियदशकं प्रागुक्तं श्रोत्रादयो वागादयश्च तन्मात्राश्च शब्दादयः भूतपञ्चकमाकाशादि । तेजसां त्रितयं सोमसूर्याग्निमयम् । वासुदेवप्रमुखाश्च वासुदेवसंकर्षण-प्रद्युम्नाऽनिरुद्धाश्चत्वारः ।

सौरदीक्षायां तु—भूततन्मात्रेन्द्रियाणि मनोगर्वश्च बुद्धिश्च धीस्तथा प्रधान चेति। इन्द्रियाणि दश ज्ञानकर्मभेदात् । गर्वोऽहङ्कारः। प्रधानं प्रकृतितत्त्वम् ।

शक्तिदीक्षायान्तुः—(निवृत्त्याद्याः पञ्चकलाः बिन्दुः नादः शक्तिः सदाशिवः शिव इति दश तत्त्वानि ।) त्रिपददीक्षायान्तु—आत्मविद्या शिवा- एते विपरीतास्त एव च सर्वतत्त्वञ्चेति । विपरीता. शिवविद्यात्मानः इति क्रमेण त एवच आत्मविद्या शिवा एवेति सप्ततत्त्वानि । इत्थ तत्तद्दीक्षायां तत्तदध्वानं चिन्तयेदिति ।

गाणपत्यदीक्षायां तु शैवतत्त्वानि ज्ञातव्यानि ।

ततः शिष्यस्य नाभौ अतलवितलसुतलमहातलतलातलरसातलपाताल-भूर्भुवःस्वर्महर्जनस्तप.सत्यलोकात्मकचतुर्दशभुवनाध्वानं सञ्चिन्त्य (ततस्तस्य हृदये आदिक्षान्तार्णस्वरूपं वर्णाध्वानं भावयेत्) (ततः शिष्यललाटे वर्णसङ्घमयं पदाध्वानं विभावयेत्) ततः शिष्यशिरसि पदसमुदायमयं मूल-मन्त्रस्वरूपं मन्त्राध्वानं भावयेत्, इति शिष्यशरीरेऽध्वषट्कं सञ्चिन्त्य, तं कूर्चेन स्पृशन् गुरुः स्वकुण्डे 'ॐ अमुकस्य कलाध्वानं शोधयामि स्वाहा' घृत-तिलैरष्टधा हुत्वा कलाध्वानं तत्त्वाध्वनि विलीनं विभाव्य "ॐ अमुकस्य तत्त्वाध्वानं शोधयामि स्वाहा" इत्यष्टधा हुत्वा तत्त्वाध्वानं भुवनाध्वनि विलीनं विभाव्य पुनः "ॐ अमुकस्य भुवनाध्वानं शोधयामि स्वाहा" इत्यष्टधा हुत्वा भुवनाध्वानं वर्णाध्वनिविलीनं विभाव्य पुनः "अमुकस्य वर्णाध्वानं शोधयामि स्वाहा" इत्यष्टधा हुत्वा तं पदाध्वनि विलीनं विभाव्य पुनः "ॐ अमुकस्य पदाध्वानं शोधयामि स्वाहा" इत्यष्टधा तं मन्त्राध्वनि विलीनं विभाव्य पुनः "ॐ अमुकस्य मन्त्राध्वानं शोधयामि स्वाहा" इत्यष्टधा

हुत्वा तं ब्रह्मरन्ध्रस्थपरशिवे लीनं विभाव्य पुनः संहृतप्रतिलोमेन परमशिवस्य सकाशात् मन्त्राध्वानं सृष्ट्वा ततः पदाध्वानं तस्माद्वर्णाध्वानं ततो भुवनाध्वानं तस्मात्तत्त्वाध्वानं ततः कलाध्वानं च सृष्ट्वा तत्तत्स्थाने संस्थाप्य शिष्यं दिव्यदृष्ट्या विलोक्य, स्वस्मिन् स्थितं शिष्यचैतन्यं ततो हृदयारविन्दे आवाहनोक्तप्रकारेण तद् ब्रह्मरन्ध्रे नियोजयेत्। अत्र शूद्रगङ्कुरजातीनामध्वशोधनं न कार्यम्। तेषां पादोदकप्रदानेन शोधनं कुर्यात्। ततः पूर्ववत् स्वेष्टदेवताया अङ्गावरणदेवतानां घृतेनैवैकामाहुतिं दत्त्वा, ॐ भूरग्नये च महते च स्वाहा, भुवो वायवे चान्तरिक्षाय च महते च स्वाहा, स्वरादित्याय च दिवे च महते च स्वाहा, ॐ भूर्भुवः स्वश्चन्द्रमसे नक्षत्रेभ्यश्च दिग्भ्यश्च महते च स्वाहा, इत्याहुतिचतुष्टयं हुत्वा, इतः पूर्वं प्राणबुद्धिदेहधर्माधिकारितो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्नायत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं ब्रह्मार्पणं भवतु स्वाहा, (इत्यष्टावाज्याहुतीर्हुत्वा), महाशक्तिन्यासं शिष्यस्य कुर्यात्। यथा—

"योनिरित्युच्यते शक्तिरेषा ब्रह्माण्डभेदिनी। लेप विलीनयेद्देहे रेफो बिन्दुरिति स्मृतः॥१॥ द्वासप्ततिसहस्रेषु नाडीभेदेषु पञ्जरम्। व्याप्यमाना महाशक्तिः कामिनीनामृतुक्रमे॥२॥ नाडीचक्रागतं रक्तं योनिमार्गे निपातितम्। पृथ्वीभूते भगे पुण्यं मासपक्षादिषु क्रमात्। ऐंकारोऽपि स्वयं योनिर्नात्र कार्या विचारणा। न्यस्तं व्याप्य देवेशि! त्रैलोक्यं सचराचरम्॥४॥"

इत्यन्तं श्लोकसमुदायस्यार्थं चिन्तयन् महाकामकलाया ब्रह्मरन्ध्रस्थायां लयं भावयित्वा ब्रह्मरन्ध्रे ॐ ३। ३ ॐ नमः। नादमध्ये ॐ ३। ३ ॐ नमः। नादान्ते ॐ ३। ३ ॐ नमः कण्ठे ॐ ३। ३ अं नमः। हृदि ॐ ३। ३ कं नमः। एवं मस्तके खं नमः। जङ्घयोः गं नमः। स्तनयोः घं नमः। नासिकान्ते ङं नमः। आज्ञाया च नमः। वामकुक्षौ छं नमः। दक्षिणकुक्षौ जं नमः। उरुमूलयोः झं नमः। दन्तपङ्क्त्योः ञं नमः। जिह्वाग्रे टं नमः। मुखे ठं नमः। कक्षयोः डं नमः। अस्थिसन्धिषु ढं नमः। चित्ते णं नमः। नाभौ तं नमः। ललाटे थं नमः। कर्णरन्ध्रयोः दं नमः। कपालयोः धं नमः। नयनयोः नं नमः। श्वेतसहस्रदलकमले पं नमः। हृत्पद्मे फं नमः। स्कन्धयोः

बं नमः ।। भ्रूमध्ये भं नमः । हनुमूले मं नमः । तालुमूले यं नमः । लिङ्ग-गुदयोर्मध्ये रं नमः । जिह्वायां लं नमः । सर्वाङ्गे वं नमः । वामादिदक्षिण-शिरःपर्यन्तमापादतलवेष्टत्वेन शं नमः । तालुमूलेषु षं नमः । सर्वाङ्गे सं नमः । ब्रह्मरन्ध्रे हं नमः । हस्तपादयोः । सर्वाङ्गुलीषु क्षं नमः ।

प्रागुक्तमूलाधारस्थितकुण्डलिन्याम् ॐ ३ । ३ ॐ इति विन्यस्य ॐ ३ । ३ समस्तमातृकामुच्चरन् तां कुण्डलिनीं सुषुम्नावर्त्मना षट्चक्रभेदक्रमेण ब्रह्म-रन्ध्रं नीत्वा तत्रस्थाकुलसहस्रदलकमलकर्णिकामध्यस्थितपरमात्मनि शिवे विलीनां विभाव्य "ॐ ३ । ३ रक्षरक्ष शूलिनी त्रैलोक्यानन्ददायिनी त्रिपुरे देवि ! रक्ष मां त्रिपुरेश्वरि ! रक्ष रक्ष महादेवि अस्मदीयमिदं वपुः ऐं ह्रीं श्रीं ह्स्फ्रें ह्सौः २ हसफ्रें श्रीं ह्रीं ऐं श्रीं समयिनी मदिरानन्दसुन्दरि समस्त-सुरासुरवन्दिते भुजङ्गभूपालमौलिमालालङ्कृतचरणकमले विकटदन्त-च्छटाटोपनिवारिणि मदीयं शरीरं रक्ष रक्ष परमेश्वरि हुँ फट् स्वाहा ॐ भूः स्वाहा ॐ भुवः स्वाहा ॐ स्वः स्वाहा ॐ भूर्भुवः स्वः स्वाहा नरान्त्रमालाभरणभूषिते महाकौलिनि महाब्रह्मवादिनि महाधनोन्मादन-कारिणि महाभोगप्रदे अस्मदीयं शरीरं वज्रमयं कुरु कुरु दुर्जनान् हन हन दुष्टमहीपालान् भक्षय भक्षय परचक्रं भञ्जय भञ्जय जयङ्करि गगन-गामिनि त्रैलोक्यस्वामिनि यमलवरयूं भमलवरयूं वमलवरयूं शमलवरयूं श्रीभैरवि प्रसादय स्वाहा ।

कुलाङ्गना कुलं सर्वं मदीयं त्रिपुरेश्वरि !
देवी रक्षतु दिव्याङ्गी दिव्यात्मा भोगदायिनी ! ॥१॥
रक्ष रक्ष महादेवि ! शरीरं परमेश्वरि !
मदीयं मदिरानन्दे आपादतलमस्तकम्" ॥२॥

इत्यात्मरक्षां कृत्वा,

"त्रिपुराख्या महादेवी भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ।
न गुरोः सदृशं वस्तु न देवः शङ्करोपमः ॥३॥
न च कौलात्परो योगो न विद्या त्रैपुरीसमा ।
न च शान्तेः परं ज्ञानं न च शान्तेः परं सुखम् ॥४॥

नच शक्तिसमो न्यासो न विद्या त्रैपुरीसमा।
'दर्शनेषु समस्तेषु पाखण्डेषु विशेषतः ॥५॥
दिव्यरूपा महादेवी सर्वत्र परमेश्वरी।"

इति मन्त्रविद्ययोर्महिमानं स्मृत्वा "पीठोपपीठदिक्स्था गगनगिरिभुवन-गिरिभुवनगोकुलनिवासिनी जयति कुलशक्तिमहीतलपातालनिवासिनी कुलकौलविभेदिनी सकलजनमनआनन्दधारिणी करोतु मम चिन्तितं कार्यं भैरवीशतमेकं पुनातु परमेश्वरी मदनमण्डलालम्बिनी सप्तकोटिसहस्राणां मन्त्राणां परमेश्वरी" इति मन्त्रं सङ्कल्पयित्वा, "ऐं नमो भगवति त्रिकोणे त्रिधावर्ते महालिङ्गालङ्कृते त्रैलोक्योत्पत्तिस्थितिप्रलयकारिणि सहल हूं कन्दर्पानन्ददायिनि सहह्रीं ब्रह्मदण्डरेखे सहह्रौं चित्स्वरूपेण पाशाङ्कुशालङ्कृते वद वद वाग्वादिनि श्री मृष्टपालराज्यपदे ऐं वं वरदाशिवहस्ते समस्तजनानन्दकारिणि क्लीं क्लीं कामराजबीजाश्रये द्रां द्रीं क्लीं ब्लूं सः क्षोभय क्षोभय क्षोभिणि ह्सौः हूमः ह्सौः मथ मथ अभयप्रदायिनि चतुर्भुजे त्रिनेत्रे प्रेतासनोच्चारिणि महाकपालमालालङ्कृते चन्द्रशेखरे भुक्तिमुक्ति-फलप्रदे ॐ ऐं ॐ नमः सिद्धं अं ५१ क्षमित्यादिविलोमेनाकारान्तं ५१ द्धं सि मनः ॐ ऐं ॐ सर्वबीजमातः श्रीसमयिनि मम मनोरथं देहि देहि स्वाहा॥" एवं जपित्वा "ऐं ईं सौः श्रीमन्त्रराजाय नमः" इति त्रैपुर-मन्त्रस्य पूजां विधाय त्रिपुरादिमहानाम्ना त्रयोदशविद्याः पूजयेत्। (१) ॐ ऐं स ह्रौं स ह ल ह्रीं स ह ह्रौः ऐं स ह ह्रीं स ह ■ कामत्रिपुरायै नमः। (२) ॐ ऐं ह्रीं क्लीं ह सौः त्रिपुरभैरव्यै नमः। (३) ॐ ३ ऐं ह्रीं सः वाक्त्रिपुरायै नमः। (४) ॐ ऐं ह्रीं श्रीं सौः महालक्ष्म्यै त्रिपुरायै नमः। (५) ॐ ऐं ग्रं क्लीं मोहिन्यै त्रिपुरायै नमः। (६) ॐ ऐं क्लीं ब्लूं स्त्रीं भ्रामरी त्रिपुरायै नमः। (७) ॐ ३ ऐं ह्रीं श्रीं प्रें ह सौः त्रैलोक्यस्वामिन्यै त्रिपुरायै नमः। (८) ॐ ऐं डां डीं डूं डैं डौं डः ह्स्यें त्रिपुरायै नमः। (९) ऐं ऐं ऐं सौः कौलिकायै त्रिपुरायै नमः। (१०) ऐं ऐं सौः पण्डिकायै त्रिपुरायै नमः। (११) ऐं ऐं सौः तालुमध्यमायै त्रिपुरायै नमः। (१२) ऐं

ऐं सौः कमलाङ्कुरवासिन्यै त्रिपुरायै नमः । (१३) ठः ठः ठः ॥ यथाशक्ति जपित्वा, रक्तपुष्पैः शिरसि ऐं ईं सौः आत्मदेहाय नमः इति गन्धाक्षतैश्च सप्तधा सम्पूज्य, धूपदीपौ, निवेद्य, तस्मिन्नेव त्रिपुरे देहे "ऐं ईं सौ." इति वनिताक्षोभकरी महाकामकला ध्यायेत् । ततः श्लोकशतं न्यासानुसन्धानेन पठेत् ।

शक्तिपद्ममयं देहं मदीयं त्रिपुरे कुरु ।
देहि मे देवदेवेशि ! वरं नित्यममीप्सितम् ॥१॥
मस्तकं मङ्गला देवी ललाटं कुलसुन्दरी ।
नेत्रयुग्मं महाकाली कर्णौ रक्षतु कुण्डली ॥२॥
कपाली कर्णगर्भं तु कपोलौ कमलावती ।
दन्तान् रक्षतु चामुण्डा चिबुके मेरुवासिनी ॥३॥
भ्रूमध्यं कण्ठदेशं च रक्ष मे भुवनेश्वरी ।
जिह्वां सरस्वती रक्षेत् तालुकं तालुवासिनी ॥४॥
रक्षतु मे कपिला स्कन्धे स्कन्धौ (वामा) से कुलमालिनी ।
कुक्षौ विनायकी रक्षतु जयानन्दा स्तनद्वये ॥५॥
कण्ठकूपे महालक्ष्मीर्हृदये चण्डभैरवी ।
ब्रह्माणी नाभिदेशे तु रक्षतु ज्वालावती गुदे ॥६॥
लिङ्गे लिङ्गप्रभा चैव मुण्डिनी मेदमण्डले ।
नाडीचक्रे महायोगा उड्डटा दक्षिणे करे ॥७॥
वामहस्ते महामाया विद्या हस्ताङ्गुलीषु च ।
वैष्णवी वामपादे च रक्षतु चक्रायुधान्विता ॥८॥
तथा दक्षिणपादान्ते एकपादा सुरेश्वरी ।
पादाङ्गुलीषु कौबेरी रोमकूपे महोड्डटा ॥९॥
मण्डली नख्यमूले तु वाराही मेदमण्डले ।
जालन्धरी जलस्थाने कामाक्षी काममध्यगा ॥१०॥
उड्डटा नाभिलिङ्गान्ते नासाग्रे पूर्णपीठगा ।
पृष्ठवंशे जया देवी अस्थिसंधिषु चर्चिता ॥११॥

चर्मधारो त्वचायां तु स्यातु नित्यं महाशया।
रक्तमध्ये मनोऽन्ते च स्यातु मे हिंसनी शुभा ॥१२॥
माहेश्वरी च कौमारी द्वे चैते स्यातु जङ्घयोः।
वामदक्षिणयोश्चैव वाराली कटिसन्धिषु ॥१३॥
देवी रक्षतु मे गात्रं मस्तकं कुलकामिनी।
पृथिव्यापस्तथा तेजो वायुराकाशमेव च ॥१४॥
पञ्चभूतेषु भूतेशो सदा रक्षतु ते कुलम्।
राज्यं ददातु मे चैन्द्री पूजां चैव प्रजावती ॥१५॥
माया ददातु मे नित्यं धनं धान्यं यशस्तथा।
रणे राजकुले चैव शत्रुमध्ये महावने ॥१६॥
रक्तनेत्रा महादेवी करोतु मम चिन्तितम्।
समया समयं रक्षेद्दिव्यां विद्या कुलागमे ॥१७॥
साधकानां जगन्माया भुक्तिमुक्तिफलप्रदा।
प्राणा करोतु मे सिद्धिं त्रैलोक्यविजया सुखम् ॥१८॥
घण्टाली या महाविद्या सा मे यच्छतु मङ्गलम्।
सप्तकोटिसहस्राणां मन्त्राणां नायिका तु या ॥१९॥
सा मे सुरेश्वरी देवी सदा सिद्धिं प्रयच्छतु।
उल्कामुखा मुखे स्यातु मार्जारी देहसंधिषु ॥२०॥
भद्रकाली तु या विद्या सा मे स्यातु शिवामये।
त्रिकोणं च त्रिधावर्तं त्रैपुरं चक्रमुत्तमम् ॥२१॥
मस्तके स्यातु मे नित्यं तस्यान्ते बहुरूपिणी।
पूर्वोक्ता त्रैपुरी शक्ति स्यातु मे मन्मथोत्थिता ॥२२॥
क्षोभयती जगत्सर्वं मदिरानन्दविह्वला।
निवासं कुरु मे देहे साम्प्रतं दिव्ययोगिनी ॥२३॥
एह्येहि त्वं महादेवि सिद्धयोगिनी मे कुले।
शत्रूणां घातनार्थाय जेतॄणां मोक्षदायिनी ॥२४॥

महायोगिनि देहेऽस्मिन् सर्वदा निलयं कुरु।
माहेन्द्री च शिखां स्थातु योनिमध्ये मणेश्वरी ॥२५॥
प्रेताशी नाम विख्याता करोतु कुशलं मम।
डाकिनी पूर्वभागे च मम सौख्यं प्रयच्छतु ॥२६॥
शाकिनी पश्चिमाङ्गेषु दक्षिणे चाऽपि रा (क्षसी ?) क्रिणी।
वामभागे महामाया करोतु कुशलं मम ॥२७॥
साऽस्मदीयं शिरः पातु सदा तिष्ठतु भैरवी।
या विशाला विशालाक्षी निर्मला मलवर्जिता ॥२८॥
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीमस्तके मम।
या कालकल्पिताकाली कालरात्री तु कथ्यते ॥२९॥
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीमस्तके मम।
या निशाचरराजन्यपूजिता च निशाचरी ॥३०॥
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीमस्तके मम।
या चोर्ध्वकेशिका नाम मुक्तकेशी महामया ॥३१॥
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीमस्तके मम।
या वीरेति समाख्याता वीराणां जयदायिनी ॥३२॥
स योगिनी महामाया स्थातु श्रीमस्तके मम।
या मालिनी समाख्याता नासाग्रे बिन्दुमालिनी ॥३३॥
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीमस्तके मम।
या कङ्कालकरालाङ्गी चण्डकङ्कालकुण्डला ॥३४॥
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीमस्तके मम।
प्रचण्डा च विरूपाक्षी विरूपा विश्वरूपिणी ॥३५॥
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीमस्तके मम।
खट्वाङ्गी कथ्यते या च रौद्रीरूपेण पूजिता ॥३६॥
सा योगिनी महामाया स्थातु श्रीमस्तके मम।
कलियोगिनी प्रसिद्धा च या लोके श्रूयते कलौ ॥३७॥

सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीमंस्तके मम ।
प्रेताक्षी कथ्यते या च फेत्कारोत्कटवर्जिता (?) ॥३८॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीमंस्तके मम ।
धूम्राक्षी या समाख्याता शास्त्रेऽस्मिन् योगिनीमते ॥३९॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीमंस्तके मम ।
घोररूपा महादेवी कथ्यते या कुलागमे ॥४०॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीमंस्तके मम ।
विश्वरूपा विशेषेण करोति च जगत्त्रयम् ॥४१॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीमंस्तके मम ।
भयङ्करी समादिष्टा या चोक्ता वै कुलागमे ॥४२॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीमंस्तके मम ।
कपालमालिका प्रोक्ता या देवी मुण्डधारिणी ॥४३॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीमंस्तके मम ।
भीषणा भैरवी नाम या देवी भीमविक्रमा ॥४४॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीमंस्तके मम ।
न्यग्रोधवासिनी या च कथ्यते च सुरार्चिता ॥४५॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीमंस्तके मम ।
भैरवी भीषणा या च भैरवाष्टकवन्दिता ॥४६॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीमंस्तके मम ।
प्रोच्यते दीर्घलम्बोष्ठी महामाया महाबला ॥४७॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीमंस्तके मम ।
खट्वाङ्गी या महाशक्तिः संसारार्णवतारिणी ॥४८॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीमंस्तके मम ।
या समस्तेषु मन्त्रेषु प्रोच्यते मन्त्रवादिनी ॥४९॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीमंस्तके मम ।
कालघ्नी कथ्यते या च युगान्ते परमेश्वरी ॥५०॥

या योगिनी महामाया स्यातु श्रीर्मस्तके मम।
ग्राहिणीति समाख्याता सुरासुरमहोरगैः ॥५१॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीर्मस्तके मम।
चक्रिणी गद्यते या च एकपादा त्रिलोचना ॥५२॥
सा योगिनी महामया स्यातु श्रीर्मस्तके मम।
या विश्वबाहुका देवी विश्वनाथप्रिया सदा ॥५३॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीर्मस्तके मम।
दर्शनेषु समस्तेषु विदिता परमेश्वरी ॥५४॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीर्मस्तके मम।
कण्टकोच्छेदनार्थाय शास्त्रे या कण्टकी स्मृता ॥५५॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीर्मस्तके मम।
कीलकी कथ्यते या च सप्तहस्ता महाबला ॥५६॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीर्मस्तके मम।
संग्रामे या महादेवी महामारीति कथ्यते ॥५७॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीर्मस्तके मम।
यमदूतीति विख्याता या सुरासुरपूजिता ॥५८॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीर्मस्तके मम।
करालिनीति या देवी महाविद्यामहाबला ॥५९॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीर्मस्तके मम।
ललिताम्बा महाराज्ञी सर्वचक्रैकनायिका ॥६०॥
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीर्मस्तके मम।
नासाग्रे कौलिकी स्यातु मदनस्था तथा मुखे ॥६१॥
व्योमजङ्घे कपोले च गोलके चापाहरिणी।
सा योगिनी महामाया स्यातु श्रीर्मस्तके ॥६२॥
द्राविणी क्षोभिणी चैव स्तम्भिनी मोहिनी तथा।
रौद्रगर्भा महाघण्टा चमरी त्वरिता मनि ॥६३॥

रौद्री च कुलमाता च काकदृष्टिरघोमुखी ।
कपाली कुण्डली दीर्घा कपाली कुलगामिनी ॥६४॥
देवी रक्षतु मे गात्रं मस्तकं कुलमालिनी ।
भूमिरापस्तथा तेजो वायुराकाशमेव च ॥६५॥
पञ्चभूतेषु भूतेशी सदा रक्षतु मे कुलम् ।
राज्यं ददातु मे चैन्द्री प्रजा चैव प्रजावती ॥६६॥
माया ददातु मे नित्यं धनं धान्यं यशस्तथा ।
रणे राजकुले चैव शत्रुमध्ये महावने ॥६७॥
रक्तनेत्रा महादेवी करोतु मम चिन्तितम् ।
समया समये रक्षेद् विद्या विद्या कुलागमे ॥६८॥
साधकानां जगद्धात्री भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ।
द्विजटी त्रिजटी प्रोक्ता चन्दली ललितालिला ॥६९॥
गायत्री चाम्बिका तारा पार्वती कमलप्रभा ।
मादिनी मदनोन्मादा मन्दारी मदनातुरा ॥७०॥
भीषणा भीषणी नाम प्रेतसिद्धा विभीषणा ।
क्षुत् तृष्णा तथा निद्रा कान्तिर्बुद्धिस्तथा धृतिः ॥७१॥
सन्ध्या धृती रति क्षान्तिर्हृन्निशा परिपठ्यते ।
सुरनायेति विख्याता नगरेतरदेवता ॥७२॥
ग्रामदेवी ग्रामिग्रामी पीठे पीठेश्वरीं विदुः ।
कावेरी नर्मदा चैव गङ्गेति यमुनोच्यते ॥७३॥
गोदावरी महापुण्या प्रोच्यते चान्यरन्धगा ।
त्रैलोक्येऽपि महादेवी श्रीनाम्नी या प्रकाशिता ॥७४॥
सा देवीत्पलश्री तु स्यातु श्रीहृदये मम ।
सुवर्णरेखिणी प्रोक्ता विद्या या प्रोच्यते किल ॥७५॥
निर्मूलिनी भुजङ्गाना सा करोतु सुखं मम ।
कुरुकुल्लेति विख्याता पक्षिराजसुतोद्भवा ॥७६॥

या विद्या सा महाकरा जिह्वाग्रे स्यातु मे सदा ।
ॐ कारिणीति विख्याता देहे स्यातु सदा मम ॥७७॥
विद्यापहारिणी नाम कलिरूपविदारिणी ।
भेरुण्डा स्यातु मे कण्ठे तोरला स्यातु मस्तके ॥७८॥
तथा शबलरेखाऽपि मूले स्यातु सदा मम ।
जाङ्गली विषनाशाय वाचा सिद्धि करोतु मे ॥७९॥
सर्वसिद्धिकरी विद्या भुक्तिमुक्तिफलप्रदा ।
अहं ब्रह्मा अहं विष्णुरहं देवो महेश्वर ॥८०॥
सर्वभूतनिवासोऽहं लोके श्रीशक्तिचिन्तक ।
शक्तिन्यासेन पूतेन शरीरेण सुरासुरा ॥८१॥
प्रधानदेशमात्रेण आशा (ज्ञा) कुर्वन्तु मे सदा ।
यत्किञ्चिद् योगिनोरूप त्रैलोक्ये चास्ति शङ्कर ॥८२॥
तत्सर्व तिष्ठते देहे शक्तिन्यासे अवासिते ।
कामिनी कुरुते चापि या न्यास भक्तिनिर्मितम् ॥८३॥
ता देवीं दिव्यरूपस्था ससारे त्रिपुरा विदु ।
नमोऽस्तु ते जगन्मातर्नमोऽस्तु भुवनेश्वरी ॥८४॥
नमो भोगप्रदेदेवि ! नमस्तुभ्यं महेश्वरी ! ।
प्रकटा गोपिता सर्वा निर्वाणभैरवी शिवा ॥८५॥
सम्भ्रमा विजया हंसा शुभा चानलदेवता ।
यक्षिणी चूडकन्या च तथा चाकाशगामिनी ॥८६॥
भूचरी चरिता कुम्भी सर्वागमनिवासिनी ।
चतुष्पष्ट्याश्रया देवी योगिन्यो येन चिन्तिता ॥८७॥
आधारे लीयमानास्तु स योगी योगविद्भवेत् ।
ललाटे मण्डला स्यातु विरजा स्यातु मस्तके ॥८८॥
एकाक्षी दक्षिणस्कन्धे वामे चैव त्रिलोचना ।
जयन्ती स्यातु मे मुखी पटघा पन्दर्पकुण्डली ॥८९॥

मालिनी लिङ्गसन्धौ च हृदि स्यातु समाधिनी ।
अम्बिका पृष्ठवंशे च पार्श्वयो स्यातु मेदिनी ॥९०॥
दिग्गजाङ्गी कराग्रे च नागेन्द्री नखसन्धिषु ।
व्याघ्री चक्री च जङ्घायां स्यातु पादतले मही ॥९१॥
अमृताशाङ्खिनी रन्ध्रे लोचने च विलासिनी ।
कालिन्दी मूलजिह्वा च रक्तं रक्षतु रक्तिनी ॥९२॥
लाङ्गली जङ्गली रक्षेदस्थिनी चाऽस्थिसन्धिषु ।
मज्जिनी देहमज्जां तु शुक्रं शुक्रेश्वरी तथा ॥९३॥
त्वचं रक्षतु वेताली मम रोगप्रणाशिनी ।
रुद्रदा कुरुते शान्तिं सदैव मम विग्रहे ॥९४॥
पादा पादतले स्यातु पथि रक्षतु पन्थिनी ।
चोराग्निराजसर्पेभ्यो भयाद्रक्षतु भैरवी ॥९५॥
दुष्टानां दृष्टिबन्धं तु सदा करोतु बन्धिनी ।
चापेटी नाम या विद्या सा मे करोतु मङ्गलम् ॥९६॥
मर्कटी घण्टकर्णी च हनुमन्ती च रावणी ।
धर्धुरा कीर्तिविख्याता वन्दे विद्याचतुष्टयम् ॥९७॥
चेटका ज्ञानदा विद्या कौमारी चरणावली ।
विघ्नराजेत्तता नाम तुष्टा सन्तानरूपिणी ॥९८॥
मूलाधारस्थिता हंसी पातकी वलनोद्धता ।
दर्शिता मन्त्रविद्यास्तु तिष्ठन्तु मम मस्तके ॥९९॥
शुभा मे चाग्रतः स्यातु लोहिता स्यातु दक्षिणे ।
वामाङ्गे रतिकाले च पश्चिमे स्यातु शृंखला ॥१००॥
शिखायां शङ्खिनी रक्षेद् वस्त्रे वस्त्रवती शुभा ।
कवचे कवचाङ्गी च नेत्रे नेत्रकृतोत्सवा ॥१०१॥
तिष्ठन्ति योगिनोऽप्यास्त्रैलोक्ये सचराचरे ।
योगिन्यो या स्तुता सर्वा गेहं कुर्वन्तु मे वपुः ॥१०२॥

पुत्राणां च सदा देयं भक्तानां तु विशेषतः।
शक्तिन्यासमिदं देयं न देयं यस्य कस्यचित् ॥१०३॥
मनुष्याणां महोलोके चिन्तितार्थफलप्रदम्।
यः करोति महान्यासं षोढान्यासादिकं विभो। ॥१०४॥
स जीवन् शक्तिरूपो वै त्रैलोक्योन्मूलनक्षमः।
शक्तिन्यासे कृते जीवेद् यः कश्चिच्छेदको भवेत् ॥१०५॥
कर्मणा मनसा वाचा तस्य घातो भविष्यति ॥"

इति शक्तिन्यासः।

एवं महाशक्तिन्यासं स्वयं कृत्वा शिष्यस्य कारयित्वाऽन्तर्यागं कुर्यात्।

तद्यथा—मूलेन प्राणायामत्रयं कृत्वा सामान्यार्घ्योदकेन स्वपुरतश्चतुरस्रं कृत्वा "ओ३म् ह्रीं हंसः सोऽहं स्वाहा" इत्यात्ममनुना साधारं कलशोदकमात्मपात्रं संस्थाप्य स्वदेहञ्च शिष्यदेहञ्च श्रीचक्ररूपं विचिन्त्य, अं-कं-क्षं३६ शिवशक्ति-सदाशिवेश्वर-शुद्धविद्यामायाकलाअविद्यारागकालनियतिपुरुषप्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनःश्रोत्रत्वक्नेत्रजिह्वाघ्राण-वाक्-पाणि-पादपायूपस्थ-शब्द-स्पर्श-रूप-रसगन्धाकाशवाय्वग्निसलिलभूमि-जीवसर्वात्मने षट्त्रिंशत्तत्त्वात्मकाय श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीयोगपीठाय नमः।" इति पीठसमष्टिविद्यया हृदि पुष्पाञ्जलिं प्रक्षिप्य गन्धमाल्यादिभिर्भूषयित्वा देवीं सम्मुखीं हृदि ध्यात्वाऽऽवाह्यादिमुद्राः प्रदर्श्याऽऽसनाद्युपचारान् समर्प्य ध्यानपूर्वकं हृदि साङ्गामित्यादिना त्रिः सम्पूज्य प्रसन्तर्प्य, मूलेन गन्धादिताम्बूलान्तानुपचारान् समर्प्य तत्त्वचतुष्टयशोधनं कुर्यात्। यथा—ऐं अं १६ अः भूमिजीवसर्वात्मने अं आं १६ ऐ "इदं विष्णुर्विचक्रमे" (१।२२।१७) इदन्तापात्रसभूतमहन्तापरमामृतम्। पराहन्तामये वह्नौ जुहोमि शिवरूपतः। मूलं० आत्मतत्त्वात्मने स्थूलदेहं शोधयामि स्वाहा।" इत्यात्मपात्रान्तरेण किञ्चित् स्वीकृत्य क्लीं कं खं इत्यादि २५ शिवशक्ति-सदाशिवेश्वर-शुद्धविद्यामायाकलाअविद्याराग-कालनियति-पुरुषप्रकृत्यहङ्कारबुद्धिमनश्श्रोत्रत्वक्नेत्रजिह्वाघ्राणवाक्पाण्यात्मने कं २५ क्लीं "सुरावन्तं बर्हिषदं सुवीरं यज्ञं हिन्वन्ति महिषा नमोभिः।

दधानाः सोमं दिवि देवतासु मादेदमेन्द्रं यजमानः स्वर्काः ।" अन्तर्निरन्तर-निरिन्धनमेधमाने मोहान्धकारपरिपन्थिनि स विदग्नौ । कस्मिंश्चिदद्भुत-मरीचिविकासभूमौ विश्वं जुहोमि वसुधादिशिवावसानम् । ।मूलं० विद्या-तत्त्वात्मने सूक्ष्मदेहं शोधयामि स्वाहा, इति । पूर्ववत् किञ्चित् स्वीकृत्य, सौः यं रं १० पादपायूपस्थशब्द-स्पर्शरूपरस-गन्धाकाशवाय्वग्निसलिलात्मने यं १० "वाममद्य सवितर्वाममुश्वो दिवे दिवे वाममस्मभ्यं सावीः । वामस्य हि क्षयस्य देव भूरे रया धिया वामभाज स्याम" (यजु ८।६) तृप्यन्तु मातरः सर्वाः भैरवाः सविनायकाः । क्षेत्रपालाश्च योगिन्यो मम देहव्यव-स्थिता. । मूल० शिवतत्त्वात्मने कारणदेहं शोधयामि स्वाहा, इति पूर्ववत् किञ्चित् स्वीकृत्य; ऐं क्लीं सौ. अं० ५१ भूमिजीवसर्वात्मनेशिवशक्तिसदा-शिवेश्वरशुद्धविद्या मायाकलाविद्यारागकालनियतिपुरुषप्रकृत्यहङ्कारबुद्धि-मन श्रोत्रत्वक्-नेत्रजिह्वाघ्राणवाक्पाणिपायूपस्थशब्दस्पर्शाकाशवाय्वग्निस-लिलात्मने क्ष० ५१ ऐं क्लीं सौ. धर्माधर्महविर्दीप्ते आत्माग्नौ मनसा स्रुचा । सुषुम्नावर्त्मना नित्यमक्षवृत्तीर्जुहोम्यहम् ॥"

मूल० सर्वतत्त्वात्मने स्थूलसूक्ष्मकारणमहाकारणदेहं शोधयामि स्वाहा, इति पूर्ववत् किञ्चित् स्वीकृत्य पुनराधारे (कुण्डे) अनादि वासनेन्धन-ज्वलिते आत्मचतुष्काकारचतुरस्रे कुण्डलिन्यधिष्ठितं चिदग्निं ध्यात्वा, मूलं० "हं सः चिदग्निमण्डलाय नमः" इति मनसा सम्पूज्य, मनसैव "पुण्यं जुहोमि स्वाहा ।" एवं पापं० कृत्यं० अकृत्यं० सङ्कल्पं विकल्पं० धर्मं० अधर्मं० चेति हुत्वाऽऽत्मपात्र हस्ते सगृह्य मूलं० हृसः "इतः पूर्वं प्राणबुद्धिमनोऽहङ्कार - देहधर्माधिकारतो जाग्रत्स्वप्नसुषुप्त्यवस्थासु मनसा वाचा कर्मणा हस्ताभ्यां पद्भ्यामुदरेण शिश्ना यत्स्मृतं यदुक्तं यत्कृतं तत्सर्वं गुरुदेवतायै समर्पितमस्तु स्वाहा ।" इति सर्वं समर्प्य, पात्रमाधारे संस्थाप्य, आधारादि ब्रह्मरन्ध्रगां बिसतन्तुतनीयसी विद्युत्कोटिप्रभामशेषजगदुत्पत्ति-स्थितिसंहारकारिणी कुण्डलिनी देवीरूपां ध्यात्वा, यथाशक्ति मूलमहामालया सञ्जप्य, निवेद्य, "भावान्तस्तत्त्वे सदहं शिवोऽहं भावान्ततत्त्वे चिदहं शिवो-

ऽहम् । शिवान्ततत्त्वे सुखदः शिवोऽहमतः पर पूर्णमनुत्तरोऽहम् । देशिकवागुपदेशविनश्यद्देहमरन्मयशून्यविकल्प । अद्वयबोधविमर्शसुखः सन्नद्य शिवोऽस्मि शिवोऽस्मि शिवोऽस्मि" इत्यनुसन्धाय, प्रणम्य, शिष्यस्याऽपि बालाबीजत्रयस्थाने कूटत्रय सयोज्य संशोध्य तथैव षोडशार्णाया. खण्डत्रयं विधाय सशोध्य, श्रीपूर्णपीठे चन्दनादिपीठे वा सिन्दूरकुङ्कुमादिना दीक्षाप्रसङ्गोक्तविधिना मातृकायन्त्र विलिख्य, तत्र शिष्य निवेश्य, कलशस्थपल्लवात् शिष्यशिरसि कल्पवृक्षबुद्धया निधाय, कुम्भाम्भोभिरङ्गोपाङ्गविद्याभिरावणदेवतामन्त्रैर्देयमूलविद्यया चाभिषिञ्चेत् । ऋत्विक्सामयिकैः सुवासिनीभिश्चाभिषेचयेत् ।

आचार्यस्ततः कुम्भस्थादेवताः षोडशोपचारैरुपचर्य पुनश्च तास्तत उद्धृत्य सम्पूज्य, यथास्थान सस्थाप्य, अभिषिञ्चेत् ।

अभिषेकप्रकारो यथा—

अभिषेकस्य दक्षिणामूर्तिऋषिरनुष्टुप्छन्दः शक्तिर्देवता सर्वसिद्धसङ्कल्पसिद्धये विनियोगः ।

ॐ राजराजेश्वरी शक्तिर्भैरवी कालभैरवी ।
श्मशानभैरवी देवी त्रिपुरानन्दभैरवी ॥
त्रिपुरा त्रिपुरा देवी तथा त्रिपुरसुन्दरी ।
त्रिपुरेशी महादेवी तथा त्रिपुरमालिका ॥
नित्या च नित्यरूपा च वज्रप्रस्तारिणी तथा ।
सर्वचक्रेश्वरी देवी तथा नीलसरस्वती ॥
सर्वसिद्धिकरी देवी सिद्धगन्धर्वसेविता ।
उग्रतारा महादेवी तथा दक्षिणकालिका ॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।
उग्रदंष्ट्रा महादंष्ट्रा शुभदंष्ट्रा कपालिनी ॥
भीमनेत्रा विशालाक्षी मङ्गला विजया जया ।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ॥

मङ्गला नन्दिनी भद्रा लक्ष्मीः कीर्तिर्यशस्विनी ।
पुष्टिर्मेधा शिवा साध्वी यश शोभा उमा धृतिः ॥
श्रीनन्दा च सुनन्दा च नन्दिन्यानन्दपूजिता ।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ॥
विजया मङ्गला भद्रा स्मृतिःशान्तिः क्षमा धृतिः ।
सिद्धिस्तु परमापुष्टिः श्रीऋद्धिश्चरतिस्तथा ॥
दीप्ता कान्तिर्यशोलक्ष्मीरीश्वरी बुद्धिरेव च ।
शक्तिर्मायावती ब्राह्मी जयन्ती चाऽपराजिता ॥
अजिता मानवी श्वेता दितिस्त्वदितिरेव च ।
माया चैव महामाया मोहिनी क्षोभिणी तथा ॥
कमला विमला गौरी लावण्याम्बुधिसुन्दरी ।
दुर्गा क्रियाऽरुन्धती च घण्टाकर्णा कपालिनी ॥
चर्चिका चापरा ज्ञेया तथैव सुरपूजिता ।
वैवस्वती च कौमारी तथा माहेश्वरी परा ॥
वैष्णवी च महालक्ष्मीः कार्तिकी कौशिकी तथा ।
शिवदूती च चामुण्डा मुण्डमालाविभूषणा ॥
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ।
इन्द्रो वह्निर्यमश्चैव नैर्ऋतो वरुणस्तथा ॥
पवनो धनदेशानौ ब्रह्माऽनन्तो दिगीश्वराः ।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ॥
संवत्सरश्चायनौ च मासपक्षदिनानि च ।
तिथयश्चाभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ॥
रविः सोमः कुजबुधौ गुरुः शुक्रः शनैश्चरः ।
राहुः केतुश्च सततमभिषिञ्चन्तु ते ग्रहाः ॥
नक्षत्रं करणं योगोऽमृतसिद्धिस्ततः परम् ॥
दग्धाः पापास्तथा भद्रा योगो वाराः क्षणास्तथा ।
वारवेला कालवेला दण्डा ऋक्षादयस्तथा ॥

अभिषिञ्चन्तु सततं मन्त्रपूतेन वारिणा ।
असिताङ्गो रुरुश्चण्डः क्रोध उन्मत्त एव च ॥
कपाली भीषणाख्यश्च संहारश्चाऽष्टभैरवाः ।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा । इति
द्राविणी पुत्रिकाश्चैव डाकिनी पुत्रिकास्तथा ॥
शाकिनी पुत्रिकाश्चान्याः काकिनी पुत्रिका पराः ।
लाकिनी पुत्रिका भूयो हाकिनीपुत्रिकास्तथा ॥
ततश्च राकिणीपुत्री देवपुत्री ततः परम् ।
मातृणाश्च तथा पुत्री चोर्ध्वमुख्याः सुतास्तथा ॥
अधोमुख्याः सुताश्चैव ज्वालामुख्याः सुताः पराः ।
एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा इति ॥
ब्रह्मा विष्णुश्च रुद्रश्च ईश्वरश्च सदाशिवः ।
एते त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा ॥ इति
पुरुषः प्रकृतिश्चैव विकाराश्चैव षोडश ।
आत्मा परमात्मा ज्ञानात्मा ध्यानात्मा परमात्मनः ॥
आत्मनश्चात्मनश्चैव स्थूलसूक्ष्मो च ये पराः ।
एते त्वां ... ... ॥ इति
वेदादिबीजं हुंबीजं श्रीबीज तन्निकेतनम् ।
शक्तिबीजं रमाबीज मायाबीज सुधाकरम् ॥
चिन्तारत्नं महाबीज नारसिंहं च तारकम् ।
मार्तण्डभैरव दीर्घं बीज श्रीपोत्पोत्तमम् ॥
गाणपत्यश्च वाराह कालबीजं भयापहम् ।
एतानि त्वाऽभिषिञ्चन्तु ... ... ॥ इति
गङ्गा गोदावरी रेवा यमुना च सरस्वती ।
आत्रेयी भारती चैव सरयू गण्डकी तथा ॥
करतोया चन्द्रभागा श्वेतगङ्गा च कौशिकी ।
भोगवती च पाताले स्वर्गे मन्दाकिनी तथा ॥

एतास्त्वामभिषिञ्चन्तु मन्त्रपूतेन वारिणा । इति
भैरवी भीमरूपा च शोण सुमुख एव च ॥
सिन्धुश्चैव ह्रद पुण्यस्तथा पातालसम्भव ।
एते त्वा ॥ इति
यानि कानि च तीर्थानि पुण्यापुण्यतराणि च ।
तानि त्वामभिषिञ्चन्तु इति ॥
जम्बूद्वीपादयो द्वीपा सागरा लवणादय ।
अनन्ताद्यस्तथा नाग सर्पा ये तक्षकादय ॥
एते त्वा । इति ।
तारश्च वह्निजाया च यपद्कूर्चमत परम् ॥
वौषट्कारस्तु फट्कारो ह्यभिषिञ्चन्तु सर्वदा ।
नश्यन्तु प्रेतकूष्माण्डा राक्षसा दानवाश्च ये ॥
पिशाचा गुह्यका भूत्वा अभिषेकेण ताडिता ।
अलक्ष्मी कालकर्णी च पापानि सुमहान्ति च ॥
नश्यन्तु चाभिषेकेण तारबीजेन ताडिता ।
रोगा शोकाश्च दारिद्र्यं दौर्बल्य चित्तविक्रिया ॥
नश्यन्तु चाऽभिषिकेण वाग्बीजेनैव ताडिता ।
लोकानुरागत्यागाश्च दौर्भाग्यमपि दुर्यश ॥
नश्यन्तु चाभिषेकेण मन्मथेनैव ताडिता ।
तेजोह्रास शक्तिह्रासो बुद्धिह्रासस्तथैव च ॥
नश्यन्तु चाभिषेकेण शक्तिबीजेन ताडिता ।
विषाणि च महारोगा डाकिन्यो भीतयस्तथा ॥
घोराभिचारा क्रूराश्च ग्रहानागास्तथैव च ।
नश्यन्तु चाभिषेकेण कालबीजेन ताडिता ॥
नश्यन्तु विपद सर्वा सम्पद सन्तु सुस्थिरा ।
अभिषेकेण शाक्ताना पूर्णा सन्तु मनोरथा ॥"

ततो वस्त्रमाल्याद्यलङ्कृतं श्रीचक्रे समुपवेश्य मातृकायन्त्रमये पीठे ।

पराप्रासाद श्रीषोडशार्ण-विद्याभेद षट्-शाम्भवक्रम-चरणविद्या-आम्नाय समया-पञ्चसिंहासनषड्दर्शन-पञ्चपञ्चिकागण-पञ्चायतनविद्याः श्रीविद्या वृन्दभेदादि-दशमहाविद्याः षडाम्नायमन्त्रान् शैववैष्णवगाणपत्य सौरशाक्त-विद्या गुरुपादुकाविद्या षोडशनित्याविद्या महाषोढोक्तविद्या उपदिशेत्, स्वक्रममपि चोपदिशेत्। दीक्षाप्रकरणोक्तं त्रैपुरं सिद्धान्तञ्च श्रावयेत्। स्वाङ्गेषु किमप्यङ्गं स्पर्शयित्वा तदङ्गं मातृकावर्णादि द्व्यक्षरं त्र्यक्षरं चतुरक्षरं वा आनन्दनाथशब्दान्तं तस्य नाम दिशेत्। ततः समयाचारपालनं शास्त्राज्ञापालनञ्च दीक्षाप्रसङ्गोक्तमुपदिशेत् ॥

अथ प्रकृते क्रियादीक्षाशक्तानां वर्णदीक्षादिविधिर्लिख्यते—तत्र पुंस्प्रकृत्यात्मकानकारादिक्षकारान् मातृकावर्णान् पुस्प्रकृत्यात्मके शिष्यदेहे यथाविधि विन्यस्य पुनः संहारक्रमेण मूर्धादिहृदयान्तस्थं क्षकारं नाभ्यन्तःस्थलकारे संहरामि, हृदादिनाभिपर्यन्तस्थलकारं हृदादिवामपादाग्रस्थे हकारे संहरामि, हृदादिवामपादाग्रपर्यन्तस्थं हकारं हृदादिदक्षिणपादाग्रपर्यन्तस्थे सकारे संहरामि, हृदादिदक्षिणपादाग्रपर्यन्तस्थ सकारं हृदादिवामपाण्यग्रावधिस्थे षकारे संहरामि हृदादिवामपाण्यग्रावधिस्थं षकारं हृदादिदक्षिणपाण्यग्रावधिस्थे शकारे संहरामि एवं युक्त्या वर्णान् संहृत्य, पुनस्तच्चैतन्य सकलग्रामतत्त्वसमेतं परमात्मनि सयोज्य विलीनतत्त्वसकलसमूहं विगतनिखिलकलुषं दिव्यतनुं शिष्य विचिन्त्य, पुनः परमात्मनः सकाशादकारादिक्षकारान्तान् वर्णानुत्पाद्य वक्ष्यमाणसृष्टिन्यासक्रमेण शिष्यदेहे मातृकावर्णान् विन्यस्य, पुनस्तच्चैतन्यं तत्त्वग्रामसमेतं तस्मिन् संयोज्योक्तविधिनोपदेशं कुर्यात्। इति वर्णात्मदीक्षा।

अथ कलादीक्षा—तत्र पादतलतो जानुपर्यन्तं निवृत्तिकलां, जानुतो नाभि पर्यन्तं प्रतिष्ठाकलां, नाभितः कण्ठपर्यन्तं विद्याकलां, कण्ठतोललाटपर्यन्तं शान्तिकलां, ललाटाद् ब्रह्मरन्ध्रपर्यन्तं शान्त्यतीताकलां शिष्यदेहे सञ्चिन्त्य, निवृत्तिकलां प्रतिष्ठाकलायां संहरामि, प्रतिष्ठाकलां शान्त्यतीताकलायां संहरामि, इति क्रमात् संहृत्य वेधयित्वा, ता परमात्मनि संहृत्य,

प्राग्वत्तस्य शरीरं सशोध्य समुत्पाद्य, परमात्मनः सकाशाच्छन्त्यतीताकला ततः शान्तिं ततो विद्यां ततःप्रतिष्ठा ततो निवृत्तिश्च सृष्टिक्रमेण शिष्यदेहे तत्तत्स्थाने सयोज्योपदेशादिकं कुर्यादिति। एवमष्टत्रिंशत्कलाभिर्वोक्तयुक्त्या संहारसृष्टिन्यासक्रमेण शिष्यं संस्कृत्य दीक्षां दद्यात्, इति कलादीक्षा।

अथ स्पर्शदीक्षाः—तत्र गुरुः स्वहस्ततले शिवरूपं स्वगुरुं ध्यायन् षडङ्गमातृका च जपन् शिष्यस्य शिरसि स्वदक्षिणकरं निधायोपदिशेत्, इति स्पर्शदीक्षा।

अथ वाग्दीक्षा.—तत्र गुरुः परचिद्रूपे शिवे चित्तं निधाय तदुद्भूतान् समस्तमन्त्रान् ध्यायस्तन्मनाः स्वयं शिष्यायोपदिशेन्मन्त्रान्। इति वाग्दीक्षा।

अथ दृग्दीक्षा—तत्र गुरुः स्वनेत्रे निमील्य परमात्मस्वरूपिणीं देवतां ध्यात्वा प्रसन्नचित्तो दिव्यचक्षुषा शिष्यं निरीक्ष्य मन्त्रोपदेशं कुर्यात्, इति दृग्दीक्षा। पश्चादुक्तमेतद् दीक्षात्रयं विरक्तानां शिष्याणां तत्त्वविदा गुरुणा कर्तव्यमिति। स्त्रीणां तु वाग्दीक्षैव विहिता नान्या।

अथ वेधदीक्षा—तत्र गुरुः शिष्यस्य मूलाधारे चतुर्दलपङ्कजमध्यत्रिकोणमध्ये यथोक्तरूपां कुण्डलिनीं ध्यात्वा तत्पात्रचतुष्टयमध्यस्थवादिसान्ताक्षरचतुष्टयं तन्मध्यस्थिते कमलासने संहृत्य तं ब्रह्माणं तदूर्ध्वगं स्वाधिष्ठानाख्यषट्पत्रकमलमध्यस्थिते विष्णौ संयोज्य, तत्पत्रषट्कमध्यस्थबादिलान्तवर्णषट्कं विष्णौ संयोज्य, तदूर्ध्वे नाभिमण्डले दशदलकलात्मके मणिपूराख्ये विष्णुं सयोज्य तत्पत्रदशकमध्यस्थडादिफान्तवर्णदशकसहितं विष्णुं तत्पङ्कजमध्ये रुद्रे सयोज्य वेधयित्वा तं रुद्रमनाहताख्ये हृत्पद्मे कादिठान्तद्वादशवर्णाढ्यद्वादशदलसयुक्ते सयोज्य तैरक्षरैः सार्धं तं रुद्रं तन्मध्यस्थिते स्वरे संयोज्य वेधयित्वा, कण्ठदेशे षोडशस्वराढ्यषोडशदलकमले विशुद्धचक्रे तमीश्वरं संयोज्य तैः स्वरैः सार्धं ईश्वरं तन्मध्यस्थे सदाशिवे सयोज्य वेधयित्वा, तं सदाशिवं भ्रूमध्यद्विदलपङ्कजमाज्ञाचक्रं नीत्वा तत्पत्रद्वयहक्षवर्णद्वयसहितं सदाशिवं तन्मध्यवर्तिनि बिन्दौ सयोज्य वेधयित्वा तं बिन्दुं तदूर्ध्वस्थिताया कलायां सयोज्य तां पुनर्नादे तं नादान्ते तन्मुन्मन्या

तां विष्णुचक्रे विष्णुचक्रं गुरुवक्त्रे चेत्युत्तरोत्तरं संयोज्य वेधयित्वा जीवात्मना सह तां कुण्डलिनीं परशिवे संयोज्य वेधयेत्। एवं कृते शिष्यो गुर्वाज्ञया छिन्नसंसारपाशो विसंज्ञः सद्यः क्षितितले पतति। ततो गुरुः संहृतविपरीतक्रमेण परशिवात् कुण्डलिनीमुत्पाद्य तया हृतमखिलं सृष्टिक्रमेण शिष्यदेहे तत्तच्चक्रे तां तां देवतां संयोज्य हृदये जीवं मूलाधारे कुण्डलिनी संयोज्योपदेशादिकं कुर्यात्। ततः सञ्जातदिव्यबोधो भूतभविष्यद्वर्तमानज्ञः सदाशिवो भवति इति वेधदीक्षा। प्रायः कलौ वेधदीक्षाकरोगुरुस्तद्योग्यः शिष्यश्च दुर्लभ इत्याहुराचार्याः प्रसङ्गादत्राऽपि लिखितेयमिति शिवम्।

अथैवं दीक्षितानां सद्भक्तियुक्तानां गुरुतःशास्त्रतश्चाधिगताशेषरहस्यपरमार्थानां गुरुः शिष्याणां पूर्णाभिषेकाख्यं द्वितीयमभिषेकं कुर्यात्। तत्र प्रागुक्ते मण्डपे वेदिकायां वक्ष्यमाणं विपुलं तत्पूजाचक्रं निर्माय, प्रागवत्पञ्चरजोभिः कर्णिकादलकेसरकोणादिकमापूर्य तस्य मध्ये खारीतोयपूर्णकुम्भं प्रागुक्तविधिना संस्थाप्यान्येषु दलेषु कोणेषु चतुरस्रेषु च सर्वावरणदेवतापूजास्थानेषु प्रस्थद्वयजलपूर्णकलशान् संस्थाप्य, तत्र मध्यकुम्भे देवतामावाह्य, प्रागुक्तविधिना षोडशोपचारैः सम्पूज्यान्येषु कलशेषु तथैवाङ्गावरणदेवताः सम्पूज्य, दीक्षोक्तविधिना शिष्यजन्मनक्षत्रे प्रागवत्पञ्चवाद्यघोषपुरःसरं स्वेष्टदेवताभक्तै ब्राह्मणैः सह तं सम्यगभिषिञ्चेत्।

इति पूर्णाभिषेकः

श्रीमत्करपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे पूर्णाभिषेकः समाप्तः

श्रीविद्यासुप्रसन्नाऽस्तु।

अथश्रीमहात्रिपुरसुन्दरीमानपूजास्तोत्रम्

मम न भजनशक्तिः पादयोस्ते न भक्ति-
र्न च विषयविरक्तिर्ध्यानयोगे न शक्तिः ।
इति मनसि सदाऽहं चिन्तयन्नाद्यशक्ते
रुचिरवचनपुष्पैरर्चनं सञ्चिनोमि ॥१॥
व्याप्तं हाटकविग्रहैर्जलधरैरारूढदेवव्रजैः
पोतैराकुलितान्तरं मणिधरैर्भूमिधरैर्भूषितम् ।
आरक्तामृतसिन्धुमुद्धरचलद्वीचीचलद्व्याकुल-
व्योमान परिचिन्त्य सन्ततमहो चेतः कृतार्थीभव ॥२॥
तस्मिन्नुज्ज्वलरत्नजालविलसत्कान्तिच्छटाभिः स्फुटं
कुर्वाणं वियदिन्द्रचापनिचयैराच्छादितं सर्वतः ।
उच्चैः शृङ्गनिषण्णदिव्यवनितावृन्दाननप्रोल्लसद्-
गीताकर्णननिश्चलाखिलमृगं द्वीपं नमस्कुर्महे ॥३॥
जातीचम्पकपाटलादिसुमनःसौरभ्यसम्भावितं
ह्रीङ्कारध्वनिकण्ठकोकिलकुहूप्रोल्लासिचूतद्रुमम् ।
आविर्भूतसुगन्धिचन्दनवनं दृष्टिप्रियं नन्दनं
चञ्चच्चञ्चलचञ्चरीकचटुलं चेतश्चिरं चिन्तय ॥४॥
परिपतितपरागैः पाटलक्षोणिभागो
विकसितकुसुमोच्चैः पीतचन्द्रार्करश्मिः ।
अलिमुखपिकराजीकूजितैः श्रोत्रहारी
स्फुरतु हृदि मदीये नूनमुद्यानराजः ॥५॥
रम्यद्वारपुरप्रचारतमसा संहारकारिप्रभ-
स्फारंतोरणभारहारकमहाविस्तारहारद्युते ।
क्षोणीमण्डलहेमहारविलसत्संसारपारप्रद-
प्रोद्यद्भक्तमनोविहारकनकप्राकार तुभ्यं नमः ॥६॥

उद्यत्कान्तिकलापकल्पितनभः स्फूर्जद्वितानप्रभः
सत्कृष्णागुरुधूपवासितवियत्काष्ठान्तरे विद्युतः ।
सेवायातसमस्तदैवतगणैरासेव्यमानोऽनिशं
सोऽयं श्रीमणिमण्डपोऽनवरतं मच्चेतसि द्योतताम् ॥७॥

क्वाऽपि प्रोद्भटपद्मरागकिरणव्रातेन सन्ध्यायितं
कुत्राऽपि स्फुटविस्फुरन्मरकतद्युत्या तमिस्रायितम् ।
मध्यालम्बिविशालमौक्तिकरुचा ज्योत्स्नायितं कुत्रचित्-
मातः श्रीमणिमन्दिरं तव सदा वन्दामहे सुन्दरम् ॥८॥

उत्तुङ्गालयविस्फुरन्मरकतप्रोद्यत्प्रभामण्डला-
न्यालोक्याङ्कुरितोत्सवैर्नवतृणाकीर्णस्थलीशङ्कया ।
नीतो वाजिभिरुत्पथं बत रथस्सूतेन तिग्मद्युते-
र्वल्गावल्गितहस्तमस्तशिखरं कष्टैरितः प्राप्यते ॥९॥

मणिसदनसमुद्यत्कान्तिधारानुरक्ते
वियति चरमसन्ध्याशङ्किनो भानुरथ्याः ।
शिथिलितगतकुप्यत्सूतहुङ्कारनादैः
कथमपि मणिगेहादुच्चकैरुच्चलन्ति ॥१०॥

भक्त्या किन्नु समर्पितानि बहुधा रत्नानि पाथोधिना
किंवा रोहणपर्वतेन सदनं यैर्विश्वकर्माऽकरोत् ।
आज्ञातं गिरिजे कटाक्षकलया नूनं त्वया तोषिते
शंभौ नृत्यति नागराजफणिना कीर्णा मणिश्रेणयः ॥११॥

विदूरमुक्तवाहनैर्विनम्रमौलिमण्डलै-
र्निबद्धहस्तसम्पुटैःप्रयत्नसंयतेन्द्रियैः ।
विरञ्चिविष्णुशङ्करादिभिर्मुदा तवाऽम्बिके
प्रतीक्ष्यमाणनिर्गमो विभाति रत्नमण्डपः ॥१२॥

ध्वनन्मृदङ्गकाहलः प्रगीतकिन्नरीगणः
प्रनृत्तदिव्यकन्यकः प्रवृत्तमङ्गलक्रमः ।
प्रकृष्टसेवकव्रजः प्रहृष्टभक्तमण्डलो
मुदे ममाऽस्तु सन्ततं त्वदीयरत्नमण्डपः ॥१३॥

प्रवेशनिर्गमाकुलैः स्वकृत्यरक्तमानसैः-
र्वहिः स्थितामरावलीविधीयमानभक्तिभिः ।
विचित्रवस्त्रभूषणैरुपेतमङ्गनाजनैः
सदा करोतु मङ्गलं ममेह रत्नमण्डपः ॥१४॥

सुवर्णरत्नभूषितैर्विचित्रवस्त्रधारिभिः
गृहीतहेमयष्टिभिर्निरुद्धसर्वदैवतैः ।
असंख्यसुन्दरीजनैः पुरः स्थितैरधिष्ठितो
मदीयमेतु मानसं त्वदीयतुङ्गतोरणः ॥१५॥

इन्द्रादींश्च दिगन्तरान्सहपरीवारानथो सायुधान्
योषिद्रूपधरान्स्वदिक्षु निहितान्सञ्चिन्त्य हृत्पङ्कजे ।
शङ्खे श्रीवसुधारया वसुमतीयुक्तं च पद्मं स्मरन्
कामं नौमि रतिप्रियं सहचरं प्रीत्या वसन्तं भजे ॥१६॥

गायन्ती कलवीणयाऽतिमधुरं हुङ्कारमातन्वती—
द्वाराभ्यासकृतस्थितीरिह सरस्वत्यादिकाः पूजयन् ।
द्वारे नौमि मदोन्मदं सुरगणाधीशं मदेनोन्मदां
मातङ्गीमसिताम्बरां परिलसन्मुक्ताविभूषां भजे ॥१७॥

कस्तूरिकाश्यामलकोमलाङ्गीं कादम्बरीपानमदालसाङ्गीम् ।
वामस्तनालिङ्गितरत्नवीणां मातङ्गकन्यां मनसा स्मरामि ॥१८॥

विकीर्णचिकुरोत्करे विगलिताम्बराडम्बरे
मदाकुलितलोचने विमलभूषणोद्भासिनी ।
तिरस्करिणि ! तावकं चरणपङ्कजं चिन्तयन्
करोमि पशुमण्डलीमखिलमोहमुग्धाशयाम् ॥१९॥

प्रमत्तवारुणीरसैर्विघूर्णमानलोचना
प्रचण्डदैत्यसूदना प्रविष्टभक्तमानसा ।
उपोढकज्जलच्छविच्छटाविराजिविग्रहा
कपालशूलधारिणी स्तुवे त्वदीयदूतिका ॥२०॥

स्फूर्जन्नव्ययवाङ्कुरोपलसिताभोगैः पुरः स्थापितैः
दीपोद्भासिशरावशोभितमुखैः कुम्भैर्नवैः शोभिता ।
स्वर्णाबद्धविचित्ररत्नपटलीचञ्चत्कपाटश्रिया
युक्तं द्वारचतुष्टयेन गिरिजे वन्दे मणीमन्दिरम् ॥२१॥

आस्तीर्णारुणकम्बलासनयुतं पुष्पोपहारान्वितं
दीप्तानेकमणिप्रदीपसुभगं राजद्वितानोत्तमम् ।
धूपोद्गारिसुगन्धिसम्भ्रममिलद्भृङ्गावलीगुञ्जितं
कल्याणं वितनोतु मेऽनवरतं श्रीमण्डपाभ्यन्तरम् ॥२२॥

कनकरचिते पञ्चप्रेतासनेन विराजिते
मणिगणचिते रक्तश्वेताम्बरास्तरणोत्तमे ।
कुसुमसुरभौ तल्पे दिव्योपधानसुखावहे
हृदयकमले प्रादुर्भूतां भजे परदेवताम् ॥२३॥

सर्वाङ्गस्थितिरम्यरूपरुचिरा प्रातः समभ्युत्थितां
जृम्भामञ्जुमुखाम्बुजां मधुमदव्याघूर्णदक्षत्रयाम् ।
सेवायातसमस्तसन्निधिसखीस्सम्मानयन्तीं दृशा
सम्पश्यन् परदेवता परमहो मन्ये कृतार्थं जनुः ॥२४॥

उच्चैस्तोरणवर्तिवाद्यनिवहध्वाने समुज्जृम्भिते
भक्तैर्भूमिविलग्नमौलिभिरलं दण्डप्रणामे कृते ।
नानारत्नसमूहनद्धकथनस्थालीसमुद्भासितां
प्रातस्ते परिकल्पयामि गिरिजे नीराजनामुज्ज्वलाम् ॥२५॥

पाद्यं ते परिकल्पयामि पदयोरर्घ्यं तथा हस्तयोः
सौधीभिर्मधुपर्कमम्ब मधुर धाराभिरास्वादय ।
तोयेनाचमनं विधेहि शुचिना गाङ्गेन मत्कल्पितं
साष्टाङ्गप्रणिपातमीशदयिते दृष्ट्या कृतार्थीकुरु ॥२६॥

मातः पश्य मुखाम्बुज सुविमले दत्ते मया दर्पणे
देवि स्वीकुरु दन्तधावनमिद गङ्गाजलेनान्वितम् ।
सुप्रक्षालितमाननं विरचयन्स्निग्धाम्बरप्रोञ्छन
द्रागङ्गीकुरु तत्त्वमम्ब मधुरं ताम्बूलमास्वादय ॥२७॥

निधेहि मणिपादुकोपरि पदाम्बुज मज्जना-
लय व्रज शनैः सखीकृतकराम्बुजालम्बनम् ।
महेशि करुणानिधे तव दृगन्तपातोत्सुकान्
विलोकय मनागमूनुभयसंस्थितान्देवतान् ॥२८॥
हेमरत्नवरणेन वेष्टितं विस्तृतारुणवितानशोभितम् ।
सज्जसर्वपरिचारिकाजनं पश्य मज्जनगृहं मनो मम ॥२९॥
कनककलशजालस्फाटिकस्नानपीठाद्युपकरणविशालं गन्धमत्तालिमालम् ।
स्फुरदरुणवितानं मञ्जुगन्धर्वगानं परमशिवमहेले मज्जनागारमेहि ॥३०॥
पीनोत्तुङ्गपयोधराः परिलसत्सम्पूर्णचन्द्रानना-
रत्नस्वर्णविनिर्मिताः परिलसत्सूक्ष्माम्बरप्रावृताः ।
हेमस्नानघटीस्तथा मृदुपटीरुद्वर्तनं कौसुमं
तैलं कङ्कतिका करेषु दधतीर्वन्देऽम्ब ते दासिकाः ॥३१॥
तत्र स्फाटिकपीठमेत्य शनकैरुत्तारितालङ्कृति—
र्नीचैरुज्झितकञ्चुकोपरिहिता रक्तोत्तरीयाम्बरा ।
वेणीबन्धमपास्य कङ्कतिकया केशप्रसादं मना-
क्कुर्वाणा परदेवता भगवती चित्ते मम द्योतताम् ॥३२॥
अभ्यङ्गं गिरिजे गृहाण मृदुना तैलेन सम्पादितं
काश्मीरैरगुरुद्रवैर्मलयजैरुद्वर्तनं कारय ।
गीते किन्नरकामिनीभिरभितो वाद्ये मुदा वादिते
नृत्यन्तीमिह पश्य देवि पुरतो दिव्याङ्गनामण्डलीम् ॥३३॥
कृतपरिकरबन्धास्तुङ्गपीनस्तनाढ्या
मणिनिवहनिबद्धा हेमकुम्भीर्दधानाः ।
सुरभिसलिलनिर्यद्गन्धलुब्धालिमाला
सविनयमुपतस्थुस्सर्वतः स्नानदास्यः ॥३४॥
उद्गन्धैरगुरुद्रवैस्सुरभिणा कस्तूरिकावारिणा
स्फूर्जत्सौरभयक्षकर्दमजलैः काश्मीरनीरैरपि ।
पुष्पाम्भोभिरशेषतीर्थसलिलैः कर्पूरपायोभरैः
स्नानं ते परिकल्पयामि गिरिजे भक्त्या तदङ्गीकुरु ॥३५॥

प्रत्यङ्गं परिमार्जयामि शुचिना वस्त्रेण संप्रोञ्छनं
कुर्वे केशकलापमायततरं धूपोत्तमैर्धूपितम् ।
आलीवृन्दविनिर्मितां यवनिकामास्थाय रत्नप्रभं
भक्तत्राणपरे महेशगृहिणि स्नानाम्बरं मुच्यताम् ॥३६॥
पीतं ते परिकल्पयामि निबिड चण्डातकं चण्डिके
सूक्ष्मं स्निग्धमुरीकुरुष्व वसनं सिन्दूरपूरप्रभम् ।
मुक्तारत्नविचित्रहेमरचनाचारुप्रभाभास्वरं
नीलं कञ्चुकमर्पयामि गिरिशप्राणप्रिये सुन्दरि ॥३७॥
विलुलितचिकुरेणच्छादितांसप्रदेशे मणिनिकरविराजत्पादुकान्यस्तपादे ।
सुललितमवलम्ब्य द्राक्सखीमसदेशे गिरिशगृहिणि भूपामण्डपाय प्रयाहि ॥३८॥
लसत्कनककुट्टिमस्फुरदमन्दमुक्तावली समुल्लसितकान्तिभिः कलितशक्रचापव्रजे
महाभरणमण्डपे निहितहेमसिंहासन सखीजनसमावृत समधितिष्ठ
कात्यायनि ॥३९॥
स्निग्ध कङ्कतिकामुखेन शनकैस्संशोध्य केशोत्कर
सीमन्तं विरचय्य चारु विमलं सिन्दूररेखान्वितम् ।
मुक्ताभिर्ग्रथितालकां मणिचितैस्सौवर्णसूत्रैःस्फुट
प्रान्ते मौक्तिकगुच्छकोपलतिकां ग्रथ्नामि वेणीमिमाम् ॥४०॥
विलम्बिवेणीभुजगोत्तमाङ्गस्फुरन्मणिभ्रान्तमुपानयन्तम् ।
स्वरोचिषोल्लासितकेशपाशं महेशि चूडामणिमर्पयामि ॥४१॥
त्वामाश्रयद्भिः कवरीतमिस्रैर्बन्दीकृतं द्रागिव भानुबिम्बम्
मृडानि ! चूडामणिमादधानं वन्दामहे तावकमुत्तमाङ्गम् ॥४२॥
स्वमध्यनद्धहाटकस्फुरन्मणिप्रभाकुलं विलम्बिमौक्तिकच्छटाविराजितं समन्ततः
निबद्धलक्षचक्षुषा भवेन भूरि भावित समर्पयामि भास्वरं भवानि
फालभूषणम् ॥४३॥
मीनाम्भोरुहखञ्जरीटसुषमा विस्तारविस्मारके
कुर्वाणे किल कामवैरिमनसः कन्दर्पबाणप्रभाम् ।
माध्वीपानमदारुणेऽतिचपले दीर्घे दृगम्भोरुहे
देवि ! स्वर्णशलाकयोर्जितमिदं दिव्याञ्जनं दीयताम् ॥४४॥

मध्यस्थारुणरत्नकान्तिरुचिरा मुक्तामुगोद्भासिता
दैवाद्भार्गवजीवमध्यगरवेर्लक्ष्मीमध कुर्वतीम् ।
उत्सिक्ताधरविम्बकान्तिविसरैर्भौमीभवन्मौक्तिका
मद्दत्तामुररीकुरुष्व गिरिजे नासाविभूषामिमाम् ॥४५॥

उडुकृतपरिवेषस्पर्द्धया शीतभानोरिव विरचितदेहद्वन्द्वमादित्यविम्बम् ।
अरुणमणिसमुद्यत्प्रान्तनिर्भ्राजिमुक्तं श्रवसि परिनिधेहि स्वर्णताटङ्कयुग्मम् ॥४६॥

मरकतवरपद्मरागहीरोत्थितगुञ्जकान्तिधावनद्धमध्यम् ।
विततविमलमौक्तिकञ्च कण्ठाभरणमिद गिरिजे समर्पयामि ॥४७॥

नानादेशसमुत्थितैर्मणिगणप्रोद्यत्प्रभामण्डल
व्याप्तैराभरणैर्विराजितगला मुक्ताच्छटालङ्कृताम् ।
मध्यस्थारुणरत्नकान्तिरुचिरा प्रान्तस्थमुक्ताफल-
व्रातामम्ब चतुष्किका परशिवे वक्ष स्थले स्थापय ॥४८॥

अन्योन्य प्लावयन्ती सततपरिचलत्कान्तिकल्लोलजाले-
कुर्वाणा मज्जदन्त करणविमलता शोभितेव त्रिवेणी ।
मुक्ताभि पद्मरागैर्मरकतमणिभिर्निर्मिता दीप्यमाने
नित्य हारत्रयी ते परशिवरसिके चेतसि द्योतता न ॥४९॥

करसरसिजनाले विस्फुरत्कान्तिजाले विलसदमलशाभे चञ्चदीशाक्षिलोभे ।
विविधमणिमयूखोद्भासित देवि दुर्गे कनककटकयुग्म वाहुयुग्मे निधेहि ॥५०॥

व्यालम्बमानसितपट्टकगुच्छशोभि स्फूर्जन्मणीघटितहारविरोचमानम् ।
मातर्महेशमहिले तव वाहुमूले केयूरकद्वयमिद विनिवेशयामि ॥५१॥

विततनिजमयूखैर्निर्मितामिन्द्रनीलै विजितकमलनालालीनमत्तालिमालाम् ।
मणिगणखचिताभ्या कङ्कणाभ्यामुपेता कलय वलयराजी हस्तमूले महेशि ॥५२॥

नीलपट्टमृदुगुच्छशोभिता बद्धनैकमणिजालमञ्जुलाम् ।
अर्पयामि वलयात्कुर सरे विस्फुरत्कनकतैतृपालिकाम् ॥५३॥

आलवालमिव पुष्पधन्वना बालविद्रुमलतासु निर्मितम् ।
अङ्गुलीषु विनिधीयता शनैरङ्गुलीयकमिद मदर्पितम् ॥५४॥

विजितहरमनोभूमत्तमातङ्गकुम्भ-स्थलविलुलितकूजत्किङ्किणीजालतुल्याम् ।
अविरतकलनादैरीशचेतो हरन्तीं विविधमणिनिबद्धां मेखलामर्पयामि ॥५५॥

व्यालम्बमानवरमौक्तिकगुच्छशोभि विभ्राजिहाटकपुटद्वयरोचमानम् ।
हेम्ना विनिर्मितमनेकमणिप्रबन्धं नीवीनिबन्धनगुणं विनिवेदयामि ॥५६॥

विनिहतनवलाक्षापङ्कबालातपौघे मरकतमणिराजीमञ्जुमञ्जीरघोषे ।
अरुणमणिसमुद्यत्कान्तिधाराविचित्रस्तवचरणसरोजे हंसकः प्रीतिमेतु ॥५७॥

निबद्धशितिपट्टकप्रवरगुच्छसंशोभितां
कलक्वणितमञ्जुलां गिरिशचित्तसम्मोहिनीम् ।
अमन्दमणिमण्डलीविमलकान्तिकिर्मीरितां
निधेहि पदपङ्कजे कनकघुङ्घुरुमम्बिके ! ॥५८॥

विस्फुरत्सहजरागरञ्जिते शिञ्जितेन कलिता सखीजनैः ।
पद्मरागमणिनूपुरद्वयीमर्पयामि तव पादपङ्कजे ॥५९॥

पादाम्बुजमुपासितं परिगतेन शीतांशुना
कृतां तनुपरम्परामिव दिनान्तरागारुणाम् ।
महेशि नवयावकद्रवभरेण शोणीकृतां
नमामि नखमण्डली चरणपङ्कजस्थां तव ॥६०॥

आरक्तश्वेतपीतस्फुरदुरुकुसुमैश्चित्रितां पट्टसूत्रै—
र्देवस्त्रीभिः प्रयत्नादगुरुसमुदितैर्धूपिता दिव्यधूपैः ।
उद्यद्गन्धान्धपुष्पन्धयनिवहसमारब्धझङ्कारगीतां
चञ्चत्कल्हारमालां परशिवरसिके कण्ठपीठेऽर्पयामि ॥६१॥

गृहाण परमामृतं कनकपात्रसंस्थापितं
समर्पयमुखाम्बुजे विमलवीटिकामम्बिके ।
विलोकय मुखाम्बुजं मुकुरमण्डले निर्मले
निधेहि मणिपादुकोपरि पदाम्बुजं सुन्दरि ॥६२॥

आलम्ब्य स्वसखीं करेण शनकैस्सिंहासनादुत्थिता
कूजन्मन्दमरालमञ्जुलगतिप्रोल्लासिभूषाम्बरा ।
आनन्दप्रतिपादकैरुपनिषद्वाक्यैः स्तुता वेधसा
मच्चित्ते स्थिरतामुपैतु गिरिजा यान्ती सभामण्डपम् ॥६३॥

चलन्त्यामम्बायां प्रचलति समस्ते परिजने
सवेगं सयाते कनकलतिकालङ्कृतिभरे ।
समन्तादुत्तालस्फुरितपदसम्पातजनितै—
र्झणत्कारैस्तारैर्झणझणितमासीन्मणिगृहम् ॥६४॥
चञ्चद्वेत्रकराभिरङ्गविलसद्भूषाम्बराभिः पुरो-
यान्तीभिः परिचारिकाभिरमरव्राते समुत्सारिते ।
रुद्धे निर्जरसुन्दरीभिरभितः कक्षान्तरे निर्गतं
वन्दे नन्दितशम्भुनिर्मलचिदानन्दैकरूपं महः ॥६५॥
वेधाः पादतले पतत्ययमसौ विष्णुर्नमत्यग्रतः
शम्भुर्देहि दृगञ्चलं सुरपतिं दूरस्थमालोकय ।
इत्येवं परिचारिकाभिरुदिते सम्मानना कुर्वती
दृग्द्वन्द्वेन यथोचितं भगवती भूयाद्विभूत्यै मम ॥६६॥
मन्दं चारणसुन्दरीभिरभितो यान्तीभिरुत्कण्ठया
नामोच्चारणपूर्वकं प्रतिदिशं प्रत्येकमावेदितान् ।
वेगादक्षिपथं गतान् सुरगणानालोकयन्ती शनै-
र्दित्सन्ती चरणाम्बुजं पथि जगत्पायान्महेशप्रिया ॥६७॥
अग्रे केचन पार्श्वयोः कतिपये पृष्ठे परे प्रस्थिता-
आकाशे समवस्थिताः कतिपये दिक्षु स्थिताश्चाऽपरे ।
सम्मर्दं शनकैरपास्य पुरतो दण्डप्रणामान्मुहुः
कुर्वाणाः कतिचित्सुरा गिरिसुते दृक्पातमिच्छन्ति ते ॥६८॥
अग्रे गायति किन्नरी कलपदं गन्धर्वकान्तास्तथा-
ऽऽतोद्यानि च वादयन्ति मधुरं सव्यापसव्यस्थिताः ।
कूजन्नूपुरनादमञ्जु पुरतो नृत्यन्ति दिव्याङ्गना
गच्छन्तः परितः स्तुवन्ति निगमस्तुत्या विरिञ्च्यादयः ॥६९॥
कस्मैचित्सुचिरादुपासितमहामन्त्रौघसिद्धिं क्रमादेकस्मै
भवनिःस्पृहाय परमानन्दस्वरूपां गतिम् ।
अन्यस्मै विषयानुरक्तमनसे दीनाय दुःखापहं
द्रव्यं द्वारसमाश्रिताय ददतीं वन्दामहे सुन्दरम् ॥७०॥

नम्रीभूय कृताञ्जलिप्रकटितप्रेमप्रसन्नानने
मन्दं गच्छति सन्निधौ सविनयात्सोत्कण्ठमोघत्रये ।
नानामन्त्रगणं तदर्थमखिलं तत्साधनं तत्फलं
व्याचक्षाणमुदग्रकान्ति कलये यत्किञ्चिदाद्यं महः ॥७१॥

तव दहनसदृक्षैरीक्षणैरेव चक्षु-
र्निखिलपशुजनानां भीषयद्भीषणास्यम् ।
कृतवसति परेशप्रेयसि द्वारि नित्यं
शरभमिथुनमुच्चैर्भक्तियुक्तो नतोऽस्मि ॥७२॥

कल्पान्ते सरसैकदासमुदितानेकार्कतुल्यप्रभां
रत्नस्तम्भनिबद्धकाञ्चनगुणस्फूर्जद्वितानोत्तमाम् ।
कर्पूरागुरुगर्भवर्तिकलिकाप्राप्तप्रदीपावली
श्रीचक्राकृतिमुल्लसन्मणिगणां वन्दामहे वेदिकाम् ॥७३॥

स्वस्थानस्थितदेवतागणवृते बिन्दौ मुदा स्थापितं
नानारत्नविराजिहेमविलसत्कान्तिच्छटादुर्दिनम् ।
चञ्चत्तूलिकासनयुतं कामेश्वराधिष्ठितं
नित्यानन्दनिदानमम्ब ! सततं वन्दे च सिंहासनम् ॥७४॥

वदद्भिरभितो मुदा जय जयेति वृन्दारकैः
कृताञ्जलिपरम्परा विदधती कृतार्थां दृशा ।
अमन्दमणिमण्डलीखचितहेमसिंहासनं
सखीजनसमावृतं समधितिष्ठ दाक्षायणि ! ॥७५॥

कर्पूरादिकवस्तुजातमखिलं सौवर्णभृङ्गारकं
ताम्बूलस्य करण्डकं मणिमयं चेलाञ्चलं दर्पणम् ।
विस्फूर्जन्मणिपादुके च दधतीः सिंहासनस्याभित-
स्तिष्ठन्तीः परिचारिकास्तव सदा वन्दामहे सुन्दरि ॥७६॥

त्वदमलवपुरुद्यत्कान्तिकल्लोलजालैः
स्फुटमिव दधतीभिर्बाहुविक्षेपलीलाम् ।
मुहुरपि च विधूते चामरग्राहिणीभिः
सितकरकरशुभ्रे चामरे चालयामि ॥७७॥

प्रान्तस्फुरद्विमलमौक्तिकगुच्छजाल
चञ्चन्महामणिविचित्रितहेमदण्डम् ।
उद्यत्सहस्रकरमण्डलचारुहेम-
च्छत्रं महेशमहिले विनिवेशयामि ॥७८॥
उद्यत्तावकदेहकान्तिपटलीसिन्दूरपूरप्रभा-
शोणीभूतमुदग्रलोहितमणिच्छेदानुकारिच्छवि ।
दूरादादरनिर्मिताञ्जलिपुटैरालोक्यमानं सुर-
व्यूहैः काञ्चनमातपत्रमतुलं वन्दामहे सुन्दरम् ॥७९॥
सन्तुष्टा परमामृतेन विलसत्कामेश्वराङ्कस्थिता
पुष्पौघैरभिपूजिता भगवती त्वां वन्दमाना मुदा ।
स्फूर्जत्तावकदेहरश्मिकलनाप्राप्तस्वरूपाभिदा
श्रीचक्रावरणस्थितास्सविनयं वन्दामहे देवता ॥८०॥
आधारशक्त्यादिकमाकलय्य मध्ये समस्ताधिकयोगिनीञ्च ।
मित्रेशनाथादिकमत्र नाथचतुष्टयं शैलसुते नतोऽस्मि ॥८१॥
त्रिपुरासुधार्णवासनमारभ्य त्रिपुरमालिनी यावत् ।
आवरणाष्टकसंस्थितमासनषट्कं नमामि परमेशि ॥८२॥
ईशाने गणपं स्मरामि विचरद्विघ्नान्धकारच्छिदं
वायव्ये वटुकञ्च कज्जलरुचिं व्यालोपवीतान्वितम् ।
नैर्ऋत्ये महिषासुरप्रमथिनीं दुर्गाञ्च सम्पूजय-
न्नाग्नेयेऽखिलभक्तरक्षणपरं क्षेत्राधिनाथं भजे ॥८३॥
उड्डीयाणजालन्धरकामरूपपीठानिमान्पूर्णगिरिप्रसक्तान् ।
त्रिकोणदक्षाग्रिमसव्यभागमध्यस्थितान् सिद्धिकरान्नमामि ॥८४॥
लोकेशः पृथिवीपतिर्निगदितो विष्णुर्जलानां प्रभु—
स्तेजोनाथ उमापतिश्च मरुतामीशस्तथा चेश्वरः ।
आकाशाधिपतिस्सदाशिव इति प्रेताभिधामागता-
नेतान्ब्रह्मविदः स्थितान्सुरगणान्वन्दामहे सादरम् ॥८५॥

तारानाथकलाप्रवेशनिगमव्याजाद्गतामुग्रयं
त्रैलोक्ये तिथिषु प्रवर्तितकलाकाष्ठादिकालक्रमम् ।
रत्नालङ्कृतिचित्रवस्त्रललितं कामेश्वरीपूर्वकम्
नित्याषोडशकं नमामि लसितं चक्रात्मनोरन्तरे ॥८६॥
हृदि भावितदैवतं प्रयत्नाभ्युपदेशानुगृहीतभक्तसङ्घम् ।
स्वगुरुक्रमसंज्ञचक्रराजस्थितमोघत्रयमानतोऽस्मि मूर्ध्ना ॥८७॥
हृदयमथ शिरःशिखाविलासे कवचमथो नयनत्रयञ्च देवि ! ।
मुनिजनपरिचिन्तितं तथास्त्रं स्फुरतु सदा हृदये षडङ्गमेतत् ॥८८॥
त्रैलोक्यमोहनमिति प्रथिते तु चक्रे
चञ्चद्विभूषणगणत्रिपुराधिवासे ।
रेखात्रये स्थितवतीरणिमादिसिद्धी-
र्मुद्रा नमामि सततं प्रकटाभिधास्ताः ॥८९॥
सर्वाशापरिपूरके वसुदलद्वन्द्वेन विभ्राजिते ।
विस्फूर्जत्त्रिपुरेश्वरीनिवसतौ चक्रे स्थिता नित्यशः ।
कामाकर्षणिकादयो मणिगणभ्राजिष्णुदिव्याम्बरा
योगिन्यः प्रदिशन्तु काङ्क्षितफलं विख्यातगुप्ताभिधाः ॥९०॥
महेशि ! वसुभिर्दलैर्लसति सर्वसंक्षोभणे
विभूषणगणस्फुरत्त्रिपुरसुन्दरीसद्मनि ।
अनङ्गकुसुमादयो विविधभूषणोद्भासिता
दिशन्तु मम काङ्क्षितं तनुतराश्च गुप्ताभिधाः ॥९१॥
लसद्युगदशारके स्फुरति सर्वसौभाग्यदे
शुभाभरणभूषितत्रिपुरवासिनीमन्दिरे ।
स्थिता दधतु मङ्गलं सुभगसर्वसंक्षोभिणी-
मुखास्सकलसिद्धयो विदितसम्प्रदायाभिधाः ॥९२॥
बहिर्दशारे सर्वार्थसाधके त्रिपुराश्रयाः ।
कुलकौलाभिधाः पान्तु सर्वसिद्धिप्रदायिकाः ॥९३॥

अन्त शोभिदशारकेऽतिलसिते सर्वादिरक्षाकरे
मालिन्या त्रिपुराद्यया विरचितावासे स्थित नित्यशः ।
नानारत्नविभूषण मणिगणभ्राजिष्णु दिव्याम्बर
सर्वज्ञादिकशक्तिवृन्दमनिश वन्दे निगर्भाभिधम् ॥९४॥
सर्वरोगहरेऽष्टारे त्रिपुरासिद्धयान्विते ।
रहस्ययोगिनीनित्य वशिन्याद्या. नमाम्यहम् ॥९५॥
चूताशोकविकासिकेतकरज. प्रोद्भासिनीलाम्बुज-
प्रस्फूर्जन्नवमल्लिकासमुदिते पुष्पे शरान्निर्मितान् ।
रम्य पुष्पशरासन सुललित पाश तथा चाङ्कुशम्
वन्दे तावकमायुध परशिवे चक्रान्तराले स्थितम् ॥९६॥
त्रिकोण उदितप्रभे जगति सर्वसिद्धप्रदे
युते त्रिपुरयाम्बया स्थितवती च कामेश्वरी ।
तनोतु मम मङ्गल सकलशर्म वज्रेश्वरी
करोतु भगमालिनी स्फुरतु मामके चेतसि ॥९७॥
सर्वानन्दमये समस्तजगतामाकाङ्क्षिते बैन्दवे
भैरव्या त्रिपुराद्यया विरचितावासे स्थिता सुन्दरी ।
आनन्दोल्लसितेक्षणा मणिगणभ्राजिष्णु भूषाम्बरा
विस्फूर्जद्वदना परापररहः सा पातु मा योगिनी ॥९८॥
उल्लसत्कनककान्तिभासुर सौरभस्फुरणवासिताम्बरम् ।
दूरत परिहृत मधुव्रतैरर्पयामि तव देवि चम्पकम् ॥९९॥
वैरमुद्धतमपास्य शम्भुना मस्तके विनिहित कलाञ्छलात् ।
गन्धलुब्धमधुपाश्रित सदा केतकीकुसुममर्पयामि ते ॥१००॥
चूर्णीकृत द्रागिव पद्मजेन त्वदाननस्पर्धि सुधांशुबिम्बम् ।
समर्पयामि स्फुरमञ्जरीस्थ विकासिजातीकुसुमोत्कर ते ॥१०१॥
अगुरुबहुलधूपाजस्रसौरभ्यरम्या
मरकतमणिराजीराजिहारिस्रगाभाम् ।
दिशि विदिशि विसर्पद्गन्धलुब्धालिमाला
बकुलकुसुममाला कण्ठपीठेऽर्पयामि ॥१०२॥

ईकारोर्द्ध्वगबिन्दुराननमधो बिन्दुद्वयञ्चस्तनौ
त्रैलोक्ये गुरुगम्यमेतदखिलं हार्दञ्च रेखात्मकम् ।
इत्थं कामकलात्मिकां भगवतीमन्तस्समाराधय-
न्नानन्दाम्बुधिमज्जने प्रलभनामानन्दथुं मज्जनः ॥१०३॥

धूपं तेऽगुरुसम्भवं भगवति ! प्रोल्लासिगन्धोद्धुरं
दीपं चैव निवेदयामि महसा हार्दान्धकारच्छिदम् ।
रत्नस्वर्णविनिर्मितेषु परितः पात्रेषु संस्थापितं
नैवेद्यं विनिवेदयामि परमानन्दात्मिके सुन्दरि ॥१०४॥

जातीकोरकतुल्यमोदनमिदं सौवर्णपात्रे स्थितं
शुद्धान्नं शुचि मुद्गमाषचणकोद्भूतास्तथा सूपकाः ।
प्राज्यं माहिषमाज्यमुत्तममिदं हैयङ्गवीनं पृथक्-
पात्रेषु प्रतिपादितं परशिवे तत्सर्वमङ्गीकुरु ॥१०५॥

शिम्बीसूरणशाकबिम्बबृहतीकूष्माण्डकोशातकी-
वृन्ताकानि पटोलकानि मृदुना ससाधितान्यग्निना ।
सम्पन्नानि च वेसवारविसरैर्दिव्यानि भक्त्या कृता-
न्यग्रे ते विनिवेदयामि गिरिजे सौवर्णपात्रव्रजे ॥१०६॥

निम्बूकार्द्रकचूतकन्दकदली कौशातकीकर्कटी-
धात्रीबिल्वकरीरकैर्विरचितान्यानन्दचिद्विग्रहे ।
राजीभिः कटुतैलसैन्धवहरिद्राभिः स्थितान्यातये
सन्धानानि निवेदयामि गिरिजे भूरिप्रकाराणि ते ॥१०७॥

सितयाञ्चितलड्डुकव्रजान्मृदुपूपान्मृदुलाश्च पूरिकाः
परमान्नमिदं च पार्वति ! प्रणयेन प्रतिपादयामि ते ॥१०८॥

दुग्धमेतदनले सुसाधितं चन्द्रमण्डलनिभं तथा दधि ।
फाणितं शिखरिणीं सितासितां सर्वमम्ब विनिवेदयामि ते ॥१०९॥

अग्रे ते विनिवेद्य सर्वममितं नैवेद्यमङ्गीकृतं
ज्ञात्वा तत्त्वचतुष्टयं प्रथमतो मन्ये सुतृप्तां ततः ।
देवीं त्वां परिशिष्टमम्ब कनकामत्रेषु संस्थापितं
शक्तिभ्यः समुपाहरामि सकलं देवेशि शम्भुप्रिये ॥११०॥

वामेनस्वर्णपात्रीमनुपमपरमान्नेन पूर्णां दधाना-
मन्येन स्वर्णदर्वीं निजजनहृदयाभीष्टदा धारयन्तीम् ।
सिन्दूरारक्तवस्त्रा विविधमणिलसद्भूषणा मेचकाङ्गी
तिष्ठन्तीमग्रतस्ते मधुमदमुदितामन्नपूर्णां नमामि ॥१११॥
पङ्क्त्योपविष्टान्परितस्तु चक्रे शक्त्या स्वया लिङ्गितवामभागान् ।
सर्वोपचारैः परिपूज्य भक्त्या तवाम्बिके पारिषदान्नमामि ॥११२॥
परमामृतमत्तसुन्दरीगणमध्यस्थितमर्कभासुरम् ।
परमामृतघूर्णितेक्षणं किमपि ज्योतिरुपास्महे परम् ॥११३॥
दृश्यते तव मुखाम्बुजं शिवे श्रूयते स्फुटमनाहतध्वनिः ।
अर्चने तव गिरामगोचरे न प्रयाति विषयान्तरं मनः ॥११४॥
त्वन्मुखाम्बुजविलोकनोल्लसत्प्रेमनिश्चलविलोचनद्वयीम् ।
उन्मनीमुपगता सभामिमां भावयामि परमेशि तावकीम् ॥११५॥
चक्षुः पश्यतु नेह किञ्चन परं घ्राणं न वा जिघ्रतु
श्रोत्रं हन्त शृणोतु न त्वगपि स्पर्शं समालम्बताम् ।
जिह्वा वेत्तु न वा रसं मम परं युष्मत्स्वरूपामृते
नित्यानन्दविघूर्णमाननयने नित्यं मनो मज्जतु ॥११६॥
यस्त्वां पश्यति पार्वति प्रतिदिनं ध्यानेन तेजोमयीं
मन्ये सुन्दरि तत्त्वमेतदखिलं वेदेषु निष्ठां गतम् ।
यस्तस्मिन्समये तवार्चनविधावानन्दसान्द्राशयो
यातोऽहं तदभिन्नतां परशिवे सोऽयं प्रसादस्तव ॥११७॥
गणाधिनाथं वटुकञ्च योगिनीं क्षेत्राधिनाथञ्च विदिक्चतुष्टये ।
सर्वोपचारैःपरिपूज्य भक्तितो निवेदयामो बलिमुक्तमुक्तिभिः ॥११८॥
वीणामुपान्ते खलु वादयन्त्यै निवेद्य शेषं खलु शाविकायै ।
सौवर्णभृङ्गारविनिर्गतेन जलेन शुद्धाचमनं विधेहि ॥११९॥
ताम्बूलं विनिवेदयामि विलसत्कर्पूरकस्तूरिका
जातीपूगलवङ्गचूर्णखदिरैर्भक्त्या समुल्लासितम् ।
स्फूर्जद्रत्नसमुद्गकप्रणिहितं सौवर्णपात्रे स्थितै-
र्दीपैरुज्ज्वलमग्रचूर्णरचितैरारात्रिकं गृह्यताम् ॥१२०॥

काचिद्गायति किन्नरी कलपदं वाद्यं घनानोर्वशी-
रम्भा नृत्यति केलिमञ्जुलपदं मातः पुरस्तात्तव ।
कृत्यं प्रोज्झ्य सुरस्त्रियो मधुमदव्याघूर्णमानेक्षणं
नित्यानन्दसुधाम्बुधिं तव मुखं पश्यन्ति हृष्यन्ति च ॥१२१॥
ताम्बूलोद्भासिवक्त्रैस्त्वदमलवदनालोकनोल्लासिनेत्रैः
श्चक्रस्थैः शक्तिसङ्घैः परिहृतविषयासङ्गमाकर्ण्यमानम् ।
गीतज्ञाभिः प्रकामं मधुरसमधुरं वादितं किन्नरीभि-
र्वीणाझङ्कारनादं कलय परशिवानन्दसन्धानहेतोः ॥१२२॥
अर्चाविधौ ज्ञानलवोऽपि दूरे दूरे तदापादकवस्तुजातम् ।
प्रदक्षिणीकृत्य ततोऽर्चनं ते पञ्चोपचारात्मकमर्पयामि ॥१२३॥
यथेप्सितमनोगतप्रकटितोपचारार्चिता
निजावरणदेवतागणवृता सुरेशस्थिताम् ।
कृताञ्जलिपुटो मुहुः कलितभूमिरष्टाङ्गकै-
र्नमामि भगवत्यहं त्रिपुरसुन्दरि त्राहि माम् ॥१२४॥
विज्ञप्तीरवधेहि मे सुमहता यत्नेन ते सन्निधिं
प्राप्तं मामिह कान्दिशीकमधुना मातर्न दूरीकुरु ।
चित्तं त्वत्पदभावने व्यभिचरेद्दृग्वाक्च मे जातु चे-
त्तत्सौम्ये स्वगुणैर्वधान न यथा भूयो विनिर्गच्छति ॥१२५॥
काहं मन्दमतिः क्वचेदमखिलैरेकान्तभक्तैः स्तुतं
ध्यातं देवि तथापि ते स्वमनसा श्रीपादुकापूजनम् ।
कादाचित्कमदीयचिन्तनविधौ सन्तुष्टया शर्मद
स्तोत्रं देवतया तया प्रकटितं मन्ये मदीयानने ॥१२६॥
नित्यार्चनमिदं चित्ते भाव्यमानं सदा मया ।
निबद्धं विविधैः पद्यैरनुगृह्णातु सुन्दरी ॥१२७॥

इति श्रीमत्परमहंसपरिव्राजकाचार्यस्य श्रीगोविन्दभगवत्पूज्यपादशिष्यस्य श्रीमच्छङ्करभगवतः कृतौ महात्रिपुरसुन्दरीमानसपूजास्तोत्रं समाप्तम् ।

श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीमानसपूजास्तोत्रम्

श्रीमज्जगद्गुरुश्रीशङ्कराचार्यविरचितम्

ॐ उपसि मागधमङ्गलगायनैर्झटिति जागृहि जागृहि जागृहि ।
अतिकृपार्द्रकटाक्षनिरीक्षणैर्जगदिदं जगदम्ब सुखीकुरु ॥१॥
कनकमयवितर्दिशोभमान दिशि-दिशि पूर्णसुवर्णकुम्भयुक्तम् ।
मणिमयमण्डपमध्यमेहि मातर्मयि कृपया हि समर्चनं गृहीतुम् ॥२॥
कनककलशशोभमानशीर्षं जलधरचुम्बिसमुल्लसत्पताकम् ।
भगवति तव सन्निवासहेतोर्मणिमयमन्दिरमेतदर्पयामि ॥३॥
तपनीयमयी सतूलिका कमनीया मृदुलोत्तरच्छदा ।
नवरत्नविभूषिता मया शिविकेयं जगदम्ब तेऽर्पिता ॥४॥
कनकमयवितर्दिस्थापिते तूलिकाढ्ये-
विविधकुसुमकीर्णे कोटिबालार्कवर्णे ।
भगवति रमणीये रत्नसिंहासनेऽस्मिन्-
उपविश पदयुग्म हेमपीठे निधेहि ॥५॥
मणिमयमौक्तिकनिर्मितं महान्तं कनकस्तम्भचतुष्टयेन युक्तम् ।
कमनीयतमं भवानि तुभ्यं नवमुल्लोचमहं समर्पयामि ॥६॥
दूर्वया सरसिजान्वितविष्णुक्रान्तया च सहितं कुसुमाढ्यम् ।
पद्मयुग्मसदृशे पदयुग्मे पाद्यमेतदुररीकुरु मातः ! ॥७॥
गन्धपुष्पयवसर्षपदूर्वासम्मितं विलसुशाक्षतमिश्रम् ।
हेमपात्रनिहितं सह रत्नैरर्घ्यमेनदुररीकुरु मातः ! ॥८॥
जलजद्युतिनाकरेण जातीफलकङ्कोललवङ्गगन्धयुक्तैः ।
अमृतैरमृतैरिवाहृतैर्भगवत्याचमनं विधीयताम् ॥९॥
निहितः कनकस्य सम्पुटे विहितो रत्नपिधानकेन सः ।
हृदय भवतोकरेऽर्पितो मधुपर्को भवति प्रगृह्यताम् ॥१०॥

एतच्चम्पकतैलमम्ब विविधैः पुष्पैर्मुहुर्वासितम्
न्यस्तं रत्नमये सुवर्णचषके भृङ्गैर्भ्रमद्भिर्वृतम् ।
सानन्दं सुरसुन्दरीभिरभितो हस्तैर्धृतं ते मया
केशेषु भ्रमरभ्रमेषु सकलेष्वङ्गेषु चालिप्यताम् ॥११॥
मातः कुङ्कुमपङ्कनिर्मितमिदं देहे तवोद्वर्तनम्
भक्त्याहं कलयामि हेमरजसा सम्मिश्रितं केसरम् ।
केशानामलकैर्विशोध्य विशदान् कस्तूरिकार्चितान्
स्नानं ते नवरत्नकुम्भनिहितैः संवासितोष्णोदकैः ॥१२॥
दधिदुग्धघृतैः समाक्षिकैः सितया शर्करया समन्वितैः ।
स्नपयामि तवाहमादृतो जननि ! त्वां पुनरुष्णवारिभिः ॥१३॥
एलोशीरसुवासितैः सकुसुमैर्गङ्गादितीर्थोदकैः-
माणिक्यामलमौक्तिकामृतयुतैः स्वच्छैः सुवर्णोदकैः ।
मन्त्रान् वैदिकतान्त्रिकान् परिपठन् सानन्दमत्यादरात्
स्नानं ते परिकल्पयामि जननि स्नेहात्त्वमङ्गीकुरु ॥१४॥
बालार्कद्युतिदाडिमीयकुसुमप्रस्पर्धिसर्वोत्तमं
मातस्त्वं परिधेहि दिव्यवसनं भक्त्या मया कल्पितम्॥
मुक्ताभिर्ग्रथितं सकञ्चुकमिदं स्वीकृत्य पीतप्रभम्
तप्तस्वर्णसमानवर्णमतुलं प्रावरणमङ्गीकुरु ॥१५॥
नवरत्नयुते मयार्पिते कमनीये तपनीयपादुके-
सविलासमिदं पदद्वयं कृपया देवि ! तयोर्निधीयताम् ॥१६॥
बहुभिरगुरुधूपैः सादरं धूपयित्वा ।
भगवति ! तव केशान् कङ्कतैर्मार्जयित्वा ।
सुरभिरविन्दैश्चम्पकैश्चार्चयित्वा
झटिति कनकसूत्रैर्जूटमावेष्टयामि ॥१७॥
सौवीराञ्जनमिदमम्ब ! चक्षुषोस्ते विन्यस्तं कनकशलाकया मया यत् ।
तन्नूनं मलिनमपि त्वदक्षिसङ्गात् ब्रह्मेन्द्राद्यभिलषणीयतामियाय ॥१८॥

मञ्जीरे पदयोर्निधाय रुचिरे विन्यस्य काञ्ची कटौ
मुक्ताहारमुरोजयोरनुपमां नक्षत्रमालां गले ।
केयूराणि भुजेषु रत्नवलयश्रेणीं करेषु क्रमात्
ताटङ्के तव कर्णयोर्विनिदधे शीर्षे च चूडामणिम् ॥१९॥

धम्मिल्ले तव देवि हेमकुसुमान्याधाय भालस्थले
मुक्ताराजिविराजिहेमतिलकं नासापुटे मौक्तिकम् ।
मातर्मौक्तिकजालिकां च कुचयोः सर्वाङ्गुलीषूर्मिकाः
कट्यां काञ्चनकिङ्किणीर्विनिदधे रत्नावतंसं श्रुतौ ॥२०॥

मातर्भालतले तवातिविमले काश्मीरकस्तूरिका
कर्पूरागुरुभिः करोमि तिलकं देहेऽङ्गरागं ततः ।
वक्षोजादिषु यक्षकर्दमरसं सिक्त्वा च पुष्पद्रवैः
पादौ कुङ्कुमलेपनादिभिरहं सम्पूजयामि क्रमात् ॥२१॥

रत्नाक्षतैस्त्वां परिपूजयामि मुक्ताफलैर्वा रुचिरैर्विचित्रैः ।
अखण्डितैर्देवि ! यवादिभिर्वा काश्मीरपङ्काङ्किततण्डुलैर्वा ॥२२॥

जननि चम्पकतैलमिदं पुरो मृगमदोऽयमयं पटवासकः ।
सुरभिगन्धमिदं च चतुःसमं सपदि सर्वमिदं प्रतिगृह्यताम् ॥२३॥

सीमन्ते ते भगवति मया सादरं न्यस्तमेतत्
सिन्दूरं मे हृदयकमले देवि हर्षं तनोतु ।
बालादित्यद्युतिरिव सदा लोहिमा यस्य कान्ति-
रन्तर्ध्वान्तं हरतु सकलं चेतसा चिन्तयामि ॥२४॥

मन्दारकुन्दकरवीरलवङ्गपुष्पै-
स्त्वां देवि सन्ततमहं परिपूजयामि ।
जातीजपावकुलचम्पककेतकादि-
नानाविधानि कुसुमानि च तेऽर्पयामि ॥२५॥

मालतीवकुलहेमपुष्पिकाकाञ्चनारकरवीरचम्पकैः ।
कर्णिकारगिरिकर्णिकादिभिः पूजयामि जगदम्ब ते वपुः ॥२६॥

परिजातशतपत्रपाटलैर्मल्लिकावकुलचम्पकादिभिः ।
अम्बुजैश्च कुसुमैश्च सादरं पूजयामि जगदम्ब ! ते वपुः ॥२७॥
लाक्षासम्मिलितैः शिलारसयुतैः श्रीवाससम्मिश्रितैः
कर्पूराकलितैः सितामधुयुतैर्गोसर्पिषालोडितैः ।
श्रीखण्डागुरुगुग्गुलप्रभृतिभिर्नानाविधैर्वस्तुभिः
धूपं ते परिकल्पयामि जननि ! त्वं धूपमङ्गीकुरु ॥२८॥
रत्नालङ्कृतहेमपात्रनिहितैर्गोसर्पिषोद्दीपितैः
दीपैर्दीर्घतरान्धकारविधुरैर्बालार्ककोटिप्रभैः ।
आताम्रज्वलदुज्ज्वलज्ज्वलनवद्रत्नप्रदीपैः सदा
मातस्त्वामहमादरादनुदिनं नीराजयाम्युच्चकैः ॥२९॥
महति कनकपात्रे स्थापयित्वा विशालान्-
डमरुसदृशरूपान् पक्वगोधूमदीपान् ।
बहुघृतमथ तेषु न्यस्य दीपैरकम्पै-
र्भुवनजननि कुर्वे नित्यमारात्रिकन्ते ॥३०॥
सविनयमथ दत्त्वा जानुयुग्मं धरायां-
सपदि शिरसि धृत्वा पात्रमारात्रिकस्य ।
मुखकमलसमीपे तेऽम्बसार्धत्रिवारं-
भ्रमयति मयि भूयात् ते कृपार्द्रः कटाक्षः ॥३१॥
मातस्त्वां दधिदुग्धपायसमहाशाल्यन्नसन्तानकान्-
सूपापूपसिताघृतैः सवटकैः सक्षौद्ररम्भाफलैः ।
एलाजीरकहिङ्गुनागरनिशाकौस्तुम्बरीसंयुतैः-
शाकैःसाकमहं सुधाधिकरसैः सन्तर्पयाम्यर्पयन् ॥३२॥
सापूपसूपदधिदुग्धसिताघृतानि
सुस्वादुभक्ष्यपरमान्नपुरःसराणि ।
शाकोल्लसन्मरिचजीरकवल्लिकानि
भक्ष्याणि भुङ्क्ष्व जगदम्ब मयार्पितानि ॥३३॥

क्षीरमेतदिदमुत्तमोत्तमं प्राज्यमाज्यमिदमुज्ज्वलं मधु
मातरेतदमृतोपमं त्वया संभ्रमेण परिपीयतां मुहुः ॥३४॥
उष्णोदकैः पाणियुगं मुखञ्च प्रक्षाल्य मातः कलधौतपात्रे ।
कर्पूरमिश्रेण सकुङ्कुमेन हस्तौ समुद्वर्तय चन्दनेन ॥३५॥
अतिशीतमुशीरवासितं तव पाणौ च मया निवेदितम् ।
पटपूतमिदं जितामृतं शुचि गङ्गामृतमम्ब पीयताम् ॥३६॥
आताम्ररम्भाफलसंयुतानि द्राक्षाफलाक्षोटसमन्वितानि ।
सबीजपूराणि सदाडिमानि फलानि ते देवि ! समर्पयामि ॥३८॥
कर्पूरेण युतैर्लवङ्गसहितैः कङ्कोलचूर्णान्वितैः
सुस्वादुक्रमुकैः सगौरखदिरैः सुस्निग्धजातीफलैः ।
मातः ! केतकिपत्रपाण्डुरुचिरैस्ताम्बूलवल्लीदलैः
सानन्दं मुखमण्डनार्थमतुलं ताम्बूलमङ्गीकुरु ॥३९॥
एलालवङ्गादिसमन्वितानि कङ्कोलकर्पूरविमिश्रितानि ।
ताम्बूलवल्लीदलसंयुतानि फलानि ते देवि समर्पितानि ॥४०॥
ताम्बूलवल्लीदलनिर्जितहेमवर्णस्वर्णाक्त
पूगफलमौक्तिकचूर्णयुक्तम् ।
रत्नस्थलीस्थितमिदं खदिरेण सार्धं
ताम्बूलमम्ब मदनाम्बुरुहे ! गृहाण ॥४१॥
अथ कुसुममिश्रैर्मौक्तिकैस्त्वां विकीर्य-
त्रिभुवनकमनीयैः पूजयित्वा च वस्त्रैः ।
मिलितविविधमुक्तां दिव्यमाणिक्ययुक्तां-
जननि कनकवृष्टिं दक्षिणां तेऽर्पयामि ॥४२॥
मातः काञ्चनदण्डमण्डितमिदं पूर्णेन्दुबिम्बप्रभं-
नानारत्नविशोभिहेमकलशं लोकत्रयाह्लादकम् ।
भास्वन्मौक्तिकजालिकापरिवृतं प्रीत्यात्महस्ते धृतं-
छत्रं ते परिकल्पयामि शिरसि त्वष्ट्रा स्वयं निर्मितम् ॥४३॥

शरदिन्दुमरीचिगौरवर्णैर्मणियुक्तैर्विलसत्सुवर्णदण्डैः ।
जगदम्ब विचित्रचामरैस्त्वामहमानन्दभरेण वीजयामि ॥४४॥

मार्त्तण्डमण्डलनिभो जगदम्ब ! योऽयं-
मक्त्या मया मणिमयो मुकुरोऽर्पितस्ते ।
पूर्णेन्दुबिम्बरुचिरं वदनं स्वकीय-
मस्मिन् विलोकय विलोलविलोचने त्वम् ॥४५॥

इन्द्रादयो नतिनतैर्मुकुटप्रदीपै-
र्नीराजयन्ति सततं तव पादपीठम् ।
तस्मादहं तव शरीरमशेषमेतन्-
नीराजयामि जगदम्ब सहस्रदीपैः ॥४६॥

प्रियगतिरतितुङ्गो रत्नपल्लाणयुक्तः-
कनकमयविभूषःस्निग्धगम्भीरघोषः ।
भगवति कलितोऽयं वाहनार्थं मया ते-
तुरगशतसमेतो वायुवेगस्तुरङ्गः ॥४७॥

मधुकरवृतकुम्भो न्यस्तसिन्दूररेणुः-
कनककलितघण्टः किङ्किणीशोभिकण्ठः ।
श्रवणयुगलचञ्चच्चामरो मेघतुल्यो-
जननि तव मुदे स्यान्मत्तमातङ्ग एषः ॥४८॥

द्रुततरतुरगैर्विराजमानं, मणिमयचक्रचतुष्टयेन युक्तम् ।
कनकमयमहं वितानवन्तं भगवति ते हि रथं समर्पयामि ॥४९॥

हयगजरथपत्तिशोभमानं दिशि दिशि दुन्दुभिमेघनादयुक्तम् ।
अभिनवचतुरङ्गसैन्यमेतत् भगवति भक्तिभरेण तेऽर्पयामि ॥५०॥

परिधिकृतसप्तसागर बहुसम्पत्सहितं मयाम्ब ते ।
विपुलं धरणीतलाभिधं प्रबल दुर्गमिदं समर्पितम् ॥५१॥

शतपत्रयुतैः स्वभावशीतैरतिसौरभ्ययुतैः परागपीतैः ।
भ्रमरीमुखरीकृतैरनेकैर्व्यजनैस्त्वां जगदम्ब वीजयामि ॥५२॥

भ्रमविलुलितलोलकुन्तलालिर्विगलितमाल्यविकीर्णरङ्गभूमिः।
इयगतिचतुरा नटी नटन्ती तव हृदये मुदमातनोतु मातः!॥५३॥
मुखचलनविलासलोलवेणीविलसितनिर्णितलोलभृङ्गमालाः।
युवजनसुखकारिचारुलीला भगवति! ते पुरतो नटन्ति बालाः॥५४॥
रुचिरकुचतटीनां नाट्यकाले नटीनां-
प्रतिगृहमथ तत्र प्रत्यहं प्रादुरासीत्।
धिमिकि धिमिकि धिद्धी धिद्धि धिद्धेति धिद्ध-
धिकिति विकिति तत्थै त्थै यथेयेति शब्दः॥५५॥
भ्रमदलिकुलतुल्यालोलधम्मिल्लभारास्मितमुखकमलोद्यद्दिव्यलावण्यपूरा।
अभिनवनववेषा वारयोषा नटन्ती परभृतकलकण्ठी देवि मोदन्तनोतु॥५६॥

डमरुडिण्डिमझर्झरझल्लरी मृदुरवार्द्रघटार्द्रघटादयः।
झटितिझङ्कृतिभिर्जगदम्बिके बहुदयं हृदयं सुखयन्तु ते॥५७॥
विपञ्चीषु सप्तस्वरान् वादयन्त्य-
स्तव द्वारि गायन्ति गन्धर्वकन्याः।
क्षणं सावधानेन चित्तेन मातः-
समाकर्णय त्वं मया प्रार्थितासि॥५८॥
अतिशयकमनीयैर्नर्तनैर्नर्तकीना-
झटिति च रमयित्वा चेत एवं त्वदीयम्।
स्वयमहमपि चित्रैर्नृत्यवादित्रगीतै-
र्भगवति भवदीय मानस रञ्जयामि॥५९॥

तव देवि गुणानुवर्णने चतुरा नो चतुराननादयः।
तदिहैकमुखेषु जन्तुषु स्तवनं कस्तव कर्तुमीश्वरः॥६०॥
पदे पदे या परिपूजकेभ्यः सद्योऽश्वमेधादिफलन्ददाति।
तां सर्वपापक्षयहेतुभूतां प्रदक्षिणां ते परितः करोमि॥६१॥
रक्तोत्पलारक्ततलप्रभाभ्यां ध्वजोर्ध्वरेखाकुलिशाङ्किताभ्याम्।
अशेषवृन्दारकवन्दिताभ्यां नमो भवानीपदपङ्कजाभ्याम्॥६२॥

चरणनलिनयुग्मं पङ्कजैः पूजयित्वा-
कनककमलमाला कण्ठदेशेऽर्पयित्वा ॥
शिरसि विनिहितोऽयं रत्नपुष्पाञ्जलिस्ते-
हृदयेकमलमध्ये देवि हर्षन्तनोतु ॥६३॥

अथ मणिमयमञ्चकाभिरामे द्युतिमति पुष्पवितानराजमाने ।
प्रसरदगुरुधूपितेऽस्मिन् भगवति वासगृहेऽस्तु ते निवासः ॥६४॥
एतस्मिन् मणिखचिते सुवर्णपीठे त्रैलोक्याभयवरदौ निधाय पादौ ।
विस्तीर्णे मृदुलतरच्छदेऽस्मिन् पर्यङ्के कनकमये निषीद मात ॥६५॥
तव देवि सरोजचिह्नयो. पदयोर्निर्जितपद्मरागयो ।
अतिरक्ततरैरलक्तकैः. पुनरुक्ता रचयामि रक्तताम् ॥६६॥
अथ मातरुशीरवासित निजताम्बूलरसेन राजितम् ।
तपनीयमये हि पात्रके मुखगण्डूषजल विधीयताम् ॥६७॥
क्षणमथ जगदम्ब मञ्चकेऽस्मिन् मृदुतरतूलिकया विराजमाने ।
अतिमहति मुदा निजेच्छया त्वं सुखशयन कुरु मा हृदि स्मरन्ती ॥८॥
मुक्ताकुन्देन्दुगौरा मणिमयमुकुटा रत्नताटङ्कयुक्ता-
मक्षस्रक्पुष्पहस्तामभयवरकरा चन्द्रचूडा त्रिनेत्राम् ॥
नानालङ्कारयुक्ता सुरमुकुटलसद्द्योतितस्वर्णपीठा,
सानन्दा सुप्रसन्ना त्रिभुवनजननी चेतसा चिन्तयामि ॥६९॥
एषा भक्त्या तव विरचिता या मया देवि पूजा-
स्वीकृत्यैना सपदि मकला मेऽपराधान् क्षमस्व ।
न्यून यत्तत्तव करुणया पूर्णतामेतु सद्यः
सानन्दम्मे हृदयकमले तेऽस्तु नित्य निवास ॥
पूजामिमा पठेत् प्राज्ञ पूजाकर्तुमनीश्वर. ।
पूजाफलमवाप्नोति वाञ्छितार्थाश्च विन्दति ।
प्रत्यह भक्तियुक्तो यो देविपूजामिमा पठेत् ।
वाग्वादिन्या प्रसादेन वत्सरात्स कविर्भवेत् ॥

श्रीबालात्रिपुरसुन्दरीमानसपूजास्तोत्रम् सम्पूर्णम् ।

श्रीविद्यासर्वस्वभूताः षडाम्नायमन्त्राः

श्रीनाथादिगुरुत्रयं गणपतिं पीठत्रयं भैरवं
सिद्धौघं वटुकत्रयं पदयुगं दूतीक्रमं मण्डलम् ।
वीरान्द्व्यष्टचतुष्कषष्टिनवकं वीरावलीपञ्चकं
श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजसहितं वन्दे गुरोर्मण्डलम् ॥

वन्दे गुरुपदद्वन्द्वमवाङ्मनसगोचरम् ।
रक्तशुक्लप्रभामिश्रमतर्क्यं त्रैपुरं महः ॥

गुरुपादुकामनुमुच्चार्य सुमुखादिपञ्चमुद्राः प्रदर्श्य गणपतिमूलेन महागणपतिं प्रणमेत् ।

अथ पूर्वाम्नायः

तत्र त्रैलोक्यमोहनसर्वाशापरिपूरकसर्वसंक्षोभणाख्ये सृष्टिचक्रे पूर्वाम्नायदेवता मुक्तातपत्रच्छायायामुपविष्टा पद्मरागारुणा मुक्ताभरणवस्त्रमाल्यानुलेपना पाशाङ्कुशवराभयकरा रक्तमुकुटार्पितचन्द्रलेखा ध्यात्वा—

गुरुमण्डलम्

१—गुरुः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, हंसः शिवः सोऽहं हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं हसौः, सहक्षमलवरयीं स्हौः, हंसः शिवः सोऽहं, स्वरूपनिरूपणहेतवे श्रीगुरवे नमः । अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

२—परमगुरुः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, सोऽहं हंसः शिवः, हस्ख्फ्रें हसक्षमलवरयूं हसौः, सहक्षमलवरयीं स्हौः, सोऽहं हंसः शिवः, स्वच्छप्रकाशविमर्शहेतवे श्रीपरगुरवे नमः । अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

३—परमेष्ठिगुरुः—ॐ ऐं ह्रीं श्रीं, ऐं क्लीं सौः, हंसः, शिवः सोऽहं हंसः, हस्ख्फ्रें सहक्षमलवरयूं हसौः, सहक्षमलवरयीं स्हौः, हंसः शिवः सोऽहं हंसः, स्वात्मारामपञ्जरविलीनतेजसे श्रीपरमेष्ठिगुरवे नमः । अमुकानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

४—गणपतिः—ॐ श्री ह्रीं क्लीं ग्लौं गं गणपतये वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा। महागणपतिश्रीपा०।

५—पीठत्रयम्—

(क) ४ ऐं क्लीं सौः अं आं सौः कामगिरिपीठब्रह्मात्मशक्त्यै नमः। कामगिरिपीठब्रह्मात्मशक्तिश्रीपा०।

(ख) ४ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः पूर्णगिरिपीठविष्ण्वात्मशक्त्यै नमः। पूर्णगिरिपीठविष्ण्वात्मशक्तिश्रीपा०।

(ग) ४ ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं ऐं जालन्धरपीठरुद्रात्मशक्त्यै नमः। जालन्धरपीठरुद्रात्मशक्तिश्रीपा०।

देवताः

६—शुद्धविद्या—४ ऐं ईं औः। शुद्धविद्याम्बाश्री०।

७—बाला—४ ऐं क्लीं सौः सौः क्लीं ऐं। बालात्रिपुरसुन्दर्यम्बा०।

८—द्वादशार्धा—४ हसकलरडैं हसकलरडीं हसकलरडौः। द्वादशार्धाम्बा०।

९—मातङ्गीमन्त्राः—

(क) ४ ॐ ह्रीं हसन्ति हसितालापे मातङ्गि परिचारिके। मम भयविघ्नापदा नाशं कुरु कुरु ठ ठ हु फट् स्वाहा।
श्रीहसन्तीश्यामलाम्बाश्री०।

(ख) ४ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति श्रीमातङ्गीश्वरि सर्वजनमनोहारि सर्वमुखरञ्जिनि क्लीं ह्रीं श्रीं सर्वराजवशङ्करि सर्वस्त्रीपुरुषवशङ्करि सर्वदुष्टमृगवशङ्करि सर्वसत्त्ववशङ्करि सर्वलोकवशङ्करि त्रैलोक्यं मे वशमानय स्वाहा। सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं। श्रीराजश्यामलाम्बाश्रीपा०।

(ग) ४ ॐ नमो भगवते महाशुकाय त्रिभुवनालङ्काराय राजमदमर्दनाय शीघ्र राजानं मे वशमानय स्वाहा। श्रीशुकश्यामलाम्बाश्री०।

(घ) ४ ॐ ऐं ॐ नमो भगवति शा शारिके सकलकलाकोविदे विद्या बोधय बोधय स्वाहा। श्रीशारिकाश्यामलाम्बाश्रीपा०।

(ङ) ४ ॐ नमो भगवत्यै वी वीणायै मम सगीतविद्या प्रयच्छ स्वाहा। श्रीवीणाश्यामलाम्बाश्रीपा०।

(च) ४ ॐ नमो भगवते व्य वेणवे मम साहित्यविद्या प्रयच्छ स्वाहा। श्रीवेणुश्यामलाम्बाश्रीपा०।

(छ) ४ ऐं नम उच्छिष्टचण्डालि मातङ्गि सर्वजनवशङ्करि स्वाहा। श्रील घुश्यामलाम्बाश्रीपा०।

१०—गायत्री—

४ ॐ भूर्भुवस्व । तत्सवितुर्वरेण्य—प्रचोदयात्। गायत्र्यम्बाश्रीपा०।

११—गणपतिमन्त्रा—

(क) ४ ॐ श्री ह्री ग्लौं गणपतये सर्वकार्यसिद्धि कुरु कुरु स्वाहा। क्षिप्रगणपति०।

(ख) ४ ॐ श्री ह्री सर्वकार्यविघ्नप्रशमनाय सर्वराजवश्यकराय सर्वस्त्रीपुरुषाकर्षणाय सर्वलोकवशीकरणाय आ ह्री क्रो हुँ फट् स्वाहा। सिद्धगणपति०।

(ग) ४ ॐ ग्लौं नवनीतगणपतये सर्वजनान्मे वशमानय स्वाहा। नवनीतगणपति०।

(घ) ४ ॐ श्री ह्री क्ली ग्लौं ऐं वद वद वाग्वादिनि सिद्धगणपतये गी भगवति स्वाहा। शक्तिगणपति०।

(ङ) ॐ हस्तिमुखाय लम्बोदराय उच्छिष्टाय महात्मने आ क्रो ह्री क्ली ग्लौं ग घे घे उच्छिष्टाय स्वाहा। उच्छिष्टगणपति०।

(च) ४ ॐ गं ॐ। एकाक्षरीगणपति०।

१२—कार्तिकेयमन्त्रा—

(क) ४ ॐ ऐं हं स कुमाराय नम। कुमारश्रीपा०।

(ख) ४ ॐ ह्रीं श्री स सुब्रह्मण्याय वैरिघैर्य चल्य चल्य स्वाहा। सुब्रह्मण्य०।

(ग) ४ ॐ ह्री श्री क्ली सौ स्कन्दाय नम। स्कन्द०।

१३—मृत्युञ्जयमनु :—४ ॐ ह्रौं जुं सः। मृत्युञ्जय०।

१४—नीलकण्ठमनुः—४ ॐ फ्रों नृी ठः। नीलकण्ठ०।

१५—त्र्यम्बकमनु :—

४ ॐ त्र्यम्बकं यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम्। उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात्। त्र्यम्बक०।

१६—जातवेदोमनु—

४ ॐ वैश्वानर जातवेद इहावह लोहिताक्ष सर्वकर्माणि साधय साधय स्वाहा। जातवेद०।

१७—प्रत्यङ्गिरामनु :—

(क) ४ ॐ आं ह्रीं क्रों ॐ नमः कृष्णवसने सिंहवदने महाभैरवि ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे क्ष्म्रों। ॐ नमो नारायणाय। घृणिस्सूर्य आदित्यो। सहस्रार हुं फट्। अव ब्रह्मद्विपो जहि। ब्राह्मीप्रत्यङ्गिरा०।

(ख) ४ ॐ ह्रीं खे फे भक्षज्वालाजिह्वे करालवदने कालरात्रि प्रत्यङ्गिरे क्षौं क्ष्म्रौं ह्रीं नमस्तुभ्य हन हन, मा रक्ष रक्ष, मम शत्रून् भक्षय भक्षय हु फट् स्वाहा। नारायणीप्रत्यङ्गिरा०।

(ग) ४ श्रीं ह्रीं ॐ नमः कृष्णवसने सहस्रसिंहिनि सहस्रवदने कालरात्रि प्रत्यङ्गिरे परसैन्यपरकर्मविध्वंसिनि परमन्त्रोत्सादिनि सर्वभूतदमनि सर्वदेहान्बन्ध बन्ध सर्वविद्या छिन्धि छिन्धि क्षोभय क्षोभय परतन्त्राणि स्फोटय स्फोटय सर्वशृङ्खलान् त्रोटय त्रोटय ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालवदने प्रत्यङ्गिरे ह्रीं नमः। रौद्रीप्रत्यङ्गिरा०।

(घ) ४ या कल्पयन्ति नोऽरयः क्रूरा कृत्या वधूमिव। तां ब्रह्मणापन्निर्णुद्मः प्रत्यक्कर्तारमृच्छतु॥ उग्रकृत्याप्रत्यङ्गिरा०।

(ङ) ४ ज्वलज्ज्वालाजिह्वे करालदंष्ट्रे प्रत्यङ्गिरे क्षीं ह्रीं हुं फट्। अथर्वणभद्रकालीप्रत्यङ्गिरा०।

१८—४ ॐ तत्पुरुषाय विद्महे महादेवाय धीमहि। तन्नो रुद्रः प्रचोदयात्। अकाररूपाय सृष्टिकर्त्रे ब्रह्मणे नमः। ब्रह्म०।

१९—४ ह्सैं ह्स्क्ल्री ह्सौः। पूर्वाम्नायसमयविद्येश्वर्युन्मोदिनी देव्याम्बा०।

२०—४ मूलं गुरुत्रयगणपतिपीठत्रयसहितायै शुद्धविद्यादिसमयविद्येश्वरी-पर्यन्तचतुर्विंशतिसहस्रदेवतापरिसेवितायै कामगिरिपीठस्थितायै पूर्वाम्नाय समष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः। श्रीमहात्रिपुर-सुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

इति पूर्वाम्नायः।

अथ दक्षिणाम्नायः।

चतुर्दशारद्विदशारात्मके स्थितिचक्रे दक्षिणाम्नायदेवतामुद्यत्सूर्यसहस्राभां नानालङ्कारभूषितां रक्तवस्त्रानुलेपनां वामाद्यूर्ध्वयोस्तदाद्यधःस्थयोः करयोः पाशाङ्कुशपुस्तकाक्षमालाधरां ध्यात्वा—

गुरुमण्डलम्।

१—भैरव :—

(क) ४ फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीं महामन्थानभैरवश्रीपा०

(ख) ,, ,, खचक्रभैरव०

(ग) ,, ,, फट्कारभैरव०

(घ) ,, ,, एकात्मानन्दभैरव०

(ङ) ४ फ्रें फट् फां फीं ह्रीं श्रीं रविभक्षणभैरवश्रीपा०

(च) ४ ,, ,, चण्डभैरव०

(छ) ,, ,, नभोनिर्मलभैरव०

(ज) ,, ,, डमरभास्करभैरव०

२—सिद्धौघ :—

(क) ४ ह्रीं श्रीं सौः ओं महादुर्मनाम्बासिद्धश्रीपा०

(ख) ४ ,, सुन्दर्यम्बासिद्ध०

(ग) ४ ,, विश्वरत्नाम्बासिद्ध०

(घ) ४ ह्रीं श्रीं सौः आं दर्पाग्निशाम्बासिद्ध०

(ङ) ४ ,, यदनाम्बासिद्ध०

(च) ४ ,, भीमाम्बासिद्ध०

(छ) ४ ,, कराल्यम्बासिद्ध०

(ज) ३ ,, खराननाम्बासिद्ध०

(झ) ४ ,, शालिनाम्बासिद्ध०

३—वटुकत्रयम्—

(क) ४ ॐ ह्रीं श्रीं हुं फट् स्कन्दवटुकश्रीपा०

(ख) ४ ,, ,, चित्रवटुक०

(ग) ४ ,, ,, विरिञ्चिवटुक०

४—पदयुग्मं—

(क) ४ हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं । प्रकाशपादुकाश्री०

(ख) ४ हसकल हसकहल सकलह्रीं । विमर्शपादुकाश्री०

५—सौभाग्यविद्या—

३ ऐं क-५ क्लीं ह-६ सौः स-४ । सौभाग्यविद्याम्बा०

६—बगलामनुः—

४ ॐ ह्लीं बगलामुखि सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं स्तम्भय जिह्वां कीलय बुद्धिं विनाशय ह्लीं ॐ स्वाहा । बगलामुखी०

७—वाराहीमनुः—

४ ऐं ग्लौं ऐं नमो भगवति वार्तालि वार्तालि वाराहि वाराहि वराहमुखि वराहमुखि अन्धे अन्धिनि नमः । रुन्धे रुन्धिनि नमः । जम्भे जम्भिनि नमः । मोहे मोहिनि नमः । स्तम्भे स्तम्भिनि नमः । सर्वदुष्टप्रदुष्टानां सर्वेषां सर्ववाक्चित्तचक्षुर्मुखगतिजिह्वास्तम्भनं कुरु कुरु शीघ्रं वश्यं ऐं ग्लौं ठः ठः ठः ठः हुं अस्त्राय फट् । श्रीवाराह्यम्बा०

८—वटुकमनुः—

४ ॐ ह्रीं वं वटुकाय आपदुद्धारणं कुरु कुरु वं वटुकाय ह्रीं ॐ स्वाहा । आपदुद्धारणवटुक०

९—तिरस्करिणीमनु :—

४ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति तिरस्करिणि महामाये महानिद्रे सकलपशुजनमनश्चक्षुःश्रोत्रतिरस्करणं कुरु कुरु स्वाहा सौः क्लीं ऐं श्रीं ह्रीं ऐं । तिरस्करिण्यम्बा०

१०—महामाया—

८ ॐ ह्रीं ईं ॐ नमो भगवति महामाये मनोमये जगत्क्षोभिणि वर वरदे सर्वजन मोहय मोहय ईं ह्रीं ॐ स्वाहा । श्रीमहामाया०

११—अघोरमनु :—

८ ह्रां ह्रीं ह्रूं अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः । ह्रैं ह्रौं ह्रः अघोराय स्वाहा । अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः स्वाहा । व य ह्र क्ष म ह्र गी मी प्रत्यक्ष प्रत्यक्ष ह्र ह्रीं ह्रा स ह फट् स्वाहा । अघोर०

१२—शरभमनु :—

(क) ८ ॐ नमो भगवते परमात्मानिरुद्राय दक्षाध्वरध्वंसकाय महा शरभाय मम शत्रुच्छेदनं कुरु कुरु स्वाहा । श्रीशरभेश्वर०

(ख) ८ खें खां खं फट् प्राणग्रहसि प्राणग्रहसि हुँ फट् । सर्वशत्रुसंहार णाय शरभशाल्वाय पक्षिराजाय हुँ फट् स्वाहा । शरभेश्वरी०

१३—भैताळमनु :—

४ ह्रां श्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रीं ह्रूं ऐं ह्रीं क्लीं श्रा परेतभूताधिपतये महा पिशाचपरिग्रह शा कोटिपदगगनाग अधिपाय भो भो भैताळाय तुभ्यं नमस्स्वाहा । भैताळ०

१४—खड्गरावणमनु :—

८ ॐ ह्रीं क्लीं ग भाग ह्रीं ह्रा खड्गरावणाय नमः । खड्गरावण०

१५—वीरभद्रमनु :—

४ ॐ क्लीं ग्रीं वीरभद्र जय जय नमः स्वाहा । वीरभद्र०

१६–रौद्रमनुः—

४ ॐ नमो भगवते रुद्राय । रुद्र०

१७–शास्तृमनुः—

४ ह्रीं हरिहरपुत्राय पुत्रलाभाय शत्रुनाशाय मदगजवाहनाय महाशास्त्रे प्रत्यक्षवेत्रायुधाय वर वरद सर्वजनं मे वशमानय स्वाहा । श्रीशास्तृ०

१८–पाशुपतास्त्रमनुः—

४ ॐ श्लीं पशु हुं फट् । पाशुपतास्त्र०

१९–ब्रह्मास्त्रमनुः—

४ ॐ आं ह्लीं क्रों ग्लौं हुं ऐं क्लीं ह्रीं श्रीं बगलामुखि आवेशयावेशय आं ह्लीं क्रों ब्रह्मास्त्ररूपिणि एह्येहि आं ह्लीं क्रों मम हृदये आवहावह संनिधिं कुरु कुरु आं ह्लीं क्रों मम हृदये सुरं चिरं तिष्ठ तिष्ठ आं ह्लीं क्रों हुं फट् स्वाहा । ब्रह्मास्त्र०

२०–वायव्यास्त्रमनुः—

४ आवायव्ययावायव्या व्यायवाया व्ययवाआ । औवायव्ययावायव्या व्यायवायाव्ययवाऔ । ॐ हन हन हु फट् स्वाहा । वायव्यास्त्र०

२१–भैरवमन्त्राः—

(क) ४ ॐ नमो भगवते उग्रभैरवाय सर्वविघ्ननाशनाय नाशय हु फट् स्वाहा । उग्रभैरव०

(ख) ॐ ह्रीं श्रां अङ्गभैरव (देवदत्त) कोपशमनं कुरु कुरु स्वाहा । अङ्गभैरव०

(ग) ४ ह्रूं ह्रीं क्लीं अघोरभैरवाय (देवदत्त) मोहय स्वाहा । अघोरभैरव०

(घ) ४ ॐ नमो भगवते महाभीमभैरवाय लोकभयङ्कराय सर्वशत्रुमहारकाय हु (देवदत्तं) ध्वंसय ध्वंसय स्वाहा । भीमभैरव०

(ङ) ४ व र ह्रूं ॐ नमो भगवते विजयभैरवाय सर्वशत्रुविनाशनाय विबुधवाहनाय नररुधिरमांसभक्षणाय (देवदत्त) उच्चाटयोच्चाटय हु ताडय ताडय भस्मीकुरु भस्मीकुरु स्वाहा । विजयभैरव०

(च) ४ ह्रीं स्त्रं रक्तभैरवाय शवकपालमालालङ्कृताय नवाम्बुदश्यामाय एह्येहि शीघ्रं एहि मां पाहि एं ऐं आगामिकार्यं वद वद अरिष्टो-पाधिं हर हर सौभाग्य देहि मे स्वाहा । रक्तभैरव०

(छ) ४ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं ॐ नमो भगवते स्वर्णाकर्षणभैरवाय प्रणता-भीष्टपरिपूरणाय एह्येहि करुणानिधे मह्यं हिरण्यं दापय दापय श्रीं ह्रीं क्लीं स्वाहा । स्वर्णाकर्षणभैरव०

२२—दक्षिणामूर्तिमन्त्रा —

(क) ४ ॐ नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्यं मेधां प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा । मेधादक्षिणामूर्ति०

(ख) ४ ॐ नमो भगवते दक्षिणामूर्तये मह्यं श्रियं प्रज्ञां प्रयच्छ स्वाहा । लक्ष्मीदक्षिणामूर्ति०

(ग) ४ ॐ अं नमः शिवाय अं ॐ । कीर्तिदक्षिणामूर्ति०

(घ) ४ ॐ ज्ञां नमश्चिन्मयमूर्तये ज्ञानं देहि स्वाहा । ज्ञानदक्षिणामूर्ति०

(ङ) ४ ॐ श्रीं सौं श्रीसाम्बशिवाय तुभ्यं स्वाहा । साम्बदक्षिणामूर्ति०

(च) ४ ॐ ह्रीं ॐ दक्षिणामूर्तये सर्वसाध्यमेधां समुत्पन्नं स्वाहा । वीरदक्षिणामूर्ति०

(छ) ४ ओंकारसंहारमूर्तये नमः । संहारदक्षिणामूर्ति०

(ज) ४ ॐ नमो भगवते दक्षिणामूर्तये त्रिनेत्राय त्रिकालज्ञानाय सर्व-शत्रुघ्नाय सर्वापस्मारविदारणाय दारय दारय मारय मारय भस्मीकुरु भस्मीकुरु एह्येहि हुं फट् । अपस्मारनिवर्तकदक्षिणामूर्ति०

२३–४ अघोरेभ्योऽथ घोरेभ्यो घोरघोरतरेभ्यः । सर्वेभ्यः सर्वशर्वेभ्यो नमस्ते अस्तु रुद्ररूपेभ्यः ॥ उत्तरस्थाय स्थितिकर्त्रे शिवाय नमः । विष्णुश्री०

२४–४ ॐ ह्रीं ऐं क्लिन्ने क्लिन्नमदद्रवे कुले ह्सौः । दक्षिणाम्नायसमय विद्येश्वरी योगिनीदेव्यम्बा०

४ मूलं भैरवाष्टाननसिद्धौघवटुकत्रयपदयुगमहितायै सौभाग्यविद्यादि-समयविद्येश्वरीपर्यन्तनिजात्मस्वदेवतापरिसेवितायै पूर्णगिरिपीठस्थितायै

दक्षिणाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः । श्रीमहात्रिपुर-सुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

इति दक्षिणाम्नायः ।

अथ पश्चिमाम्नायः

नवयोनिचक्रे सहस्राराख्ये पश्चिमाम्नायाधिदेवतां पञ्चमुण्डासनां बालार्कसहस्रप्रभां मुण्डमालाधरां रक्तवस्त्राभरणानुलेपनां वामाद्यूर्ध्वं तदाद्यध: पाशाङ्कुशाभयवरकरां त्रिनेत्रां ध्यात्वा—

गुरुमण्डलम्

१—दूत्यः—

(क) ४ अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः योन्यम्बादूतीश्रीपा०

(ख) ४ ,, ,, योनिसिद्धनाथाम्बादूती०

(ग) ४ ,, ,, महायोन्यम्बादूती०

(घ) ४ ,, ,, महायोनिसिद्धनाथाम्बादूती०

(ङ) ४ अं आं सौः ह्रीं श्रीं सौः दिव्ययोन्यम्बादूती०

(च) ४ ,, ,, दिव्ययोनिसिद्धनाथाम्बा०

(छ) ४ ,, ,, शङ्खयोन्यम्बादूती०

(ज) ४ ,, ,, शङ्खयोनिसिद्धनाथाम्बादूती०

(झ) ४ ,, ,, पद्मयोन्यम्बादूती०

(ञ) ४ ,, ,, पद्मयोनिसिद्धनाथाम्बादूती०

२—मण्डलम्—

(क) ४ ह्रीं श्रीं ऐं ह्रीं श्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं सौः वह्निमण्डल०

(ख) ४ ,, ,, ,, सूर्यमण्डल०

(ग) ४ ,, ,, ,, सोममण्डल०

३—वीरद्वयष्टकम्—

(क) ४ ह्रीं श्रीं फट् फां फ्रें सृष्टिवीरभैरवश्री०

(ख) ४ ,, ,, स्थितिवीरभैरव०

(ग) ४ ,, ,, संहारवीरभैरव०
(घ) ४ ,, ,, रक्तवीरभैरव०
(ङ) ४ ,, ,, यमवीरभैरव०
(च) ४ ,, ,, मृत्युवीरभैरव०
(छ) ४ ,, ,, भद्रवीरभैरव०
(ज) ४ ,, ,, परमार्कवीरभैरव०
(झ) ४ ,, ,, मार्तण्डवीरभैरव०
(ञ) ४ ,, ,, कालाग्निरुद्रभैरव०

४—चतुःषष्टिसिद्धाः—४ऐं श्री ह्रीं क्लीं थीं ह्रीं सौः श्री ह्रीं मङ्गलानाथश्रीपा०

४-१ चौण्डिकानाथ०	४-१ धूम्राक्षानाथ०
ज्येष्ठानाथ०	ज्वालानाथ०
कन्तुकिनाथ०	गान्धारानाथ०
पटह्वानाथ०	गगनेश्वरानाथ०
कूर्मानाथ०	मायानाथ०
धनदानाथ०	महामायानाथ०
गन्धानाथ०	नित्यानाथ०
गगनानाथ०	शान्तानाथ०
मतङ्गानाथ०	विश्वानाथ०
चम्पकानाथ०	कामानाथ०
यैवर्तानाथ०	उमानाथ०
मातङ्गगमनानाथ०	प्रियानाथ०
सूर्यभक्षानाथ०	सुभगानाथ०
नभोभक्षानाथ०	विद्यानाथ०
शीतिकानाथ०	महाविद्यानाथ०
रूपिकानाथ०	अमृतनाथ०
दंष्ट्रानाथ०	चन्द्रानाथ०

४-९. अन्तरिक्षानाथ०	४-९. महागगनानाथ०
सिद्धानाथ०	सुन्दरानाथ०
श्रद्धानाथ०	विश्वेश्वरानाथ०
अनन्तानाथ०	कालानाथ०
शाम्बरानाथ०	महाकालानाथ०
उल्कानाथ०	अभयानाथ०
त्रैलोक्यानाथ०	विकारानाथ०
भीमानाथ०	महाविकारानाथ०
राक्षसीनाथ०	सर्वगानाथ०
मलिनानाथ०	सृगालानाथ०
प्रचण्डानाथ०	पूतनानाथ०
अनङ्गानाथ०	शर्वरीनाथ०
त्रिविधानाथ०	व्योमानाथ०
अनभिहितानाथ०	पूर्णानाथ०
नन्दिनाथ०	(चतु.षष्टिनाथाः)

देवताः।

५—लोपामुद्रामनुः—

४ हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं। लोपामुद्राम्बाश्री०

६—भुवनेश्वरीमनुः—४ श्रीं ह्रीं श्रीं। भुवनेश्वर्यम्बा०

७—अन्नपूर्णामनुः—४ ह्रीं श्रीं क्लीं ॐ नमो भगवत्यन्नपूर्णे ममाभिलषितमन्नं देहि स्वाहा। अन्नपूर्णाम्बा०

८—कामकलामनुः—४ अ आ — — ळं क्ष ईं। कामकलाम्बा०

९—सुदर्शनमनुः—(क) ४ ॐ सहस्रार हुं फट्। सुदर्शन०

(ख) ४ श्रीं ह्रीं ॐ सुदर्शनचक्राय रिपुचित्तं भ्रामय स्वाहा। सुदर्शन०

१०—(क) ॐ क्षिप क्षिप स्वाहा। महागरुडश्री०

(ख) ४ ॐ नमो भगवते श्रीमन्महागरुडाय अमृतकोशोद्भवाय वज्रनखवज्रतुण्डपक्षालङ्कृतशरीराय श्रीमन्महागरुड विष हुं फट् स्वाहा। गरुडश्री०

(ग) ४ वं क्षं क्षिप स्वाहा। गरुड०

११—कार्तवीर्यमनुः—४ ॐ फ्रों व्रीं क्लीं भ्रूं आं ह्रीं क्रों श्रीं हुं फट् स्वाहा। कार्तवीर्यार्जुनाय नमः। कार्तवीर्यार्जुन०

१२—नृसिंहमनुः—४ ॐ क्ष्रौं ईं हं उग्रं वीरं महाविष्णुं ज्वलन्तं सर्वतोमुखम्। नृसिंहं भीषणं भद्रं मृत्युमृत्युं नमाम्यहम्। हं ईं क्ष्रौं ॐ। मन्त्रराजनृसिंह०

१३—नामत्रयमनुः—४ अच्युताय नमः। अनन्ताय नमः। गोविन्दाय नमः। नामत्रय०

१४—राममन्त्राः—

(क) ४ ॐ रां रामाय नमः। राम०

(ख) ४ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं नित्यशुद्धबुद्धाय रामाय परब्रह्मणे नमः। राम०

१५—सीतामन्त्रः—४ ॐ श्रीं सीतायै स्वाहा। सीतादेवी०

१६—गोपालमन्त्राः—

(क) ४ क्लीं कृष्णाय गोविन्दाय गोपीजनवल्लभाय स्वाहा। राजगोपाल०

(ख) ४ अन्नरूप रसरूप नमो नमः। अन्नाधिपतये ममान्नं प्रयच्छ स्वाहा। गोपालश्री०

(ग) ४ ॐ क्लीं कृष्ण कृष्ण हरे कृष्ण सर्वज्ञ त्वं प्रसीद मे। रामारमण विद्येश विद्यामाशु प्रयच्छ मे क्लीं ॐ। गोपाल०

(घ) ४ क्लीं देवकीसुत गोविन्द वासुदेव जगत्पते। देहि मे तनयं कृष्ण शरणागतवत्सल। सन्तानगोपाल०

(ङ) ४ क्लीं कृष्ण क्लीं। गोपाल०

१७—सौरमनुः—४ ॐ ह्रीं घृणिस्सूर्य आदित्यो। सूर्य०

१८—धन्वन्तरिमनुः—४ ॐ नमो भगवते धन्वन्तरये अमृतकलशहस्ताय सर्वामयविनाशनाय त्रिलोकनाथाय विष्णवे स्वाहा। धन्वन्तरि०

१९—इन्द्रजालिमनुः—

(क) ॐ ह्रीं ईं ॐ नमो भगवति महामाये मनोमये जगत्क्षोभिणि वर वरदे सर्वजनं मोहय मोहय ईं ह्रीं स्वाहा। इन्द्रजालि-मायामहादेवि०

(ग) ४ यं सं क्षं जुं रं ह्रीं श्रीं मां भगवति चित्रविद्ये महामाये अमृतेश्वरि एह्येहि प्रसन्नवदने अमृतं प्लावय अनलं शीतलं कुरु कुरु सर्वविषं नाशय ज्वरं हन हन पैत्योन्मादं मोचय मोचय भाज्योष्णं शमय शमय सर्वजनं मोहय मोहय मां पालय पालय मां श्रीं ह्रीं रं जुं क्षुं शुं सं वं स्वाहा। इन्द्रजालि०

२०—इन्द्रादिसुरमन्त्राः—

(क) ४ ॐ लं यतइन्द्र भयामहे ततो नो अभयं कृधि मघवञ्छग्धि तव तन्न ऊतये विद्विषो विमृधो जहि। लंॐ इन्द्राय नमः। इन्द्रश्री०

(ख) ४ ॐ रं इद्धादुलूक आपप्तत् हिरण्याक्षो अयोमुखः रक्षसां दूत आगतः तमितो नाशयाग्ने। रं ॐ अग्नये नमः। अग्नि०

(ग) ४ ॐ क्रों ह्रीं आं वैवस्वताय धर्मराजाय भक्तानुग्रहकृते नमः। यम०

(घ) ४ ॐ नमो विचित्राय धर्मलेखकाय यमवाहिकाधारिणे यमलवरयू जन्मसम्पत्प्रलयं कथय स्वाहा। चित्रगुप्त०

(ङ) ४ क्षं निर्ऋतये नमः। निर्ऋति०

(च) ४ वं वरुणाय नमः। वरुण०

(छ) ४ यं वायवे नमः। वायु०

(ज) (१) ४ ॐ क्रीं यक्षाय कुबेराय वैश्रवणाय धनधान्याधिपतये धनधान्यसमृद्धिं मे देहि दापय स्वाहा। कुबेर०

(२) ४ ॐ श्रीं ॐ ह्रीं श्रीं ह्रीं क्लीं वित्तेश्वराय नमः। कुबेर०

(झ) ४ ॐ हं ॐ नमो भगवते रुद्राय हं ॐ। रुद्र०

२१—इन्द्राक्षीमनुः—

(क) ४ ॐ ऐं ह्रीं ह्रीं हूं दुं लं श्रीं ईं इन्द्राक्षि रक्ष रक्ष मम शत्रून् दुःखग्रन्थिं स्फोटय स्फोटय मम अरीन् भञ्जय भञ्जय मम मनोग्रन्थिं शरीरग्रन्थिं घातय घातय हुं फट् स्वाहा। सुरनायिकाइन्द्राक्षीश्री०

(ख) ४ ॐ श्रीं ह्रां ऐं क्लीं सौः ॐ नमो भगवति इन्द्राक्षि भूतभविष्यद्वर्तमानकालवादिनि प्रपञ्चकारिणि (अमुकं) मे कार्यं कथय सौः क्लीं ऐं ह्रां श्रीं ॐ स्वाहा। सर्ववादिनीइन्द्राक्षी०

२२—दत्तात्रेयमन्त्राः—

(क) ४ आं ह्रीं क्रों ऐं क्लीं सौः श्रीं ग्लौं द्रां । दत्तात्रेय०

(ख) ४ ॐ ह्रीं द्रां दत्तात्रेयाय नमः द्रां ह्रीं ॐ । दत्तात्रेय०

(ग) ४ ॐ ह्रीं द्रां दत्तात्रेय हरे कृष्ण उन्मत्तानन्ददायक ।
दिगम्बरमुने बालपिशाचज्ञानसागर द्रां ह्रीं ॐ । दत्तात्रेय०

२३—द्वादशाक्षरीमनुः—

४ ॐ नमो भगवते वासुदेवाय । वासुदेव०

२४—अष्टाक्षरीमनुः—

४ ॐ नमो नारायणाय । नारायण०

२५—रुद्रमनुः—

४ सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ।
भवे भवे नातिभवे भवस्व मा भवोद्भवाय नमः ॥
मकाररूपाय संहारकर्त्रे रुद्राय नमः । रुद्रश्री०

२६—४ ह्स्त्रैं ह्स्त्रीं ह्सौः ह्स्ख्फ्रें भगवत्यम्बे हसक्षमलवरयूं ह्स्ख्फ्रें अघोरमुखि छ्रां छ्रीं किणि किणि विच्चे ह्सौः ह्स्ख्फ्रें ह्स्त्रीं पश्चिमाम्नायसमयविद्येश्वरीकुब्जिकादेव्याम्बाश्री०

४ मूल दशदूतीमण्डलनयवीरदशकचतुःषष्टिसिद्धनाथसहितायै लोपामुद्रादिसमयविद्येश्वरीपर्यन्तद्विमहस्रदेवतापरिसेवितायै जालन्धरपीठस्थितायै पश्चिमाम्नायमयषष्ठिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः । श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

इति पश्चिमाम्नायः ।

अथ उत्तराम्नाय.

रामष्टिचक्रे उत्तराम्नायदेवता कुब्जकाली पञ्चमुण्डासना बन्धूककुसुमारुणा तादृशवस्त्राभरणानुलेपना चन्द्रचूडा मुण्डमालाधरा त्रिनेत्रा वामोर्ध्वादितदधोऽन्तं पुस्तकाक्षमालावराभयकरा ध्यात्वा—

१—नवमुद्राः—

४ द्रां सर्वसंक्षोभिणीमुद्राश्री०।४ द्रीं सर्वविद्राविणीमुद्रा०। ४ क्लीं सर्वाकर्षिणीमुद्रा०।४ ब्लूं सर्ववशङ्करीमुद्रा०। ४ सः सर्वोन्मादिनीमुद्रा०। ४ क्रों सर्वमहाङ्कुशा मुद्रा०। ह्स्ख्फ्रें सर्वखेचरी मुद्रा०। ४ ह्सौः सर्वबीज मुद्रा०। ४ ऐं सर्वयोनि मुद्रा०।

२—वीरावलीपञ्चकमनुः—

४ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः लं ब्रह्मवीरावलीश्री०

„ „ वं विष्णुवीरावली०

„ „ रं रुद्रवीरावली०

„ „ यं ईश्वरवीरावली०

„ „ हं सदाशिववीरावली०

देवताः।

३—तुरीयमनुः—४ हसकल हसकहल सकलह्रीं। तुरीयाम्बा०

२—महार्घामनुः—४ ऐं ईं औः क-५-ह्-६-स-४ मं सृष्टिनित्ये स्वाहा हं स्थितिपूर्णे नमः, रं महासंहारिणि कृशे चण्डकालि फट्, रं ह्स्ख्फ्रें महानाख्ये अनन्तभास्करि महाचण्डकालि फट्, रं महासंहारिणि कृशे चण्डकालि फट्, हं स्थितिपूर्णे नमः, सं सृष्टिनित्ये स्वाहा। महार्घाम्बा०।

५—अश्वारूढामनुः—४ आं ह्रीं क्रों एहि परमेश्वरि स्वाहा। अश्वारूढाम्बा०

६—मिश्राम्बामनुः—४ ऐं। मिश्राम्बा०

७—वाग्वादिनीमनुः—

४ ऐं वद वद वाग्वादिनि स्वाहा। वाग्वादिन्यम्बा०

८—दुर्गामनु —

(क) ४ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं दु उत्तिष्ठ पुरुष किं स्वपिषि भयं मे समुपस्थितं यदि शक्यमशक्यं वा तन्मे भगवति शमय शमय स्वाहा। वनदुर्गाम्बाश्री०

(ख) ४ ॐ श्री ह्रीं क्लीं क्ष्रौं दुं ज्वल ज्वल शूलिनि दुष्टग्रहं हुं फट् स्वाहा। शूलिनीदुर्गाम्बा०

(ग) ४ ॐ ह्रीं दुं जातवेदसे सुनवाम सोममरातीयतो निदहाति वेदः। स नः पर्षदतिदुर्गाणि विश्वा नावेव सिन्धुं दुरितात्यग्निः- दुं ह्रीं ॐ। जातवेदोदुर्गाम्बा०

(घ) ४ ॐ ह्रीं दुं दुर्गां देवीं शरणमहं प्रपद्ये दुं ह्रीं ॐ। शान्तिदुर्गाम्बा०

(ङ) ४ ॐ ह्रां ह्रीं सौः ऐं श्रीं क्षं दुं शबरिदुर्गायै क्लीं अमलवरयूं आदि- शक्तिस्वरूपिणि अक्षरमये रक्ष कुलनाशिनि मां रक्ष रक्ष मम शत्रून् विदारय विदारय रोगान् भस्मीकुरु भस्मीकुरु कृत्रिमान् दह दह प्राणान् वह वह आभिचारिकान् नाशय नाशय सर्वं मां रक्ष रक्ष शबरिदुर्गायै हुं फट् स्वाहा। शबरिदुर्गाम्बा०

(च) ४ ह्रां ह्रीं सौः क्लीं ए श्रीं ज्वलदुर्गे एह्येहि स्फुर प्रस्फुर आदि- विष्णुसोदरि अस्त्रज्वलदुर्गे आवेशयावेशय। ज्वलदुर्गाय विद्महे जाज्वल्यमानाय धीमहि। तन्नो वडवानलः प्रचोदयात्। वमल- वरयूं ज्वलदुर्गास्त्रे हुं फट् स्वाहा। ज्वलदुर्गाम्बा०

(छ) ४ ठं चिटि चिटि चण्डालि महाचण्डालि (अमुं) मे वशमानय स्वाहा। लवणदुर्गाम्बाश्री०

(ज) ४ ॐ क्रों ह्रीं आं दुं दुर्गे एह्येहि आवेशयावेशय ह्रीं दुं दुर्गे आं ह्रीं क्रों ॐ हुं फट् स्वाहा। दीपदुर्गाम्बा०

(झ) ४ॐ श्रीं ह्रीं वटुके वटुप्रवे असुभगे आसुरि रक्तवसने अथर्वण- दुहिते अघोरे घोरकर्मकारिके (अमुकस्य) प्रतिस्थितस्य शाय्यस्य गतिं दह दह उपविष्टस्य गुदं दह दह प्रसुप्तस्य मनो दह दह प्रबुद्धस्य हृदयं दह दह हन हन पच पच तावन्मे दह दह तावद्दह तावत्पच यावन्मे वशमागच्छति तावन्मे वशमानय स्वाहा। असुरदुर्गाम्बा०

९—कालीमनुः—

४ क्रीं क्रीं क्रीं हुँ हुँ हुँ ह्रीं ह्रीं ह्रीं दक्षिणकालिके ह्रीं ह्रीं ह्रीं हुँ हुँ हुँ क्रीं क्रीं क्रीं स्वाहा। दक्षिणकालिकाम्बा०

१०—चण्डीमनुः—

४ ऐं ह्रीं क्लीं चामुण्डायै विच्चे। चण्डिकापरमेश्वरी०

११—नकुलीमनुः—

४ ओष्ठापिधाना नकुली दन्तैः परिवृताः पविः,
सर्वस्यै वाच ईशाना चारु मामिह वादयेत्। नकुलीवाग्देवता०

१२—पुलिन्दिनीमनुः—

४ ॐ ईं नमो भगवति शारदादेव्यत्यन्तामलभोज्यं देहि देहि आगच्छ आगच्छ आगन्तुकं हृदि संस्थं कार्यं सत्यं ब्रूहि ब्रूहि पुलिन्दिनि ईं ॐ स्वाहा। पुलिन्दिन्यम्बाश्री०

१३—रेणुकामनुः—

४ क्लीं नमो भगवति रक्तपक्ष्मि रेणुकादेवि हन हन पच पच अखिल-जगन्मे वशं कुरु कुरु स्वाहा क्लीं। रेणुकाम्बा०

१४—लक्ष्मीमनुः—

४ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं महालक्ष्मि एह्येहि सर्वसौभाग्यं देहि मे स्वाहा। महालक्ष्म्यम्बा०

१५—वागीशामनुः—४ सं सरस्वत्यै नमः। वागीशा०

१६—मातृकामनुः—

४ ॐ श्रीं ह्रीं क्लीं अ आ—लं क्षं क्लीं ह्रीं श्रीं ॐ। मातृकाम्बा०

१७—स्वयंवरामनुः—

४ ॐ ह्रीं योगिनि योगिनि योगेश्वरि योगभयङ्करि सकलस्थावर-जङ्गमस्य मुखहृदयं मम वशमाकर्षयाकर्षय स्वाहा। स्वयंवराम्बा०

१८—वामदेवाय नमो ज्येष्ठाय नमः श्रेष्ठाय नमो रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकरणाय नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो बलप्रमथनाय

नमः सर्वभूतदमनाय नमो मनोन्मनाय नमः । अर्धमात्राकाराय तिरोधानकर्त्रे ईश्वराय नमः । ईश्वरश्री०

१९—४ ह्स्रैं महाचण्डयोगीश्वरि कालिके फट् । उत्तराम्नायसमय-विद्येश्वरिकालिकादेव्यम्बा०

४ मूलं नवमुद्रापञ्चवीरावलीमहितायै तुर्याम्बादिसमयविद्येश्वरी-पर्यन्तद्विसहस्रदेवतापरिसेवितायै ओड्याणपीठस्थितायै उत्तराम्नाय-समष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः । श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

इत्युत्तराम्नायः ।

पंचदशीपक्षे चतुराम्नायः षोडशीपक्षे तु षडाम्नायः

अथ ऊर्ध्वाम्नाय.

अमृतार्णवमध्योद्यत्स्वर्णद्वीपे मनोरमे ।
कल्पवृक्षवनान्तःस्थे नवमाणिक्यमण्डपे ॥
नवरत्नमयश्रीमत्सिंहासनगताम्बुजे ।
त्रिकोणान्तःसमासीनं चन्द्रसूर्यायुतप्रभम् ॥
अर्धाम्बिकासमायुक्तं प्रविभक्तविभूषणम् ।
कोटिकन्दर्पलावण्यं सदा षोडशवार्षिकम् ॥
मन्दस्मितमुखाम्भोजं त्रिनेत्रं चन्द्रशेखरम् ।
दिव्याम्बरस्रगालेपं दिव्याभरणभूषितम् ॥
पानपात्रं च चिन्मुद्रां त्रिशूलं पुस्तकं करैः ।
विद्याणं विभ्राणं सदानन्दमुखेक्षणम् ॥
महाषोढोदितानेकदेवतागणसेवितम् ।
एवं निजाम्बुजे ध्यायेदर्धनारीश्वरं शिवम् ॥
पुंरूपं वा स्मरेद्देवि स्त्रीरूपं वा विचिन्तयेत् ।
अथवा निष्कलं ध्यायेत्सच्चिदानन्दलक्षणम् ।
सर्वतेजोमयं ध्यायेत् सचराचरविग्रहम् ॥

गुरुमण्डलम्

१—मालिनीमन्त्रः—

४ ऐं ह्रीं श्रीं अं आं——क्षं क्षं श्रीं ह्रीं ऐं मालिन्यम्बा०

२—मन्त्रराजः—४ ह्लां ह्लीं हुं फट् । मन्त्रराजश्री०

देवताः ।

३—परापोडशीः—

४ श्रीं गौः क्लीं ऐं ह्रीं श्रीं ह्रीं ॐ गकलह्रीं हसकहलह्रीं कएईलह्रीं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः । परापोडश्यम्बा०

४—पराभट्टारिकामनुः—४ सौः । पराभट्टारिकाम्बाश्री०

५—पराशाम्भवमनुः—

४ ऐं ह्रीं श्रीं हस्ख्फ्रें हसौः अहमहं अहमहं ह्मौः हस्ख्फ्रें श्रीं ह्रीं ऐं । पराशाम्भव०

६—पराशांभवीः—४ हस्ख्फ्रे ह्रीं सौः श्रीं हु । पराशाम्भवाम्बा०

७—प्रासादः—

(क) ४ हसौः । प्रासादपराम्बा०

(ख) ४ स्हौः । पराप्रासादाम्बा०

८—दहरम्—४ हं सं रं ईं । दहरविद्याम्बा०

९—हंस.—४ हंस. । हंसश्री०

१०—महावाक्यम्—

४ प्रज्ञानं ब्रह्म, अहं ब्रह्मास्मि, तत्त्वमसि, अयमात्मा ब्रह्म । महावाक्याम्बा०

११—पञ्चाक्षरी—

(क) ४ ॐ नमः शिवाय । शिवपञ्चाक्षर्यम्बा०

(ख) ४ ॐ ह्रीं नमः शिवाय । शक्तिपञ्चाक्षर्यम्बा०

१२—तारक—४ ॐ ह्रीं । तारक०

१३—४ ईशानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानां ब्रह्माधिपतिर्ब्रह्मणोधिपतिर्ब्रह्मा शिवो मे अस्तु सदाशिवोऽम् । मन्त्रातीतस्वरूपायानुग्रहकर्त्रे सदाशिवाय नमः । सदाशिवश्री०

१४—मक्षपरयघच् महिचनडयङ् गंशफर् । ऊर्ध्वाम्नायसमयविद्येश्वर्यम्बा श्री० ४ मूलं श्रीमन्मालिनिमन्त्रराजगुरुमण्डलसहितायै पराम्बादि-समयविद्येश्वरीपर्यन्त-अशीतिसहस्रदेवतापरिसेवितायै शाम्भवपीठ-स्थितायै ऊर्ध्वाम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः । श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां पूजयामि नमः ॥

इत्यूर्ध्वाम्नायः ।

अथ अनुत्तराम्नायः ।

गुरुमण्डलम् ।

१—महापादुका—

४ ऐं ह्रीं श्रीं ऐं क्लीं सौः ऐं ग्लौं ह्स्फ्रें हसक्षमलवरयूं सहक्षमलवरयीं ह्सौः स्हौः । श्रीविद्यानन्दनाथात्मकचर्यानन्दनाथश्रीमहापादुकांपूज०नमः ।

२—संप्रदायपादुका—

४ श्रीं ह्रीं क्लीं अमृतवर्षिणीपादुकापरमेश्वरी वौषट् । संप्रादयपादुका०

३—कादिविद्यागुरुपरम्परा—

४ परप्रकाशानन्दनाथ०
४ परशिवानन्दनाथ०
४ पराशक्त्यम्बा०
४ कौलेश्वरानन्दनाथ०
४ शुक्लदेव्यम्बा०
४ कुलेश्वरानन्दनाथ०
४ कामेश्वर्यम्बा०
४ भोगानन्दनाथ०
४ क्लिन्नानन्दनाथ०
४ समयानन्दनाथ०
४ सहजानन्दनाथ०
४ गगनानन्दनाथ०
४ विश्वानन्दनाथ०
४ विमलानन्दनाथ०
४ मदनानन्दनाथ०
४ भुवनानन्दनाथ०
४ लीलाम्बा०
४ स्वात्मानन्दनाथ०
४ प्रियानन्दनाथ०

४—कामराजचरणाः—

४ ऐं ह्रीं श्रीं योऽहमस्मि ब्रह्माहमस्मि अहमस्मि ब्रह्माहमस्मि सोऽहं ।
स्वच्छप्रकाशपरिपूर्णपरापरमहाप्रकाशपरिपूर्णानन्दनाथश्री०

४ ऐं क-५ हंसः ।	रक्तचरणश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।		
,, ,,	रक्तचरणाम्बा	,,	,,
४ क्लीं ह-६ सोहं ।	शुक्लचरण	,,	,,
,, ,,	शुक्लचरणाम्बा	,,	,,
४ सौः स-४ हंस सोहं ।	मिश्रचरण	,,	,,
,, ,,	मिश्रचरणाम्बा	,,	,,

४ ऐं क-५ क्लीं ह-६ सौः स-४ हंसः सोहं निर्वाणचरणश्री०
,, ,, ,, निर्वाणचरणाम्बाश्री०

देवताः ।

५—पद्माम्बा—

४ आदिनाथव्योमातीताम्बाश्रीपादुकां पूजयामि नमः ।
४ आदिनाथव्योमेश्वर्यम्बाश्री० ,,
४ अनामयानन्दनाथव्योमगाम्बाश्री० ,,
४ अनन्तानन्दनाथव्योमचारिण्यम्बाश्री० ,,
४ चिदाभासव्योमस्थाम्बाश्री० ,,

६—नवनाथमन्त्राः—

४ हं उन्मन्याकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः
४ मं समाकाशानन्दनाथश्री० ,,
४ क्षं व्यापकाकाशानन्दनाथश्री० ,,
४ मं शक्त्याकाशानन्दनाथश्री० ,,
४ लं ध्वन्याकाशानन्दनाथश्री० ,,
४ वं ध्वनिमात्राकाशानन्दनाथश्री० ,,
४ रं इन्द्राकाशानन्दनाथश्री० ,,
४ यं निदाकाशानन्दनाथश्री० ,,
४ ऊं व्यक्ताकाशानन्दनाथश्री० ,,
४ हसक्षमलवरयऊं समस्ताकाशानन्दनाथश्रीपादुकां पूजयामि नमः

७—मूलविद्याः—

(क) ४ ह्रीं स्वच्छप्रकाशपरिपूर्णपरापरमहासिद्धविद्याकुलयोगिनी ह्रीं। ह्रीमूलविद्याम्बा०

(ख) ४ ह्सौः स्वात्मानं बोधय बोधय स्हौः। प्रासादपरामूलविद्याम्बा०

(ग) ४ ऐं क्लूं क्लिन्ने मदद्रवे क्लिन्ने महामदद्रवे क्लीं क्लेदय क्लीं क्लीं मोहय मोहय क्लीं नमः स्वाहा। अतिरहस्ययोगिनीमूलविद्याम्बा०

(घ) ४ हंसः स्वच्छप्रकाशपरिपूर्णानन्दपरमहंसपरमहात्मने स्वाहा ह्सौ ह्स्ख्फ्रें। शाम्भवीमूलविद्याम्बाश्री०

(ङ) ह्रीं नित्यस्फुरणचैतन्यानन्दमयी महाबिन्दुव्यापकमातृकास्वरूपिणी ऐं ह्रीं श्रीं ईं। हृल्लेखामूलविद्याम्बाश्री०

(च) ४ ऐं ह्रीं श्रीं स्वच्छप्रकाशात्मिके ह्रीं कुलमहामालिनि ऐं कुलमातृके ह्रीं ऐं समयविमले श्रीं। समयविमलामूलविद्याम्बाश्री०

(छ) ४ हंसः स्वच्छप्रकाशपरिपूर्णपरापरमहाप्रकाशात्मिके कुलकुण्डलिनि आज्ञासिद्धिमहाभैरवि आत्मानं बोधय बोधय अम्बे भगवति ह्रीं हुं। परबोधिनीमूलविद्याम्बाश्री०

(ज) ४ ॐ मोक्षं कुरु कुरु। कौलपञ्चाक्षरीमूलविद्याम्बाश्री०

(झ) ४ हसकलह्रीं हसकहलह्रीं सकलह्रीं। चैतन्यमूलविद्याम्बा०

(ञ) ४ ऐं शुद्धसूक्ष्मनिराकारनिर्विकल्पपरब्रह्मस्वरूपिणी क्लीं परमानन्दशक्तिः सौः। शाम्भवानन्दनाथानुत्तरकौलिनीमूलविद्याम्बा०

(ट) ४ हंसस्सोऽहं स्वच्छानन्दपरमहंसपरमात्मने स्वाहा। गुरूत्तमविमर्शिनीमूलविद्याम्बा०

(ठ) ४ अनामाख्यव्योमातीतानन्दनाथपरापरव्योमातीतव्योमेश्वर्यम्बायै नमः। अनामाख्यमूलविद्याम्बा०

(ड) ४ ऐं ईं ऊं। सङ्केतसारमूलविद्याम्बा०

(ढ) ४ ह्रीं भगवति विच्चे वाग्वादिनि क्लीं महाहृदयमातङ्गिनि ऐं क्लिन्ने ब्लूं स्त्रीं। अनुत्तरवाग्वादिनीमूलविद्याम्बा०

८—पञ्चदशाक्षरी—

४ क-१५ । पञ्चदशाक्षरीब्रह्मविद्याम्बा०

९—महाषोडशी—

४ श्रं ह्रीं क्लीं ऐं सौः ॐ ह्रीं श्रीं क-५ ह-६ स-४ सौः ऐं क्लीं ह्रीं श्री महाषोडश्यम्बा०

१०—पूर्तिविद्या—

४ हसकल हसकहल सकलह्री सर्वानन्दमयबैन्दवचक्रे परब्रह्मस्वरूपिणी-परामृतशक्ति-सर्वमन्त्रेश्वरी-सर्वयन्त्रेश्वरी - सर्वतन्त्रेश्वरी - सर्ववीरेश्वरी-सर्वयोगीश्वरी-सकलजगदधिष्ठानदेवतायै श्रीमहापूर्तिविद्यायै नमः । श्रीमहापूर्तिविद्याम्बा०

११—षडाधारविद्यामनुः—

४सां हंसः मूलाधाराधिष्ठानदेवतायै साकिनीसहितगणनाथस्वरूपिण्यै नमः । गणनाथरूपिण्यम्बा०

४कां सोहं स्वाधिष्ठानाधिष्ठानदेवतायै काकिनीसहितब्रह्मस्वरूपिण्यै नमः । ब्रह्मस्वरूपिण्यम्बा०

४ लां हंसः सोहं मणिपूरकाधिष्ठानदेवतायै लाकिनीसहितविष्णुस्वरूपिण्यै-नमः । विष्णुस्वरूपिण्यम्बा०

४ रां हंसशिवस्सोहं अनाहताधिष्ठानदेवतायै राकिणीसहितसदाशिव-स्वरूपिण्यै नमः । सदाशिवस्वरूपिण्यम्बा०

४ डां सोहं हंसश्शिवः विशुद्ध्यधिष्ठानदेवतायै डाकिनीसहितजीवेश्वर-स्वरूपिण्यै नमः । जीवेश्वरस्वरूपिण्यम्बा०

४हां हंसश्शिवस्सोहं सोहं हंसश्शिवः आज्ञाधिष्ठानदेवतायै हाकिनीसहित परमात्मस्वरूपिण्यै नमः । परमात्मस्वरूपिण्यम्बा०

१२–(क) ४ ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं क-५ ह-६ स-४ ह-५ ह-६ स-४ हस-कल हसकहल सकलह्री क्लीं ह्रीं श्री श्री सौः क्लीं श्री ह्रीं ऐं प्रकाशचरणाभ्यां नमः । प्रकाशचरणश्री०

(ख) ४ ऐं क्लीं सौः श्रीं ह्रीं क्लीं क-५ ह-६ स-४ ह-५ ह-६ स-४ हस-
कल हसकहल सकलह्रीं क्लीं ह्रीं श्रीं श्रीं सौः क्लीं श्रीं ह्रीं ऐं
विमर्शचरणाभ्यां नमः विमर्शचरणश्री०

१२—४ भगवति विच्चे महामाये मातङ्गिनि ब्लूं अनुत्तरवाग्वादिनि ह्स्ख्फ्रें
ह्स्ख्फ्रें ह्सौः । अनुत्तरशाङ्कर्यम्बा०

४ मूल परिपूर्णानन्दनाथादिनवनाथसहितायै चतुर्दशमूलविद्याद्यनुत्तर-
शाङ्कर्यनन्तानन्तदेवतापरिसेवितायै अनुत्तराम्नायसमष्टिरूपिण्यै श्रीमहा-
त्रिपुरसुन्दर्यै नमः । श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीपराभट्टारिकाश्रीपादुकां
पूजयामि नमः ।

इत्यनुत्तराम्नायः ।

॥ इति षडाम्नायाः ॥

सम्बुद्धयन्तखड्गमाला-मन्त्र

अस्य श्रीशुद्धशक्तिसम्बुद्धयन्तमालामहामन्त्रस्य, उपस्थेन्द्रियाधिष्ठायि-वरुणादित्यऋषये नमः शिरसि । गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे । सात्त्विकककार-भट्टारकपीठस्थितशिववामेश्वराङ्कनिलयायै कामेश्वरीललितामहाभट्टारिकायै देवतायै नमः हृदये ।

ऐं बीजं, क्लीं शक्तिः सौः कीलकं, खड्गसिद्धौ विनियोगः । ह्रां इत्यादिना करहृदयादिन्यासः ।

ध्यानम्—तादृशं खड्गमाप्नोति येन हस्तस्थितेन वै ।
अष्टादशमहाद्वीपसम्राड्भोक्ता भविष्यति ॥

ॐमित्यादि पञ्चपूजा ।

ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमस्त्रिपुरसुन्दरि (१२) हृदयदेवि शिरोदेवि शिखादेवि कवचदेवि नेत्रदेव्यस्त्रदेवि (३७) कामेश्वरि भगमालिनि नित्यक्लिन्ने भेरुण्डे वह्निवासिनि महावज्रेश्वरि शिवदूति त्वरिते कुलसुन्दरि नित्ये नीलपताके विजये सर्वमङ्गले ज्वालामालिनि चित्रे महानित्ये (१०२) परमेश्वरपरमेश्वरि

मित्रीशमयि षष्ठीशमय्युड्डीशमयि चर्यानाथमयि लोपामुद्रामय्यगस्त्यमयि कालतापनमयि धर्माचारमयि मुक्तकेशीश्वरमयि दीपकलानाथमयि विष्णुदेवमयि प्रभाकरदेवमयि तेजोदेवमयि मनोजदेवमयि कल्याणदेवमयि रत्नदेवमयि वासुदेवमयि (२१७) श्रीरामानन्दमय्यणिमासिद्धे लघिमासिद्धे महिमासिद्धे ईशित्वसिद्धे वशित्वसिद्धे प्राकाम्यसिद्धे भुक्तिसिद्धे इच्छासिद्धे प्राप्तिसिद्धे सर्वकामसिद्धे (२७१) ब्राह्मि माहेश्वरि कौमारि वैष्णवि वाराहि माहेन्द्रि चामुण्डे महालक्ष्मि (२९६) सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्ववशङ्करि सर्वोन्मादिनि सर्वमहाङ्कुशे सर्वखेचरि सर्वबीजे सर्वयोने सर्वत्रिखण्डे त्रैलोक्यमोहनचक्रस्वामिनि प्रकटयोगिनि (३६९) कामाकर्षिणि बुद्ध्याकर्षिण्यहङ्काराकर्षिणि शब्दाकर्षिणि स्पर्शाकर्षिणि रूपाकर्षिणि रसाकर्षिणि गन्धाकर्षिणि चित्ताकर्षिणी धैर्याकर्षिणि स्मृत्याकर्षिणि नामाकर्षिणि बीजाकर्षिण्यात्माकर्षिण्यमृताकर्षिणि शरीराकर्षिणी सर्वाशापरिपूरकचक्रस्वामिनि (४५९) गुप्तयोगिन्यनङ्गकुसुमेऽनङ्गमेखलेऽनङ्गमदनेऽनङ्गमदनातुरेऽनङ्गरेखेऽनङ्गवेगिन्यनङ्गाङ्कुशेऽनङ्गमालिनि सर्वसंक्षोभणचक्रस्वामिनि गुप्ततरयोगिनि (५२२) सर्वसंक्षोभिणि सर्वविद्राविणि सर्वाकर्षिणि सर्वाह्लादिनि सर्वसंमोहिनि सर्वस्तम्भिनि सर्वजृम्भिणि सर्ववशङ्करि सर्वरञ्जिनि सर्वोन्मादिनि सर्वार्थसाधिनि सर्वसंपत्तिपूरणि सर्वमन्त्रमयि सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करि सर्वसौभाग्यदायकचक्रस्वामिनि सम्प्रदाययोगिनि (६२४) सर्वसिद्धिप्रदे सर्वसंपत्प्रदे सर्वप्रियङ्करि सर्वमङ्गलकारिणि सर्वकामप्रदे सर्वदुःखविमोचिनि सर्वमृत्युप्रशमनि सर्वविघ्ननिवारिणि सर्वाङ्गसुन्दरि सर्वसौभाग्यदायिनि सर्वार्थसाधकचक्रस्वामिनि कुलोत्तीर्णयोगिनि (७१२) सर्वज्ञे सर्वशक्ते सर्वैश्वर्यप्रदे सर्वज्ञानमयि सर्वव्याधिविनाशिनि सर्वाधारस्वरूपे सर्वपापहरे सर्वानन्दमयि सर्वरक्षास्वरूपिणि सर्वेप्सितप्रदे सर्वरक्षाकरचक्रस्वामिनि निगर्भयोगिनि (७८९) वशिनि कामेश्वरि मोदिनि विमलेऽरुणे जयिनि सर्वेश्वरि कौलिनि सर्वरोगहरचक्रस्वामिनि रहस्ययोगिनि (८३१) बाणिनि चापिनि पाशिन्यङ्कुशिनि महाकामेश्वरि महावज्रेश्वरि महाभगमालिनि महाश्रीसुन्दरि सर्वसिद्धिप्रदचक्र-

स्वामिन्यतिरहस्ययोगिनि (८८६) श्रीश्रीमहाभट्टारिके सर्वानन्दमयचक्र-स्वामिनि परापररहस्ययोगिनि (९१५) त्रिपुरे त्रिपुरेशि त्रिपुरसुन्दरि त्रिपुरवासिनि त्रिपुराश्रीस्त्रिपुरमालिनि त्रिपुरासिद्धे त्रिपुराम्ब महात्रिपुर-सुन्दरि (९६१) महामहेश्वरि महामहाराज्ञि महामहाशक्ते महामहागुप्ते महा-महाज्ञप्ते महामहानन्दे महामहास्पन्दे महामहाशये महामहाश्रीचक्रनगरसम्राज्ञि नमस्ते (निः) स्वाहा श्रीं ह्रीं ऐं ॥१०३१॥

एकत्रिंशदधिकसहस्राक्षराणि । इति सम्बुद्ध्यन्तखड्गमाला ।

चतुर्थ्यन्त—खड्गमालामन्त्रः

अस्य श्रीखड्गमालामन्त्रस्य उपस्थाधिष्ठायिने वरुणादित्यऋषये नमः शिरसि, गायत्रीच्छन्दसे नमः मुखे, ललितादेवतायै नमः हृदये, क ५ बीजाय नमः गुह्ये, ह ६ शक्त्ये नमः पादयोः, स ४ कीलकाय नमः नाभौ, श्रीललिता-प्रसादसिद्ध्यर्थे पाठे विनियोगः । कूटत्रयद्विरावृत्या करहृदयादिन्यासः ।

ध्यानम्

बालार्कारुणतेजसं त्रिनयना रक्ताम्बरोल्लासिनीं
नानालङ्कृतिराजमानवपुषं बालोडुराड्शेखराम्
हस्तैरिक्षुधनुःसृणीसुमशरान् पाशं मुदा बिभ्रतीं
श्रीचक्रस्थितसुन्दरीं त्रिजगतामाधारभूतां स्मरेत् ॥

इति ध्यात्वा मानसैः सपूज्य ।

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं ॐ नमः त्रिपुरसुन्दर्यै नमः
४ ,, हृदयदेव्यै नमः
४ ,, शिरोदेव्यै नमः
४ ,, शिखादेव्यै नमः
४ ,, कवचदेव्यै नमः
४ ,, नेत्रदेव्यै नमः
४ ,, अस्त्रदेव्यै नमः

४ ॐ कामेश्वर्यै नमः
४ ,, भगमालिन्यै नमः
४ ,, नित्यक्लिन्नायै नमः
४ ,, भेरुण्डायै नमः
४ ,, वह्निवासिन्यै नमः
४ ,, महावज्रेश्वर्यै नमः
४ ,, शिवदूत्यै नमः

४ ॐ त्वरितायै नमः
४ ,, कुलसुन्दर्यै नमः
४ ,, नित्यायै नमः
४ ,, नीलपताकायै नमः
४ ,, विजयायै नमः
४ ,, सर्वमङ्गलायै नमः
४ ,, ज्वालामालिन्यै नमः
४ ,, चित्रायै नमः
४ ,, महानित्यायै नमः
४ ,, परमेश्वरपरमेश्वर्यै नमः
४ ,, मित्रीशमय्यै नमः
४ ,, षष्ठीशमय्यै नमः
४ ,, उड्डीशमय्यै नमः
४ ,, चर्यानाथमय्यै नमः
४ ,, लोपामुद्रामय्यै नमः
४ ,, अगस्त्यमय्यै नमः
४ ,, कालतापनमय्यै नमः
४ ,, धर्माचार्यमय्यै नमः
४ ,, मुक्तकेशीश्वरमय्यै नमः
४ ,, दीपकलानाथमय्यै नमः
४ ,, विष्णुदेवमय्यै नमः
४ ,, प्रभाकरदेवमय्यै नमः
४ ,, तेजोदेवमय्यै नमः
४ ,, मनोजदेवमय्यै नमः
४ ,, कल्याणदेवमय्यै नमः
४ ,, रत्नदेवमय्यै नमः
४ ॐ वासुदेवमय्यै नमः
४ ,, श्रीरामानन्दमय्यै नमः
४ ,, अणिमासिद्ध्यै नमः
४ ,, लघिमासिद्ध्यै नमः
४ ,, महिमासिद्ध्यै नमः
४ ,, ईशित्वसिद्ध्यै नमः
४ ,, वशित्वसिद्ध्यै नमः
४ ,, प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः
४ ,, भुक्तिसिद्ध्यै नमः
४ ,, इच्छासिद्ध्यै नमः
४ ,, प्राप्तिसिद्ध्यै नमः
४ ,, सर्वकामसिद्ध्यै नमः
४ ,, ब्राह्म्यै नमः
४ ,, माहेश्वर्यै नमः
४ ,, कौमार्यै नमः
४ ,, वैष्णव्यै नमः
४ ,, वाराह्यै नमः
४ ,, माहेन्द्र्यै नमः
४ ,, चामुण्डायै नमः
४ ,, महालक्ष्म्यै नमः
४ ,, सर्वसंक्षोभिण्यै नमः
४ ,, सर्वविद्राविण्यै नमः
४ ,, सर्वाकर्षिण्यै नमः
४ ,, सर्ववशङ्कर्यै नमः
४ ,, सर्वोन्मादिन्यै नमः
४ ,, सर्वमहाङ्कुशायै नमः

४ ॐ सर्वखेचर्यै नमः
४ ,, सर्वबीजायै नमः
४ ,, सर्वयोन्यै नमः
४ ,, सर्वत्रिखण्डायै नमः
४ ,, त्रैलोक्यमोहन-
चक्रस्वामिन्यै नमः
४ ,, प्रकटयोगिन्यै नमः
४ ,, कामाकर्षिण्यै नमः
४ ,, बुद्ध्याकर्षिण्यै नमः
४ ,, अहङ्काराकर्षिण्यै नमः
४ ,, शब्दाकर्षिण्यै नमः
४ ,, स्पर्शाकर्षिण्यै नमः
४ ,, रूपाकर्षिण्यै नमः
४ ,, रसाकर्षिण्यै नमः
४ ,, गन्धाकर्षिण्यै नमः
४ ,, चित्ताकर्षिण्यै नमः
४ ,, धैर्याकर्षिण्यै नमः
४ ,, स्मृत्याकर्षिण्यै नमः
४ ,, नामाकर्षिण्यै नमः
४ ,, बीजाकर्षिण्यै नमः
४ ,, आत्माकर्षिण्यै नमः
४ ,, अमृताकर्षिण्यै नमः
४ ,, शरीराकर्षिण्यै नमः
४ ,, सर्वाशापरिपूरकचक्र-
स्वामिन्यै नमः
४ ,, गुप्तयोगिन्यै नमः

४ ॐ अनङ्गकुसुमायै नमः
४ ,, अनङ्गमेखलायै नमः
४ ,, अनङ्गमदनायै नमः
४ ,, अनङ्गमदनातुरायैनमः
४ ,, अनङ्गरेखायै नमः
४ ,, अनङ्गवेगिन्यै नमः
४ ,, अनङ्गाङ्कुशायै नमः
४ ,, अनङ्गमालिन्यैः नमः
४ ,, सर्वसंक्षोभणचक्र-
स्वामिन्यै नमः
४ ,, गुप्ततरयोगिन्यै नमः
४ ,, सर्वसंक्षोभिण्यै नमः
४ ,, सर्वविद्राविण्यै नमः
४ ,, सर्वाकर्षिण्यै नमः
४ ,, सर्वाह्लादिन्यै नमः
४ ,, सर्वसम्मोहिन्यै नमः
४ ,, सर्वस्तम्भिन्यै नमः
४ ,, सर्वजृम्भिण्यै नमः
४ ,, सर्वशङ्कर्यै नमः
४ ,, सर्वरञ्जिन्यै नमः
४ ,, सर्वोन्मादिन्यै नमः
४ ,, सर्वार्थसाधिन्यै नमः
४ ,, सर्वसम्पत्तिपूरण्यै नमः
४ ,, सर्वमन्त्रमय्यै नमः
४ ,, सर्वद्वन्द्वक्षयङ्कर्यै नमः
४ ,, सर्वसौभाग्यदायकचक्र-
स्वामिन्यै नमः

४ ॐ सम्प्रदाययोगिन्यै नम
४ ,, सर्वसिद्धिप्रदायै नम.
४ ,, सर्वसम्पत्प्रदायै नम.
४ ,, सर्वप्रियङ्कर्यै नमः
४ ,, सर्वमङ्गलकारिण्यै नमः
४ ,, सर्वकामप्रदायै नमः
४ ,, सर्वदुःखविमोचिन्यै नमः
४ ,, सर्वमृत्युप्रशमिन्यै नम.
४ ,, सर्वविघ्ननिवारिण्यै नमः
४ ,, सर्वाङ्गसुन्दर्यै नम.
४ ,, सर्वसौभाग्यदायिन्यै नम.
४ ,, सर्वार्थसाधकचक्र-
स्वामिन्यै नम.
४ ,, कुलोत्तीर्णयोगिन्यै नम.
४ ,, सर्वज्ञायै नमः
४ ,, सर्वशक्त्यै नम.
४ ,, सर्वैश्वर्यप्रदायै नम.
४ ,, सर्वज्ञानमय्यै नम.
४ ,, सर्वव्याधिविनाशिन्यै नम.
४ ,, सर्वाधारस्वरूपायै नम.
४ ,, सर्वपापहरायै नम.
४ ,, सर्वानन्दमय्यै नम.
४ ,, सर्वरक्षास्वरूपिण्यै नम.
४ ,, सर्वेप्सितप्रदायै नम
४ ,, सर्वरक्षाकरचक्र-
स्वामिन्यै नमः

४ ॐ निगर्भयोगिन्यै नमः
४ ,, वशिन्यै नमः
४ ,, कामेश्वर्यै नमः
४ ,, मोदिन्यै नम.
४ ,, विमलायै नमः
४ ,, अरुणायै नम.
४ ,, जयिन्यै नम.
४ ,, सर्वेश्वर्यै नमः
४ ,, कौलिन्यै नम.
४ ,, सर्वरोगहरचक्र-
स्वामिन्यै नमः
४ ,, रहस्ययोगिन्यै नम
४ ,, बाणिन्यै नम.
४ ,, चापिन्यै नम.
४ ,, पाशिन्यै नमः
४ ,, अङ्कुशिन्यै नम.
४ ,, महाकामेश्वर्यै नम.
४ ,, महावज्रेश्वर्यै नमः
४ ,, महाभगमालिन्यै नम.
४ ,, महाश्रीसुन्दर्यै नमः
४ ,, सर्वसिद्धिप्रदचक्र-
स्वामिन्यै नमः
४ ,, अतिरहस्ययोगिन्यै नमः
४ ,, श्रीश्रीमहाभट्टारिकायै
नमः
४ ,, सर्वानन्दमयचक्रस्वा-
मिन्यै नमः

४ ॐ परापररहस्य-
योगिन्यै नमः
४ ,, त्रिपुरायै नमः
४ ,, त्रिपुरेश्यै नमः
४ ,, त्रिपुरसुन्दर्यै नमः
४ ,, त्रिपुरवासिन्यै नमः
४ ,, त्रिपुराश्रियै नमः
४ ,, त्रिपुरमालिन्यै नमः
४ ,, त्रिपुरासिद्धायै नमः
४ ,, त्रिपुराम्बमहात्रिपुर-
सुन्दर्यै नमः
४ ,, महामहेश्वर्यै नमः

४ ॐ महामहाराज्ञ्यै नमः
४ ,, महामहाशक्त्यै नमः
४ ,, महामहागुप्तायै नमः
४ ,, महामहाज्ञप्तायै नमः
४ ,, महामहानन्दायै नमः
४ ,, महामहास्पन्दायै नमः
४ ,, महामहाशयायै नमः
४ ,, महामहाश्रीचक्रनगर-
साम्राज्यै नमस्ते नमस्ते
नमस्ते स्वाहा श्री ह्रीं-
ऐं ॐ श्रीपरदेवतार्पण-
मस्तु ।

इति चतुर्थ्यन्तलङ्गमालामन्त्र. ।

अथ श्रीत्रिपुरारहस्योक्तं श्रीललितालक्षार्चनविधानम्

अथ लक्षप्रपूजादिविधानं शृणु वच्मि ते ।
विशेषपर्वसु सदा शुक्रवारेऽपि वाऽऽरभेत् ॥
राज्ञुल्य पूज्य गणप स्वस्ति, विप्रैर्हि वाचयेत् ।
ततः सम्पूज्य विधिना वाऽऽवृत्यन्त महेश्वरीम् ॥
पूजयेत्सावृतिं देवीमुपचारैस्तु पञ्चभिः ।
तत्र पुष्पोपचारस्य स्थाने पूजा समाचरेत् ॥
सहस्रार्धैर्नामभिस्तु ततो धूपादिपूजनम् ।
समापयेद्यथावत्तं प्रत्यहञ्चैवमर्चयेत् ॥
नगरह्नचाविधानेन प्रत्यहं पूजयेत्क्रमात् ।
एकजातीयकैः पुष्पैर्यत्रैव पूजयेत्पराम् ॥

स्वयं वा पुत्रपत्न्याद्यैर्ब्राह्मणद्वारतोऽपि वा ।
अन्ते तु सर्वतोभद्रे नवयोनिसमायुते ॥
कलशं सुप्रतिष्ठाप्य सौवर्णादिसमुद्भवम् ।
अलङ्कृतं सूत्रवस्त्रैर्मध्ये तण्डुलपुञ्जके ॥
अलङ्कृतं धूपितञ्च निधाय मनुमुच्चरन् ।
तमष्टगन्धतोयेन पूरयेत्पञ्चरत्नकम् ॥
निक्षिप्य तस्मिंस्तद्वक्त्रमादाच्छाद्यपञ्चपल्लवैः ।
सतण्डुलं फलं पूर्णं पात्रञ्चापि मुखे न्यसेत् ॥
तत्र प्रतिकृतिं देव्याः सर्वावयवशोभिताम् ।
विन्यस्य तस्यामावाह्य पूजनन्तु समाचरेत् ॥
तत्राऽऽदौ सर्वतोभद्रदेवताः क्रमतो यजेत् ।
दशदिक्षु च दिक्पालान् शृङ्खलासु चतुर्षु च ॥
धर्मादीन्मध्यभवने श्वेतेऽधर्मादिकान् यजेत् ।
रक्तार्धभवने पूर्वात्प्रादक्षिण्येन पूजयेत् ॥
असिताङ्गादिमिथुनं मेखलासु गुणत्रयम् ।
एवं सम्पूज्य कलशे पीठपूजनपूर्वकम् ॥
विधिनाऽऽवाह्य त्रिपुरां पूजयेदुपचारकैः ।
तत्तत्पुष्पादिकं स्वर्णभवं वा रजतोद्भवम् ॥
माषाद्वा कर्षतो वाऽपि कुर्यादन्यूनमुत्तमम् ।
तदर्धं पादमपि वा कृत्वा तन्नवसंख्यकम् ॥
पूजयेदुपचारेषु नामभिर्वशिनीमुखैः ।
मध्ये च त्रिपुरां रात्रौ पूजयेच्चक्रनायकम् ॥
कलशस्य पश्चिमतः सर्वतोभद्रमण्डले ।
स्वयं वा पूजयेदाचार्येण वा क्रमवेदिना ॥

पूजयित्वा यथाशास्त्रं कुमारी वटुकं तथा ।
गुरुं सुवासिनीश्चापि ब्राह्मणादीनपि क्रमात् ॥
उद्वासरहितां पूजां समाप्याऽखिलसंवृतः ।
कथाभिर्गायनैर्नृत्यैः कुर्याज्जागरणं निशि ॥
परेद्युःकृतकृत्योऽथ पूजयेच्चक्रनायकम् ।
पूजाङ्गहोमतः पश्चादग्निं मराध्य शास्त्रतः ॥
यथावत्तत्र जुहुयात्तत्तत्पुष्पैः सहस्रकम् ।
पूजां समाप्य चोद्वास्य कलशं वस्त्रसंयुतम् ॥
दक्षिणाप्रतिमायुक्तं सुवासिन्यै निवेदयेत् ।
ब्राह्मणानां षोडशकं सुवासिन्यष्टकं तथा ॥
वटुकांश्च कुमारीश्च वित्तशाठ्यविवर्जितः ।
भोजयेद्भक्ष्यभोज्याद्यैर्दक्षिणाद्यैश्च तोषयत् ॥
एवं पूजनमात्रेण सर्वपापैर्विमुच्यते ।
प्रसन्ना त्रिपुरेशानी वाञ्छितार्थप्रदा भवेत् ॥
सर्वसौभाग्यसंयुक्तो वशपुत्रैर्युतस्तथा ।
पितॄन्प्रोद्धरते सर्वानन्ते मोक्षं समश्नुते ॥
राज्यप्राप्तिस्तु कमलैः करवीरैर्महच्छ्रियम् ।
जपापुष्पैस्सन्ततिम्वै जातिपुष्पैर्गृहादिकम् ॥
योनिपुष्पैर्वंशवृद्धिं वकुलैः सौमनस्यताम् ।
किंशुकैः रोगनिर्हृतिं कुटजैः शत्रुनाशनम् ॥
एवमन्यैः सुगन्धाढ्यैः पुष्पैः पत्रैश्च भार्गव ! ।
पूजयित्वा विधानेन महाफलमवाप्नुयात् ॥
फलैर्धान्यैरर्चयेच्च प्रोक्तमार्गानुसारतः ।
लक्षवर्तिप्रदीपैर्वा पूजयेत्त्रिपुराम्बिकाम् ॥

रागर्थस्तत्र वर्तिभ्या दीपानेव प्रकल्पयेत् ।
दशकेन शतेनापि सहस्रेणाऽपि वा तथा ॥
पञ्चाशद्दशसाहस्रैः साहस्रशतमेव वा ।
एकेनाज्य घृतापूर्णमर्पयेदेकनामभिः ॥
सहस्रनामभिर्देया, शतनामभिरेव वा ।
दशावर्तनतोवाऽपि चैकावर्तनकेन वा ॥
तथा पञ्चशतावृत्या दीप देव्यै समर्पयेत् ।
अन्ते स्वर्णेन रौप्येण नवकं वर्तियुग्मकम् ॥
धृत्वा ताम्रमये दीपे घृतवर्तिसमुज्ज्वले ।
निवेदयेत्तु कल्वो पायसेन हुनेत्तथा ॥
श्रीसूक्तेनाऽभिषेकाद्ये कुर्याच्छ्रीचक्रनायके ।
आवृत्तीना लक्षकेन सहस्रेण शतेन वा ॥
स्वयम्वा ब्राह्मणैर्वापि क्षीरैरिक्षुरसैर्घृतैः ।
मधुभिर्वा फलरसैर्दधिभिर्वा सुगन्धिभिः ॥
तोयैस्तीर्थोद्भवैर्वाऽपि राम ! पूर्वोक्तवर्त्मना ।
अन्ते दशांशतो वह्नौ पायसेन हुनेत्क्रमात् ॥
प्रत्यृच श्रीसूक्तकस्य पूर्ववत्तु समापयेत् ।
रुद्राभिषेकतो वाऽपि महाफलमुदीरितम् ॥
एवं भार्गव ! सम्प्रोक्तं धनिनां सुखसाधनम् ॥

इति श्रीललितलक्षार्चनविधानं सम्पूर्णम् ॥

असामर्थ्ये—

"अशक्तः कारयेत्पूजा दद्याद्वार्चनसाधनम् ।
दानाशक्तः सपर्यान्तं पश्येत्तत्परमानसः ।

अथ श्रीसूक्तमूलपाठः

ॐ हिरण्यवर्णां हरिणीं सुवर्णरजतस्रजाम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं विन्देयं गामश्वं पुरुषानहम् ॥२॥

अश्वपूर्वां रथमध्यां हस्तिनादप्रबोधिनीम् ।
श्रियं देवीमुपह्वये श्रीर्मा देवीर्जुषताम् ॥३॥

कांसोस्मितां हिरण्यप्राकारामार्द्रां ज्वलन्तीं तृप्तां तर्पयन्तीम् ।
पद्मे स्थितां पद्मवर्णां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥४॥

चन्द्रां प्रभासां यशसा ज्वलन्तीं श्रियं लोके देवजुष्टामुदाराम् ।
तां पद्मनीमीं शरणमहं प्रपद्ये अलक्ष्मीर्मे नश्यतां त्वां वृणे ॥५॥

आदित्यवर्णे तपसोऽधिजातो वनस्पतिस्तव वृक्षोऽथ बिल्वः ।
तस्य फलानि तपसा नुदन्तु मायान्तरायाश्च बाह्या अलक्ष्मीः ॥६॥

उपैतु मां देवसखः कीर्तिश्च मणिना सह ।
प्रादुर्भूतोऽस्मि राष्ट्रेऽस्मिन्कीर्तिमृद्धिं ददातु मे ॥७॥

क्षुत्पिपासामलां ज्येष्ठामलक्ष्मीं नाशयाम्यहम् ।
अभूतिमसमृद्धिं च सर्वां निर्णुद मे गृहात् ॥८॥

गन्धद्वारां दुराधर्षां नित्यपुष्टां करीषिणीम् ।
ईश्वरीं सर्वभूतानां तामिहोपह्वये श्रियम् ॥९॥

मनसः काममाकूतिं वाचः सत्यमशीमहि ।
पशूनां रूपमन्नस्य मयि श्रीः श्रयतां यशः ॥१०॥

कर्दमेन प्रजाभूता मयि सम्भव कर्दम ।
श्रियं वासय मे कुले मातरं पद्ममालिनीम् ॥११॥

आपः सृजन्तु स्निग्धानि चिक्लीत वस मे गृहे ।
नि च देवीं मातरं श्रियं वासय मे कुले ॥१२॥

आर्द्रां पुष्करिणीं पुष्टिं पिङ्गलां पद्ममालिनीम् ।
चन्द्रां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१३॥

आर्द्रां यष्करिणीं यष्टिं सुवर्णां हेममालिनीम् ।
सूर्यां हिरण्मयीं लक्ष्मीं जातवेदो म आवह ॥१४॥

तां म आवह जातवेदो लक्ष्मीमनपगामिनीम् ।
यस्यां हिरण्यं प्रभूतं गावो दास्योऽश्वान्विन्देयं पुरुषानहम् ॥१५॥

यः शुचिः प्रयतो भूत्वा जुहुयादाज्यमन्वहम् ।
श्रियः पञ्चदशर्चं च श्रीकामः सततं जपेत् ॥१६॥

सरसिजनिलये सरोजहस्ते धवलतरांशुकगन्धमाल्यशोभे ।
भगवति हरिवल्लभे मनोज्ञे त्रिभुवनभूतिकरि प्रसीद मह्यम् ॥१७॥

धनमग्निर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनमिन्द्रो बृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विनौ ॥१८॥

वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु वृत्रहा ।
सोमं धनस्य सोमिनो मह्यं ददातु सोमिनः ॥१९॥

न क्रोधो न च मात्सर्यं न लोभो नाशुभा मतिः ।
भवन्ति कृतपुण्यानां भक्तानां श्रीसूक्तं जपेत् ॥२०॥

पद्मानने पद्मऊरु पद्माक्षि पद्मसम्भवे ।
तन्मे भजसि पद्माक्षि येन सौख्यं लभाम्यहम् ॥२१॥

विष्णुपत्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम् ।
विष्णुप्रियसखीं देवीं नमाम्यच्युतवल्लभाम् ॥२२॥

महालक्ष्मी च विद्महे विष्णुपत्नी च धीमहि ।
तन्नो लक्ष्मीः प्रचोदयात् ॥२३॥

पद्मानने पद्मिनि पद्मपत्रे पद्मप्रिये पद्मदलायताक्षि ।
विश्वप्रिये विश्वमनोनुकूले त्वत्पादपद्मं मयि सन्निधत्स्व ॥२४॥

आनन्दः कर्दमः श्रीदः चिक्लीत इति विश्रुताः ।
ऋषयः श्रियपुत्राश्च मयि श्रीर्देवो देवता ॥२५॥
ऋणरोगादिदारिद्र्यं पापक्षुदपमृत्यवः ।
भयशोकमनस्तापा नश्यन्तु मम सर्वदा ॥२६॥
श्रीर्वर्चस्वमायुष्यमारोग्यमाविधात्पवमानं महीयते ।
धनं धान्यं पशुं बहुपुत्रलाभं शतमंवत्सरं दीर्घमायुः ॥२७॥

इति फलश्रुतिसहितं श्रीसूक्तं समाप्तम् ॥

त्रिपुरारहस्योक्तं ज्ञानकालिकास्तोत्रम्

शिवे देवि सम्वित्सुधासागराऽऽत्मस्वरूपाऽसि सर्वान्तराऽऽत्मैकरूपा ।
न किञ्चिद् विना त्वत्कल्पामस्ति लोके ततः सत्स्वरूपाऽसि सत्येऽप्यसत्ये ॥१॥
असत्यं पुनः सत्यमन्ये द्विरूपं द्वयातीतमेके जगुः सर्वमेतत् ।
न ते त्वां विदुर्मायया मोहितास्ते चिदानन्दरूपा त्वमेवाऽसि सर्वम् ॥२॥
क्षणानां क्रमैर्भिन्नरूपां 'धराद्यैर्मितामाहुरेके' 'तमोमानरूपाम्' ।
तमोदोषैर्विभिन्नरूपाञ्च शान्तस्वरूपां महेशी विदुस्त्वां न तेऽज्ञाः ॥३॥
शिवादिक्षितिप्रान्ततत्त्वावलिर्या विचित्रा यदीये शरीरे विभाति ।
पटे चित्रकला जले सेन्दुतारा नभोवत्परा सा त्वमेवाऽसि सर्वा ॥४॥
अभिन्नं विभिन्नं बहिर्वाऽन्तरे वा विभाति प्रकाशस्तमो वाऽपि सर्वम् ।
ऋते त्वां चितिं येन नो भाति किञ्चित्ततस्त्वं समस्तं न किञ्चित्त्वदन्यत् ॥५॥
निरुध्याऽन्तरङ्गं विलाप्याक्षसङ्गं परित्यज्य सर्वत्र कामादिभावम् ।
स्थितानां महायोगिनां चित्तभूमौ चिदानन्दरूपा त्वमेका विभासि ॥६॥
तथाऽन्ये मनः सेन्द्रियं सञ्चरच्चाऽप्यवमस्य तन्मार्गके जागरूकाः ।
स्वसम्वित्सुधाऽऽदर्शदेहे स्फुरन्तं महायोगिनाथाः प्रपश्यन्ति सर्वम् ॥७॥
निरुक्ते महासारमार्गेऽतिसूक्ष्मे गतिं ये न विन्दन्ति मूढस्वभावाः ।
जनान् तान् समुद्धर्तुमक्षावगम्यं बहिः स्थूलरूपं विभिन्नं बिभर्षि ॥८॥
तदाराधनेऽनेकमार्गान् विचित्रान् विधायाऽथ मार्गेण केनापि यान्तम् ।
नदीवारि सिन्धुर्यथा स्वीकरोति प्रदाय स्वभावं नु स्वात्मीकरोषि ॥९॥
तथा तासु मूर्तिष्वनेकासु मुख्या धनुर्बाणपाशाङ्कुशाढ्यैव मूर्तिः ।
शरीरेषु मूर्धेव ये तां भजेयुर्जनास्त्रैपुरीं मूर्तिमत्युत्तमास्ते ॥१०॥
जनान् दुःखसिन्धोः समुद्धर्तुकामा पथस्ताननेकान् प्रदिश्य प्रकृष्टान् ।
दयार्द्रस्वभावेति विख्यातकीर्तिस्त्वमेकैव पूज्या पराशक्तिरूपा ॥११॥
सदा ते पदाब्जे मन षट्पदो मे पिबन् तद्रसं निर्वृतः संस्थितोऽस्तु ।
इति प्रार्थना मे निशम्याऽऽशु मातर्विधेहि स्वदृष्टिं दयार्द्रामपीषत् ॥१२॥

इति संस्तुत्य सा गौरी त्रिपुरा परमेश्वरीम् ।
स्तोत्रेण ज्ञानकलिकाख्येन ध्यानं समास्थिता ॥१३॥

इति ज्ञानकलिकास्तोत्रं सम्पूर्णम् ।

श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः

सौन्दर्य-लहरी

न्यासः

अस्य श्रीसौन्दर्यलहरीस्तोत्रस्य गोविन्दऋषिः। अनुष्टुप्छन्दः। श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीदेवता। शिवः शक्त्या युक्त इति बीजम्। सुधासिन्धोर्मध्य इति शक्तिः। जपो जल्पः शिल्पमिति कीलकम्। ह्रां ह्रीं ह्रूं ह्रैं ह्रौं ह्रः इत्यादि षडङ्गन्यासः॥

ध्यानम्

लौहित्यनिर्जितजपाकुसुमानुरागां पाशाङ्कुशौ धनुरिषूनपि धारयन्तीम्।
ताम्रायताक्षमरुणमाल्यविशेषशोभां ताम्बूलपूरितमुखीं त्रिपुरां नमामि॥

लमित्यादिपञ्चोपचाराः।

—o—

शिवः शक्त्या युक्तो यदि भवति शक्तः प्रभवितुं
न चेदेवं देवो न खलु कुशलः स्पन्दितुमपि।
अतस्त्वामाराध्यां हरिहरविरिञ्चादिभिरपि
प्रणन्तुं स्तोतुं वा कथमकृतपुण्यः प्रभवति॥१॥

तनीयांसं पांसुं तव चरणपङ्केरुहभवं
विरिञ्चिः सञ्चिन्वन्विरचयति लोकानविकलम्।
वहत्येनं शौरिः कथमपि सहस्रेण शिरसां
हरः संक्षुभ्यैनं भजति भसितोद्धूलनविधिम्॥२॥

अविद्यानामन्तस्तिमिरमिहिरद्वीपनगरी
जडानां चैतन्यस्तबकमकरन्दस्रुतिझरी।
दरिद्राणां चिन्तामणिगुणनिका जन्मजलधौ
-निमग्नानां दंष्ट्रा मुररिपुवराहस्य भवति॥३॥

त्वदन्यः पाणिभ्यामभयवरदो दैवतगण-
स्त्वमेका नैवासि प्रकटितवराभीत्यभिनया ।
भयात्त्रातुं दातुं फलमपि च वाञ्छासमधिकं
शरण्ये लोकानां तव हि चरणावेव निपुणौ ॥४॥

हरिस्त्वामाराध्य प्रणतजनसौभाग्यजननीं
पुरा नारी भूत्वा पुररिपुमपि क्षोभमनयत् ।
स्मरोऽपि त्वां नत्वा रतिनयनलेह्येन वपुषा
मुनीनामप्यन्तः प्रभवति हि मोहाय महताम् ॥५॥

धनुः पौष्पं मौर्वी मधुकरमयी पञ्च विशिखाः
वसन्तः सामन्तो मलयमरदायोधनरथः ।
तथाऽप्येकः सर्वं हिमगिरिसुते कामपि कृपा-
मपाङ्गात्ते लब्ध्वा जगदिदमनङ्गो विजयते ॥६॥

क्वणत्काञ्चीदामा करिकलभकुम्भस्तननता
परिक्षीणा मध्ये परिणतशरच्चन्द्रवदना ।
धनुर्बाणान् पाशं सृणिमपि दधाना करतलै
पुरस्तादास्तां नः पुरमथितुराहोपुरुषिका ॥७॥

सुधासिन्धोर्मध्ये सुरविटपिवाटीपरिवृते
मणिद्वीपे नीपोपवनवति चिन्तामणिगृहे ।
शिवाकारे मञ्चे परमशिवपर्यङ्कनिलयां
भजन्ति त्वां धन्याः कतिचन चिदानन्दलहरीम् ॥८॥

महीं मूलाधारे कमपि मणिपूरे हुतवहं
स्थितं स्वाधिष्ठाने हृदि मरुतमाकाशमुपरि ।
मनोऽपि भ्रूमध्ये सकलमपि भित्त्वा कुलपथं
सहस्रारे पद्मे सह रहसि पत्या विहरसे ॥९॥

सुधाधारासारैश्चरणयुगलान्तर्विगलितै
प्रपञ्चं सिञ्चन्ती पुनरपि रसाम्नायमहसः ।
अवाप्य स्वां भूमिं भुजगनिभमध्युष्टवलयं
स्वमात्मानं कृत्वा स्वपिषि कुलकुण्डे कुहरिणि ॥१०॥

चतुर्भिः श्रीकण्ठैः शिवयुवतिभिः पञ्चभिरपि
प्रभिन्नाभिः शम्भोर्नवभिरपि मूलप्रकृतिभिः ।
चतुश्चत्वारिंशद्वसुदलकलाश्रत्रिवलय
त्रिरेखाभिः सार्धं तव शरणकोणाः परिणताः ॥११॥

त्वदीयं सौन्दर्यं तुहिनगिरिकन्ये तुलयितुं
कवीन्द्राः कल्पन्ते कथमपि विरिञ्चिप्रभृतयः ।
यदालोकौत्सुक्यादमरललना यान्ति मनसा
तपोभिर्दुष्प्रापामपि गिरिशसायुज्यपदवीम् ॥१२॥

नरं वर्षीयांसं नयनविरसं नर्मसु जडं
तवापाङ्गालोके पतितमनुधावन्ति शतशः ।
गलद्वेणीबन्धाः कुचकलशविस्रस्तसिचया
हठात्त्रुटचत्काञ्च्यो विगलितदुकूला युवतयः ॥१३॥

क्षितौ षट्पञ्चाशद्द्विसमधिकपञ्चाशदुदके
हुताशे द्वाषष्टिश्चतुरधिकपञ्चाशदनिले ।
दिवि द्विष्षट्त्रिंशन्मनसि च चतुष्षष्टिरिति ये
मयूखास्तेषामप्युपरि तव पादाम्बुजयुगम् ॥१४॥

शरज्ज्योत्स्नाशुद्धां शशियुतजटाजूटमकुटां
वरत्रासत्राणस्फटिकघटिकापुस्तककराम् ।
सकृन्न त्वा नत्वा कथमिव सतां संनिदधते
मधुक्षीरद्राक्षामधुरिमधुरीणाः फणितयः ॥१५॥

कवीन्द्राणां चेतःकमलवनबालातपरुचिं
भजन्ते ये सन्तः कतिचिदरुणामेव भवतीम् ।
विरिञ्चिप्रेयस्यास्तरुणतरशृङ्गारलहरी-
गभीराभिर्वाग्भिर्विदधति सतां रञ्जनममी ॥१६॥
सवित्रीभिर्वाचां शशिमणिशिलाभङ्गरुचिभि-
र्वशिन्याद्याभिस्त्वां सह जननि सञ्चिन्तयति यः ।
स कर्ता काव्यानां भवति महतां भङ्गिरुचिभि-
र्वचोभिर्वाग्देवीवदनकमलामोदमधुरैः ॥१७॥
तनुच्छायाभिस्ते तरुणतरणिश्रीसरणिभि-
र्दिवं सर्वामुर्वीमरुणिमनिमग्नां स्मरति यः ।
भवन्त्यस्य त्रस्यद्वनहरिणशालीननयना-
सहोर्वश्या वश्याः कति कति न गीर्वाणगणिकाः ॥१८॥
मुखं बिन्दुं कृत्वा कुचयुगमधस्तस्य तदधो
हरार्धं ध्यायेद्यो हरमहिषि ते मन्मथकलाम् ।
स सद्यः संक्षोभं नयति वनिता इत्यतिलघु
त्रिलोकीमप्याशु भ्रमयति रवीन्दुस्तनयुगाम् ॥१९॥
किरन्तीमङ्गेभ्यः किरणनिकुरुम्बामृतरसं
हृदि त्वामाधत्ते हिमकरशिलामूर्तिमिव यः ।
स सर्पाणां दर्पं शमयति शकुन्ताधिप इव
ज्वरप्लुष्टान् दृष्ट्या सुखयति सुधाधारसिरया ॥२०॥
तटिल्लेखातन्वीं तपनशशिवैश्वानरमयीं
निषण्णां षण्णामप्युपरि कमलानां तव कलाम् ।
महापद्माटव्यां मृदितमलमायेन मनसा
महान्तः पश्यन्तो दधति परमाह्लादलहरीम् ॥२१॥

भवानि त्वं दासे मयि वितर दृष्टिं सकरुणा-
मिति स्तोतुं वाञ्छन् कथयति भवानि त्वमिति यः ।
तदैव त्वं तस्मै दिशसि निजसायुज्यपदवीं
मुकुन्दब्रह्मेन्द्रस्फुटमकुटनीराजितपदाम् ॥२२॥

त्वया हृत्वा वामं वपुरपरितृप्तेन मनसा
शरीरार्धं शम्भोरपरमपि शङ्के हृतमभूत् ।
यदेतत्त्वद्रूपं सकलमरुणाभं त्रिनयनं
कुचाभ्यामानम्रं कुटिलशशिचूडालमकुटम् ॥२३॥

जगत्सूते धाता हरिरवति रुद्रः क्षपयते
तिरस्कुर्वन्नेतत्स्वमपि वपुरीशस्तिरयति ।
सदापूर्वं सर्वं तदिदमनुगृह्णाति च शिव-
स्तवाज्ञामालम्ब्य क्षणचलितयोर्भ्रूलतिकयोः ॥२४॥

त्रयाणां देवानां त्रिगुणजनितानां तव शिवे
भवेत्पूजा पूजा तव चरणयोर्या विरचिता ।
तथाहि त्वत्पादोद्वहनमणिपीठस्य निकटे
स्थिता ह्येते शश्वन्मुकुलितकरोत्तंसमकुटाः ॥२५॥

विरिञ्चिः पञ्चत्वं व्रजति हरिराप्नोति विरतिं
विनाशं कीनाशो भजति धनदो याति निधनम् ।
वितन्द्री माहेन्द्री विततिरपि संमीलितदृशा
महासंहारेऽस्मिन् विहरति सति त्वत्पतिरसौ ॥२६॥

जपो जल्पः शिल्पं सकलमपि मुद्राविरचना
गतिः प्रादक्षिण्यक्रमणमशनाद्याहुतिविधिः ।
प्रणामः संवेशः सुखमखिलमात्मार्पणदृशा
सपर्यापर्यायस्तव भवतु यन्मे विलसितम् ॥२७॥

सुधामप्यास्वाद्य प्रतिभयजरामृत्युहरिणी
विपद्यन्ते विश्वे विधिशतमखाद्या दिविषदः।
करालं यत्क्ष्वेलं कवलितवतः कालकलना
न शंभोस्तन्मूलं तव जननि ताटङ्कमहिमा ॥२८॥

किरीटं वैरिञ्चं परिहर पुरः कैटभभिदः
कठोरे कोटीरे स्खलसि जहि जम्भारिमकुटम्।
प्रणम्रेष्वेतेषु प्रसभमुपयातस्य भवनं
भवस्याभ्युत्थाने तव परिजनोक्तिर्विजयते ॥२९॥

स्वदेहोद्भूताभिर्घृणिभिरणिमाद्याभिरभितः
निषेव्ये नित्ये त्वामहमिति सदा भावयति यः।
किमाश्चर्यं तस्य त्रिनयनसमृद्धिं तृणयतः
महासंवर्ताग्निर्विरचयति नीराजनविधिम् ॥३०॥

चतुःषष्ट्या तन्त्रैः सकलमतिसन्धाय भुवनं
स्थितस्तत्तत्सिद्धिप्रसवपरतन्त्रैः पशुपतिः।
पुनस्त्वन्निर्बन्धादखिलपुरुषार्थैकघटना-
स्वतन्त्रं ते तन्त्रं क्षितितलमवातीतरदिदम् ॥३१॥

शिवः शक्तिः कामः क्षितिरथ रविः शीतकिरणः
स्मरो हंसः शक्रस्तदनु च परामारहरयः।
अमी हृल्लेखाभिस्तिसृभिरवसानेषु घटिता
भजन्ते वर्णास्ते तव जननि नामावयवताम् ॥३२॥

स्मरं योनिं लक्ष्मीं त्रितयमिदमादौ तव मनो-
र्निधायैके नित्ये निरवधिमहाभोगरसिकाः।
भजन्ति त्वां चिन्तामणिगुणनिबद्धाक्षवलयाः
शिवाग्नौ जुह्वन्तः सुरभिघृतधाराहुतिशतैः ॥३३॥

शरीरं त्वं शम्भोः शशिमिहिरवक्षोरुहयुगं
तवात्मानं मन्ये भगवति नवात्मानमनघम् ।
अतः शेषः शेषीत्ययमुभयसाधारणतया
स्थितः सम्बन्धो वां समरसपरानन्दपरयोः ॥३४॥

मनस्त्वं व्योम त्वं मरुदसि मरुत्सारथिरसि
त्वमापस्त्वं भूमिस्त्वयि परिणतायां न हि परम् ।
त्वमेव स्वात्मानं परिणमयितुं विश्ववपुषा
चिदानन्दाकारं शिवयुवतिभावेन बिभृषे ॥३५॥

तवाज्ञाचक्रस्थं तपनशशिकोटिद्युतिधरं
परं शम्भुं वन्दे परिमिलितपार्श्वं परचिता ।
यमाराध्यन् भक्त्या रविशशिशुचीनामविषये
निरालोकेऽलोके निवसति हि भालोकभुवने ॥३६॥

विशुद्धौ ते शुद्धस्फटिकविशदं व्योमजनकं
शिवं सेवे देवीमपि शिवसमानव्यवसिताम् ।
ययोः कान्त्या यान्त्या शशिकिरणसारूप्यसरणे
विधूतान्तर्ध्वान्ता विलसति चकोरीव जगती ॥३७॥

समुन्मीलत्संवित्कमलमकरन्दैकरसिकं
भजे हंसद्वन्द्वं किमपि महतां मानसचरम् ।
यदालापादष्टादशगुणितविद्यापरिणति-
र्यदादत्ते दोषाद्गुणमखिलमद्भ्यः पय इव ॥३८॥

तव स्वाधिष्ठाने हुतवहमधिष्ठाय निरतं
तमीडे सम्वर्तं जननि महतीं तां च समयाम् ।
यदालोके लोकान्दहति महति क्रोधकलिते
दयार्द्रा या दृष्टिः शिशिरमुपचारं रचयति ॥३९॥

तटित्त्वन्तं शक्त्या तिमिरपरिपन्थिस्फुरणया
स्फुरन्नानारत्नाभरणपरिणद्धेन्द्रधनुषम् ।
तव श्यामं मेघं कमपि मणिपूरैकशरणं
निषेवे वर्षन्तं हरमिहिरतप्तं त्रिभुवनम् ॥४०॥

तवाधारे मूले सह समयया लास्यपरया
नवात्मानं मन्ये नवरसमहाताण्डवनटम् ।
उभाभ्यामेताभ्यामुदयविधिमुद्दिश्य दयया
सनाथाभ्यां जज्ञे जनकजननीमज्जगदिदम् ॥४१॥

गतैर्माणिक्यत्वं गगनमणिभिः सान्द्रघटितं
किरीटं ते हैमं हिमगिरिसुते कीर्तयति यः ।
स नीडेयच्छायाच्छुरणशबलं चन्द्रशकलं
धनुः शौनासीरं किमिति न निबध्नाति धिषणाम् ॥४२॥

धुनोतु ध्वान्तं नस्तुलितदलितेन्दीवरवनं
घनस्निग्धश्लक्ष्णं चिकुरनिकुरम्बं तव शिवे ।
यदीयं सौरभ्यं सहजमुपलब्धुं सुमनसो
वसन्त्यस्मिन्मन्ये बलमथनवाटीविटपिनाम् ॥४३॥

तनोतु क्षेमं नस्तव वदनसौन्दर्यलहरी-
परीवाहस्रोतः सरणिरिव सीमन्तसरणिः ।
वहन्ती सिन्दूरं प्रबलकबरीभारतिमिर-
द्विषां वृन्दैर्बन्दीकृतमिव नवीनार्ककिरणम् ॥४४॥

अरालैः स्वाभाव्यादलिकलभसश्रीभिरलकैः
परीतं ते वक्त्रं परिहसति पङ्केरुहरुचिम् ।
दरस्मेरे यस्मिन् दशनरुचिकिञ्जल्करुचिरे
सुगन्धौ माद्यन्ति स्मरदहनचक्षुर्मधुलिहः ॥४५॥

ललाटं लावण्यद्युतिविमलमाभाति तव यत्
द्वितीयं तन्मन्ये मकुटघटितं चन्द्रशकलम् ।
विपर्यासन्यासादुभयमपि सम्भूय च मिथः
सुधालेपस्यूतिः परिणमति राकाहिमकरः ॥४६॥

भ्रुवौ भुग्ने किञ्चिद्भुवनभयभङ्गव्यसनिनि
त्वदीये नेत्राभ्यां मधुकररुचिभ्यां धृतगुणम् ।
धनुर्मन्ये सव्येतरकरगृहीतं रतिपतेः
प्रकोष्ठे मुष्टौ च स्थगयति निगूढान्तरमुमे ॥४७॥

अहः सूते सव्यं तव नयनमर्कात्मकतया
त्रियामां वामं ते सृजति रजनीनायकतया ।
तृतीया ते दृष्टिर्दरदलितहेमाम्बुजरुचिः
समाधत्ते सन्ध्यां दिवसनिशयोरन्तरचरीम् ॥४८॥

विशाला कल्याणी स्फुटरुचिरयोध्या कुवलयैः
कृपाधाराऽऽधारा किमपि मधुराऽऽभोगवतिका ।
अवन्ती दृष्टिस्ते बहुनगरविस्तारविजया
ध्रुवं तत्तन्नामव्यवहरणयोग्या विजयते ॥४९॥

कवीनां सन्दर्भस्तबकमकरन्दैकरसिकं
कटाक्षव्याक्षेपभ्रमरकलभौ कर्णयुगलम् ।
अमुञ्चन्तौ दृष्ट्वा तव नवरसास्वादतरला-
वसूयासंसर्गादलिकनयनं किंचिदरुणम् ॥५०॥

शिवे शृङ्गारार्द्रा तदितरजने कुत्सनपरा
सरोषा गङ्गायां गिरिशचरिते विस्मयवती ।
हराहिभ्यो भीता सरसिरुहसौभाग्यजननी
सखीषु स्मेरा ते मयि जननि दृष्टिः सकरुणा ॥५१॥

गते कर्णाभ्यर्णं गरुत इव पक्ष्माणि दधती
पुरां भेत्तुश्चित्तप्रशमरसविद्रावणफले ।
इमे नेत्रे गोत्राधरपतिकुलोत्तंसकलिके
तवाकर्णाकृष्टस्मरशरविलासं कलयतः ॥५२॥

विभक्तत्रैवर्ण्यं व्यतिकरितलीलाञ्जनतया
विभाति त्वन्नेत्रत्रितयमिदमीशानदयिते ।
पुनस्स्रष्टुं देवान् द्रुहिणहरिरुद्रानुपरतान्
रजस्सत्त्वं बिभ्रत्तम इति गुणानां त्रयमिव ॥५३॥

पवित्रीकर्तुं नः पशुपतिपराधीनहृदये
दयामित्रैर्नेत्रैररुणधवलश्यामरुचिभिः ।
नदः शोणो गङ्गा तपनतनयेति ध्रुवममुं
त्रयाणां तीर्थानामुपनयसि सम्भेदमनघम् ॥५४॥

निमेषोन्मेषाभ्यां प्रलयमुदयं याति जगती
तवेत्याहुस्सन्तो धरणिधरराजन्यतनये ।
त्वदुन्मेषाज्जातं जगदिदमशेषं प्रलयतः
परित्रातुं शङ्के परिहृतनिमेषास्तव दृशः ॥५५॥

तवा पर्णे कर्णे जपनयनपैशुन्यचकिता
निलीयन्ते तोये नियतमनिमेषाश्शफरिकाः ।
इयं च श्रीर्बद्धच्छदपुटकवाटं कुवलयं
जहाति प्रत्यूषे निशि च विघटय्य प्रविशति ॥५६॥

दृशा द्राघीयस्या दरदलितनीलोत्पलरुचा
दवीयांसं दीनं स्नपय कृपया मामपि शिवे ।
अनेनायं धन्यो भवति न च ते हानिरियता
वने वा हर्म्ये वा समकरनिपातो हिमकरः ॥५७॥

अरालं ते पालीयुगलमगराजन्यतनये
न केषामाधत्ते कुसुमशरकोदण्डकुतुकम् ।
तिरश्चीनो यत्र श्रवणपथमुल्लङ्घ्य विलस-
न्नपाङ्गव्यासङ्गो दिशति शरसन्धानधिषणाम् ॥५८॥

स्फुरद्गण्डाभोगप्रतिफलितताटङ्कयुगलं
चतुश्चक्रं मन्ये तव मुखमिदं मन्मथरथम् ।
यमारुह्य द्रुह्यत्यवनिरथमर्केन्दुचरणं
महावीरो मारः प्रमथपतये सज्जितवते ॥५९॥

सरस्वत्याः सूक्तीरमृतलहरीकौशलहरीः
पिबन्त्याः शर्वाणि श्रवणचुलुकाभ्यामविरलम् ।
चमत्कारश्लाघाचलितशिरसः कुण्डलगणो
क्षणत्कारैस्तारैः प्रतिवचनमाचष्ट इव ते ॥६०॥

असौ नासावंशस्तुहिनगिरिवंशध्वजपटि
त्वदीयो नेदीयः फलतु फलमस्माकमुचितम् ।
वहत्यन्तर्मुक्ताः शिशिरकरनिश्वासगलितं
समृद्ध्या यत्तासां बहिरपि च मुक्तामणिधरः ॥६१॥

प्रकृत्याऽऽरक्तायास्तव सुदति दन्तच्छदरुचेः
प्रवक्ष्ये सादृश्यं जनयतु फलं विद्रुमलता ।
न बिम्बं तद्बिम्बप्रतिफलनरागादरुणितं
तुलामध्यारोढुं कथमिव विलज्जेत कलया ॥६२॥

स्मितज्योत्स्नाजालं तव वदनचन्द्रस्य पिबतां
चकोराणामासीदतिरसतया चञ्चुजडिमा ।
अतस्ते शीतांशोरमृतलहरीमाम्लरुचयः
पिबन्ति स्वच्छन्दं निशि निशि भृशं काञ्जिकधिया ॥६३॥

अविश्रान्तं पत्युर्गुणगणकथाम्रेडनजपा
जपापुष्पच्छाया तव जननि जिह्वा जयति सा।
यदग्रासीनायाः स्फटिकदृषदच्छच्छविमयी
सरस्वत्या मूर्तिः परिणमति माणिक्यवपुषा ॥६४॥

रणे जित्वा दैत्यानपहृतशिरस्त्रैः कवचिभिः
निवृत्तैश्चण्डांशत्रिपुरहरनिर्माल्यविमुखैः।
विशाखेन्द्रोपेन्द्रैः शशिविशदकर्पूरशकलाः
विलीयन्ते मातस्तव वदनताम्बूलकबलाः ॥६५॥

विपञ्च्या गायन्ती विविधमपदानं पशुपते-
स्त्वयाऽऽरब्धे वक्तुं चलितशिरसा साधुवचने।
तदीयैर्माधुर्यैरपलपिततन्त्रीकलरवां
निजां वीणां वाणी निचुलयति चोलेन निभृतम् ॥६६॥

कराग्रेण स्पृष्टं तुहिनगिरिणा वत्सलतया
गिरीशेनोदस्तं मुहुरधरपानाकुलतया।
करग्राह्यं शम्भोर्मुखमुकुरवृन्तं गिरिसुते
कथङ्कारं ब्रूमस्तव चुबुकमौपम्यरहितम् ॥६७॥

भुजाश्लेषान्नित्यं पुरदमयितुः कण्टकवती
तव ग्रीवा धत्ते मुखकमलनालश्रियमियम्।
स्वतः श्वेता कालागुरुबहुलजम्बालमलिना
मृणालीलालित्यं वहति यदधो हारलतिका ॥६८॥

गले रेखास्तिस्रो गतिगमकगीतैकनिपुणे
विवाहव्यानद्धप्रगुणगुणसंख्याप्रतिभुवः।
विराजन्ते नानाविधमधुररागाकरभुवां
त्रयाणां ग्रामाणां स्थितिनियमसीमान इव ते ॥६९॥

मृणाली मृद्वीनां तव भुजलतानां चतसृणां
चतुर्भिस्सौन्दर्यं सरसिजभवस्तौति वदनैः ।
नखेभ्यः संत्रस्यन् प्रथममथनादन्धकरिपोः
चतुर्णां शीर्षाणां सममभयहस्तार्पणधिया ॥७०॥

नखानामुद्योतैर्नवनलिनरागं विहसतां
कराणां ते कान्ति कथय कथयामः कथमुमे ।
कयाचिद्वा साम्यं भजतु कलया हन्त कमलं
यदि क्रीडल्लक्ष्मीचरणतललाक्षारसचणम् ॥७१॥

समं देवि स्कन्दद्विपवदनपीतं स्तनयुगं
तवेदं नः खेदं हरतु सततं प्रस्नुतमुखम् ।
यदालोक्याशङ्काकुलितहृदयो हासजनकः
स्वकुम्भौ हेरम्बः परिमृशति हस्तेन झटिति ॥७२॥

अमू ते वक्षोजावमृतरसमाणिक्यकुतुपौ
न सन्देहस्पन्दो नगपतिपताके मनसि नः ।
पिबन्तौ तौ यस्मादविदितवधूसङ्गरसिकौ
कुमारावद्यापि द्विरदवदनक्रौञ्चदलनौ ॥७३॥

वहत्यम्ब स्तम्बेरमदनुजकुम्भप्रकृतिभिः
-समारब्धां मुक्तामणिभिरमलां हारलतिकाम् ।
कुचाभोगो बिम्बाधररुचिभिरन्तश्शबलितां
-प्रतापव्यामिश्रां पुरदमयितुः कीर्तिमिव ते ॥७४॥

तव स्तन्यं मन्ये धरणिधरकन्ये हृदयतः
-पयःपारावारः परिवहति सारस्वतमिव ।
दयावत्या दत्तं द्रविडशिशुरास्वाद्य तव यत्
कवीनां प्रौढानामजनि कमनीयः कवयिता ॥७५॥

हरक्रोधज्वालावलिभिरवलीढेन वपुषा
गभीरे ते नाभीसरसि कृतसङ्गो मनसिजः ।
समुत्तस्थौ तस्मादचलतनये धूमलतिका
जनस्तां जानीते तव जननि रोमावलिरिति ॥७६॥

यदेतत्कालिन्दी तनुतरतरङ्गाकृति शिवे
कृशे मध्ये किञ्चिज्जननि तव यद्भाति सुधियाम् ।
विमर्दादन्योन्यं कुचकलशयोरन्तरगतं
तनूभूतं व्योम प्रविशदिव नाभिं कुहरिणीम् ॥७७॥

स्थिरो गङ्गावर्तः स्तनमुकुलरोमावलिलता-
कलावालं कुण्डं कुसुमशरतेजोहुतभुजः ।
रतेर्लीलागारं किमपि तव नाभिर्गिरिसुते
बिलद्वारं सिद्धेर्गिरिशनयनानां विजयते ॥७८॥

निसर्गक्षीणस्य स्तनतटभरेण क्लमजुषो
नमन्मूर्तेर्नारीतिलक शनकैस्त्रुट्यत इव ।
चिरं ते मध्यस्य त्रुटिततटिनीतीरतरुणा
समावस्थास्थेम्नो भवतु कुशलं शैलतनये ॥७९॥

कुचौ सद्यस्स्विद्यत्तटघटितकूर्पासभिदुरौ
कषन्तौ दोर्मूले कनककलशाभौ कलयता ।
तव त्रातुं भङ्गादलमिति वलग्नं तनुभुवा
त्रिधा नद्धं देवि त्रिवलि लवलीवल्लिभिरिव ॥८०॥

गुरुत्वं विस्तारं क्षितिधरपतिः पार्वति निजात्
नितम्बादाच्छिद्य त्वयि हरणरूपेण निदधे ।
अतस्ते विस्तीर्णो गुरुरयमशेषां वसुमतीं
नितम्बप्राग्भारस्स्थगयति लघुत्वं नयति च ॥८१॥

करीन्द्राणां शुण्डान् कनककदलीकाण्डपटलीं
उभाभ्यामूरुभ्यामुभयमपि निर्जित्य भवति ।
सुवृत्ताभ्यां पत्युः प्रणतिकठिनाभ्यां गिरिसुते
विधिज्ञे जानुभ्यां विबुधकरिकुम्भद्वयमसि ॥८२॥

पराजेतुं रुद्रं द्विगुणशरगर्भौ गिरिसुते
निषङ्गौ जङ्घे ते विषमविशिखो बाढमकृत ।
यदग्रे दृश्यन्ते दशशरफला पादयुगली-
नखाग्रच्छद्मानस्सुरमकुटशाणैकनिशिता ॥८३॥

श्रुतीनां मूर्धानो दधति तव यौ शेखरतया
ममाप्येतौ मातश्शिरसि दयया धेहि चरणौ ।
ययोः पाद्यं पाथः पशुपतिजटाजूटतटिनी
ययोर्लाक्षालक्ष्मीररुणहरिचूडामणिरुचिः ॥८४॥

नमोवाकं ब्रूमो नयनरमणीयाय पदयो-
स्तवास्मै द्वन्द्वाय स्फुटरुचिरसालक्तकवते ।
असूयत्यत्यन्तं यदभिहननाय स्पृहयते
पशूनामीशानः प्रमदवनकङ्केलितरवे ॥८५॥

मृषा कृत्वा गोत्रस्खलनमथ वैलक्ष्यनमितं
ललाटे भर्तारं चरणकमले ताडयति ते ।
चिरादन्तश्शल्यं दहनकृतमुन्मूलितवता
तुलाकोटिक्वाणैः किलिकिलितमीशानरिपुणा ॥८६॥

हिमानीहन्तव्यं हिमगिरिनिवासैकचतुरौ
निशायां निद्राणं निशि चरमभागे च विशदौ ।
वरं लक्ष्मीपात्रं श्रियमतिसृजन्तौ समयिनां
सरोजं त्वत्पादौ जननि जयतश्चित्रमिह किम् ॥८७॥

पदं ते कीर्तीनां प्रपदमपदं देवि विपदां
कथं नीतं सद्भिः कठिनकमठीकर्परतुलाम् ।
कथं वा बाहुभ्यामुपयमनकाले पुरभिदा
यदादाय न्यस्तं दृषदि दयमानेन मनसा ॥८८॥

नखैर्नाकस्त्रीणां करकमलसङ्कोचशशिभिः
तरूणां दिव्यानां हसत इव ते चण्डि चरणौ ।
फलानि स्वःस्थेभ्यः किसलयकराग्रेण ददतां
दरिद्रेभ्यो भद्रां श्रियमनिशमह्नाय ददतौ ॥८९॥

ददाने दीनेभ्यश्श्रियमनिशमाशानुसदृशीं
अमन्दं सौन्दर्यप्रकरमकरन्दं विकिरति ।
तवास्मिन्मन्दारस्तबकसुभगे यातु चरणे
निमज्जन्मज्जीवः करणचरणष्षट्चरणताम् ॥९०॥

पदन्यासक्रीडापरिचयमिवारब्धुमनसः
स्खलन्तस्ते खेलं भवनकलहंसा न जहति ।
अतस्तेषां शिक्षां सुभगमणिमञ्जीररणित-
च्छलादाचक्षाणं चरणकमलं चारुचरिते ॥९१॥

गतास्ते मञ्चत्वं द्रुहिणहरिरुद्रेश्वरभृतः
शिवः स्वच्छच्छायाघटितकपटप्रच्छदपटः ।
त्वदीयानां भासां प्रतिफलनरागारुणतया
शरीरी शृङ्गारो रस इव दृशां दोग्धि कुतुकम् ॥९२॥

अराला केशेषु प्रकृतिसरला मन्दहसिते
शिरीषाभा चित्ते दृषदुपलशोभा कुचतटे ।
भृशं तन्वी मध्ये पृथुरुरसिजारोहविषये
जगत्त्रातुं शम्भोर्जयति करुणा काचिदरुणा ॥९३॥

कलङ्कः कस्तूरी रजनिकरबिम्बं जलमयं
कलाभिः कर्पूरैर्मरकतकरण्डं निबिडितम्।
अतस्त्वद्भोगेन प्रतिदिनमिदं रिक्तकुहरं
विधिर्भूयो भूयो निबिडयति नूनं तव कृते ॥९४॥

पुरारातेरन्तःपुरमसि ततस्त्वच्चरणयोः
सपर्यामर्यादा तरलकरणानामसुलभा।
तथा ह्येते नीताः शतमखमुखाः सिद्धिमतुलां
तव द्वारोपान्तस्थितिभिरणिमाद्याभिरमराः ॥९५॥

कलत्रं वैधात्रं कति कति भजन्ते न कवयः
श्रियो देव्याः को वा न भवति पतिः कैरपि धनैः।
महादेवं हित्वा तव सति सतीनामचरमे
कुचाभ्यामासङ्गः कुरवकतरोरप्यसुलभः ॥९६॥

गिरामाहुर्देवीं द्रुहिणगृहिणीमागमविदो
हरेः पत्नीं पद्मां हरसहचरीमद्रितनयाम्।
तुरीया कापि त्वं दुरधिगमनिस्सीममहिमा
महामाया विश्वं भ्रमयसि परब्रह्ममहिषि ॥९७॥

कदा काले मातः कथय कलितालक्तकरसं
पिबेयं विद्यार्थी तव चरणनिर्णेजनजलम्।
प्रकृत्या मूकानामपि च कविताकारणतया
कदा धत्ते वाणीमुखकमलताम्बूलरसताम् ॥९८॥

सरस्वत्या लक्ष्म्या विधिहरिसपत्नो विहरते
रतेः पातिव्रत्यं शिथिलयति रम्येण वपुषा।
चिरं जीवन्नेव क्षपितपशुपाशव्यतिकरः
परानन्दाभिख्यं रसयति रसं त्वद्भजनवान् ॥९९॥

प्रदीपज्वालाभिर्दिवसकरनीराजनविधि.
सुधासूतेश्चन्द्रोपलजललवैरर्घ्यरचना
स्वकीयैरम्भोभि. सलिलनिधिसौहित्यकरणं
त्वदीयाभिर्वाग्भिस्तव जननि वाचां स्तुतिरियम् ॥१००॥

श्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे
श्रीभगवत्पादविरचिता सौन्दर्यलहरी समाप्ता ॥

तन्त्रराजोक्तं नित्याकवचम्

समस्तापद्विमुक्त्यर्थं सर्वसम्पदवाप्तये ।
भूतप्रेतपिशाचादिपीडाशान्त्यै सुखाप्तये ॥
समस्तरोगनाशाय समरे विजयाय च ।
चौरसिंहद्वीपिगजगवयादि - भयानके ॥
अरण्ये शैलगहने मार्गे दुर्भिक्षके तथा ।
सलिलाग्निमरुत्पीडास्वब्धौ पोतादिसङ्कटे ॥
प्रजप्य नित्याकवच सकृत्सर्वं तरत्यसौ ।
सुखी जीवति निर्द्वन्द्वो नि सपत्नो जितेन्द्रियः ॥
शृणु तत्कवच देवि ! वक्ष्ये तव तदात्मकम् ।
येनाहमपि युद्धेषु देवासुरजयी, सदा ॥
सर्वतः सर्वदाऽस्मान ललिता पातु सर्वदा ।
कामेशी पुरतः पातु भगमाला त्वनन्तरम् ॥
दिश पातु तथा दक्षपार्श्वं मे पातु सर्वदा ।
नित्यक्लिन्ना तु भेरुण्डा दिश पातु सदा मम ॥
तथैव पश्चिम भाग रक्षेत्सा वह्निवासिनी ।
महावज्रेश्वरी रक्षेदनन्तरदिशं सदा ॥
वामपार्श्वं सदा पातु दूती मे त्वरिता तत ।
पालयेत्तु दिश वात्या रक्षेन्मां कुलसुन्दरी ॥

नित्यापामूर्ध्वत पातु शाड्यो मे पातु सर्वदा ।
नित्या नीलपताकाख्या विजया मर्वतश्च माम् ॥
करोतु मे मङ्गलानि मर्वदा शर्वमङ्गला ।
देहेन्द्रियमन प्राणान् ज्वालामालिनिविग्रहा ॥
पाश्र्वेदनिशं निशा चित्त मे पातु मर्वदा ।
कामात् क्रोधात् तथा लोभान्मोहान्मानान्मदादपि ॥
पापान्मत्सरत शोकात् सशयात्सर्वत मदा ।
स्तैमित्याच्च समुद्योगादशुभेषु तु कर्मसु ॥
असत्यात् क्रूरचिन्तातो हिंसातश्चोरतस्तथा ।
रक्षन्तु मा सर्वदा ता कुर्वन्त्विच्छा शुभेषु च ॥
नित्या षोडश मा पान्तु गजारूढा स्वशक्तिभि ।
तथा हयसमारूढा पान्तु मा सर्वत सदा ॥
सिंहारूढास्तथा पान्तु मा तरक्षुगता अपि ।
रथारूढाश्च मा पान्तु सर्वत सर्वदा रण ॥
तार्क्ष्यारूढाश्च मा पान्तु तथा व्योमगतास्तु ता ।
भूगता सर्वदा पान्तु मा सर्वत्र च सर्वदा ॥
भूत प्रेतपिशाचापस्मारकृत्यादिकान् मदान् ।
द्रावयन्तु स्वशक्तीना भीषणैरायुधैर्मम ॥
गजाश्वद्वीपिपञ्चास्यतार्क्ष्यारूढाखिलायुधा ।
असख्या शक्तयो देव्या पान्तु मा सर्वत मदा ॥
साय प्रातजपन्नित्याकवचं सर्वरक्षकम् ।
कदाचिन्नाशुभ पश्येन्न श्रृणोति च तत्सम ॥

श्रीकरपात्रस्वामिविरचिते श्रीविद्यारत्नाकरे नित्याकवच समाप्तम् ।

श्रीललितासहस्रनामावलिः

अस्य श्रीललितासहस्रनामस्तोत्रमालामन्त्रस्य वशिन्यादिभ्यो वाग्देवताभ्य ऋषिभ्यो नमः शिरसि । अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे । श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै देवतायै नमः हृदये । क ५ बीजाय नमः गुह्ये । स० ४ शक्तये नमः पादयोः । ह० ६ कीलकाय नमः नाभौ । चतुर्विधपुरुषार्थसिद्ध्यर्थे जपे (श्रीललिताम्बाप्रीत्यर्थं) (पूजने) विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

कूटत्रय द्विरावृत्य (बालया वा) षडङ्गद्वयम् ।

ध्यानश्लोक

सिन्दूरारुणविग्रहां त्रिनयनां माणिक्यमौलिस्फुरत्,
तारानायकशेखरां स्मितमुखीमापीनवक्षोरुहाम् ।
पाणिभ्यामलिपूर्णरत्नचषकं रक्तोत्पलं बिभ्रतीं,
सौम्यां रत्नघटस्थरक्तचरणां ध्यायेत्परामम्बिकाम् ॥१॥

मानसैः पञ्चोपचारैः सम्पूज्य,

श्रीललितासहस्रनामावलिः

ॐ–ऐं–ह्रीं–श्रीं

ॐ श्रीमात्रे नमः
श्रीमहाराज्ञ्यै
श्रीमत्सिंहासनेश्वर्यै
चिदग्निकुण्डसम्भूतायै
देवकार्यसमुद्यतायै
उद्यद्भानुसहस्राभायै
ॐ चतुर्बाहुसमन्वितायै नमः
रागस्वरूपपाशाढ्यै
क्रोधाकाराङ्कुशोज्ज्वलायै
मनोरूपेक्षुकोदण्डायै १०
पञ्चतन्मात्रसायकायै

ॐ निजारुणप्रभापूरमज्जद्ब्रह्माण्डमण्डलायै नमः
चम्पकाशोकपुन्नागसौगन्धिकलसत्कचायै
कुरुविन्दमणिश्रेणीकनत्कोटीरमण्डितायै
अष्टमीचन्द्रविभ्राजदलिकस्थलशोभितायै
मुखचन्द्रकलङ्काभमृगनाभिविशेषकायै
वदनस्मरमाङ्गल्यगृहतोरणचिल्लिकायै
वक्त्रलक्ष्मीपरीवाहचलन्मीनाभलोचनायै
नवचम्पकपुष्पाभनासादण्डविराजितायै
ताराकान्तितिरस्कारिनासाभरणभासुरायै २०
कदम्बमञ्जरीक्लृप्तकर्णपूरमनोहरायै
ताटङ्कयुगलीभूततपनोडुपमण्डलायै
पद्मरागशिलादर्शपरिभाविकपोलभुवे
नवविद्रुमबिम्बश्रीन्यक्कारिरदनच्छदायै
शुद्धविद्याङ्कुराकारद्विजपङ्क्तिद्वयोज्ज्वलायै
कर्पूरवीटिकामोदसमाकर्षिदिगन्तरायै
निजसल्लापमाधुर्यविनिर्भर्त्सितकच्छप्यै
मन्दस्मितप्रभापूरमज्जत्कामेशमानसायै
अनाकलितसादृश्यचिबुकश्रीविराजितायै
कामेशबद्धमाङ्गल्यसूत्रशोभितकन्धरायै ३०
कनकाङ्गदकेयूरकमनीयभुजान्वितायै
रत्नग्रैवेयचिन्ताकलोलमुक्ताफलान्वितायै
कामेश्वरप्रेमरत्नमणिप्रतिपणस्तन्यै
नाभ्यालवालरोमालिलताफलकुचद्वय्यै नमः
लक्ष्यरोमलताधारतासमुन्नेयमध्यमायै
स्तनभारदलन्मध्यपट्टबन्धवलित्रयायै
अरुणारुणकौसुम्भवस्त्रभास्वत्कटीतट्यै

ॐ रत्नकिङ्किणिकारम्यरशनादामभूषितायै नमः
कामेशज्ञातसौभाग्यमार्दवोरुद्वयान्वितायै ४०
माणिक्यमुकुटाकारजानुद्वयविराजितायै
इन्द्रगोपपरिक्षिप्तस्मरतूणाभजङ्घिकायै
गूढगुल्फायै
कूर्मपृष्ठजयिष्णुप्रपदान्वितायै
नखदीधितिसञ्छन्ननमज्जनतमोगुणायै
पदद्वयप्रभाजालपराकृतसरोरुहायै
शिञ्जानमणिमञ्जीरमण्डितश्रीपदाम्बुजायै

ॐ मरालीमन्दगमनायै नमः
महालावण्यशेवधये
सर्वारुणायै
अनवद्याङ्ग्यै ५०
सर्वाभरणभूषितायै
शिवकामेश्वराङ्कस्थायै
शिवायै
स्वाधीनवल्लभायै

ॐ सुमेरुमध्यशृङ्गस्थायै नमः
श्रीमन्नगरनायिकायै
चिन्तामणिगृहान्तस्थायै
पञ्चब्रह्मासनस्थितायै
महापद्माटवीसंस्थायै
कदम्बवनवासिन्यै ६०
सुधासागरमध्यस्थायै
कामाक्ष्यै
कामदायिन्यै

देवर्षिगणसङ्घातस्तूयमानात्मवैभवायै नमः
भण्डासुरवधोद्युक्तशक्तिसेनासमन्वितायै
सम्पत्करीसमारूढसिन्धुरव्रजसेवितायै
अश्वारूढाधिष्ठिताश्वकोटिकोटिभिरावृतायै
चक्रराजरथारूढसर्वायुधपरिष्कृतायै
गेयचक्ररथारूढमन्त्रिणीपरिसेवितायै
किरिचक्ररथारूढदण्डनाथापुरस्कृतायै ७०

ॐ ज्वालामालिनिकाक्षिप्तवह्निप्राकारमध्यगायै नमः
भण्डसैन्यवधोद्युक्तशक्तिविक्रमहर्षितायै
नित्यापराक्रमाटोपनिरीक्षणसमुत्सुकायै
भण्डपुत्रवधोद्युक्तबालाविक्रमनन्दितायै
मन्त्रिण्यम्बाविरचितविषङ्गवधतोषितायै नमः
विशुक्रप्राणहरणवाराहीवीर्यनन्दितायै
कामेश्वरमुखालोककल्पितश्रीगणेश्वरायै
महागणेशनिर्भिन्नविघ्नयन्त्रप्रहर्षितायै
भण्डासुरेन्द्रनिर्मुक्तशस्त्रप्रत्यस्त्रवर्षिण्यै
कराङ्गुलिनखोत्पन्ननारायणदशाकृत्यै ८०
महापाशुपतास्त्राग्निनिर्दग्धासुरसैनिकायै
कामेश्वरास्त्रनिर्दग्धसभण्डासुरशून्यकायै
ब्रह्मोपेन्द्रमहेन्द्रादिदेवसंस्तुतवैभवायै
हरनेत्राग्निसन्दग्धकामसञ्जीवनौषध्यै
श्रीमद्वाग्भवकूटैकस्वरूपमुखपङ्कजायै
कण्ठाधः कटिपर्यन्तमध्यकूटस्वरूपिण्यै
शक्तिकूटैकतापन्नकट्यधोभागधारिण्यै

ॐ मूलमन्त्रात्मिकायै नमः
मूलकूटत्रयकलेबरायै
कुलामृतैकरसिकायै ९०
कुलसङ्केतपालिन्यै
कुलाङ्गनायै
कुलान्तस्थायै
कौलिन्यै
कुलयोगिन्यै
अकुलायै

ॐ समयान्तस्थायै नमः
समयाचारतत्परायै
मूलाधारैकनिलयायै
ब्रह्मग्रन्थिविभेदिन्यै १००
मणिपूरान्तरुदितायै
विष्णुग्रन्थिविभेदिन्यै
आज्ञाचक्रान्तरालस्थायै
रुद्रग्रन्थिविभेदिन्यै
सहस्राराम्बुजारूढायै

ॐ सुधासाराभिवर्षिण्यै नमः
तटिल्लतासमरुच्यै
षट्चक्रोपरिसंस्थितायै
महासक्त्यै
कुण्डलिन्यै ११०
बिसतन्तुतनीयस्यै
भवान्यै
भावनागम्यायै
भवारण्यकुठारिकायै
भद्रप्रियायै
भद्रमूर्त्यै
भक्तसौभाग्यदायिन्यै
भक्तिप्रियायै
भक्तिगम्यायै
भक्तिवश्यायै १२०
भयापहायै
शाम्भव्यै
शारदाराध्यायै
शर्वाण्यै
शर्मदायिन्यै
शाङ्कर्यै
श्रीकर्यै
साध्व्यै नमः
शरच्चन्द्रनिभाननायै
शातोदर्यै १३०
शान्तिमत्यै

ॐ निराधारायै नमः
निरञ्जनायै
निर्लेपायै
निर्मलायै
नित्यायै
निराकारायै
निराकुलायै
निर्गुणायै
निष्कलायै १४०
शान्तायै
निष्कामायै
निरुपप्लवायै
नित्यमुक्तायै
निर्विकारायै
निष्प्रपञ्चायै
निराश्रयायै
नित्यशुद्धायै
नित्यबुद्धायै
निरवद्यायै १५०
निरन्तरायै
निष्कारणायै
निष्कलङ्कायै
निरुपाधये
निरीश्वरायै
नीरागायै
रागमथन्यै

ॐ निर्मदायै नमः
मदनाशिन्यै
निश्चिन्तायै १६०
निरहङ्कारायै नमः
निर्मोहायै
मोहनाशिन्यै
निर्ममायै
ममताहन्त्र्यै
निष्पापायै
पापनाशिन्यै
निष्क्रोधायै
क्रोधशमन्यै
निर्लोभायै १७०
लोभनाशिन्यै
निःसंशयायै
संशयघ्न्यै
निर्भवायै
भवनाशिन्यै
निर्विकल्पायै
निराबाधायै
निर्भेदायै
भेदनाशिन्यै
निर्नाशायै १८०
मृत्युमथन्यै
निष्क्रियायै
निष्परिग्रहायै

ॐ निस्तुलायै नमः
नीलचिकुरायै
निरपायायै
निरत्ययायै
दुर्लभायै
दुर्गमायै
दुर्गायै १९०
दुःखहन्त्र्यै
सुखप्रदायै
दुष्टदूरायै
दुराचारशमन्यै नमः
दोषवर्जितायै
सर्वज्ञायै
सान्द्रकरुणायै
समानाधिकवर्जितायै
सर्वशक्तिमय्यै
सर्वमङ्गलायै २००
सद्गतिप्रदायै
सर्वेश्वर्यै
सर्वमय्यै
सर्वमन्त्रस्वरूपिण्यै
सर्वयन्त्रात्मिकायै
सर्वतन्त्ररूपायै
मनोन्मन्यै
माहेश्वर्यै
महादेव्यै

ॐ महालक्ष्म्यै नमः । २१०
मृडप्रियायै
महारूपायै
महापूज्यायै
महापातकनाशिन्यै
महामायायै
महासत्त्वायै
महाशक्त्यै
महारत्यै
महाभोगायै
महैश्वर्यायै २२०
महावीर्यायै
महाबलायै
महाबुद्ध्यै
महासिद्ध्यै
महायोगीश्वरेश्वर्यै
महातन्त्रायै
महामन्त्रायै
महायन्त्रायै
महासनायै
महायागक्रमाराध्यायै २३०
महाभैरवपूजितायै
महेश्वरमहाकल्पमहाताण्डवसाक्षिण्यै
महाकामेशमहिष्यै
महात्रिपुरसुन्दर्यै
चतुःषष्ट्युपचाराढ्यायै

ॐ चतुःषष्टिकलामय्यै नमः
महाचतुःषष्टिकोटियोगिनीगणसेवितायै
मनुविद्यायै
चन्द्रविद्यायै
चन्द्रमण्डलमध्यगायै २४०
चारुरूपायै
चारुहासायै
चारुचन्द्रकलाधरायै
चराचरजगन्नाथायै
चक्रराजनिकेतनायै
पार्वत्यै
पद्मनयनायै
पद्मरागसमप्रभायै
पञ्चप्रेतासनासीनायै
पञ्चब्रह्मस्वरूपिण्यै २५०
चिन्मय्यै
परमानन्दायै
विज्ञानघनरूपिण्यै
ध्यानध्यातृध्येयरूपायै
धर्माधर्मविवर्जितायै
विश्वरूपायै
जागरिण्यै
स्वपन्त्यै
तैजसात्मिकायै
सुप्तायै २६०
प्राज्ञात्मिकायै नमः

ॐ तुर्यायै नमः
सर्वावस्थाविवर्जितायै
सृष्टिकर्त्र्यै
ब्रह्मरूपायै
गोप्त्र्यै
गोविन्दरूपिण्यै
संहारिण्यै
रुद्ररूपायै
तिरोधानकर्यै २७०
ईश्वर्यै
सदाशिवायै
अनुग्रहदायै
पञ्चकृत्यपरायणायै
भानुमण्डलमध्यस्थायै
भैरव्यै
भगमालिन्यै
पद्मासनायै
भगवत्यै
पद्मनाभसहोदर्यै २८०
उन्मेषनिमिषोत्पन्नविपन्नभुवनावल्यै
सहस्रशीर्षवदनायै
सहस्राक्ष्यै
सहस्रपदे
आब्रह्मकीटजनन्यै
वर्णाश्रमविधायिन्यै
निजाज्ञारूपनिगमायै

ॐ पुण्यापुण्यफलप्रदायै नमः
श्रुतिसीमन्तसिन्दूरीकृतपादाब्ज-
धूलिकायै
सकलागमसंदोहशुक्तिसम्पुट-
मौक्तिकायै २९०
पुरुषार्थप्रदायै
पूर्णायै
भोगिन्यै
भुवनेश्वर्यै
अम्बिकायै
अनादिनिधनायै
हरिब्रह्मेन्द्रसेवितायै
नारायण्यै
नादरूपायै
नामरूपविवर्जितायै ३००
ह्रींकार्यै नमः
ह्रीमत्यै
हृद्यायै
हेयोपादेयवर्जितायै
राजराजार्चितायै
राज्ञ्यै
रम्यायै
राजीवलोचनायै
रञ्जन्यै
रमण्यै ३१०
रस्यायै

ॐ रणत्किङ्किणिमेखलायै नमः
रमायै
राकेन्दुवदनायै
रतिरूपायै
रतिप्रियायै
रक्षाकर्यै
राक्षसघ्न्यै
रामायै
रमणलम्पटायै ३२०
काम्यायै
कामकलारूपायै
कदम्बकुसुमप्रियायै
कल्याण्यै
जगतीकन्दायै
करुणारससागरायै
कलावत्यै
कलालापायै
कान्तायै
कादम्बरीप्रियायै ३३०
वरदायै
वामनयनायै
वारुणीमदविह्वलायै
विश्वाधिकायै
वेदवेद्यायै
विन्ध्याचलनिवासिन्यै
विधात्र्यै
ॐ वेदजनन्यै नमः
विष्णुमायायै
विलासिन्यै ३४०
क्षेत्रस्वरूपायै
क्षेत्रेश्यै
क्षेत्रक्षेत्रज्ञपालिन्यै
क्षयवृद्धिविनिर्मुक्तायै
क्षेत्रपालसमर्चितायै
विजयायै
विमलायै
वन्द्यायै
वन्दारुजनवत्सलायै
वाग्वादिन्यै ३५०
वामकेश्यै
वह्निमण्डलवासिन्यै
भक्तिमत्कल्पलतिकायै
पशुपाशविमोचिन्यै
संहृताशेषपाखण्डायै
सदाचारप्रवर्तिकायै
तापत्रयाग्निसन्तप्तसमाह्लादनचन्द्रिकायै
तरुण्यै
तापसाराध्यायै
तनुमध्यायै
तमोपहायै
चित्यै

ॐ तत्पदलक्ष्यार्थायै नमः
चिदेकरसरूपिण्यै
स्वात्मानन्दलवीभूतब्रह्माद्यानन्दसन्तत्यै
परायै
प्रत्यक्चितीरूपायै
पश्यन्त्यै
परदेवतायै
मध्यमायै ३७०
वैखरीरूपायै
भक्तमानसहंसिकायै
कामेश्वरप्राणनाड्यै
कृतज्ञायै
कामपूजितायै
शृङ्गाररससम्पूर्णायै
जयायै
जालन्धरस्थितायै
ओड्याणपीठनिलयायै
बिन्दुमण्डलवासिन्यै ३८०
रहोयागक्रमाराध्यायै
रहस्तर्पणतर्पितायै
सद्यःप्रसादिन्यै
विश्वसाक्षिण्यै
साक्षिवर्जितायै
षडङ्गदेवतायुक्तायै
षाड्गुण्यपरिपूरितायै
नित्यक्लिन्नायै

ॐ निरुपमायै नमः
निर्वाणसुखदायिन्यै ३९०
नित्याषोडशिकारूपायै
श्रीकण्ठार्धशरीरिण्यै
प्रभावत्यै
प्रभारूपायै
प्रसिद्धायै
परमेश्वर्यै
मूलप्रकृत्यै
अव्यक्तायै
व्यक्ताव्यक्तस्वरूपिण्यै
व्यापिन्यै ४००
विविधाकारायै
विद्याविद्यास्वरूपिण्यै
महाकामेशनयनकुमुदाह्लादकौमुद्यै
भक्तहार्दतमोभेदभानुमद्भानुसन्तत्यै
शिवदूत्यै
शिवाराध्यायै
शिवमूर्त्यै
शिवङ्कर्यै
शिवप्रियायै
शिवपरायै
शिष्टेष्टायै
शिष्टपूजितायै
अप्रमेयायै

ॐ स्वप्रकाशायै नमः
मनोवाचामगोचरायै
चिच्छक्त्यै
चेतनारूपायै
जडशक्त्यै
जडात्मिकायै
गायत्र्यै ४२०
व्याहृत्यै
संध्यायै नमः
द्विजवृन्दनिषेवितायै
तत्त्वासनायै
तस्मै
तुभ्य
अय्यै
पञ्चकोशान्तरस्थितायै
निःसीममहिम्ने
नित्ययौवनायै ४३०
मदशालिन्यै
मदघूर्णितरक्ताक्ष्यै
मदपाटलगण्डभुवे
चन्दनद्रवदिग्धाङ्ग्यै
चाम्पेकुसुमप्रियायै
कुशलायै
कोमलाकारायै
कुरुकुल्लायै
कुलेश्वर्यै
कुलकुण्डालयायै ४४०

ॐ कौलमार्गतत्परसेवितायै नमः
कुमारगणनाथाम्बायै
तुष्ट्यै
पुष्ट्यै
मत्यै
धृत्यै
शान्त्यै
स्वस्तिमत्यै
कान्त्यै
नन्दिन्यै ४५०
विघ्ननाशिन्यै
तेजोवत्यै
त्रिनयनायै
लोलाक्षीकामरूपिण्यै
मालिन्यै
हंसिन्यै
मात्रे
मलयाचलवासिन्यै
सुमुख्यै
नलिन्यै ४६०
सुभ्रुवे
शोभनायै
सुरनायिकायै
कालकण्ठ्यै
कान्तिमत्यै
क्षोभिण्यै
सूक्ष्मरूपिण्यै

ॐ वज्रेश्वर्यै नमः
वामदेव्यै
वयोवस्थाविवर्जितायै ४७०
सिद्धेश्वर्यै
सिद्धविद्यायै
सिद्धमात्रे
यशस्विन्यै
विशुद्धिचक्रनिलयायै
आरक्तवर्णायै
त्रिलोचनायै
खट्वाङ्गादिप्रहरणायै
वदनैकसमन्वितायै
पायसान्नप्रियायै ४८०
त्वक्स्थायै
पशुलोकभयङ्कर्यै
अमृतादिमहाशक्तिसंवृतायै
डाकिनीश्वर्यै
अनाहताब्जनिलयायै
श्यामाभायै
वदनद्वयायै
दंष्ट्रोज्ज्वलायै नमः
अक्षमालादिधरायै
रुधिरसंस्थितायै ४९०
कालरात्र्यादिशक्त्यौघवृतायै
स्निग्धौदनप्रियायै
महावीरेन्द्रवरदायै

ॐ राकिण्यम्बास्वरूपिण्यै नमः
मणिपूराब्जनिलयायै
वदनत्रयसंयुतायै
वज्रादिकायुधोपेतायै
डामर्यादिभिरावृतायै
रक्तवर्णायै
मांसनिष्ठायै ५००
गुडान्नप्रीतमानसायै
समस्तभक्तसुखदायै
लाकिन्यम्बास्वरूपिण्यै
स्वाधिष्ठानाम्बुजगतायै
चतुर्वक्त्रमनोहरायै
शूलाद्यायुधसम्पन्नायै
पीतवर्णायै
अतिगर्वितायै
मेदोनिष्ठायै
मधुप्रीतायै ५१०
बन्दिन्यादिसमन्वितायै
दध्यन्नासक्तहृदयायै
काकिनीरूपधारिण्यै
मूलाधाराम्बुजारूढायै
पञ्चवक्त्रायै
अस्थिसंस्थितायै
अङ्कुशादिप्रहरणायै
वरदादिनिषेवितायै
मुद्गौदनासक्तचित्तायै

ॐ साकिन्यम्बास्वरूपिण्यै नमः ५२०
आज्ञाचक्राब्जनिलयायै
शुक्लवर्णायै
षडाननायै
मज्जासंस्थायै
हंसवतीमुख्यशक्तिसमन्वितायै
हरिद्रान्नैकरसिकायै
हाकिनीरूपधारिण्यै
सहस्रदलपद्मस्थायै
सर्ववर्णोपशोभितायै
सर्वायुधधरायै ५३०
शुक्लसंस्थितायै
सर्वतोमुख्यै
सर्वौदनप्रीतचित्तायै
याकिन्यम्बास्वरूपिण्यै
स्वाहा
स्वधा
अमत्यै
मेधायै
श्रुत्यै
स्मृत्यै ५४०
अनुत्तमायै
पुण्यकीर्त्यै
पुण्यलभ्यायै
पुण्यश्रवणकीर्तनायै
पुलोमजार्चितायै

ॐ बन्धमोचन्यै नमः
बर्बरालकायै
विमर्शरूपिण्यै
विद्यायै
वियदादिजगत्प्रसुवे ५५०
सर्वव्याधिप्रशमन्यै
सर्वमृत्युनिवारिण्यै
अग्रगण्यायै
अचिन्त्यरूपायै
कलिकल्मषनाशिन्यै
कात्यायन्यै
कालहन्त्र्यै
कमलाक्षनिषेवितायै
ताम्बूलपूरितमुख्यै
दाडिमीकुसुमप्रभायै ५६०
मृगाक्ष्यै
मोहिन्यै
मुख्यायै
मृडान्यै
मित्ररूपिण्यै
नित्यतृप्तायै
भक्तनिधये
नियन्त्र्यै
निखिलेश्वर्यै
मैत्र्यादिवासनालभ्यायै ५७०
महाप्रलयसाक्षिण्यै

ॐ परस्यै शक्त्यै नम
परयै निष्ठायै
प्रज्ञानघनरूपिण्यै
माध्वीपानालसायै
मत्तायै
मातृकावर्णरूपिण्यै
महाकैलासनिलयायै
मृणालमृदुदोर्लताय
महनीयायै ५८०
दयामूर्त्यै
महासाम्राज्यशालिन्यै
आत्मविद्यायै
महाविद्यायै
श्रीविद्यायै
कामसेवितायै
श्रीषोडशाक्षरीविद्यायै
त्रिकूटायै
कामकोटिकायै
कटाक्षकिङ्करीभूतकमला-
कोटिसेवितायै ५९०
शिर स्थितायै
चन्द्रनिभायै
भालस्थायै
इन्द्रधनु प्रभायै
हृदयस्थायै
रविप्रख्यायै

ॐ त्रिकोणान्तरदीपिकायै नम
दाक्षायण्यै
दैत्यहन्त्र्यै
दक्षयज्ञविनाशिन्यै ६००
दरान्दोलितदीर्घाक्ष्यै
दरहासोज्ज्वलन्मुख्यै
गुरुमूर्तये
गुणनिधये
गोमात्रे
गुहजन्मभुवे
देवेश्यै
दण्डनीतिस्थायै
दहराकाशरूपिण्यै
प्रतिपन्मुख्यराकान्ततिथिमण्डल-
पूजितायै ६१०
कलात्मिकायै
कलानाथाय
काव्यालापविनोदिन्यै
सचामररमावाणीसव्यदक्षिण-
सेवितायै
आदिशक्त्यै
अमेयायै
आत्मने
परमायै
पावनाकृतये
अनेककोटिब्रह्माण्डजनन्यै ६२०

ॐ दिव्यविग्रहायै नमः
नलीकायै
केवलायै
गुह्यायै
कैवल्यपददायिन्यै
त्रिपुरायै
त्रिजगद्वन्द्यायै
त्रिमूर्तये
त्रिदशेश्वर्यै
त्र्यक्षर्यै ६३०
दिव्यगन्धाढ्यायै
सिन्दूरतिलकाञ्चितायै
उमायै
शैलेन्द्रतनयायै
गौर्यै
गन्धर्वसेवितायै
विश्वगर्भायै
स्वर्णगर्भायै
अवरदायै
वागधीश्वर्यै ६४०
ध्यानगम्यायै
अपरिच्छेद्यायै
ज्ञानदायै
ज्ञानविग्रहायै
सर्ववेदान्तसंवेद्यायै
सत्यानन्दस्वरूपिण्यै
लोपामुद्रार्चितायै

ॐ लीलाक्लृप्तब्रह्माण्डमण्डलायै नमः
अदृश्यायै
दृश्यरहितायै ६५०
विज्ञात्र्यै
वेद्यवर्जितायै
योगिन्यै
योगदायै
योग्यायै
योगानन्दायै
युगन्धरायै
इच्छाशक्तिज्ञानशक्तिक्रियाशक्ति-स्वरूपिण्यै
सर्वाधारायै
सुप्रतिष्ठायै ६६०
सदसद्रूपधारिण्यै
अष्टमूर्त्यै
अजाजेत्र्यै
लोकयात्राविधायिन्यै
एकाकिन्यै
भूमरूपायै
निर्द्वैतायै
द्वैतवर्जितायै
अन्नदायै
वसुदायै ६७०
वृद्धायै
ब्रह्मात्मैक्यस्वरूपिण्यै

ॐ बृहत्यै नमः
ब्राह्मण्यै
ब्राह्म्यै
ब्रह्मानन्दायै
बलिप्रियायै
भाषारूपायै
बृहत्सेनायै
भावाभावविवर्जितायै ६८०
सुखाराध्यायै
शुभकर्यै
शोभनायै सुलभायै गत्यै
राजराजेश्वर्यै
राज्यदायिन्यै
राज्यवल्लभायै
राजत्कृपायै
राजपीठनिवेशितनिजाश्रितायै
राज्यलक्ष्म्यै
कोशनाथायै ६९०
चतुरङ्गबलेश्वर्यै
साम्राज्यदायिन्यै
सत्यसन्धायै
सागरमेखलायै
दीक्षितायै
दैत्यशमन्यै
सर्वलोकवशङ्कर्यै
सर्वार्थदात्र्यै

ॐ सावित्र्यै नमः
सच्चिदानन्दरूपिण्यै ७००
देशकालापरिच्छिन्नायै
सर्वगायै
सर्वमोहिन्यै
सरस्वत्यै
शास्त्रमय्यै
गुहाम्बायै
गुह्यरूपिण्यै
सर्वोपाधिविनिर्मुक्तायै
सदाशिवपतिव्रतायै
सम्प्रदायेश्वर्यै ७१०
साधुने
यैं
गुरुमण्डलरूपिण्यै
कुलोत्तीर्णायै
भगाराध्यायै
मायायै
मधुमत्यै
मह्यै
गणाम्बायै
गुह्यकाराध्यायै ७२०
कोमलाङ्ग्यै
गुरुप्रियायै
स्वतन्त्रायै
सर्वतन्त्रेश्यै

ॐ दक्षिणामूर्तिरूपिण्यै नमः
सनकादिसमाराध्यायै
शिवज्ञानप्रदायिन्यै
चित्कलायै
आनन्दकलिकायै
प्रेमरूपायै ७३०
प्रियङ्कर्यै
नामपारायणप्रीतायै
नन्दिविद्यायै
नटेश्वर्यै
मिथ्याजगदधिष्ठानायै
मुक्तिदायै
मुक्तिरूपिण्यै
लास्यप्रियायै
लयकर्यै
लज्जायै ७४०
रम्भादिवन्दितायै
भवदावसुधावृष्ट्यै
पापारण्यदवानलायै
दौर्भाग्यतूलवातूलायै
जराध्वान्तरविप्रभायै
भाग्याब्धिचन्द्रिकायै
भक्तचित्तकेकिघनाघनायै
रोगपर्वतदम्भोल्यै
मृत्युदारुकुठारिकायै
महेश्वर्यै ७५०

ॐ महाकाल्यै नमः
महाग्रासायै
महाशनायै
अपर्णायै
चण्डिकायै
चण्डमुण्डासुरनिषूदन्यै
क्षराक्षरात्मिकायै
सर्वलोकेश्यै
विश्वधारिण्यै
त्रिवर्गदात्र्यै ७६०
त्रिगुणात्मिकायै
स्वर्गापवर्गदायै
शुद्धायै
जपापुष्पनिभाकृतये
ओजोवत्यै
द्युतिधरायै
यज्ञरूपायै
प्रियव्रतायै ७७०
दुराराध्यायै
दुराधर्षायै
पाटलीकुसुमप्रियायै
महत्यै
मेरुनिलयायै
मन्दारकुसुमप्रियायै
वीराराध्यायै
विराड्रूपायै

ॐ विरजसे नमः
विश्वतोमुख्यै ७८०
प्रत्यग्रूपायै
पराकाशायै
प्राणदायै
प्राणरूपिण्यै
मार्तण्डभैरवाराध्यायै
मन्त्रिणीन्यस्तराज्यधुरे
त्रिपुरेश्यै
जयत्सेनायै
निस्त्रैगुण्यायै
परापरायै ७९०
सत्यज्ञानानन्दरूपायै
सामरस्यपरायणायै
कपर्दिन्यै
कलामालायै
कामदुहे
कामरूपिण्यै
कलानिधये
काव्यकलायै
रसज्ञायै
रसशेवधये ८००
पुष्टायै
पुरातनायै
पूज्यायै
पुष्करायै
पुष्करेक्षणायै
परस्मै ज्योतिषे
परस्मै धाम्ने
परमाणवे
परात्परायै

ॐ पाशहस्तायै नमः ८१०
पाशहन्त्र्यै
परमन्त्रविभेदिन्यै
मूर्तायै
अमूर्तायै नमः
अनित्यतृप्तायै
मुनिमानसहंसिकायै
सत्यव्रतायै
सत्यरूपायै
सर्वान्तर्यामिण्यै
सत्यै ८२०
ब्रह्माण्यै
ब्रह्मणे
जनन्यै
बहुरूपायै
बुधार्चितायै
प्रसवित्र्यै
प्रचण्डायै
आज्ञायै
प्रतिष्ठायै
प्रकटाकृतये ८३०
प्राणेश्वर्यै
प्राणदात्र्यै
पञ्चाशत्पीठरूपिण्यै
विशृङ्खलायै
विविक्तस्थायै
वीरमात्रे
वियत्प्रसुवे
मुकुन्दायै
मुक्तिनिलयायै
मूलविग्रहरूपिण्यै ८४०

ॐ भावज्ञायै नमः
भवरोगघ्न्यै
भवचक्रप्रवर्तिन्यै
छन्दःसारायै
शास्त्रसारायै
मन्त्रसारायै
तलोदर्यै नमः
उदारकीर्तये
उद्दामवैभवायै
वर्णरूपिण्यै ८५०
जन्ममृत्युजरातप्तजन-
विश्रान्तिदायिन्यै
सर्वोपनिषदुद्‌घुष्टायै
शान्त्यतीतकलात्मिकायै
गम्भीरायै
गगनान्तस्थायै
गर्वितायै
गानलोलुपायै
कल्पनारहितायै
काष्ठायै
अकान्तायै ८६०
कान्तार्धविग्रहायै
कार्यकारणनिर्मुक्तायै
कामकेलितरङ्गितायै
कनत्कनकताटङ्कायै
लीलाविग्रहधारिण्यै
अजायै
क्षयविनिर्मुक्तायै

ॐ मुग्धायै नमः
क्षिप्रप्रसादिन्यै
ॐ अन्तर्मुखसमाराध्यायै
बहिर्मुखसुदुर्लभायै
त्रय्यै
त्रिवर्गनिलयायै
त्रिस्थायै
त्रिपुरमालिन्यै
निरामयायै
निरालम्बायै
स्वात्मारामायै
सुधास्रुत्यै नमः
संसारपङ्कनिर्मग्नसमुद्धरण-
पण्डितायै ८८०
यज्ञप्रियायै
यज्ञकर्त्र्यै
यजमानस्वरूपिण्यै
धर्माधारायै
धनाध्यक्षायै
धनधान्यविवर्धिन्यै
विप्रप्रियायै
विप्ररूपायै
विश्वभ्रमणकारिण्यै
विश्वग्रासायै ८९०
विद्रुमाभायै
वैष्णव्यै
विष्णुरूपिण्यै
अयोन्यै

ॐ योनिनिलयायै नमः
कूटस्थायै
कुलरूपिण्यै
वीरगोष्ठीप्रियायै
वीरायै
नैष्कर्म्यायै ९००
नादरूपिण्यै
विज्ञानकलनायै
कल्यायै
विदग्धायै
बैन्दवासनायै
तत्त्वाधिकायै
तत्त्वमय्यै
तत्त्वमर्थस्वरूपिण्यै
सामगानप्रियायै
सौम्यायै ९१०
सदाशिवकुटुम्बिन्यै
सव्यापसव्यमार्गस्थायै
सर्वापद्विनिवारिण्यै
स्वस्थायै
स्वभावमधुरायै
धीरायै
धीरसमर्चितायै
चैतन्यार्घ्यसमाराध्यायै
चैतन्यकुसुमप्रियायै
सदोदितायै ९२०

ॐ सदातुष्टायै नमः
तरुणादित्यपाटलायै
दक्षिणादक्षिणाराध्यायै
दरस्मेरमुखाम्बुजायै
कौलिनीकेवलायै
अनर्घ्यकैवल्यपददायिन्यै
स्तोत्रप्रियायै
स्तुतिमत्यै
श्रुतिसंस्तुतवैभवायै
मनस्विन्यै ९३०
मानवत्यै
महेश्यै
मङ्गलाकृतये
विश्वमात्रे
जगद्धात्र्यै
विशालाक्ष्यै
विरागिण्यै
प्रगल्भायै
परमोदारायै
परामोदायै ९४०
मनोमय्यै
व्योमकेश्यै
विमानस्थायै
वज्रिण्यै
वामकेश्वर्यै
पञ्चयज्ञप्रियायै

ॐ पञ्चप्रेतमञ्चाधिशायिन्यै नमः
पञ्चम्यै
पञ्चभूतेश्यै
पञ्चसङ्ख्योपचारिण्यै ९५०
शाश्वत्यै
शाश्वतैश्वर्यायै
शर्मदायै
शम्भुमोहिन्यै
धरायै
धरसुतायै
धन्यायै
धर्मिण्यै
धर्मवर्धिन्यै
लोकातीतायै ९६०
गुणातीतायै
सर्वातीतायै
शमात्मिकायै
बन्धूककुसुमप्रख्यायै
बालायै
लीलाविनोदिन्यै
सुमङ्गल्यै
सुखकर्यै
सुवेषाढ्यायै
सुवासिन्यै ९७०
सुवासिन्यर्चनप्रीतायै
आशोभनायै
शुद्धमानसायै
बिन्दुतर्पणसन्तुष्टायै

ॐ पूर्वजायै नमः
त्रिपुराम्बिकायै
दशमुद्रासमाराध्यायै
त्रिपुराश्रीवशङ्कर्यै
ज्ञानमुद्रायै
ज्ञानगम्यायै ९८०
ज्ञानज्ञेयस्वरूपिण्यै
योनिमुद्रायै
त्रिखण्डेश्यै
त्रिगुणायै
अम्बायै
त्रिकोणगायै
अनघायै
अद्भुतचारित्रायै
वाञ्छितार्थप्रदायिन्यै
अभ्यासातिशयज्ञातायै ९९०
षडध्वातीतरूपिण्यै
अव्याजकरुणामूर्तये
अज्ञानध्वान्तदीपिकायै
आबालगोपविदितायै
सर्वानुल्लङ्घ्यशासनायै
श्रीचक्रराजनिलयायै
श्रीमत्त्रिपुरसुन्दर्यै
श्रीशिवायै
शिवशक्त्यैक्यरूपिण्यै
श्रीललिताम्बिकायै नमः १०००

इति श्रीललितासहस्रनामावलिः सम्पूर्णा ॥

श्रीललिताष्टोत्तरशतनामावलिः

ॐ-ऐं-ह्रीं-श्री ।

ॐ रजताचलशृङ्गाग्रमध्यस्थायै नमः
हिमाचलमहावंशपावनायै
शङ्करार्धाङ्गसौन्दर्यशरीरायै
लसन्मरकतस्वच्छविग्रहायै
महातिशयसौन्दर्यलावण्यायै
शशाङ्कशेखरप्राणवल्लभायै
सदापञ्चदशात्मैक्यस्वरूपायै
वज्रमाणिक्यकटककिरीटायै
कस्तूरीतिलकोल्लासिनिटलायै
भस्मरेखाङ्कितलसन्मस्तकायै
विकचाम्भोरुहदललोचनायै
शरच्चाम्पेयपुष्पाभनासिकायै
लसत्काञ्चनताटङ्कयुगलायै
मणिदर्पणसङ्काशकपोलायै
ताम्बूलपूरितस्मेरवदनायै
सुपक्वदाडिमीबीजरदनायै
कम्बुपूगसमच्छायकन्धरायै
स्थूलमुक्ताफलोदारसुहारायै
गिरीशबद्धमाङ्गल्यमङ्गलायै
पद्मपाशाङ्कुशलसत्कराब्जायै
पद्मकैरवमन्दारसुमालिन्यै
सुवर्णकुम्भयुग्माभसुकुचायै
रमणीयचतुर्बाहुसंयुक्तायै
कनकाङ्गदकेयूरभूषितायै
बृहत्सौवर्णसौन्दर्यवसनायै
बृहन्नितम्बविलसज्जघनायै
सौभाग्यजातशृङ्गारमध्यमायै
दिव्यभूषणसन्दोहरञ्जितायै

ॐ पारिजातगुणाधिक्यपदाब्जायै नमः
सुपद्मरागसङ्काशचरणायै
कामकोटिमहापद्मपीठस्थायै
श्रीकण्ठनेत्रकुमुदचन्द्रिकायै
सचामररमावाणीवीजितायै
भक्तरक्षणदाक्षिण्यकटाक्षायै
भूतेशालिङ्गनोद्भूतपुलकाङ्ग्यै
अनङ्गजनकापाङ्गवीक्षणायै
ब्रह्मोपेन्द्रशिरोरत्नरञ्जितायै
शचीमुख्यामरवधूसेवितायै
लीलाकल्पितब्रह्माण्डमण्डलायै
अमृतादिमहाशक्तिसंवृतायै
एकातपत्रसाम्राज्यदायिकायै
सनकादिसमाराध्यपादुकायै
देवर्षिभिस्स्तूयमानवैभवायै
कलशोद्भवदुर्वास-पूजितायै
मत्तेभवक्त्रषड्वक्त्रवत्सलायै
चक्रराजमहायन्त्रमध्यवर्तिन्यै
चिदग्निकुण्डसम्भूतसुदेहायै
शशाङ्कखण्डसम्भूतसुदेहायै
मत्तहंसवधूमन्दगमनायै
वन्दारुजनसन्दोहवन्दितायै
अन्तर्मुखजनानन्दफलदायै
पतिव्रताङ्गनाभीष्टफलदायै
अव्याजकरुणापूरपूरितायै
नितान्तसच्चिदानन्दसंयुक्तायै
सहस्रसूर्यसंयुक्तप्रकाशायै
रत्नचिन्तामणिगृहमध्यस्थायै

ॐ हानिवृद्धिगुणाधिक्यरहितायै नमः
महापद्माटवीमध्यनिवासायै
जाग्रत्स्वप्नसुषुप्तीनां साक्षिभूत्यै
महापापौघपापानां विनाशिन्यै
दुष्टभीतिमहाभीतिभञ्जनायै
समस्तदेवदनुजप्रेरकायै
समस्तहृदयाम्भोजनिलयायै
अनाहतमहापद्ममन्दिरायै
सहस्रारसरोजातवासितायै
पुनरावृत्तिरहितपुरस्थायै
वाणीगायत्रीसुतायै
रमाभूमिसुताराध्यपदाब्जायै
लोपामुद्रार्चितश्रीमच्चरणायै
सहस्ररतिसौन्दर्यशरीरायै
भावनामात्रसन्तुष्टहृदयायै
सत्यसम्पूर्णविज्ञानसिद्धिदायै
त्रिलोचनकृतोल्लासफलदायै
श्रीसुधाब्धिमणिद्वीपमध्यगायै
दक्षाध्वरविनिर्भेदसाधनायै
श्रीनाथसोदरीभूतशोभितायै
चन्द्रशेखरभक्तार्तिभञ्जनायै
सर्वोपाधिविनिर्मुक्तचैतन्यायै
नामपारायणाभीष्टफलदायै
सृष्टिस्थितितिरोधानसङ्कल्पायै
श्रीषोडशाक्षरीमन्त्रमध्यगायै
अनाद्यन्तस्वयम्भूतदिव्यमूर्त्यै

ॐ भक्तहंसपरीमुख्यवियोगायै नमः
मातृमण्डलसंयुक्तललितायै
भण्डदैत्यमहासत्त्वनाशनायै
क्रूरभण्डशिरश्छेदनिपुणायै
धात्रच्युतसुराधीशसुखदायै
चण्डमुण्डनिशुम्भादिखण्डनायै
रक्ताक्षरक्तजिह्वादिशिक्षणायै
महिषासुरदोर्वीर्यनिग्रहायै
अभ्रकेशमहोत्साहकारणायै
महेशयुक्तनटनतत्परायै
निजभर्तृमुखाम्भोजचिन्तनायै
वृषभध्वजविज्ञानभावनायै
जन्ममृत्युजरारोगभञ्जनायै
विधेयमुक्तविज्ञानसिद्धिदायै
कामक्रोधादिषड्वर्गनाशनायै
राजराजार्चितपदसरोजायै
सर्ववेदान्तसंसिद्धसुतत्त्वायै
श्रीवीरभक्तविज्ञाननिधनायै
अशेषदुष्टदनुजसूदनायै
साक्षाच्छ्रीदक्षिणामूर्तिमनोज्ञायै
हयमेधाग्रसम्पूज्यमहिमायै
दक्षप्रजापतिसुरवेषाढ्यायै
सुमबाणेक्षुकोदण्डमण्डितायै
नित्ययौवनमाङ्गल्यमङ्गलायै
महादेवसमायुक्तशरीरायै
महादेवरतौत्सुक्यमहादेव्यै

श्रीललिताष्टोत्तरशतनामावलिः सम्पूर्णा

—: ० :—

श्रीललितात्रिशतीस्तोत्ररत्ननामावलिः

अस्य श्रीललितात्रिशतीस्तोत्रमालामन्त्रस्य हयग्रीवऋषये नमः शिरसि १। अनुष्टुप्छन्दसे नमः मुखे २। श्रीललिताम्बादेवतायै नमः हृदये ३। क० ५ बीजाय नमः गुह्ये ४। स० ४ शक्तये नमः पादयोः ५। ह० ६ कीलकाय नमः नाभौ ६। श्रीललिताम्बाप्रसादसिद्धये जपे (पूजने) विनियोगाय सर्वाङ्गे ७॥

कूटत्रय ह्रियावृत्त्य (बाल्या वा) षडङ्गन्यासम्।

अथ ध्यानम्

अतिमधुरचापहस्तामपरिमितामोदबाणसौभाग्याम्।
अरुणामतिशयकरुणामभिनवकुलसुन्दरीं वन्दे ॥१॥

लमितिपञ्चोपचारैः सम्पूज्य

श्रीललितात्रिशतीस्तोत्ररत्ननामावलिः

ॐ ऐं ह्रीं श्रीं

ॐ ककाररूपायै नमः
कल्याण्यै
कल्याणगुणशालिन्यै
कल्याणशैलनिलयायै
कमनीयायै
कलावत्यै
कमलाक्ष्यै
कल्मषघ्न्यै
करुणामृतसागरायै
कदम्बकाननावासायै १०
कदम्बकुसुमप्रियायै
कन्दर्पविद्यायै
कन्दर्पजनकापाङ्गवीक्षणायै
कर्पूरवीटीसौरभ्यकल्लोलित-
ककुप्तटायै

ॐ कलिदोषहरायै नमः
कञ्जलोचनायै
कम्रविग्रहायै
कर्मादिसाक्षिण्यै
कारयित्र्यै
कर्मफलप्रदायै २०
एकाररूपायै
एकाक्षर्यै
एकानेकाक्षराकृत्यै
एतत्तदित्यनिर्देश्यायै
एकानन्दचिदाकृत्यै
एवमित्यागमाबोध्यायै
एकभक्तिमदर्चितायै
एकाग्रचित्तनिर्ध्यातायै
एषणारहितादृतायै

ॐ एलासुगन्धिचिकुरायै नमः ३०
एनःकूटविनाशिन्यै
एकभोगायै
एकरसायै
एकैश्वर्यप्रदायिन्यै
एकातपत्रसाम्राज्यप्रदायै
एकान्तपूजितायै
एधमानप्रभायै
एजदनेकजगदीश्वर्यै
एकवीरादिसंसेव्यायै
एकप्राभवशालिन्यै ४०
ईकाररूपायै
ईशित्र्यै
ईप्सितार्थप्रदायिन्यै
ईदृगित्यविनिर्देश्यायै
ईश्वरत्वविधायिन्यै
ईशानादिब्रह्ममय्यै
ईशित्वाद्यष्टसिद्धिदायै
ईक्षित्र्यै
ईक्षणसृष्टाण्डकोट्यै
ईश्वरवल्लभायै
ईडितायै ५०
ईश्वरार्धाङ्गशरीरायै
ईशाधिदेवतायै
ईश्वरप्रेरणकर्यै
ईशताण्डवसाक्षिण्यै
ईश्वरोत्सङ्गनिलयायै
ईतिबाधाविनाशिन्यै
ईहाविरहितायै
ईशशक्त्यै
ईषत्स्मिताननायै

ॐ लकाररूपायै नमः ६०
ललितायै
लक्ष्मीवाणीनिषेवितायै
लाकिन्यै
ललनारूपायै
लसद्दाडिमपाटलायै
ललन्तिकालसत्फालायै
ललाटनयनार्चितायै
लक्षणोज्ज्वलदिव्याङ्ग्यै
लक्षकोट्यण्डनायिकायै ७०
लक्ष्यार्थायै
लक्षणागम्यायै
लब्धकामायै
लतातनवे
ललामराजदलिकायै
लम्बिमुक्तालताञ्चितायै
लम्बोदरप्रसवे
लभ्यायै
लज्जाढ्यायै
लयवर्जितायै
ह्रींकाररूपायै
ह्रींकारनिलयायै
ह्रींपदप्रियायै
ह्रींकारबीजायै
ह्रींकारमन्त्रायै
ह्रींकारलक्षणायै
ह्रींकारजपसुप्रीतायै
ह्रींमत्यै
ह्रींविभूषणायै
ह्रींशीलायै ९०
ह्रींपदाराध्यायै

ॐ ह्रीगर्भायै नमः
ह्रीपदाभिधायै
ह्रीकारवाच्यायै
ह्रीकारपूज्यायै
ह्रीकारपीठिकायै
ह्रीकारवेद्यायै
ह्रीकारचिन्त्यायै
ह्रीं
ह्रींशरीरिण्यै १००
हकाररूपायै
हलधृक्पूजितायै
हरिणेक्षणायै
हरप्रियायै
हराराध्यायै
हरिब्रह्मेन्द्रवन्दितायै
हयारूढासेविताङ्घ्र्यै
हयमेधसमर्चितायै
हर्यक्षवाहनायै
हंसवाहनायै ११०
हतदानवायै
हत्यादिपापशमन्यै
हरिदश्वादिसेवितायै
हस्तिकुम्भोत्तुङ्गकुचायै
हस्तिकृत्तिप्रियाङ्गनायै
हरिद्राकुङ्कुमदिग्धायै
हर्यश्वाद्यमरार्चितायै
हरिकेशसख्यै
हादिविद्यायै
हालामदालसायै १२०
सकाररूपायै
सर्वज्ञायै

ॐ सर्वेश्यै नमः
सर्वमङ्गलायै
सर्वकर्त्र्यै
सर्वभर्त्र्यै
सर्वहर्त्र्यै
सनातन्यै
सर्वानवद्यायै
सर्वाङ्गसुन्दर्यै १३०
सर्वसाक्षिण्यै
सर्वात्मिकायै
सर्वसौख्यदात्र्यै
सर्वविमोहिन्यै
सर्वाधारायै
सर्वगतायै
सर्वावगुणवर्जितायै
सर्वारुणायै
सर्वमात्रे
सर्वभूषणभूषितायै १४०
ककारार्थायै
कालहन्त्र्यै
कामेश्यै
कामितार्थदायै
कामसञ्जीविन्यै
कल्यायै
कठिनस्तनमण्डलायै
करभोरवे
कलानाथमुख्यै
कचजिताम्बुदायै १५०
कटाक्षस्यन्दिकरुणायै
कपालिप्राणनायिकायै
कारुण्यविग्रहायै

ॐ कान्तायै नमः
कान्तिधूतजपावल्यै
कलालापायै
कम्बुकण्ठ्यै
करनिर्जितपल्लवायै
कल्पवल्लीसमभुजायै
कस्तूरीतिलकाञ्चितायै १६०
हकारार्थायै
हंसगत्यै
हाटकाभरणोज्ज्वलायै
हारहारिकुचाभोगायै
हाकिन्यै
हल्यवर्जितायै
हरित्पतिसमाराध्यायै
हठात्कारहतासुरायै
हर्षप्रदायै
हविर्भोक्त्र्यै १७०
हार्दसन्तमसापहायै
हल्लीसलास्यसन्तुष्टायै
हंसमन्त्रार्थरूपिण्यै
हानोपादाननिर्मुक्तायै
हर्षिण्यै
हरिसोदर्यै
हाहाहूहूमुखस्तुत्यायै
हानिवृद्धिविवर्जितायै
हय्यङ्गवीनहृदयायै
हरिगोपारुणांशुकायै १८०
लकाराख्यायै
लतापूज्यायै
लयस्थित्युद्भवेश्वर्यै
लास्यदर्शनसन्तुष्टायै

ॐ लाभालाभविवर्जितायै नमः
लंघ्येतराज्ञायै
लावण्यशालिन्यै
लघुसिद्धिदायै
लाक्षारससवर्णाभायै
लक्ष्मणाग्रजपूजितायै १९०
लभ्येतरायै
लब्धभक्तिसुलभायै
लाङ्गलायुधायै
लग्नचामरहस्तश्रीशारदापरि-
वीजितायै
लज्जापदसमाराध्यायै
लम्पटायै
लकुलेश्वर्यै
लब्धमानायै
लब्धरसायै
लब्धसम्पत्समुन्नत्यै २००
ह्रींकारिण्यै
ह्रींकाराद्यायै
ह्रींमध्यायै
ह्रींशिखामणये
ह्रींकारकुण्डाग्निशिखायै
ह्रींकारशशिचन्द्रिकायै
ह्रींकारभास्कररुच्यै
ह्रींकाराम्भोदचञ्चलायै
ह्रीङ्कारकन्दाङ्कुरिकायै
ह्रींकारैकपरायणायै २१०
ह्रींकारदीर्घिकाहंस्यै
ह्रींकारोद्यानकेकिन्यै
ह्रीङ्कारारण्यहरिण्यै
ह्रीङ्कारावालवल्ल्यै

ॐ ह्रीङ्कारपञ्जरशुक्यै नमः
ह्रीकाराङ्गणदीपिकायै
ह्रीङ्कारकन्दरासिंह्यै
ह्रीकाराम्भोजभृङ्गिकायै
ह्रीङ्कारसुमनोमाध्व्यै
ह्रीकारतरुमञ्जर्यै २२०
सकाराख्यायै
समरसायै
सकलागमसंस्तुतायै
सर्ववेदान्ततात्पर्यभूमये
सदसदाश्रयायै
सकलायै
सच्चिदानन्दायै
साध्यायै
सद्गतिदायिन्यै
सनकादिमुनिध्येयायै २३०
सदाशिवकुटुम्बिन्यै
सकलाधिष्ठानरूपायै
सत्यरूपायै
समाकृत्यै
सर्वप्रपञ्चनिर्मात्र्यै
समानाधिकवर्जितायै
सर्वोत्तुङ्गायै
सङ्गहीनायै
सगुणायै
सकलेष्टदायै २४०
ककारिण्यै

ॐ काव्यलोलायै नमः
कामेश्वरमनोहरायै
कामेश्वरप्राणनाड्यै
कामेशोत्सङ्गवासिन्यै
कामेश्वरालिङ्गिताङ्ग्यै
कामेश्वरसुखप्रदायै
कामेश्वरप्रणयिन्यै
कामेश्वरविलासिन्यै
कामेश्वरतपस्सिद्धयै २५०
कामेश्वरमनःप्रियायै
कामेश्वरप्राणनाथायै
कामेश्वरविमोहिन्यै
कामेश्वरब्रह्मविद्यायै
कामेश्वरगृहेश्वर्यै
कामेश्वराह्लादकर्यै
कामेश्वरमहेश्वर्यै
कामेश्वर्यै
कामकोटिनिलयायै
काङ्क्षितार्थदायै २६०
लकारिण्यै
लब्धरूपायै
लब्धधियै
लब्धवाञ्छितायै
लब्धपापमनोदूरायै
लब्धाहङ्कारदुर्गमायै
लब्धशक्त्यै
लब्धदेहायै

ॐ लब्धैश्वर्यसमुन्नत्यै नमः
लब्धवृद्धये २७०
लब्धलीलायै
लब्धयौवनशालिन्यै
लब्धातिशयसर्वांगसौन्दर्यायै
लब्धविभ्रमायै
लब्धरागायै
लब्धपतये
लब्धनानागमस्थित्यै
लब्धभोगायै
लब्धसुखायै
लब्धहर्षाभिपूरितायै २८०
ह्रीकारमूर्तये
ह्रीकारसौधश्रृङ्गकपोतिकायै
ह्रीकारदुग्धाब्धिसुधायै
ह्रीकारकमलेन्दिरायै
ह्रीकारमणिदीपार्चिषे

ॐ ह्रीकारतरुशारिकायै नमः
ह्रीकारपेटकमणये
ह्रीकारादर्शबिंबितायै
ह्रीकारकोशासिलतायै
ह्रीकारस्थाननर्तक्यै २९०
ह्रीकारशुक्तिकामुक्तामणये
ह्रीकारबोधितायै
ह्रीकारमणिसौवर्णस्तंभविद्रुम-पुत्रिकायै
ह्रीकारवेदोपनिषदे
ह्रीकाराध्वरदक्षिणायै
ह्रीकारनन्दनारामनवकल्पक-वल्लर्यै
ह्रीकारहिमवद्गङ्गायै
ह्रीकारार्णवकौस्तुभायै
ह्रीकारमन्त्रसर्वस्वायै
ह्रीकारपरसौख्यदायै ३००

ॐ, ऐं, ह्रीं, श्रीं, श्रीमद्राजराजेश्वर्यै नमः

समाप्तम्

अथ महायाग-क्रमः

भद्रं कर्णेभिरितिशान्तिः

भावनोपनिषत् प्रयोगविधिसमेता

१. श्रीगुरुस्सर्वकारणभूता शक्तिः ॥ २ तेन नवरन्ध्ररूपो देहः ॥

३. नवचक्ररूपं श्रीचक्रम् ॥ ४. वाराहीपितृरूपा कुरुकुल्ला बलिदेवतामाता ॥

५. पुरुषार्थास्सागराः ॥ ६. देहो नवरत्नद्वीपः ॥

७. त्वगादिसप्तधातुरोमसंयुक्तः ॥

८. सङ्कल्पाः कल्पतरवः तेजः कल्पकोद्यानम् ॥

९. रसनया भाव्यमाना मधुराम्लतिक्तकटुकषायलवणरसाः षडृतवः ॥

१०. ज्ञानमर्घ्यं ज्ञेयं हविः ज्ञाता होता ज्ञातृज्ञानज्ञेयानामभेदभावनं श्रीचक्रपूजनम् ॥

११. नियतिश्शृङ्गारादयो रसा अणिमादिसिद्धयः कामक्रोधलोभमोहमदमात्सर्यपुण्यपापमय्यो ब्राह्म्याद्यष्टशक्तयः ।

१२. आधारनवकं मुद्राशक्तयः ॥

१३. पृथिव्यप्तेजोवाय्वाकाशश्रोत्रत्वक्चक्षुर्जिह्वाघ्राणवाक्पाणिपादपायूपस्थानि मनोविकारः कामाकर्षिण्यादिषोडशशक्तयः ॥

१४. वचनादानगमनविसर्गानन्दहानोपादानोपेक्षाख्यबुद्धयोऽनङ्गकुसुमाद्यष्टौ ॥

१५. अलम्बुसा कुहूर्विश्वोदरा वारुणी हस्तिजिह्वा यशोवती पयस्विनी गान्धारी पूषा शङ्खिनी सरस्वती इडा पिङ्गला सुषुम्ना चेति चतुर्दशनाड्यः सर्वसंक्षोभिण्यादिचतुर्दशशक्तयः ॥

१६. प्राणापानव्यानोदानसमाननागकूर्मकृकरदेवदत्तधनञ्जया दशवायवस्सर्वसिद्धिप्रदादिबहिर्दशारदेवताः ॥

१७. एतद्वायुसंसर्गकोपाधिभेदेन रेचकः पाचकश्शोषको दाहकः प्लावक इति प्राणमुख्यत्वेन पञ्चधा जठराग्निर्भवति ॥

१८. क्षारक उद्गारकः क्षोभको जृम्भको मोहकः इति नागप्राधान्येन पञ्चविधास्ते मनुष्याणां देहगाः भक्ष्यभोज्यचोष्यलेह्यपेयात्मकपञ्चविधमन्नं पाचयन्ति ॥

१९. एता दशवह्निकलास्सर्वज्ञाद्या अन्तर्दशारगा देवताः ॥

२०. शीतोष्णसुखदुःखेच्छास्सत्त्वरजस्तमोगुणाः वशिन्यादिशक्तयोऽष्टौ ॥

२१. शब्दादितन्मात्राः पञ्चपुष्पबाणाः ॥

२२. मन इक्षुधनुः २३. रागः पाशः २४. द्वेषोऽङ्कुशः ॥

२५. अव्यक्तमहदहङ्काराः कामेश्वरीवज्रेश्वरीभगमालिन्योऽन्तस्त्रिकोणगा देवताः ।

२६. निरुपाधिकीसंविदेव कामेश्वरः ॥

२७. सदानन्दपूर्णः स्वात्मैव परदेवता ललिता ॥

२८. लौहित्यमेतस्य सर्वस्य विमर्शः

२९. अनन्यचित्तत्वेन च सिद्धिः ॥ ३०. भावनायाः क्रिया उपचाराः ॥

३१. अहं त्वमस्ति नास्ति कर्तव्यमकर्तव्यमुपासितव्यमित्यादि विकल्पाना आत्मनि विलापनं होमः ॥

३२. भावनाविषयाणामभेदभावनन्तर्पणम् ॥

३३. पञ्चदशतिथिरूपेण कालस्य परिणामावलोकनम् पञ्चदश नित्याः ॥

३४. एवं मुहूर्तत्रितयं मुहूर्तद्वितयं मुहूर्तमात्रं वा भावनापरो जीवन्मुक्तो भवति स एव शिवयोगीति गद्यते ॥

३५. कादिमतेनान्तश्चक्रभावनाः प्रतिपादिताः ॥

३६. य एवं वेद सोऽथर्वशिरोऽधीते ॥ इति भावनोपनिषत् ।

अथ भावनोपनिषदा मुक्त्यै या भावनाः कथिताः ।
भास्कररायो रचयति तासामेव प्रयोगविधिम् ।

प्रयोगविधिः

मूलेन प्राणानायम्य ऋष्यादिन्यासमत्र्य कृत्वा ।
विवेकवृत्त्यवच्छिन्नचिच्छक्तिरूपगुरुरूपात्मने श्रीगुरवे नमः ।

(इति ब्रह्मरन्ध्रं स्पृष्ट्वा)

दक्षश्रोत्ररूपपयस्विन्यात्मने प्रकाशानन्दनाथाय नमः ।
वामश्रोत्ररूपशङ्खिन्यात्मने विमर्शानन्दनाथाय नमः ।
जिह्वारूपसरस्वत्यात्मने अनन्तानन्दनाथाय नमः ।
दक्षनेत्ररूपपूषात्मने ज्ञानानन्दनाथाय नमः ।
वामनेत्ररूपगान्धार्यात्मने सत्यानन्दनाथाय नमः ।
ध्वजरूपकुह्वात्मने पूर्णानन्दनाथाय नमः ।
दक्षनासारूपपिङ्गलात्मने स्वभावानन्दनाथाय नमः ।
वामनासारूपेडात्मने प्रतिभानन्दनाथाय नमः ।
पायुरूपालम्बुसात्मने सहजानन्दनाथाय नमः ।

(इति तत्तत्स्थानानि संस्पृश्य)

नवचक्ररूपश्रीचक्रात्मने देहाय नमः ।
पितृरूपास्थ्याद्यवयवात्मने वाराह्यै नमः ।
मातृरूपमांसाद्यवयवात्मने बलिदेवतायै कुरुकुल्लायै नमः ।

(इति त्रिर्व्यापकं कृत्वा)

देहपश्चाद्भागरूपधर्मात्मने इक्षुसागराय नमः
देहदक्षिणभागरूपार्थात्मने सुरासागराय नमः
देहप्राग्भागरूपकामात्मने घृतसागराय नमः
देहोदग्भागरूपमोक्षात्मने क्षीरसागराय नमः
देहात्मने नवरत्नद्वीपाय नमः (इति त्रिर्व्यापकं कृत्वा)

१ मांसात्मने पुष्परागरत्नद्वीपाय नमः २ रोमात्मने नीलरत्नद्वीपाय नमः
३ त्वगात्मने वैडूर्यरत्नद्वीपाय नमः ४ रुधिरात्मने विद्रुमरत्नद्वीपाय नमः
५ शुक्रात्मने मौक्तिकरत्नद्वीपाय नमः ६ मज्जात्मने मरकतरत्नद्वीपाय नमः
७ अस्थ्यात्मने वज्ररत्नद्वीपाय नमः ८ मेदात्मने गोमेदरत्नद्वीपाय नमः
९. ओज आत्मने पद्मरागरत्नद्वीपाय नमः

१ मासाधिदेवतायै कालचक्रेश्वर्यै नमः २ रोमाधिदेवतायै रुद्रचक्रेश्वर्यै नमः
३ त्वगधिदेवतायै मातृचक्रेश्वर्यै नमः ४ रुधिराधिदेवतायै रत्नचक्रेश्वर्यै नमः
५ शुक्राधिदेवतायै दशाचक्रेश्वर्यै नमः ६ मज्जाधिदेवतायै गुरुचक्रेश्वर्यै नमः
७ अस्थ्यधिदेवतायै तत्वचक्रेश्वर्यै नमः ८ मेदोऽधिदेवतायै ग्रहचक्रेश्वर्यै नमः
९ ओजोऽधिदेवतायै मूर्तिचक्रेश्वर्यै नमः

सङ्कल्पात्मभ्य कल्पतरुभ्यो नमः । तेज आत्मने कल्पकोद्यानाय नमः ॥
मधुररसात्मने वसन्तर्तवे नमः । अम्लरसात्मने ग्रीष्मर्तवे नमः ॥
तिक्तरसात्मने वर्षर्तवे नमः । कटुरसात्मने शरदृतवे नमः ॥
कषायरसात्मने हेमन्तर्तवे नमः । लवणरसात्मने शिशिरर्तवे नमः ॥
इन्द्रियात्मभ्योऽश्वेभ्यो नमः । इन्द्रियार्थात्मभ्यो गजेभ्यो नमः ॥
करुणात्मिकायैतोयपरिखायै नमः । ओजपूञ्जात्मने माणिक्यमण्डपाय नमः ॥
ज्ञानात्मने विशेषार्घ्याय नमः । ज्ञेयात्मने हविषे नमः ॥
ज्ञात्रात्मने होत्रे नमः । चिदात्मने श्रीमहात्रिपुरसुन्दर्यै नमः ॥

(इति तत्तदनुसन्धानपूर्वकं मनसा नत्वा ज्ञातृज्ञानज्ञेयाना नामरूपविलापनानुसन्धानेन चिन्मात्ररूपताविभावनेन क्षणं विश्रम्य)

पञ्चदश नित्या यजेत् । हृदि हस्त निधाय ।
(१ त्रिपुरा २ त्रिपुरेशी ३ त्रिपुरसुन्दरी ४ त्रिपुरवासिनी ५ त्रिपुराश्री ६ त्रिपुरमालिनी ७ त्रिपुरासिद्धा ८ त्रिपुराम्बा ९ महात्रिपुरसुन्दरी, इति मतान्तरे चक्रेश्वरीनवकमाम्नातम्)

चत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मनेप्रतिपत्तिथिरूपकामेश्वरीनित्यायै नमः ॥
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
द्वितीयातिथिरूपभगमालिनीनित्यायै नमः ॥
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
तृतीयातिथिरूपनित्यक्लिन्नानित्यायै नमः ॥
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
चतुर्थीतिथिरूपभेरुण्डानित्यायै नमः ॥

तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
पञ्चमीतिथिरूपवह्निवासिनीनित्यायै नमः ॥
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
षष्ठीतिथिरूपमहावज्रेश्वरीनित्यायै नमः ॥
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
सप्तमीतिथिरूपशिवदूतीनित्यायै नमः ॥
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
अष्टमीतिथिरूपत्वरितानित्यायै नमः ॥
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
नवमीतिथिरूपकुलसुन्दरीनित्यायै नमः ॥
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
दशमीतिथिरूपनित्यानित्यायै नमः ॥
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
एकादशीतिथिरूपनीलपताकानित्यायै नमः ॥
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
द्वादशीतिथिरूपविजयानित्यायै नमः ॥
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
त्रयोदशीतिथिरूपसर्वमङ्गलानित्यायै नमः ॥
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
चतुर्दशीतिथिरूपज्वालामालिनीनित्यायै नमः ॥
तदुत्तरचत्वारिंशदधिकचतुर्दशशतश्वासात्मने
पौर्णमासीतिथिरूपचित्रानित्यायै नमः ॥

(नित्यामन्त्रानपि तत्तदादौ केचित्पठन्ति इयं नित्याभावना सर्वान्त एव वा कार्या)

चतुरस्राद्यरेखायै नमः इति वक्ष्यमाणस्थानेषु व्यापकं न्यस्य ॥
दक्षासपृष्ठरूपस्थानान्तरसात्मने अणिमासिद्ध्यै नमः

दक्षपाण्यङ्गुल्यग्ररूपाद्भुतरसात्मने लघिमासिद्धये नमः
दक्षस्फिग्रूपकरुणरसात्मने महिमासिद्धये नमः
दक्षपादाङ्गुल्यग्ररूपवीररसात्मने ईशित्वसिद्धये नमः
वामपादाङ्गुल्यग्ररूपहास्यरसात्मने वशित्वसिद्धये नमः
वामस्फिग्रूपबीभत्सरसात्मने प्राकाम्यसिद्धये नमः
वामपाण्यङ्गुल्यग्ररूपरौद्ररसात्मने भुक्तिसिद्धये नमः
वामांसपृष्ठरूपभयानकरसात्मने इच्छासिद्धये नमः
चूलीमूलरूपशृङ्गाररसात्मने प्राप्तिसिद्धये नमः (कर्णमूले)
चूलीपृष्ठरूपनियत्यात्मने सर्वकामसिद्धये नमः
चतुरस्रमध्यरेखायै नमः इति (तदन्तर्व्यापक न्यस्य)
पादाङ्गुष्ठद्वयरूपकामात्मने ब्राह्मयै नमः
दक्षपार्श्वरूपक्रोधात्मने माहेश्वर्यै नमः
मूर्धरूपलोभात्मने कौमार्यै नमः
वामपार्श्वरूपमोहात्मने वैष्णव्यै नमः
वामजानुरूपमदात्मने वाराह्यै नमः
दक्षजानुरूपमात्सर्यात्मने इन्द्राण्यै नमः
दक्षबहिरंसरूपपुण्यात्मने चामुण्डायै नमः
वामबहिरंसरूपपापात्मने महालक्ष्म्यै नमः
चतुरश्रान्त्यरेखायै नमः (इतितदन्तर्व्यापकं न्यस्य) पादाङ्गुष्ठद्वयरूपाधः-
सहस्रदलकमलात्मने सर्वसंक्षोभिणीमुद्रायै नमः
दक्षपार्श्वरूपमूलाधारात्मने सर्वविद्राविणीमुद्राशक्त्यै नमः
मूर्धरूपस्वाधिष्ठानात्मने सर्वाकर्षिणीमुद्राशक्त्यै नमः
वामपार्श्वरूपमणिपूरात्मने सर्ववशङ्करीमुद्राशक्त्यै नमः
वामजानुरूपानाहतात्मने सर्वोन्मादिनीमुद्राशक्त्यै नमः
दक्षजानुरूपविशुद्धयात्मने सर्वमहाङ्कुशामुद्राशक्त्यै नमः
दक्षोरुरूपेन्द्रयोन्यात्मने सर्वखेचरीमुद्राशक्त्यै नमः

वामोरुरूपाशात्मने सर्वबीजमुद्राशक्त्यै नमः
द्वादशान्तरूपोर्ध्वसहस्रदलकमलात्मने सर्वयोनिमुद्रायै नमः
पादाङ्गुष्ठरूपाधारनवकात्मने सर्वत्रिखण्डामुद्रायै नमः
हृद्रूपत्रैलोक्यमोहनचक्रेश्वर्यै त्रिपुरायै नमः इति तत्तत्स्थानानि स्पृष्ट्वा एता-स्सर्वास्स्वात्माभिन्नत्वेन विभाव्य आत्मनः अपरिच्छिन्नत्वं भावयेत् ।
प्रकटयोगिनीरूपस्वात्मने अणिमासिद्धयै नमः ॥
अपरिच्छिन्नस्वात्माने सर्वसंक्षोभिणीमुद्रायै नमः ॥
इति प्रयोगपूर्वकं वा भिन्नावयेत् ॥

षोडशदलपद्माय नमः इति तदन्तर्व्यापकं न्यस्य
दक्षश्रोत्रपृष्ठरूपपृथिव्यात्मने कामकर्षिणीनित्याकलायै नमः
दक्षांसरूपवारात्मने बुद्ध्याकर्षिणीनित्याकलायै नमः
दक्षकूर्पररूपतेज आत्मने अहङ्काराकर्षिणीनित्याकलायै नमः
दक्षकरपृष्ठरूपवाय्वात्मने शब्दाकर्षिणी नित्याकलायै नमः
दक्षोरुरूपाकाशात्मने स्पर्शाकर्षिणीनित्याकलायै नमः
दक्षजानुरूपश्रोत्रात्मने रूपाकर्षिणीनित्याकलायै नमः
दक्षगुल्फरूपत्वगात्मने रसाकर्षिणीनित्याकलायै नमः
दक्षपादतलरूपचक्षुरात्मने गन्धाकर्षिणीनित्याकलायै नमः
वामपादतलरूपजिह्वात्मने चित्ताकर्षिणीनित्याकलायै नमः
वामगुल्फरूपघ्राणात्मने धैर्याकर्षिणीनित्याकलायै नमः
वामजानुरूपवागात्मने स्मृत्याकर्षिणीनित्याकलायै नमः
वामोरुरूपपाण्यात्मने नामाकर्षिणीनित्याकलायै नमः
वामकरपृष्ठरूपपादात्मने बीजाकर्षिणीनित्याकलायै नमः
वामकूर्पररूपपाय्वात्मने आत्माकर्षिणीनित्याकलायै नमः
वामांसरूपोपस्थात्मने अमृताकर्षिणीनित्याकलायै नमः
वामश्रोत्रपृष्ठरूपविकृतमनआत्मने शरीराकर्षिणीनित्याकलायै नमः
हृद्रूपसर्वाशापरिपूरकचक्रेश्वर्यै त्रिपुरेश्यै नमः ॥

गुप्तयोगिनीरूपस्वात्मने लघिमासिद्धयै नमः ।।
अपरिच्छिन्नरूपस्वात्मने सर्वविद्राविणीमुद्रायै नमः
अष्टदलपद्माय नमः इति तदन्तर्व्यापकं न्यस्य,
दक्षशङ्खरूपवचनात्मने अनङ्गकुसुमायै नमः (कपालास्थि)
दक्षजानुरूपादानात्मने अनङ्गमेखलायै नमः (स्कन्धसन्धि)
दक्षोरुरूपगमनात्मने अनङ्गमदनायै नमः
दक्षगुल्फरूपविसर्गात्मने अनङ्गमदनातुरायै नमः
वामगुल्फरूपानन्दात्मने अनङ्गरेखायै नमः
वामोरुरूपहानाख्यबुद्धयात्मने अनङ्गवेगायै नमः
वामजानुरूपोपादानाख्यबुद्धयात्मने अनङ्गाङ्कुशायै नमः
वामशङ्खरूपोपेक्षाख्यबुद्धयात्मने अनङ्गमालिन्यै नमः
हृद्रूपसर्वसंक्षोभणचक्रेश्वर्यै त्रिपुरसुन्दर्यै नमः ।
गुप्ततरयोगिनीरूपस्वात्मात्मने महिमासिद्धयै नमः ।
अपरिच्छिन्नरूपस्वात्मात्मने सर्वाकर्षिणीमुद्रायै नमः ।
चतुर्दशारचक्राय नमः (इति तदन्तर्व्यापकं न्यस्य) ।
ललाटमध्यभागरूपालंबुसात्मने सर्वसंक्षोभिणीशक्त्यै नमः ।
ललाटदक्षभागरूपकुहूात्मने सर्वविद्राविणीशक्त्यै नमः ।
दक्षगण्डरूपविश्वोदरात्मने सर्वाकर्षिणीशक्त्यै नमः ।।
दक्षांसरूपवारुण्यात्मने सर्वाह्लादिनीशक्त्यै नमः ।।
दक्षपार्श्वरूपहस्तिजिह्वात्मने सर्वसंमोहिनीशक्त्यै नमः ।।
दक्षोरुरूपयशोवत्यात्मने सर्वस्तम्भिनीशक्त्यै नमः ।।
दक्षजंघारूपपयस्विन्यात्मने सर्वजृम्भिणीशक्त्यै नमः ।।
वामजंघारूपगान्धार्यात्मने सर्ववशङ्करीशक्त्यै नमः ।।
वामोरुरूपपूषात्मने सर्वरञ्जिनी शक्त्यै नमः ।।
वामपार्श्वरूपशङ्खिन्यात्मने सर्वोन्मादिनीशक्त्यै नमः ।
वामांसरूपसरस्वत्यात्मने सर्वार्थसाधिनीशक्त्यै नमः ।।

वामगण्डरूपेडात्मने सर्वसंपत्तिपूरणीशक्त्यै नमः ॥
ललाटवामभागरूपपिंगलात्मने सर्वमन्त्रमयीशक्त्यै नमः ॥
ललाटपृष्ठभागरूप सुषुम्नात्मने सर्वद्वन्द्वक्षयङ्करी शक्त्यै नमः ॥
हृद्रूपसर्वसौभाग्यदायकचक्रेश्वर्यै त्रिपुरवासिन्यै नमः ॥
सम्प्रदाययोगिनीरूपस्वात्मात्मने ईशित्वसिद्धये नमः ॥
अपरिच्छिन्नरूपस्वात्मात्मने सर्ववशङ्करीमुद्रायै नमः ॥
बहिर्दशारचक्राय नमः इति व्यापकं न्यस्य ॥
दक्षाक्षिरूपप्राणात्मने सर्वसिद्धिप्रदादेव्यै नमः ॥
नासामूलरूपापानात्मने सर्वसम्पत्प्रदादेव्यै नमः ॥
वामनेत्ररूपव्यानात्मने सर्वप्रियङ्करीदेव्यै नमः ॥
कुक्षीशकोणरूपोदानात्मने सर्वमङ्गलकारिणीदेव्यै नमः ॥
कुक्षिवायुकोणरूपसमानात्मने सर्वकामप्रदादेव्यै नमः ॥
वामजानुरूपनागात्मने सर्वदुःखविमोचिनीदेव्यै नमः ॥
गुदरूपकूर्मात्मने सर्वमृत्युप्रशमनीदेव्यै नमः ॥
दक्षजानुरूपकृकरात्मने सर्वविघ्नविनाशिनीदेव्यै नमः ॥
कुक्षिनिर्ऋतिकोणरूपदेवदत्तात्मने सर्वांगसुन्दरीदेव्यै नमः ॥
कुक्षिवह्निकोणरूपधनञ्जयात्मने सर्वसौभाग्यदायिनीदेव्यै नमः ॥
हृद्रूपसर्वार्थसाधकचक्रेश्वर्यै त्रिपुराश्रियै नमः ॥
कुलकौलयोगिनीरूपस्वात्मात्मने वशित्वसिद्ध्यै नमः
अपरिच्छिन्नस्वात्मात्मने सर्वोन्मादिनीमुद्रायै नमः ॥
अन्तर्दशारचक्राय नमः इति (तदन्तर्व्यापकं न्यस्य) ॥
दक्षनासारूपरेचकाग्न्यात्मने सर्वज्ञादेव्यै नमः ॥
दक्षसृक्वीणीरूपपाचकाग्न्यात्मने सर्वशक्तिदेव्यै नमः ॥ (ओष्ठप्रान्ते)
दक्षस्तनरूपशोषकाग्न्यात्मने सर्वैश्वर्यप्रदादेव्यै नमः ॥
दक्षवृषणरूपदाहकाग्न्यात्मने सर्वज्ञानमयीदेव्यै नमः ॥
सीविनीरूपप्लवकाग्न्यात्मने सर्वव्याधिविनाशिनीदेव्यै नमः ॥

वामवृषणरूपक्षारकाग्न्यात्मने सर्वाधारस्वरूपादेव्यै नमः ॥
वामस्तनरूपोद्गारकाग्न्यात्मने सर्वपापहरादेव्यै नमः ॥
वामसृक्किरूपक्षोभकाग्न्यात्मने सर्वानन्दमयीदेव्यै नमः ॥
वामनासारूपजृम्भकाग्न्यात्मने सर्वरक्षास्वरूपिणीदेव्यै नमः ॥
नासाग्ररूपमोहकाग्न्यात्मने सर्वेप्सितफलप्रदादेव्यै नमः ॥
हृद्रूपसर्वरक्षाकरचक्रेश्वर्यै त्रिपुरमालिन्यै नमः ॥
निगर्भयोगिनीरूपस्वात्मात्मने प्राकाम्यसिद्ध्यै नमः ॥
अपरिच्छिन्नरूपस्वात्मात्मने सर्वमहाङ्कुशामुद्रायै नमः ॥
अष्टकोणचक्राय नम. (इति तदन्तर्व्यापक न्यस्य) ॥
चिबुकदक्षभागरूपशीतात्मने वशिनीवाग्देवतायै नमः ॥
कण्ठदक्षभागरूपोष्णात्मने कामेश्वरीवाग्देवतायै नमः ॥
हृदयदक्षभागरूपसुखात्मने मोदिनीवाग्देवतायै नमः ॥
नाभिदक्षभागरूपदु खात्मने विमलावाग्देवतायै नमः ॥
नाभिवामभागरूपेच्छात्मने अरुणावाग्देवतायै नमः ॥
हृदयवामभागरूपसत्वगुणात्मने जयिनीवाग्देवतायै नमः ॥
कण्ठवामभागरूपरजोगुणात्मने सर्वेश्वरीवाग्देवतायै नमः ॥
चिबुकवामभागरूपतमोगुणात्मने कौलिनीवाग्देवतायै नमः ॥
हृद्रूपसर्वरोगहरचक्रेश्वर्यै त्रिपुरासिद्धायै नमः ॥
रहस्ययोगिनीरूपस्वात्मात्मने भुक्तिसिद्ध्यै नमः ॥
अपरिच्छिन्नरूपस्वात्मात्मने सर्वखेचरीमुद्रायै नमः ॥

हृदयत्रिकोणाधोभागरूपपञ्चतन्मात्रात्मकेभ्यः सर्वजृम्भणबाणेभ्यो नमः ॥

तद्दक्षभागरूपमनआत्मकाभ्या सर्वसंमोहनधनुर्भ्या नम ॥
तदूर्ध्वभागरूपरागात्मकाभ्या सर्ववशङ्करपाशाभ्या नमः ॥
तद्वामभागरूपद्वेषात्मकाभ्या सर्वस्तम्भकराङ्कुशाभ्या नमः ॥
त्रिकोणचक्राय नम· इति व्यापक न्यस्य,
हृदयत्रिकोणाग्रभागरूपमहत्तत्वात्मने कामेश्वर्यै देव्यै नमः ॥

तद्दक्षकोणरूपाहङ्कारात्मने वज्रेश्वर्यै देव्यै नमः ॥
तद्वामकोणरूपाव्यक्तात्मने भगमालिनीदेव्यै नमः ॥
हृद्रूपसर्वसिद्धिप्रदचक्रेश्वर्यै त्रिपुराम्बायै नमः ॥
अतिरहस्ययोगिनीरूपस्वात्मात्मने इच्छासिद्ध्यै नमः ॥
अपरिच्छिन्नरूपस्वात्मात्मने सर्वबीजमुद्रायै नमः ॥
बिन्दुचक्राय नमः इति (व्यापकं न्यस्य),
हृन्मध्यरूपनिरुपाधिकसंविन्मात्ररूपकामेश्वराङ्कनिलयायै सच्चिदानन्दैक-ब्रह्मात्मिकायै परदेवतायै ललितायै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः ॥
निरुपाधिकचैतन्यमेव सच्चिदानन्दात्मकमन्तःकरणप्रतिबिम्बितसत्तदहमेवे-त्यनुसन्धानं ललिताया लौहित्यमिति विभाव्य ॥
अभेदसम्बन्धेन सत्वचित्वादिविशिष्टसंविदः केवलसंविदश्च तादात्म्यसम्बन्ध-रूपं कामेश्वराङ्कयन्त्रणं विशेषणं विभाव्य ॥
उपाध्यभावरूपशुक्लत्वोपलक्षिता सती शुद्धसंविदेव शुक्लचरणः ॥
चित्वविशिष्टसंवित्प्राथमिकपराहन्तात्मकमृत्युरूपेण
रागेणोपलक्षितासती रक्तचरणः ।
अहमाकारवृत्तिनिरूपिता विषयता चरणयोर्मिथो
विशेष्यविशेषणभावरूपैव तदुभयसामरस्यमिति विभाव्य ॥
हृद्रूपसर्वानन्दमयचक्रेश्वर्यै महात्रिपुरसुन्दर्यै नमः ॥
परापररहस्ययोगिनीरूपस्वात्मात्मने प्राप्तिसिद्ध्यै नमः ।
अपरिच्छिन्नरूपस्वात्मात्मने सर्वयोनिमुद्रायै नमः ॥
इति तत्तत्स्थानस्पर्शपूर्वकं सम्यगनुसन्धायोपचारान् समर्पयेत् ॥
तद्यथा एवमपरिच्छिन्नतया भाविताया ललितायाः स्वेमहिम्न्येवप्रतिष्ठित-मानसमनुसन्दधामि ॥
विमदादिस्थूलप्रपञ्चरूपपादगतनामरूपात्मकमलस्य सच्चिदानन्दैकरूपत्व-भावनाजलेन क्षालनं पाद्यं भावयामि ॥
सूक्ष्मप्रपञ्चरूपहस्तगतस्य तस्य क्षालनमर्घ्यं चिन्तयामि ॥

भावनारूपाणामपामपि कवलीकाररूपमाचमनं भावयामि ॥

सत्त्वचित्त्वानन्दत्वाद्यखिलावयवावच्छेदेन भावनाजलसम्पर्करूपं स्नानमनुचिन्तयामि। तेष्वेवावयवेषु प्रसक्ताया भावनामलकवृत्तिविनेप्यतायाः प्रोञ्छनं वृत्त्यविषयत्वभावनेन वस्त्रं कल्पयामि ॥

निर्विषयत्वनिरञ्जनत्वाशोकत्वामृतत्वाद्यनेकधर्मरूप्याभरणानि धर्म्यभेदभावभावनेन समर्पयामि ॥

स्वशरीरघटकपार्थिवभागानां जडतापनयेन चिन्मात्रतावशेषरूपं गन्धं प्रयच्छामि ॥

आकाशभागानां तथा भावनेन पुष्पाणि समर्पयामि ॥

वायव्यभागानान्तथाभावनया धूपयामि ॥

तैजसभागानान्तथाकरणेनोद्दीपयामि ॥

अमृतभागास्तथा विभाव्य निवेदयामि ॥

षोडशान्तेन्दुमण्डलस्य तथा भावनेन ताम्बूलकल्पमाचरामि ॥

परापश्यन्त्यादिनिखिलशब्दानां नादद्वारा ब्रह्मण्युपसंहारचिन्तनेन स्तवीमि ॥

विषयेषु धावमानानां चित्तवृत्तीनां विषयजडतानिरासेन ब्रह्मणि प्रविलापनेन प्रदक्षिणीकरोमि ॥

तासां विषयेभ्यः परावर्तनेन ब्रह्मैकप्रवणतया प्रणमामि ॥ इत्युपचर्यं जुहुयात् ॥

विहिताविहितविषयावृत्तय उत्सशः अहं त्वं गुरुर्देवतेत्यादयः तास्सर्वाश्चक्रराजस्थानन्तशक्तिकदम्बरूपास्तत्तत्सूक्ष्मरूपा ये ये संस्कारास्तत्सर्वं चिन्मात्रमेवेति विभावनया निर्व्युत्थानं स्वात्मनि जुहोमि ॥

प्रकृतभावनासु ये गुरुचरणादिशक्तिकदम्बान्ताविषयास्ते सर्वेऽपि चिन्मात्ररूपा न परस्परं भिद्यन्ते इति भावनया तर्पयामि ॥

तिथिचक्रमुक्तरूपं कालचक्रं देशचक्रं च सर्वमस्ति भाति प्रियं च न तु नामरूपवदतस्सर्वं ब्रह्मैवेति विभावयामि ॥

अथवा, पूर्वलिखिता नित्याभावनामिहैव श्वासप्रविलापनफलिकां कुर्यात्, तेन मनःपवनात्मनामैक्यनिभालनेन त्रीन्मुहूर्तान् द्वावेकं वा मुहूर्तमविच्छिन्नं व्यापयेत्।

तस्य देवतात्मैक्यसिद्धिः चिन्तितकार्याण्ययत्नेन सिद्ध्यन्ति ॥
ततोऽवतीर्य प्राणायामत्रयमृष्यादिन्यासत्रयञ्च कृत्वा गुरुं स्तुवीतेति सर्वं शिवम् ।

अथर्वशिरसि प्रोक्तभावनानां सतां मुदे ।
इति भास्कररायेण प्रयोगविधिरीरितः ॥

इति प्रयोगविधिः समाप्तः

श्यामे सगीतमातः परमिवनिलये मुख्यसाचिव्यभारो-
द्वाहे दक्षे दयापूरितनिजहृदये मामकी दैन्यवृत्तिम् ।
श्रीमत्सिंहासनेश्यां भववनपतितान्दावदग्धान्नमस्ते
त्रातुं पीयूषवर्षैः कथय परिकरबद्धवत्यां विविक्तैः ॥

यत्रास्ति भोगो न च तत्र मोक्षः यत्रास्ति मोक्षो न च तत्र भोगः
श्रीसुन्दरीसाधकपुङ्गवानां भोगश्च मोक्षश्च करस्थ एव ॥

पातय वा पाताले स्थापय वा सकललोकसाम्राज्ये ।
मातस्तवाङ्घ्रियुगलं नाहं मुञ्चामि नैव मुञ्चामि ॥
यस्मिन्वो नामरूपाभ्यां या देवी सर्वमङ्गला ।
तयोः संस्मरणात्पुंसां सर्वतो जयमङ्गलम् ॥
दुर्गे शिवेऽभये माये नारायणि सनातनि ।
जये मे मङ्गलं देहि नमस्ते सर्वमङ्गले ॥ इति श्रीः

श्रीमहात्रिपुरसुन्दरीहृदयम्

वन्दे सिन्दूरवर्णाभं वामोरुन्यस्तवल्लभम् । इक्षुवारिधिमध्यस्थमिभराजमुखं महः ॥१॥
गम्भीरलहरीजालझम्पितदिगन्तरः । अस्त्यान्मामममृताम्भोधिरनर्घमणिसंभृतः ॥२॥
मध्ये तस्य मनोहारि मधुपारवमेदुरम् । प्रसूनविगलन्माध्वीप्रवाहपरिपूरितम् ॥३॥
सिन्नरीगानमेदस्वि क्रीडासुन्दरदन्तुरम् ।शाखाद्रुमधूलीभिः धवलिताबालवद्द्रुमम् ॥४॥
मुग्धकोकिलनिक्वाणमुखरीकृतदिङ्मुखम् । मन्दारकल्पसन्तानमञ्जरीपुञ्जपिञ्जरम् ॥५॥
नानानादिन्यमस्मेरनमेरुकुसुमसौरभम् । आवृन्तहृगिताम्भोजदीव्यद्विभ्रमदीर्घिकम् ॥६॥
मन्दरत्नसुकीदष्टमातुलुङ्गफलान्वितम् । रविपरस्यन्दमानाभ्रमरितरल्लोलवेल्लितम् ॥७॥
प्रसूनपांसुगौरम्यपरवतोहरमारुतम् । वकुलप्रसवाकीर्णं वन्दे नन्दनकाननम् ॥८॥
तन्मध्ये नीपकान्तार तरणिस्तम्भकारणम् । मधुपालिविमर्दालिकलयवाणकरम्बितम् ॥
कोमलस्वरसनाधूतकोरकोद्गतधूलिभिः ।सिन्दूरितनभोभागं चिन्तितं सिद्धवन्दिभिः ॥१०॥
मध्ये तस्य मदन्मार्गलम्बिमाणिक्यतोरणम् । शाणोल्लिखितवैडूर्यवल्कसालसमाकुलम् ॥
माणिक्यस्तम्भपटलीमयूखव्याप्तदिक्तटम् ।पञ्चविंशतिसालाढ्यं नमामि नगरोत्तमम् ॥१२॥
तत्र चिन्तामणिगृह तडित्कोटिसमुज्ज्वलम् ।नीलोत्पलसमाकीर्णनिर्यूहशतसङ्कुलम् ॥१३॥
सोमकान्तमणिक्लृप्तसोपानोद्भासिवेदिकम् । चन्द्रशालाचलत्केतुसमालीढनभोन्तरम् ॥
गारुत्मतमणीक्लृप्तमण्डपव्यूहमण्डितम् । नित्यसेवापरामर्त्यनिबिडद्वारशोभितम् ॥१५॥
अधिष्ठितं द्वारपालैरसितोमरपाणिभि ।नमामि नाकनारीणा सान्द्रसङ्गीतमेदुरम् ॥१६॥
तन्मध्ये तरुणार्काभ तप्तकाञ्चननिर्मितम् ।शक्रादिमद्द्वारपालैस्सन्ततपरिवेष्टितम् ॥१७॥
चतुष्षष्टिमहाविद्याकलाभिरभिसंवृतम् । रक्षित योगिनिवृन्दै रत्नसिंहासन भजे ॥१८॥
मध्ये तस्य मरुत्सेव्य चतुर्द्वारसमुज्ज्वलम् ।चतुरस्रत्रिरेखाढ्य चारुत्रिवलयान्वितम् ॥१९॥
कलादलसमायुक्त कनदष्टदलान्वितम् । चतुर्दशारसहित दशारद्वितयान्वितम् ॥२०॥
अष्टकोणयुत दिव्यमग्निकोणविराजितम् । योगिभि पूजित योगियोगिनीगणसेवितम् ॥
सर्वदु खप्रसमनं सर्वव्याधिविनाशनम् । विपज्वरहर पुण्य विविधापद्विदारणम् ॥२२॥
सर्वदारिद्र्यशमन सर्वभूपालमोहनम् । आशाभिपूरक दिव्यमर्चकानामहर्निशम् ॥२३॥
अष्टादशसुमर्माढ्य चतुर्विंशतिसन्धिकम् । श्रीमद्बिन्दुगृहोपेत श्रीचक्र प्रणमाम्यहम् ॥२४॥
तत्रैव बैन्दवस्थाने तरुणादित्यसन्निभम् । पाशाङ्कुशधनुर्बाणपरिष्कृतकराम्बुजम् ॥२५॥
पूर्णेन्दुबिम्बवदन फुल्लपङ्कजलोचनम् । कुसुमायुधशृङ्गारकोदण्डकुटिलभ्रुवम् ॥२६॥
बालचन्द्रकलोपेत चन्दनागुरुरूषितम् । मन्दस्मितमधूकालिकिञ्जल्कितमुखाम्बुजम् ॥२७॥
पाटीरतिलकोद्भासिफालस्थलमनोहरम् । अनेककोटिकन्दर्पलावण्यसरणाधरम् ॥२८॥
तपनीयांशुकधर तारुण्यश्रीनिषेवितम् । कामेश्वरमह वन्दे कामितार्थप्रद नृणाम् ॥२९॥
तस्याङ्कमध्यमासीना तप्तहाटकसन्निभाम् । माणिक्यमुकुटच्छायामण्डलारुणदिङ्मुखाम् ॥

भ्रूलताश्रीपराभूतपुष्पायुधशरासनाम् । नालीकदलदायादनयनत्रयशोभिताम् ॥३३॥
करुणारसमम्पूर्णकटाक्षहसितोज्ज्वलाम् । भव्यमुक्तामणीचारुनासामौक्तिकवेष्टिताम् ॥३४॥
कपोलयुगलीनृत्यत्स्वर्णताटङ्कशोभिताम् । माणिक्यपालीयुगलीमयूखारुणदिङ्मुखाम् ॥३५॥
परिपक्वसुबिम्बाभापाटलाधरपल्लवाम् । मञ्जुलाधरपर्वस्थमन्दस्मितमनोहराम् ॥३६॥
द्विखण्डद्विजराजाभगण्डद्वितयमण्डिताम् । दरफुल्लन्सद्गण्डधवलापूरिताननाम् ॥३७॥
पचेलिमेन्दुसुषमापाटच्चरमुखप्रभाम् । कन्धराकान्तिहसितकम्बुबिम्बोकडम्बराम् ॥३८॥
कस्तूरीकर्दमश्यामकन्धरामूलचन्दनाम् । वामासशिखरोपान्तव्यालम्बिघनवेणिकाम् ॥
मृणालकाण्डदायादमृदुबाहुचतुष्टयाम् । मणिकेयूरयुगलीमयूखारुणविग्रहाम् ॥४०॥
करमूललसद्रत्नकङ्कणक्वाणपेशलाम् । करकान्तिसमाधूतकल्पानोकहपल्लवाम् ॥४१॥
पद्मरागोर्मिकाश्रेणिभासुराङ्गुलिमालिकाम् । पुण्ड्रकोदण्डपुष्पास्त्रपाशाङ्कुशलसत्कराम् ॥
तप्तकाञ्चनकुम्भाभस्तनमण्डलमण्डिताम् । घनस्तनतटीकल्पृप्तकाश्मीरक्षोदपाटलाम् ॥४३॥
कूलङ्कषकुचस्फारतारहारविराजिताम् । चारुकौसुम्भकूर्पासच्छन्नवक्षोजमण्डलाम् ॥४४॥
नवनीलघनश्यामरोमराजिविराजिताम् । लावण्यसागरावर्तनिभनाभिविभूषिताम् ॥४५॥
डिम्भमुष्टितलग्राह्यमध्ययष्टिमनोहराम् । नितम्बमण्डलाभोगनिक्वणन्मणिमेखलाम् ॥४६।
सन्ध्यारुणक्षौमपटीसञ्छन्नजघनस्थलाम् । घनोरुकान्तिहसितकदलीकाण्डविभ्रमाम् ॥४७।
जानुसम्पुटकद्वन्द्व जितमाणिक्यदर्पणाम् । जङ्घायुगलसौन्दर्यविजितानङ्गकाहलाम् ॥४८॥
प्रपदच्छायसन्तानजितप्राचीनकच्छपाम् । नीरजासनकोटीरनिघृष्टचरणाम्बुजाम् ॥४९॥
पादशोभापराभूतपाकारितरुपल्लवाम् । चरणाम्भोजशिञ्जानमणिमञ्जीरमञ्जुलाम् ॥
विबुधेन्द्रवधूलक्षविन्यस्तपदपल्लवाम् । पार्श्वस्थभारतीलक्ष्मीपाणिचामरवीजिताम् ॥
पुरतो नाकनारीणां पश्यन्ती नृत्तमद्भुतम् । भ्रूलताञ्चलसम्भूतपुष्पायुधपरम्पराम् ॥
प्रत्यग्रयौवनोन्मत्तपरिफुल्लविलोचनाम् । ताम्रोष्ठी तरलापाङ्गी सुनासा सुन्दरस्मिताम् ॥
चतुरर्थभ्रुवोदारा चाम्पेयोद्गन्धिकुन्तलाम् । मधुस्नपितमृद्वीकमधुरालापपेशलाम् ॥५४॥
शिवा षोडशवार्षीका शिवाङ्कतल्पवासिनीम् । चिन्मयी हृदयाम्भोजे चिन्तयेज्जापकोत्तम ॥

फलश्रुति.

इति त्रिपुरसुन्दर्या हृदयं सर्वकामदम् । सर्वदारिद्र्यशमन सर्वसम्पत्प्रद नृणाम् ॥५६॥
तापज्वरातिशमन तरुणीजनमोहनम् । महाविषहर पुण्य माङ्गल्यकरमद्भुतम् ॥५७॥
अपमृत्युहर दिव्यमायुष्यश्रीकर परम् । अपवर्गैकनिलयमवनीपालवश्यदम् ॥५८॥
पठति ध्यानरत्न य प्रातस्सायमतन्द्रित । न विषादैस्स च पुमान् प्राप्नोति भुवनत्रयम् ॥

इति श्रीत्रिपुरसुन्दरीहृदय सम्पूर्णम्

श्रीकरपात्रस्वामिविरचित श्रीविद्या-रत्नाकरः समाप्त ।

श्रीपराम्बा सुप्रसन्ना वरदाऽस्तु

श्रीललिताचतुःषष्ट्युपचारमानसपूजा

ॐ हृन्मध्यनिलये देवि ललिते परदेवते ।
चतुःषष्ट्युपचारांस्ते भक्त्या मातः समर्पये ॥१॥
गणेशोल्लङ्घनिम्बे पाद्यं गृहाण सादरम् ।
भूषणानि समुत्तार्य गन्धतैलं च तेऽर्पये ॥२॥
स्नानशालां प्रविश्याथ तत्रत्यमणिपीठके ।
उपविश्य गुरोन त्वं देहोद्वर्तनमाचर ॥३॥
उष्णोदकेन ललिते स्नापयाम्यथ भक्तितः ।
अभिषिञ्चामि पश्चात्त्वां सौवर्णकलशोदकैः ॥४॥
धौतवस्त्रप्रोञ्छनं चारक्तक्षौमाम्बरं तथा ।
कुचोत्तरीयमरुणमर्पयामि महेश्वरि ॥५॥
ततः प्रविश्य चालेपमण्डपं श्रीमहेश्वरि ।
उपविश्य च सौवर्णपीठे गन्धान् विलेपय ॥६॥
कालागरुजधूपैश्च धूपये केशपाशकम् ।
अर्पयामि च माल्यादिसर्वर्तुकुसुमस्रजः ॥७॥
भूषामण्डपमाविश्य स्थित्वा सौवर्णपीठके ।
माणिक्यमुकुटं मूर्ध्नि दयया स्थापयाम्बिके ॥८॥
शरत्पार्वणचन्द्रस्य शकलं तत्र शोभताम् ।
सिन्दूरेण च सीमन्तमलङ्कुरु दयानिधे ॥९॥
भाले च तिलकं न्यस्य नेत्रयोरञ्जनं शिवे ।
वालीयुगलमप्यम्ब भक्त्या ते विनिवेदये ॥१०॥
मणिकुण्डलमप्यम्ब नासाभरणमेव च ।
ताटङ्कयुगलं देवि यावकञ्चाधरेऽर्पये ॥११॥
आद्यभूषणसौवर्णचिन्ताकपदकानि च ।
महापदकमुक्तावल्येकावल्यादिभूषणम् ॥१२॥

छन्नवीरं गृहाणाम्ब केयूरयुगलन्तथा ।
वलयावलिमङ्गुल्याभरणं ललिताम्बिके ॥१३॥
ओड्याणमथ कट्यन्ते कटिसूत्रञ्च सुन्दरि ।
सौभाग्याभरणं पादकटकं नूपुरद्वयम् ॥१४॥
अर्पयामि जगन्मातः पादयोश्चाङ्गुलीयकम् ।
पाशं वामोर्ध्वहस्ते च दक्षहस्ते तथाङ्कुशम् ॥१५॥
अन्यस्मिन्वामहस्ते च तथा पुण्ड्रेक्षुचापकम् ।
पुष्पबाणांश्च दक्षाधः पाणौ धारय सुन्दरि ॥१६॥
अर्पयामि च माणिक्यपादुके पादयोः शिवे ।
आरोहावृत्तिदेवीभिश्चक्र परशिवे मुदा ॥१७॥
समानवेशभूषाभिः साकं त्रिपुरसुन्दरि ।
तत्र कामेशवामाङ्कपर्यङ्कोपनिवेशिनीम् ॥१८॥
अमृतासवपानेन मुदितां त्वां सदा भजे ।
शुद्धेन गाङ्गतोयेन पुनराचमनं कुरु ॥१९॥
कर्पूरवीटिकामास्ये ततोऽम्ब विनिवेशय ।
आनन्दोल्लासहासेन विलसन्मुखपङ्कजाम् ॥२०॥
भक्तिमत्कल्पलतिकां कृती स्यां त्वां स्मरन् कदा ।
मङ्गलारार्तिकं छत्रं चामरं दर्पणं तथा ॥२१॥
तालवृन्तं गन्धपुष्पधूपदीपांश्च तेऽर्पये ।
श्रीकामेश्वरि ! तप्तहाटककृते स्थालीसहस्रैर्भृतं
दिव्यान्नं घृतसूपशाकभरितं चित्रान्नभेदैर्युतम् ॥
दुग्धान्नं मधुशर्करादधियुतं माणिक्यपात्रार्पितं
मापापूपकपूरिकादिसहितं नैवेद्यमम्बार्पये ॥२२॥
सार्धविंशतिपद्योक्तचतुष्षष्ट्युपचारतः ।
हृन्मध्यनिलया माता ललिता परितुष्यतु ॥२३॥
कामेश्वराङ्कनिलया श्रीललितामहात्रिपुरसुन्दरी तृप्यताम् ।